NOVEL-STORY-WORLD

उपन्यास-कथा-संसार

गजेन्द्र ठाकुर · मूल मैथिली · सम्पूर्ण अध्यायवार कथासार

WORK / कृति

01 गोहि सभक बीच जलसमाधि

खण्ड ०, १, २ · ३०१ अध्याय · तीन परिशिष्ट

SECTION / खण्ड

खण्ड ० • पूर्वकथा

अध्याय –१०० सँ –१

अध्याय [−१००] — शंख आ रजत

खण्ड ० • पूर्वकथा

गढ़ नारिकेलक बारह सय बरखक स्मृतिसँ कथा शुरू होइत अछि। वाचस्पति मिश्रक वाद-शालामे शंखकेँ चानी बुझबाक भ्रमक बहाने आत्मा आ संसारक सम्बन्धपर प्रश्न उठैत अछि। नैयायिकक अन्यथाख्याति, प्राभाकरक अख्याति आ अद्वैतक अनिर्वचनीयख्यातिक बीच तर्क चलैत अछि। वाचस्पति भ्रम आ सत्यक भेदकेँ आत्मचिन्तन धरि विस्तार दैत छथि। एहि शास्त्रार्थसँ आगूक कथा लेल मूल प्रश्न स्थापित होइत अछि—जे देखाइत अछि, से सदिखन सत्य नहि; जे नाम छूटि जाइत अछि, से स्मृतिसँ बचाओल जा सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–९९] — आत्मसिद्धि-वाद

खण्ड ० • पूर्वकथा

मिथिलाक वाद-शालामे उदयन आ बौद्ध पक्षक प्रतिनिधि क्षणभद्रक बीच आत्माक अस्तित्वपर विवाद होइत अछि। क्षणभंगवाद, केवल विज्ञानकेँ यथार्थ मानबाक दृष्टि, स्मृति आ अनुभवक निरन्तरतापर प्रश्न उठाओल जाइत अछि। उदयन ‘हम’ कहनिहारक पहिचान, पुनःस्मरण आ अनुभवक एकत्वसँ स्थायी ज्ञाताक पक्ष रखैत छथि। क्षणभद्रक प्रश्न पूर्ण रूपसँ समाप्त नहि होइत; अन्तमे दुनू पक्ष विचारक गम्भीरता स्वीकार करैत अछि। दार्शनिक विवाद एहि खण्डक स्मृति, साक्षी आ व्यक्ति-पहिचानक आधार बनैत अछि।

अध्याय [−९८] — केऽ बनौलक ई जगत?

खण्ड ० • पूर्वकथा

उदयनाचार्यक ईश्वर-विषयक तर्क एकटा लोक-नाटकक रूप लैत अछि। गामक चौक, कुम्हारक चाक, अनाजक कोठी आ लेखनी दीदीक घरमे चार्वाक आ अन्य पात्र संसारक उत्पत्ति, रचना, व्यवस्था आ भाषाक स्रोतपर प्रश्न उठबैत छथि। कुम्हारक बनाओल बासनसँ कर्ताक तर्क शुरू होइत अछि, मुदा चार्वाक प्रश्न करैत अछि जे बासनक कुम्हारसँ जगतक निर्माता कोना सिद्ध होएत। संवाद आगू अनेक तर्क आ प्रतितर्क धरि बढ़ैत अछि। अध्याय निष्कर्ष थोपबाक अपेक्षा गामक सामान्य वस्तुसँ पैघ दार्शनिक प्रश्न उत्पन्न करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−९७] — चिंतामणि रत्न

खण्ड ० • पूर्वकथा

गंगेश उपाध्यायक वाद-शालामे ‘चिंतामणि रत्न’ ज्ञानक सही साधनक रूपक बनैत अछि। बौद्ध, मीमांसक आ अन्य प्रश्नकर्ता संग दीप, घैल आ दैनिक उदाहरणक आधारपर ज्ञान, अनुमान, स्मृति आ यथार्थक स्वरूपपर वाद होइत अछि। गंगेश कोनो निष्कर्ष स्वीकार करबासँ पहिने तर्कक आधार आ ओकर सीमा परखबाक आग्रह करैत छथि। अध्यायमे रत्न बाहरक चमत्कारी वस्तु नहि, अपितु देखनिहारक विवेक आ परीक्षणक क्षमता बनि उठैत अछि। एहि क्रमसँ आगूक पुस्तकीय आ लोक-स्मृतिक बीच सम्बन्धक बीया पड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−९६] — स्मृति-रक्षा

खण्ड ० • पूर्वकथा

वाचस्पति मिश्रक वाद-शालामे पोथी-प्रतिलिपिकार युवती हुलासाक मृत्यु कथाकेँ शास्त्रार्थसँ मानवीय शोक दिस मोड़ि दैत अछि। वाचस्पतिक सेवक बुधुआ, हुलासाक परिश्रम आ ओकर नाम विसरल जा रहल देखैत छथि। आचार्य, कर्णपूर आ ग्रामप्रमुखक समक्ष पोथी लिखनिहारक श्रम, स्त्रीक असमान स्थान आ नाम दर्ज करबाक प्रश्न उठैत अछि। हुलासाक स्मृतिमे राखल शिला आ बुधुआक प्रतिज्ञा, मृतकक नाम न्यायपूर्वक सुरक्षित रखबाक दीर्घ परम्पराक आरम्भ करैत अछि। बादुक ‘बूढ़बा’क रूपक बीया एतहि अछि।

अध्याय [−९५] — जलमग्न पाण्डुलिपि

खण्ड ० • पूर्वकथा

बुधुआ उदयनाचार्यक मठमे शिष्या जीवन्तीकेँ पोथी-संरक्षण सिखबैत छथि। बाढ़िक संकटमे जीवन्ती ‘किरणावली’क पाण्डुलिपि बचबैत-बचबैत अपन प्राण गमबैत छथि। मठाधीश पोथी बचलाक सन्तोष व्यक्त करैत छथि, मुदा उदयन प्रश्न करैत छथि जे ग्रंथक रक्षा मनुष्यक जीवनसँ पैघ केना भऽ गेल। मठमे ग्रंथ आ तकरा बचौनिहार सेवक-शिष्या दुनूक नाम राखबाक नियम बनैत अछि। जीवन्तीक स्मृति लोककथामे ‘जल-कन्या’ आ ‘पनिडुब्बी’क रूप लेबय लगैत अछि; बुधुआक नाम-रक्षाक व्रत आ गहींर होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–९४] — चारि मुखक मौन

खण्ड ० • पूर्वकथा

अकालक समय उदयनक मठमे सांख्य, चार्वाक, बौद्ध आ मीमांसक विद्वान जुटैत छथि, जखन फाटकक बाहर भूखल लोक सहायता तकैत अछि। विचारधाराक सीमामे अटकल बहसक बीच सोहनक मृत्यु सभकेँ विचलित करैत अछि। बुधुआ आ उदयन पुछैत छथि जे शास्त्रक तर्क मनुष्यक तत्काल भूखसँ किएक अलग भऽ गेल। विद्वान सभ पहिने अभावग्रस्तक हाल बुझब, तखन वाद करब, ई नियम स्वीकार करैत छथि। पीपर ‘साक्षी-वृक्ष’ बनैत अछि, जकर चारि मुख चारू दार्शनिक स्वरक स्मृति धेने रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–९३] — शंखक अन्तिम प्रश्न

खण्ड ० • पूर्वकथा

बहुत वृद्ध आक्षेपक, जे वाचस्पतिक सभामे शंख-रजतक भ्रमपर प्रश्न उठौने छलाह, जीवनक अन्तिम समय उदयनक मठ पहुँचैत छथि। ओ फेर पुछैत छथि जे भिन्न सम्प्रदायक असहमतिसँ सत्यक खोजक अर्थ की रहैत अछि। उदयन बतबैत छथि जे भ्रम होएबाक तथ्यपर सहमति अछि, भिन्नता ओकर व्याख्यामे अछि। प्रश्नकर्ता मृत्युशय्यापर चलि जाइत छथि, आ हुनकर अन्तिम क्षणक चानी-सन उजास पीपर दिस उठैत देखाओल गेल अछि। गामक जनश्रुतिमे ई क्षण ‘राकश’क इजोर बनि रहैत अछि; प्रश्नक मानवीय गरिमा सुरक्षित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−९२] — जल-घड़ीक कैदी

खण्ड ० • पूर्वकथा

आचार्य केशवक न्याय-सभामे समय नापबाक जल-घड़ी न्यायसँ बेसी विलम्बक कारण बनैत अछि। सुखदेव महतो अपन जमीन आ नाहरक विवाद लऽ उग्रसेन ठाकुरक विरुद्ध अबैत छथि, मुदा शक्तिशाली पक्ष बेर-बेर नव प्रश्न उठा सुनवाइ टारैत अछि। खेत सुखैत अछि, कजरी भैंस दुबराइत अछि, आ सुखदेव अपन बात पूरी कहबाक पहिने मरि जाइत छथि। पछताएल केशव ‘सुखदेव-नियम’ बनबैत छथि जे दीर्घ प्रतीक्षारत व्यक्तिक सुनवाइ पहिने होएत। बूढ़बाक स्मृतिमे सुखदेवक अधूरा स्वर ‘लोथ’ रूपमे बचल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–९१] — चर्मकार टोलाक उजास

खण्ड ० • पूर्वकथा

चर्मकार टोलाक रत्ना आ सोमर ज्वरसँ अचेत युवा गंगेशकेँ अपन घर लऽ जा सेवा करैत छथि। मालतीक अनुभवसँ गंगेशक तर्क-चिन्तनकेँ नव मानवीय धरातल भेटैत अछि, आ दुनू विवाह करबाक निर्णय लैत छथि। जातिगत विरोधक बीच गंगेश समाजक मान्यतासँ टकराइत छथि; वृद्ध बुधुआ हुनका स्मृतिआधारित न्याय आ मानवीय सम्बन्धक अर्थ बुझबैत छथि। रत्ना, मालती आ टोलाक स्त्रीसभक ज्ञानक महत्त्व प्रकट होइत अछि। अध्याय ऐतिहासिक जनश्रुति आ कल्पित पात्रक सहारे उपेक्षित टोलाक योगदानकेँ कथाक केन्द्रमे अनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–९०] — बुधुआक जलसमाधि

खण्ड ० • पूर्वकथा

अत्यन्त वृद्ध बुधुआ, जिनका बच्चा सभ ‘बूढ़बा’ कहैत अछि, अनुभव करैत छथि जे केवल शरीरक सहारे ओ सभ नामकेँ सदा सुरक्षित नहि राखि सकताह। जोड़ी पोखरिक कात शंख आ डोरी लऽ ओ सुखदेव सहित अनेक बिसरल व्यक्तिक नाम स्मरण करैत छथि। एक राति ओ स्वेच्छासँ पोखरिमे उतरि जलसमाधि लैत छथि; भोरे किनारपर केवल शंख आ घिसल डोरी भेटैत अछि। बादमे पीपर लग हुनकर अस्पष्ट छाया आ लोकक नाम पुकारबाक स्वर सुनाइ दैत अछि। एहि घटनासँ स्मृतिरक्षक बुधुआक ‘बूढ़बा भूत’क रूप जन्म लैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−८९] — पहिल राति, पहिल बाढ़ि

खण्ड ० • पूर्वकथा

जलसमाधिक एक बरख बाद पैघ बाढ़ि गढ़ नारिकेलपर टूटि पड़ैत अछि। देहहीन बूढ़बा संकट बुझितो दरबज्जा खटखटा वा सबकेँ सोझे आगाह नहि कऽ सकैत छथि। चर्मकार टोलाक बालिका गौरी सपनामे हुनकर चेतावनी सुनि परिवार आ टोलाकेँ सावधान करैत अछि, मुदा बाढ़िमे प्राणहानि होइत अछि। विपत्तिक बाद गाम मजगूत बान्ह बनबैत अछि, आ ‘गढ़ नारिकेल’ नाम स्थिर होइत अछि। गौरी आ बूढ़बाक बीच साक्षी-सम्बन्ध गहींर होइत अछि; ‘आधा-भूत’क सम्भावना लोकविश्वासमे प्रवेश करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−८८] — डाइनक आरोप

खण्ड ० • पूर्वकथा

बीस बरखक बाद गौरी कुशल लोकवैद्य बनि चुकल अछि। उच्चवर्गक घरक बीमार विश्वनाथक उपचार आ चर्मकार टोलाक बढ़ैत प्रतिष्ठासँ यशपति आ प्रतापसेनक स्वार्थ आ जातिगत भय सक्रिय होइत अछि। गौरीक उपचार-ज्ञानकेँ ‘डाइन’क आरोप बना लोककेँ भड़काओल जाइत अछि। पंचायतमे सुनवाइ एकतरफा होइत अछि आ मशालधारी भीड़ टोलाक दिस बढ़ैत अछि। गौरी अपन बेटीकेँ फुलेसरी लग छोड़ि बूढ़बाक सहायता माँगय पीपर लग पहुँचैत अछि। अध्याय भीड़क हिंसा आसन्न राखि समाप्त होइत अछि।

अध्याय [−८७] — टोलाक द्वारपर

खण्ड ० • पूर्वकथा

मशाल लऽ आबि रहल भीड़कें फुलेसरी आ टोलाक स्त्रीसभ बच्चा आ दीपक संग रोकैत छथि। प्रतापसेनक पत्नी कमला देवी स्वयं आगू आबि गौरी द्वारा देल गेल उपचारक गवाही दैत छथि। बूढ़बाक उपस्थितिक संग सामूहिक स्त्री-स्वर यशपतिक आरोपक आधार कमजोर करैत अछि। भीड़ हटैत अछि; गौरी आ चर्मकार टोला बचैत अछि आ भूमिक अधिकार फेर दर्ज होइत अछि। मुदा अपमानित यशपति चुप्पीमे नव षड्यंत्रक बीया राखि दैत अछि, जे आगूक संकट बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [-८६] — समयक गोहि

खण्ड ० • पूर्वकथा

यशपति गाम छोड़ि राजदरबार दिस चलि जाइत छथि। एहि बीच बूढ़बाक चेतनामे समयक असामान्य दृश्य खुलैत अछि—दूर भविष्यक जहाज, परदेशी मजदूर आ चन्ना गाछीमे मृतकक नाम लैत कबड्डी खेलैत बच्चा। गौरी हुनकर अनुभव सुनैत अछि, मुदा वर्तमान आ भविष्यक सम्बन्ध पूरा नहि बुझि पबैत अछि। बूढ़बा समयकेँ केवल एक दिशा बहैत धार नहि मानि सकैत छथि; ओ भविष्यमे गौरी-सन ककरो देखबाक बात सेहो स्वीकार करैत छथि। अध्याय भविष्यक घटनाक पूर्वाभास आ बूढ़बाक सीमित सर्वज्ञताकेँ एक संग रखैत अछि।

अध्याय [−८५] — आमिलक आदेश

खण्ड ० • पूर्वकथा

यशपति दरबारक आमिल जयसिंहकेँ लऽ गाम घुरैत छथि आ पीपरक साक्षी-वृक्ष कटबय चाहैत छथि। गौरी, सावित्री आ गामक लोक वृक्षक सामाजिक-स्मृतिक महत्त्व बुझबैत छथि। सार्वजनिक परीक्षाक समय बूढ़बाक आकृति स्पष्ट होइत अछि, जाहिसँ जयसिंहक दृष्टि बदलैत अछि। ओ वृक्ष, भूमि आ गामक अधिकारक संरक्षणक अनुशंसा करबाक बात कहैत छथि। यशपति भागि जंगल दिस हेरा जाइत छथि; हुनकर अन्तर्धान नव भय आ अनुत्तरित प्रश्न छोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–८४] — जंगलक मौन

खण्ड ० • पूर्वकथा

यशपतिक खोजमे मुखिया, युवक आ सैनिक नदीपारक घन जंगलमे जाइत छथि। हुनका फाटल वस्त्र आ जूताक चिन्ह भेटैत अछि, मुदा यशपति जीवित छथि कि मृत, ई निश्चित नहि होइत। खोज-दल भयक कारण वापस अबैत अछि। गौरी बूढ़बासँ पुछैत अछि जे जे नाम मेटाबय चाहलक, ओकर अपन नाम बिसरब न्याय थिक कि नहि। बूढ़बाक उत्तर घृणा आ विस्मृतिक नैतिक जटिलताकेँ सामने अनैत अछि। जंगलक अन्हारमे कोनो अज्ञात शक्तिक जागरण आगूक ‘मूल गोहि’क कथासँ जोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [-८३] — सोनमा माझिन

खण्ड ० • पूर्वकथा

यशपतिक अन्तर्धानक बाद गामक पशुधन रहस्यमय ढंगसँ गायब होमय लगैत अछि। बूढ़बाक कहबापर गौरी नदीकिनारक वृद्ध सोनमा माझिन लग पहुँचैत अछि। सोनमा जलजीवी पुरखाक लोकज्ञान आ ‘मूल गोहि’क कथा सुनबैत छथि—नाम आ स्मृति निगलि लेबाक भूखक रूपमे। ओ चेतबैत छथि जे विस्मृतिकेँ पूर्ण रोकब सम्भव नहि; प्रत्येक जीवनकेँ बिसरल जाएबाक पहिने सम्मान देब महत्त्वपूर्ण अछि। बूढ़बा सोनमाक विचारसँ अपन क्रोधक सीमा बुझैत छथि। नदीक संकट एखन समाप्त नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−८२] — पहिल कबड्डी

खण्ड ० • पूर्वकथा

तीन बरखमे गामक लोक समेत पशुधन हेरा जाएबाक भय बढ़ैत अछि। सोरह बरखक सावित्री स्वप्नमे एकटा एहन कबड्डी देखैत अछि जाहिमे प्रत्येक पारीक संग बिसरल मृतकक नाम पुकारल जाइत अछि। गौरी आ बूढ़बाक संग ओ अमावस्याक राति जोड़ी पोखरिक कात पहिल नाम-कबड्डी करबैत अछि; ओ सुभागीक नाम पुकारैत अछि। पोखरिक अशान्ति शान्त होइत अछि। एही दिनसँ प्रत्येक अमावस्यापर कबड्डी स्मरणक सामूहिक अनुष्ठान बनैत अछि, जकर रक्षिका सावित्री आ बादमे ओकर पीढ़ीसभ बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−८१] — आक्रमणक छाया

खण्ड ० • पूर्वकथा

बीस बरख बाद अमावस्याक कबड्डी स्थापित परम्परा भऽ गेल अछि। सिमरावगढ़पर आक्रमण आ सत्ताक पतनक समाचारसँ गाममे भय फैलैत अछि। भटकल सैनिक लूटपाट लेल पहुँचैत छथि, मुदा इन्दुमतीक संकेतपर आयोजित सामूहिक कबड्डी आ लोकक निर्भय एकजुटतासँ गाम तत्काल विनाशसँ बचैत अछि। बूढ़बा बुझैत छथि जे मृतकक नाम स्मरण करबाक परम्परा जीवित लोककेँ साहस सेहो दैत अछि। तथापि बड़का राजनीतिक परिवर्तन, नव शासन आ नव कानूनक अनिश्चितता आगूक समयक द्वार खोलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−८०] — गीतक पहिल पाँति

खण्ड ० • पूर्वकथा

नव साहित्यिक वातावरणमे भ्रमणशील कवि हरिपति गढ़ नारिकेल पहुँचैत छथि। ओ इन्दुमतीसँ बूढ़बाक कथा, नाम-कबड्डी, मृत्यु आ स्मृतिक लोककथासभ सुनैत छथि आ ओकरा मैथिलीमे लिखबाक इच्छा व्यक्त करैत छथि। बूढ़बा दरबारी अलंकरणक बदला गामक अपन भाषा आ अनुभवक सत्य बनल रहबाक अपेक्षा रखैत छथि। हरिपति कथा संकलित करैत छथि, मुदा तत्काल दरबारमे प्रस्तुत नहि करबाक निर्णय लैत छथि। पोथी शिष्य-परम्परासँ सुरक्षित रखबाक आशा लेखनक नव स्मृति-माध्यम खोलैत अछि।

अध्याय [–७९] — क्षमाक पारी

खण्ड ० • पूर्वकथा

अनुष्ठानक भार शारदा आ फेर वसुन्धरापर अबैत अछि। प्रतापसेनक पौत्र रघुवीर चर्मकार टोलामे आबि अपन कुलक पुरान अन्यायक लेल क्षमा माँगैत छथि। बूढ़बा कहैत छथि जे नाम बचाबयक अर्थ केवल मृतकक शोक नहि, जीवितकेँ अपन आचरण सुधारबाक अवसर देब सेहो अछि। रघुवीर अनुचित ढंगसँ लेल गेल जमीनक एक भाग लौटेबाक निर्णय लैत छथि। एहि पारीमे क्षमा केवल शब्द नहि, आंशिक प्रतिपूर्तिक कर्म बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–७८] — पंजीक बाहर

खण्ड ० • पूर्वकथा

पंजीकार यादवानन्द झा गढ़ नारिकेल आबि वसुन्धरासँ भेंट करैत छथि। ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थक औपचारिक वंश-पंजीमे चर्मकार टोला सहित अनेक परिवारक नाम नहि भेटब हुनका विचलित करैत अछि। वसुन्धरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी नाम, सम्बन्ध आ जीवनक प्रसंग सुनबैत अछि। यादवानन्द निजी नोटबुकमे ई सभ लिखि ‘छाया-पंजी’ सन वैकल्पिक अभिलेखक आरम्भ करैत छथि। अध्यायमे संस्थागत पंजीक बाहर रहि गेल लोककेँ स्मृतिक बराबर अधिकार देबाक प्रयत्न प्रकट अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−७७] — बूढ़बाक मौन

खण्ड ० • पूर्वकथा

कौशल्याक समय बूढ़बाक स्वर मंद पड़ैत अछि आ एक अमावस्यापर ओ कबड्डीक निर्णायक बनय नहि अबैत छथि। गाम बुझैत अछि जे सदिखन दोसरक नाम बचौनिहार बुधुआक अपन श्रम आ त्यागक सामूहिक सम्मान अधूरा रहल। कौशल्या आ गोदावरीक प्रेरणासँ लोक हुनकर जीवनक घटनासभ एक-एक कऽ दोहरबैत छथि। बूढ़बाक इजोत फेर स्थिर होइत अछि। एहि अध्यायमे साक्षीकेँ स्वयं स्मरण आ स्नेह चाही, ई बात घटनाक द्वारा स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय [–७६] — नारिकेल पातक पहिल पाठ

खण्ड ० • पूर्वकथा

कौशल्याक बेटी मंदाकिनी देखैत अछि जे गामक लिखित अभिलेख बढ़ल अछि, मुदा दलित बालक-बालिका आ स्त्रीसभ लेल शिक्षा एखन सीमित अछि। ओ सुखल नारिकेल पात जमा कऽ चर्मकार टोलामे जाति-लिंगसँ निरपेक्ष पहिल पाठशाला शुरू करैत अछि। बच्चा अपन पुरखाक नाम लिखब सिखैत अछि। बूढ़बा लेखनकेँ साक्षीक विकल्प नहि, ओकर सहयोगी मानैत छथि। नारिकेल पातक ई आरम्भ आगूक शिक्षित पीढ़ी, अभिलेख आ तकनीकक नींव बनैत अछि।

अध्याय [–७५] — तर्कक पहिल विद्रोह

खण्ड ० • पूर्वकथा

मंदाकिनीक पाठशालाक कई पीढ़ीक बाद विश्वनाथ नगरमे पढ़ि गाम घुरैत अछि आ बूढ़बाक वास्तविकता तथा कबड्डी-अनुष्ठानपर संशय उठबैत अछि। किछु लोक एहि तर्ककेँ विद्रोह मानैत अछि, मुदा बूढ़बा प्रश्न पूछबाक स्वतंत्रताक समर्थन करैत छथि। विश्वनाथ अपन अनुभवसँ चकित भऽ पुनः पीपर लग अबैत अछि। बूढ़बा अन्धविश्वास माँगबाक बदला स्वयं देखल आ परखल बातपर विचार करबाक आग्रह करैत छथि। अध्यायमे शिक्षा, संशय आ लोकपरम्पराक सहअस्तित्वक बाट खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−७४] — गाछक रोग

खण्ड ० • पूर्वकथा

अनुष्ठान-रक्षक केदार पीपरक पात पीयर पड़ैत आ छाल रोगग्रस्त होइत देखैत छथि। बूढ़बाक स्मृति वृक्षसँ जुड़ल होएबाक कारण पूरा गाम संकट अनुभव करैत अछि। विभिन्न टोलाक लोक, सोनमा आ रत्नाक वंशक वनस्पति-ज्ञानक सहायता लऽ गाछक उपचार आ देखभाल करैत छथि। एक बरखमे गाछ स्वस्थ होइत अछि। बूढ़बा स्वीकार करैत छथि जे हुनकर अपन अस्तित्व सेहो एक जीवित वृक्षक रक्षा पर निर्भर अछि। स्मृति-रक्षा पर्यावरण-रक्षाक जिम्मेदारी बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–७३] — मोहनक धुन

खण्ड ० • पूर्वकथा

केदारक बेटी शीलावतीक समय चर्मकार टोलाक ढोलवादक मोहनक चारि बरखक बेटी राधिका ज्वरसँ मरि जाइत अछि। दीर्घ मौनक बाद मोहन ढोलपर शोकपूर्ण नव धुन रचैत अछि। शीलावती ई धुनकेँ नाम-कबड्डीक अनुष्ठानसँ जोड़ैत छथि, आ प्रत्येक स्मरणीय व्यक्तिक जीवनक अनुकूल धुन बजएबाक चलन शुरू होइत अछि। बूढ़बा संगीतकेँ शब्दसँ भिन्न स्मृतिरक्षाक माध्यम मानैत छथि। व्यक्तिगत शोक सामूहिक सांगीतिक परम्पराक रूप लैत अछि।

अध्याय [–७२] — विवाहक साक्षी

खण्ड ० • पूर्वकथा

शीलावतीक पोती अनुराधा आ ब्राह्मण-टोलाक गोपीनाथ बचपनक मित्रतासँ प्रेम धरि पहुँचैत छथि। जातिगत विरोध विशेषतः गोपीनाथक परिवारसँ उठैत अछि। बूढ़बा पुरनका अन्यायक नाम स्मरण करा पुछैत छथि जे नव पीढ़ी पुरान त्रासदी दोहराओत कि सम्बन्धक नव बाट चुनत। अन्ततः परिवार सहमत होइत अछि। पीपर लग दुनू टोलाक सहभागितासँ विवाह सम्पन्न होइत अछि आ मोहनक वंशज उत्सवक धुन बजबैत छथि। विवाह स्मृतिसँ सामाजिक परिवर्तन धरि बढ़ल एकटा ठोस घटना बनैत अछि।

अध्याय [–७१] — महामारीक राति

खण्ड ० • पूर्वकथा

महामारी गाममे तीव्र मृत्यु आ भय लऽ अबैत अछि। विमला आ बूढ़बा देखैत छथि जे पहिनेक एक-एक मृतकक विस्तृत स्मरण, एतेक पैघ प्रकोपक बीच सम्भव नहि रहल। वैद्य सभ रोगी अलग रखब, पानि उबालब आ स्वच्छताक उपाय अपनबैत छथि। संगहि विमला ‘सामूहिक स्मरण’ शुरू करैत अछि, जाहिमे एक स्वरमे मृतकक नाम पुकारल जाइत अछि। अध्याय सामुदायिक स्वास्थ्यक उपाय आ शोक-अनुष्ठान दुनूकेँ जोड़ैत अछि, बिना प्रत्येक व्यक्तिक गरिमा त्यागने।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [-७०] — चन्ना गाछीक रोपाई

खण्ड ० • पूर्वकथा

महामारीक बाद विमला सुझबैत अछि जे मृतक आ गामक संघर्षक स्मृति जमीनपर गाछ रोपिकऽ रखल जाय। पीपरक चारूकात हुलासा, जीवन्ती, महामारीपीड़ित परिवार आ अन्यक नामपर क्रमशः चन्नाक गाछ रोपल जाइत अछि। समयक संग ई समूची ‘चन्ना गाछी’ बनैत अछि। बूढ़बा अनुभव करैत छथि जे हुनकर उपस्थिति एक पीपरसँ अनेक जड़ि आ गाछ धरि फैलि गेल। स्मृतिक स्थान आब केवल पोथी वा कण्ठ नहि, साझा पर्यावरण सेहो बनैत अछि।

अध्याय [–६९] — गज-ग्राहक कथा

खण्ड ० • पूर्वकथा

सूर्यनाथक समय मन्दिरक हाथी गजराज जोड़ी पोखरिमे उतरैत अछि आ विशाल गोहि ओकर पएर पकड़ि लैत अछि। लोक पुराणक गजेन्द्र-मोक्षक आख्यान मोन पाड़ैत छथि। बूढ़बाक प्रेरणासँ प्रार्थना आ व्यावहारिक बचावक प्रयत्न एक संग चलैत अछि—रस्सा आ बाँससँ युवक सभ गजराजकेँ मुक्त करैत छथि। गोहि पाछू हटैत अछि आ हाथी बचैत अछि। अध्यायमे पुराणक कथा स्थानीय जलजीवन, सामूहिक कौशल आ धैर्यक संग फेर रचल जाइत अछि।

अध्याय [−६८] — अदालतक पहिल तारीख

खण्ड ० • पूर्वकथा

कमलिनीक समय गाममे औपचारिक अदालत स्थापित होइत अछि। लिखित कानूनक समानता स्वागतयोग्य होइतहुँ सुनवाइक दीर्घ विलम्ब गरीब पक्षकार सभकेँ तोड़ैत अछि। भोला सन लोकक मुकदमा वर्षानुवर्ष अटकि रहैत अछि, आ बूढ़बाकेँ सुखदेव महतोक अधूरा सुनवाइक याद अबैत अछि। कमलिनी न्यायिक व्यवस्थाकेँ तत्काल बदलब नहि सकैत छथि, मुदा प्रतीक्षारत लोककेँ सलाह, सहयोग आ सामुदायिक साथ देबाक संकल्प लैत छथि। पुरान जल-घड़ीक अन्याय नव ‘तारीख’मे घुरि अबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−६७] — परदेशक पुकार

खण्ड ० • पूर्वकथा

जानकीक समय परदेशमे काज देबाक मीठ वादा लऽ आढ़तिया गाम अबैत अछि। गरीब रामसेवक करार पूरा बुझने बिना अंगूठा लगाकऽ दूर देश चलि जाइत अछि; फेर ओकर कोनो समाचार नहि भेटैत। जानकी प्रत्येक परदेश गेल व्यक्तिक चिन्ह पीपर लग रखबाक आ अमावस्यापर ओकर नाम पुकारबाक प्रथा बनबैत अछि। रामसेवकक माए वापसीक प्रतीक्षा करैत रहैत छथि। बूढ़बा स्पष्ट कहैत छथि जे ओ रामसेवकक दशा नहि जनैत छथि, मुदा ओकर नाम बिसरए नहि देताह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−६६] — स्त्री सभक राति-सभा

खण्ड ० • पूर्वकथा

सुलोचनाक समय घरेलू हिंसाक शिकार पद्माकेँ औपचारिक अदालत ‘घरेलू विषय’ कहि लौटा दैत अछि। सुलोचना, फुलेसरीक वंशज आ गामक स्त्रीसभकेँ संगठित कऽ ‘स्त्री सभक राति-सभा’ स्थापित करैत अछि। पद्माक मामलामे स्त्रीसभ साझा गवाही दैत छथि, आ पतिक परिवारकेँ सामाजिक दबावक सामना करय पड़ैत अछि। ई सभा दहेज, विरासत, मारपीट आ स्त्रीक अधिकारक प्रश्न सुनबाक स्वतन्त्र स्थान बनैत अछि। चर्मकार टोलाक पुरान छौंकीक स्त्री-समूह संस्थागत स्वर पबैत अछि।

अध्याय [–६५] — नकली भूतक जुलूस

खण्ड ० • पूर्वकथा

हरिनन्दनक समय कालीचरण स्वयंकेँ बूढ़बाक आत्मा कहि किराएक नकली भूतसभक जुलूस निकालैत अछि आ भय देखा लोकसँ पाइ वसूलैत अछि। गाम एहि ठगीसँ असमंजसमे पड़ैत अछि। बूढ़बा हरिनन्दनकेँ समझबैत छथि जे सच्चा साक्षी नाम आ स्मृति माँगैत अछि, पैसा वा डर नहि बेचैत। हरिनन्दन ई कसौटी आसपासक गामसभमे प्रचारित करैत छथि। लोकक जागरूकतासँ कालीचरणक धंधा बन्द होइत अछि आ ओ भागि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [-६४] — सुखदेवक बदला

खण्ड ० • पूर्वकथा

भूमिक नव सर्वेक्षणक समय जमींदार रघुबीर सिंह चर्मकार टोलाक जमीनपर दावा करैत अछि। चम्पावती पुरनका सुखदेवक असहायता मोन पाड़ैतहुँ एहि बेर पाठशालाक शिक्षित वकील, स्त्रीसभक राति-सभा आ हरिपतिक पोथीक अभिलेख जुटबैत अछि। अदालतमे प्रमाणक बलपर जमींदारक दावा खारिज होइत अछि। बूढ़बा एकरा सुखदेवक ‘बदला’ कहैत छथि, मुदा प्रतिशोधक अर्थमे नहि, ऐतिहासिक न्याय आ अधिकारक रक्षा रूपमे। स्मृति उपयोगी दस्तावेज बनि उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−६३] — छापाखानाक पहिल पन्ना

खण्ड ० • पूर्वकथा

छापाखानाक आगमनसँ गामक कथा पहिल बेर अनेक प्रतिमे पहुँचबाक सम्भावना बनैत अछि। हरिपति कविक वंशज हरिपति गंगाधर पुरान पोथी लऽ मुद्रणक प्रस्ताव राखैत छथि। बूढ़बा प्रसन्न होइतहुँ कहैत छथि जे कथा एखन जीवित आ अधूरी अछि; एकरा समयसँ पहिने स्थिर पुस्तक नहि बना देल जाय। गंगाधर पोथी सुरक्षित रखबाक आ उचित समयपर प्रकाशित करबाक वचन दैत छथि। हस्तलिखित स्मृतिसँ मुद्रण धरि संक्रमण, प्रकाशनक जिम्मेदारी सहित, प्रस्तुत होइत अछि।

अध्याय [–६२] — राहतक प्रतीक्षा

खण्ड ० • पूर्वकथा

अंग्रेजी शासनक समय अकाल पड़ैत अछि आ सरकारी राहत केन्द्र दूर, पंजीकरण कठिन तथा सहायता विलम्बित रहैत अछि। सावित्रीदेवी स्त्रीसभक संगठन आ शिक्षित युवाक सहयोगसँ साझा अन्न-भंडार आ आवश्यकताक हिसाब शुरू करैत छथि। तीन मास बाद राहत-दल पहुँचितो गाम अकालक मृत्यु टारि चुकल होइत अछि। अधिकारीक समक्ष सावित्रीदेवी स्पष्ट करैत छथि जे सहायता अस्वीकार नहि, मुदा निष्क्रिय प्रतीक्षा सेहो नहि कएल गेल। अध्याय सामूहिक स्वावलम्बनक परिणाम देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–६१] — आकाशक पुच्छलतारा

खण्ड ० • पूर्वकथा

रुद्रनाथक समय आकाशमे चमकदार पुच्छलतारा देखाइ दैत अछि। ज्योतिषी एकरा अशुभ शकुन कहैत छथि, गाममे भय फैलैत अछि। बूढ़बा अनिश्चित भविष्यक अनुभव व्यक्त करैत छथि, मुदा ठोस भविष्यवाणी नहि करैत। रुद्रनाथ अन्न-भंडार, जलस्रोत आ रोगक लक्षणपर सावधानी रखबाक निर्देश दैत छथि। तारा लुप्त भेलाक बाद वातावरण भारी होइत अछि। अध्याय आगि, बाढ़ि आ रोगक लगातार संकटक पूर्वभूमिका बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−६०] — अगिनक राति

खण्ड ० • पूर्वकथा

पुच्छलताराक बाद गर्मीक राति धान-भंडार लग दीप खसला सँ पैघ आगि लगैत अछि। इन्द्राणी घर-घर चेतावनी दैत अछि आ गामक लोक पोखरिसँ पानि अनबाक मानवीय श्रृंखला बनबैत छथि। स्त्रीसभक राति-सभा बचावक मुख्य संगठन बनैत अछि। गामक एक-चौथाई घर जरितो पीपर आ चन्ना गाछीक अधिकांश भाग बचैत अछि। आगिक बाद दीपक सुरक्षित स्थान आ आपातकालीन पानिक नव नियम बनैत अछि। बूढ़बा मानव-संगठनकेँ बचावक असली शक्ति मानैत छथि।

अध्याय [−५९] — दोसर बाढ़ि

खण्ड ० • पूर्वकथा

आगिक तीन मास बाद कमला-बलानमे पैघ बाढ़ि अबैत अछि। इन्द्राणी अपन अनुभवसँ बान्ह मजगूत करबाक, बच्चा-वृद्धकेँ ऊँच स्थान पठेबाक आ ढोल-घंटी द्वारा पहिने चेतावनी देबाक व्यवस्था करैत अछि। बान्हक एक हिस्सा टूटैत अछि, घर आ खेत नष्ट होइत अछि, मुदा पूर्वतैयारीक कारण कोनो प्राण नहि जाइत। इन्द्राणी गौरीक समयक सुभागीक मृत्यु मोन पाड़ैत अछि। बूढ़बा कहैत छथि जे पुरान दुःखसँ सिखल ज्ञान आब जीवन बचा रहल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–५८] — तेसर बिपत्ति

खण्ड ० • पूर्वकथा

बाढ़िक बाद ठहरल गंदा पानिसँ पेटक रोग आ निर्जलीकरण फैलैत अछि। इन्द्राणी तेसर संकटमे स्थानीय जड़ी-ज्ञान, सुरक्षित पानि, स्वच्छता आ सामूहिक देखभालक व्यवस्था करैत अछि। सोनमा आ रत्नाक वंशज अपन लोकज्ञानक सहायता दैत छथि। गाम भयक बावजूद महामारीक सामना करैत अछि। ‘तीन बिपत्तिक बरख’ अगिन, बाढ़ि आ रोगक साझा स्मरण बनैत अछि; मृतकक नामक संग सामूहिक संगठनक अनुभव सेहो अगिला पीढ़ीकेँ हस्तान्तरित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–५७] — साहेबक नोटबुक

खण्ड ० • पूर्वकथा

इन्द्राणीक बाद नन्दकिशोरक समय अंग्रेज अध्येता हेनरी थॉम्पसन गामक भूत, कबड्डी, राति-सभा आ विपत्तिक इतिहासक अध्ययन करैत छथि। प्रकाशित विवरणमे ओ स्थानीय ज्ञानकेँ अन्धविश्वास आ स्त्रीसभक संगठनकेँ अव्यवस्था कहि विकृत रूप दैत छथि। नन्दकिशोर बूढ़बाक प्रेरणासँ दृढ़ प्रतिवाद लिखैत छथि आ गामक दृष्टिसँ गामक अपन भाषामे कथा सुरक्षित रखबाक संकल्प लैत छथि। बाहरी लेखनक विरुद्ध स्वकीय कथा-वाचनक आवश्यकता मुख्य होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–५६] — स्वाधीनताक पुकार

खण्ड ० • पूर्वकथा

लक्ष्मीदेवीक समय स्वाधीनता आन्दोलनक खबर गढ़ नारिकेल पहुँचित अछि। रामाश्रय गामक लोककेँ असहयोग, स्वदेशी आ शांतिपूर्ण प्रतिरोधमे शामिल होबाक आह्वान करैत छथि। लक्ष्मीदेवी स्त्रीसभकेँ संगठित करैत छथि; युवक सूत कातब आ विदेशी वस्त्रक बहिष्कार करैत छथि। प्रशासन किछु आन्दोलनकारीकेँ गिरफ्तार करैत अछि, मुदा गाम संगठित प्रतिरोध जारी रखैत अछि। रामाश्रय बादमे मुक्त भऽ घुरैत छथि। बूढ़बा एहि संघर्षकेँ स्वाभिमान आ नाम बचएबाक नव सामूहिक पारी मानैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–५५] — स्वतंत्रताक भोर

खण्ड ० • पूर्वकथा

१५ अगस्तक स्वतंत्रताक अवसरपर गामक चौपालमे तिरंगा फहरैत अछि आ बच्चा देशगान गबैत अछि। विश्वम्भरनाथ बूढ़बाक संग ई ऐतिहासिक क्षण बाँटैत छथि। बूढ़बा हुलासा, सुखदेव, गौरी आ अन्य बिसरल नामक स्मरण करैत कहैत छथि जे राजनीतिक स्वतन्त्रतासँ जाति, गरीबी, लिंग-अन्याय स्वतः समाप्त नहि होइत। गामक लोक दीप जरा पूर्वजसभकेँ स्वतन्त्रताक समाचार सुनबैत छथि। अध्याय स्वाधीनताक उत्सवक संग अधूरा सामाजिक न्यायकेँ सेहो चिन्हैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−५४] — जमींदारीक अन्त

खण्ड ० • पूर्वकथा

जमींदारी उन्मूलनक बाद गढ़ नारिकेलमे जमीनक सम्बन्ध बदलैत अछि। कमला देवी द्वितीयक समय गरीब परिवारक भूमि-अधिकार बढ़ैत अछि, मुदा पुरान भूमिस्वामीक विरोध आ विवाद सेहो उठैत अछि। किछु परिवार आत्मनिर्भर बनैत अछि; शिक्षा आ नौकरी भूमिसँ बाहरक अवसर खोलैत अछि। बूढ़बा सामाजिक परिवर्तनकेँ नितान्त नव नहि मानि शताब्दियोंक इतिहासक क्रममे रखैत छथि। हुनकर आग्रह अछि जे प्रत्येक परिवर्तनक लाभ आ पीड़ा, दुनूक संग सम्बन्धित लोकक नाम सुरक्षित रहय।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–५३] — बिजलीक पहिल दीप

खण्ड ० • पूर्वकथा

कमला देवीक बाद हरिवंशक समय चौपालमे पहिल बिजलीक बल्ब जरैत अछि। लोक नव इजोतक स्वागत करैत छथि, आ रातिक जीवनक रूप बदलय लगैत अछि। बूढ़बा चेतबैत छथि जे इजोतक संग परछाहिँ सेहो बढ़ैत अछि—नव सुविधा पुरनका स्मृतिक स्थान नहि लेबय। बिजली धीरे-धीरे घर-घर पहुँचैत अछि। हरिवंश आधुनिक बल्बक संग पुरान माटिक दीपकेँ सेहो सम्हारि नव सुविधा आ विरासतक सम्बन्ध बनौने रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–५२] — सीमाक पुकार

खण्ड ० • पूर्वकथा

चीन आ पाकिस्तान दिशाक युद्धक समाचार रेडियोसँ गाम धरि पहुँचैत अछि। विजयकुमार सहित युवा सैनिक सीमापर जाइत छथि; घरसभमे प्रतीक्षा आ चिन्ता पसरैत अछि। बूढ़बा कहैत छथि जे युद्धभूमिमे प्राण गमौनिहारक नाम ओकर गामक स्मृतिमे जीवन पबैत अछि। लौटला पर विजयकुमार अपन अनुभव आ नहि घुरल साथी सभक नाम बच्चाकेँ सुनबैत छथि। एहि प्रसंगमे गामक साक्षी-परम्परा सीमापारक शोक आ राष्ट्रीय इतिहाससँ जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–५१] — हरित क्रान्तिक बीया

खण्ड ० • पूर्वकथा

हरित क्रान्तिक नव बीया आ रासायनिक खादसँ धानक उपज बढ़ैत अछि। सुनयना देखैत अछि जे एहि लाभक संग बाढ़ि-सहिष्णु पुरनका धानक किस्म गामसँ हेराइ रहल अछि। बूढ़बाक संग बातचीतक बाद ओ रत्नाक वंशजक सहायतासँ पुरान बीयाक छोट भंडार बनबैत अछि आ नित वर्ष खेतीमे ओकरा बचौने रखैत अछि। अध्याय उन्नतिक स्वागत करितो जैव-विविधता आ पीढ़ीगत कृषि-ज्ञानक रक्षा जरूरी ठहरबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−५०] — आपातकालक अन्हार

खण्ड ० • पूर्वकथा

१९७५क आपातकालमे सार्वजनिक सभापर प्रशासनिक निगरानी आ निषेध बढ़ैत अछि। सुनयना आ गामक स्त्रीसभ अपन राति-सभा बन्द नहि करैत, बल्कि अन्हारमे सावधानीसँ, फुसफुसाकऽ, न्याय-विषयक बैठक जारी रखैत छथि। पुलिसक पहराक बीच बैठकक जोखिम उभरैत अछि। बूढ़बा स्मरण करबैत छथि जे दमनक काल अस्थायी होइत अछि, मुदा दबायल आवाज फेर उठेब कठिन होइत अछि। रात्रिसभाक निरन्तरता नागरिक साहसक रूप लेबैत अछि।

अध्याय [–४९] — सूखाक बरख

खण्ड ० • पूर्वकथा

सूखाक वर्षमे गोपाल सरकारी राहत-तंत्र आ गामक स्वयंसेवी संगठनकेँ संग लैत छथि। ओ प्रत्येक घरक अन्न-आवश्यकताक हिसाब राखैत छथि, राहतक बँटवारामे छुटल नाम देखैत छथि आ बन्द इनारकेँ फेर खुनबबैत छथि। गाम स्वयं पानिक स्रोत सृजित करैत अछि। गोपाल सरकारी कागचक नकल अपन अभिलेखमे सुरक्षित रखैत छथि, जाहिसँ राहतक हिसाब भविष्यक गवाही बनि रहय। अकालक सामना स्मृति आ प्रशासनिक जवाबदेहीक साझा काज बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−४८] — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

खण्ड ० • पूर्वकथा

गोपालक समय पहिल रेडियो आ टेलीविजन चौपालमे दूर संसारक स्वर आ दृश्य अनैत अछि। बच्चा स्क्रीन दिस आकृष्ट होइत अछि आ मौखिक कथा-गीतक पुरान बैठक कमजोर पड़ैत अछि। कुसुम देखैत अछि जे दूरक बाढ़िक दृश्य गामक लोककेँ अपन बाढ़ि मोन पाड़बैत अछि। ओ माध्यमकेँ अस्वीकार नहि कऽ ओकरे संग पुरान लोककथा सुनबाक बैठक जोड़ैत अछि। अध्याय नव सञ्चारक शक्ति आ सामुदायिक निकटतापर ओकर प्रभाव दुनू देखबैत अछि।

अध्याय [−४७] — खाड़ी देशक बजार

खण्ड ० • पूर्वकथा

खाड़ी देशक श्रम-बजार खुलला सँ गामक युवा विदेश कमाय जाय लगैत छथि। कुसुमक पति रमेश दुबई जाइत छथि आ पत्र-पाइ पठबैत छथि, मुदा पाबनि आ घरेलू जीवनमे हुनकर अनुपस्थिति गहींर लगैत अछि। बूढ़बा चेतबैत छथि जे परदेशमे श्रमक संग अपन भाषा आ पहिचान नहि बिसरब। कुसुम पीपर लग परदेशी लोकक प्रतीक्षाक चिन्ह रखैत अछि। पुरान गिरमिटिया रामसेवकक असमाप्त कथा एहि नव आर्थिक प्रवासनसँ जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–४६] — सद्भावक परीक्षा

खण्ड ० • पूर्वकथा

साम्प्रदायिक अफवाह गाममे हिन्दू-मुस्लिम अविश्वास फैलाबय चाहैत अछि। मुदा कतेको पीढ़ीसँ संग रहैत दुनू समुदायक लोक अपन साझा बाढ़ि, श्रम, पोखरि आ नाम स्मरण करैत एकजुट होइत छथि। कुसुम आ बूढ़बा एक-दोसराकेँ व्यक्ति रूपमे चिन्हबाक महत्त्व रेखांकित करैत छथि। साझा सद्भाव-सभाक आयोजन होइत अछि आ उत्सवमे परस्पर सहभागिता बढ़ैत अछि। अफवाहक मुकाबिला स्मरण आ प्रत्यक्ष मानवीय सम्पर्कसँ कएल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–४५] — उदारीकरणक हवा

खण्ड ० • पूर्वकथा

१९९१क आर्थिक उदारीकरणक बाद बजारमे नवनव वस्तु, निजी रोजगार आ केबल टेलीविजन अबैत अछि। कुसुमक बेटा दिनेश शहरक कम्पनीमे नौकरी पबैत छथि। आधुनिक अवसरक संग गामक पुरनका लय आ सम्बन्धसँ दूरीक अनुभव बढ़ैत अछि। बूढ़बा नव हवाक स्वागत करितो जड़ि मजगूत रखबाक सलाह दैत छथि। दिनेश अपन बच्चाकेँ संग लऽ पीपर लग गामक इतिहास सुनबाक परम्परा जारी रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [-४४] — पहिल कम्प्यूटर

खण्ड ० • पूर्वकथा

प्रतिमाक समय नारिकेल पात पाठशालामे पहिल कम्प्यूटर स्थापित होइत अछि। स्क्रीनपर अक्षर तुरन्त लिखल जा सकबाक चमत्कारसँ बच्चा उत्साहित होइत अछि, मुदा बुजुर्ग पुछैत छथि जे यन्त्र नामक अर्थ सेहो रखि सकत कि नहि। बूढ़बा सूचना आ मनुष्यक पहिचानक बीच भेद करैत छथि। प्रतिमा आ शिष्यसभ लोकगीत, नाम आ पुरनका कथासभ कम्प्यूटरमे टाइप करब शुरू करैत छथि। डिजिटल अभिलेखागारक पहिल आधार तैयार होइत अछि।

अध्याय [−४३] — सुखल होइत धार

खण्ड ० • पूर्वकथा

कमला-बलानक धार सूखब, जंगल कटब आ प्रदूषण बढ़ब गामक ध्यान खींचैत अछि। पहिने बाढ़ि प्रमुख भय छल, आब जलक अभाव नव संकट बनैत अछि। बूढ़बा सत्यनारायणकेँ बुझबैत छथि जे जँ नदी, माटि आ हवा नहि बाँचत तँ नाम सुरक्षित राखनिहार गाम सेहो नहि बाँचत। गाछरोपण, पोखरिक महारक रक्षा आ वर्षाजल रोकबाक काज शुरू होइत अछि। पर्यावरणक रक्षा स्मृति-रक्षाक विस्तार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [-४२] — हाथक फोनक चमत्कार

खण्ड ० • पूर्वकथा

सत्यनारायणक समय मोबाइल फोनक आगमनसँ दूर रहैत बेटा-बेटीक स्वर तुरंत घर पहुँचे लगैत अछि। एक बूढ़ी माए फोनपर विदेश गेल पुत्रक आवाज सुनि भावुक भऽ जाइत छथि। मुदा एकहि संग कात बैसल लोकसँ दूरी सेहो बढ़ैत अछि। अंजलि वृद्धसभकेँ फोन चलब सिखबैत अछि, संगहि आमने-सामने बातचीत आ चौपालक महत्त्वक स्मरण करबैत अछि। नव तकनीककेँ सम्बन्धक सहायक, ओकर विकल्प नहि, मानल जाइत अछि।

अध्याय [-४१] — शहरक बजार

खण्ड ० • पूर्वकथा

सूचना-प्रौद्योगिकीक नौकरी लेल गामक युवा बंगलोर, हैदराबाद आ दिल्ली जाइत छथि। करुणाकर जकाँ शिक्षित युवक आर्थिक उन्नतिक संग गामक भाषा, पोखरि आ पीपरसँ दूरी अनुभव करैत छथि। बूढ़बा शहरक सफलताक विरोध नहि, मुदा जड़िसँ सम्पर्क बनल रहबाक आग्रह करैत छथि। करुणाकर वर्षमे कमसँ कम एक साँझ गामक कथा सुनबाक परम्परा शुरू करैत छथि। प्रवासनक बीच स्मृतिक घर-फेरब ई अध्यायक केन्द्र अछि।

अध्याय [–४०] — सूचनाक अधिकार

खण्ड ० • पूर्वकथा

सूचनाक अधिकार कानूनसँ विभा सरकारी अभिलेखागारसँ गामक पुरान भूमि-कागच प्राप्त करैत अछि। यादवानन्दक छाया-पंजी आ सरकारी रेकर्डक मिलानसँ कतेको बिसरल नामक लिखित आधार भेटैत अछि। जे इतिहास पहिने गामक निजी स्मृतिमे छल, से आब सरकारी कागचक संग खुला प्रमाण बनैत अछि। विभा अभिलेखकेँ एक ठाम सुरक्षित रखैत अछि। अध्यायमे नागरिक अधिकार, पारदर्शिता आ स्मृति-बचावक व्यावहारिक सम्बन्ध बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−३९] — काजक गारंटी

खण्ड ० • पूर्वकथा

ग्रामीण रोजगार-गारंटी योजनासँ गाममे पोखरि, बान्ह आ बाटक काज शुरू होइत अछि। सुरेश मजदूरक हाजिरी, भुगतान आ नामक हिसाब खुला रखैत छथि। मजदूरीक पैसा रुकला पर ओ अभिलेखक आधारपर अधिकारीसँ माँग करैत छथि। गरीब परिवारक हकक रक्षा कागच, संगठन आ सार्वजनिक निगरानीसँ सम्भव बनैत अछि। बूढ़बाक नाम-स्मरणक व्रत रोजगारक पारदर्शी लेखा-जोखामे नव रूप पबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−३८] — इंटरनेटक जाल

खण्ड ० • पूर्वकथा

सस्ता इंटरनेट आ स्मार्टफोन गामक बच्चा-युवाकेँ विश्वसँ जोड़ैत अछि, मुदा झूठ समाचार आ अजनबी सम्पर्कक खतरा सेहो बढ़ैत अछि। नीरजक नेतृत्वमे युवा एक भड़काउ झूठ खबरक स्रोत जाँचिकऽ ओकर मिथ्यात्व उजागर करैत छथि। बूढ़बाक शंख-रजत कथा डिजिटल युगमे पुनः प्रासंगिक होइत अछि। समूह बनाकऽ सूचना परखबाक शिक्षा शुरू होइत अछि। अध्याय देखबैत अछि जे चमकैत स्क्रीनपर सत्य आ भ्रम समान रूपसँ उपस्थित भऽ सकैत अछि।

अध्याय [–३७] — स्क्रीनक पहिल छाया

खण्ड ० • पूर्वकथा

फेसबुक-व्हाट्सएपक प्रसारसँ फोटोचोरी, अफवाह आ ऑनलाइन उत्पीड़न गाममे प्रवेश करैत अछि। एक युवतीकेँ डिजिटल धमकी भेटला पर सपना स्त्रीसभक पुरान राति-सभाकेँ ‘डिजिटल राति-सभा’क रूप दैत अछि। युवती खुलि कऽ अपन बात कहैत अछि, आ साझा समर्थनसँ ओकर भय घटैत अछि। अध्याय सामाजिक माध्यमक अनाम हिंसाक विरुद्ध सामुदायिक गवाही आ स्त्री-एकताक नव रूप देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–३६] — अनदेखल ठगक पहिल आहट

खण्ड ० • पूर्वकथा

नौकरी देबाक फर्जी वेबसाइट आ कम्पनीक झांसामे गामक एक युवक अपन बचत गमबैत अछि। ठगक चेहरा, नाम आ ठेकान देखब कठिन अछि। सपना बूढ़बाक संग एहि अनदेखल ‘नव गोहि’क स्वरूप बुझैत अछि। एहिकेँ रोकबाक उपाय भय नहि, बल्कि कम्पनी, कागच आ भुगतानक सत्यापन मानल जाइत अछि। सपना घर-घर ऑनलाइन ठगीसँ बचबाक चेतना फैलाबय लगैत अछि।

अध्याय [–३५] — देहक बजार खुजैत अछि

खण्ड ० • पूर्वकथा

राजीवक समय विदेशक नौकरीक ठगी मानव-तस्करी आ बन्धुआ श्रमक रूप धरैत अछि। दलाल युवककेँ विदेश लऽ जा पासपोर्ट छीनि लैत छथि; एक परिवारक बेटा लापता रहैत अछि। बूढ़बा समझबैत छथि जे कागच आ प्रस्तावक जाँच जीवन बचाबयक साधन अछि। राजीव युवाकेँ एजेन्ट, करार आ नौकरीक वास्तविकता परखबाक शिक्षा दैत अछि। आर्थिक ठगीसँ मानवीय देहक शोषण धरि कथाक संकट विस्तार पबैत अछि।

अध्याय [-३४] — उज्ज्वलक स्वप्न

खण्ड ० • पूर्वकथा

गरीब परिवारमे उज्ज्वल झाक जन्मपर बूढ़बा असाधारण रूपसँ अशान्त होइत छथि। गामक लोक हुनकर चिन्ता लक्ष्य करैत अछि, मुदा ककरो भविष्यक स्पष्ट जानकारी नहि अछि। दीपाली उज्ज्वलक नाम अभिलेखमे विशेष चिह्नसँ दर्ज करैत अछि; गाम ओकर बढ़ैत बचपनपर ध्यान रखैत अछि। अध्याय उज्ज्वलक आगामी घटनासँ सम्बन्धक पूर्वाभास दैत अछि, स्पष्ट भविष्य बतबैत नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–३३] — वकीलक कोटक छाया

खण्ड ० • पूर्वकथा

नारिकेल पात पाठशालाक प्रतिभाशाली पूर्व-छात्र बटुकनाथ कानून पढ़ि वकील बनैत छथि। आरम्भमे गरीबक पक्ष लेल लड़ैत छथि, मुदा धनवान मुवक्किल आ प्रतिष्ठाक प्रलोभन हुनका धीरे-धीरे अन्यायक बचावक काजमे खींचैत अछि। गामक विधवाक भूमि-विवाद सेहो हुनकर बदलल प्राथमिकता सामने अनैत अछि। दीपाली आ बूढ़बा हुनकर बाल्यक ईमानदारी आ वर्तमान पतन दुनू याद रखैत छथि। कानूनक ज्ञान न्याय वा अन्याय, दुनूक हथियार बनि सकैत अछि।

अध्याय [−३२] — समुद्रपारक साये

खण्ड ० • पूर्वकथा

अभिनव अखबारमे समुद्रपार चलैत डिजिटल वित्तीय ठगीक समाचार पढ़ैत अछि। गामक ठगल पाइ अनेक खाता आ देश पार दूर ‘शीशाक मीनार’ धरि जा रहल अछि। बूढ़बा एहि अन्तर्राष्ट्रीय जालकेँ पहिनेक जल-गोहि आ स्क्रीन-गोहि सँ जोड़ैत छथि। अभिनव युवाकेँ निवेश, रोजगार आ धन-हस्तान्तरणक सन्दिग्ध प्रस्तावसँ सतर्क करैत अछि। गामक स्थानीय कथा वैश्विक संगठित अपराधक छायासँ जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−३१] — सत्यव्रतक मौन

खण्ड ० • पूर्वकथा

सत्यव्रत मेहता बैंकमे बारम्बार अएत-जाएत संदिग्ध खाताक लेनदेन देखैत छथि। पाइ तुरन्त अनेक खातामे बँटि अनचिन्हार दिशामे चलि जाइत अछि। बूढ़बा हुनका उचित समयपर प्रमाण सहित बजबाक सलाह दैत छथि— समयपूर्वक हल्ला नहि, मुदा अन्यायक समय चुप्पी सेहो नहि। सत्यव्रत चुपचाप तिथि, रकम आ खाताक विवरण नोटबुकमे लिखब शुरू करैत छथि। ई मौन आगू गवाहीक आधार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−३०] — गोप कुमारक दस्तावेज

खण्ड ० • पूर्वकथा

गोप कुमार यादवानन्दक छाया-पंजी, पुरनका नक्शा, सरकारी कागच आ नव डिजिटल अभिलेखक एक ठाम संकलन करैत छथि। बूढ़बा एहि काजमे गामक दीर्घ स्मृतिक नव संरक्षक देखैत छथि। पुरनका एकटा बिसरल नाम पंजीमे भेटला पर गोप कुमार ओकरा नव अभिलेखमे जोड़ैत छथि। धीरे-धीरे हुनका बुझाइत अछि जे ई केवल दस्तावेज नहि, सम्पूर्ण गामक जीवनवृत्त अछि। आगूक कठिन घटनाक हेतु ई संकलन आधार बनेबाक तैयारी करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–२९] — चन्द्रपालक सपना

खण्ड ० • पूर्वकथा

मेरठमे गामसँ दूर सम्बन्धित परिवारमे चन्द्रपाल बत्राक जन्म होइत अछि। बूढ़बाक असामान्य प्रतिक्रिया गोप कुमारकेँ चकित करैत अछि—गामक स्मृति किएक दूर बसल परिवार धरि पहुँचि रहल अछि? ओ दूरस्थ सम्बन्धक नामसमूह अभिलेखमे जोड़बाक निर्णय लैत छथि। चन्द्रपाल पहिल प्रविष्टि बनैत अछि। एहि अध्यायमे स्थानक सीमासँ बाहर पसरैत वंश, नाम आ भावी जालक संकेत दियाओल गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–२८] — राघवक कोड

खण्ड ० • पूर्वकथा

नगरमे जन्मल राघवकेँ कम उमरहिसँ कम्प्यूटर आ कोडमे असाधारण प्रतिभा अछि। ओकर क्षमतासँ जटिल गलती पकड़ब आ गरीब परिवारक दस्तावेज सुधारब सम्भव होइत अछि। मुदा गोप कुमार बुझैत छथि जे इएह कौशल नीक वा गलत, दुनू दिशामे चलि सकैत अछि। ओ राघवक नामक कात प्रश्नचिह्न छोड़ैत छथि। तकनीकी दक्षताक नैतिक उपयोगक प्रश्न आगूक घटनाक पूर्वभूमि बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–२७] — आरुणिक निर्माण

खण्ड ० • पूर्वकथा

युवा अभियन्ता आरुणि गामक पुरनका बाढ़ि-कथा आ लोकज्ञानकेँ आधुनिक बान्ह-निर्माणक संग जोड़ैत छथि। ओ नव पक्का बान्ह आ चेतावनीक उपकरण बनबैत छथि; बाढ़िमे बान्ह टिकैत अछि। तथापि आरुणि बुझैत छथि जे निर्माणकेँ दीर्घकालीन रखरखाव, स्थानीय पहरा आ लोकक सतर्कता चाही। ओ प्रत्येक संरचनाक देखभालक योजना बनबैत छथि। आगूक नन्दक अभियान्त्रिकी जीवनक एकटा महत्त्वपूर्ण पारिवारिक आधार एतहि बनैत अछि।

अध्याय [-२६] — देविकाक गीत

खण्ड ० • पूर्वकथा

देविका मोहनक धुन-परम्पराकेँ आगू बढ़ा गामक पुरनका सोहर, समदाउन आ अकालक गीत वृद्ध स्त्रीसभक आवाजमे रिकॉर्ड करैत अछि। ओ मूल स्वर सुरक्षित राखैत नव संगीत-रूप सेहो तैयार करैत अछि। एक वृद्ध गायिकाक निधनक बाद ओकर रिकॉर्ड कएल स्वर अमूल्य स्मृति बनैत अछि। देविका पाठशालामे संगीतक शाखा खोलैत अछि। अध्याय ध्वनि-संग्रहकेँ नाम आ अनुभव सुरक्षित रखबाक माध्यम बनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–२५] — मीराक निजता

खण्ड ० • पूर्वकथा

मीरा डिजिटल निजता आ महिलाक सुरक्षाक क्षेत्रमे काज करैत छथि। स्त्रीक फोटोचोरी, सूचना-बेचाइ आ धमकीक घटना देखैत ओ सपनाक डिजिटल राति-सभासँ कानूनी सहायता जोड़ैत छथि। एक युवतीक फोटो दुरुपयोगक मामलामे सहायता दऽ हुनका अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ होबाक साहस भेटैत अछि। मीरा गामक युवतीसभकेँ सूचना-सुरक्षा आ अधिकारक शिक्षा दैत छथि। निजता आ सम्मान कथाक नव संघर्ष बनैत अछि।

अध्याय [–२४] — निशांतक बैंक

खण्ड ० • पूर्वकथा

निशांत ग्रामीण परिवारकेँ बैंक-खाता, बीमा आ ऋणक सुविधा बुझाबय चाहैत छथि। मुदा बैंकक जटिल भाषा गरीब किसानक लेल नव अन्यायक जाल बनि सकैत अछि, से ओ देखैत छथि। निशांत सरल मैथिलीमे शर्त आ अधिकार बुझबैत छथि। एक वृद्ध किसान अपन पहिल बैंक-खाता खोलि बीमाक लाभ पबैत अछि। वित्तीय समावेशनक अर्थ केवल खाता खोलब नहि, सूचित सहमति आ अधिकारक समझ बनैत अछि।

अध्याय [-२३] — नन्दक जन्म

खण्ड ० • पूर्वकथा

अभियन्ता आरुणिक परिवारमे नन्दक जन्म होइत अछि। चन्ना गाछी आ बूढ़बाक असाधारण शान्ति गामक लोकक ध्यान खींचैत अछि। आरुणि अपन बेटाकेँ सत्य, हिसाब आ नामक महत्त्व सिखेबाक प्रण करैत छथि। बूढ़बा नन्दक नान्हि हाथमे भविष्यक एकटा पैघ जिम्मेदारीक संकेत अनुभव करैत छथि। ई जन्म पछिला दीर्घ स्मृति आ आगामी मुख्य कथाक बीच पात्रगत सेतु बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−२२] — बारह सयक निकट

खण्ड ० • पूर्वकथा

गोप कुमार बूढ़बाक स्मृतिसँ जुड़ल पीढ़ी, नाम आ घटनाक कालक्रम जोड़ैत छथि। हुनका बुझाइत अछि जे शंख-रजतक पुरान शास्त्रार्थसँ वर्तमान धरि लगभग बारह सय बरखक कथा पसरल अछि। एकहि साक्षीक मार्फत अकाल, बाढ़ि, युद्ध आ सामाजिक परिवर्तनक श्रृंखला स्पष्ट होइत अछि। गोप कुमार ई दीर्घ कालक्रम विशेष रूपसँ अभिलेखमे सुरक्षित करैत छथि। ‘बारह सय बरख’ गामक स्मृतिक एक प्रभावशाली समयसूत्र बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [-२१] — अनन्याक प्रश्न

खण्ड ० • पूर्वकथा

युवा शिक्षिका अनन्या नारिकेल पात पाठशालामे उत्तर रटएबाक बदला प्रश्न पुछबाक शिक्षा शुरू करैत छथि। बालक नन्द हुनकर सबसँ जिज्ञासु विद्यार्थी बनैत अछि। शंख-रजतक कथा सुनि नन्द पुछैत अछि जे जँ मनुष्य चानीक सत्यता परखने रहित तँ ठगल नहि जाइत। अनन्या एहि प्रश्नक महत्त्व पहचानैत छथि। सत्यापनक आदति आगू नन्दक अभियान्त्रिकी आ जाँचमे निर्णायक बनय बला अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−२०] — छपाकक पहिल हिसाब

खण्ड ० • पूर्वकथा

अभियान्त्रिकीक छात्र नन्द निर्माण-स्थलपर मजदूरक असुरक्षा, कम मजदूरी आ कागचसँ हेरा गेल व्यक्तिक कथा सुनैत अछि। बूढ़बा कहैत छथि जे पुल केवल नदीक दू कात नहि, नाम आ हिसाबक बीच सेहो बनबाक चाही। नन्द अपन पहिल व्यक्तिगत डायरीमे ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि’ लिखैत अछि। ई ‘छपाकक हिसाब’क आरम्भ बनैत अछि। नन्द निर्माणक संग मजदूरक पहिचान सुरक्षित रखबाक उद्देश्य अपनबैत अछि।

अध्याय [–१९] — सत्यव्रतक निर्णय

खण्ड ० • पूर्वकथा

वरिष्ठ बैंककर्मी सत्यव्रत पुरनका संदेहास्पद लेनदेनक नोटबुक फेर देखैत छथि। तिथि, खाता आ रकम जोड़ला पर समुद्रपार पसरल संगठित वित्तीय जालक रूप उभरैत अछि। ओ प्रमाणक महत्त्व आ सत्य बाहर अनबाक जोखिम दुनू बुझैत छथि। बूढ़बाक 'मौन अन्याय बनि सकैत अछि' वला शिक्षा हुनकर निर्णयकेँ दिशा दैत अछि। सत्यव्रत नोटबुक सुरक्षित रखि उपयुक्त गवाहीक अवसरक तैयारी करैत छथि।

अध्याय [–१८] — अनन्या आ नन्दक भेंट

खण्ड ० • पूर्वकथा

शिक्षा पूरा कऽ नन्द गाम घुरैत अछि आ अनन्याक संग पाठशालाक आधुनिकीकरण तथा डिजिटल विरासत-संग्रहक काज शुरू करैत अछि। अनन्याक लोककथा, पंजी आ शिक्षणक ज्ञान नन्दक तकनीकी कौशलसँ मिलैत अछि। दुनू गामक बिसरल नाम खोजि गोप कुमारक संकलनकेँ नव रूप देबय लगैत छथि। बूढ़बा बुझबैत छथि जे आगूक कठिन समयमे ई साझा काज आवश्यक होएत। एहि भेंटसँ नन्द-अनन्याक कथात्मक सहभागिता मजबूत होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–१७] — शीशाक मीनारक जाल

खण्ड ० • पूर्वकथा

हांगकांगसँ लाउ किन-हंग द्वारा संचालित बहुदेशीय ठगीक जालक समाचार गाम पहुँचैत अछि। नौकरीक झाँसा, निवेशक धोखा आ मानव-तस्करी एकहि संरचनाक अनेक शाखा बनैत अछि। नन्द आ अनन्या एहि जालक सम्बन्ध स्थानीय संकटसँ जोड़ि देखैत छथि। बूढ़बा उज्ज्वल आ बटुकनाथक उदाहरणक संग आगू गामपर पड़एबला खतराक चेतावनी दैत छथि। अनन्या जागरूकताक प्रयास बढ़बैत अछि।

अध्याय [–१६] — बटुकनाथक अंतिम मोड़

खण्ड ० • पूर्वकथा

प्रतिष्ठित वकील बटुकनाथ हरिहरन आब ठगीक बड़का आरोपितक बचावमे तारीख, प्रक्रिया आ गवाहक थकानक उपयोग करैत छथि। हुनकर आर्थिक सफलता गामक पुरान आदर्शक विपरीत ठाढ़ अछि। बूढ़बा नन्दकेँ कहैत छथि जे साक्षीक कर्तव्य दोषी व्यक्तिक नामो सत्य रूपमे राखब अछि—नहिये झूठ क्षमा, नहिये घटना मेटाएब। नन्द बटुकनाथक बचपनक आदर्शसँ वर्तमान पतन धरि पूरा प्रसंग अभिलेखमे लिखैत अछि।

अध्याय [−१५] — चन्द्रपालक खाता

खण्ड ० • पूर्वकथा

सट्टाक ऋणमे डूबल चन्द्रपाल बत्रा अपन बैंक-खाताकेँ कमीशनक लोभमे अनचिन्हार पैसाक आवागमन लेल उपयोग करब दैत अछि। ओ पूर्ण अपराध-जाल नहि बुझि सकैत, मुदा ओकर खाता महत्त्वपूर्ण ‘म्यूल’ बनि जाइत अछि। सत्यव्रत एहि खाताक लेनदेन पकड़ैत छथि। उज्ज्वल, बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ शीशाक मीनारक सूत्र जोड़ब शुरू होइत अछि। सत्यव्रत प्रमाण जमा करब आ सावधानी बढ़बैत छथि।

अध्याय [−१४] — पुलक निर्माण

खण्ड ० • पूर्वकथा

नन्द कमला-बलानपर बनि रहल नव पुलक निर्माणमे नियुक्त होइत अछि। पुल गामकेँ आधुनिक नगरसँ जोड़बाक आशा जगबैत अछि, मुदा निर्माणस्थलपर मजदूरक सुरक्षा, असली नाम आ ठेकेदारक लापरवाही प्रश्न उठबैत अछि। बूढ़बा नन्दकेँ पत्थरक मजगूतीसँ संग श्रमिकक जीवनक हिसाब रखबाक सलाह दैत छथि। नन्द मज़दूरक नाम डायरीमे दर्ज कऽ चेतावनी दैत अछि। इएह स्थल आगूक ‘छपाक’क रंगभूमि बनेबाक संकेत दैत अछि।

अध्याय [–१३] — गोप कुमारक संकलन

खण्ड ० • पूर्वकथा

वृद्ध गोप कुमार यादवानन्दक पंजी, हरिपतिक पोथी, छापाखानाक इतिहास आ डिजिटल दस्तावेज एक ठाम जोड़ैत छथि। शंख-रजतसँ आधुनिक अपराधक संकेत धरि भिन्न प्रसंग एक विस्तृत कथामे जुड़ैत देखाइत अछि। बूढ़बा कहैत छथि जे संग्रह आगामी अन्हार क्षणमे नन्दक लेल दीप बनत। गोप कुमार संकलनक अन्तिम रूप देबाक प्रयत्न तेज करैत छथि, मुदा एक अन्तिम अध्याय एखन अज्ञात अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−१२] — चन्ना गाछीक कँपकँपी

खण्ड ० • पूर्वकथा

हवा शान्त रहितो चन्ना गाछीक गाछ एक संग काँपि उठैत अछि। पुरनका लोक एहन कँपकँपीकेँ पैघ विपत्तिक पूर्वसूचक मानैत छथि। बूढ़बा बतबैत छथि जे गाछीक हर जड़िसँ जुड़ल हुनकर अस्तित्व स्वयं अनिष्टक आहट अनुभव कऽ रहल अछि। नन्द, अनन्या आ गामक लोक सतर्क होइत छथि, मुदा घटना कखन आ कोना होएत, स्पष्ट नहि अछि। अध्याय तीव्र पूर्वाभासपर समाप्त होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–११] — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

खण्ड ० • पूर्वकथा

कँपकँपीक अगिला राति बूढ़बा नन्दकेँ अकेले बजाकऽ अपन दीर्घ स्मृति आ जिम्मेदारी सौंपबाक सन आशीर्वाद दैत छथि। ओ नन्दकेँ स्मरण करबैत छथि जे हुलासा, सुखदेव, गौरी सहित सभ पूर्वजक साहस हुनकर संग अछि। नन्द स्वयंकेँ केवल अभियन्ता नहि, बिसरल नामक साक्षी बुझय लगैत अछि। आगामी संकट अनिश्चित रहितो ई विश्वास ओकर नैतिक आधार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−१०] — पुलपर पहिल छपाक

खण्ड ० • पूर्वकथा

अन्हार, तेज धार आ असुरक्षित कामक बीच पुल-निर्माणस्थलपर एक मजदूर नदीमे खसि जाइत अछि। ‘छपाक’ सुनि नन्द बचाबय कुदैत अछि, मुदा ओकरा बचा नहि पबैत आ असली नामो नहि जनैत। बूढ़बा कहैत छथि जे मृतकक पहिचान मेटब दोसर मृत्यु समान अछि। नन्द ओकर नाम आ एहन अन्य मजदूरक विवरण खोजबाक प्रण करैत अछि। ‘छपाकक हिसाब’ डायरी अब प्रत्यक्ष जाँचक साधन बनैत अछि।

अध्याय [-९] — जाँचक आरम्भ

खण्ड ० • पूर्वकथा

नन्द ठेकेदारक हाजिरी-कागच देखैत अछि तँ नदीमे खसल मजदूरक नकली नाम आ गलत उमेरक जानकारी भेटैत अछि। निर्माण-कम्पनीक धनक रस्ता सेहो संदिग्ध देखाइत अछि। बैंककर्मी सत्यव्रत नन्दसँ भेंट कऽ बतबैत छथि जे ओ एही कम्पनीक खातासभ देखैत रहल छथि। दुनू तय करैत छथि जे नन्द व्यक्तिक नाम आ सत्यव्रत पैसाक स्रोतक जाँच करथि। स्थानीय दुर्घटना विशाल जालक सुराग बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [–८] — प्रमाणक बाहर आएब

खण्ड ० • पूर्वकथा

सत्यव्रत अपन लेनदेनक प्रमाण गोप कुमारक सहयोगसँ पत्रकार आ जाँच-संस्था धरि पहुँचबैत छथि। उज्ज्वलक ऋण, बटुकनाथक कानूनी सहायता, चन्द्रपालक खाता आ लाउ किन-हंगक विदेशस्थित संचालन परस्पर जुड़ि सामने अबैत अछि। अखबारमे खबर छपला पर पीड़ित परिवारकेँ अपन दुःखक पाछाँ संगठित कारणक जानकारी भेटैत अछि। नन्द जानकारी सार्वजनिक करबाक काज जारी रखैत अछि। जाल उजागर होब शुरू भेल अछि, समाप्त नहि।

अध्याय [−७] — आधा-भूतक अनुभव

खण्ड ० • पूर्वकथा

डुबल मजदूरक नामक खोजसँ थाकल नन्द पीपर लग सुति जाइत अछि। स्वप्नमे ओकरा बूढ़बाक वृद्ध, उज्जर-धुँधल आकृति देखाइत अछि, जे बिनु शब्द ओकरा ढाढ़स दैत अछि। जागला पर नन्द अपन दादीसँ बुधुआ, हुलासा आ सुखदेवक कथा पुनः सुनैत अछि। ओकरा शताब्दियोंक स्मृति अपन वर्तमान जीवनसँ जुड़ल बुझाइत अछि। अनुभव सत्य छल कि शोकजनित स्वप्न, ई निर्णायक रूपसँ नहि कहल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−६] — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

खण्ड ० • पूर्वकथा

अत्यन्त वृद्ध गोप कुमार वाचस्पतिक युगसँ वर्तमान धरि गामक घटनाक जीवनभरि तैयार कएल संकलनक अन्तिम पन्ना पूरा करैत छथि। ओ अपन पोथी नन्द आ अनन्याकेँ सौंपैत छथि। एहि धरोहरमे नाम, गीत, न्याय-अन्याय आ दस्तावेजक दीर्घ इतिहास जुड़ल अछि। किछु मास बाद गोप कुमारक देहावसान होइत अछि। हुनकर स्मृतिरक्षाक जिम्मेदारी अगिला पीढ़ीक हाथमे पहुँचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−५] — जालक उजागर होएब

खण्ड ० • पूर्वकथा

महीनोंक जाँचसँ बटुकनाथक स्थानीय सहयोग आ चन्द्रपालक म्यूल-खाताक भूमिका खुलैत अछि। बटुकनाथपर कानूनी कार्रवाई शुरू होइत अछि; चन्द्रपाल सेहो कठिन जाँचक सामना करैत अछि। गामक लोक बटुकनाथक पतन देखिकऽ विजयक सन्तोषसँ बेसी हरायल आदर्शक दुःख अनुभव करैत छथि। लाउ किन-हंगक दूरस्थित मूल शक्ति एखन पकड़सँ बाहर अछि। नन्द अधूरी जीतक प्रमाण सुरक्षित राखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−४] — नामक अन्तिम सूची

खण्ड ० • पूर्वकथा

नन्द गाम-गाम घूमि ठेकेदारक कटल कागच, मजदूरक परिवार आ पहिचान मिलाकऽ मृतकसभक नाम खोजैत अछि। 'तीस नाम, तीन सय लाश'क व्यापक दुःखसँ जुड़ल तीसो नाम 'छपाकक हिसाब'मे परिवार आ जीवनक विवरण सहित दर्ज होइत अछि। एक प्रतीक्षारत माए अपन बेटाक नाम फेर सुरक्षित देखिकऽ कानि उठैत छथि। नन्द बुझैत अछि जे एतय संख्या नहि, मनुष्यक विशिष्ट जीवन सुरक्षित कएल जा रहल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−३] — बारह सय बरखक पूर्णता

खण्ड ० • पूर्वकथा

बारह सय बरखक स्मृतिचक्रक पूर्णताक अमावस्यापर चन्ना गाछीमे सामूहिक कबड्डी होइत अछि। नन्द पहिल बेर खिलाड़ी बनि पुरखाक नाम ऊँच स्वरमे पुकारैत अछि। बूढ़बा अनुभव करैत छथि जे एतेक दीर्घ काल धरि अकेले उठाओल नाम-रक्षाक भार आब समूचा गाम बाँटि रहल अछि। गाछीमे सामूहिक स्वरक संग स्मृति व्यक्तिसँ समुदाय धरि स्थायी रूपसँ स्थानान्तरित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−२] — अगिला पीढ़ीक वचन

खण्ड ० • पूर्वकथा

कबड्डीक बाद नन्द आ अनन्या नव पीढ़ीकेँ पीपर लग एकत्र कऽ नाम आ स्मृतिक रक्षा करबाक वचन लबैत छथि। कियो कम्प्यूटर जानैत अछि, कियो गीत, पंजी वा कानून—सभ अपन कौशलकेँ साझा उद्देश्यसँ जोड़ैत छथि। बूढ़बा आश्वस्त होइत छथि जे हुनकर उत्तरदायित्व आब अकेल नहि रहल। नन्द-अनन्या गोप कुमारक संकलन आ ‘छपाकक हिसाब’ लऽ आगूक कथाक देहरीपर ठाढ़ छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय [−१] — अन्तिम साक्षी

खण्ड ० • पूर्वकथा

एक अन्तिम साँझ बूढ़बा नन्दकेँ पीपर लग अकेले बजबैत छथि। ओ अनुभव करैत छथि जे हुनकर हर नाम, शोक आ संघर्ष भविष्यक कोनो लेखकक हाथेँ लिखल जाएत। ओ लेखककेँ देखबाक दावा नहि करैत छथि, मुदा हुनका निकट अनुभव करैत छथि—सम्भव अछि जे नन्दसँ भेल बातचीत स्वयं कथा-लेखनक एक क्षण हो। एहि अत्यन्त संक्षिप्त अध्यायमे साक्षी, पात्र आ कथा कहनिहारक सीमा एक-दोसराक लग आबैत अछि। खण्ड-० यहीं मुख्य कथाक देहरीपर समाप्त होइत अछि।

समापन टिप्पणी

खण्ड-०क दीर्घ कालक्रम शास्त्रार्थक भ्रम-विवेचनसँ शुरू भऽ हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, बुधुआ, गौरी आ अनेक पीढ़ीक नाम-संरक्षणक संघर्षसँ गुजरैत अछि। कालक्रमे कबड्डी, गीत, पंजी, पाठशाला, राति-सभा,

अध्याय [−१] — अन्तिम साक्षी

खण्ड ० • पूर्वकथा

सरकारी अभिलेख आ डिजिटल दस्तावेज—सभ स्मृति-रक्षाक माध्यम बनैत अछि। अन्तिम अध्यायसभमे नन्द-अनन्या आ गोप कुमारक संकलन एहि दीर्घ परम्पराकेँ मुख्य कथाक देहरी धरि पहुँचबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड १ • मुख्य कथा

अध्याय ० सँ १००

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ० — गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

कथा शुरू होइक तइसँ पहिने उपन्यासकार पाठकक हाथ पकड़ि गढ़ नारिकेल गाम भीतर लऽ जाइत छथि — कोनो नक्शा नहि, गामक आत्मा देखबैत छथि। बा, जे एहि पूरा कथाक मातृ-स्वर छथि, नारिकेल पातक पाठशालाक माटिपर बैसल बच्चा सभकेँ कहैत छथि जे कथा सुनबासँ पहिने गाम सुनू, नहि तँ कथाक आधे अर्थ बुझायत। एहि अध्यायमे चौबीस लोक-प्रसंग एक-एक कऽ अबैत अछि — जन्मक सोहर, बेटी-विदाइक समदाउन, धान-रोपनीक गीत, मृत्युक शोक-गीत, झिझिया आ कबीरक निर्गुण वाणी धरि — जाहिसँ बुझना जाइत अछि जे गढ़ नारिकेलक असली इतिहास पोथीमे नहि, गीत आ स्मृतिमे रहैत अछि। एतय पहिल बेर ओ मूल वाक्य आबैत अछि जे पूरा उपन्यासक जान थिक — “गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि” —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ० — गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

अर्थात् देह नष्ट भऽ सकैत अछि, कागच नाम काटि सकैत अछि, मुदा गामक स्मृति जागल रहलासँ मनुक्ख पूर्ण रूपेँ लुप्त नहि होइत अछि। अध्यायक अन्तमे बिसेसर पासवान, सरयू आ छोटू सन अनाम श्रमिक सभक संकेत सेहो आबि जाइत अछि, जे आगाँ चलि कऽ मुख्य कथाक केन्द्र बनताह। समर्पण-खण्डमे लेखक स्पष्ट कहैत छथि जे ई कथा ओहि अनाम लोक सभकेँ समर्पित अछि जिनकर नाम शिलापर नहि लिखायल, मुदा जिनकर स्वर पानि, पात आ कागचमे अखनो बहैत अछि — एहि तरहें अध्याय ० पूरा उपन्यासक नैतिक बुनियाद राखि दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछी दिनमे साधारण गाछी लगैत अछि, मुदा रातिमे ओतय भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी आ डाइन सभ मिलि एकटा लोकोत्तर कबड्डी खेलैत छथि, जकर निर्णायक बारह सय बरखसँ एक्के डारिपर बैसल बूढ़बा भूत छथि। ई कबड्डी खेल नहि, मुकदमा थिक — जे भूत विपक्षी पारीमे जाइत छथि, हुनका एकटा नाम बचा कऽ घुरबाक होइत अछि, नहि तँ ओ हारि जाइत छथि। एहि अध्यायमे गंगापर बनि रहल एशियाक सभसँ पैघ सड़क-पुलक निर्माणस्थलपर काज करैत जोन-मजदूर बिसेसर पासवानक कथा आबैत अछि — ओ पायापर चढ़ल छल, पएर हुसलक, छपाक भेल, आ गोहि सभक बीच जलसमाधि बनि गेल। साइटक रजिस्टरमे ओकर मृत्युकेँ 'कार्यस्थल छोड़ि अनुपस्थित' लिखि देल जाइत अछि — कागचक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी

पहिल हिंसा एतहि सँ शुरू होइत अछि। एहि तरहें चन्ना गाछीमे मृतक सभक कतारमे बिसेसरक नाम जुड़ैत अछि, आ ओकर नाम पहिल बेर भूतक कबड्डीमे बजैत अछि। एहि अध्यायमे कनिष्ठ अभियन्ता नन्द आरुणि (उपन्यासक पहिल पीढ़ीक मुख्य साक्षी) क परिचय होइत अछि, जे बिसेसरक मृत्युक साक्षी बनि अपन जीवनक दिशा बदलि दैत छथि। नन्द आरुणि नीक चरित्र छथि जे सत्यक पक्षमे ठाढ़ होइत छथि; बिसेसर पासवान निर्दोष श्रमिक छथि जिनकर मृत्यु आ नाम-हरण एहि पूरा कथाक बीआ थिक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २ — दहिन कातक गाम

ई अध्याय नन्द आरुणिक वंश-इतिहास खोलैत अछि। बा, जे पूरा उपन्यासक मातृ-चेतना छथि, अपन बक्सासँ एकटा फाटल गमछा निकालैत छथि जकरा हुनका कोनो गुमनाम नामक चेतावनी बुझाइत अछि — गमछा ओहि हाथक थिक जे दिन भरि सीमेण्ट ढोइत अछि आ रजिस्टरमे 'अनुपस्थित' लिखि देल जाइत अछि। एहि पातसँ पूरा गामक कथा खुजैत अछि — कोना बा क ससुर लत्तड़ ठाकुरक घर १८८५ मे एकटा नेना कलित जनमल छल, जे तीक्ष्ण बुद्धिक छल आ अंग्रेजी-कागचक भाषा तेजीसँ सिखलक। कलित बड़ जल्दी बुझि गेल छल जे जे अक्षर पढ़ैत अछि, ओ खेत नहि जोतैत, मुदा जे अक्षर लिखैत अछि, ओ जोतल खेतक मालिक बदलि सकैत अछि — ई वाक्य आगाँ चलि कऽ पूरा उपन्यासक कागच बनाम सत्यक द्वन्द्वक बीआ बनि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २ — दहिन कातक गाम

जाइत अछि। लत्तड़ ठाकुर अपन बेटा कलितकेँ चेतौने छलाह जे भीजल कागचक गन्ध सूँघब सिखिहऽ — जँ गन्ध पैसाक हो तँ हस्ताक्षर नहि करब। एहि पुरान चेतावनीक स्मृति पीढ़ी दर पीढ़ी नन्द आरुणि धरि पहुँचैत अछि, आ जखन ओ सरकारी मृत्यु-सूचीमे संख्याक गन्ध पैसाक पबैत छथि, तखन बुझि जाइत छथि जे ई सूची नहि, गोहिक मुँह थिक। अध्यायक अन्तमे नन्द अपन डायरीमे 'जलसमाधि' शब्द अपनहि उगैत देखैत छथि, आ ओकर नीचाँ लिखल भेटैत अछि — 'गढ़ नारिकेलसँ आरम्भ कर' — जे संकेत करैत अछि जे आगाँक पूरा गवाही गामसँ शुरू होयत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ — छपाकक हिसाब

नन्द आरुणिक मृत्यु-सूची सम्बन्धी आवेदन परियोजना-दफ्तर पहुँचैत अछि, जतय प्रधान लिपिक दिवाकर लाल आ परियोजना-प्रमुख शशिभूषण देव समेत विदेशी परामर्शदाता विक्टर हाल्डेन सभ मिलि मृत्यु-संख्याकेँ 'सीमित' राखय चाहैत छथि। नन्द जखन मजदूर-टोलामे जाइत छथि तँ बिसेसर पासवानक पत्नीसँ भेंट होइत छन्हि, जे कहैत छथि जे जँ ओ चलि गेल होइत तँ अपन जूता लऽ जाइत — जकर पएर एतय नहि, ओकर जूता एतहि। नन्द ओहि जूताकेँ साक्ष्य मानि दफ्तर लऽ जाइत छथि, मुदा दफ्तर ओकरा 'साक्ष्य' मानबासँ इनकार करैत अछि, आ जल्दिये नन्दकेँ खर्च-पानिक लिफाफा देल जाइत अछि जकरा ओ नाकपर लगा कऽ 'गन्ध पैसाक अछि' कहि फेरा दैत छथि — अपन पिता-पितामहक शिक्षाकेँ

अध्याय ३ — छपाकक हिसाब

जीवैत। बरखाक राति काजक दबावमे तेसर पाया धरासाइत भऽ जाइत अछि आ एहि बेर एक स्त्री-मजदूर सरयूक मृत्यु होइत अछि, जकर नाम आधिकारिक रूपेँ अस्तित्वहीन छल किएक तँ ओ अपन मृत पतिक नाम पर काज करैत छलि। नन्द एहि अन्यायसँ स्तब्ध भऽ अपन डायरीमे 'छपाकक हिसाब' शीर्षक सँ नाम गिनब शुरू करैत छथि — बिसेसर, सरयू, छोटू आदि — आ धीरे-धीरे तीस सरकारी नाम बनाम तीन सय वास्तविक जलसमाधिक भेद उजागर होइत अछि। एहि अध्यायमे शशिभूषण देव (परियोजना-प्रमुख, भ्रष्ट), दिवाकर लाल (उदासीन लिपिक) आ विक्टर हाल्डेन (विदेशी परामर्शदाता, संवेदनहीन) सभ नकारात्मक भूमिकामे स्थापित होइत छथि, जखन कि नन्द आरुणि आ बिसेसरक पत्नी न्यायक पक्षमे ठाढ़ रहैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ — छपाकक हिसाब

छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश

नन्द आरुणि गामक बच्चा सभकेँ मृतक मजदूर सभक नाम पढ़ब सिखबैत छथि — बिसेसर, सरयू, मुनिया, धनेसरी, भोलटुन आदि — आ धीरे-धीरे गामक सामूहिक स्मृतिमे तीन सयक गिनती जीवित भऽ उठैत अछि, जखन कि सरकारी कागचपर तीसक संख्या ठहरल रहैत अछि। नन्द वकील देवकीनन्दन चौबेक माध्यमसँ अदालतमे याचिका दाखिल करैत छथि, जाहिमे मृतक-सूचीक पुनरीक्षण आ स्त्री-मजदूर सभक मान्यताक माँग रहैत अछि। एतय पहिल बेर सत्यव्रत मेहता (तखन कनिष्ठ सरकारी अधिवक्ता) आ बटुकनाथ हरिहरन (विदेशी ठेकेदारक पक्षमे काज करैत वरिष्ठ अधिवक्ता) क प्रवेश होइत अछि — सत्यव्रत बिसेसरक जूता देखि एक क्षण विचलित होइत छथि, जखन कि हरिहरन न्यायकेँ धीमा करबाक कलामे निपुण छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश

एतहि चन्द्रपाल बत्रा नामक एकटा छोट दलाल पहिल बेर देखाइत अछि, जे बादमे बड़का डिजिटल-ठगीक सरगना बनत — ओ नन्दकेँ 'पहुँच' बेचबाक प्रस्ताव दैत अछि जकरा नन्द ठुकरा दैत छथि। मुआवजा-वितरण-दिवसक फोटोमे बिसेसरक पत्नीक धूप-सिकुड़ल आँखिकेँ मुस्कान बना कऽ छापल जाइत अछि, जे मीडिया-हेरफेरक पहिल संकेत थिक। अध्यायक अन्तमे नन्दक स्थानान्तरण भऽ जाइत अछि, मुदा ओ बिसेसरक पत्नीसँ जूता लऽ अपन संघर्ष जारी राखैत छथि — ई अध्याय न्याय आ अन्यायक दुनू पक्षक चरित्रकेँ स्थायी रूपसँ स्थापित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ — तारीखक गोहि

खण्ड १ • मुख्य कथा

नन्द आरुणिक मुकदमा जिला अदालतमे शुरू होइत अछि, मुदा ई अध्याय देखबैत अछि जे कोना अदालतक तारीख स्वयं एकटा गोहि बनि जाइत अछि जे धीरे-धीरे साक्षी, गवाह आ परिवार सभकेँ चिबबैत रहैत अछि। सत्यव्रत मेहता, सरकारी वकील रहितहु, फाइलमे स्त्री-मजदूर सरयूक अँगूठाक निशान देखि विचलित होइत छथि आ अपन मनमे प्रश्न उठबैत छथि जे कानून सत्यकेँ नहि, सुविधाकेँ प्रमाणित करैत अछि की। बटुकनाथ हरिहरन आ चन्द्रपाल बत्राक बीच पहिल बेर 'संकेत' (यानि घूसक प्रतिशत) शब्दक जन्म होइत अछि, जे आगाँ चलि कऽ बत्राक पूरा अपराध-जीवनक आधार बनत। नन्द प्रत्येक तारीखपर बिसेसरक जूता, सरयूक चूड़ी आदि वस्तु-साक्ष्य लऽ अदालत जाइत छथि, आ अन्ततः ई वस्तु

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ — तारीखक गोहि

अदालतक मालखानामे दर्ज होइत अछि — आधा जीत, आधा हार। नन्दक दफ्तरमे चोरी भऽ जाइत अछि आ महत्त्वपूर्ण कागच गायब भऽ जाइत अछि, मुदा नन्द बा क सलाहपर पहिनहि सँ दोसर प्रति बना कऽ राखने रहैत छथि — 'नदी एक प्रति नहि राखैत' सिद्धान्त एतहिसँ स्थापित होइत अछि, जे आगाँ चलि कऽ पूरा उपन्यासक गवाही-रक्षाक तरीका बनि जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे सत्यव्रत मेहता नन्दकेँ चुपचाप सलाह दैत छथि जे केवल अदालतपर भरोसा नहि करू, बहुत प्रति बनाउ — ई सत्यव्रतक चरित्रक पहिल नैतिक मोड़ थिक।

अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स

खण्ड १ • मुख्य कथा

कथा अचानक अमेरिकाक हार्वर्ड विश्वविद्यालय पहुँचैत अछि, जतय ईरा आरुणि (नन्द आरुणिक वंशज, विदेशमे पढ़ल-लिखल युवती) एकटा 'वैश्विक उपक्रम आ मानवीय गरिमा' विषयक सभामे बैसल छथि। मंचपर विदेशी कम्पनी ब्रूम-काल्डरक प्रमुख एडवर्ड ब्रूम नैतिकतापर भाषण दऽ रहल छथि, जखन कि ओहि कम्पनीक पुरान अवतार वैह विदेशी ठेकेदार छल जकर पुलपर बिसेसर पासवान मरने छलाह। ईरा साहससँ प्रश्न पुछैत छथि जे १९७८ क ओहि भारतीय पुल-परियोजनामे कतेक मजदूर मरल छल, मुदा ब्रूम आ आयोजिका एलिना ग्रेव्स प्रश्नकेँ 'व्यापक पक्ष' कहि टारि दैत छथि। एहि अध्यायमे एशिया-प्रशान्त सलाहकार राघव सोमानी (जे बादमे 'राघव सिग्नल' नामसँ अपराध-जालक सूत्रधार बनत) क

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स

परिचय होइत अछि, जे ईराक प्रश्नकेँ खतरा मानि चन्द्रपाल बत्राकेँ सतर्क करैत अछि। ईरा सभाक बाद अपन दादीक पुरान ई-मेल पढ़ैत छथि जाहिमे नन्द आरुणिक स्कैन कएल पन्ना संलग्न अछि, आ बुझि जाइत छथि जे गढ़ नारिकेल कोनो साधारण गाम नहि, एकटा अदालत थिक। दोसर दिस दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता पुरान पुल-फाइलक मूल अभिलेख मंगाबय लेल नोट लिखैत छथि। ई अध्याय तीन शहर — हार्वर्ड, दिल्ली, आ अपराध-जालक भीतरी दुनिया — केँ एक्कहि धागामे बान्हैत अछि, आ ईरा आरुणिकेँ न्यायक पक्षक नव पीढ़ीक प्रतिनिधिक रूपमे स्थापित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७ — श्वासक भाव

खण्ड १ • मुख्य कथा

२०२० क महामारीक समय गढ़ नारिकेल आ शहर दुनू ठाम एकटा नव संकट आबैत अछि। नन्द आरुणिक बेटी अनन्या (जे आगाँ चलि कऽ मुख्य बाल-पात्री बनतीह) छोट अछि, आ बा फोनपर सलाह दैत छथि जे रोगसँ मरनिहार, दवा बिनु मरनिहार सभक नाम अलग-अलग लिखू, नहि तँ सभ 'अन्य' बनि जाइत अछि। एहि अध्यायमे गोप कुमार (एकटा शांत आन्तरिक-लेखा-जाँच अधिकारी, जे उपन्यासक अगिला मुख्य अन्वेषक बनताह) क परिचय होइत अछि — ओ 'जीवनरेखा बायो-लॉजिस्टिक्स' कम्पनीक फाइलमे ऑक्सीजन आ दवाक बिलमे गड़बड़ी पकड़ैत छथि, आ 'एन-आर-७७' कोडक पाछाँ पुरान पुल-परियोजनाक सम्बन्ध देखि चौंकि जाइत छथि। ओहि फाइलक अन्तमे ब्रूम-काल्डर समूहक नाम भेटैत अछि — ई सिद्ध होइत अछि जे

अध्याय ७ — श्वासक भाव

विदेशी कम्पनी पुल सँ लऽ कऽ महामारीक दवा धरि एके तरहक शोषण करैत अछि। एहि बीच गढ़ नारिकेलक उज्ज्वल झा (बेरोजगार युवक) एकटा ऑनलाइन जुआ-ऐपमे फँसय लगैत छथि, आ ओकर बहिन देविका साह चेतौनी दैत छथि जे ई खेल नहि, जाल थिक — देविका एहि पूरा उपन्यासक सभसँ सजग आ साहसी युवा पात्री सिद्ध होइत छथि। गोप कुमारक अधिकार कम्पनी द्वारा घटा देल जाइत अछि किएक तँ ओ बहुत प्रश्न पुछैत छथि, मुदा ओ पहिनहिये गुप्त प्रति बना लेने रहैत छथि। अध्यायक अन्तमे एकटा रहस्यमय, नामरहित सूचनादाता ईशान दत्त (जे सरकारी रिकॉर्डमे मृत घोषित छथि) गोपसँ पहिल बेर सम्पर्क करैत छथि आ सलाह दैत छथि जे कागचकेँ तीन भागमे बाँटि सुरक्षित राखू।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि

ई अध्याय उज्ज्वल झाक दुखद अन्तक कथा थिक। उज्ज्वल 'राजा-राति' नामक जुआ-ऐपमे धीरे-धीरे डूबैत जाइत छथि — पहिने छोट जीत, फेर पैघ हार, फेर ऋण। चन्द्रपाल बत्रा आ राघव 'सिग्नल' सोमानी एहि पूरा जालक पाछाँ छथि, जे युवक सभकेँ पहिने जितबैत छथि, फेर फँसा कऽ म्यूल-अकाउण्ट बनबैत छथि — गामक मुन्ना पासवान सन निर्दोष युवक अनजानमे अपन बैंक-खाता एहि जालमे देऽ बैसैत छथि। उज्ज्वलकेँ अन्ततः 'डिजिटल अरेस्ट'क नकली धमकी देल जाइत अछि — फर्जी पुलिस-अधिकारी फोनपर कहैत छथि जे हुनकर खातामे आतंकी लेन-देन भेल अछि, आ लाजसँ भयभीत उज्ज्वल घरक गहना-बचत सभ लुटा दैत छथि। देविका साह ओकरा बचयबाक प्रयास करैत छथि, मुदा उज्ज्वल बलानक किनारे

अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि

आत्महत्या कऽ लैत छथि — ई पूरा उपन्यासक सभसँ मार्मिक मृत्युक अछि, जकरा पुलिस 'आत्महत्या' आ बैंक 'संदिग्ध लेन-देन' कहि टारि दैत अछि। ओहि राति उज्ज्वलक आत्मा चन्ना गाछी पहुँचैत अछि, मुदा स्क्रीनक भ्रममे ओ अपन नाम नहि बजा पबैत छथि, यावत् हुलासी (लोकोत्तर स्त्री-भूत) ओकरा माथ छूइ कऽ 'अंक छोड़, नाम बाज' कहि सम्हारैत छथि। देविका उज्ज्वलक फोन गोप कुमार धरि पहुँचबैत छथि, जाहिसँ पूरा जाल — मुन्ना पासवानक खाता, राघव सोमानी, लाउ किन-हंग (हांगकांगक विदेशी सूत्रधार, पहिल बेर एतय नामसँ आबैत छथि) आ बटुकनाथ हरिहरन धरि — स्पष्ट भऽ जाइत अछि। एहि अध्यायमे बत्रा आ हरिहरन नकारात्मक चरित्रक रूपमे आर पैघ होइत छथि, जखन कि गोप

अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि

कुमार आ देविका साह प्रतिरोधक नव आवाज बनि उभरैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९ — देहक बाजार

एहि अध्यायमे उज्ज्वलक फोनसँ भेटल दोसर फाइलक माध्यमसँ एकटा आर भयावह जाल उजागर होइत अछि — देह-व्यापारक जाल, जे 'सूर्य-आश्रय सेवा समिति' नामक नकली दान-संस्थाक आड़मे चलैत अछि, जकर संचालिका मालविका ग्रीन छथि। मधुबनीक गरीब लड़की फूलमति (फाइलमे मात्र 'एफ०एम०' लिखल) कैँ वृद्धा-सेवाक झूठा नोकरीक बहाना दऽ शहर आनल जाइत अछि आ फोन छीनि, कर्जक धमकी देऽ एकटा होटलक कोठरीमे बन्द कऽ देल जाइत अछि, जतय बटुकनाथ हरिहरन सन प्रभावशाली लोक सभ राति बितबैत छथि। फूलमति कागचपर अंगूठा लगाबय इनकार करैत छथि — अपन मृत नानीक चेहरा शीशामे देखि ओकरा हिम्मत भेटैत छन्हि। एहि बीच शोधकर्मी सौम्या रामनाथन ओही होटलमे 'महिला गरिमा संवाद' सभामे

अध्याय ९ — देहक बाजार

आमंत्रित छथि, आ गोप कुमार ईशान दत्तक गुप्त सॉफ्टवेयरक माध्यमसँ फूलमतिक खतराक बारेमे सौम्याकेँ सचेत करैत छथि। सौम्या साहससँ पत्रकार सभकेँ 'लाइव करू' कहि फूलमतिक कोठरीक दरबज्जा तोड़बाबैत छथि, आ फूलमति सार्वजनिक रूपसँ अपन असली नाम पुकारि निकलि आबैत छथि — ई एहि पूरा उपन्यासक पहिल स्पष्ट, सार्वजनिक जीत थिक जतय एकटा पीड़िता अपन नाम फेर पाबि लैत छथि। चन्ना गाछीमे हुलासी एहि जीतकेँ अपन नामसँ जोड़ि फूलमतिक पारीमे दौड़ैत छथि, जे संकेत करैत अछि जे मृतक आ जीवित स्त्री सभक संघर्ष एक्के धागामे बान्हल अछि। अध्यायक अन्तमे गोप कुमार अपन फाइलमे भय, भुगतान, आ संरक्षण नामक तीन कॉलम बनबैत छथि, जाहिमे बत्रा, सोमानी, लाउ

अध्याय ९ — देहक बाजार

किन-हंग आ हरिहरनक नाम भुगतान/संरक्षणमे, आ सत्यव्रत मेहताक नाम एक अलग, प्रश्नचिह्न-सहित स्तम्भमे राखल जाइत अछि — ई सङ्केत करैत अछि जे व्यवस्थाक भीतरसँ सेहो न्यायक आवाज उठि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल

चन्ना गाछीक भूत-कबड्डीक रेखा बदलि जाइत अछि — पनिडुब्बी भीजल केशसँ चमकैत रेखा खिंचैत छथि, जकरा पार करैत भूतक छुपाओल स्मृति खुजि जाइत अछि। हुलासी अपन इनारक राति देखि साहससँ कहैत छथि — 'ई हमर लाज नहि, गामक झूठ अछि।' दिल्लीमे गोप कुमारक फाइलमे मृणालिनी आर्या (मीरा) नामक नव पात्र प्रवेश करैत छथि — प्रवासी टेक्नोलॉजी-कानून सलाहकार, गढ़ नारिकेल वंशक दूरस्थ नातिन, अदिति नामक स्त्रीसँ प्रेम करैत छथि। चन्द्रपाल बत्राक गिरोह मीरा-अदितिक निजी सन्देश, यात्रा-रसीद चोराइ ब्लैकमेल करैत अछि — 'गोपक फाइलसँ दूर रहू, नहि तँ परिवार-मीडिया-विश्वविद्यालय सभ ठाम भेजि देब।' मीरा डेराइत छथि, मुदा अदिति फोन कऽ हिम्मत दैत छथि —

अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल

'प्रेमक प्रमाणकेँ अपराधक कागच बनओनिहार बेसी डेरपोक होइत अछि।' मीरा गोपकेँ प्रमाण दैत छथि, शर्त राखैत छथि — 'मुद्दा समलैंगिकता नहि, निजता पर हमला आ अपराधी जाल बनाउ।' बटुकनाथ हरिहरनक दफ्तरमे बत्रा-राघव सोमानीक बैसकीमे रणनीति बनैत अछि — 'पहिने बदनाम करू, डेटा अन्तिम हथियार।' मेजपर रहस्यमय पानिक बूंदसँ 'नाम' शब्द उभरैत अछि — बत्रा डेरा कऽ पोछि दैत छथि। गामसँ बा पुरान वंशावलीमे मीराक नाम लिखल पबैत छथि — 'जे कुलक बेटी अपन नाम अपने लिखैत अछि, ओकरा समाज काटि नहि सकैत।' मीरा साहससँ बयान लिखैत छथि — 'अपराध ई अछि जे अपराधी सभ निजताकेँ भय बनेबाक हथियार बनबैत अछि' — अदिति अपन नाम हटायब अस्वीकार करैत छथि। भोरे मीरा

अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल

भिडियो बयान रिकॉर्ड करैत छथि, उज्ज्वल झाक मृत्युकेँ सेहो एहि जालसँ जोड़ैत छथि। रहस्यमय इन्फॉर्मर ईशान दत्त प्रकट भऽ मूल फोन सुरक्षित रखबाक चेतावनी दैत छथि। अध्यायक अन्तमे चन्ना गाछीमे भूतक रेखा माटिपर मेटा जाइत अछि, मुदा भीतरक रेखा स्थिर रहैत अछि — 'नाम, प्रेम, गवाही' तीन दीप फेर जरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११ — धनक कारी नदी

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 3

चन्ना गाछीक कबड्डी मैदान खाता-बहीमे बदलि जाइत अछि — भूतक पाँवक जगह खाता-नम्बर चमकैत अछि। ईशान दत्त दोसर स्मृति-डिवाइस लऽ आबि 'धारा' नामक धनक जाल खोलैत छथि — अपराधी अपन खाता सभकेँ नदीक नाम (कमला, बलान, गंगा, मेकांग) दैत अछि, आतंक-वित्तकेँ 'प्रार्थना' कोडनाम दैत अछि। गोप कुमार स्क्रीनपर पुल-परियोजना घोटाला, कोरोना-कालक नकली आपूर्ति, ऑनलाइन जुआ, म्यूल खाता, डिजिटल अरेस्टक साक्ष्य पढ़ैत छथि। चन्द्रपाल बत्रा (मेरठसँ एल.एल.बी., बटुकनाथ हरिहरनक संरक्षणमे) आ राघव सिग्नल सोमानी (हांगकांगक सरगना लाउ किन-हंगक एजेंट) क भूमिका स्पष्ट होइत अछि। देविकाकेँ पता चलैत अछि जे हुनकर भाइ उज्ज्वलक आत्महत्या असलमे धकेलाओल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११ — धनक कारी नदी

मृत्यु छल — ओकर पैसा पैंतीस फर्जी खातामे बँटल गेल। मृणालिनी (मीरा) सभकेँ जोड़ैत छथि — 'डरक मालिक एक्के अछि।' ईशान चारि 'बाँध' तोड़बाक योजना बतबैत छथि — अदालत, सार्वजनिक स्मृति, विदेशक मंच, आ लोकक लाज। सत्यव्रत मेहताकेँ रहस्यमय भीजल लिफाफा भेटैत अछि — 'तीस नाम नहि, तीन सय। ऋण नहि, धक्का। व्यापार नहि, कारी नदी।' गोप तीन प्रति स्मृति-डिवाइस बनबैत छथि — एक मेहताक लेल, एक विदेशमे इरा आरुणिक लेल, एक चन्ना गाछीक पीपरक खोखरमे सुरक्षित राखबाक लेल — 'जँ सभ अदालत मुँह फेरि ले, तखन गामक भूत सभ जानथि जे धनक नदी कतयसँ बहल छल।' अध्यायक अन्तमे बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'आब कबड्डीमे खाता, फाइल, स्क्रीन, अदालत, विदेशक मंच

अध्याय ११ — धनक कारी नदी

सभ पार करय पड़त' — पीपरक ब्रह्मा चारू मुखसँ कहैत छथि 'नाम। प्रमाण। स्मृति। साहस।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात

पीपरक खोखरमे राखल तेसर प्रति डिवाइस हरियर उजास दैत अछि। गोप कुमार, सौम्या, रमैय्या, मृणालिनी, देविका तीन प्रतिक बँटवारा तय करैत छथि — पहिल सत्यव्रत मेहता लग (पहिनहि पहुँचि चुकल), दोसर विदेशमे हार्वर्डक ईरा आरुणि लग, तेसर पीपरक खोखरमे सुरक्षित। सत्यव्रत मेहता सरकारी शपथपत्रमे झूठ (सुरक्षा-निरीक्षण पूर्ण, परिवार अनुपलब्ध) पढ़ि क्रोधक बदला लाज अनुभव करैत छथि, डायरीमे लिखैत छथि — 'सरकारक पक्ष आ राज्यक आत्मा। जँ दुनू अलग होइत अछि, विधिकर्ता ककर साथ देत?' ईरा आरुणि (गढ़ नारिकेल वंशक, अमेरिकाप्रवासी) केँ अज्ञात प्रेषकसँ 'गढ़ नारिकेलक नाम' फाइल भेटैत अछि — लत्तड़ ठाकुर, कलित, नन्द आरुणिक नाम, पुलक फोटो, एडवर्ड

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात

ब्रूमक भाषण-अंश सहित। ओ निर्णय करैत छथि जे ब्रूमक एथिक्स-व्याख्यानमे तीक्ष्ण प्रश्न पूछती। ईशान दत्त चारिम दिशा — डार्क-जाल — बतबैत छथि, स्पष्ट करैत छथि जे अपराधक पद्धति नहि लिखल जाएत, केवल सत्यक अस्तित्व दर्ज होएत, पीड़ितक गरिमाक सीमा सहित। बटुकनाथ हरिहरन स्वप्नमे अदालतक फर्श गोहिक पीठ बनल देखि डेरा जाइत छथि; जागि चन्द्रपाल बत्रा आ राघव सिग्नलसँ बात करैत छथि — तीन प्रति बाहर भेल जानि सभ अस्थिर होइत छथि। बत्राक फोनपर अकारण उज्ज्वलक फोटो चमकैत अछि, 'ऋण नहि, धक्का' लिखल उभरैत अछि। गोप स्वप्नमे भूतक कबड्डीमे गेंदक जगह डिवाइस पासिंग होएत देखैत छथि, जागि हर फाइलमे पीड़ित-गरिमा आ प्रकाशन-सीमाक सूची जोड़ैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात

छथि। अध्यायक अन्तमे पीपरक पातक नस सभ मिलिकऽ नक्शा बनबैत अछि — गाम, दिल्ली, हार्वर्ड, हांगकांग एक रेखामे जुड़ैत अछि — ब्रह्मा कहैत छथि 'दुनियाँ गामक भीतर आबि गेल।' कारी नदीपर पहिल बेर नारिकेल पात डूबबाक बदला तैरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण

खण्ड १ • मुख्य कथा

भोरे सत्यव्रत मेहता अपन सरकारी शपथ-पत्रमे झूठ पहचानि पुरान टाइपराइटरसँ स्पष्टीकरण-नोट लिखैत छथि। अदालतक कक्ष पाँचमे मामला 'श्रमिक परिवारजन एवं अन्य आ राज्य एवं अन्य' पुकारल जाइत अछि। बटुकनाथ हरिहरन आ चन्द्रपाल बत्रा प्रक्रियागत बाधा (ग्राह्यता, निजता, राष्ट्रीय सुरक्षा) उठाबि मामला लम्बा करय चाहैत छथि, न्यायाधीश तिरस्कारसँ कहैत छथि 'अहाँ एक्के साँसमे सात दरबाजा बन्द कऽ देलहुँ।' मेहता उठि कहैत छथि — 'राज्य जँ अपूर्ण अभिलेख पर टिकैत अछि, तँ ओ असत्य पर टिकैत अछि' — प्रमाणक संरक्षणक माँग करैत छथि, नाम-सूची खुलल रहबाक आग्रह करैत छथि ('सत्य पूर्ण अन्हारमे राखल जाए तँ ओ फेर ओहि लोकक हाथमे चलि जाइत अछि जिनका

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण

सँ बचाओल जा रहल अछि')। न्यायाधीश संवेदनशील निजी विवरण सीलबन्द राखि नाम-सूची, मृत्यु-स्थिति आ अभिलेख-संरक्षण खुलल रखबाक आदेश दैत छथि। मेहता मृतकक नाम अदालतमे पढ़बाक अनुमति माँगैत छथि — पहिल तीस सरकार-मान्य नाम, फेर 'मृत्यु वा अनुपस्थितिपर राज्यक अभिलेख मौन' वला दोसर सूची पढ़ैत-पढ़ैत गला रुकि जाइत छन्हि। देविका साह पक्षकार बनि गोप कुमारकेँ शेष नाम पढ़बाक अनुमति दियबैत छथि — गोप स्थिर स्वरमे नाम पढ़ैत छथि, हर नामक बाद विराम दाह-संस्कार जेकाँ लगैत अछि। कक्षमे तालीक बदला भारी सन्नाटा छाइत अछि। न्यायालय अभिलेख-सुरक्षा, गवाह-धमकी पर तुरन्त सुनवाई, स्वतंत्र लेखा-परीक्षाक आदेश दैत अछि — हरिहरनकेँ बुझाइत छैक ई

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण

हार नहि, 'पहिल दरार' अछि। हार्वर्डमे ईरा आरुणिकेँ संदेश भेटैत छन्हि 'नाम अदालतमे पढ़ल गेल' — ओ आँखि मूनि गढ़ नारिकेलक कबड्डीक ध्वनि सुनैत छथि। हांगकांगमे लाउ किन-हंगक नक्शापर गढ़ नारिकेलक हरियर बिन्दु पहिल बेर चमकैत अछि — 'छोट गाम सभसँ बेसी खतरनाक होइत अछि, कारण ओतय नाम मुँहजुबानी जीवित रहैत अछि।' अध्यायक अन्तमे अदालतक खाली फर्शपर एकटा नहि सुखयवला गोहिक दाँत-सन पानिक दाग रहि जाइत अछि, जकर भीतर एक नाम भोर धरि झिलमिलाइत रहैत अछि।

अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता

अदालतसँ बाहर निकलल सभकेँ जूतामे रहस्यमय भिजल माटि-गंगारेतक गन्ध लागल भेटैत अछि। सत्यव्रत मेहता सरकारी गाड़ी अस्वीकार कऽ पैदल चलैत छथि। बटुकनाथ हरिहरन पत्रकार सभक बीच 'प्रक्रिया अपना रास्ता चलत' कहैत छथि, चन्द्रपाल बत्राक फोनपर रहस्यमय संदेश 'घर साफ' चमकैत अछि। सभ निर्णय करैत छथि जे पन्द्रह दिनक अगिला तारीख धरि गढ़ नारिकेल घुरल जाए। रेलयात्रामे बा सौम्याकेँ कमला-बलानक रूपकात्मक कथा सुनबैत छथि — 'शांत नदीक अपराधो चुपचाप चलैत अछि।' गामपहुँचि ईरा आरुणिकेँ बा माथपर हाथ राखि आशीष दैत छथि। निशांत गोपकेँ भुगतान-मार्गक तीन-स्तरीय जानकारी (जयपुर-गुरुग्राम-सिंगापुर-हांगकांग) दैत छथि। साँझमे गामक लोक चुपचाप पीपरक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता

छाँहमे जुटैत अछि — कोनो मंच नहि, केवल लालटेन। गोप माटि छूइ कहैत छथि — 'जकर नाम कागचमे नहि, ओकर नाम आइ माटिपर राखब।' ईशान दत्त तीन पोटली (मजदूर-सूची, डिजिटल-ठगी-सूची, विदेशी पैसा-मार्ग) अनैत छथि — 'ई सभ नामक अस्थि अछि।' बा कहैत छथि 'अस्थि पानिमे देल जाइत अछि', गोप उत्तर दैत छथि 'एहि बेर पानिमे नहि, गाछक जड़िमे' — सभ प्रमाणक प्रति पीतलक डिब्बामे नारिकेल गाछक जड़ि लग गाड़ल जाइत अछि, गवाहीक रोपनीक रूपमे। रातिमे चन्ना गाछीक कबड्डीमे स्पष्ट नाम सुनाइ दैत अछि — सरयू, नगीना, उज्ज्वल, हुलासी। आधी राति गाछक जड़िसँ नीला प्रकाश निकलैत अछि, जाहिमे अक्षर बनैत-टूटैत रहैत अछि — ईराक हार्वर्ड-पुस्तिकाक एडवर्ड ब्रूमक

अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता

चेहरा धुँधला भऽ मजदूरक फाटल हथेलीमे बदलि जाइत अछि। भोरमे नारिकेल पातपर सूक्ष्म अक्षर देखार होइत अछि — बा कहैत छथि 'गाछ मरत तँ बीज रहत।' जिला-शहरमे हरिहरन सपनामे 'कबड्डी' कहबाक बदला 'तारीख' बजैत छथि, बत्राकेँ 'नाम हटाओ' संदेश अबैत अछि, मुदा खिड़कीबाहर हिलैत पातपर ओकरे नाम चमकैत देखार होइत अछि। अध्यायक अन्तमे भोरक चिरैयाक बोलीकेँ सभ 'घोषणा' जकाँ सुनैत छथि — कमला-बलानसँ कुहासामे कतेको आकृति गाम दिस आबैत देखार होइत अछि — असली घर-घुराव तखन पूर्ण होएत जखन कागचमे अनुपस्थित लोक न्यायालयमे उपस्थित कहल जाएत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ — नामक जल

सत्यव्रत मेहता अदालतमे सरकारी कागचक बदला घरसँ अनल एकटा सूखल नारिकेल-पात लऽ कऽ पहुँचैत छथि, जाहिपर ओहि सभ नामक सूक्ष्म अक्षर छल जे सरकारी सूचीमे नहि छल। ओ सात सूची क्रमशः पढ़ैत छथि — तीस आधिकारिक नाम, फेर 'अनुपस्थित' कहल गेल, 'कार्यस्थल बाह्य मृत्यु' कहल गेल, जाली हस्ताक्षरवला, मुआवजा-लूट, बदलल नाम, आ कखनो जन्मे नहि देल गेल मजदूरक नाम। पाठक्रममे गोप कुमारक डिजिटल-ठगीक सूची सेहो पढ़ल जाइत अछि (उज्ज्वल झा आदि), आ मृणालिनी स्वयं ठाढ़ भऽ अपन धमकी आ ब्लैकमेलक अंश सार्वजनिक करबाक अनुमति दैत छथि — 'गरिमा हमर जीवनमे अछि, हुनकर धमकीमे नहि।' न्यायाधीश एतिहासिक आदेश दैत छथि: विशेष अन्वेषण, स्वतंत्र लेखा-परीक्षा,

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ — नामक जल

चन्द्रपाल बत्राक खाता स्थगित, बार-काउन्सिल अध्यक्ष (हरिहरन) क आचरणपर नोटिस, आ अगिला सुनवाई मात्र सात दिनमे। हरिहरन धँसि जाइत छथि, चन्द्रपाल बत्राक फोन बन्द भऽ जाइत अछि, लाउ किन-हंग अपन स्क्रीन बन्द कऽ दैत छथि, आ एडवर्ड ब्रूमक फाउण्डेशनसँ हार्वर्डक प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स अपन अगिला व्याख्यान रद्द कऽ छात्र सभसँ एकटा अनुपस्थित करायल गेल नाम अनबाक अनुरोध करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत

अदालतक फैसलाक खबर पानिक माध्यमसँ (स्त्री सभक लोटामे नाम चमकि कऽ) गढ़ नारिकेल पहुँचैत अछि, आ ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डी नहि, एकटा लोकोत्तर 'अदालत' बैसैत अछि, जतय न्यायाधीश कोनो एक देह नहि — जे बात सभसँ बेसी बेर दबाओल गेल हो, वएह न्यायाधीश होइत अछि। पुकार-पुकार कऽ मृतक सभ उपस्थित होइत छथि: पहिने जलसमाधि-प्राप्त मजदूर (सरयू, मखना, बिसेसर), फेर स्क्रीनसँ मरल युवक (उज्ज्वल, जे देविकाकेँ अपन फोन बढ़ाइत अछि, मुदा देविका कहैत छथि 'तोहर नाम हम लैत छी, फोन नहि'), फेर देह-व्यापार आ निजताक शिकार (मीरा अपन मौनसँ गवाही दैत छथि), फेर कोरोना-कालक मृत। अपराधी सभ (हरिहरन, बत्रा, राघव, लाउ, ब्रूम) स्वयं नहि आबैत छथि,

अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत

मुदा हुनकर 'छाह' (फाइल, स्क्रीन, मिटाओल संदेश, प्रतिशत-चिह्न, भिजल पोडियम रूपमे) उपस्थित होइत अछि। पीपरक ब्रह्मा चारू मुँहसँ एकटा काव्यात्मक 'फैसला' सुनबैत छथि — जे देह खेलक, ओ आजीवन नाम ताकत; जे तारीख बेचलक, ओकर निन्न अधूरा सुनवाई बनत; आदि। भोरमे हरिहरन, बत्रा, ब्रूम, लाउ — सभकेँ अपन-अपन घरमे कोनो छोट अलौकिक संकेत (टपकैत पानि, अपठनीय संदेश, भीजल भाषण-पन्ना) भेटैत अछि। ई खण्ड-१ क पहिल पैघ प्रतीकात्मक 'चक्र' क समापन थिक।

अध्याय १७ — जीतक शोक

अदालती जीतक बादो बटुकनाथ हरिहरनकेँ चैन नहि — ओकर तकियाक नीचाँ राति-राति पानि टपकैत रहैत अछि। हरिहरनक सम्मान-समारोह होइत अछि, मुदा भाषणक बीच माइकसँ बेर-बेर 'तारीख' शब्द सुनाइ दैत छैक। असली मोड़ ई अछि: गोप कुमार, सौम्या, देविका, मीरा, ईरा, आरुणि — केओ अदालत नहि घुरैत छथि, कोनो अपील नहि, कोनो प्रेस-वार्ता नहि; ओ सभ 'काज पर' निकलि गेल छथि। देविका पोखरि-घाटपर बैसि युवक सभकेँ डिजिटल-अरेस्ट-ठगीसँ बचबाक उपाय सिखबैत छथि; मीरा आ सौम्या स्त्री सभक गोल-सभा शुरू करैत छथि जतय 'लाज अपराधीक, पीड़ितक नहि' क सिद्धान्त राखल जाइत अछि; ईरा 'स्मृति-घर' नामक अभिलेख बनबय लगैत छथि। चन्द्रपाल बत्रा बुझैत अछि जे ई मौन शोरसँ बेसी

अध्याय १७ — जीतक शोक

खतरनाक अछि — पुलिस-वकील-जज कीनल जा सकैत अछि, मुदा जन-जागरणकेँ नहि। हरिहरन अपन जीतक भोजमे अकेलापन अनुभव करैत छथि — जीत केँ हारल लोकक पराजित चेहरा चाही होइत अछि, जे नहि भेटैत। अध्यायक अन्तमे हरिहरन अदालतक सीढ़ीपर ठाढ़ भऽ मनहि-मन 'घुरू, अपील करू, लड़ू' कहैत छथि, मुदा दूरसँ बच्चाक आवाज आबैत अछि — 'सरयू... उज्ज्वल... नाम काटब नहि' — जकरा ओ कान झाँपिकऽ सुनैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८ — खाली अदालत

खण्ड १ • मुख्य कथा

चारिम दिन अदालत खुलैत अछि, मुदा याचिकाकर्ता पक्षसँ केओ उपस्थित नहि होइत — उपस्थिति-स्तम्भ खाली रहैत अछि, जे हरिहरनक अनुसार 'अवमानना' थिक, मुदा सत्यव्रत मेहता कहैत छथि जे अनुपस्थितिक अर्थ सदिखन उपेक्षा नहि होइत, कखनो लोक अदालतसँ बाहर वएह काज करैत अछि जे अदालत नहि कऽ सकल। जज साहेबक कलमपर एक बून्द पानि खसि 'सरयू' अक्षर बनबैत अछि, आ ओ फेर स्थगन दऽ दैत छथि। बरामदापर हरिहरन आ चन्द्रपाल बत्रा योजना बनबैत छथि जे सत्यव्रत, गोप, सौम्या, देविका, मीरा, ईरा सभपर मानहानि/अवमानना/विदेशी-फंडिंगक आरोप लगाओल जाय, मुदा वकील बेर-बेर बताबैत छथि जे कोनो सार्वजनिक बयान, कोनो आरोप नहि भेल अछि जकरापर मुकदमा चलय — ओ सभ केवल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८ — खाली अदालत

विकल्प बना रहल छथि, आरोप नहि। एम्हर गढ़ नारिकेलमे चन्ना गाछी तर एकटा अनौपचारिक पाठशाला लगैत अछि, जतय पाथरपर नाम लिखल जाइत अछि; देविका युवक सभकेँ आ मीरा-सौम्या स्त्री सभकेँ संगठित करैत छथि। हांगकांगक छाह (लाउ किन-हंग) चन्द्रपालकेँ स्पष्ट कहैत अछि — 'हमरा भारतक कानून नहि, पैसा चाही; जँ गामक लड़की फोन काटय सिखा रहल अछि तँ तोहर कानूनी जीत हमर लेल हार अछि।' अध्यायक अन्तमे भोरे एकटा सफाइकर्मी अदालतक बेंचपर धूलमे अपन बाबूजीक नाम लिखैत अछि (जे कहियो 'काम छोड़ि चलि गेल' लिखल गेल छल) — ई खाली अदालतक पहिल स्वतःस्फूर्त नागरिक-अभिलेख थिक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९ — नामक अभिलेख

गढ़ नारिकेलमे विधिवत् रूपसँ एकटा जन-अभिलेख (गामक अपन 'नाम-पंजी') आरम्भ होइत अछि। सरयू देवीक नातिन सभसँ पहिने अबैत छथि, चूड़ीक टुकड़ा आ धुँधला फोटो लऽ कऽ; मीरा हरदी-काजर-गंगाजलसँ स्याही बनबैत छथि; आरुणि पहिल नाम लिखैत छथि — 'सरयू देवी'। एकर बाद कन्हैया पासवान (जकर मृत्युक बादो हस्ताक्षर चलैत रहल छल), मंसूर अली, फुलो मंडल, गनेशी सदा आदि दर्जनों नाम जुड़ैत छथि। एतय चारि नियम स्थापित होइत छथि: (१) सरकारी नामक बदला घरमे पुकारल नाम लिखल जाय, (२) अभिलेख केवल पुरान जलसमाधिक नहि, स्क्रीन/देह-बाजार/ब्लैकमेल/कोरोना-सभक पीड़ितक हो, (३) जे नाम नहि चाहय, ओकर लेल केवल चिह्न रहत ('एक युवती, दरभंगा' आदि), (४) मौनक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९ — नामक अभिलेख

स्थान सेहो सुरक्षित राखल जाय। ईरा एकर एक प्रति विदेश पठयबाक प्रस्ताव रखैत छथि, मुदा बा कहैत छथि पहिल प्रति एतहि रहत — 'जकर माटि नाम सुनलक, ओकरा पहिल अधिकार।' राघव सिग्नलक लोक फोटो लेबय अबैत अछि, मुदा हर मोबाइलक कैमरा पानिसँ भरि जाइत अछि। रातिमे भूत सभ स्वयं एक-एक पात पढ़ि 'हम उपस्थित' कहैत छथि। भोरे सत्यव्रत मेहताकेँ सेहो अपन सरकारी आवासक बरामदापर रहस्यमय ढंगसँ एकटा नारिकेल पात भेटैत छन्हि, जकरा पढ़ि ओ बुझि जाइत छथि जे अगिला सुनवाई अदालतमे नहि, देशक स्मृतिमे होयत। अध्याय अन्तमे नारिकेलक पातसँ घंटी-सन आवाज उठैत अछि — बा घोषणा करैत छथि, 'नामक पाठशाला खुलि गेल।'

अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

नामक अभिलेख बनलाक दोसर दिन चन्ना गाछीक पातक कात पहिल अनौपचारिक कक्षा बैसैत अछि — कोनो भवन नहि, कोनो सरकारी मान्यता नहि। देविका साह उज्ज्वल झाक पूरा कथा पाठक रूपमे सुनबैत छथि (जीत, फेर हार, फेर कर्ज, फेर 'डिजिटल अरेस्ट'क धमकी), आ निशांत झा (विदेशमे फिनटेक क्षेत्रमे काज कएल युवक) बच्चा सभकेँ बुझबैत छथि जे स्क्रीनक गोहिक चारि पएर होइत अछि — लालच, भय, लाज, अकेलापन। बा एकरा पुरान डाइनक चालसँ जोड़ैत छथि — 'घरमे नहि कहू' कहनिहार डाइन आब स्क्रीन बनि गेल अछि। मीरा आ देविका मिलि दू नियम स्थापित करैत छथि — 'अकेला नहि रहू' आ 'लाज अपराधीक हो'। निशांत सार्वजनिक रूपसँ स्वीकार करैत छथि जे ओ स्वयं पहिने एहि उद्योगक भाग

अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

छल — 'जतेक जानि सकैत छलहुँ, ओतेक नहि जानलहुँ, मुदा आब भागब नहि।' गामक एक युवक मुन्ना पासवानक कजिन बैंकमे खाता खोलएसँ ठीक पहिने रुकि जाइत अछि आ पाठशाला पहुँचि जाइत अछि — जकरा 'मूर्ख' नहि, 'बचल' कहल जाइत अछि। बटुकनाथ हरिहरन पाठशालापर जनहित-याचिकाक धमकी दैत छथि, मुदा बुझैत छथि जे पाठशालाक कोनो पंजीकरण, अध्यक्ष, भवन नहि अछि — ककरा नोटिस देल जाय? डाकिया एकटा नोटिस अनैत अछि जकरापर बा नारिकेल पातक रेशा सँ 'हस्ताक्षर' कऽ दैत छथि। अध्यायक अन्तमे नारिकेलक पातपर स्वतः एक पंक्ति उगैत अछि — 'जे भयकेँ बाँटि दैत अछि, से भय नहि रहैत' — आ गामक नव अभिवादन बनि जाइत अछि: 'अकेला तँ नहि छी?'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१ — निजताक शपथ

नामक अभिलेखमे उज्ज्वलक नाम लिखेला बाद देविकाकेँ बुझना जाइत अछि जे समाज मृतककेँ क्षमा नहि करैत, बल्कि ओकर मृत्युकेँ ओकरे दोष बना दैत अछि। सौम्या रामनाथन दिल्लीसँ घुरि आबि एकटा औपचारिक 'निजताक शपथ' आयोजित करैत छथि — मीरा (मृणालिनी), जकरा प्रेम-सम्बन्धक कारण ब्लैकमेल कएल गेल छल, आब खुलिकऽ ठाढ़ होइत छथि। सौम्या माटिपर वृत्त खिंचि 'निजता', देविका 'ठगी', आ मीरा 'लाज' लिखैत छथि। मुन्ना पासवान (म्यूल-अकाउण्टक शिकार) आ दू आर स्त्री (एक नर्स, एक बैंक-कर्मी, जिनका धमकी भेटल छल) अपन कथा साझा करैत छथि। शपथक केन्द्रीय वाक्य बनैत अछि — 'लाज अपराधीक होएत, पीड़ितक नहि।' ईरा विदेशसँ प्रसारण देखैत छथि आ बुझैत छथि जे

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१ — निजताक शपथ

'नैतिकता ओहि ठाम जन्मैत अछि जतय डेरायल लोक एक-दोसराकेँ दोष देब बन्द करैत अछि।' निशांत सेहो स्वीकार करैत छथि जे ओ भुगतान-नलीक भीतर लोकक भय-लालच-अकेलापनक हिसाब राखल जाइत देखने छल। उज्ज्वलक माए पहिल बेर सार्वजनिक रूपसँ बजैत छथि — अपन बेटाकेँ अकेला छोड़लाक अफसोस स्वीकार करैत। शपथक अन्तिम पंक्ति बनैत अछि — 'हम ककरो प्रेमकेँ ओकरा विरुद्ध प्रमाण नहि बनए देब।' अध्यायक अन्तमे बच्चा सभ पाठशालाक देबालपर लिखैत छथि — 'चुप्पी ठगक पहिल कमाइ अछि।'

अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण

एडवर्ड ब्रूम कैम्ब्रिजमे फेर नैतिकतापर भाषण दैत छथि। ईरा एहि बेर सोझे प्रश्न नहि पुछैत, बल्कि सभागारक बाहर सीढ़ीपर बैसि अपन लैपटॉपसँ गढ़ नारिकेलक सीधा प्रसारण जोड़ैत छथि — जतय अनन्या आ बच्चा सभ नामक अभिलेख पढ़ि रहल छथि ('सरयू देवी' — 'उपस्थित', 'उज्ज्वल झा' — 'उपस्थित' आदि)। ई आवाज किछु तकनीकी गड़बड़ीक माध्यमसँ भीतर सभागारक स्क्रीनपर सेहो पहुँचि जाइत अछि — पुलक फोटोक बदला भीजल पातपर लिखल नाम देखार होइत अछि। ब्रूम घबरा जाइत छथि; प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स उठिकऽ सभागारसँ बाहर चलि जाइत छथि। ईरा जानि-बूझिकऽ चुप रहैत छथि — मंचपर प्रश्न पूछब विवाद बनैत अछि, नाम पढ़ब सत्य। भाषणक बाद ब्रूमकेँ गलियारामे

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण

नारिकेल-पातक अपठनीय छाह देखार होइत अछि। एलिना ईरासँ पूछैत छथि 'हम की कऽ सकैत छी', आ ईरा उत्तर दैत छथि — 'मंच छोड़ू; जखन दोसर बेर ओ सभ नैतिकता बाजय आबथि, मंच खाली छोड़ि दियौ, खाली मंच हुनका सभक भाषणसँ बेसी बाजत।' अध्यायक अन्तमे ब्रूम अपन कम्पनीक नाम बदलि दैत छथि, मुदा गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ हँसैत छथि — 'नाम बदललासँ गोहिक दाँत नहि बदलैत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज

खण्ड १ • मुख्य कथा

अदालती जीतक बादो बटुकनाथ हरिहरनक दुआरपर केओ नहि अबैत — ने क्षमायाचना, ने समझौता, ने नव मुकदमा। ई खाली दुआर ओकरा शोरसँ बेसी डेराबैत अछि। ओ स्वयं गढ़ नारिकेल पहुँचैत छथि, बिनु घोषणाक, ई सोचिकऽ जे कोनो मुखिया वा दलाल ओकर पएर लागत। मुदा गामक सीमापर बच्चा सभ चूनासँ 'स्क्रीनक गोहि' क चित्र बना रहल छथि। चन्ना गाछी लग कोनो मंच-बैनर नहि, केवल पात सुखाइत बच्चा सभ। एकटा बालिका ओकरासँ पुछैत छथि — 'अहाँक नाम लिखल अछि? जे नाम अपने केँ बचा लैत अछि, ओकरा लिखबाक जरूरत नहि।' अनन्या ओकरा 'प्रतीक्षा' सिखबैत छथि — जे ओ अदालतमे लोककेँ सिखौने छल, आब स्वयं सिखय पड़ैत छैक। देविका, मीरा, गोप कुमार सभ एक-एक कऽ ओकरा स्पष्ट बुझा

अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज

दैत छथि जे हुनका सभक भाषा बदलि गेल अछि — 'केस' नहि 'नाम', 'मुआवजा' नहि 'मर्यादा'। आरुणि समझौताक बदला नारिकेल गाछ लग नब खोह बनएबामे व्यस्त भेटैत छथि। बटुकनाथ 'समझौता' क खाली कागच देखबैत छथि, मुदा अनन्या ओकरा नाव बना पोखरिमे छोड़ि दैत छथि — नाव भीजिकऽ डूबि जाइत अछि, किएक तँ 'जे कागच नाम बिना होइत अछि, पानि ओकरा राखैत नहि।' साँझमे ओ बुझि जाइत छथि जे ई लोक हारल नहि, मुक्त अछि — आ मुक्त लोकक दलाल कतहु नहि भेटैत। घुरैत काल गाड़ीमे बैसल ओकर जीतक कागच हाथमे नरम पड़ि जाइत अछि, आ स्याहीक बीच एकटा नव वाक्य उभरैत अछि — 'अपील ककर विरुद्ध?'

अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू

भोरे चन्ना गाछी लग बच्चा सभ भूत सभक जगहपर स्वयं कबड्डी खेलय लगैत छथि, मुदा नियम पलटल अछि — रेखा पार करय बला बच्चा कोनो मृतकक नाम बजबैत अछि, आ ओकर साँस बचि जाइत छैक। सोमित (मुन्नाक भतीजा) उज्ज्वलक नाम बजबैत अछि; एकटा नेनी सरयूक नाम बजबैत अपन हथेली माटिपर राखि दैत छथि — देविका एकरा 'निरक्षरक हस्ताक्षर, जे पृथ्वी करैत अछि' कहैत छथि। एहि बीच बटुकनाथक अलमारीमे राखल जीतक कागचपर स्वतः एक पंक्ति उग आबैत अछि — 'लोक-कार्य आरम्भ।' चन्द्रपाल बत्रा स्वीकार करैत छथि जे विगत सात दिनमे नब म्यूल-अकाउण्ट खुलब घटि गेल अछि; एकटा बूढ़ी स्त्री डिजिटल-अरेस्ट कॉलपर हँसिकऽ फोन काटि दैत छथि। लाउ किन-हंगक स्क्रीनपर गढ़ नारिकेलसँ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू

'लाल रेखा' (प्रतिरोधक बीज) पसरैत देखार होइत अछि। सत्यव्रत मेहताकेँ एकटा फाइल भेटैत अछि — 'सामुदायिक अभिलेखक कानूनी स्थिति' — आ ओ लिखैत छथि, 'स्मृतिपर राज्यक स्वामित्व नहि होइत।' साँझमे अन्तिम कबड्डीमे बड़का लोक सभ सेहो उतरैत छथि — देविका, मीरा, निशांत, सौम्या, गोप, आरुणि सभ अपन-अपन संकल्प बजबैत छथि। बूढ़बा भूत स्वयं रेखा पार कऽ घोषणा करैत छथि — 'उपन्यास फेर शुरू।' हुलासीक हाथ पहिल बेर दृश्यमान होइत अछि, आ ओ माटिपर 'जा' अक्षर लिखैत छथि। रातिक अन्तमे नारिकेल गाछसँ खसल एकटा फलक भीतरसँ खाली स्थानमे एकटा पात निकलैत अछि, जाहिपर लिखल अछि — 'जतय नाम पढ़ल जाए, ओतय कथा समाप्त नहि होइत।' आरुणि अपन कॉपी अनन्याकेँ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू

थमा दैत छथि — 'अहाँ लिखू' — आ अनन्या कथाक अगिला पहिल पंक्ति स्वयं लिखैत छथि। अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे धूर्त सभ समाप्त नहि भेल अछि (ऐप फेर चलैत अछि, लाउ नव कम्पनी खोलैत अछि) — ई दुष्टक अन्त नहि, दुष्टकेँ चिन्हबाक शुरुआत थिक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २५ — मोन टांगल

अदालती जीतक बादो बटुकनाथ हरिहरनक अलमारीमे बन्द जीत-आदेशसँ राति भरि 'खड़खड़ाहट' सुनाइ दैत छैक; कागचक किनारपर रेत जमि 'मोन टांगल' अक्षर बना दैत अछि। ओ रातिये चन्द्रपाल बत्राकेँ फोन करैत छथि आ पुछैत छथि जे नाम-पाठ रोकबाक कोनो कानूनी उपाय अछि की — चन्द्रपाल स्वीकार करैत छथि जे नाम पढ़ब अपराध नहि। समांतर रूपसँ चन्द्रपालकेँ अपन डिग्रीक फ्रेमक काँचपर 'पहिल म्यूल' उग आबैत अछि, जकरा ओ अपन बिसरल पहिल शिकार (मेरठक एक छात्र) क स्मृतिसँ जोड़ैत छथि। राघव सिग्नलक फोनपर डिजिटल 'पात' झरैत अछि; लाउ किन-हंग अपन स्क्रीनपर गढ़ नारिकेलक बिन्दुपर अटकल संकेतक देखैत छथि आ 'नाम कीनू' क आदेश दैत छथि, जकर अर्थ राघव नहि बुझि पबैत

अध्याय २५ — मोन टांगल

छथि। एडवर्ड ब्रूम प्रोफेसर एलिना ग्रेव्सकेँ आधा-लिखल, आधा-मेटाओल संदेश भेजैत छथि। सत्यव्रत मेहता राति गढ़ नारिकेलक नामक अभिलेख पढ़ैत छथि आ लिखैत छथि — 'राज्य नागरिकक स्मृतिपर मालिक नहि।' रातिमे सभ धूर्तकेँ अलग-अलग सपना आबैत अछि (अनन्याक सपनामे बटुकनाथ 'काज पर' गेल प्रतिवादी खोजैत छथि; देविकाकेँ उज्ज्वल सपनामे भेटैत छथि; मीराकेँ निजता बिकाइत बजारक सपना)। बटुकनाथक अलमारीमे कागचपर एकटा धूसर छाह — ओकर अपन थाकल प्रतिरूप — उभरैत अछि। अध्यायक अन्तमे अनन्या बुझि जाइत छथि जे 'झूठक मोन गाछीमे आबि चुकल अछि' — सभ धूर्तक मोन देहसँ पहिने गढ़ नारिकेल दिस चलि पड़ल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

बटुकनाथ हरिहरन सभ बैसकी रद्द कऽ रेलसँ (हेलिकॉप्टरक बदला) गढ़ नारिकेल जेबाक निर्णय लैत छथि — बरखोंक बाद पहिल बेर रेलमे। यात्रा शुरू होइते डिब्बामे एकटा रहस्यमय बूढ़ चढ़ैत छथि, जे टिकटक बदला नारिकेल पात देखबैत छथि, आ जकरा टिकट-परीक्षक देखिये नहि पबैत (बादमे स्पष्ट होइत अछि जे ओ बूढ़बा भूत स्वयं छथि, वेश बदलने)। यात्राक क्रममे बूढ़ बटुकनाथसँ गहन प्रश्न पुछैत छथि — 'नाम पढ़ने छी?', 'कागच प्रमाण होइत अछि, आ कागच अनुपस्थिति सेहो' — आ बटुकनाथक बचपनक एक स्मृति (हुनकर पिता द्वारा एकटा गरीब मुवक्किलक नाम मोन राखबाक शिक्षा) जगाबैत छथि। बूढ़ जीतक आदेशसँ 'घूसक गन्ध' सूँघि लैत छथि। राति एकटा अज्ञात हाल्टपर बूढ़

अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

उतरैत छथि, आ बटुकनाथक 'छाह' सेहो हुनके संग उतरि जाइत अछि — प्रतीकात्मक रूपसँ ओकर मोन देहसँ अलग भऽ गढ़ नारिकेल पहुँचि जाइत अछि। भोरे जंक्शनपर बूढ़ फेर भेटैत छथि, हुनकर एड़ी धरतीसँ एक अंगुर ऊपर देखार होइत अछि। गामक कच्चा बाटपर बटुकनाथकेँ जूता खोलि नंगे पएर चन्ना गाछीमे प्रवेश करय पड़ैत अछि — 'एतय जूता नहि, अहंकार खोलल जाइत अछि।' अध्यायक अन्तमे ओ चन्ना गाछी भीतर पहुँचि जाइत छथि, जतय नाम-पाठ चलिये रहल अछि, आ अनन्या ओकरासँ पुछैत छथि — 'नाम पढ़ब?' — प्रश्नक उत्तर अगिला अध्यायमे बाकी रहि जाइत अछि।

अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

चन्द्रपाल बत्रा गढ़ नारिकेल नहि जेबाक निर्णय लैत छथि — ओकर साम्राज्य तीन स्क्रीनवाली काँचक कोठरी अछि (गैम्ब्लिंग डैशबोर्ड, म्यूल-अकाउण्ट सूची, सिग्नल-संदेश)। ओ 'लोकल नरेटिव' नामक फोल्डर बना गामक कथाकेँ अंधविश्वास/राजनीतिक भड़काव कहि बदनाम करबाक योजना बनबैत छथि, मुदा जखन ओ 'नामक अभिलेख' टाइप करैत छथि, स्क्रीनपर नारिकेल पातक छाया उभरि आबैत अछि। रातिक कमाइक तालिकामे उज्ज्वल झाक नाम पर लाल निशान भेटैत अछि — ओ ओकरा डिलीट करैत छथि, मुदा मुन्ना पासवान, रितेश कुमार, सोहैल अंसारी आदि नाम एक-एक कऽ स्वतः उभरैत रहैत अछि। तकनीकी कर्मी बजबैत छथि, मुदा एक युवक स्वीकार करैत अछि — 'सर, ई दुष्ट-सॉफ्टवेयर नहि लगैत, नाम

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

दोहराइत भऽ रहल अछि।' राघव सोमानी स्वयं देहसँ आबि कहैत छथि जे हांगकांगक खाता 'चुप' अछि। रातिमे बत्राक बन्द कएल स्क्रीन सभपर एकटा बालक प्रकट भऽ प्रश्न पुछैत अछि — 'पहिल जीत कोना देलहुँ?', 'मरि गेलाक बाद खाता किएक चलल?' — बत्रा 'हम हत्या नहि केलहुँ' कहैत छथि, मुदा उत्तर आबैत अछि — 'तखन कोन अपराध स्वीकार करब?' भोरे बत्राक मेरठक एल.एल.बी. डिग्रीक फ्रेममे अक्षर बदलि 'नाम पढ़बाक शिक्षा अधूरी' बनि जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे ओ स्वीकार करैत छथि जे चन्ना गाछी गाममे नहि, जालमे पैसि गेल अछि।

अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी

राघव सोमानीक अपार्टमेण्टमे एक अनचिन्हार चुप्पी बैसि जाइत छैक, जे ओकर बनाओल नहि छल। लाउ किन-हंगक संदेश आबैत अछि — 'खाता स्थगित' — जे लाउक सामान्य कोडेड भाषासँ भिन्न, चिन्हाजनक शब्द अछि। राघवक पुरान प्रिंटर स्वतः चलि उठैत अछि आ मृतक/पीड़ित सभक नाम छापय लगैत अछि (उज्ज्वल झा, मुन्ना पासवान, सरयू मजदूरिन)। राघवक बचपनक पृष्ठभूमि खुलैत अछि — पिताक हार्डवेयर दुकानमे उधार-बहीसँ सीखल सबक जे 'नाम लिखब मूर्खता अछि, खाता रखू' — इएह दर्शन ओकर पूरा अपराध-कारोबारक (टुकड़ा-टुकड़ा बाँटल म्यूल-अकाउण्ट जाल) आधार बनल छल। राति ओकरा अपन पहिल शिकार (एकटा छात्र, जकर नाम ओकरा मोन नहि पड़ैत) क स्मृति सतबैत अछि — नाम मोन नहि

अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी

पड़बाक खालीपन ओकरा भीतरसँ तोड़ि दैत अछि। ओ अपन सिम-कार्ड सभ तोड़ैत अछि, आ अन्ततः एकटा फाइल बना अपन पहिल शिकारक नाम (अरुणेश कुमार) खोजि निकालैत अछि। भोरे ओ ओहि पुरान छात्रावास जाइत छथि जतय ई शिकार भेल छल — चाहबला अखनो ओ कथा मोन राखने अछि ('बाप दुकान बेचलक, लड़का पागल सन भऽ गेल')। लोक-स्मृतिक ई स्थायित्व राघवकेँ हिला दैत अछि। अध्यायक अन्तमे लाउक फेर पुरान मार्ग खोलबाक आदेश आबैत अछि, मुदा राघवक अंगुरी टाइप करैत अछि — 'नामक सूची बनि रहल' — जे ओकर परिवर्तनक पहिल संकेत थिक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना

हांगकांगक शीशाक घरमे लाउ किन-हंगकेँ (जे कहियो सपना नहि देखैत छथि, केवल 'प्रोजेक्शन') एकटा भयावह सपना आबैत अछि — ओकर घरमे पानि भरय लगैत अछि, जाहिमे तैरैत मोबाइल फोनमे उज्ज्वल झा, सरयू, आ अनगिनत डिजिटल-अरेस्टक पीड़ित एक्के प्रश्न पुछैत छथि — 'हमर मृत्यु/हानिक लाभ कोन देशक खातामे लिखल गेल?' चारि गोहि (पुल-दुर्घटना, अदालत, हार्वर्ड, आ महामारीक कमाइक प्रतीक) ओकरा घेरि लैत छथि। सपना हार्वर्डक सभागारमे बदलैत अछि जतय एडवर्ड ब्रूमक भाषणक हर शब्दक नीचाँ लाभक राशि चमकैत अछि, आ अन्ततः बूढ़बा भूत पीपरक डारिपर बैसल लाउसँ कहैत छथि — 'अहाँक खाता बहुत साफ अछि, खाली एक कॉलम नहि अछि — निन्न।' लाउ जागिकऽ अपन सहायिका मेई

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना

लानसँ बुझैत छथि जे राघव सम्पर्कहीन अछि, चन्द्रपाल चिन्तित अछि, आ हरिहरन गढ़ नारिकेल गेल छथि। ओकर टेबलपर स्वतः एकटा नारिकेल पात प्रकट होइत अछि, जकर स्पर्शसँ ओकरा धड़कन अनुभव होइत अछि — 'आब अहाँक मोन टांगल।' अध्यायक अन्तमे ओ राघवक एक्सेस बन्द, बत्राक भुगतान रोकबाक, आ हरिहरनक खर्च अलग करबाक आदेश दैत छथि — प्रकटतः व्यापारिक निर्णय, मुदा वस्तुतः अपन सपनासँ बचबाक प्रयास, जे विफल होइत अछि: साँझमे समुद्रपर एकटा गोहि, एहि बेर मुँहमे कागच लेने, ओकर घर दिस तैरैत देखार होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत

एकहि राति पाँचू धूर्त (बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बत्रा, राघव सिग्नल, लाउ किन-हंग, आ पहिल बेर स्पष्ट रूपसँ एडवर्ड ब्रूम सेहो) अपन-अपन कमरामे एकसंग जागि जाइत छथि, बिनु कोनो समनक। बटुकनाथक जीतक आदेशक 'निरस्त' शब्दक बीचसँ मृतकक नाम बहरा रहल अछि; एकटा बालक (बाल्यकालक प्रतीक) ओकरासँ नाम पढ़बाक आग्रह करैत अछि। चन्द्रपालक स्क्रीनपर म्यूल-खाताधारीक नाम स्वतः खुजैत रहैत अछि — पासबुक ओकरासँ कहैत अछि, 'भूखक सहमति आ कानूनक सहमति एक नहि होइत।' राघवक कमरामे बन्द खिड़की रहितहु पात झड़ैत अछि, जाहिपर ओकरे भेजल जुआ-ठगीक अधूरा वाक्य लिखल अछि। लाउ किन-हंगक शीशाघरमे एकटा मेज उगि आबैत अछि जाहिपर कटोरामे रक्त-दवा-टूटल-काँचक

अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत

वस्तु राखल छल, आ आवाज पुछैत अछि — 'मृत्युमे अहाँक हिस्सा कतेक?' ब्रूमक भाषणक मसौदामे 'गरिमा' शब्दक किनारसँ कीचड़ बहैत अछि। सभ पाँचूक भीतरी अदालतमे एकटा खाली कुर्सी छल — जिनका ओ सभ हरौने छल, हुनकर। प्रश्न पुछल गेल — 'जकरा हरौलहुँ, ओ कतय अछि?' — आ उत्तर आबैत अछि: चन्ना गाछीमे, पाठशालामे, पातमे, मोबाइलमे, सभागारक बाहर। भोरे सभकेँ मात्र प्रतीक्षा भेटैत अछि, दण्ड नहि।

अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज

चन्ना गाछीक रातिक फैसलाक बाद पीड़ित-पक्ष प्रतिशोध नहि, काजमे लागि जाइत अछि। अनन्या कबड्डीक मैदानमे बीचक रेखा हटा दैत छथि — 'जे हारल कहल जाएत, ओकरा दोसर काज देल जाएत।' देविका साह उज्ज्वलक टूटल मोबाइल लऽ गामक पुरान चौपालपर पहिल पाठ लिखैत छथि; निशांत झा बच्चा सभकेँ म्यूल-अकाउण्टक भाषा समझबैत छथि; सौम्या रामनाथन सरकारी कागचक क्रूर भाषा ('अघोषित मृत्यु', 'प्रक्रियात्मक विलम्ब') केँ गामक बोलीमे अनुवाद करैत छथि; मीरा सार्वजनिक शपथ दोहरबैत छथि — 'ककरो प्रेम ककरो विरुद्ध साक्ष्य नहि बनत।' ईरा विदेशमे 'पात-पाठ' नामक सभा शुरू करैत छथि। गोप कुमार आ ईशान दत्त डेटाकेँ कथामे बदलैत छथि, आ जतय सपना नहि भेटय ओतय 'खाली

अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज

स्थान' छोड़बाक सिद्धान्त स्थापित करैत छथि। धूर्त सभकेँ खबर भेटैत अछि जे विरोधी पक्ष कोनो अपील, आरोप, वा सभा नहि कऽ रहल — केवल पढ़ा रहल अछि, जकरापर मुकदमा करब कठिन सिद्ध होइत अछि। अध्यायक अन्तमे गामक हर घरमे संदूक खुजय लगैत अछि आ पुरान कागच सामूहिक स्मृति बनि जाइत अछि — 'जे लड़ाइ छोड़ि काजमे लागि जाइत अछि, ओकरा हराएब असम्भव होइत अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

चन्ना गाछीक बीच बिनु कोनो चिन्हक एकटा कबड्डी-घेरा स्वतः बनि जाइत अछि। तीन दल एतय मिलैत छथि — मृतक (सरयू, नन्द आरुणि, मजदूर, उज्ज्वल आदि, जे अपन नाम बजबैत छथि), बच्चा (जे 'प्रश्न' बजबैत छथि), आ पाँचू धूर्तक मोन (देहसँ अलग भऽ कऽ आयल, जे अपन पुरान शब्द — प्रक्रिया, खाता, संदेश, प्रतिशत, गरिमा — बजबैत छथि)। हरेकक साँस ओकर शब्दक अनुसार लम्बा वा छोट होइत छैक। बटुकनाथक 'स्थगन' छोट साँस होइत अछि; अनन्याक 'प्रश्न' गहींर होइत अछि। मुन्ना पासवान स्वयं ठाढ़ भऽ चन्द्रपालसँ कहैत छथि — 'हमरा नाम म्यूल नहि, हम मुन्ना छी।' सभ धूर्तक मोन अन्ततः बाहर निकलैत छथि, मुदा नियमानुसार अपन एक शब्द छोड़ि — 'प्रक्रिया', 'खाता',

अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी

'सन्देश', 'हिस्सा', 'गरिमा' — जे चन्ना गाछीमे रहिकऽ अपन अर्थ बदलि दैत अछि (जेना 'खाता' अब मनुष्यक जीवनी बनि जाइत अछि)। भोरे सभ धूर्तकेँ अपन पुरान शब्दक स्वाद बदलल लगैत अछि। अध्यायक अन्तमे बुझल जाइत अछि जे 'कबड्डी खतम नहि होइत, साँस बदलैत अछि' — आ फेर आरम्भ होइत अछि।

अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

'तेसर कबड्डी' क पहिल साँस समाप्त भेलाक बाद, आब पाँचू धूर्तक मोनकेँ गोल घेरामे बैसा कऽ परीक्षा लेल जाइत अछि। अनन्या नियम बनबैत छथि — जे नाम काटने अछि, ओकरा ओ नाम पूरा बजयबे पड़त, नहि तँ ओ बाहर नहि जा सकत। बटुकनाथक जीहपर अनायास 'सरयू देवी', 'लखन पासवान' सन नाम आबि जाइत अछि; चन्द्रपालकेँ पूछल जाइत अछि — 'तोहर असली मालिक के?' — आ 'हांगकांग सँ संदेश किए अबैत छल?' पुछलापर ओकर स्क्रीन-उजासमे दरार पड़ैत अछि। मुन्ना पासवान स्वयं फेर प्रकट भऽ अपन नाम दोहरबैत छथि। राघवक 'मेटू' साँस हर बेर एकटा पात झाड़ैत अछि; मीरा ओकरा स्पष्ट कहैत छथि — 'जहर पहुँचबेनिहार हाथ सेहो जहरक इतिहासमे लिखाइत अछि।' लाउ किन-हंगकेँ नन्द

अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा

आरुणि पुछैत छथि — 'तोहर हिसाबमे हड्डी कतेक?' — जे लाभक गणितकेँ तोड़ि दैत अछि। ब्रूम 'गरिमा' कहय चाहैत छथि, मुदा मुँहसँ 'लाभ' निकलैत अछि। अध्यायक अन्तमे अनन्या घोषणा करैत छथि जे अगिला साँस धरि हरेक धूर्तकेँ अपन काटल एकटा नाम खोजि पूरा उच्चारय पड़त — 'चारिम साँस समाप्त, अगिला साँस आरम्भ।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३४ — सुनैत नदी

पाँचू धूर्तक घर-कार्यालयमे अलग-अलग अलौकिक संकेत आबय लगैत अछि — बटुकनाथक स्नानक पानिमे 'सरयू देवी' नाम तैरैत अछि; चन्द्रपालक तिजोरीसँ बच्चाक रोदन सुनाइ दैत अछि; राघवक आवाज चलि जाइत अछि आ मैथिली अक्षर परदापर उगय लगैत अछि; लाउक डेस्कपर स्वतः नारिकेल पात आबि जाइत अछि; ब्रूमक कलमसँ मसीक बदला पानि बहि 'मजदूर' शब्द बनि जाइत अछि। एतय पाठशालामे नव पाठ शुरू होइत अछि — 'अधूरा नाम नहि बाजब' — जाहिमे बच्चा सभकेँ कंकड़पर आधा नाम भेटैत अछि जकर बाकी आधा हुनका खोजय पड़ैत अछि। रातिमे पाँचू धूर्तक मोन एकटा माटिक कटोराक चारुकात बैसारल जाइत छथि — जँ नाम साँच होय तँ कटोरामे बून्द रहत, झूठ होय तँ धुआँ बनि उड़त। बटुकनाथ सरयू

अध्याय ३४ — सुनैत नदी

देवीक पूरा परिचय (मजदूर, टोकरी, अनुपस्थित लिखल जाएब) बजा बून्द बचा लैत छथि — 'पहिल चोट।' चन्द्रपाल उज्ज्वलक नाम बजैत छथि, मुदा केवल रकम मोन रहलासँ बून्द धुआँ बनि जाइत अछि। राघव मुन्ना पासवानकेँ 'मुन्ना पासवान, जकर खाता खोलि हम ओकरा अपराधी बनौलहुँ' कहि बून्द बचा लैत छथि। लाउ 'द बॉय' कहि असफल होइत छथि, मुदा टेढ़-मेढ़ 'उज्ज्वल' बजबाक प्रयास करैत छथि। ब्रूम 'लेबर', 'वर्कर' मे असफल भऽ अन्ततः 'सरयू देवी' बजि बून्द बचबैत छथि। पाँचम साँसक अन्तमे बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'जे एक नाम कहि देलक, से मुक्त नहि, आब ओकरा नामक घर धरि जाए पड़त।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३५ — नामक देहरी

छठम साँस आरम्भ होइत अछि — नाम कहबाक बाद अब ओकर घर धरि जायब पड़त। अनन्या माटिमे पाँच घर बनबैत छथि (सरयू देवी, मुन्ना पासवान, उज्ज्वल, आदि)। बटुकनाथ हरिहरनक टिकट स्वतः 'सरयू देवीक देहरी' मे बदलि जाइत अछि; ओ रेलयात्रामे फेर बूढ़बा भूत (वेशधारी) क सामना करैत छथि — 'आइ धारा नहि, आँगन पढ़ब।' सरयू देवीक टूटल घरपर पहुँचि, एकटा वृद्धा ओकरा धूलि आँखिमे लगयबाक सलाह दैत छथि — धूलि लगयतहि ओकरा सरयूक अन्तिम दिन देखार होइत अछि, आ ओ जमीनपर बैसि जाइत छथि। चन्द्रपाल बत्रा उज्ज्वलक घरक तस्वीर (झुकल छप्पर, तकियापर दाँतक निशान) परदापर देखि विचलित होइत छथि, मुदा घर स्वयं नहि जाइत छथि — देविकापर दबाव हटयबाक आदेश दैत छथि।

अध्याय ३५ — नामक देहरी

राघव मुन्नाक अधूरा पता (जानि-बूझि अस्पष्ट राखल गेल) खोजि 'पासवान टोली, नदीक दक्खिन, पुरान पीपर लग' लिखैत छथि — पात स्थिर भऽ जाइत अछि। लाउ किन-हंगक नक्शापर बाजारक बदला लाखो देहरी चमकय लगैत अछि। एडवर्ड ब्रूम मंचपर 'सरयू देवी' नाम गलत उच्चारणसँ पढ़ैत छथि। राति पाँचू मोन माटिक देहरीपर पएर रखबाक परीक्षामे बटुकनाथ आ राघव सफल होइत छथि, चन्द्रपाल असफल (देहरी पाछाँ हटि जाइत अछि), लाउ एक्को देहरीपर पएर नहि राखि पबैत छथि, ब्रूम सरयू देवीक देहरीपर मौन रहि जाइत छथि।

अध्याय ३६ — घर, भय, सपना

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

सातम साँसमे प्रत्येक धूर्तकेँ पीड़ितक घर, भय, आ सपना — तीनू जानय पड़त। बटुकनाथ सरयू देवीक घरमे भूखल बच्चा आ राखिपर उगल 'प्रतीक्षा' अक्षर देखैत छथि। चन्द्रपाल उज्ज्वलक घरमे देविकाक सामने ठाढ़ भऽ 'केवल परामर्शदाता' कहय चाहैत छथि, मुदा उज्ज्वलक अधूरा पत्र ('दीदी, हम गलत छलौं, मुदा अपराधी नहि छलौं') देखि आँगुर थिर भऽ जाइत छन्हि। राघव मुन्नाक पिता आ मायसँ भेंट करैत छथि — माय ओकरा गमछा देखा पुछैत छथि 'अहाँक नोकरी एहेन होइत अछि?' लाउ किन-हंगकेँ पहिल बेर बुझना जाइत अछि जे 'आँकड़ा' वास्तवमे घरक लोक अछि। एडवर्ड ब्रूम मैथिलीमे 'माफ करू' लिखबाक अभ्यास करैत छथि, आ अन्ततः कच्चा वाक्यमे लिखैत छथि — 'सरयू देवी, हमर

अध्याय ३६ — घर, भय, सपना

अपराध अहाँक नाम नहि जानब सेहो अछि।' सपनाक भागमे बुझना जाइत अछि जे सरयू देवीक सपना छल बच्चाक पढ़ाइ, उज्ज्वलक सपना छल देविका डेराइ नहि, मुन्नाक सपना छल पिता माथ नीचाँ नहि झुकाबथि। राति परीक्षामे बटुकनाथ घर कहि सकैत छथि भय आधा, सपनापर चुप; चन्द्रपाल घर देखलनि मुदा सपनापर मौन; राघव तीनू कहि कानि पड़ैत छथि; लाउ एक्को घर पूरा नहि कहि सकैत छथि; ब्रूम एक नाम कच्चा उच्चारणमे कहैत छथि। बूढ़बा भूत फैसलाक बदला 'गृहकार्य' दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३७ — तीन कंकड़

खण्ड १ • मुख्य कथा

सातम साँसक तीन कंकड़ (घर, भय, सपना) बच्चा सभक जेबीमे दिन भरि खनखनाइत रहैत अछि। धूर्त सभक कमरामे सेहो रहस्यमय ढंगसँ कंकड़ आ पात प्रकट होइत अछि, जे हुनका सभक बाल्यकाल आ अपराधक 'आरम्भ' खोलैत अछि — बटुकनाथकेँ अपन पिताक चालान-छुड़ाइ दलालीक स्मृति; चन्द्रपालकेँ अपन पहिल ठगल किसान (जकर चेहरा उज्ज्वलसँ मिलैत अछि) आ ईमानदार मित्र शमीमक स्मृति; राघवकेँ अपन बचपनक नाम 'राघवेश' आ अपन बेटाक प्रश्न ('म्यूल की होइत अछि?'); लाउकेँ अपन गरीब बचपनक घर आ मायक सपना ('हम तोरा गरीबीसँ निकाललहुँ कि तू गरीब सभकेँ आँकड़ा बनाबह?'); ब्रूमकेँ अपन कम्पनीक पुरान गोदाममे राखल भारतीय नदीक गलत-वर्तनी पट्टिका। पाठशालामे बच्चा सभ पाँचू

अध्याय ३७ — तीन कंकड़

धूर्तक नाम माटिपर लिखि हुनकर 'अपराधक आरम्भ' (छोट छूट, समयक बिक्री, नामक काट, गरीबीक बदला गरीबसँ, संख्यामे दोष छिपाब) पढ़ैत छथि — मीरा आ सौम्या स्पष्ट करैत छथि जे पीड़ा बुझब अपराधक क्षमा नहि, मुदा अपराधक जड़ि काटबाक उपाय अछि। अध्यायक अन्तमे चन्द्रपाल आ राघव पहिल बेर बिनु वकीली भाषाक फोनपर बजैत छथि — 'हमरा मोन पड़ि रहल अछि' — मुदा पूर्ण पश्चाताप नहि, केवल स्मृतिक आरम्भ।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ — नामक उच्चारण

आठम साँसक बाद खेल दू दिन बन्द रहैत अछि — बूढ़बा भूत कहैत छथि जे नाम लिखि देने भरि नहि होइत, ओकर उच्चारण सिखेबाक काल देबय पड़ैत अछि। पाँचू धूर्तकेँ रहस्यमय ढंगसँ पीड़ितक नाम गलत/सही उच्चारण करय पड़ैत अछि — बटुकनाथकेँ चायक झागमे 'भोला नट' (भोलानाथ नहि) सुनाइ दैत अछि; चन्द्रपालक प्रमाणपत्रपर 'नाम बेचबाक डिग्री नहि देल गेल छल' उभरैत अछि; राघव पोटलीक टुकड़ा जोड़ि 'मुन्ना पासवान' नाम पूरा करैत छथि, आ ओकर सोझाँ मुन्नाक आकृति प्रकट भऽ कहैत अछि — 'खच्चर हमर जीविका नहि, तोहर जाल छल।' लाउ किन-हंगक कर्मचारी नाम छोट कऽ लिखैत छला (बी. नट, यू. झा), मुदा एहि राति पूरा नाम जल-बिन्दुक रूपमे उभरैत अछि। एडवर्ड ब्रूम

अध्याय ३८ — नामक उच्चारण

सार्वजनिक सभागारमे नाम गलत पढ़ि अपमानित होइत छथि। गढ़ नारिकेलमे 'तीन पातक विधान' स्थापित होइत अछि — प्रत्येक नामक संग घर, मृत्यु, आ अपमान पढ़ल जाय। हुलासी (लोकोत्तर पात्री) पहिल बेर स्वयं अपन कथा सुनबैत छथि — इनारमे दुर्घटनासँ मृत्यु भेल छल, मुदा गामक लोक ओकरा 'आत्महत्या' कहि अपमानित कएलक। बूढ़बा भूत घोषणा करैत छथि जे आब धूर्त सभकेँ प्रत्येक राति एकटा नाम सही पढ़य पड़त, नहि तँ हुनकर अपन हस्ताक्षर धुँधला होयत लागत — जे अध्यायक अन्तमे सचमुच घटैत अछि (बटुकनाथक हस्ताक्षरसँ 'हरि' गायब, बत्राक 'त्र' धुँधला आदि)।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३९ — बीजक शान्ति

खण्ड १ • मुख्य कथा
1 / 2

नवम साँसक बाद गढ़ नारिकेलमे एकटा भीतरी, प्रतीक्षारत शान्ति उतरैत अछि। नाम पढ़ल जा चुकल अछि, मुदा घर अखनो अधखुलल — घर बनबैत अछि स्मृति, भोजन, श्रम, गीतसँ। देविका उज्ज्वलक फाटल फोनक परदामे अपन नहि, पूरा गामक चेहरा देखैत छथि, आ नव पाठ लिखैत छथि — 'भय गुप्त राखल गेल तँ व्यापार बनैत अछि।' दसम साँसक असली काज होइत अछि — 'पानि बिलमे पठेनाइ', यानि ज्ञानकेँ हर गाम-स्कूल-परिवार धरि पहुँचायब। सौम्या सरकारी भाषाकेँ लोकभाषामे अनुवाद करैत छथि ('वित्तीय अनियमितता' → 'बच्चाक डर कीनल गेल')। एकटा बैंक-बाबू, जकरा बच्चा सभ मुन्नाक कथा सुनबैलक, अपन रजिस्टरमे तीन म्यूल-खाता चिन्हैत छथि — 'दसम साँसक पहिल विजय, धूमधाम बिना।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३९ — बीजक शान्ति

बटुकनाथ गामक बाहरी सरायमे रुकल छथि, मुदा भीतर प्रवेशक लेल नाम बजयतहि बूढ़बा भूत पुछैत छथि — 'एहि नामक भीतर कतेक नाम बन्द अछि?' — जे ओकरा अपन पिताक (गरीबक नाम-लेखनक) स्मृति देखबैत अछि। राघव भागबाक लेल एयरपोर्ट टिकट खोलैत छथि, मुदा नाम भरबाक कोठरीमे हाथ रुकि जाइत अछि — 'असली नाम कोन?' रातिमे प्रतीकात्मक भोज होइत अछि जतय हर मृतकक नाम लग चाउर-नून-पानिक भेंट चढ़ायल जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे ओसक बून्दमे एकटा शब्द उभरैत अछि — 'आब।'

अध्याय ४० — ओसक अक्षर

खण्ड १ • मुख्य कथा

एगारहम साँस भोरक ओसपर लिखल 'आब' शब्दसँ शुरू होइत अछि — बुझना जाइत अछि जे नाम पढ़ब पर्याप्त नहि, आब जीवन (भूख, वस्तु, दैनिक विवरण) पढ़बाक अछि। बच्चा सभ हर नामक संग एकटा वस्तु आनय लगैत छथि — भोला नटक टिफिन, उज्ज्वलक फाटल फोन-शीशा, मीराक कागच ('हमर प्रेम अपराध नहि'), नन्दक धुँआ खाएल ब्लूप्रिन्ट। बटुकनाथ अपन पिताक पुरान नाम-पर्ची जेबीमे लऽ चन्ना गाछी घुरैत छथि। चन्द्रपालक प्रेस-वक्तव्यक शीर्षक स्वतः बदलि 'हमरा सेहो पढ़ू' बनि जाइत अछि। राघव सिम-कार्डक टुकड़ा जोड़ि मुन्ना पासवानक नाम आ चेहरा फेर पबैत छथि। एकटा बैंक-बाबू 'लोक देखू' लिखि चौदह म्यूल-खाता चिन्हैत छथि। लाउ किन-हंगक मेजपर नूनक दाना गिरैत अछि —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४० — ओसक अक्षर

भोजनक भाषा, सौदाक नहि। एडवर्ड ब्रूमक भाषणक बीच स्क्रीनपर टिफिनक चित्र उभरि आबैत अछि। मीरा निजताक मण्डलमे स्पष्ट करैत छथि — 'जे वस्तु हम इच्छासँ साझा करब, ओ स्मृति; जे डरा कऽ छीनल जाय, ओ हिंसा।' सरयू महतोक बेटी कमली पहिल बेर सभामे आबि अपन मायक टूटल पायल राखैत छथि — 'बाबूजी मरम्मत करयबाक कहि गेल छला, नहि घुरलाह।' महादेव साह नामक एकटा गुप्तचर (चन्द्रपालक भेजल) अपन पूरा नाम नहि लिखि सकैत छथि, आ बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'जे अपन पूरा नाम नहि लिखि सकैत, से दोसराक नाम मेटबय आयल अछि।' अध्यायक अन्तमे बच्चा सभ हर वस्तुक 'रास्ता' (कारखानासँ पुल धरि, दुकानसँ ठगक हाथ धरि) खोजय लगैत छथि — 'जे जीवन पढ़त, से रास्तासँ बचि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४० — ओसक अक्षर

नहि सकत।' ब्रूम भाषणक बीच पानिमे नूनक स्वाद पाबि थरथरा जाइत छथि।

अध्याय ४१ — नामक नाव

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

बारहम साँस शुरू होइत अछि — नाम आ वस्तु सँ आगाँ बढ़ि आब हर मृतकक 'रास्ता' (जीवन-यात्रा) बनाओल जाइत अछि, चाउर-हल्दी-नून-पानिसँ माटिपर चित्रित। भोला नटक रास्ता (घरसँ ठेका-कैंप धरि), सरयू महतोक रास्ता (टिफिनसँ पुलक पाया धरि — 'पाया पर नहि, गिनती सँ खसल'), उज्ज्वलक रास्ता (घर-स्कूल-मोबाइल दुकान-कर्जा-डिजिटल अरेस्तक डर-छत) बनैत अछि। निशांत झा मुन्ना पासवानकेँ तीन कटोरी (नाम, खाता, डर) देखा प्रश्न पुछैत छथि — मुन्ना कहैत छथि 'डर हमर नहि छल, हमरा देल गेल छल।' चन्द्रपालक कम्प्यूटरमे 'रास्ता' नामक फोल्डर स्वतः खुजि जाइत अछि, जाहिमे माटिपर बनल कटोरीक चित्र भेटैत छन्हि। राघव अपन तोड़ल फोनसँ धूलिक बदला पात निकलैत

अध्याय ४१ — नामक नाव

देखैत छथि, आ लाउ किन-हंगकेँ संदेश पठबैत छथि 'रस्ता घुरि रहल अछि' — लाउ उत्तर दैत छथि 'काटि दिअ।' लाउक टेबलपर नूनक दाना रेखा बनि भारत-बिहार-गढ़ नारिकेल धरि पसरैत अछि। एडवर्ड ब्रूमक भाषणक बीच माइकसँ चम्मच-टिफिनक खनखनाहट सुनाइ दैत अछि। गढ़ नारिकेलक एक बुजुर्ग स्त्री, जकर बेटा पुलमे मरल छल, पहिल बेर आबि केवल एतबे कहि पबैत छथि — 'भादवक सोम' (जे दिन बेटा घरसँ निकलल छल) — आ बूढ़बा भूत कहैत छथि 'जे अंश भेटत, ओहि अंशकेँ सत्यसँ भरू।' अध्यायक अन्तमे प्रत्येक रास्तामे एकटा 'मोड़' (जतय अपराध रोकल जा सकैत छल) चिन्हित होइत अछि, आ ओसमे लिखल भेटैत अछि — 'भार उठू।'

अध्याय ४२ — भारक वृत्त

तेरहम साँसमे बच्चा सभ दू वृत्त बनबैत छथि — 'जिनका पर अपराध भेल' आ 'जिनका द्वारा अपराध भेल' — आ अनन्या तेसर, सभसँ भारी वृत्त जोड़ैत छथि: 'जिनका सभ देखलन्हि आ चुप रहलाह।' भोला नटक भारी टिफिन मुन्ना पासवानकेँ उठाबय पड़ैत अछि — देविका कहैत छथि 'ई तोहर अपराध नहि, मुदा समाजक भार अछि' — आ ओहि दिनसँ गामक भोजन-सूचीक नियम बनैत अछि। बटुकनाथ हरिहरनक जीत-आदेशक फाइल शारीरिक रूपसँ भारी भऽ जाइत अछि — ओ बुझैत छथि जे फाइलमे कागच नहि, समय भरल अछि। चन्द्रपालक स्क्रीनपर म्यूल-खाता सभ ईंट बनि टेबलपर खसैत छथि। राघव अपन तकियाक नीचाँ पाथर-पात पबैत छथि, जाहिपर लिखल अछि 'कॉल नहि काटल गेल', 'भय बेचायल' आदि — हुलासी ओकरा फेकबासँ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४२ — भारक वृत्त

रोकैत छथि। लाउ किन-हंगक कलमसँ स्याहीक बदला नूनक पानि बहैत अछि — 'भार हस्तान्तरण नहि, भार स्वीकार।' एडवर्ड ब्रूमक रिपोर्ट सूखबे नहि करैत। गढ़ नारिकेलमे भारक पाठक दोसर चरणमे हर वस्तुकेँ काजमे बदलल जाइत अछि (टिफिन अन्न-सूची बनल, हेलमेट सुरक्षा-संकल्प), आ गोप कुमार, रमैय्या, सौम्या, मीरा, देविका सभ अपन-अपन 'हिस्सा' (कोताही) स्वीकार करैत छथि। अध्यायक अन्तमे बटुकनाथ फाइलक एक कोना उठा 'ई असगरे नहि उठत' कहैत छथि, आ बूढ़बा भूत उत्तर दैत छथि — 'असगरे उठाएब दण्ड। बाँटि उठाएब न्याय।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४३ — चलैत भार

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

तेरहम साँसक बाद बाँटल भार समाप्त नहि होइत, बल्कि गाम-गाम चलय लगैत अछि — जकर घर पहुँचल, ओकर जिम्मा टरत नहि। बटुकनाथ हरिहरनक घरक डिग्रीक शीशापर धुन्धमे मृतकक नाम (भोला नट, सरयू, मुन्ना, उज्ज्वल) उभरैत अछि, आ ओकर बूढ़ी माय अचानक बचपनक नामसँ ('बटुक, कतेक नाम खएलें?') पुछैत छथि — ओकरा बुझना जाइत अछि जे भीतरी दुनियाँमे प्रवेश दरबाजासँ नहि, मायक जिह्वासँ सेहो होइत अछि। चन्द्रपाल बत्राक बेटा सपनामे एकटा लड़काकेँ नाम पुछैत देखैत अछि — 'तोहर पिताक कमाइमे हमर फाँसीक गन्ध अछि।' राघव सिग्नलक पत्नी भातक थारीमे दाना सभकेँ 'खाता बन्द' शब्द बनाबैत देखैत छथि। लाउ किन-हंग अपन सचिवसँ 'गढ़ नारिकेल' नामक जगह खोजबाक आदेश दैत

अध्याय ४३ — चलैत भार

छथि — नक्शापर एकटा बिन्दु समुद्रक भीतर नारिकेल पात जरैत जकाँ चमकैत अछि, आ ओकर हस्ताक्षर करय बला दहिन हाथ काँपि जाइत अछि। गढ़ नारिकेलमे देविका, निशांत, मीरा, सौम्या, ईरा सभ अपन-अपन काज जारी राखैत छथि — पाठशाला, हिसाब, निजताक शपथ, दस्तावेज-अनुवाद, नाम-पाठ। भूत सभ आब दुपहरियोमे देखार होयबाक शुरुआत करैत छथि, आ लोथ सभ पात उठाबय लगैत छथि। बा घोषणा करैत छथि — 'डर आब ओकरा सभक घर गेलै' — मुदा 'जीत' शब्दसँ सावधान रहबाक सलाह दैत छथि: 'काज करैत लोक जीतक घोषणा नहि करैत।'

अध्याय ४४ — पोतीक कापी

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

चौदहम साँसक बाद डर धूर्त सभक देहसँ आगाँ बढ़ि हुनकर सन्तान-नातिक कापी आ प्रश्नमे प्रवेश करैत अछि। बटुकनाथ हरिहरनक सात बरखक पोती अपन कापीमे चन्ना गाछीक चित्र बना पुछैत छथि — 'दादाजी ओतय बाहर किएक ठाढ़ छथि? जे जीतैत अछि, से खेलमे बाहर किएक रहैत अछि?' — प्रश्न बटुकनाथकेँ जड़ि कऽ दैत अछि। चन्द्रपाल बत्राक घरक सोझाँ किछु ठगीसँ बचल युवक आबि विनम्रतासँ मार्ग-अनुमति पुछैत छथि; चन्द्रपालक बेटा हुनका जाय दैत अछि आ पिताकेँ स्पष्ट कहैत अछि — 'हमर पढ़ाइ, गाड़ी, घर, एहि सभक भीतर कतेक मोबाइल बन्द पड़ल अछि, इएह सोचि रहल छी।' राघव सिग्नलक किशोरी बेटी पुछैत छथि — 'अहाँ सभ गुप्त गप किएक करैत छी? ककर सुरक्षा लेल?' — जकर

अध्याय ४४ — पोतीक कापी

उत्तर राघवकेँ नहि भेटैत। लाउ किन-हंगक विदेशमे पढ़ैत पुत्र पुछैत छथि — 'जँ कोनो दिन लोक देशक बदला अपन नामसँ हिसाब माँगत, तखन?' गढ़ नारिकेलमे बूढ़बा भूत बच्चा सभकेँ कहैत छथि — 'धूर्तक घरमे जखन बच्चा प्रश्न पूछए, तखन बुझू पात ओकर दुआर पहुँचल।' गोप कुमारक नव फाइल 'दुआर' मे लिखल भेटैत अछि — 'ओकर सन्तान पहिल दूत होइत अछि।' अध्यायक अन्तमे अनन्या मैदानक बीच माटिपर मात्र एक शब्द लिखैत छथि — 'ककर?' — जे चारू धूर्तक भीतर एक्के प्रश्न बनि गूँजैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४५ — भीतरक हवा

पन्द्रहम साँसक 'ककर' प्रश्नक बाद, सोलहम साँसमे धूर्त सभक घरक भीतरसँ पुरान बन्द हवा (घूसक गन्ध, डरक ताला) बाहर निकलय लगैत अछि। बटुकनाथ हरिहरनक पोतीक चित्रमे भूत-प्रेतक संग तीन नव आकृति — कागच खाएबला बूढ़, मोबाइल चिबाएबला लोक, मुँह बिनु व्यापारी — देखार होइत अछि, आ ओ स्पष्ट पुछैत छथि 'अहाँ खेलमे बाहर किएक ठाढ़ छी?' चन्द्रपाल बत्राक बेटा पिताक गाड़ी घुरा दैत छथि — 'हुनकर नामक जगह हमर नाम किएक?' — आ चुप्पीमे माय राहत अनुभव करैत छथि। राघव सिग्नलक किशोरी बेटी 'चुप्पीक नोंद' नामक कॉपी बनबैत छथि जाहिमे ओ पिताक अनुत्तरित प्रश्न लिखत। लाउ किन-हंगक पुत्र विद्यालयमे 'लाभक वंश आ नामक ऋण' शीर्षक निबन्ध पढ़ि 'हम एहि

अध्याय ४५ — भीतरक हवा

वंशक उत्तराधिकारी नहि बनए चाहैत छी' कहैत छथि — सभागारमे केवल मौन, ताली नहि। एडवर्ड ब्रूमक नातिन पुछैत छथि जे मरल लोकक नाम कतय राखल जाइत अछि — 'जटिलता नाम मेटेबाक अनुमति नहि देत।' गढ़ नारिकेलमे बूढ़बा भूत स्पष्ट करैत छथि — 'बच्चाक दल प्रश्नक दल होइत अछि, ककरो विरुद्ध नहि, झूठक विरुद्ध जन्मैत अछि।' अध्यायक अन्तमे बच्चा सभ एक स्वरमे घोषणा करैत छथि — 'जे नाम मेटाएल गेल, से हम लेब। जे लाभ नाम मेटा कऽ बनल, से हम छोड़ब।'

अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार

सत्रहम साँसमे धन अपन उत्तराधिकारी ताकैत अछि, मुदा उत्तराधिकारी सभ धनक पाछाँक अन्हार दिस तकय लगैत छथि। बटुकनाथक पोती खाली कागचपर तीन गोला (घर, खाता, नाम) बनाबि पुछैत छथि 'घरक पएर किए?' — 'जँ घर ककरो मरल पएरपर बनल हो तँ ओ राति चलैत होएत।' हरिहरनक वसीयतनामामे 'चल सम्पत्ति' क ठाम 'चल मृतक' उभरि आबैत अछि। चन्द्रपालक बेटा पिताकेँ मुन्ना पासवान, उज्ज्वल झा, सरयू सन नामक सूची देखा पुछैत छथि 'ई सभ हमर साझेदार छल?' — आ अपन नामपर लगल लाभक स्रोत नहि बतायल जा सकलापर हटयबाक माँग करैत छथि। राघव सिग्नलक पत्नी भोजनमे रोज एक दाना अलग राखैत छथि 'जेकरा घरक भात छिनायल, तकरा लेल।' लाउ किन-हंगक नातिन शीशापर नील गाछ बनबैत

अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार

छथि, जाहिक डारिपर मोबाइल-फल सभमे आवाज पुछैत अछि 'हमर मृत्यु कोन कानूनमे लिखल?' गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ नव खेल बनबैत छथि — कोनो वस्तु उठयबासँ पहिने 'ई ककर श्रम, ककर हानि, ककर नाम' पुछल जाय। बूढ़बा भूत दिनक उजासमे पूर्ण देखार भऽ नव नियम दैत छथि — 'जे धन नाम मेटा कऽ बनल, तकरा लेल कानू नहि, भने ओहिसँ वंचित रहू। वंचित रहबो कखनो-कखनो मुक्ति होइत अछि।' अध्यायक अन्तमे अनन्या 'इन्कार' शब्दकेँ काटि 'चयन' लिखैत छथि — 'ओ सभ चुनि रहल अछि जे कोन कथा अपना संग राखब' — आ बूढ़बा भूतक फूँकसँ खाली कागच माटिमे धँसि नारिकेलक अंकुर बनि उगैत अछि।

अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान

अठारहम साँसमे बा गज-ग्राह पौराणिक कथा सुनबैत छथि (गज ग्राहसँ पकड़ल जाइत अछि, बल घटैत अछि, अन्ततः पुकार करैत अछि) — आ चन्ना गाछी एकर व्यावहारिक खेल बनबैत अछि, जाहिमे धूर्त सभक उत्तराधिकारी (हरिहरनक पोती, बत्राक बेटा आर्यन, राघवक भानजा, लाउ किन-हंगक परिवारमे पोसाएल मेइ-लता नामक लड़की) 'ग्राह' आ 'गज' क भूमिका खेलैत छथि। नियम — गज केवल मृतकक सही नाम बजाकऽ पानिक पकड़िसँ मुक्त भऽ सकैत अछि। अनन्या 'सरयू', 'उज्ज्वल', 'नन्द आरुणि' बजि हरिहरनक पोतीक पकड़िसँ छूटैत छथि। हरिहरनक पोती 'जे घरक पएर मरल पएर पर बनल, से घर राति चलैत अछि' कहि बत्राक बेटाकेँ छोड़बाबैत छथि। आर्यन (बत्राक बेटा) पहिने 'प्रतिशत', 'सिग्नल',

अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान

'कमीशन' बजि असफल रहैत छथि, अन्ततः अपन नाम आ 'उज्ज्वल झा' बजि मुक्त होइत छथि — 'ओ पहिल बेर अपन पिताक घरसँ बाहर निकलल जेकाँ भेल।' समानान्तर दृश्यमे दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता गज-ग्राह आख्यानक पुरान पोथी पढ़ैत बुझैत छथि जे एहि उपन्यासमे केओ गजक तरहें 'पुकारल' नहि — व्यवस्था कान बन्द केने छल — आ ओ अपन कक्षमे एकटा स्वीकार-पत्र लिखैत छथि, मुदा हस्ताक्षर नहि करैत छथि, कागच जेबमे राखि लैत छथि। बूढ़बा भूत आ पनिडुब्बी बीच वाद-विवाद होइत अछि जे उद्धार गजक नाम-पुकारसँ होइत अछि कि ग्राहक अपन पकड़िक इतिहास बुझलासँ — 'भूखकेँ धर्म बना देब अपराध अछि।' अध्यायक अन्तमे बा भविष्यवाणी करैत छथि — 'सत्यव्रत मेहता अन्तमे तलवार लऽ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान

कऽ नहि आएताह, अपन कान लऽ कऽ आएताह।'

अध्याय ४८ — पुकार

उन्नैसम साँसमे चन्ना गाछीमे कबड्डीक बदला 'पुकार' क अभ्यास होइत अछि — अनन्या खाली कटोरा राखि कहैत छथि 'खाली कटोरा आवाजक घर होइत अछि'। सरयू, उज्ज्वल (देविकाक हाथमे भाइक बन्द फोनसँ स्वतः उभरल पंक्ति — 'हम हारल पैसा नहि छी, हम घरक भोर छी'), आ मुन्ना पासवान (जे स्वयं आबि अपन गलती स्वीकार करैत छथि — 'हमरा बूझल नहि छल जे हमर अंगूठा ककर लाश उठाओत') क पुकार सुनल जाइत अछि, आ मुन्ना ओहि दिनसँ पाठशालाक पहिल स्वयंसेवक बनैत छथि। समानान्तर दिल्लीमे सत्यव्रत मेहताक मेजपर पीतल घण्टी स्वतः बाजैत अछि; राति सपनामे एकटा नेनी पुछैत छथि 'नाम सुनए लेल कान भीतर होइत अछि' — भोरे चारि बजे ओ बिना गाड़ी-सुरक्षाक, पैदल आ फेर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४८ — पुकार

सामान्य ट्रेन-डिब्बासँ गढ़ नारिकेल यात्रा शुरू करैत छथि। साँझमे ओ चन्ना गाछी पहुँचि कऽ घोषणा करैत छथि — 'हम बहुत देर सँ आएल छी... आइ हम सुनब।' एहि वाक्यपर खाली कटोरामे अपने पानि उगि आबैत अछि। ओ 'सरयू' क पूरा नाम लिखय बैसैत छथि, आ पात कहैत अछि — 'नाम पूरा तखन होएत जखन घरक नाम, श्रम, प्रतीक्षा, आ मुआवजाक झूठ सेहो लिखब।' राति भरि सत्यव्रत, फेर अनन्या, देविका, मुन्ना, हरिहरनक पोती, बत्राक बेटा — सभ बारी-बारी नाम लिखैत छथि। अन्तमे सत्यव्रत स्वयं अपन मौनक स्वीकृति दैत छथि — 'जतेक बेर हमर मौन झूठक सहारा बनल, ओ सभ मौनक नाम सेहो एहि अभिलेखमे लिखू' — आ बच्चा सभ माटिपर 'मौन: सत्यव्रत मेहता' लिखैत छथि। अध्यायक

अध्याय ४८ — पुकार

अन्तमे सत्यव्रत गोलक बाहर बैसि केवल सुनैत छथि — 'सुनबाक दण्ड ओहि राति वरदान जेकाँ लागल।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख

बीसम साँसमे बूढ़बा भूत स्पष्ट करैत छथि जे केवल मृतकक नाम लिखलासँ पुकार अधूरा रहत — 'जे देखलक आ चुप रहल, ओकर नाम' सेहो लिखबाक अछि। सत्यव्रत मेहता एकटा 'मौनक अभिलेख' शुरू करैत छथि, जाहिमे सरयूक नाम लग 'ओहि अधिकारीक मौन जे नाम पूछब जरूरी नहि बुझलक' लिखल जाइत अछि। देविका अपन नाम स्वयं 'बहिनक मौन' लिखैत छथि। मुन्ना पासवान बुझैत छथि जे बैंकक बाबू शंका देखितहु चुप रहल छला। एहि बीच बटुकनाथ हरिहरनक कागचपर 'जखन अहाँ जानैत छलहुँ, तखन चुप किए छलहुँ?' उभरैत अछि; चन्द्रपाल बत्राक फोन स्क्रीन-मरम्मतक दुकानदार डरि जाइत छथि — 'बाबू, ई मोबाइल नहि, गवाही अछि।' राघव सिग्नलक तकियाक नीचाँ पुरान मेटाओल आदेश-वाक्य पात बनि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख

झरैत छथि। गढ़ नारिकेलमे बैंकक बाबू, अस्पतालक कम्पाउण्डर, आ वकीलक मुंशी सेहो अपन-अपन मौन लिखैत छथि — 'अन्य टिप्पणी खाली छोड़बाक मौन', 'ऊपर कहि कऽ चेहरा बचेलहुँ', 'दरबाजाक मौन'। ईरा विदेशी सभागारक ताली-कागचकेँ उनटा कऽ 'विदेशी सभागारक मौन' लिखैत छथि। साँझमे खाली कटोरा स्वयं बाजि उठैत अछि — 'मौन लिखल गेल, आब जे नाम लिखल गेल, ओकरा पढ़ब।' हरिहरन आ चन्द्रपालक बेटा (आर्यन) सार्वजनिक रूपसँ सरयू आ उज्ज्वलक नाम काँपैत आवाजमे पढ़ैत छथि — चन्द्रपाल शहरमे अपन छाती पकड़ि बैसि जाइत छथि। बूढ़बा भूत अन्तिम पंक्ति कहैत छथि — 'जे सुनि कऽ काजमे लागत, ओकर मौन धीरे-धीरे पात बनि झरत। जे सुनि कऽ फेर चुप रहत, ओकर मौन ग्राह बनि

अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख

पएर पकड़त।'

अध्याय ५० — देहक बादक नाम

सत्यव्रत मेहता गाछीक बाहर ठाढ़ रहि जाइत छथि, कारण भीतर जेबाक पहिल नियम अछि — पहिने अपन देहक आवाज सुनू। गाछी बीच अचानक एकटा पोखरि बनि जाइत अछि जाहिमे टूटल-फूटल अक्षर जुड़ि-जुड़ि नाम बनैत अछि (सरयू देवी, बुधन मियाँ, जगेसर पासवान, उज्ज्वल झा)। अनन्या सत्यव्रतकेँ कहैत छथि जे 'जे कतेको बेर चुप रहल, ओकर नाम सेहो लिखाइत अछि' — सत्यव्रत अपन नाम स्वयं पानिमे बजैत छथि: 'सत्यव्रत मेहता। मौन।' गाछीक पछुआरी सँ एकटा विशाल गज-सन छाह प्रकट होइत अछि, जकर पएर लोभ-भय-पद-मर्यादाक भीतरी ग्राहमे बान्हल अछि — जखन नाम सभ (सरयू, बुधन, उज्ज्वल, नन्द आरुणि...) एक-एक बजैत अछि, गजक बेड़ी टूटैत अछि, आ अन्ततः ओ आकाश दिस तकि

अध्याय ५० — देहक बादक नाम

'स्वीकार' निकालैत अछि (मुक्ति आ मृत्यु एक्के देहमे आबि जाइत अछि)। बटुकनाथ हरिहरनक छाह गाछीक किनारपर आबि 'अधिकार-क्षेत्र कतय अछि' चिचियाइत अछि — बूढ़बा भूत उत्तर दैत छथि 'जतय नाम मिटाओल जाइत अछि, ओतय चन्ना गाछीक अधिकार शुरू होइत अछि।' अनन्या सत्यव्रतक नामक आगाँ लिखैत छथि — 'जे अबेरसँ सुनल, मुदा सुनल।' गोप कुमार घोषणा करैत छथि जे आब पात सभ स्वयं लिखत, ओ नहि। रातिमे मजदूर-परिवार सभकेँ शुभ सपना आबैत अछि (मृतक बिनु टोकरीक स्नान करैत), मुदा धूर्त सभकेँ भयावह सपना (आदेश ग्राहक जबड़ा बनि कलाई पकड़ैत, पासवर्ड सभ मृतकक नाममे बदलि जाइत)। भोरे सत्यव्रत गाड़ीक चालकसँ कहैत छथि — 'दिल्ली बादमे, पहिने गंगा-पुल... जतय

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५० — देहक बादक नाम

देह खसल छल, ओतय नाम लगाउब बाकी अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५१ — साक्षीक भार

सत्यव्रत मेहता चन्ना गाछी भीतर प्रवेश करैत छथि — बाहर धरती कठोर, भीतर मुलायम। असली गोहि सभ (देह चिबेनिहार जलचर) पहिल बेर साक्षात् प्रकट होइत छथि; सभसँ बूढ़ गोहि पनिडुब्बीक माध्यमसँ कहैत अछि — 'हम देह खाइ छी, ई हमर धर्म सेहो अछि, मुदा जे देह पानिमे बन्धल रहि जाइत, ओकरा मुक्त करब ककर काज छल?' बूढ़बा भूत स्पष्ट करैत छथि जे शीर्षक 'गोहि सभक बीच जलसमाधि' भय मात्र नहि, देहक हार आ नामक मुक्ति दुनू अछि — मुदा ई अपराधक क्षमा नहि। सत्यव्रत अपन सरकारी कागच माटिपर पसारि दैत छथि, आ हवामे अक्षर बदलि जाइत अछि ('निस्तारित' → 'निशान', 'अनुपलब्ध' → 'अनाम')। ओ बुझैत छथि जे कानूनक भाषा मृतकक दोसर मृत्यु लिखि दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५१ — साक्षीक भार

अनन्याक प्रश्नपर 'साक्षी की करैत अछि?' ओ उत्तर दैत छथि — 'साक्षी अपन आँखि बेचैत नहि।' ओ अपन पदनामक पट्टी माटिपर राखि पहिल 'साक्षी-पत्र' लिखैत छथि — 'हम बहुत काल धरि प्रक्रिया सुनैत रहलहुँ' — आ एहि स्वीकारपर ताली नहि, शान्ति उतरैत अछि। मीरा, देविका, सौम्या अपन-अपन प्रश्न पुछैत छथि (निजता घुरायल जा सकैत अछि की? भाइकेँ कोना बचाबी?), आ पीपरक ब्रह्मा उत्तर दैत छथि — 'मृतकक प्रेम भविष्यक पहरेदारी बनि जाइत अछि।' अध्यायक अन्तमे सभ गोहि पानिमे घुरि जाइत छथि, आ जतय सत्यव्रतक पदनामक पट्टी राखल गेल छल, ओतय एकटा नारिकेल अंकुर फुटि आबैत अछि।

अध्याय ५२ — अगिला आवाज

एहि केन्द्रीय अध्यायमे चन्ना गाछी स्वयं काटल जाइत अछि — सरकारी नक्शापर 'अतिक्रमण', ठीकेदारक कागचपर 'विकास क्षेत्र' कहि। जेना-जेना गाछ कटैत जाइत अछि, तेना-तेना अन्हारमे नुकाएल स्मृति (चुनरीक टुकड़ा, माटिक दिया, नाम-लिखल पाथर, बच्चाक काँचक गोली) प्रकाशमे आबि जाइत अछि, आ लोकक आगमन बढ़ैत जाइत अछि — चाहबला ठेला लगबैत छथि, स्त्री सभ दिया राखैत छथि, कटान करैत मजदूर सभमे सँ किछु रातिमे चुपचाप जड़िपर जल ढारि दैत छथि। सत्यव्रत मेहता साधारण सफेद कुरतामे घुरि आबि कटल जड़ि लग बैसैत छथि — एकटा बालिका पुछैत छथि 'गाछि कटल जा रहल अछि, तँ कथा सेहो कटल जाएत?' — ओ उत्तर दैत छथि 'गाछि कटैत अछि, जड़ि सुनैत रहैत अछि। कथा ओतय

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५२ — अगिला आवाज

जीवैत अछि जतय सुनएबला बचल रहै।' अन्तिम बड़ी डारि कटलापर जड़िसँ सड़नक बदला भीजल माटि आ बच्चाक केशक कोमल गन्ध उठैत अछि। बालिका पुछैत छथि 'एतय फेर गाछि उगाओल जाए?' — बच्चा सभ उत्तर दैत छथि 'नव गाछि, मुदा पुरान नाम... नव गाछिक छाँहमे झूठक अदालत नहि, सुननाइक चौपाल बनत।' सत्यव्रत एकटा पुरान रजिस्टर बच्चा सभकेँ दैत छथि, जाहिपर बालिका लिखैत छथि — 'आइ सँ पहरा हमरा सभक।' भोरे कटल ठूँठपर एकटा सूक्ष्म हरियर बिन्दु फुटैत अछि — 'गाछि सुनि रहल अछि।' सत्यव्रत बालिकाक प्रश्नपर 'अहाँ फेर आएब?' उत्तर दैत छथि — 'जतए नाम पुकारल जाएत, ओतए हम सुनएबाक ऋणमे रहब।' अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे चन्ना गाछीक स्थान आब लोक-चौपाल लऽ लेत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५२ — अगिला आवाज

— कथा एतय समाप्त नहि भेल, केवल एकटा दीर्घ साँसक बाद फेर आरम्भ भेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान

गाछ कटलाक बाद पहिल बेर चन्ना गाछीक भीतर सूर्यक उजास सीधा पैसैत अछि — लोकमे खुशीक बदला अनचिन्ह लाज उपजैत अछि, जेना कोनो ढाकल बूढ़ देह अचानक उघार भऽ गेल हो। कटल ठूँठक वृत्त-रेखामे बूढ़बा भूत गाछिक उमेर गनैत छथि आ कहैत छथि — 'गाछि कटैत अछि तँ ओ अपन उमेर खोलि दैत अछि, मनुक्ख कटैत अछि तँ ओकर नाम खोलबाक चाही।' बच्चा सभ नियम बदलैत छथि — कबड्डी दिनमे सेहो होयत, आ रेखा किनार नामक पाथर राखल जायत, जकरा ठोकर लगलापर खेल रुकत। देविका उज्ज्वलक पूरा नाम (उज्ज्वल कुमार झा) पहिल बेर बिनु कानने लिखैत छथि। मीरा 'निजता' क पाथर राखि कहैत छथि — 'मौनक अधिकार सेहो ततेक जरूरी।' ईरा रातिक बससँ पहुँचि बच्चा सभक बीच बैसैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन नहि आबैत छथि, आ बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखैत छथि — 'सुनएबला मनुष्य अनुपस्थित, मुदा ऋण उपस्थित।' साँझमे दू अनचिन्हार लोक (सम्भावित व्यापारिक/भू-माफिया एजेंट) गामक बाहर घुमैत मोबाइलपर 'परियोजना सम्भव अछि' कहैत सुनल जाइत छथि — केवल पनिडुब्बी एहि खतराकेँ लक्षित करैत छथि। अध्यायक अन्तमे नगरपालिकाक मोहरवाला एकटा पीयर नोटिस ठूँठपर चिपकाओल जाइत अछि — 'नामक पहराक पहिल परीक्षा शुरू होमय जा रहल छल।'

अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात

लोक पहिल बेर ठूँठक चारू कात गोल घेरा बना कऽ बैसैत अछि — डारि नहि रहितहु माथ झुकाबैत, आब लाजसँ, डरसँ नहि। जड़िक फाँकी सभमे भेटल पुरान वस्तु (लाल कपड़ाक रेशा, काँचक गोली, अधलिखल नाम) केँ अनन्या उठएबासँ रोकि कहैत छथि — 'पहिने सुनब।' बा जड़ि छुइ कहैत छथि — 'हमरा गाममे कतेको माथ कटि गेल, कुल नहि कटि सकल। जड़ि बाँचल रहै तँ छाँह फेर जन्म लैत अछि।' एकटा बूढ़ मजदूर-पुत्र अपन बाबूक नाम पहिल बेर पढ़ैत छथि — नामक बाद हरेक बेर एकटा प्राकृतिक चिह्न (हवा, चिरई, धूप) लिखबाक नियम बनैत अछि, जकरा बच्चा सभ 'गाछिक उत्तर' मानैत छथि। मीरा लाल डोरी आनि नियम बनबैत छथि — नामक संग दुखक तमाशा नहि बनत। सभसँ पहिल पाथर 'जेकर नाम नहि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात

भेटल' लेल राखल जाइत अछि — बा एहिपर कानि पड़ैत छथि। गोप कुमार बुझैत छथि जे सत्यकेँ केवल उजागर करब पर्याप्त नहि, बसबाक स्थान चाही। साँझमे पहिल बाहरी व्यक्ति — साइकिलधारी पोस्टमास्टर — नगरपालिकाक मोट पीयर लिफाफा अनैत अछि, मुदा अनन्या कहैत छथि 'नाम-पाठ चलि रहल अछि, पीयर कागच प्रतीक्षा करत... काल्हि ओहिपर लिखल शब्दक नाम, कुल, लोभ, उद्देश्य पूछल जायत।' अध्यायक अन्तमे लिफाफा ठूँठक कगारपर राति भरि करवट बदलैत रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

खण्ड १ • मुख्य कथा

भोरे नगरपालिकाक पीयर लिफाफा खोलल जाइत अछि — 'सार्वजनिक सौन्दर्यीकरण आ मार्ग-सुरक्षा' क नामपर पाथर, दीपक, चिह्न हटयबाक आदेश, आ नक्शामे चन्ना गाछीक ठाम एकटा खाली चौकोर देखार होइत अछि। बा, देविका, मीरा, गोप कुमार बारी-बारी सरकारी शब्दावली ('आम जनता', 'असत्यापित कथा', 'अन्धविश्वास') क खोखलापन उजागर करैत छथि। तखने बटुकनाथ हरिहरनक दूत आबि 'चन्ना गाछी लोक-स्मृति केन्द्र' क चमकदार प्रस्ताव देखबैत अछि — फाटक, पट्टिका, टिकट-घर — मुदा अनन्याक प्रश्नपर 'जेकर नाम नहि भेटल पाथर कतय अछि?' दूत असहज भऽ जाइत अछि, आ बालिका स्पष्ट कहैत छथि — 'तखन ई केन्द्र नहि, पिंजड़ा अछि।' सत्यव्रत मेहता पहिल बेर सार्वजनिक रूपसँ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

हस्तक्षेप करैत छथि — 'स्मृतिकेँ ट्रस्ट बनएबाक पहिने स्मृतिसँ अनुमति लेब आवश्यक अछि।' भीड़ 'उपस्थित' कहि उठैत अछि, आ दूत सात दिनक चेतावनी दऽ चलि जाइत अछि। लोक सभ पीयर कागचक किनारपर अपन उत्तर लिखैत अछि ('खाली भू-खण्ड नहि — नामक ठाम', 'भीड़ नहि — परिवार') आ अंगूठाक निशान दैत अछि। अध्यायक अन्तमे लोक सरकारी नक्शाक बदला अपन नक्शा बनएबाक निर्णय लैत अछि — पहिल बिन्दु कटल ठूँठ लऽ कऽ।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा

खण्ड १ • मुख्य कथा

गाम पुरान पुल-योजनाक फेकल कागचकेँ उनटा कऽ लोकरेखासँ नव नक्शा बनबैत अछि। कमला-बलानक धार सोझ नहि, टेढ़ खिंचल जाइत अछि — 'ई नदी फाइलक नहि, देहक नदी अछि।' बा अपन मायक पुरान पगडंडी ('मायक बाट') खिंचैत छथि। उज्ज्वलक माय ओहि ठाम कारी गोल बनबैत छथि जतय ओकर फोन अन्तिम बेर सक्रिय भेटल छल — मीरा एकरा 'तमाशा' बनएबासँ रोकि भीतर एकटा उज्जर बिन्दु ('मोनक बचल इजोत') राखबाक सुझाव दैत छथि। सौम्या श्रमिक स्त्री सभसँ पुछि मजदूर-बस्तीक जगह हथेलीक चिह्नसँ अंकित करैत छथि। गोप कुमार गुमशुदा रसीदक जगह राखमे एकटा 'छेद' (गुमशुदा कागचक मुँह) बनबैत छथि। नगरपालिकाक दू कर्मचारी मापक-फीता लऽ आबैत छथि, मुदा अनन्याक प्रश्नपर 'अहाँक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा

खूँटा ककर ऊपर गड़त — नाम पर?' असहज भऽ जाइत छथि। बूढ़बा भूत दिनक उजासमे लगभग साक्षात् प्रकट भऽ नव नक्शापर 'हस्ताक्षर' करय अबैत छथि। मीरा 'निजताक घेरा' ('अकथितक अधिकार') जोड़ैत छथि, आ ईरा आकाश जोड़बाक सुझाव दैत छथि — एकटा बालक 'अनाम ग्रह' नामक क्षेत्र चिन्हित करैत अछि, जे कथाक भविष्यक दिशाक पहिल संकेत थिक। साँझमे बटुकनाथ हरिहरनक 'लोक-स्मृति न्यास' क विनम्र प्रस्ताव-पत्र लऽ एकटा दूत आबैत अछि — अनन्या स्पष्ट करैत छथि 'काल्हि एहि प्रस्तावक नाम पूछल जाएत।'

अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न

बटुकनाथ हरिहरन स्वयं लाल फाइल लऽ 'गढ़ नारिकेल लोक-स्मृति न्यास' क औपचारिक प्रस्ताव लऽ चन्ना गाछी पहुँचैत छथि। अनन्या 'न्याय जानैत छी?' पुछि ओकरा रोकैत छथि। ईरा एहि मोड़पर गंगेश उपाध्यायक (नव्य न्यायक जनक, तत्त्वचिन्तामणिक रचयिता) कथा प्रस्तुत करैत छथि — लोकश्रुति अनुसार गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद भेल छल (जन्मक प्रमाणपर प्रश्न), आ ओ चर्मकारणीसँ विवाह कएने छला (जातिक प्रश्न) — मुदा एहि जीवन-सत्यकेँ विद्वत्-परम्परा (रमानाथ झा, उदयचन्द्र झा 'अशोक' सन नाम सहित) धुँधला कऽ देलक। मीरा एकरा 'स्मृतिहत्या' कहैत छथि — 'सम्मान जँ सत्यक गला घोंटि दे, तँ ओ सम्मान नहि।' बटुकनाथ 'प्रमाण चाही' कहि विद्वानपर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न

आरोपसँ बचबाक प्रयास करैत छथि, मुदा अनन्या पुछैत छथि — 'जातिक प्रमाण कोन? मनुष्यता नकारबाक प्रमाण कोन?' ठूँठक भीतरसँ रहस्यमय आवाज उठैत अछि — 'जेकरा अहाँ अस्वीकार्य कहैत छी, ओकरा अस्वीकार करबाक प्रमाण की?' बच्चा सभ ठूँठक कटी-सतहक वलय (वृत्त-रेखा) मे 'तत्त्वचिन्तामणि' आ 'बारह हजार ग्रन्थ' क कल्पना देखैत छथि। बटुकनाथ 'जाति-भेद नहि रहत' क आश्वासन दैत छथि, मुदा मीरा आ देविका स्पष्ट करैत छथि जे केवल नाम लिखलासँ जाति नहि टूटैत, आ 'संस्था सेवा करए, स्वामित्व नहि।' आरुणि नियमावलीक 'न्यासक अधिकार क्षेत्र' काटि 'सेवाक दायित्व' लिखि दैत छथि — बटुकनाथक चेहरा कसि जाइत अछि, कारण अधिकारसँ ओ जीबैत छथि, दायित्वसँ डरैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न

छथि। सत्यव्रत मेहता साँझमे टिप्पणी करैत छथि — 'न्यास शब्द न्याय सँ छोट देखाइत अछि, मुदा न्याय बिनु हो, तँ गोहि बनि जाइत अछि।' अध्यायक अन्तमे बटुकनाथक प्रस्ताव अस्वीकृत नहि, केवल सुनवाईक प्रतीक्षामे राखल जाइत अछि — मुदा तखने युवक सभक मोबाइलपर एकटा नव 'गढ़ नारिकेल डिजिटल श्रद्धांजलि मंच' चमकैत देखार होइत अछि, जे कागचक न्यासक बाद स्क्रीनक न्यास (डिजिटल शोषणक नव रूप) क आगमनक संकेत दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

चन्द्रपाल बत्रा (परदा पाछाँ रहि) एकटा 'डिजिटल श्रद्धांजलि मंच' चलाबैत छथि — गामक मोबाइलपर 'नाम अमर करू, स्मृति सुरक्षित राखू' क विज्ञापन चमकैत अछि। देविका जखन ऐप खोलैत छथि तँ पाबैत छथि जे नाम जोड़बासँ पहिने मृतकक पूरा पता, बैंक-विवरण, फोटो, मुआवजा-सूचना आदि माँगल जाइत अछि, आ अन्तमे 'स्मृति-प्रकाशन, शोध, दान, साझेदारीमे उपयोग' क स्वीकृति — 'श्रद्धांजलि नहि, जाल।' ईरा गंगेशक चारि प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान) क कसौटी एहि ऐपपर लगाबैत छथि, आ अनन्या निष्कर्ष दैत छथि — 'गोहि पानिक ऊपर शान्त रहैत अछि, भीतर दाँत रखैत अछि।' मीरा सहमति-शर्त पढ़ि स्पष्ट करैत छथि जे आँसू विज्ञापन आ नाम दानक थाल बनि जायत।

अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

गोप कुमार तकनीकी विश्लेषणसँ बुझबैत छथि जे ई मंच तीन परतमे (सांस्कृतिक मंच, सेवा-समूह, स्मृति-तकनीक) चन्द्रपालक पुरान जालक शैली दोहरबैत अछि। सत्यव्रत मेहता प्रश्न उठबैत छथि — 'शोकाकुल परिवारसँ स्मृतिक बदला सूचना लेल जाए, तँ ओ श्रद्धांजलि अछि कि सौदा?' चन्द्रपालक स्क्रीनपर रहस्यमय ढंगसँ 'तत्त्वचिन्तामणि मोड सक्रिय' चमकि आबैत अछि — ठूँठक हँसी नेटवर्क पार कऽ पहुँचल। गढ़ नारिकेलमे 'नाम-पाठशाला' शुरू होइत अछि (नाम कहब आ नाम देब अलग अछि), आ मीरा नव शपथ लिखबैत छथि — 'हम मृतकक नाम कहब, मुदा घरक चाबी नहि देब।' एकटा बूढ़ी माय अपन डूबल बेटाक नाम ऐपपर चढ़यबाक बदला ठूँठक पाथरपर लिखि घुरि जाइत छथि — 'हमर बेटा पानिमे

अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

गेल, पानिसँ निकाललहुँ, आब फेर स्क्रीनमे किएक डुबाबू?' अध्यायक अन्तमे गोप कुमारक फोनपर बेनाम संदेश आबैत अछि — 'दानक कोड राति बदलत, राघव देख रहल अछि' — जे स्पष्ट करैत अछि जे राघव सिग्नल एहि जालमे संलग्न अछि, आ अगिला खतरा एतहि सँ आओत।

अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

राघव सोमानीक मेटाओल संदेश गोपक फोनक काँचपर धुँधला 'पातक निशान' छोड़ि जाइत अछि — मेटाओल शब्द अपन 'भाप' छोड़ि जाइत अछि। बच्चा सभ गंगेशक पाँच प्रमाण-श्रेणी (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि) एहि कोडपर लगाबैत छथि। गोप कुमार बुझबैत छथि जे राघव सदिखन वस्तुकेँ मीठ नाम दैत छल (पैसा=दान, कमीशन=सेवा, धमकी=सलाह, मेटनाइ=निजता), आ मीरा स्पष्ट करैत छथि — 'निजता अपराधक ढाल नहि, पीड़ितक अधिकार अछि।' भवेश नामक एकटा युवक, जे चन्द्रपालक ऐपमे छोट काज करैत छल, आबि स्वीकार करैत छथि जे कोठली/पातक नस/उनटा दिया सन चिन्हसँ राघव दानक रस्ता निर्देशित करैत छल। एकटा बच्चा साँस रोकि कबड्डीक रेखा छूबि 'नामक

अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड

उत्तर: खेल' सिद्ध करैत अछि — कोड बन्द रहैत अछि, कबड्डी खुलल साँस अछि। बटुकनाथ 'ई अदालत नहि, खेल अछि' फुसफुसाइत छथि, आ बा उत्तर दैत छथि — 'जँ अदालत बरख चिबा जाए आ खेल नाम बचा ले, तँ खेले न्याय अछि।' साँझमे माटिपर नील लकीरमे राघवक चेतावनी उभरैत अछि — 'स्रोत हटाउ' (सत्यव्रतक दिस इशारा), मुदा अनन्या लिखैत छथि — 'मौनक स्रोत: सामूहिक कान' — जे संदेशकेँ नष्ट कऽ दैत अछि। अध्यायक अन्तमे तय होइत अछि जे अगिला दिन सत्यव्रत स्वयं 'मौन-पाठ' मे बैसताह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

राघवक नव कोड (धार्मिक शब्दावली — अर्पण, श्रद्धा, कोष — जकर नीचाँ धूपमे राखलापर 'हिस्सा', 'मार्ग', 'कमीशन' उभरि आबैत अछि) क सामने लोक क्रोधित अछि, मुदा सत्यव्रत मेहता तुरन्त उत्तर नहि दैत छथि — ओ बुझैत छथि जे 'तत्परता सेहो अहंकारक एक रूप' भऽ सकैत अछि। अनन्याक पुछलापर 'अहाँ चुप किएक छी?' ओ अपन पहिल मौन (अपराध) आ दोसर मौन (सुनबाक व्रत) क बीचक भेद स्पष्ट करैत छथि। सभामे ओ घेराक केन्द्रमे नहि, बाहर बैसैत छथि — 'जे मध्यमे बैसत, से आइ नाम होएत, लोक नहि।' देविका, मीरा, सौम्या क्रमशः स्मारक-ऐप, अनुमति-बिनु स्मृति, आ कागचक भाषा (खाली, धरोहर, डिजिटल, दान) क पाखण्ड उजागर करैत छथि। बा गंगेशक जीवनक स्मृतिहत्याक संग

अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

जोड़ैत छथि — 'चन्ना गाछीक नाम सभकेँ सेहो मूर्ति बना देलक तँ ओहो हत्या होएत।' सत्यव्रत निर्णय देबाक बदला शर्त राखैत छथि — स्मारक-प्रस्तावक, दान-प्रस्तावक, न्यास-प्रस्तावक सभकेँ पहिने नाम-पाठ सुनय पड़त। 'नामक समक्ष प्रस्तावक शपथ' नामक पन्नापर सभसँ पहिने बच्चा सभ हस्ताक्षर करैत छथि (सत्यव्रतकेँ अनन्या रोकि दैत छथि), आ सत्यव्रत अन्तमे मात्र 'सुनल' लिखैत छथि। चन्द्रपालक ऐपक प्रचारक फोन-प्रसारणक प्रस्ताव राखैत छथि, मुदा देविका मना करैत छथि। अध्यायक अन्तमे अगिला दिन 'पहिल नाम-उत्सव' (बिनु बाजा-मंच-माल्यार्पणक) क घोषणा होइत अछि, आ ठूँठसँ हवाक आवाज 'कबड्डी' सुनाइ दैत अछि — अगिला खेल साँस रोकि नहि, साँस बचा कऽ

अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

होयत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

बिनु नगाड़ा-पताकाक 'नाम-उत्सव' शुरू होइत अछि — अनन्या स्पष्ट करैत छथि 'जे नाम फेर सुनल जाए, से रोदन मात्र नहि, उपस्थित होइत अछि।' सभसँ पहिल पाथर 'जिनकर नाम नहि भेटल' पढ़ल जाइत अछि, आ बच्चा सभ 'उपस्थित' कहैत छथि। दोसर, अधूरा नाम ('सर...') पर मीरा स्पष्ट करैत छथि — 'अधूरा नामकेँ पूरा बना देब, तँ ओकर असल अधूरापन मेटि जाएत।' बा नियम बनबैत छथि — 'गंगेश तत्त्व पूछलनि, समाज कुल पूछलक, तेँ नाम-पाठमे तत्त्व पहिने, कुल बादमे।' देविका उज्ज्वलक नाम पढ़ैत काँपि जाइत छथि आ जोड़ैत छथि — 'ओकर मौन सेहो उपस्थित।' मीरा स्वयं अपन नाम पढ़ि 'हमर निजता उपस्थित' कहैत छथि। गोप कुमार 'सूची' पढ़बाक बदला 'मनुष्य पढ़बाक गति' सीखैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव

छथि। कबड्डीक रूप बदलि जाइत अछि — साँस टूटलापर हार नहि, बस अगिला नामक पहरापर बैसब। बटुकनाथक न्यास-प्रस्तावकेँ आरुणि 'आइ मृतक सभक दिन अछि, न्यास काल्हि सुनल जाएत' कहि टारि दैत छथि। साँझमे एकटा बूढ़ मजदूर-विधवा नाम पढ़ैत बेहोश भऽ जाइत छथि, आ सत्यव्रत मेहता दौड़ि कऽ सम्हारैत छथि — लोक बुझि जाइत अछि जे मौनक अर्थ निष्क्रियता नहि। अध्यायक अन्तमे रातिमे जड़िक एकटा फाँकीमे हरियर झलक (कोंपलक संकेत) देखार होइत अछि।

अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

भोरे अनन्या ठूँठमे एकटा सूक्ष्म हरियर बिन्दु (कोंपल) देखैत छथि। बा एकरा 'कटल देहमे रस रहलापर लागल कोंपल' कहैत छथि, आ बच्चा सभ रजिस्टरमे 'नामक बाद हरियर बिन्दु' लिखैत छथि। चन्द्रपाल बत्राक ऐपमे एहि कोंपलक फोटो 'पुनर्जन्मक पवित्र क्षण' शीर्षकसँ दानक बटन संग चढ़ि जाइत अछि — देविका आ मीरा 'दृष्टिक मर्यादा' क नियम बनबैत छथि (चित्र लेबासँ पहिने कारण लिखू)। रातिमे बूढ़बा भूत पहिल बेर पूर्ण स्पष्ट देखार भऽ कबड्डीक नव रूप घोषित करैत छथि — 'एखन सँ कबड्डी कोंपल बचएबाक खेल अछि।' सत्यव्रत मेहता मनमे लिखैत छथि — 'न्यायक पहिल नियम: जकर साँस टूटल, ओकरा दण्ड नहि, पानि दियौ।' गंगेशक प्रसंग फेर उठैत अछि — बा स्पष्ट करैत

अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु

छथि जे समाज 'शास्त्र पढ़ैत अछि, देह नहि', तेँ ग्रन्थकारक जीवनक असुविधाजनक सत्य दबाओल गेल। बच्चा सभ प्रमाणक चारि श्रेणी (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, स्मृति) खेलमे लगबैत छथि। जिला सँ एकटा सरकारी गाड़ी परामर्शदाता आ अधिकारीक संग आबि 'विरासत-संवर्धन', 'टिकट-व्यवस्था' क योजना प्रस्तुत करैत अछि — अनन्याक प्रश्नपर 'अहाँ नाम-पाठ सुनलहुँ?' परामर्शदाता कहैत छथि 'पहिने निरीक्षण, फेर सहभागिता' — जे बच्चा सभकेँ पीयर सूचना-पत्र जकाँ खतरनाक लगैत अछि। अध्यायक अन्तमे 'गढ़ नारिकेल विरासत-गलियारा: आरम्भिक संकल्पना' शीर्षकवाला एकटा नव चिक्कन कागच ठूँठक लग अटकि जाइत अछि — व्यावसायीकरणक नव खतरा।

अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

कोंपल फुटलाक तेसर दिन सरकारी गाड़ी सभ बिनु लाजक आबि 'गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना' घोषित करैत अछि। एकटा कारी-चश्माधारी सलाहकार 'चन्ना स्मृति-द्वार', 'भूत-कबड्डी रंगमंच', 'जलसमाधि दृश्य-दीर्घा', 'डिजिटल नाम-देबाल' सन योजना देखबैत अछि, आ पाथर सभकेँ नाम नहि, संख्या मानि गनैत अछि। अनन्याक 'अहाँ नाम पढ़लहुँ?' प्रश्नपर सलाहकार हँसि टारि दैत अछि। बटुकनाथ हरिहरनक 'लोक-स्मृति न्यास' क मसौदा सरकारी फाइलमे घुसि चुकल अछि। देविका आ मीरा 'ध्वनि-प्रकाश कार्यक्रम' आ बिनु-अनुमति दृश्य-प्रदर्शनक विरोध करैत छथि — 'दुखक अधिकार दुख झेलने लोकक अछि, परामर्शदाताक नहि।' बा रंगीन नक्शापर प्रश्न उठबैत छथि — 'एहि नक्शामे ओ ठाम कतय

अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

अछि जतय सरयूक नाम पहिल बेर पढ़ल गेल?' कोंपल (हरियर बिन्दु) दू पातक आकार लैत अछि, आ सलाहकार तुरन्त एकरा 'परियोजनाक प्रतीक' बना फोटो खिंचय चाहैत अछि — अनन्या रोकि दैत छथि: 'ई प्रतीक नहि, बच्चा अछि, फोटोसँ पहिने माएसँ अनुमति लिअ।' सत्यव्रत मेहता आरुणिसँ पुछैत छथि 'ककरा बचाबय चाहैत छी?' — उत्तर: 'गाछि बचाबऽ अछि, मुदा गाछि नहियो बचत तँ बेचएबला हाथसँ नाम बचाबऽ अछि।' आधी राति एकटा नगरपालिका-कर्मी चुपचाप 'निविदा आमन्त्रण'क नव उज्जर सूचना-पत्र चिपका जाइत अछि — 'आइ स्मृति पर निविदा लगाओल गेल।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

निविदाक चिक्कन सरकारी भाषा शोककेँ 'भावनात्मक विरासत संसाधन', जलसमाधिकेँ 'जल-आधारित व्याख्यात्मक गलियारा', भूत-कबड्डीकेँ 'लोक-आस्था आधारित प्रदर्शनात्मक क्रीड़ा क्षेत्र' बना दैत अछि। मीरा निजताक शपथ फेर पढ़ैत छथि — 'फुसफुसाहट ककरा अधिकारसँ रिकॉर्ड होएत?' बच्चा सभ गंगेशक 'प्रमाण' प्रश्न निविदाक हर पंक्तिपर लगबैत छथि — 'लाभ प्रमाण नहि होइत।' उज्ज्वलक माय 'ध्वनि-संयोजन' मदमे अपन बेटाक अन्तिम फोन-घण्टीक ध्वनि शामिल भेल देखि विचलित होइत छथि। सौम्या लागत-पत्र देखि पाबैत छथि जे श्रमिक-पुनर्वास आ निजता-सुरक्षा मद शून्य अछि, जखन कि 'ब्राण्ड चिन्हारि' मद सभसँ बेसी अछि — 'ई स्मृति नहि, बजारक नक्शा अछि।' गोप कुमार

अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

बतबैत छथि जे 'स्मृति' शब्द चौवन बेर, 'नाम' मात्र दू बेर आयल अछि। बटुकनाथ हरिहरन 'लोक-स्मृति न्यास' क वैधानिक प्रारूप लऽ आबि 'कानून भावनासँ ऊपर होइत अछि' कहैत छथि — बा उत्तर दैत छथि 'कानून भावनासँ ऊपर नहि, न्यायसँ नीचाँ होइत अछि। कानून जँ न्याय छोड़ि देत, तखने गोहि बनत।' साँझमे बच्चा सभ कबड्डी बदलि 'प्रमाण-प्रमाण' खेलैत छथि — जे पकड़ा जाय ओकरा निविदाक कोनो पंक्तिक हेतु बतायब पड़त। रातिमे नोटिसक भीतरी परतमे 'अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान परामर्शदाता द्वारा तैयार मसौदा' क धुँधला हस्ताक्षर भेटैत अछि — गोप आ आरुणि एकरा एडवर्ड ब्रूमक पुरान चिन्हसँ मिलाबैत छथि (पुलक विदेशी सलाहकारक फाइलमे सेहो एहन

अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

चिन्ह छल)। अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'बोली लगाबय बला एखन नाम नुकौने अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन

स्मृति-निविदाक पाछाँ 'नव-आरोग्य आधार प्रा. लि.' नामक कम्पनी भेटैत अछि, जकर विदेशी साझीदार गोप कुमार पहचानि लैत छथि — 'नाम नव अछि, मालिक पुरान' (एडवर्ड ब्रूम)। ब्रूमक पत्रमे जलसमाधिकेँ 'जल-स्मृति खण्ड', गोहिकेँ 'जल-जीव प्रतीक', मृत मजदूरकेँ 'श्रम-कथा दीर्घा' कहल जाइत अछि। संगे राखल रंगीन चित्रमे चन्ना गाछीक ठाम काँचक गुम्बद, कृत्रिम पोखरि, आ लाल-आँखिवाली बनावटी गोहि देखार होइत अछि — भूत-कबड्डी 'रात्रि प्रकाश प्रदर्शन' बनि जाइत अछि। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'अनुमति बिनु कोनो स्मृति सार्वजनिक नहि।' मीरा आ देविका दान-हिसाबक पारदर्शिताक माँग करैत छथि। गोप कुमार खुलासा करैत छथि जे कम्पनीक एक शाखा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन

महामारी-कालीन औषधि-व्यापारसँ, दोसर पुल-ठेकाक पुरान सुरक्षा-परामर्शदातासँ, तेसर डिजिटल स्मृति-ऐपसँ जुड़ल अछि। सरयूक वंशक एक वृद्धा मार्मिक कहैत छथि — 'यदि ई लोक हुनकर नाम काँचक घरमे राखत, टिकट बेचत, तँ से दोसर बेर मरण होएत।' एकटा बालक रोज नियमसँ हरियर बिन्दुपर पानि ढारैत अछि — बटुकनाथक 'नियम विरुद्ध' कहलापर ओ उत्तर दैत अछि 'अहाँ आधिकारिक बनाउ, हम जीवित रखब।' रातिमे गोपक यन्त्रपर हार्वर्डक प्रोफेसर एलिना ग्रेव्सक शोध-दलक आगमन-सूचना आबैत अछि — 'ब्रूमक पुनरागमन असगर नहि छल, ज्ञानक चमकदार जुलूस सेहो आबि रहल छल।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल

हार्वर्डक शोध-दल (एकटा शोधार्थी युवक, तीन विदुषी, अनुवादक, चल-चित्र बनौनिहार, अनुदान-संयोजक) गढ़ नारिकेल पहुँचैत अछि। ईरा ओकरा सभकेँ 'पहिने सुनू' कहि बैसबैत छथि, आ अनन्या नाम-पाठक नियम सिखबैत छथि — 'जखन नाम सुनल जाइत अछि, तखन लिखल नहि जाइत, पहिने उपस्थित कहू।' बा गंगेशक जीवन-सत्य (जाति, विवाह, जन्म) आ शोधक बीचक भेद उजागर करैत छथि — 'ग्रन्थ पढ़लहुँ, गंगेशक देहक कथा पढ़लहुँ?' मीरा चल-चित्र बनौनिहारकेँ रोकि कहैत छथि — 'चेहरा पकड़नाइ शिकार अछि; पहिने अनुमति।' गोप कुमार शोध-दलकेँ फोटोक बदला पएरे नक्शाक रस्ता चलाबैत छथि — ठूँठसँ पुल, पुलसँ पोखरि, पोखरिसँ एकटा मजदूर-विधवाक घर धरि। विधवा कैमराक सोझाँ घूँघट नहि

अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल

करैत, बल्कि आँखि तानि कहैत छथि — 'हमर मुँह नहि, हमर पतिक नाम लिखू... अहाँ लिखू, ओ उपस्थित छथि।' शोध-दलक बही अधिकांश खाली रहि जाइत अछि — युवक स्वीकार करैत अछि 'एतए तँ प्रश्न भेटि रहल अछि' — आ बा उत्तर दैत छथि 'प्रश्न नहि भेटल तँ न्याय कोना भेटत?' रातिमे गंगेशक नाम फेर 'उपस्थित' कहि पढ़ल जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे चल-चित्र बनौनिहार अपन लेंस साफ करैत काल धूलिमे अपन चेहराक बदला गोहिक आँखि देखि यन्त्र नीचाँ राखि दैत छथि — दृष्टि स्वयं कटघरामे आबि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार

हार्वर्डक शोध-दल दोसर दिन उतावलेपनसँ (संग्रहक भूखसँ) आबैत अछि। ईरा हुनका बाहरी घेरामे रोकैत छथि। मार्था नामक एकटा शिष्या टूटल-फूटल मैथिलीमे 'पीड़ा संसार धरि पहुँचाएब' कहैत छथि — ईरा प्रश्न पुछैत छथि 'हम कतए जाएब चाहैत छी, संसार धरि कि अपन घर धरि?' मीरा (जे स्वयं ब्लैकमेलक शिकार भेल छलीह) आगाँ बढ़ि पाँच-सूत्री 'दृष्टि-पहरा' विधान बनबैत छथि — चेहरा बिनु अनुमति नहि, रोदन दृश्य नहि, जाति-आधारित दुखकेँ 'सामाजिक उदाहरण' नहि बनाओल जाय। जगदीश राम नामक एकटा वृद्ध चर्मकार गंगेशक जाति-प्रसंग सुनि आगाँ आबि सत्यव्रतक नोटबुकमे स्वयं लिखैत छथि — 'हमर दृष्टि सेहो प्रमाण अछि।' एकटा युवा शोधार्थीक चित्र-यन्त्र अचानक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार

अन्हार भऽ 'अहाँ देखलहुँ, मुदा देखल गेलहुँ कि?' देखबैत अछि। साँझमे मार्था मीरासँ अनुमति माँगि केवल लाल डोरीक चित्र लैत छथि (चेहरा नहि), आ ओकर कथा मीराक अपन शब्दमे लिखबाक शर्त मानि लैत छथि। अध्यायक अन्तमे शोध-दलक गेलाक बाद चन्द्रपाल बत्राक स्मारक-ऐपक एकटा नव विज्ञापन-कागच ठूँठक लग भेटैत अछि — 'श्रद्धांजलि चित्र-संग्रह शीघ्र खुलि रहल अछि' — अनन्या एकरा 'नामक चोरीक पहिल दरबाजा' कहि चिन्हित करैत छथि।

अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

चन्द्रपाल बत्राक श्रद्धांजलि-ऐप ('लोक-स्मृति सेवा मण्डल' नामसँ) पाथरक नामपर चमकीला चिन्ह चिपकयबाक प्रस्ताव राखैत अछि। देविका ऐपमे 'जेकर नाम नहि भेटल' लिखबाक प्रयास करैत छथि — स्क्रीन बेर-बेर अस्वीकार करैत अछि ('कृपया पूर्ण नाम भरू'), जाहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे अधूरा/अनाम/बेजाति नाम एहि ऐपमे प्रवेश नहि पाओत। देविका सोझे चन्द्रपालक नव दफ्तर ('सांस्कृतिक स्मृति सहयोग केन्द्र') जाइत छथि, जतय देबालपर चन्ना गाछीक 'पूर्ण हरियर, कटायल नहि' चित्र टंगल अछि। चन्द्रपाल स्वीकार करैत छथि जे 'व्यवस्थाकेँ आँकड़ा चाही', आ देविका पाछाँक कोठरीमे उज्ज्वलक नामक कातमे 'भावनात्मक पहुँच उच्च' लिखल देखि स्तब्ध भऽ जाइत छथि, मुदा

अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

फोटो नहि खिंचैत छथि (चोरी रोकबाक लेल चोरी नहि करब)। लोकबैठकीमे देविका ऐपक चालि उजागर करैत छथि, आ बच्चा सभ नव नियम बनबैत छथि — 'ककरो नाम स्क्रीनपर चढ़ेबासँ पहिने ओकर लोकक अनुमति।' सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि — 'नामक स्वामित्व मृतकक लोक, स्मृति आ न्यायक संग; बजारक संग नहि।' रातिमे कतेको मोबाइलपर 'गढ़ नारिकेल स्मृति-संग्रहमे अहाँक प्रियजनक नाम जोड़ल गेल अछि' सूचना चमकैत अछि — उज्ज्वलक माय एहि सूचनासँ आहत होइत छथि। भोरे बच्चा सभ पाबैत छथि जे तीनटा पाथरक अक्षर रातिमे कियो कुरेदि देने अछि — 'आइ सँ नामक चोरी शुरू भेल।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६९ — नामक चोरी

देविकाक ऐप-खुलासाक बाद असली, गहींर चोरी उजागर होइत अछि — रजिस्टरक पन्नासँ 'सरयू मण्डल' क नाम अक्षरहीन धब्बा बनि जाइत अछि, आ ओकर पाथरक सतह चिक्कन (नाम-रहित) भऽ जाइत अछि। सात नाम एहि तरहें 'अप्रमाणित' घोषित भेटैत छथि (डिजिटल सूचीमे सेहो)। गोप कुमारक फाइलमे सेहो निशान बहि जाइत अछि। अनन्या गंगेशक प्रश्न दोहरबैत छथि — 'प्रमाण की? जे लिखल अछि, से? जे स्मृतिमे अछि, से?' मीरा सरयूक बहिन राखीसँ भेंट करैत छथि, जे कहैत छथि 'बाबूक कथा की मेटल?' — देहक चालि, बाँचल वस्त्र सेहो प्रमाण अछि। बटुकनाथ हरिहरन फेर न्यासक प्रस्ताव लऽ आबि 'नाम पर स्वामित्व केकर?' प्रश्नपर 'सार्वजनिक हितमे' कहि टारय चाहैत छथि — मीरा तीखा जवाब

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६९ — नामक चोरी

खण्ड १ • मुख्य कथा

2 / 2

दैत छथि। बच्चा सभ तय करैत छथि जे सातो मेटाओल नामक लेल सात दिन नाम-पाठ होयत। पहिल दिन सरयू मण्डलक पाथर उठयलापर नीचाँ माटिमे पोखरिक नक्शा-सन आकृति भेटैत अछि। रातिमे ओहिमे जल चमकैत अछि, आ बूढ़बा भूतक आवाज आबैत अछि — 'नाम जखन मेटाओल जाए, पानि ओकरा राखि लैत अछि।' अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'काल्हि पोखरि सुनल जाएत।'

अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही

खण्ड १ • मुख्य कथा

गामक लोक कमला-बलानक पुरान पोखरि (जतय पनिडुब्बी रहैत छथि) क कातमे जमा होइत अछि। मीरा आ देविका दृष्टि-पहराक नियम दोहरबैत छथि। धुँधलायल नाम पढ़लापर पोखरिसँ बुलबुला, फेर एकटा पात उठैत अछि जाहिमे नामक ध्वनि स्वयं उभरैत अछि। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'जँ समाजक लिखल अक्षर झूठ भेल, तँ प्रकृतिक प्रतिबिम्ब सेहो प्रमाण बनि सकैत अछि।' पोखरिक बीचमे गोल अन्हार बनि पनिडुब्बी स्वयं (सभ स्वरक जोड़, न स्त्री न पुरुष) बजैत छथि — 'जे नाम पानिमे डूबल, ओकर प्रतिबिम्ब चोराएल नहि जा सकैत।' अनन्याक प्रश्नपर 'जे नाम कखनो लिखले नहि गेल?' पनिडुब्बी उत्तर दैत छथि — 'ओकर भार सभसँ बेसी होइत अछि, पहिल पाथर ओकरे राखू।' मीराक निजताक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही

प्रश्नपर पनिडुब्बी दृष्टि-पहराक सिद्धान्त दोहरबैत छथि — 'अनुमति बिनु छवि किनार पर नहि लाबैत।' चन्द्रपालक ऐपक नकली दान-पृष्ठ गोपक मोबाइलमे खुलितहि पानिमे झुकयलापर टूटि जाइत अछि — 'जे नाम सँ कमाइत अछि, ओकर हिसाब पानि नहि, कीचड़ राखैत अछि।' पनिडुब्बी अन्तमे चेतावनी दैत छथि — 'नाम केँ केवल बचाउ नहि, ओकर खेल सेहो बचाउ। जे नाम कबड्डी खेलत, ओ साँस बनि रहत।' अध्यायक अन्तमे भोरे गामक देबालपर नव पोस्टर भेटैत अछि — 'चन्ना गाछी भूत-कबड्डी महोत्सव: टिकट, प्रकाश, ध्वनि' — स्मृतिक बाजार आब असली कबड्डीकेँ नाटकमे बदलबाक तैयारीमे अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

खण्ड १ • मुख्य कथा
1 / 2

एकटा वाणिज्यिक टोली गाममे 'चन्ना गाछी रात्रि-अनुभव: भूत-कबड्डी जुलूस' नामसँ टिकट-आधारित नकली-भूत-प्रदर्शन आयोजित करैत अछि — असली जड़ि पृष्ठभूमि, कृत्रिम धुँआ, किराएक कलाकार। मीराक प्रश्नपर 'परिवारसँ अनुमति लेने छी?' आयोजक अनजान बनैत अछि। नकली कबड्डीमे साँस-तालमेल टूटल रहैत अछि, आ बच्चा सभ चिन्ह लिखैत छथि — 'साँस टूटल, नाम नहि, माटि उत्तर नहि देलक।' अचानक एकटा कलाकार, जकर पएर जड़िक गरम रेखापर पड़ि जाइत अछि, अभ्यासक बदला अपन सचमुचक बाबाक नाम (दूर जिलाक खदानमे मरल मजदूर) बजि उठैत अछि। एकर बाद अन्य कलाकार सभ (माय, मामा, प्रेमक नाम) सेहो अपन असली गवाही देबय लगैत छथि — अभिनय गवाहीमे बदलि जाइत अछि। एकटा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

बालक-कलाकार डरावन आवाजक बदला 'उपस्थित' बजि जाइत अछि। देविका आ मीरा आयोजककेँ पैसा घुरयबाक बाध्य करैत छथि। रातिमे कलाकार सभ अपन नकली कपड़ा उतारि पाथरक पास राखि, अभिनयक बदला पहरा सीखबाक शपथ लैत छथि। अध्यायक अन्तमे मध्यरातिक बाद ठूँठक भीतरसँ एकटा रहस्यमय, हल्की व्यंग्यभरल हँसी उठैत अछि — बा कहैत छथि, 'जखन स्मृति बिकए लागैत अछि आ फेरो बचि जाइत अछि, तखन गाछि हँसैत अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

ठूँठसँ उठल हँसी भोर धरि गूँजैत रहैत अछि — पाथरक अक्षर गाढ़ भऽ जाइत अछि, अनन्या कहैत छथि 'गाछि हँसल नहि, गाछि उत्तर देलक।' नगरपालिकाक फाइलमे 'अवैज्ञानिक अफवाह' लिखल जाइत अछि, मुदा लोकक कानमे ई प्रमाण जकाँ ठहरैत अछि। बच्चा सभ 'हँसीक प्रमाण कोन' पुछलापर एकटा शांत नेनी उत्तर दैत छथि — 'दुःख जखन बिकए सँ इनकार करै, ओहि क्षण जे आवाज उठै, से न्यायक प्रमाण।' चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोगक यंत्र हँसीक ध्वनि रिकॉर्ड करय चाहैत अछि, मुदा केवल खालीपन आबैत अछि — सुननिहार सभकेँ अपन-अपन अपराधक नाम सुनाइ दैत अछि। एडवर्ड ब्रूमक सलाहकार एकरा 'सकारात्मक रूपमे उपयोग' करबाक सुझाव दैत छथि, मुदा ब्रूम स्वयं ओ हँसी हार्वर्डक

अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

तालीक भीतर सुनैत छथि। मीरा घोषणा करैत छथि — 'हँसीक कोनो स्वामी नहि... ई हँसी मनोरंजन नहि, अस्वीकार अछि।' पत्रकार सभ खाली नोटबुक लऽ घुरैत छथि, कारण बच्चा सभक उत्तरसँ हुनका बुझना जाइत अछि जे 'गढ़ नारिकेल खबर नहि, परीक्षा अछि।' बटुकनाथ हरिहरन 'सांस्कृतिक हँसीक संरक्षण' लिखय चाहैत छथि, मुदा 'हँसी' शब्दक हकार गोहिक मुँह जकाँ चमकि जाइत अछि, आ ओ कलम छोड़ि दैत छथि। रातिमे कबड्डीक पुनर्जागरण होइत अछि — एकटा पुरान भूत-खिलाड़ी बच्चा सभकेँ सिखबैत छथि 'जे नाम लऽ कऽ घुरत, से खेलकेँ बचा लेत।' अध्यायक अन्तमे बटुकनाथकेँ स्वप्नमे अपन छातीमे उगल चन्ना गाछीक 'भीतरी दरबार' देखार होइत अछि, जतय हँसी उत्तर दैत अछि —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

'प्रत्यक्ष: लोभ, अनुमान: विलम्ब, शब्द: न्याय, सत्य: हँसी' — जे अगिला अध्याय (बटुकनाथक स्वप्न-दरबार) क द्वार खोलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

चन्ना गाछीक हँसी बटुकनाथक कानमे राति भरि बजैत रहैत अछि। ओ अपन 'लोक-स्मृति न्यास' क मसौदा लिखय बैसैत छथि, मुदा स्याही पसरि कऽ पात बनि जाइत अछि। निन्नमे ओ अपन परिचित बार-काउंसिल सभागारमे पहुँचैत छथि, जतय कुर्सी जड़ि बनि जाइत अछि आ गंगेश उपाध्याय स्वयं (चर्मकारणी पत्नीक संग) प्रकट होइत छथि — 'नाम सुननाइ सीखने छी कि केवल कुल?' रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा 'अशोक' क छाह गंगेशक जीवन-सत्य सम्पादित करय चाहैत अछि, जकरा स्वप्न-न्यायाधीश 'सम्मान-हत्या' कहैत छथि। बटुकनाथपर आरोप लागैत अछि — 'न्यायकेँ पेशा बना कऽ न्यायसँ विमुख करब' — आ ओकर बचावक शब्द (प्रक्रिया, अधिकार) सूखल पात बनि झड़ि जाइत छथि। ओ जातिक बाड़ पाछाँ भागय

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

चाहैत छथि, मुदा चर्मकारणी स्त्री बाड़ उखाड़ि दैत छथि — 'जे न्याय देहक स्पर्शसँ डरै, से न्याय नहि, नहायल पाखण्ड अछि।' एकटा बालिका-छाह पुछैत छथि जे न्यासमे गंगेशक पत्नीकेँ, बिनु-नामक लोककेँ ठाम भेटत की — बटुकनाथक चुप्पी दोषक प्रमाण बनि जाइत अछि। बूढ़बा भूत कबड्डीक चुनौती दैत छथि, मुदा बटुकनाथक साँस अटकि जाइत अछि। गंगेश कहैत छथि — 'न्यायमे उठबाक काज स्वयं करए पड़ैत अछि, पहिल शर्त — अपन कुलक सिंहासन सँ उतरू' — आ बटुकनाथक सभ उपाधि झड़ि अन्तमे केवल 'बटुक' (डरायल बालक) बचैत छथि। जागलाक बाद मसौदाक शब्द स्वतः बदलल भेटैत अछि ('अध्यक्ष' → 'अन्तिम श्रोता', 'कोष' → 'नामक पहरा बच्चा सभक हाथमे')। ओ अपन आलमारीमे

अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

चन्द्रपाल बत्राक पुरान नोट ('स्मारक-अनुप्रयोग सुरक्षित') पाबैत छथि — अध्यायक अन्तमे हँसी बटुकनाथकेँ छोड़ि चन्द्रपालक स्क्रीन दिस बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

चन्द्रपाल बत्रा अपन काँचक कोठीमे असगर बैसल छथि — श्रद्धांजलि-ऐपक हर आँकड़ा स्वतः नाम (उज्ज्वल झा, मुन्ना पासवान, सरयू) बनि जाइत अछि। ऐनामे ओकरा अपन आँखिक बदला 'उपयोगकर्ता' सभक आँखि देखार होइत छथि, आ ओ चिचिया उठैत छथि। भोरे थाकनिमे टूटल अवस्थामे ओ बिनु ड्राइवरक विशेष सम्मानक चन्ना गाछी पहुँचैत छथि — कियो शोर नहि करैत, केवल प्रतीक्षा करैत अछि, जे ओकरा भयावह लगैत अछि। अनन्याक प्रश्नपर 'जन्मक नाम कि व्यापारक नाम?' ओ अपन बचपनक नाम 'चन्दू' कहैत छथि। मीरा स्पष्ट करैत छथि — 'रोदन प्रमाण नहि, नामक संग सत्य कहू।' चन्द्रपाल आंशिक स्वीकार करैत छथि — 'हम लोककेँ लोक नहि मानलहुँ, स्क्रीनक पाछाँ भीड़ बुझलहुँ... हम

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

चेहरा देखबाक मेहनत नहि केलहुँ।' देविका उज्ज्वलक नामसँ कमायल पैसाक हिसाब मंगैत छथि, आ चन्द्रपाल एकटा कागच दैत छथि — देविका कहैत छथि 'हिसाब नामक बराबर नहि होइत, मुदा हिसाब बिनु अगिला लड़ाइ अधूरा रहत।' साँझमे ओ पाथर लग बैसल रहैत छथि, आ अन्हार भेलापर राघव सिग्नलकेँ 'रुकू, नाम उठि गेल अछि' लिखबाक प्रयास करैत छथि — मुदा संदेश नहि जाइत, स्क्रीनपर पातक लिपि उभरैत अछि — 'जतय नाम सुनल जाए, ओतय कोड नहि पहुँचैत।' अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे पहिल स्वीकार दण्डक अन्त नहि, अगिला दरबाजाक कुंडी अछि — अगिला बारी राघवक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

चन्द्रपालक स्वीकारक बाद राघव सोमानीक हर संदेश (बटुकनाथ, चन्द्रपाल, ब्रूमक सहायक, लाउ किन-हंगकेँ) 'भेजल गेल' देखाइत अछि, मुदा कतहु पहुँचैत नहि। ओकर बन्द फोनक कारी स्क्रीनपर स्वतः पात/नाम (उज्ज्वल, सरयू, मुन्ना) उगि आबैत छथि — आवाज कहैत अछि 'सन्देश भेजबासँ पहिने प्राप्तकर्ता चुनैत छलहुँ, आब नाम सभ स्वयं प्राप्तकर्ता चुनत।' ओकर पुरान कागचक नोटबुकमे 'प्रतिशत' शब्द स्वतः 'प्रतिश्रुत' बनि जाइत अछि। गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ 'उपस्थित-उपस्थित' कहि कबड्डी खेलैत छथि, आ राघवक फोनपर बेनाम 'उपस्थित' विषयक खाली संदेश आबैत अछि — ओकर हर बचाव-वाक्य ('हम केवल संदेशवाहक छी') फोनक उत्तरसँ काटल जाइत अछि ('घुसपैठ ओ छल जे अहाँ

अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

नामक घरमे कएलहुँ')। बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'नेटवर्क ओहि ठाम टूटैत अछि जतय झूठ बाट माँगैत अछि... साँचकेँ नेटवर्क नहि, सम्बन्ध चाही।' भोरे राघवक सभ फोनपर एकटा नक्शा (स्मृतिक नेटवर्क) चमकैत अछि, जाहिमे 'लाउ किन-हंग' क नाम स्वतः उभरैत अछि। अध्यायक अन्तमे राघव बिनु फोन, बिनु कोडक, पहिल बेर स्वयं पूरा नाम बजैत छथि — 'लाउ किन-हंग' — जे मुक्तिक बदला 'भयावह पहिल पग' साबित होइत अछि।

अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

लाउ किन-हंग अपन काँचक भवनमे गढ़ नारिकेलक चित्र देखि बुझैत छथि जे 'आँकड़ा चुप अछि आ चित्र ओकरा पर नजरि राखि रहल अछि।' रातिमे स्वप्नमे नदीक गोहि सभ कागच-करार-दान-पत्र चिबाबैत देखार होइत छथि, आ एकटा गोहि पुछैत अछि 'तोहर नाम कोन जलमे लिखल अछि?' ओ भारत-यात्राक निर्णय लैत छथि (सार्वजनिक रूपसँ 'संस्कृति आ पुनर्वास निवेशक समीक्षा')। फाइलमे 'गंगेश' नामकेँ 'जोखिम-तालिका' मे देखि ओ असहज होइत छथि। विमानमे बादलक बीच ओकरा 'कबड्डी-कबड्डी' क स्वर सुनाइ दैत अछि, आ अपन गरीब बचपन (माछक गन्ध, कर्जक डर, बापूक झुकल पीठ) मोन पड़ैत अछि। कातमे बैसल एकटा वृद्ध भारतीय यात्री गढ़ नारिकेलक नाम-उत्सवक अखबार-कथा देखबैत कहैत छथि —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

'ओतय मृतक सभक नाम जीबैत अछि... सर्वर बन्द भऽ जाए तँ? कागच जरि जाइत अछि, मुदा जँ बच्चा सभ सुनि लेलक, तखन नामक दोसर जीवन शुरू होइत अछि।' स्वप्नमे गंगेशक आकृति सोझे पुछैत छथि — 'लाभक प्रमाण की? जकरा नाम नहि, ओकर हानि केना गनब?' दिल्ली उतरलापर हवाई अड्डाक काँचमे ओ अपन प्रतिबिम्बक बदला एकटा गोहि देखैत छथि, जे पुछैत जकाँ बुझाइत अछि — 'तोँ नाम लऽ कऽ आयल छेँ कि बेनाम लाभ?' अध्यायक अन्तमे ओ दुभाषियाकेँ 'सीधा गढ़ नारिकेल' कहैत छथि — 'जतबे देर करब, गोहि आँखि नहि झपकाओत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

लाउ किन-हंगक विमान भारत उतरैत अछि। इमिग्रेशनक चेहरा-मिलान मशीनक परदापर एक क्षण लेल ओकर चेहराक बदला गोहिक आँखि उभरि आबैत अछि। अतिथि-कक्षक टीवीपर गढ़ नारिकेलक समाचार (नाम-उत्सव) चलैत अछि, आ लाउ पुछैत छथि 'बच्चा सभकेँ हटाओल नहि गेल?' सहायक उत्तर दैत छथि 'हटाओलाक बाद ओ सभ आर बेसी जगहमे पसरि जाएत।' कातमे बैसल एकटा मैथिली-अखबार पढ़ैत वृद्ध यात्री गढ़ नारिकेलक कथा देखा कहैत छथि — 'सर्वर बन्द भऽ जाए तँ? बच्चा सभ सुनि लेलक तखन नामक दोसर जीवन शुरू होइत अछि।' स्वप्नमे गंगेशक आकृति पुछैत छथि — 'लाभक प्रमाण की? जकरा नाम नहि, ओकर हानि केना गनब?' अतिथि-कक्षमे एकटा रहस्यमय वृद्ध सफाईकर्मी (जे रिकॉर्डमे नहि, कैमरामे

अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

नहि) कहैत छथि — 'पानि पीबैत काल नाम सोचब, तँ पानि साफ रहत।' गाड़ीक चालक बिनु बतेने 'गढ़ नारिकेल?' पुछैत छथि। रातिमे स्वप्नमे बच्चा सभ लाउसँ 'असल नाम?' पुछैत छथि, आ गोहि पन्ना-पन्ना खाता चिबाबैत अछि जाहिसँ मजदूर-युवक-स्त्रीक स्वर उठैत अछि। भोरे सत्यव्रत मेहताक एकटा संक्षिप्त संदेश आबैत अछि — 'नाम सुनबाक अछि तँ आबि जाउ' — पुरान हवाई अड्डा मार्गक प्रतीक्षालयमे।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

सत्यव्रत मेहता लाउ किन-हंगकेँ अपन दफ्तरमे नहि, चन्ना गाछीक ठूँठ लग बजबैत छथि — 'जँ नाम सँ डर हो, तँ भेंटक कोनो प्रयोजन नहि।' लाउ नाम-पाठ सुनैत छथि; चौदहम नामपर ठूँठक भीतरी रेखा एक क्षण लाल भऽ उठैत अछि। लाउक 'प्रमाण चाहैत छी' पुछलापर सत्यव्रत गंगेशक प्रमाण-चतुष्टय (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द) क संग 'चारिम पीड़ा' (देहसँ बोलनिहार) जोड़ैत छथि — 'अहाँ लाभ गिनलहुँ, एक बेर नाम गिनू।' अनन्या ओकरा पाथरपर अपन नाम (देवनागरी उच्चारणक संग) लिखबाक कहैत छथि, आ पाथर हाथमे भारी बुझाइत छथि। सत्यव्रत स्पष्ट करैत छथि — 'एखन ई क्षमा नहि, केवल उपस्थिति अछि।' बटुकनाथकेँ खबर भेटैत अछि जे लाउ अपन दान-प्रतिज्ञा स्थगित कऽ रहल छथि,

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

जे न्यासक योजनाकेँ चोट पहुँचबैत अछि। रातिमे लाउकेँ बच्चा सभ द्वारा साधारण विद्यालय-कोठरीमे राखल जाइत छथि। स्वप्नमे ओ 'अनाम ग्रह' (सभ भवनपर संख्या, नाम नहि) देखैत छथि, जतय चन्ना गाछी उगि आबि कऽ बच्चा सभ हुनकर जेबसँ ठेका-दान-पत्र कबड्डी खेलिकऽ खसाबैत छथि। जागलापर बाहरसँ 'उपस्थित' शब्द सुनैत छथि — पहिल बेर बिनु अनुवाद ओकर अर्थ बुझैत छथि: 'भागब असंभव।' भोरे लाउक दान करबाक प्रस्तावकेँ सत्यव्रत रोकैत छथि — 'दानक पहिने दस्तावेज, दस्तावेजक पहिने नाम, नामक पहिने सुननाइ।' अध्यायक अन्तमे एडवर्ड ब्रूमक दूत सुनहर दान-पत्र लऽ आबैत अछि, मुदा अनन्या ओकरा लेल सेहो खाली पाथर राखि कहैत छथि — 'आब दानक नाम पूछल जाएत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र

एडवर्ड ब्रूमक 'विश्व-स्मृति पुनर्स्थापन निधि' सँ एकटा चिक्कन दान-पत्र आबैत अछि — 'चन्ना गाछी पीड़ा-स्मृति केन्द्रक लेल करुण अनुदान।' प्रतिनिधि 'निष्काम' दानक दावा करैत छथि, मुदा देविका, मीरा, गोप कुमारक प्रश्नपर स्पष्ट होइत अछि जे एकटा पंक्ति ('साझा संप्रेषण सामग्री पर निधिक प्राथमिक उपयोगाधिकार') स्मृतिपर स्वामित्व दैत अछि — गोप कहैत छथि 'आइ नाम लेत, काल्हि चित्र, परसू आवाज, फेर आँसू पर सेहो अधिकार।' बा कागचक गन्ध सूँघि कहैत छथि — 'एहिमे रोदनक गन्ध नहि, कपाटबन्द कोठरीक गन्ध अछि।' अचानक बरखाक बून्द दान-पत्रक मोहरपर खसि कागचकेँ भीजा दैत अछि, आ नीचाँसँ पुल-ठेकाक पुरान अनुच्छेद (मजदूर-सुरक्षा,

अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र

क्षतिपूर्ति) उघरि आबैत अछि — दान-पत्र नकाब सिद्ध होइत अछि। सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि — 'दान जखन अपराधक अभिलेख ढाँकए, तखन ओ दान नहि, विलम्बित बचाव अछि।' अध्यायक अन्तमे बटुकनाथक बेटा (जकर नाम आगिला अध्यायमे तारिणी भेटत) पिताकेँ सोझे पुछैत छथि — 'बाबा, ई न्याय बचाबय लेल अछि कि पेशा?'

अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

बटुकनाथक संतान तारिणी (कानूनक विद्यार्थी) राति देर घरमे पिताकेँ सोझे प्रश्न करैत छथि — 'अहाँ गंगेशकेँ सम्मान देलहुँ कि हुनकर प्रश्नकेँ बन्द कएलहुँ?' ओ स्पष्ट आरोप लगबैत छथि — मजदूरक केस तकनीकी दोष कहि किनारा कएल गेल, उज्ज्वलक केस डिजिटल-सहमतिक नाम पर भटकाओल गेल, मीराक निजताक मामिला चरित्र-प्रश्नमे धकेलल गेल। बटुकनाथ पहिल बेर अपन घरमे 'बाहरी अभियुक्त' जकाँ अनुभव करैत छथि। तारिणी अपन पिताक पुरान भाषण-पुस्तिका ('मिथिला तर्कक भूमि अछि') देखा गंगेशक जातिगत मौनक प्रश्न उठबैत छथि, आ रमानाथ झा-उदयचन्द्र झाक सम्पादकीय दमनकेँ 'सम्मान-हत्या' कहैत छथि। स्वप्न-सन दृश्यमे बटुकनाथक बरामदा चन्ना गाछीक ठूँठ बनि जाइत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

अछि, आ अन्य दोषी-पिताक संतान सभ (दवा-घोटाला, जुआ, विदेशी दान) सेहो देखार होइत छथि — सभ पुछैत छथि 'हमरा की छोड़ि जाइब?' तारिणी घोषणा करैत छथि जे न्यास बनत तँ 'बच्चा सभ, मजदूर परिवार, स्त्री सभा' चलाओत, बटुकनाथकेँ केवल 'उपस्थिति' भेटत, अध्यक्षता नहि। भोरे बटुकनाथ 'लोक-स्मृति न्यास सम्बन्धी प्रस्ताव स्थगित' लिखि, काटि 'प्रस्ताव लोक-पहरा समक्ष सुनल जाए' लिखैत छथि। तारिणी जाइत काल सम्मान-पत्रक माला हटा कहैत छथि — 'गंगेशकेँ माला नहि, प्रश्न चाही।' अध्यायक अन्तमे चन्द्रपाल बत्रा असगर बैसि पहिल बेर अपन पूरा नाम लिखय चाहैत छथि, मुदा 'बत्रा' अटकि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

चन्द्रपाल बत्रा अपन कोठरीमे एकटा उज्जर कागच सोझाँ राखल पबैत छथि जाहिपर लिखल अछि 'अपन नाम लिखू।' जखनो ओ अपन नाम लिखय चाहैत छथि, कलम स्वतः 'दस प्रतिशत', 'आधा लाभ', 'कमीशन' लिखि दैत अछि — ओ बुझैत छथि जे ओ जीवन भरि नामक ठाम लाभ-चिह्न लिखैत रहला। अपन बचपनक तख्ती आ मायक शब्द 'चन्नू, नाम खराब नहि करिह' मोन पड़ैत छन्हि। ओ 'चन्नू' लिखय चाहैत छथि, मुदा 'च' सँ आगाँ हाथ अटकि जाइत अछि — भुजा भारी भऽ जाइत अछि जेना गोहि दाँतसँ पकड़ने हो। ओ राति पहिल बेर कानैत छथि — दया माँगबाक नहि, बल्कि प्रमाण जे भीतरक बर्बादी ओकरो स्पर्श कऽ गेल। गढ़ नारिकेलमे अनन्या 'अधूरा नाम' शीर्षकसँ नव रजिस्टर-पृष्ठ खोलैत छथि — बा स्पष्ट करैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

छथि 'अपराध क्षमा लेल नहि, प्रमाण लेल लिखल जाइत अछि।' सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'न्याय केवल पीड़ितक नाम नहि, अपराधीक असल नाम सेहो माँगैत अछि।' भोरे कागच अपने-आप मुड़ि पात बनि खिड़कीक काँचमे चिपकि जाइत अछि, आ चन्द्रपाल काँचमे अपन चेहराक बदला गजक आँखि (पाछाँ गोहिक जबड़ा) देखैत छथि। अध्यायक अन्तमे अनन्या घोषणा करैत छथि — 'अगिला बेर भीतरक गज-ग्राह खेलत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

खण्ड १ • मुख्य कथा

चन्ना ठूँठपर एकटा सामूहिक 'भीतरी दृश्य' खुजैत अछि जाहिमे हरेक धूर्तक भीतर अलग-अलग गज (दबल सत्य) आ ग्राह (लोभ/भय) देखार होइत छथि। बटुकनाथ हरिहरनक भीतर बालपनक न्यायप्रियता (गज) आ पेशागत कपट (ग्राह) — संतानक स्वर 'न्याय बचेलहुँ कि पेशा?' गूँजैत रहैत अछि। चन्द्रपालक भीतर नाम लिखय चाहनिहार बालक, आ ग्राह ओकरा 'दलाल', 'बटुआ' बनबैत रहैत अछि — देविका कहैत छथि 'जकरा नामक अक्षर नहि बचल, ओ दोसराक नाम केना बचाएत?' राघव सिग्नलक भीतर एकटा पारदर्शी, मेटाइत गज — ओकर सभसँ पैघ पीड़ा अछि जे ओकरा कहियो 'पूरा वाक्य' नहि भेटल। लाउ किन-हंगक भीतर पिंजड़ाबद्ध विशाल गज — नाम (सरयू, उज्ज्वल, मुन्ना) काँचपर उभरैत अछि, आ ग्राह कहैत

अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

अछि 'नाम घाटा अछि', गज उत्तर दैत अछि 'नाम बिनु लाभ पथरा जाइत अछि।' एडवर्ड ब्रूमक भीतर तालि-भूखी गज देखार होइत अछि, मुदा ओकर पूरा जाँच बाकी रहि जाइत अछि। सत्यव्रत मेहता स्वयं कहैत छथि 'हमरा सेहो छोड़ू नहि' — अनन्या लिखैत छथि 'साक्षी सेहो जाँच सँ बाहर नहि।' अन्तमे सभटा भीतरी गज एकटा सामूहिक गजमे मिलि जाइत अछि, आ नाम पानिपर पड़ैत अछि — बच्चा सभ 'उपस्थित' कहैत रहैत छथि आ ग्राहक पकड़ ढील होइत रहैत अछि, मुदा पूर्ण मुक्ति नहि होइत — बूढ़बा भूत कहैत छथि 'अपराधक हिसाब रहत, मुदा भीतरक गज नहि देखब तँ ग्राहक जाति नहि चिन्हब।' अध्यायक अन्तमे बच्चा सभ नियम बनबैत छथि — 'हम सभ केवल मृतकक नाम नहि पढ़ब, जीवितक भीतर अटकल

अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

नाम सेहो खोजब' — आ अनन्या 'नारिकेल पात पाठशाला' शीर्षकसँ नव पृष्ठ खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

भीतरी गज-ग्राहक रातिक बाद अनन्या ठूँठक पाछाँक जगहमे 'पाठशाला' बनाबय शुरू करैत छथि — सरकारी मान्यता लेल नहि, नामक सुननाइक लेल। बा एकर नाम 'नारिकेल पात पाठशाला' दैत छथि — 'नारिकेलक पात दूर-दूर धरि हवा पकड़ैत अछि, ई पाठशाला ओहिना लोकक आवाज पकड़त।' योजनामे चारि कोना (नाम, निजता, श्रम, साँस) आ बीचमे ठूँठ, ऊपर खाली कटोरा। देविका, मीरा, गोप, आ सत्यव्रत मेहता चारि देबाल-पाँति लिखैत छथि — सत्यव्रत लिखैत छथि 'एतय मौन सेहो गवाही अछि, जँ ओ डरक नहि, सुनबाक हो।' बच्चा सभ सूखल नारिकेल-पातपर लिखय शुरू करैत छथि, संकेतमात्र, खाली जगह छोड़ि — 'जँ कथा बन्द लिखि देब, तँ अगिला मनुष्य कतऽ बाजत?' एकटा चर्मकार बालक आ ब्राह्मण

अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

बालकक हाथ एक्के पातपर पड़लापर हरियर रेखा चमकैत अछि — बा कहैत छथि 'तत्त्वचिन्तामणि केवल पुस्तकमे नहि, दू हाथक बीचमे सेहो खुलैत अछि।' एकटा बूढ़ पण्डितक 'गंगेशक कथा प्रमाणित नहि' आपत्तिपर अनन्या पुछैत छथि — 'तखन जातिक गर्वक प्रमाण की?' साँझमे नारिकेल पातक मंडप तैयार होइत अछि। रातिमे खाली कटोराक तीन बेर धीमे बजयलापर अनन्या घोषणा करैत छथि — 'आइ पाठशाला खुलल... एतय जे अनुपस्थित अछि, ओकरा पहिने बजाओल जाएत।'

अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

पाठशालाक पहिल पाठ वर्णमाला नहि, 'उपस्थित' कहब होइत अछि। पहिल बच्चा अपन नानी (जकर असली नाम घरमे नहि बाजल जाइत छल) — सीतामोनि — क नाम लैत अछि। दोसर बच्चा (सोनकि) अपन मामा भोलारामक नाम कहैत छथि, जे नदीमे डूबल छला मुदा किनको सूचीमे नहि छल। तेसर बच्चा अपन चर्मकार परदादा मंगलू दासक नाम कहैत अछि — मीरा जोर दैत छथि 'जकर श्रम पर सभ चलल, ओकर नाम आधारमे लिखल जाएत', आ देविका ओकर नाम पन्नाक बीचमे लिखैत छथि। गंगेशक जीवन-सत्यक प्रश्न फेर उठैत अछि, आ रजिस्टरमे 'गंगेशक जीवनक दबाओल सत्य — उपस्थित' पंक्ति जुड़ैत अछि। एकटा बच्चा अपन बहिनक नाम (जे हिंसाक कारण स्कूलसँ काटल गेल छल) पूर्ण नहि बाजि पबैत — मीरा 'एक बेटी —

अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

गरिमासहित उपस्थित' लिखैत छथि। बूढ़ पण्डितक आपत्तिपर ईरा उत्तर दैत छथि — 'व्यवस्था जँ मृतकक नाम खाए, तखन ओकरो गोहि कहल जाएत।' एकटा बूढ़ स्त्री अपन मायक (फुलकुमारी) नाम — जे सासुरमे कहय मना छल — ताबीज देखा कहैत छथि, आ ताबीजक सूत अपने खुजि जाइत अछि। साँझमे 'उपस्थित' गामक नव नागरिक-संबोधन बनि जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे स्त्री सभ धीरे-धीरे बजय लगैत छथि (घरेलू हिंसा, दहेज, प्रेमक कारण मार) — मीरा घोषित करैत छथि 'अगिला पाठ: स्त्री सभक राति-सभा।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

पाठशालाक पहिल दिनक बाद राति स्त्री सभ चुपचाप चन्ना ठूँठक चारू कात जुटैत छथि — कोनो घोषणा, कोनो मंच बिनु। उज्ज्वलक माय अपन बेटाक पुरान कमीज राखि कहैत छथि — 'ओ समाजक ओहि चुप्पीसँ हारल, जे लाजक डर सँ ठगीक बात घरमे कहए नहि दैत।' देविका कहैत छथि — 'ठग विदेशमे बैसि खाता चलबैत अछि, आ घरक लोक पीड़ितक माथपर लाजक मटकी फोड़ैत अछि।' पुल-मजदूरक विधवा (जे रजिस्टरमे केवल 'मुन्नाक घरबाली' लिखल छलीह) अपन नाम फुलकुमारी बतबैत छथि — 'मजदूरक पएर जखन माटिमे धँसैत अछि, ओकर घरक स्त्रीक पएर सेहो धँसैत अछि।' ईरा गंगेशक चर्मकारणी पत्नीक दबाओल स्मृतिकेँ 'पैघ नाम-चोरी' कहैत छथि। बा घोषित करैत छथि — 'जँ समाजक एक स्त्रीक नाम ताहि

अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

भीतर नहि पढ़ि सकलहुँ, तँ बारह हजार ग्रन्थक तौल ककरा लेल?' मीरा लाल डोरीक नियम बनबैत छथि — जे स्त्री कथा कहि चुकलीह, ओ डोरी अपन कलाईमे राखतीह (सार्वजनिक वस्तु नहि बनब)। एकटा युवती अपन नाम नहि, केवल 'गोपनीय उपस्थित' रूपमे दर्ज होयबाक चाहैत छथि। सौम्या 'देहक प्रमाण' शीर्षकसँ खाली पन्ना छोड़ैत छथि — 'खाली स्थान सेहो दस्तावेज अछि।' अध्यायक अन्तमे पाँच सिद्धान्त तय होइत अछि (अनुमति, जाति-हिंसा, ठगक लाज, स्त्रीक नाम, निजताक गरिमा), आ फुलकुमारी कहैत छथि — 'काल्हि मजदूरक पएर पढ़ल जाए।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

बच्चा सभ अधबनल पुल दिस जाइत छथि जतय मजदूरक नाम खाताक बाहर खसा देल गेल छल। मुन्ना पासवानक काका सभसँ पहिने आबि माटिक कटोरामे अपन फाटल पएर राखि पातपर छाप छोड़ैत छथि — 'एतय हमर भाइक पसेना पड़ल छल, कागचमे नाम नहि, मुदा पएरक दबाव अछि।' ईरा लिखैत छथि — 'मुन्ना पासवानक काकाक पएर: श्रम उपस्थित।' धीरे-धीरे मजदूर-परिवारक स्त्री सभ सेहो पएर-छाप दैत छथि — देविका कहैत छथि 'रोटी लए कऽ जे पएर चलल, ओ श्रम नहि?' आरुणि (अभियन्ता) स्वीकार करैत छथि — 'जे पुल मजदूरक नाम नहि राखै, से अधूरा पुल अछि।' चन्द्रपाल बत्राक लोक 'शहीद श्रमिक स्मृति-देबाल' पट्टिका लऽ आबैत अछि, मुदा बच्चा सभ पहिने पएर पढ़बाक जोर दैत छथि। मीरा नियम

अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

जोड़ैत छथि — पएर-छाप देनिहारक अनुमति बिनु कोनो छवि प्रयोग नहि होयत। बच्चा सभ कबड्डीक नव रूप खेलैत छथि — 'एहि पार पएर, ओहि पार कागच। जे कागच पएरक नाम नहि माने, ओ आउट।' सत्यव्रत मेहता अपन जूता खोलि पएर राखय चाहैत छथि, मुदा अनन्या कहैत छथि — 'अहाँक पएर नहि, अहाँक मौन लिखल जा चुकल अछि' — आ हुनकर अस्वीकार सेहो न्यायक भाग बनि जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे रजिस्टरमे नव खण्ड 'पएरक अभिलेख' खुजैत अछि, आ अनन्या घोषणा करैत छथि — 'काल्हि पाठशालामे स्क्रीन बन्द रहत... जे स्क्रीन दिन भरि मोन चिबैत अछि, ओकरा एक दिन उपवास कराएब।'

अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास

बच्चा सभ पूरा गाममे एक दिनक स्वैच्छिक 'स्क्रीनक उपवास' क आयोजन करैत छथि — भोजनक नहि, दृष्टिक उपवास। 'स्क्रीन-घड़ा' मे लोक स्वेच्छासँ अपन यंत्र राखैत छथि — देविका, मीरा, आ अन्तमे सत्यव्रत मेहता सेहो अपन फोन जमा करैत छथि ('कतेको बरख फोन बजिते हम लोकक आवाजक बीच सँ उठि गेलहुँ')। बा अपन चश्मा राखि 'आइ सुनब' कहैत छथि। दिन भरि नाम-पाठक बदला 'मुँह-पाठ' (पुरान कथा, बाढ़िक स्मृति, ठगीक अनुभव) होइत अछि। गोप कुमार हाथेँ नामक सूची लिखैत छथि — एकटा बूढ़ किसानक कथापर बच्चा सभ लिखैत छथि 'फोन खेत नहि खाए, अकेलापन खाए।' कबड्डीक नव रूपमे रेखा पार करनिहार बच्चा 'कबड्डी' नहि, एकटा नाम बजैत अछि, आ साँस टूटलापर सभ मिलि ओकर

अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास

कथा पूरा करैत छथि। दुकानदार सभ हार्थें बही लिखैत छथि, आ पहिल बेर सम्बन्ध देखार होइत अछि (कोन विधवा उधारमे चाउर लैत छथि)। चन्द्रपाल बत्राक ऐपपर एहि दिन आँकड़ा घटि जाइत अछि। रातिमे यंत्र घुरायल जाइत काल नव नियम बनैत अछि (रोदनक चित्र बिनु अनुमति नहि, ठगीक संदेश असगरे नहि पढ़ब)। अध्यायक अन्तमे ईरा तारा दिस तकैत विदेशमे बसल गढ़ नारिकेलक बच्चा सभकेँ पत्र लिखबाक निर्णय लैत छथि।

अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

ईरा नारिकेल पातपर विदेशमे बसल गढ़ नारिकेलक वंशज बच्चा सभकेँ पत्र लिखैत छथि — 'गढ़ नारिकेल अहाँक छुट्टीक चित्र नहि, अहाँक उत्तरदायित्व अछि।' ओ नियम राखैत छथि — 'जँ अहाँ आउ, तँ पहिने फोटो नहि, पहिने एक नाम सुनू... भूत ओ नाम अछि जकर न्याय पूरा नहि भेल।' पत्रमे गंगेशक कथा आ जातिक 'पहिल चोरी' सेहो जोड़ल जाइत अछि। कतोक प्रति (पात, कागच, विद्युतीय) पठाओल जाइत अछि। दू दिनमे उत्तर आबय लगैत अछि — टोरन्टोक 'नील'/नीलकंठ लिखैत छथि 'हम नाम गलत पढ़ैत छी, मुदा सीखब, हमरा पहिल नाम भेजू।' मेलबर्नक बालिका, दुबईक बच्चा (जकर बाबा भवन बनबैत छथि मुदा नाम भवनपर नहि लिखाइत) सेहो लिखैत छथि। हर उत्तरमे 'हम उपस्थित छी, मुदा सीखब

अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

बाँकी अछि' पंक्ति भेटैत अछि — एहि लेल नव पाथर 'दूर उपस्थित' बनैत अछि। बटुकनाथक न्यास आ ब्रूमक शोध-दल एहि पत्र-आदान-प्रदानकेँ 'प्रवासी-स्मृति सञ्जाल' बनयबाक कोशिश करैत छथि, मुदा ईरा स्पष्ट करैत छथि — 'ई पत्र कोनो न्यास, संस्था, दान-आह्वानक कच्चा माल नहि... हम एकरा साँसक शृंखला कहैत छी।' अध्यायक अन्तमे ईरा सत्यव्रतकेँ प्रश्न पठबैत छथि — 'जे लोक दूर अछि, भाषा नहि जानैत, ओकर गवाही केना सुनल जाए?' — सत्यव्रत उत्तर दैत छथि 'अगिला सुननाइमे दूरक बच्चा सभक पत्र पढ़ल जाए।'

अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

विदेशसँ पहिल उत्तर एकटा बच्चाक हाथ-बनाओल नक्शा रूपमे आबैत अछि — 'हमर दादीक नाम एतय कत्तए राखब?' — जे गामक आ विदेशक बच्चा सभकेँ जोड़ैत अछि। सत्यव्रत मेहताक जन-सुनवाई चन्ना ठूँठक चारू कात, बिनु मंच-कुर्सी-माइकक होइत अछि — 'आइ हम अध्यक्ष नहि, पहिने सुननिहार छी।' पहिल गवाही एकटा बूढ़ चर्मकार स्त्रीक — 'गंगेशकेँ ज्ञानी मानल गेल, मुदा जे जाति हमरा चप्पल बनबैत देखैत अछि, से हमर बेटीकेँ शास्त्र पढ़ैत नहि देखए चाहैत। ज्ञानक जूता के बनबैत अछि?' — जे सत्यव्रतकेँ प्रमाणक सीमा पुनर्विचार करय बाध्य करैत अछि। दोसर गवाही ईराक पत्रक विदेशी उत्तर — शिक्षकद्वारा दादीक नामक 'वर्तनी ठीक करू' कहलापर बच्चाक विरोध — 'दादीक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

नाम कोनो वर्तनी नहि, आवाज छल।' तेसर गवाही मजदूर-परिवारक युवकक — 'हमर बाबू कागच पर अस्थायी मजदूर छल, पानिमे स्थायी भऽ गेल।' सत्यव्रत घोषित करैत छथि — 'हम फैसला नहि देब, गवाही अपन आकारमे रहत।' राघव सिग्नलक पुरान संदेश ('भावनाकेँ सामग्रीमे बदलू') उजागर होइत अछि, आ सत्यव्रत लिखैत छथि — 'लोक-स्मृतिकेँ सामग्री कहब, दोसर हत्या।' साँझमे कबड्डीक खेल जन-सुनवाईक विधि बनि जाइत अछि। रातिमे खाली माटिक कटोरा (मौन राखबाक) भारी भऽ जाइत अछि आ केवल अनन्याक हाथ लगयलापर उठैत अछि। अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'नामक पहरा लेल नियम चाही' — आ बच्चा सभ पहिल छह नियम लिखय शुरू करैत छथि।

अध्याय ९० — नामक संविधान

पाठशालामे बच्चा सभ 'नामक संविधान' लिखैत छथि — पहिल नियम देविकाक: 'नाम नहि मेटाएब।' दोसर मीराक: 'निजता नहि बेचाएब।' तेसर सौम्याक (देहक अपमान नहि), चारिम आरुणिक (स्मृति पर ठेका नहि लगएब), पाँचम गंगेशक प्रश्नसँ (जातिक नाम पर न्यायक हत्या नहि), छठम गोपक (कागचक सत्य लोकक स्वर बिनु अधूरा), सातम स्क्रीनक उपवाससँ (सुविधाकेँ स्वामी नहि बनएब), आठम कबड्डीसँ (साँस टूटए सँ पहिने घुरू, मुदा साथी छोड़ि नहि — भविष्यक 'ग्रह' क संकेत सहित), नवम बाक (जिनका नाम नहि भेटल, हुनका पहिल आसन), दसम सत्यव्रतक ('मौनक हिसाब राखू — अपराधीक नाम लिखू, चुप देखनिहारक मौन सेहो'), एगारहम पनिडुब्बीक स्मरणसँ (पानि जे राखलक, ताहिपर दावा

अध्याय ९० — नामक संविधान

नहि), बारहम ईराक पत्रसँ (गाम स्मृतिचित्र नहि, उत्तरदायित्व)। तेरहम नियमपर बहस होइत अछि — क्षमा कोना? — अन्तमे तय होइत अछि 'क्षमा नाम सुनबाक श्रममे खोजल जाएत, अपराधक लाभ पहिने छूटत।' चौदहम नियम सामूहिक रूपसँ बनैत अछि — 'बच्चा पहरुआ, बूढ़ साक्षी, स्त्री विधान-धारक, मजदूर माटिक मालिक।' मोहरक प्रश्नपर अनन्या ठूँठक भीजल रेशा लगबैत छथि — 'मोहर जड़िक' — आ बच्चा सभ अँगूठाछाप दैत छथि। अध्यायक अन्तमे संविधान बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ, ब्रूमक दूर-दूर ठाम पहुँचैत अछि (उदाहरणतः 'नाम नहि मेटाएब' चन्द्रपालक यंत्रमे चमकैत अछि), मुदा अपराधी सभ स्वयं सभामे अनुपस्थित रहैत छथि — प्रश्न रहि जाइत अछि जे ई अनुपस्थिति

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९० — नामक संविधान

दण्ड अछि कि नव षड्यंत्र।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

खण्ड १ • मुख्य कथा

1 / 2

बच्चा सभ निर्णय लैत छथि जे पाँचू धूर्त (बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ, ब्रूम) क नाम सभासँ बाहर, चेतावनी-पन्नापर राखल जायत, मंचपर नहि — 'पहिने हुनका सभक कर्मक नाम लिखू' (तारीखक भक्षण, देहक सौदा, स्क्रीनक फाँस, दानक मुखौटा, जातिक अहंकार) — अपराधीक नाम बहुत छोट अक्षरमे, पाप पैघ अक्षरमे। बटुकनाथ प्रतीक्षा करैत छथि, मुदा कोनो निमन्त्रण नहि आबैत। चन्द्रपालक ऐप शान्त रहैत अछि। राघवकेँ कोनो संकेत नहि भेटैत। लाउ किन-हंगकेँ 'किनार पर रखल गेल' कहल जाइत अछि — बुझबामे कठिनाई होइत अछि जे ई दण्ड अछि। ब्रूम एकरा 'स्थानीय भावुक राजनीति' कहि हँसैत छथि, मुदा रिपोर्ट पढ़ि हँसी रुकि जाइत अछि। अनुपस्थित धूर्तक भार धीरे-धीरे

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

उपस्थित लोकक ऊपरसँ उतरैत अछि — अनन्या लिखैत छथि 'जे अनुपस्थित अछि, से डर नहि, जँ हम उपस्थित छी।' अध्यायक अन्तमे कारी-किनारबला पृष्ठ पलटैत काल अपराधी सभक नाम परछाहीँ बनि कागचसँ बाहर माटिपर खसैत अछि — बच्चा सभ पाथर राखि छाँह हटाबैत छथि, मुदा साँझमे ठूँठक पश्चिमी किनारसँ एकटा असामान्य नमहर छाँह पसरैत अछि, जकरा बा 'अनुपस्थित सभक छाँह' कहैत छथि।

अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह

ठूँठक असामान्य नमहर, लहरदार छाँह चारू कात पसरैत रहैत अछि। बच्चा सभक कबड्डीक नव रूप बनैत अछि — छाँहक भीतर पैसि 'उपस्थित' कहब, बाहर आबि नाम दोहरायब। बा कहैत छथि — 'ठूँठक छाँहमे मन उत्तरदायित्व पबैत अछि।' एकटा बालक पुछैत छथि 'छाह प्रमाण अछि?' — अनन्या गंगेशक चारि प्रमाणसँ जोड़ैत छथि। मीरा स्पष्ट करैत छथि 'छाँहक चित्र लेल जा सकैत अछि, चेहराक नहि।' सत्यव्रत मेहता छाँहमे चप्पल उतारि दैत छथि — जड़िक साक्षीक सम्मानमे। बटुकनाथक संतान अपन पिताक पुरान कलम अनैत छथि, आ अनन्याक प्रश्नपर 'कलम दोषी अछि कि हाथ?' कलम पाथरक बाहर, मुदा गवाहीक अन्दर राखल जाइत अछि। चन्द्रपालक अधूरा नामक कागच सेहो छाँहक बाहरी रेखापर राखल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह

जाइत अछि। लाउ किन-हंग अपन काँचक कोठरीमे सेहो ओही लहरदार छाँह देखैत छथि — परदा तानलापर छाँह भीतर घुसि जाइत अछि। रातिमे चन्द्रमाक उजासमे छाँह उनटे चाँदीक रेखा बनि जाइत अछि — बा कहैत छथि 'जे छाँह स्मृतिसँ बनैत अछि, से अन्हारोमे उजास रहैत।' मध्यराति लग कमला-बलान दिससँ पानिक गन्ध उठैत अछि, आ आकाशमे कारी बादर गढ़ नारिकेल दिस बढ़ैत अछि — छाँह पानिक दिशामे नमहर भऽ पाथरक नाम छूबैत अछि, जेना संकटक खबर दैत हो। अनन्या तुरन्त नामक प्रतिलिपि बनएबाक आदेश दैत छथि। भोरे पहिल बून्द 'जेकर नाम नहि भेटल' पाथरपर खसैत अछि — बा कहैत छथि 'जिनका नाम नहि भेटल, हुनकरे पहिने पानि खबर देलक।' अध्यायक अन्तमे कमला-बलानक बाढ़िक आगमन

अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह

स्पष्ट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि

कमला-बलानमे फेर बाढ़िक चेतावनी आबैत अछि। अनन्या घोषणा करैत छथि — 'एहि बेर गाछ नहि बचाओब मात्र, नाम सेहो बचाओब।' गामक लोक धान, पशु, बच्चाक संग नामक संविधान, रजिस्टर, पाथर, लाल डोरी सेहो ऊँच स्थान लऽ जाइत छथि। देविका आ निशान्त मोबाइलकेँ नियन्त्रित उपयोगमे रखैत छथि। गोप कुमार कहैत छथि 'कागच भीजि सकैत अछि, प्रतिलिपि चाही' — अनन्या उत्तर दैत छथि 'प्रतिलिपि कागचक नहि, कण्ठक बनत' — बच्चा सभ दस-दस नाम कण्ठस्थ करय शुरू करैत छथि। बरखा टूटि पड़ैत अछि। बच्चा सभ पाथर उठएबाक बदला ओकर छाप माटिमे दबा नारिकेल पातसँ चिन्हित करैत छथि। बूढ़बा भूत बरखामे साफ देखार भऽ पुछैत छथि — 'कबड्डी के बन्द करब? बाढ़िमे साँसक असली

अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि

परीक्षा होइत अछि।' बच्चा सभ पानिमे उतरि कबड्डी खेलैत नाम-नाव बनबैत छथि। मध्यरातिमे ठूँठक हरियर बिन्दु पानिक भीतर झिलमिलाइत अछि — 'गाछ पानि पढ़ि रहल अछि।' भोरसँ पहिने पानिपर लम्बा कारी आकार आ चमकैत आँखि देखार होइत अछि — 'आब ओ सभो घुरि रहल अछि' (गोहि सभक वापसी)।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी

गोहि सभ गाममे बाढ़िक पानिमे घुरि आबैत छथि — लोक पहिने डेराइत अछि, मुदा अनन्या स्पष्ट करैत छथि 'गोहि सभ आक्रमण नहि करैत, गोलाइ बना कऽ तैरैत छथि, सीमा रखनिहार जीव अछि।' सभसँ पैघ गोहि ठूँठक सीधमे रुकि जड़ि दिस तकैत रहैत अछि। बा गज-ग्राह आख्यानकेँ फेर व्याख्या करैत छथि — 'गोहि देह खाइत अछि, मुदा नाम जँ बाँचल रहए, तँ भीतरक बन्धन कटि सकैत अछि।' 'जेकर नाम नहि भेटल' पाथर पानिपर तैरि गोहिक गोलाइमे पहुँचैत अछि, आ पैघ गोहि ओकरा धक्का दऽ कगारपर घुरा दैत अछि — बच्चा सभ लिखैत छथि 'अनामक पहरा गोहि द्वारा घुराओल गेल।' एकटा बूढ़ मल्लाह कहैत छथि — 'जे लाश बेनाम छोड़ल जाए, ओकरे चारू कात गोहि घूमैत अछि, नाम दऽ देल जाए तँ

अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी

खण्ड १ • मुख्य कथा

2 / 3

पानि शान्त होइत अछि।' सत्यव्रत मेहता घाटपर रुकि जाइत छथि जखन लोक कहैत अछि, आ कहैत छथि — 'जे नाम बाँचल अछि, ओकरा हम पढ़ने छी, जे नहि भेटल, ओकरा सुनबाक ऋण अछि।' दूर शहरमे लाउ किन-हंग, बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव सभकेँ अपन-अपन ठाम एहि गोहि/पानिक प्रभाव अनुभव होइत अछि (चन्द्रपालक स्क्रीनपर 'नाम सत्यापित करू' संदेश, राघवक संदेश नहि जाइत)। रातिमे गोहि सभ धीरे-धीरे पाछाँ हटैत छथि, अन्तिम पैघ गोहि पानिमे घुरैत एकटा गोल रेखा (कबड्डीक मैदान/ग्रहक कक्षा जकाँ) बनबैत अछि। भोरे कियो गोहिपर पाथर नहि फेकैत, सभ शान्तिसँ घाट साफ करैत छथि। अध्यायक अन्तमे ईराकेँ विदेशसँ सूचना भेटैत अछि जे कोनो कम्पनी (लाउ-ब्रूम-चन्द्रपालक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी

संग) बाढ़ि-प्रभावित स्मृति-क्षेत्रकेँ 'जल-सुरक्षा आ भविष्य-निवास परियोजना' क नाम पर कीनबाक प्रस्ताव पठौने अछि — 'अगिला पाठ सौदाक होएत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

बाढ़िक बीच लाउ किन-हंग अपन काँचक कार्यालयसँ 'अन्तिम सौदा' तैयार करैत छथि — बाढ़ि-राहत, पाठशाला, अस्पतालक उज्जर भाषामे लिपटल, मुदा भीतर बच्चा-पहराकेँ 'प्रशिक्षित स्वयंसेवक' बनयबाक, नाम-पाठकेँ 'विशेषज्ञ-समिति' केँ सौंपबाक, आ चन्ना ठूँठक भूमिकेँ 'संयुक्त प्रबन्धन' मे देबाक शर्त। एकटा गोपनीय परिशिष्टमे 'अनाम बसाहट' नामक दूरस्थ (संभवतः अन्तरिक्ष) आवास-परियोजनाक संकेत भेटैत अछि, जाहिमे प्रतिभाशाली बच्चा आ सांस्कृतिक-स्मृति-वाहक लोककेँ 'भविष्यक सुरक्षित ठाम' लऽ जेबाक प्रस्ताव अछि — ईरा बुझैत छथि जे ई 'पृथ्वी छोड़बाक स्वप्नक आरम्भिक विज्ञापन' थिक। पत्र नावसँ आबि बाँसक फाँकपर राखल जाइत अछि — अनन्या कहैत छथि

अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

'पहिने ई कागच सुनत।' सत्यव्रत मेहता पत्र पढ़ैत छथि, आ 'बाल-पहरा' कें 'प्रशिक्षित स्वयंसेवक' बनयबाक वाक्यपर ठूँठक हरियर बिन्दु काँपैत अछि — बा कहैत छथि 'पहरुआक नाम बदलल गेल तँ पहरा बदलि जाएत।' गोहि सभ मचानक चारू कात गोल घूमैत छथि — सीमा-स्मारकक रूपमे। अनन्या घोषणा करैत छथि — 'उत्तर कागच पर नहि देब' — आ बाढ़िक बीच नाम-पाठ शुरू होइत अछि (सरयू, उज्ज्वल, गंगेश आदि)। गोप कुमार एहि स्वरकें फाइल नहि, खुलल आकाश दिस छोड़ैत छथि। लाउक टेबलपर सौदा-पत्रक कोना भीजि जाइत अछि, आ ओ स्वीकार करैत छथि — 'ई सभ अपन पृथ्वीयो छोड़ए नहि चाहैत।' अनन्या रजिस्टरमे लिखैत छथि — 'सौदा आयल, सुनल गेल, अस्वीकार नहि कहल गेल; ओकरा नाम

अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

सुनबाक दण्ड देल गेल।' अध्यायक अन्तमे बटुकनाथ हरिहरन बिनु कोनो कागचक, केवल खाली हाथ बाढ़िक पानिमे टखना धरि ठाढ़ भऽ कहैत छथि — 'हमरा एक राति नाम सुनए दियौ, हमरा अपन कानक जाति बदलबाक अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

बाढ़िक तेसर दिन बटुकनाथ हरिहरन असगरे, बिनु फाइल-गाड़ी-अधिवक्ताक, धूलि-भरल पएरसँ चन्ना ठूँठ लग पहुँचैत छथि — 'हम क्षमा माँगए आयल छी।' सत्यव्रत मेहता उत्तर दैत छथि — 'हमरा सँ नहि, एतय जकर नाम पढ़ल जाइत अछि, ओकरा सभसँ।' अनन्या ओकर फोन जमा करा लैत छथि, आ राति भरि नाम-पाठ शुरू होइत अछि — सरयू, उज्ज्वल, मुन्ना पासवान, गंगेश आदि। हर नामसँ बटुकनाथकेँ अपन पुरान बचाव-तर्क ('प्रक्रिया एहन छल', 'न्यायालय स्वतन्त्र अछि') थाकैत जाइत अछि। गंगेशक नामपर ओ स्वीकार करैत छथि — 'हम अपराधी छी... हम नामकेँ मामला बनौलहुँ, मनुख नहि। हम न्यायकेँ पेशा बनौलहुँ।' एकटा युवक क्रोधमे चिचिया उठैत छथि, आ मीरा कहैत छथि 'क्रोध सेहो

अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

उपस्थित अछि, ओकरो ठाम चाही।' भोरक अन्तिम नाम 'अनाम' पर बटुकनाथकेँ 'उपस्थित' कहबामे कठिनाई होइत छन्हि, अन्ततः फुसफुसाहटमे कहि पबैत छथि। अनन्या स्पष्ट करैत छथि — 'क्षमा निर्णय नहि, अभ्यास अछि, काल्हि फेर नाम पढ़ल जाएत।' बटुकनाथ बिनु प्रमाणपत्रक, खाली हाथ घुरैत छथि। अध्यायक अन्तमे चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीनपर 'क्रेडिट', 'डेबिट' क ठाम 'माध्यम' शब्द चमकैत अछि, आ ओ बुदबुदाइत छथि 'हम तँ पैसा घुमेलहुँ मात्र' — स्क्रीन उत्तर दैत अछि 'म्यूल।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

चन्द्रपाल बत्रा असगरे अपन कोठरीमे बैसल गंगेशक प्रमाण-प्रश्न अपन जीवनपर लगबैत छथि — 'प्रत्यक्ष: हाथमे आयल पैसा। अनुमान: लाउ किन-हंगक आदेश। शब्द: राघवक मेटाइत संदेश। उपमान: ओ स्वयं — खच्चर जे बोझा ढोइत अछि, मालिक नहि होइत।' खाता-बहीक अङ्क ओकरा चेहरा बनि देखार होइत अछि (डिजिटल-अरेस्टक शिकार युवक, ठगल माय, मुआवजा-हीन मजदूर-परिवार)। ओ अपन पहिल विद्यालय-दिनक स्मृति (शिक्षकद्वारा नाम बिगाड़ल जायब) सँ जोड़ैत छथि — 'जकरा अपन नाम बिगड़लापर एतेक पीड़ा भेल, ओ हजार लोकक नाम खातामे बदलि देलक।' बाढ़िक पानिमे खिड़कीसँ छोट-छोट खाता तैरैत देखार होइत छथि, हर एकपर 'मार्फत' लिखल। ओ अपन नाम लिखय चाहैत छथि, मुदा कलम बेर-बेर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

'प्रतिशत' लिखि दैत अछि — अन्ततः ओ स्वयं लिखैत छथि 'चन्द्रपाल बत्रा, म्यूल अकाउण्ट, जकरा मार्फत पाप गुजल।' दरबाजाक फाँकसँ एकटा भीजल पात आबि 'ककर खाता छल?' पुछैत अछि — ओ उत्तर लिखैत छथि 'हमर सेहो।' ओ बुझैत छथि जे प्रत्येक खाता एकटा गोहि बनि गेल अछि, नाम चिबाइत, आ असली मालिक अदृश्य रहैत अछि। ओ राघवकेँ संदेश लिखय चाहैत छथि 'हम माध्यम छलहुँ, मुदा निर्दोष नहि' — मुदा संदेश पात बनि स्क्रीनपर चिपकि जाइत अछि। भोरे ओ अपन कागच-पात कपड़ामे बान्हि, लँगड़ाइत बाढ़िक पानि पार कऽ चन्ना गाछी दिस चलि पड़ैत छथि — 'हमर नाम पूरा लिखू, मुदा हमर प्रतिशत सेहो लिखू।' अध्यायक अन्तमे राघवक फोनसँ अन्तिम बेर चमकैत अछि — 'सन्देश नहि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

मेटत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

राघव सोमानी अपन कोठरीमे पाँच यंत्रक बीच बैसल छथि, मुदा सन्देश आब उत्तर नहि पबैत। ओ अपन नाम पूरा लिखय चाहैत छथि — 'राघव सोमानी' — मुदा स्क्रीन 'राघव सिग्नल सोमानी' लिखि दैत अछि, जेना उपनाम बेड़ी बनि गेल हो। ओ चन्द्रपाल, बटुकनाथ, लाउ, ब्रूमकेँ संदेश लिखय चाहैत छथि, मुदा किछु नहि जाइत अछि। अन्तमे 'हमरा भय लगैत अछि' लिखलापर अनाम स्रोतसँ उत्तर आबैत अछि — 'उपस्थित।' ओ धीरे-धीरे सन्देश लिखैत छथि (पठेने बिना) आ अन्तमे 'खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल' पठा दैत छथि — ई सन्देश मेटायल नहि जाइत, हरियर रेखा बनि पातक शिरामे बदलि जाइत अछि, आ कमराभरि नारिकेलक कच्चा गन्ध पसरि जाइत अछि। ओतय गढ़ नारिकेलमे अधरतियामे एकटा हरियर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

पात उड़ि कऽ ठूँठक कगारपर आबि चिपकैत अछि — 'खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।' अनन्या पातक नीचाँ 'प्रतीक्षा' लिखल पाथर राखैत छथि — मीरा कहैत छथि 'स्वीकार बिनु उत्तरदायित्व अधूरा अछि।' राघव भोरे शहरमे जागि पबैत छथि जे ई विशेष संदेश डिजिटल संसारसँ अनुपस्थित अछि, मुदा स्मृतिक संसारमे उपस्थित — ई उलटफेर ओकरा भीतरसँ तोड़ि दैत अछि। ओ कागचपर लिखय बैसैत छथि — 'हम जे चुप रखलहुँ, से अपराध छल' — मुदा एहि एक पाँतिसँ आगाँ नहि बढ़ि पबैत छथि। सत्यव्रत मेहता एहि पातकेँ 'गवाही नहि, गवाहीक दुआर' कहैत छथि, आ अनन्याक प्रश्नपर 'गवाही के देत?' उत्तर दैत छथि — 'जे समय पर नहि बाजल, से पहिने। हमहुँ।' अध्यायक अन्तमे पातपर एकटा नव

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

सूक्ष्म पंक्ति उभरैत अछि — 'सुनबाक ऋण बाँकी अछि' — जे संकेत दैत अछि जे सत्यव्रत मेहताक स्वयंक गवाही आब आवश्यक भऽ गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

खण्ड १ • मुख्य कथा

राघवक पातक बाद सत्यव्रत मेहता स्वयं गवाही लिखय बैसैत छथि — बिनु शीर्ष, बिनु मोहर, बिनु पदनाम। पहिल वाक्य लिखबामे बहुत समय लगैत छन्हि — 'हम अनेक बेर समय पर बाजि सकैत छलहुँ, मुदा नहि बाजलहुँ।' ओ स्वीकार करैत छथि जे पुलक मजदूरक मामिलामे 'प्रक्रिया चलि रहल अछि' लिखि चुप रहला, अस्पतालमे साँसक अभावपर रिपोर्टक भाषासँ संतोष कएला, डिजिटल ठगीमे मुकदमाक परिधिमे सिमटि गेला, स्त्रीक निजताक मामिलामे 'प्रमाण' मांगि पीड़िताक भयकेँ प्रमाण नहि मानला। ओ गंगेशक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि — 'जे समाज जीवनक असुविधाजनक सत्यकेँ काटि देलक, से ग्रन्थक मान राखि की पाओत? हम सेहो अनेक बेर असुविधाजनक सत्यकेँ प्रक्रियात्मक कठिनाई कहि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

काटलहुँ — ई हमर मौनक जाति-व्यवस्था छल।' ओ स्वीकार करैत छथि जे क्रमांकपर हस्ताक्षर करब सहज छल, नामक आगाँ आँखि उठाब कठिन। अन्तमे ओ अपन गवाहीमे स्वयंक विरुद्ध दण्डक आग्रह करैत छथि — 'हमर पदक इतिहास, हमर निर्णयक विलम्ब, हमर चुप्पीक लाभार्थीक नाम सार्वजनिक हो' — आ चेतावनी दैत छथि 'जँ कखनो हमर गवाही स्मारक वा पुरस्कारमे बदलि देल जाए, तँ बच्चा सभ ओकरा अस्वीकार करत।' अनन्या पन्नाकेँ रजिस्टरमे नहि, पाथर सभक बीचमे राखैत छथि। बूढ़बा भूत दिनमे पहिल बेर पूर्ण, माटि-रंगक आकृतिमे देखार भऽ कहैत छथि — 'सुननाइमे कान मात्र नहि, हाथो चाही। अगिला बेर जखन ग्राह पकड़त, गजकेँ केवल पुकार नहि, पकड़बाक हाथ सेहो चाही' — जे प्रश्न

अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

छोड़ैत अछि जे की गवाही केवल सुनल जायत, कि बचाओल सेहो जायत। अध्यायक अन्तमे रजिस्टरक बीचमे 'मौन, जे आब सुनबाक दण्डमे बैसल अछि' लिखि सत्यव्रतक गवाही चिपकाओल जाइत अछि, आ बच्चा सभ 'उपस्थित' कहैत छथि। दूर बाढ़िक पानिमे एकटा विशाल अस्पष्ट छाह (न पूर्ण गज, न पूर्ण ग्राह) उठैत अछि — कथा अगिला चरणक (हाथ बढ़ैबाक) प्रतीक्षामे मुड़ि जाइत अछि। [यैह अध्याय १०० अछि — खण्ड-१क सम्भावित मध्य-बिन्दु।]

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

खण्ड १ • मुख्य कथा

बा गज-ग्राह आख्यान फेर सुनाबय कहैत छथि, आ एहि बेर सामूहिक व्याख्या होइत अछि — आरुणि: 'जे फँसल अछि, से गज। जे पकड़ि रहल अछि, से ग्राह।' मीरा: 'जे फँसलाक नाम सुनैत अछि, से हाथ। बिनु अनुमति उद्धार करब सेहो ग्राह अछि।' अनन्या रजिस्टरमे 'गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ' शीर्षक लिखैत छथि। एक-एक कऽ सभक कथा एहि रूपकमे राखल जाइत अछि — उज्ज्वलक मायक लेल गज उज्ज्वल, ग्राह डिजिटल जाल; आरुणिक लेल असली ग्राह 'कागच' (जे मजदूरकेँ संख्या बनाबैत अछि) — 'ग्राह केवल जबड़ा नहि, भाषा सेहो होइत अछि।' मीराक लेल ग्राह 'समाजक ओ आँखि जे देखए चाहैत अछि मुदा मान देब नहि चाहैत।' बूढ़बा भूत नव प्रश्न छोड़ैत छथि — 'अपराधी सभक भीतर सेहो गज

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

फँसल रहैत अछि, मुदा ओ मुक्त होएबासँ पहिने अपन ग्राहक नाम लैत अछि कि नहि।' एहि परीक्षामे बटुकनाथ पहिने उपाधि-पद-वंश बजैत छथि, अन्ततः केवल 'बटुक' कहि पबैत छथि। चन्द्रपाल 'कमिशन' कहलाक बाद 'चन्द्रपाल' कहैत छथि, मुदा 'पाल' सुनितहि लहर टूटि जाइत अछि — अनन्या लिखैत छथि 'नाम कहब पर्याप्त नहि, नामक ऋण सुनब बाँकी।' राघव कबड्डीक रेखा पार करय चाहैत छथि, मुदा साँस रोकि 'कबड्डी' नहि बजि पबैत छथि। लाउ किन-हंगक गज 'पृथ्वी छोड़ि भागय चाहैत अछि' — बा भविष्यवाणी करैत छथि 'एहि बेर गज-ग्राह पृथ्वी सँ बाहर जाएत... जे पृथ्वी पर नाम सँ डरैत अछि, से अनाम आकाश खोजैत अछि, मुदा नामक पहरा ओतहु पहुँचि सकैत अछि।' अध्यायक चरम

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

बिन्दुमे अनन्या स्वयं कबड्डीक रेखा पार कऽ एकटा अमूर्त 'ग्राहक छाह' सँ भेंट करैत छथि — छाह पुछैत अछि 'बचाएब?' अनन्या उत्तर दैत छथि 'पहिने नाम कहू' — आ पकड़ैत नहि, प्रतीक्षा करैत छथि। गजक स्वर आबैत अछि — 'उपस्थित' — जे उद्धार नहि, न्यायक पहिल स्पर्श थिक। भोरे ठूँठक हरियर बिन्दुसँ दूटा नव पात फूटि आबैत अछि, आ आकाशमे एकटा तारा हलुक झुकल रहैत अछि — संकेत जे कथा आब गाम-पुल-अदालतसँ आगाँ बढ़ि अनाम ग्रह/आकाश दिस विस्तार लेत। एहि तरहें खण्ड-१ समाप्त होइत अछि — फाइलमे स्पष्ट 'Page 2 of 2' आ कॉपीराइट चिह्न 'गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर' अंकित अछि।

SECTION / खण्ड

खण्ड २ • मुख्य कथा

अध्याय १०१ सँ २००

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

गज-ग्राहक कथाक बाद आरुणि ठूँठ लग सूतल-सूतल एकटा स्क्रीन-विज्ञापन ('नव-क्षितिज मानव-निवास: दुःख-विहीन नब आरम्भ') देखैत निन्न परैत छथि, आ स्वप्नमे एकटा उज्जर, स्मृतिहीन ग्रह देखैत छथि जतय हर घरपर नामक बदला संख्या अछि, आ लोक सुखी अछि कारण हुनका अपन हानि मोन नहि। आरुणि बुझैत छथि — 'विस्मृति सेहो हिंसा होइत अछि: जखने पीड़ा बिसराइत अछि, अपराधी अपन हिसाबसँ मुक्त भऽ जाइत अछि।' बाक स्वर स्वप्नमे प्रवेश करैत अछि — 'जकर नाम नहि, ओकर माथपर हाथ कोना राखबह?' मीरा गुम्बदक दीवालपर लिखल 'सांस्कृतिक स्मृति-नमूना' देखि विरोध करैत छथि। स्वप्नमे लाउ किन-हंग स्मृतिहीन बाजारसँ प्रसन्न होइत छथि, मुदा हस्ताक्षर करलापर ओकर अपन

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

नाम मेटा जाइत अछि — पलायनक स्वप्न पहिने अपराधीक परिचय खाइत अछि। आरुणि बुझैत छथि जे ई विज्ञान-यात्रा नहि, अपराध-जालक अगिला प्रस्ताव अछि — 'मनुष्यकेँ सुरक्षित करबाक नामपर ओकर इतिहासकेँ अनुपयोगी बनाउ।' अनन्या ओकर हाथ पकड़ि कहैत छथि — 'रेखा पार करब, मुदा एकटा नाम संग घुरब।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

खण्ड २ • मुख्य कथा

स्वप्न-कबड्डीक नियम अनन्या बनबैत छथि — रेखा पार करनिहार एकटा विस्मृत नाम खोजि घुरत, नाम बिसरलापर पारी समाप्त। अनन्या स्वयं काँपैत 'उज्ज्वल' नाम बजि पहिल डेग रखैत छथि। मीरा गुम्बदक पहरुआ (क्रमांकधारी, बिनु चेहरा) सँ कहैत छथि — 'दुःख नामसँ नहि, नामपर कएल अत्याचारसँ जन्मैत अछि... ई देह हमर अछि, एकरा प्रमाण बनाउ, तमाशा नहि।' सत्यव्रत मेहता रेखा पार करय चाहैत छथि, मुदा 'अधिकारी', 'साक्षी' कहलापर रेखा नहि खुजैत — अन्ततः 'हम ओ मनुष्य छी जे देखि कऽ अबेर धरि चुप रहल' कहलापर रेखा सरकैत अछि। आरुणि स्वप्नक गन्धहीन माटिपर बुझैत छथि जे 'प्रमाणक श्रृंखलाक हर कड़ीक पाछाँ एक मनुष्यक नाम होइत अछि।' अनन्या गुम्बदक बीच

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

पहुँचि खाली दीवार छूइ 'उपस्थित' फुसफुसाबैत छथि — पहिल दरार पड़ैत अछि, आ पृथ्वीक जलक गन्ध स्वप्न-ग्रहमे प्रवेश करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

दरारक भीतर विशाल सभागार, दीवालपर केवल क्रमांक। अनन्या नाम पढ़लापर हर क्रमांकक पाछाँ चेहरा नहि, सम्बन्ध (माए, बच्चा, पत्नी) उभरैत अछि। मीरा धमकीक शिकार स्त्री सभक नाम पढ़ि जोड़ैत छथि — 'हुनकर अनुमति बिना हुनकर कथा नहि।' बटुकनाथ अपन स्वप्न-दरबारमे नातिक प्रश्नक सोझाँ अपन डर (सम्मान छिनेबाक भय) चिन्हैत छथि — अपराधक असली जड़ि। चन्द्रपाल अपन बाल्यकालक अपमान मोन करैत छथि, मुदा बुझैत छथि जे ओ स्वयं हजार लोकक नाम प्रतिशत बना देने छथि। राघव मेटाओल आवाज भीतरसँ फेर सुनैत छथि। लाउ किन-हंगक 'नाम बाजार रोकैत अछि' कथनपर अनन्या उत्तर दैत छथि — 'हँ, किएक तँ नाम हिसाब माँगैत अछि' — आ लाउक साफ खातापर पानिक दाग पसरि जाइत

अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

अछि। आरुणि खाली पाँतिपर 'जेकर नाम एखन नहि भेटल' लिखैत छथि — दीवालक सभसँ पैघ क्रमांक टूटि जाइत अछि। नाम-पाठक बाद ग्रहक चमक उतरि जाइत अछि, धूसर माटि देखार होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

भोरे सभ जागैत छथि — अनन्या, मीरा, सत्यव्रत, बच्चा सभ — सभकेँ एक्के स्वप्नक स्मृति अछि। बा कहैत छथि 'कतेक दूर जाएब लेल देहक चलब जरूरी नहि, मुदा जागलापर डेग पृथ्वीए पर राखय पड़ैत अछि।' आरुणि विज्ञापनक स्रोत जाँचि पबैत छथि जे 'नव-क्षितिज' कोनो वास्तविक ग्रह-योजना नहि, अपराध-जालक (ब्रूम, लाउ, चन्द्रपाल, राघव संयुक्त) प्रचार-परीक्षण अछि — लोकक भय आ पलायन-इच्छा नापबाक डिजिटल अभियान। बच्चा सभ निर्णय लिखैत छथि — 'हम दुःख नहि मिटाएब, दुःखक कारण बदलाएब... पृथ्वी छोड़ि अपराधकेँ निर्दोष नहि करब।' बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघवकेँ 'नाम घुरेबाक श्रम' (फाइल खोलू, खाता जोड़ू, आवाज सुनू) क दण्ड देल जाइत अछि — क्षमा-पत्र नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

अनन्या ठूँठक कोंपल नीचाँ लिखैत छथि — 'पृथ्वी चुनैत छी, किएक तँ एतहि उत्तर देबाक अछि।' [एहि चारि छोट अध्यायसँ खण्ड-२ आरम्भ होइत अछि, गज-ग्राह आख्यानक ठीक बाद स्वप्न-सेतुक रूपमे।]

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

स्वप्नसँ जागलाक बाद अनन्या ठूँठक छाल छूइ पबैत छथि जे स्वप्नक 'नील धूलि' अखनो हाथपर अछि — मुदा माटिमे लगितहि ओ घुलि जाइत अछि: 'नामविहीन धूलि धरती पर टिकैत नहि।' उज्ज्वलक आत्मा पानिक सतहपर काँपैत इजोत बनि उपस्थित होइत अछि। शहरक अखबार गाममे भेल घटनाकेँ 'ग्रामीण अन्धविश्वास' कहैत अछि, मुदा लोक उदासीन रहैत अछि — गंगेशक प्रश्न एखनो जीवित अछि। बा घोषित करैत छथि — 'जे धरती चुनैत अछि, ओ अपन मृतक, अपराध, लाज, भाषा, नदी, असफलता — सभ चुनैत अछि।' सत्यव्रत अपन शपथपत्रमे नव पाँति जोड़ैत छथि — 'धरती छोड़ि मुक्ति नहि भेटत।' बटुकनाथकेँ 'पुरान फाइलमे दबाओल नाम खोजबाक' काज देल जाइत अछि — दण्ड अपमान नहि, श्रम अछि।

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

चन्द्रपाल बत्रा 'हमरा लिखब नहि अबैत' कहलापर अनन्या कहैत छथि 'तखन सुनू।' राघवक अन्तिम पात-संदेशक नीचाँ बच्चा सभ लिखैत छथि — 'आत्मा खुलबाक पहिल प्रमाण: जिनका अहाँ अदृश्य कएलहुँ, हुनका देखू।' लाउ किन-हंगक काँचक टावरमे नाम-पाठक ध्वनि रोज राति बजैत रहैत अछि। नव कोंपलक चारू कात कबड्डीक नव नियम बनैत अछि — एक साँस धरती लेल, एक पानि लेल, एक नाम लेल, एक बिनु-नाम लेल; हारल बच्चा दण्डस्वरूप ककरो नाम सुनत, चुप नहि बैसत। ठूँठ लग पाथर सभ स्वतः खनखनाइत छथि — बा कहैत छथि 'धरती पहरा स्वीकार कऽ रहल अछि।' सत्यव्रत बच्चा सभक पाछाँ बैसब स्वीकार करैत छथि — 'पाछाँ बैसि सुनब हुनकर नब पद बनल।' अध्यायक अन्तमे बच्चा सभ पहिल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

औपचारिक पहरा-वचन लिखैत छथि — 'पृथ्वी छोड़ब नहि, पृथ्वीकेँ बचाएब। जकर नाम मेटत, ओकर नाम फेर लिखब...' — आ 'कथा बचबाक एकमात्र उपाय अछि कथाकेँ अगिला कण्ठमे देल जाए।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०६ — बीजक गवाही

बा घोषित करैत छथि — 'नामक पहरा राखलहुँ, आब बीजक पहरा राखू' — 'जँ बीज चिबायल गेल, तँ अगिला पीढ़ीक मुँहमे शब्दो कतऽ सँ जन्मत?' पाठशालामे धान, तिल, मड़ुआ, मखान, आमक गुठली सन बीज राखल जाइत छथि, आ हर एकक कथा (के राखैत छल, कोन ऋतु, कोन गीत) पूछल जाइत अछि। देविका चेतावनी दैत छथि जे 'अनाम ग्रह' क समर्थक बीजोकेँ चोरयबाक तैयारीमे छथि। ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ कहैत छथि — 'बीज सेहो चित्र नहि... जँ अहाँ फोटो राखैत छी मुदा किसानक नाम नहि जानैत छी, तँ अहाँ वस्तुक संग प्रेम करैत छी।' बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'बीज जाति नहि पूछैत... मनुष्ये अपने माथमे बाँसक बाड़ लगौलक।' स्त्री सभ अपन-अपन पुरान डिब्बा-बीज (सासुसँ भेटल, अकालमे

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०६ — बीजक गवाही

बचल) आनैत छथि — मीरा 'बीजक निजता' क सम्मान करैत छथि, सभटा कथा सार्वजनिक नहि करबैत। एहि बीच सरकारी जीप 'उन्नत बीज-संग्रह आ जलवायु-सुरक्षा प्रकल्प' क नामसँ आबि बीज 'क्रमांक संग' (नाम नहि) लऽ जेबाक प्रस्ताव राखैत अछि — गोप कुमार कागचक भीतर ब्रूमक पुरान दान-पत्र सन हस्ताक्षर-छाह पहचानैत छथि — 'ई संरक्षणक सूची नहि, अधिग्रहणक सूची अछि।' बा कागच सूँघि कहैत छथि — 'एहिमे माटिक गंध नहि, तिजोरीक गंध अछि।' जीप चलि गेलाक बाद ठूँठक कोंपलपर स्वप्नक अनाम ग्रह-सन सूक्ष्म सफेद रेखा देखार होइत अछि — 'नव-क्षितिज परियोजनाकेँ बीजक आँकड़ा चाही।' मध्यरातिमे बीजक पात्रसभसँ धीमा सामूहिक स्वर उठैत अछि — 'हमरा क्रमांक नहि, माटि

अध्याय १०६ — बीजक गवाही

चाही।' भोरे अनन्या नव रजिस्टर-पृष्ठ 'बीजक चोरी' शीर्षकसँ खोलैत छथि — पहरा आब नामसँ बीज धरि पसरि गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०७ — बीजक चोरी

गामक बीजक पात्र सभ (धान, मड़ुआ, कोदो, औषधीय बीज) ठूँठ लग पहरामे राखल जाइत अछि, हर एकपर नामक पर्ची। सुरमणी काकी अपन पीतल डिब्बीमे 'डूबल-साँस' नामक धान अनैत छथि — 'ई धान बाढ़िमे तीन दिन पानि सहैत अछि, नाम सेहो पानिमे डूबि कऽ घुरैत अछि।' दुपहरमे सरकारी अधिकारी, परामर्शदाता, आ एकटा विदेशी शोधार्थिनी 'देशज बीज-संरक्षण एवं अन्तर-ग्रहीय अनुकूलन अध्ययन' क कागच लऽ आबैत छथि। गोप कुमार छोट अक्षरमे 'बाह्य आवासीय परियोजनामे अनुकूलन हेतु उपयोग' पढ़ि लैत छथि — अनन्या तुरन्त पहचानि लैत छथि जे ई 'नव-क्षितिज' परियोजनासँ जुड़ल अछि। मीरा 'अनामिकीकरण' क अनुच्छेद पढ़ि स्पष्ट करैत छथि — बीजसँ गाम-जाति-स्त्री-श्रम सभ हटा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०७ — बीजक चोरी

क्रमांक देल जायत। बा तीखा टिप्पणी करैत छथि — 'पहिने जमीन लेलहुँ, फेर पानि, फेर नाम, आब बीज। अगिला बेर गर्भ सेहो अधिग्रहण करब?' बच्चा सभ बीजक पात्रक चारू कात कबड्डीक रेखा खिंचि दैत छथि। विदेशी शोधार्थिनी सुरमणी काकीक 'जीन हो कि जिन्न, पहिने ई हमर माय छी' सुनि कानि पड़ैत छथि, आ नमूना लेबासँ इनकार करैत छथि — परियोजनाक पहिल भीतरी दरार। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'एहि ठाम धारा कमला-बलान अछि, धारा पूछब तँ पानि उत्तर देत।' साँझमे संहिता तय होइत अछि — 'बीजक गवाही': कोनो बीज बिनु पूरा नाम-घर-खेत-कथाक बाहर नहि जायत। रातिमे बीजक पात्रसँ 'हम कतऽ उगब?' क धीमा स्वर उठैत अछि — अनन्या नव पृष्ठ 'माटिक मुँह' खोलैत छथि,

अध्याय १०७ — बीजक चोरी

कारण चोरी रोकल गेल अछि, मुदा बीजकेँ उगबाक ठाम अखनो चाही।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०८ — माटिक मुँह

बीजक पात्रसँ उठल प्रश्न 'हम कतऽ उगब?' क उत्तर खोजबामे गाम लगैत अछि। अनन्या रजिस्टरमे 'चारिम पहरा: माटिक मुँह' लिखैत छथि। गामक खेतक नाम पढ़ल जाइत अछि (बरगदाही, मुसहरी किनार, उज्जर डिह)। हरिहर झा अपन 'शुद्ध' खेत प्रस्तावित करैत छथि — चर्मकार/दुसाध टोलाक लोक जतय कहियो जोतने नहि — जकरा सुरमणी काकी तुरन्त खण्डित करैत छथि: 'भूखमे अन्न खाए, ओकर हाथसँ माटि अशुद्ध कोना भऽ गेल?' गंगेशक प्रश्न फेर उठैत अछि। चर्मकार टोलाक धीरमती नामक नेनी अपन घरपाछाँक उपेक्षित परती प्रस्तावित करैत छथि — 'जतय मनुष्यक देहक कामक गन्ध अछि, ओतय माटि जीबैत अछि।' निर्णय होइत अछि जे बीज पाँच अलग माटिमे परखल जायत — दुखक माटि (चर्मकार

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०८ — माटिक मुँह

टोला), पानिक माटि (मुसहरी), सहनक माटि (विधवा बाड़ी), श्रमक माटि (बटाई खेत), स्मृतिक माटि (ठूँठ लग)। सुरमणी काकी पहिल दाना धीरमतीक हथेली पर राखैत छथि — 'बीज जाति नहि, रेखा पढ़ैत अछि।' सफाईक दौरान देविका चेतावनी दैत छथि — 'सफाईक नाम पर परतीक इतिहास नहि हटाउ' — धीरमती अपन बापक जूताक टुकड़ा राखि लैत छथि। हर क्यारीमे दाना रोपबासँ पहिने नाम बाजल जाइत अछि ('बाढ़ि-सहन धान', 'अशुद्ध कहायल हाथक उजास')। मुसहरी किनार, विधवा बाड़ी, बटाई खेत, आ ठूँठ लगक क्यारीमे सेहो एहि क्रमसँ बीज रोपल जाइत अछि — मजदूर कहैत छथि 'धान आधा, ऋण पूरा।' रातिमे पाँचो क्यारी पर पाँच अलग बच्चा-टोली पहरा दैत छथि। मध्यरातिमे माटिसँ धीमा उत्तर

अध्याय १०८ — माटिक मुँह

सुनाइ दैत अछि — 'हम सुनलहुँ।' भोरे मेड़ पर लोहाक कील, लाल दाग, माप-फीताक निशान भेटैत अछि — अनन्या लिखैत छथि 'बीज उगबाक ठाम भेटल, मुदा आब मेड़ पर स्वामित्वक गोहि आयल अछि' — अगिला संघर्ष (भूमि-स्वामित्व) क संकेत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०९ — जलक स्मृति

भोरे ठूँठक चारूकात बरसातसँ छोट-छोट पोखर बनल भेटैत छथि, जाहिमे नाम तैरैत जकाँ बुझाइत अछि। अनन्या कान लगा पानिक धीमा स्वर सुनैत छथि — 'हम देह राखि नहि सकलहुँ, मुदा अन्तिम स्पर्श राखि लेलहुँ।' अनन्या नव पृष्ठ 'जलक स्मृति' खोलैत छथि। पनिडुब्बी आबि कहैत छथि — 'माटि जे नाम धरैत अछि, पानि ओकर गति धरैत अछि। जलमे मार्ग लिखू।' बच्चा सभ माटिपर नव नक्शा बनबैत छथि — गोल तरंग (गुम मजदूर), सूखल इनार (औषधिक अभाव), छोट स्क्रीन (डिजिटल ठगी)। ईरा 'गन्धक नक्शा' क सुझाव दैत छथि, आ स्त्री सभ अलग-अलग ठामक पानि (आँगन, इनार, अस्पताल) आनि गन्धसँ चिन्हित करैत छथि। सत्यव्रत मेहता पनिडुब्बीक कहलापर पानिमे हाथ डुबबैत छथि — आङुरपर

अध्याय १०९ — जलक स्मृति

'मौन', 'विलम्ब', 'साक्षी' सन अक्षर उठैत अछि। कबड्डीक नव रूप पानिक चारू कात होइत अछि — नाम उठा साँस तोड़ने बिनु घुरब। उज्ज्वलक आत्मा पानिमे चमकि एकटा बच्चाकेँ कहैत अछि — 'हमर मायक रोदन पानिमे आयल, ओकरा लिखू।' आरुणि गंगेशक प्रमाण-चतुष्टयकेँ जलक सन्दर्भमे विस्तार दैत छथि — 'न्याय तखन होएत जखन जे डूबल, ओकर मौनकेँ सेहो प्रमाण मानब।' एकटा बूढ़ चर्मकार लोटा पानि अनैत छथि — 'हमर पुरुखा सभक नाम कखनो एहि गाछीमे नहि पढ़ल गेल' — आ बा घोषित करैत छथि 'एखन न्याय शुरू भेल।' साँझमे पानिक छोट पोखर सभ जुड़ि एकटा वृत्त बनबैत अछि। अध्यायक अन्तमे 'पवित्र स्मृति जल: बोतलबन्द श्रद्धा' लिखल एकटा व्यावसायिक गाड़ी आबैत अछि —

अध्याय १०९ — जलक स्मृति

बजार पानिकेँ बोतलबन्द बेचबाक तैयारीमे अछि। सत्यव्रत कहैत छथि — 'जतय स्मृति जल बनि बिकए लागय, ओतय पहरा आरो कठोर चाही।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११० — आगिक साक्षी

पाँचम पहराक रातिमे ठूँठ लगक कागच-घर (नकल, निविदा, दान-पत्रक प्रति राखल ठाम) सँ धुँआ उठैत अछि — कियो अन्हारमे कागच जरा नाम-पहरा तोड़बाक कोशिश करैत अछि। बच्चा सभ चिचिआएब नहि, 'उपस्थित' कहि पुकारैत छथि। मीरा आगि पूर्ण नहि बुझयबाक कहैत छथि — 'सभ बुझा देब तँ जे जरल, ओकर साक्षी कोना भेटत?' आगिमे जरैत कागचसँ पाछूक दबायल सत्य उघरैत अछि — 'अतिक्रमित रिक्त भू-भाग' क पाछाँ 'स्मारक क्षेत्रक भू-मूल्यांकन' देखार होइत अछि। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'जे कागच जनक नाम बचाबय लेल हो, ओकरा जराबय बला हाथ स्वयं अपन बयान लिखि दैत अछि।' गोप कुमार जाँचि पबैत छथि जे कुण्डी चाबीसँ खुजल छल — तीन चाबीधारीमेसँ अभिलेख-सेवक हेमनारायण

अध्याय ११० — आगिक साक्षी

गायब छथि। ओ पोखरि कात बेहोश भेटैत छथि, आ स्वीकार करैत छथि — अपन बेटाक अस्पताल-कर्ज माफ करएबाक बदलामे चाबी देलनि, आगि लगएबाक नहि कहल गेल छल। बा दण्ड तय करैत छथि — एक महीना रातिक नाम-पहरा, अधजरल नामक पुनर्लेखन, आ कर्जक बात सार्वजनिक सुनवाईमे उठत। एकटा अधजरल पन्नापर केवल 'सर...', 'उज...', 'ना...' बचल रहैत अछि — उज्ज्वलक माय कहैत छथि 'अधजरल नामकेँ अधूरा नहि, सभटा अनामक नाम मानू।' सौम्या राखिमे ब्रूम आ चन्द्रपालक कम्पनी-चिन्हक टुकड़ा तकैत छथि। बूढ़बा भूत राखिपर दूटा वृत्त खिंचैत छथि (गाम, पृथ्वी) — तेसर (अनाम ग्रह) अखनो नहि खिंचल। एकटा नेना पुछैत अछि — 'आगि बजलै, पानि बजलै, माटि बजलै, हवा कखन बाजत?' — हवा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११० — आगिक साक्षी

राखिक धूलि उड़ा बच्चा सभक माथपर बैसैत अछि। अध्यायक अन्तमे अनन्या नव पृष्ठ 'सातम पहरा: हवाक बयान' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

आगिक राखिक धुँआ गामक गली-गली घूमैत लोकक विभिन्न स्मृति जगाबैत अछि। अनन्या नव पृष्ठ 'सातम पहरा: वायुक प्रश्न' खोलैत छथि — अदृश्य वस्तुपर पहरा केना लागत? बच्चा सभ नव नियम बनबैत छथि — अपुष्ट बात नहि उड़ाओल जायत, गुमनाम आरोप नहि दोहराओल जायत, स्त्रीक कथा अनुमति बिनु हवामे नहि छोड़ल जायत। एकटा अफवाह (झूठा नाम) चाह-दुकानपर उठैत अछि, मुदा जाँचलापर स्रोतहीन साबित होइत अछि — 'अफवाहक पाँख होइत अछि, जड़ि नहि।' हवा बटुकनाथक घरमे प्रवेश कऽ ओकर 'माफ करिअ' लिखल पन्नापर धूलि उड़ा 'पहिने सुनू' देखबैत अछि। चन्द्रपालक कार्यालयमे स्क्रीनपर धूलि जमि 'नाम छानल नहि जाएत' उभारैत अछि। राघव सिग्नलक कानमे पुरान संकेत फुसफुसाइत

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

रहैत अछि — 'चुप्पी सेहो प्रसारण अछि।' लाउ किन-हंगक शुद्ध-वायु यन्त्रक बादो शीशापर 'उपस्थित' शब्द उभरैत अछि। साँझमे बच्चा सभ सत्य, नाम, निजता, श्रम, जल, माटि, बीज, अग्नि, वायु लिखल झंडा ठूँठक चारू कात रोपैत छथि। कबड्डीक नव रूपमे साँस स्वयं नैतिक प्रमाण बनि जाइत अछि — एकटा बालक (जे पहिने चन्द्रपालक ऐपमे नकली नाम भरैत पकड़ायल छल) खेलमे स्वीकार करैत छथि 'हम झूठ भरने छलहुँ' — 'स्वीकार कयल साँस टूटैत नहि।' रातिमे प्रश्न उठैत अछि — 'स्वप्नक अनाम ग्रह पर हवा कोना होएत?' ईरा उत्तर दैत छथि — 'जँ हम सभ पृथ्वीक हवामे नाम नहि बचाएब, तँ स्वप्नक अनाम ग्रहपर साँस सेहो भाड़ा पर भेटत।' अध्यायक अन्तमे हवा स्वयं पुछैत अछि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

— 'जकरा अहाँ साँस कहैत छी, ओकर पहरा के करत?' — आ दूर 'नव-क्षितिज' क विज्ञापन-गुंबदमे सूक्ष्म दरार पड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

हवाक प्रश्नक बाद कोनो तत्त्व नहि बाजल, केवल आकाश खुजि जाइत अछि — गाछक अनुपस्थितिमे पूरा आकाश एक्केबेर देखार होइत अछि, जे छाती पर नव भार बनैत अछि। अनन्या बुझैत छथि जे आकाश 'सुनबाक सभसँ विशाल पात्र' अछि। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'कागच जमीन पर रहैत अछि, आइ प्रश्न ऊपर सँ आबि रहल अछि।' बच्चा सभ पुछैत छथि आकाशक चिन्ह की — अनन्या उत्तर दैत छथि 'आकाशक चिन्ह रिक्त ठाम अछि — जतय नाम लिखल नहि गेल, मुदा सुनल जा सकैत अछि।' बूढ़बा भूत भेद स्पष्ट करैत छथि — 'जे रिक्तता सत्ता बनबैत अछि, से निगलैत अछि। जे रिक्तता स्मृति बनबैत अछि, से ठाम दैत अछि।' नाम-पाठक नव विधान बनैत अछि — हर नामक बाद सभ लोक चुपचाप ऊपर तकत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

चन्द्रपालक स्क्रीनपर 'जे ऊपर गेल, से डाउनलोड नहि होएत' उभरैत अछि। राघव आकाशकेँ संदेश पठाबय चाहैत छथि, मुदा 'डिलिवर' चिन्ह नहि आबैत। लाउ किन-हंगक कमराक काँचपर मिथिलाक आकाश उतरि आबैत अछि — 'एतुक्का आकाश हमर नहि छी।' स्वप्नमे अनाम ग्रहक कृत्रिम नील छतपर धब्बा पड़य लगैत अछि। साँझमे कबड्डीक नव रूप — रेखा आकाशमे खिंचल जाइत अछि, बालकक छाह जमीनक बदला आकाशमे दौड़ैत अछि — पकड़ल जायब आब हार नहि, प्रश्न अछि। मीरा एहि रिक्ततार्कें 'घरक भीतर दबाओल स्त्रीक कथाक जगह' सँ जोड़ैत छथि — स्त्री सभ रातिमे अनकहल नाम फुसफुसा ऊपर छोड़ैत छथि। ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ लिखैत छथि — 'माटि, जल, आगि, वायु, आकाश — स्मृतिक पाँच सीढ़ी अछि।'

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

अध्यायक अन्तमे ओसक बून्दमे पूरा आकाश उतरल देखार होइत अछि, आ धरतीक भीतरसँ ढोलकक धीमा थाप सुनाइ दैत अछि — बा कहैत छथि 'आकाश सुनलक, आब पाताल उत्तर देत' — जड़ि कनेक काँपैत अछि, पातालक अगिला आमन्त्रणक संकेत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११३ — शब्दक देह

आकाशक रिक्तिक बाद नाम स्वयं पूछय लगैत अछि — 'हमरा देह कतऽ अछि?' अनन्या स्पष्ट करैत छथि — 'झूठ शब्दक देह तुरन्त बनि जाइत अछि (फाइल, मोहर, करार), मुदा साँच शब्द जँ काजमे नहि उतरल, तँ ओकर देह अधूरा रहि जाइत अछि।' पाठशालामे 'नाम, उपस्थित, न्याय, निजता, पृथ्वी' — पाँच शब्दक अक्षर-सभा होइत अछि, हर एकक देह पुछल जाइत अछि। गोप कुमार अपन पुरान कागचमे देह-रहित शब्द ('लाभार्थी', 'अनुदान') देखबैत छथि। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'जँ शब्दक देहमे करुणा नहि, तँ ओ देह मुर्दा देह जेकाँ अछि।' ईरा 'पृथ्वी' क आगाँ बीज राखि कहैत छथि — 'पृथ्वी शब्दक देह केवल गोल ग्रह नहि, भार उठबैत पएर अछि।' मीरा 'निजता' क आगाँ दर्पण राखैत

अध्याय ११३ — शब्दक देह

खण्ड २ • मुख्य कथा 2 / 3

छथि। देविका 'उपस्थित' क आगाँ कानक आकृति राखैत छथि — 'उपस्थित होएब माने सुनबाक लेल समय देब।' आरुणि 'न्याय' क आगाँ तुलसीक पात राखैत छथि। सत्यव्रत 'नाम' क आगाँ पाथर छूइ कहैत छथि — 'पाथर पर लिखल नाम ककरो मुँहमे नहि घुरल, तँ पाथर स्मारक बनि रहि जाएत, जीवन नहि।' बच्चा सभ नव नियम बनबैत छथि — 'कोनो शब्द बिनु देहक स्वीकार नहि' (विकास, लोक-स्मृति, श्रद्धांजलि, क्षमा — सभक देह पुछल जायत)। रातिक कबड्डीमे बच्चा सभ शब्द-नाम लऽ दौड़ैत छथि। अध्यायक अन्तमे एकटा रहस्यमय किरण (नव-क्षितिज वा सरकारी दफ्तरसँ) आबि खाली घेरामे 'करार' शब्द उभारि दैत अछि — बिनु देहक चमकैत। बूढ़बा भूत चेतावनी दैत छथि — 'करारक देह तकू, जँ देह नहि

अध्याय ११३ — शब्दक देह

भेटल, तँ ओकर पेट भेटत।' अगिला अध्यायमे करारक स्वभाव जाँचबाक प्रतिज्ञा भेल — करार कागचपर नहि, ककर-ककर हड्डी-जमीन-जलपर लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

भोरे बजार चौकपर 'उपस्थित अभियान' नामक सरकारी/विरासत-परियोजना झण्डी लागल भेटैत अछि — बच्चा सभक पवित्र शब्द 'उपस्थित' आब बैनर, टोपी, थैलीपर छापल जा रहल अछि। अनन्या कहैत छथि — 'देह वैह रहि सकैत अछि, मुदा आत्मा बदलि सकैत अछि।' बूढ़बा भूत गंगेशक प्रमाणशास्त्रसँ जोड़ि स्पष्ट करैत छथि — 'शब्द जड़ि नहि, सम्बन्ध अछि।' बच्चा सभ एके शब्द 'उपस्थित' तीन गोलमे राखि तुलना करैत छथि — मृतक-परिवारमे नोर, सरकारी अभियानमे हिसाब, स्वप्न-ग्रहमे रिक्ति। नगरपालिकाक टोपीपर कटल ठूँठक बदला पूर्ण हरियर गाछी देखार होइत अछि (घाव झँपायल) — अधिकारी एकरा 'सकारात्मक छवि' कहैत छथि। मीरा तीखा प्रतिक्रिया दैत छथि — 'निजता बेचि सुरक्षा कहल

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

गेल, आब स्मृतिकेँ चमका विरासत कहल जा रहल अछि, ई अर्थक चोरी अछि।' साँझमे 'विकास', 'दान', 'न्याय', 'सम्मान', 'सुरक्षा', 'विरासत' शब्दपर सामूहिक अर्थ-परीक्षा होइत अछि — सत्यव्रत मेहता स्वीकार करैत छथि 'कतेक बेर सेवा शब्दक भऽ गेल, अर्थक नहि... जँ न्याय बरख चिबा जाए, तँ शब्द रहैत अछि, अर्थ मरि जाइत अछि।' बटुकनाथक संतान 'मर्यादा' शब्दक अर्थ पुछैत छथि, आ मीरा उत्तर दैत छथि — 'जिनका मर्यादाक नाम पर चुप कराओल गेल, हुनका लग पूछू।' अध्यायक अन्तमे एकटा भीजल सरकारी पर्चा भेटैत अछि जाहिमे 'जलसमाधि' केँ 'जल-धरोहर', 'मृतक' केँ 'अतीत-अंश', 'पीड़ित' केँ 'हितधारक' जकाँ शब्दक आधिकारिक 'पुनर्व्याख्या' क योजना अछि। अनन्या

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

नव पृष्ठ 'पुनर्व्याख्याक दरबार' खोलैत छथि। सत्यव्रत घोषित करैत छथि — 'जखन अपराधी शब्द बदलैत अछि, तखन न्यायकेँ भाषा पर पहरा देबय पड़ैत अछि।' झण्डीसँ अक्षर उड़ि ठूँठ लग आबि गिरैत छथि, बच्चा सभ ओकरा बटोरैत छथि — अगिला संघर्ष शब्दक भीतरक अर्थपर होयबाक संकेत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

अर्थक आत्मा बचयलाक बाद चौपाल कात एकटा नब यन्त्र भेटैत अछि — 'नामक स्वर-संग्रह' — 'श्रवण-संरक्षक' कहनिहार लोक नाम-पाठकेँ ध्वनि रूपमे रिकॉर्ड करय चाहैत छथि। कागचक छोट अक्षरमे 'ध्वनि-अधिकार आयोजक संस्थाक रहत' लिखल भेटैत अछि। अनन्या पुछैत छथि — 'नाम जकर, आवाज ओकर; तकर अधिकार ककर?' बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव तीनू एहि यन्त्रमे अवसर देखैत छथि (न्यास, दान, कोड)। नाम-पाठ शुरू होइत अछि — उज्ज्वलक माय धीरे बजैत छथि 'जँ डिब्बा धीरे सुनि सकय तँ सुनय, नहि तँ डिब्बा बहीर अछि।' एकटा वृद्ध टूटल कण्ठसँ नाम बजि यन्त्रकेँ फेर-पढ़बाक आग्रहपर इनकार करैत छथि — 'हम मशीनक लेल अपन मृतककेँ दुरुस्त नहि करब।' एकटा बालक अपन दादाक नाम

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

कहय चाहैत छथि, मुदा कानि पड़ैत छथि — यन्त्र रोदन पकड़ि नहि सकैत, केवल लाल बत्ती झपकैत रहैत अछि। चन्द्रपाल फुसफुसाइत छथि 'भावनात्मक ध्वनि मूल्यवान होइत अछि, बचा लिअ' — देविका एहि पकड़ि लैत छथि: 'रोदनो मूल्यवान माल बनि रहल अछि।' मीरा घोषित करैत छथि — 'कोनो कण्ठ बिनु अनुमति कैद नहि होएत।' सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'सामूहिक पीड़ा पर निजी अथवा संस्थागत स्वामित्व बनब अन्याय अछि।' बा कहैत छथि — 'डिब्बा सुनैत अछि, पेट नहि दुखैत।' बच्चा सभ 'कण्ठक पहरा' क नियम लिखैत छथि — कोनो ध्वनि बिनु नामक घरक अनुमति नहि, सुननाइ पहिने, संग्रह बादमे। यन्त्रकेँ 'लोभक कान' नाम दऽ विदा कएल जाइत अछि। रातिमे बिनु-यन्त्रक नाम-पाठ

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

होइत अछि — टूटल-फूटल स्वरमे सामूहिक कबड्डी-सन लय बनैत अछि। गोहि सभ सेहो पानिमे रुकि सुनैत जकाँ बुझाइत छथि। अध्यायक अन्तमे रजिस्टरमे स्वतः नव शीर्षक चमकैत अछि — 'लेखनी' — भाषा आ छपाइपर अगिला खतराक संकेत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

बच्चा सभ चुप्पीक पाठ शुरू करैत छथि — देविका खाली कटोरा राखैत छथि। बा कहैत छथि — 'आइ पहिने ओ शब्द पढ़ू जे बाजल नहि गेल।' सत्यव्रत मेहता भेद स्पष्ट करैत छथि — 'जखन हम बाजि सकैत छलहुँ आ नहि बजलहुँ, ओ अपराध छल। मुदा जखन पीड़ित नहि बाजय चाहैत अछि, ओकर मौन अधिकार अछि।' नगरसँ 'आवाज-संग्रहक मंडली' आबि नाम-पाठक मौखिक धरोहर बचयबाक प्रस्ताव राखैत अछि, मुदा पर्चाक नीचाँ 'संवर्धित प्रस्तुति' क छुपल शर्त भेटैत अछि। मीरा तीखा प्रश्न पुछैत छथि — 'संरक्षण जँ कण्ठकेँ ओकर देह सँ अलग कऽ देत, तँ ओ चोरी अछि।' चन्द्रपाल आ राघव दुनूकेँ आवाज-व्यापारमे अवसर देखार होइत अछि, मुदा दुनूक कोशिश असफल होइत अछि — राघव बुझैत छथि

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

'नेटवर्क आवाज पहुँचा सकैत अछि, सुननाइ नहि।' नव नियम बनैत अछि — 'जकरा बाजय के इच्छा नहि, ओकर नाम नहि खिंचल जाए... मौन सेहो उपस्थित भऽ सकैत अछि।' उज्ज्वलक माय खाली पन्नापर अपन चुप्पी राखैत छथि। नकली भूतक जुलूसवाला बालक अपन गूंगी बहिनकेँ आनैत अछि — बहिन पातपर रेखा खिंचैत छथि, जे कबड्डीक घेरा बनि जाइत अछि, आ ओ बिनु आवाजक कबड्डी खेलैत छथि — साँस भीतर चलैत, बाहरी ध्वनि नहि। आवाज-संग्रहक मंडली अपन यन्त्र समेटि लैत अछि — 'बिनु न्यायक अदालत देखि चुकलहुँ, बिनु कण्ठक कबड्डी देखब कठिन किएक?' रातिमे रजिस्टरक खाली पन्नापर स्वतः एकटा 'मौनक बिन्दु' उभरैत अछि। लाउ किन-हंगक स्वप्नमे चमकैत देबालपर केवल एकटा खाली वृत्त

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

भेटैत अछि — 'मौन जमा नहि कयल जा सकैत अछि।' अध्यायक अन्तमे अनन्या नव पृष्ठ 'आब आँखिक पहरा' खोलैत छथि — दृष्टिक बजार आब चेहरा बेचबाक कोशिश करत, ई खतराक संकेत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

पाठशालाक भीतपर बच्चा सभ लिखैत छथि — 'जे नाम सुनल गेल, ओकर ऋण के उठाओत?' अनन्या स्पष्ट करैत छथि जे ई ऋण पाइसँ नहि, जीवनक चालसँ उतरैत अछि। ईरा प्रत्येक बच्चाकेँ घरसँ एकटा अनसम्मानित वा अनकहल नाम अनबाक अभ्यास दैत छथि। एकटा बालक केवल 'चर्मकारणी' लिखि अनैत छथि — घरक बुजुर्ग गंगेश उपाध्यायक जीवनसंगिनीक पूरा नाम नहि जनैत छथि, केवल 'तत्त्वचिन्तामणि पढ़ू, कथा छोड़ू' कहल गेल। अनन्या भीतपर लिखैत छथि — 'प्रमाणक अभाव ककरा बचबैत अछि?' बा कहैत छथि — 'जे समाज गंगेशक बुद्धि स्वीकार करैत अछि, मुदा हुनकर जीवनक असुविधाकेँ काटि फेकैत अछि, से हुनका आधा मारैत अछि।' मीरा चर्मकारणी शब्दक लगमे जानबूझि खाली ठाम छोड़ैत छथि।

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि — 'जाति-लाज: स्मृतिहत्या।' गोप कुमार दस्तावेजमे उनटा लिखल हिसाब देखबैत छथि (जे लूटलक, से देनदार नहि लिखायल)। नव नियम बनैत अछि — हर सुनल नामक संग एकटा काज बान्हल जायत (मजदूरक नामसँ श्रम-सम्मान, ठगल युवकसँ स्क्रीन-सावधानी) — 'नाम बिनु काज पाथर अछि; काज बिनु नाम हवा।' दुपहर बाद 'स्मृति-ऋण मुक्ति योजना' क पत्र आबैत अछि — सरकार, ब्रूमक संस्था, आ बटुकनाथक न्यास मिलि 'सम्मान-राशि' क बदलामे स्वतन्त्र नाम-पाठ बन्द करएबाक प्रस्ताव। अनन्या पुछैत छथि — 'ई ऋण मुक्त करय आयल अछि, कि ऋणक मालिक बनय?' साँझमे एकटा वृद्धक 'मर्यादा' क आपत्तिपर बालक उत्तर दैत छथि — 'जँ मर्यादा नाम खाए, तँ ओ गोहि सँ

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

कम नहि।' रातिमे कबड्डीक नव रूपमे हर पाथरसँ रेखा खेलाड़ीक पएर धरि आबैत अछि, आ घुरैत काल एकटा काज बजबाक पड़ैत अछि। बूढ़बा भूत हँसैत छथि — 'जे ऋण लऽ कऽ घुरैत अछि, से कथा बचबैत अछि।' मध्यरातिमे 'स्मृति-ऋण मुक्ति योजना' क पत्र नम भऽ मोहर धुँआ बनि जाइत अछि, केवल तीन शब्द बचैत अछि — 'मुक्ति ककर?' अध्यायक अन्तमे अनन्या नव पृष्ठ 'काल्हि ऋण-मुक्तिक प्रश्न' खोलैत छथि।

अध्याय ११८ — देहक अधिकार

विरासत-परियोजनाक लोक एकटा सूची लऽ आबैत छथि — 'संग्रहणीय वस्तु: चन्ना गाछीक जड़ि-माटि, अस्थि-सदृश अंश, स्त्री-संस्मरण...' मीरा कागचक कोन दाबि कहैत छथि — 'जिनकर देह गेल, हुनकर अवशेष अहाँ सभक प्रदर्शनी नहि।' ब्रूमक प्रतिनिधिक 'संरक्षण' दावापर देविका तीखा उत्तर दैत छथि — 'जे दुखकेँ काँचक भीतर बन्द कऽ टिकट बेचय, से संरक्षण नहि, दोसर बेर चिबाएब अछि।' आरुणि सूचीमे 'श्रमिकक परिवारक अनुमति' आ 'गरिमा' सन शब्द नदारद पबैत छथि। पाठशालामे 'देहक अधिकार' पाठ शुरू होइत अछि — अनन्या स्पष्ट करैत छथि जे अनुमति बिनु फोटो-कपड़ा-अस्थि छुबय बला हाथ 'पहरुआ नहि, चोर' बनि जाइत अछि। मीरा गंगेशक कथा फेर जोड़ैत छथि — 'जकर विचार

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११८ — देहक अधिकार

जातिक पिंजड़ा फोड़ि सकैत छल, ओकरा शास्त्रक ऊँच आसन पर राखि देल गेल, जाहिसँ ओकर देहक कथा नीचाँ दबि जाए।' चर्मकार टोलामे गेल एकटा दस्तावेजीकरण-दलकेँ एकटा वृद्धा रोकि कहैत छथि — 'हमरा सभक जाति लिखू, मुदा हमर अपमान सँ कमाइ करबाक अनुमति ककरा देल गेल?' — कैमरा नीचाँ झुकि जाइत अछि। एहिसँ 'देह-संहिता' क पाँच नियम बनैत अछि — देहपर पहिल अधिकार देहधारीक, मृत देहक अधिकार परिवार-समुदाय-गरिमाक संग, जातिक नाम पर अपमान स्मृतिक अपराध, बिनु अनुमति कोनो शोध-कला-दान दावा नहि, मौनक सम्मान। सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि — 'न्याय देहसँ शुरू नहि होअय, तँ न्याय शब्दक खेल रहि जाइत अछि।' साँझमे संग्रहालय लऽ जाय बला माटि-कपड़ा परिवार

अध्याय ११८ — देहक अधिकार

सभकेँ धूपमे देखा घर घुरा देल जाइत अछि, आ अस्थि-सदृश कण नामक उच्चारणमे स्नान करा सम्मानित होइत अछि। गोहि सभ पानिमे दीर्घ वृत्त बनाकऽ डूबैत छथि — बा कहैत छथि 'देह चिबा गेल, मुदा देहक गरिमा नहि चिबा सकल।' अध्यायक अन्तमे रातिमे पुरान तहसीलक जाति-रजिस्टर अपने खुजि पुछैत अछि — 'कुलक प्रमाण के देत?' — अगिला संघर्षक (जातिगत दस्तावेज) संकेत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११९ — श्रमक देह

पाठशालामे 'श्रमक पहरा' शुरू होइत अछि — आरुणि नन्दन फाटल जूता, सिमेंटमे अटकल नह, आ केवल संख्या-लिखल मजदूरी-पर्ची राखैत छथि — 'संख्या ओहि ठाम राखल जाइत अछि जतय मालिक नामसँ डेराइत अछि।' पुलक पाया ढारैत काल नदीमे खसल झगरू मिस्त्रीक घरवाली आबि कहैत छथि — 'हमर घरमे जे हाथ चूल्हि धरैत छल, कम्पनीक कागचमे ओ हाथ काम पर छलहिये नहि' — दुर्घटना-पत्रमे 'काम सँ अनुपस्थित' लिखल गेल छल। गोप कुमार पुरान नकलमे केवल संख्या ('पुरुष ४७, स्त्री ९') देखबैत छथि — मीरा पुछैत छथि 'जखन लिंग लिखि सकैत छी, तखन नाम किएक नहि?' सत्यव्रत मेहता मजदूरक हाथ देखि लिखैत छथि — 'श्रमक देहक गवाही।' भगेलू पासवान कहैत छथि जे पुल सभकेँ जोड़ैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११९ — श्रमक देह

अछि, मुदा पुल-बनयनिहार जातिक कारण अलग बैसाओल जाइत छल — 'देह हमर, करार दोसरक, मृत्यु हमर, बीमा दोसरक।' गंगेशक प्रश्न फेर उठैत अछि — 'न्याय कोन प्रमाण सँ जानब, शास्त्र सँ कि पियासल मजदूरक गलासँ?' विरासत-परियोजनाक अभियन्ता स्थानीय मजदूरक रोजगारक प्रस्ताव राखैत छथि, मुदा नाम-सहित अनुबंध, समयपर मजदूरी, उपचार-अधिकारक प्रश्नपर चुप्पी साधि लैत छथि। सत्यव्रत कहैत छथि — 'मृतकक नाम बचाबय जाइत छी आ जीवित मजदूरक देह फेर अनाम राखब, तँ ई स्मारक नहि, दोसर अपराध होएत।' नव पाठ बनैत अछि — 'काज शुरू हेबासँ पहिने नाम' — मजदूरक नाम, गाम, मजदूरी, सुरक्षा सभ खुजल अभिलेखमे रहत। रातिमे नाम-पाठमे हर नामक संग एकटा श्रम जोड़ल जाइत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११९ — श्रमक देह

अछि ('पाया ढारनिहार', 'मृत देह घर पहुँचेनिहार')। बच्चा सभ मजदूरक पएर पानिसँ धोबैत छथि — 'पूजा नहि, थकानक आदर।' अध्यायक अन्तमे खाली पाथरपर 'जे काज करैत अछि, मुदा देखाइ नहि पड़ैत' लिखल जाइत अछि — अगिला पाठ अदृश्य श्रमपर होयबाक संकेत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२० — न्यायक देह

श्रमक पहराक बाद बच्चा सभ बुझैत छथि जे न्यायकेँ अखनो अपन देह नहि — ई केवल कागच-मोहर-तारीखमे रहल अछि। नारिकेल पात पाठशालाक नव पृष्ठ 'न्यायक देह' खुजैत अछि। एकटा बूढ़ मजदूरिन कहैत छथि — 'जे न्याय इत्र लगा कऽ अबैत अछि, से बहुधा सड़ल देह झाँपय अबैत अछि। असली न्याय पसीना, राखि, कीचड़, दूध, रक्त, आ नोरक गन्ध बिनु अपूर्ण अछि।' आरुणि पुलक पुरान नक्शा पसारि मजदूर-परिवार सभसँ हाथ फेरबैत छथि — नक्शा 'सड़क नहि, देहक यात्रा' बनि जाइत अछि। गोप कुमार फाइल बन्द करैत छथि — 'डेटा मात्र अस्थि अछि, देह ओकर आसपास लोक बनबैत अछि।' गामक कुम्हार पाँच अलग ठामक माटि (कमला किनार, पुलक पाया, ठूँठक फाँकि, उज्जर आँगन, पनिडुब्बीक

अध्याय १२० — न्यायक देह

पोखरि) मिला 'न्यायक देह' बनबैत छथि — 'मूर्ति नहि, देह; मूर्ति पूजा माँगैत अछि, देह उत्तरदायित्व।' मजदूरिन सभ अपन हथेली-छाप छोड़ैत छथि, आरुणि सेहो काँपैत हाथ धँसबैत छथि। सत्यव्रत मेहता अपन कान माटिमे लगबैत छथि — 'मौनक छाप हाथसँ नहि, कान माटि लगाउ' (बाक निर्देशपर) — 'न्यायक देहमे सुनबाक कान जोड़ल गेल।' मीडियार्कें मीरा आ देविका रोकैत छथि — 'ई दृश्य उपभोगक लेल नहि।' साँझमे माटिक देह पूर्ण होइत अछि — एक कान धरतीपर, एक हाथ पानि दिस, छाती खाली — 'न्यायक छाती स्थायी सजावट नहि, खुजल घर होएबाक चाही।' ब्रूमक प्रतिनिधि, चन्द्रपाल (डिजिटल माटि-मूर्ति ऐप), आ राघव (जकर संदेश 'कान लगाउ' मे बदलि जाइत अछि) सभ एहि नव

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२० — न्यायक देह

प्रतीककेँ व्यावसायिक बनयबाक प्रयास करैत छथि, मुदा असफल। मध्यरातिमे 'नाम नहि भेटल' पाथर माटिक छातीपर राखलापर सूक्ष्म दरार पड़ैत अछि — कुम्हार कहैत छथि 'दरार खराब नहि, न्याय जँ बिनु दरारक रहत, तँ भीतरक आवाज केना बाहर आओत?' — 'न्यायक देह कानि सकैत अछि।' भोरे खाली छातीपर ठूँठक कोंपलक छाह पड़ल भेटैत अछि। अध्यायक अन्तमे अनन्या नव पृष्ठ 'सत्रहम पहरा: छाहक विधान' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

न्यायक देह बननाक बाद पुरान जाति-व्यवस्था फेर सोझाँ आबैत अछि। एकटा ब्राह्मण बूढ़ ताम्रपत्र, वंशावली, पोथी लऽ आबि कहैत छथि — 'कुलक मर्यादा सेहो किछु चीज होइत अछि।' गंगेशक प्रश्न फेर उठैत अछि — बूढ़क शब्द अटकि जाइत छथि। ईरा पुछैत छथि — 'जकर बुद्धि पर समाज गर्व करैत अछि, ओकर जीवनक असुविधाजनक सत्य पर समाज मौन किएक रहैत अछि?' बटुकनाथ 'जीवनक कथा विवादास्पद होइत अछि, महान ग्रन्थकेँ निजी बातमे नहि पड़ू' कहैत छथि — मीरा तीखा जवाब दैत छथि: 'स्त्रीक देहपर समाज निर्णय देत तँ निजी बात सार्वजनिक बनि जाइत अछि, मुदा विद्वानक जाति-भंजक जीवनपर प्रश्न होइत तँ निजी कहि चुप्पी?' ठूँठक माटिसँ जूताक आकृति देखार होइत अछि —

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

'चर्मकारणीक पएर।' चर्मकारणीक कण्ठ (इतिहासक नहि-सुनल स्वर) उठैत अछि — 'जे हमरा स्पर्शसँ अपवित्र कहैत छल, से हमर श्रमसँ बनल जूता पहिरि तीर्थ जाइत छल... कहू, प्रमाण ककरा चाही?' रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा 'अशोक' क नाम फेर आबैत अछि — 'सम्मानक नाम पर जीवन-सत्य मारब सेहो एक जातिक अपराध अछि।' आरुणि पुछैत छथि — 'जे न्याय पुलक पाया, मजदूरक पएर, स्त्रीक देह धरि पहुँचि सकैत अछि, से जातिक दुआर पर आबि किएक रुकत?' एकटा मजदूर-युवक आ ब्राह्मण बूढ़ दुनू ठूँठक माटिपर हाथ राखैत छथि — दुनूक हथेलीमे माटि एक्के रंगसँ सुखाइत अछि। बा कहैत छथि — 'गाछीक देहक कण सभकेँ बराबर रंग दैत अछि, जाति मनुख बनबैत अछि, माटि नहि।' रातिमे बच्चा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

सभ नव पाठ लिखैत छथि — 'जाति पूछबासँ पहिने नाम सुनू, पवित्रता कहबासँ पहिने श्रम देखू।' अध्यायक अन्तमे बटुकनाथ गुप्त चिट्ठी लिखैत छथि — 'गंगेश प्रसंगकेँ सीमित राखल जाए' — मुदा भोरे चिट्ठीक अक्षरक बीच स्वतः शब्द उगि आबैत अछि — 'स्पर्श'।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

जातिक पिंजराक अगिला भोर, ठूँठक भीतरसँ कारी धूलि 'प्रमाण' शब्द बनबैत अछि। बा सहज कहैत छथि — 'गंगेश आयलाह।' ठूँठक पानिक बून्दमे एकटा दर्पण-दृश्य खुजैत अछि — गर्भवती स्त्री, आ 'पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्म' क कथन। सत्यव्रत मेहता गोप कुमारकेँ रोकैत छथि — 'एहि ठाम प्रमाणक अर्थ फाइल नहि, लोकस्मृति, प्रश्न, आ नुकाओल भय सेहो अछि।' अनन्या चारि गोला बनबैत छथि — प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, आ नव चारिम — 'दबायल जीवन।' दर्पणमे चर्मकारणीक दृश्य आबैत अछि — मीरा पुछैत छथि 'जे स्त्रीक नाम इतिहासमे केवल जातिसँ चिन्हित अछि, हुनकर असली नाम केओ किएक नहि लिखलक?' चर्मकारणीक स्वर बहुविध स्त्री-अपमानक प्रतीक बनि जाइत अछि।

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा 'अशोक' क नाम फेर आबैत अछि — बा एहि सम्पादकीय दमनकेँ 'सम्मान-हत्या' (धातुक नहि, लेखनीक कटार) कहैत छथि। बटुकनाथ हरिहरनक 'इतिहासक प्रमाण चाही' क मांगपर अनन्या पुछैत छथि — 'प्रमाणक नाम पर अहाँ कतेक पीड़ितक आवाज रोकलहुँ?' सत्यव्रत घोषणा करैत छथि — 'प्रमाणक दुआर पर जातिक चौकीदार बैसल हो, तखन सत्य भीतर पहुँचबासँ पहिने मारल जाइत अछि।' बच्चा सभ नव पाठ लिखैत छथि — 'प्रत्यक्ष बिनु करुणा अन्हार, शब्द बिनु उत्तरदायित्व हिंसा।' चर्मकारणीक छाह गंगेशक कातमे अधीन नहि, बराबरीसँ ठाढ़ होइत छथि। लाउ, ब्रूम, चन्द्रपाल सभ एहि प्रसंगकेँ अपन-अपन ढंगसँ नियन्त्रित/व्यावसायिक बनयबाक कोशिश करैत छथि, मुदा

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

बच्चा सभ स्पष्ट राखैत छथि — 'गंगेश विज्ञापन नहि, प्रश्न छथि।' साँझमे चारिटा नव पाथर राखल जाइत अछि — गंगेश, चर्मकारणी (नाम प्रतीक्षारत), सम्मानक नाम पर काटल जीवन-सत्य, तत्त्वचिन्तामणि (प्रश्नक अग्नि)। रातिक कबड्डीमे 'कबड्डी-कबड्डी' क संग 'प्रमाण-प्रमाण' जुड़ि जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे ठूँठसँ एकटा तेज, अवैयक्तिक स्वर आबैत अछि — 'जे प्रश्न सँ डेराइत अछि, से न्यायक अधिकारी नहि।' अनन्या नव पृष्ठ 'उन्नैसम पहरा: प्रमाणक दरार' खोलैत छथि — अगिला उत्तर गामक सभसँ नीच कहल गेल घरक आँगनसँ आयत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

गंगेशक मुक्तिक बाद बच्चा सभ नव कोंपलक छाहरि लग बैसैत छथि। अनन्या घोषित करैत छथि — 'गंगेश बाबाक मुक्ति भेल, मुदा गंगेशक ग्रन्थक पहरा शेष अछि।' बा स्पष्ट करैत छथि — 'जे ग्रन्थ मनुष्यकेँ देखय नहि सिखाबय, से बारह हजार नहि, आध पात बराबर सेहो नहि।' नब कोंपलक पातपर अदृश्य रेखा भेटैत अछि, जे प्रश्नसँ पढ़ल जाइत अछि। बच्चा सभ गंगेशक चारि प्रमाण-श्रेणीपर खेल बनबैत छथि — प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, आ (सभसँ कठिन) अनुपलब्धि। एकटा बच्चा पुछैत अछि 'जाति प्रत्यक्ष अछि?' — मीरा उत्तर दैत छथि 'जातिक अहंकार प्रत्यक्ष नहि, ओकर हिंसा प्रत्यक्ष।' पुरोहितक पोताक 'शास्त्रक शब्द सभसँ ऊपर' दावापर बा कहैत छथि — 'जे शब्द मनुष्यकेँ

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

नीच देखाबय, ओ शब्द नहि, सत्ता अछि।' अनुपलब्धिक गोलामे अनन्या कहैत छथि — 'गंगेशक जीवनमे चर्मकारणी स्त्रीक पूरा नाम नहि भेटैत — ई अनुपलब्धि अछि... गंगेशक मुक्ति बिनु अज्ञात चर्मकारणी स्त्रीक नाम तकने पूर्ण नहि।' पात बढ़ैत जाइत अछि, गिनती करैत काल संख्या स्थिर नहि रहैत — बा कहैत छथि 'बारह हजार ग्रन्थ बराबर होएबाक अर्थ ई नहि जे पन्ना भारी, अर्थ ई जे प्रश्न अनन्त।' शहरसँ दू 'गंगेश अध्ययन परिषद्' क विद्वान आबि 'नियन्त्रित प्रस्तुति' आ 'वैज्ञानिक सम्पादन' क बात करैत छथि — अनन्या पुछैत छथि 'प्रमाण चाही, मुदा प्रमाणक दरबान के?' चन्ना गाछीक पात हुनकर कागचपर खसि छपल पाँती धुँधला कऽ दैत अछि। सत्यव्रत मेहता कहैत

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

छथि — 'न्याय ई सेहो अछि जे ककरा प्रश्न पूछबाक अनुमति अछि।' साँझमे नव नियम — 'कोनो शास्त्र मनुष्यक देहसँ ऊपर नहि। कोनो दर्शन ओहि स्त्रीक नाम बिनु पूर्ण नहि जकरा इतिहास कात मे राखलक।' पात सभ हिलि माटिपर वाक्य बनबैत छथि — 'जकरा मेटाओल गेल, ओकर प्रश्न शेष अछि।' अध्यायक अन्तमे ठूँठक जड़िसँ शायद चर्मकारणीक (अखनो नामविहीन) आवाज उठैत अछि — 'न्याय ताबत धरि अधूरा अछि जाबत प्रश्नक देह भेटि नहि जाए।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

तत्त्वचिन्तामणिक पातपर अक्षर छूबितहि बदलि जाइत छथि — 'प्रमाण' सँ 'ककर प्रमाण?', 'न्याय' सँ 'ककर न्याय?'। बा पात छूइते जरब नहि, उजास दैत छथि। सत्यव्रत मेहता एहि बेर बीचमे बैसैत छथि — 'कानून सुनलहुँ, आब प्रमाण सुनू।' गंगेशक जीवन-कथा फेर उठैत अछि — ईरा पुछैत छथि 'विचार राखलक, विवाह हटौलक। तर्क राखलक, जातिक डर बचौलक। ई की न्याय अछि?' मीरा 'सम्मानक नाम पर हत्या' क अवधारणा स्पष्ट करैत छथि — 'देहक हत्या अलग, स्मृतिक हत्या अलग।' रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा 'अशोक' क छाह पातपर उभरैत अछि (एक हाथ जीवनक असुविधाजनक पाँती काटैत, दोसर हाथ ग्रन्थक माला पहिरबैत) — अनन्याक पुछलापर 'अहाँ सभ गंगेशकेँ मारलहुँ?' छाह उत्तर दैत

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

अछि 'हम सभ हुनका अमर केलहुँ' — अनन्या पुछैत छथि 'ककरा अमर केलहुँ — हुनका, कि अपन जातिक सुखद मूर्ति?' सत्यव्रत नोटबुकमे लिखैत छथि — 'प्रमाण: केवल लिखित पाठ नहि, मौखिक स्मृति, दबाओल जीवन, काटल पाँती सेहो।' एकटा बच्चा पुछैत अछि 'चर्मकारणी नाम की छलनि?' — सभ चुप। एकटा नव पाथर राखल जाइत अछि — 'चर्मकारणी — नाम तकल जा रहल अछि।' पनिडुब्बी पानिसँ कहैत छथि — 'जाति पानिमे टिकैत नहि' — बा जोड़ैत छथि 'जलसमाधिमे देहक जाति कतऽ रहैत अछि?' गंगेशक छाह स्पष्ट होइत अछि — 'ओ रिक्त स्थानहि सभसँ उज्जर छल... जँ हमर न्याय पढ़लहुँ, तँ हमर अन्याय किएक नुकौलहुँ?' अनन्या नव पाठ घोषित करैत छथि — 'जे जीवन असुविधाजनक हो, ओहि ठाम बेसी

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

ठहरू।' साँझमे पात सभ जुड़ि एकटा वृत्त बनबैत छथि, बीचमे चर्मकारणीक रिक्ति — एहि वृत्तक नाम पड़ैत अछि 'प्रमाणक अग्नि'। अध्यायक अन्तमे बच्चा सभ लिखैत छथि — 'गंगेशक मुक्ति ग्रन्थसँ नहि, पूरा जीवनक स्वीकारसँ होएत' — आ अनन्या नव पृष्ठ 'चर्मकारणीक नाम' खोलैत छथि, जे कथाकेँ ओहि स्त्रीक खोज दिस मोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२५ — निर्णयक धान

प्रमाणक अग्निक राखि ठंढा भेलाक बाद अनन्या पुछैत छथि — 'जकर प्रमाण जरि गेल, तकर निर्णय की?' आरुणि सुझाव दैत छथि जे राखिसँ खेतमे रेखा खिंचल जाए — 'जँ न्याय अन्न नहि उगबैत, तँ ओ केवल शब्दक भभूत अछि।' बा धानक बीआ राखि, कहैत छथि 'ई बीआ ओहि खेतमे पड़त जतय जातिक नाम पर कतेको पएर रोकल गेल।' सभ चर्मकार-परिवारक खेत (जकरा चौपालपर बैसबाक अधिकार नहि छल) दिस चलैत छथि। बूढ़ी चर्मकारिणी मेड़पर बैसैत छथि — मीरा कहैत छथि 'माटि अहाँक हथेली सँ बजैत अछि, तेँ अहाँकेँ सेहो।' गंगेशक कथा फेर देहक नामसँ कहल जाइत अछि। सत्यव्रत मेहता स्वीकार करैत छथि — 'निर्णय जँ भोजन नहि बनल, समान आसन नहि बनल, तँ ओ न्याय नहि, व्यवस्था-भाषा अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२५ — निर्णयक धान

खेतमे राखि छिड़कैत काल अनन्या कहैत छथि — 'ई राखि प्रमाणक नहि, अप्रमाणक सेहो अछि... जे सम्मानक नाम पर स्मृतिसँ हटाओल गेल — सभक राखि।' चर्मकारणीक नाम आब 'पत्नी' नहि, 'सह-प्रमाण' कहि लिखल जाइत अछि — बा कहैत छथि 'जे शास्त्र स्त्रीक नाम काटि देत, ओकर पन्ना अधूरा रहत।' सत्यव्रत कँपैत हाथसँ धान राखिपर छिड़कैत छथि। खेतमे एकटा लकीर खिंचल जाइत अछि — पुरान जातीय सीमाकेँ काटबाक रेखा — अनन्या साँस भरि रेखा पार कऽ चर्मकारिणीक हाथसँ बीआ लऽ घुरि आबैत छथि — 'जे सीमा न्याय रोकय, ओकरा खेलमे बदलू।' बूढ़बा भूत धूपमे धुँधला देखार भऽ हँसैत छथि — 'जतेक देबाल रहल, सभमे एक-एक कबड्डी बाँकी अछि।' एकटा बालकक प्रश्नपर ('जे विद्वान

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२५ — निर्णयक धान

असुविधाजनक सत्य हटाकऽ मूर्ति बनबैत छथि, ओ की हत्या करैत छथि?') ईरा उत्तर दैत छथि — 'देहक हत्या एक बेर होइत अछि, स्मृतिहत्या बार-बार।' साँझमे सामूहिक हर चलाओल जाइत अछि — चर्मकारिणी बूढ़ी पहिल धारि, फेर आरुणि, मीरा, सत्यव्रत, अनन्या — जाति-आधारित हरक विभाजन तोड़ल जाइत अछि। बा कहैत छथि — 'धानक कान न्यायसँ भारी होइत अछि, जँ ओ झुकत, तखन बुझब जे निर्णय फलल।' अध्यायक अन्तमे रजिस्टरमे लिखल जाइत अछि — 'आइ न्याय खेतमे उतरल' — निर्णयक अन्त कटनीपर होयबाक प्रतिज्ञा सहित।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

बा कहैत छथि — 'जे न्याय भात नहि बनल, से केवल वाक्य अछि।' पाठशालाक पाठ खेतमे लागल — गंगेशक पाँच प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि) अन्नक सन्दर्भमे जीवनक भाषामे बुझाओल जाइत अछि। गामक स्त्री सभ पुरान माप-बाट अनि पुछैत छथि — 'नामक अभिलेख अछि, मुदा भूखक अभिलेख कतऽ?' देविका 'भूखक नामावली' खोलैत छथि। अनन्या स्पष्ट करैत छथि — 'दया ऊपरे सँ फेकल भात अछि; हिस्सा संग बैसि खाएल भात।' बटुकनाथक 'लोक-स्मृति न्यासक अन्न-कोष' प्रस्ताव (दाताक नाम शिलापट्टपर) अस्वीकृत होइत अछि — 'जे देत, ओकर नाम पहिने नहि; जे उपजौलक, जे काटलक, हुनकर नाम पहिने।' चन्द्रपालक 'डिजिटल अन्न-पास' आ लाउ किन-हंगक विदेशी

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

खण्ड २ • मुख्य कथा

2 / 3

बीआक प्रस्ताव सेहो अस्वीकृत होइत अछि — ईरा पुछैत छथि 'जकरा स्मृति नहि, ओकर स्वामित्व ककर?' स्त्री सभ सामूहिक कोठी-बखारीक नियम बनबैत छथि — भोजन पयनिहारकेँ 'गरीब' नहि, 'सदस्य' कहल जायत। साँझमे कबड्डीमे बच्चा सभ 'भूख नहि, हिस्सा' कहैत दौड़ैत छथि। रातिमे पहिल दाना जमा होइत अछि। एकटा बूढ़ पण्डित जातिक प्रश्न उठबैत छथि — अनन्या पुछैत छथि 'जँ भूखक जाति एक अछि, तँ भातक जाति कतेक?' बा दाना खुआबैत छथि — पण्डित खा, कानि, स्वीकार करैत छथि 'भूख सँ पैघ शुद्धि नहि।' एकटा बच्चा घरसँ खाली, बरसोंसँ भात नहि आयल थारी अनैत छथि — मध्यरातिमे ओहि थारीसँ 'भूखक ध्वनि' (न शब्द न रोदन, पेटक रिक्तिक ध्वनि) उठैत अछि। सत्यव्रत मेहता

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

कहैत छथि — 'आइ धरि हम मृतकक नाम लिखलहुँ, आब जीबैत भूखक नाम लिखब।' अध्यायक अन्तमे अनन्या नव पृष्ठ 'भूखक नाम' खोलैत छथि — कोठी-बखारी अखनो अधूरा भरल अछि, थारी खाली अछि, मुदा न्यायक देह आब खेत, दाना, थारीमे उतरि चुकल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२७ — भूखक नाम

खाली थारीक चारू कात बच्चा सभ 'भूखक नाम' लिखय बैसैत छथि — मृतकक नाम लिखबसँ ई कठिन अछि, कारण भूख लजाइत, नुकाइत अछि। सत्यव्रत मेहताक हाथ काँपैत अछि — बा कहैत छथि 'भूखक नाम लिखब माने पेट खोलब नहि, लाज खोलब अछि।' पहिल नाम — 'चूल्हिक उपवास' (तीन दिन भातक गन्ध नहि उठल)। दोसर — 'बाबूजीक स्वर बचाबय लेल भूख' (गड़ेरिया, जे गोरू बेचल नहि चाहैत)। तेसर — 'छुट्टीक भूख' (बालक, जकरा मध्याह्न भोजन स्कूलमे भेटैत, छुट्टीमे नहि)। चारिम — 'कुलक डर सँ रोकल पेट' (जातिक गर्वमे भूखल रहनिहार परिवार) — बा कहैत छथि 'जे कुल भूखमे बेटीकेँ चुप करा देत, ओ कुल पहिने सँ गेल।' गंगेशक स्मृति फेर उतरैत अछि — 'प्रमाण ओहिना मानू जे पीड़ाकेँ

अध्याय १२७ — भूखक नाम

झूठ नहि बनबैत।' दिन भरिमे कतेको भूखक नाम जुड़ैत अछि। देविका प्रश्न उठबैत छथि — 'नाम लिखलहुँ, मुदा भोजन कखन?' सत्यव्रत नियम घोषित करैत छथि — 'दानक नाम नहि, अधिकारक अन्न।' एकटा व्यापारीक 'पट्टिका पर नाम' क प्रस्ताव अस्वीकृत होइत अछि। चन्द्रपाल आ राघव दुनूक प्रयास (डिजिटल दान-मंच, कोड) असफल होइत अछि — भाषा स्वयं हुनका विरुद्ध बदलि जाइत अछि। साँझमे पहिल सामूहिक रसोइ जरैत अछि — मीरा सुनिश्चित करैत छथि जे भोजन लेनिहारक चेहरा कियो नहि खिंचय। भोजन-वितरणमे कोनो ऊँच-नीच नहि — एकटा वृद्ध जे गरीबी नुकबैत छल, कानि पड़ैत छथि, ओकर नाम 'नहि कहि सकल पेट' लिखल जाइत अछि। बा घोषित करैत छथि — 'कोठी-बखारी खाली होयबाक लेल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२७ — भूखक नाम

बनैत अछि, भरल कोठी-बखारी, भूखल गाम — ई अन्याय अछि।' रातिमे खाली थारीमे जानि-बुझि एकटा दाना छोड़ल जाइत अछि — 'भूख कखनो पूर्ण समाप्त नहि मानब।' अध्यायक अन्तमे ओ दाना उत्तर दिशा (सूखल इनारक दिशा) दिस घूमि जाइत अछि — बा कहैत छथि 'भूखक बाद पियास आओत' — नव पृष्ठ 'पियासक पहरा' खुजैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२८ — प्यासक नाम

भूखक नाम लिखलाक बाद एकटा बालक खाली लोटा लऽ आबि पुछैत छथि — 'भूखक नाम लिखल गेल, प्यासक नाम कतऽ अछि?' बा स्मरण करैत छथि — 'हमर बालपनमे पानिओक जाति छल... प्यासल मनुख ओहि पर छाह धरि नहि दऽ सकय।' अनन्या 'प्रमाण: प्यास' लिखैत छथि। गामक बाहरक पुरान इनारक कथा खुजैत अछि — चर्मकार टोलाक स्त्री सभ पानि भरि नहि सकैत छलीह, दूरक कीचड़भरल पोखरि जाय पड़ैत। मीरा कहैत छथि — 'देहक अधिकार बिनु पानिक अधिकार नहि। जकरा छूबाक मनाही, ओकरा पीबाक मनाही सहज बनि जाइत अछि।' बच्चा सभ इनार लग जाइत छथि — मेड़पर पुरान खरोंच 'प्यासक लिपि' कहल जाइत अछि। एकटा वृद्धाक माय राति पानि भरैत पकड़ा गेली, घैल फोड़ल गेल — 'प्यासक पहिल नाम: रोकल

अध्याय १२८ — प्यासक नाम

गेल कण्ठ।' एकटा युवकक दादा स्कूलमे अलग जाति-चिन्हित लोटासँ पानि पिबैत छलाह — 'प्यासक दोसर नाम: अलग लोटा।' ईरा एहि इतिहासकेँ स्वप्नक अनाम ग्रहक जल-राशनिंगसँ जोड़ैत छथि — 'पृथ्वी पर जाति पानि रोकैत छल; स्वप्नक अनाम ग्रहपर पूँजी।' लाउ किन-हंगक स्क्रीनपर 'दीर्घकालीन जल-आपूर्ति अधिकार' 'ककर प्यास बेचब?' मे बदलि जाइत अछि। चन्द्रपालक ऐपमे 'नामक लेल जल-दान' सुविधा खुजैत अछि — देविका एकरा 'प्यासक म्यूल एकाउण्ट' कहैत छथि। इनार लग नाम-पाठ होइत अछि, हर गवाहीक बाद खाली लोटा बजाओल जाइत अछि। सत्यव्रत मेहता पुछैत छथि — 'न्याय पानि धरि किएक देरी सँ पहुँचैत अछि?' साँझमे इनारक झाड़ी साफ भऽ डोल चलैत अछि — बा कहैत छथि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२८ — प्यासक नाम

'पहिने पानि मटमैला अबै छै, जेना स्मृति, निकालैत रहू, साफ होएत।' तीस डोल बाद इनार 'साँस लेत' अछि। रातिमे सामूहिक जल-पाठ होइत अछि — हर मनुख एक चुल्लू पानि लऽ अपन नाम कहैत, 'हम प्यास साझा करैत छी।' राघव सिग्नलक संदेश स्क्रीनपर खाली लोटाक ध्वनि (टुन-टुन-टुन) मे बदलि जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'प्यासक पहरा ताबत धरि अधूरा, जाबत धरतीक सभ कूप, नदी, पोखरि, घैल, बादल आ नोर मुक्त नहि हो।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२९ — नूनक शपथ

अनन्या नव पृष्ठ 'पच्चीसम पहरा: नूनक शपथ' खोलैत छथि — नून मायक दूधसँ मजदूरक पसीना धरि एक्के स्वाद अछि। बच्चा सभ हर घरसँ चुटकी नून आनि ठूँठ लग राखैत छथि — बा अपन मायक रसोइक नूनक स्मृति कहैत छथि। देविका उज्ज्वलक घरक पुरान नूनक डिब्बी आनैत छथि — जे बेटाक मृत्युक खबरि आबिते चूल्हिपर रहि गेल छल। मीरा नूनकेँ क्रमबद्ध करबासँ इनकार करैत छथि — 'नूनक जाति नहि पूछल जाएत।' अनन्या पुछैत छथि — 'जे कहत जे ओकर नून शुद्ध, आ दोसराक नून अशुद्ध, ओ पहिने अपन नोरक स्वाद बताबय।' एकटा दलित वृद्धा कहैत छथि — 'हमर हाथक रोटी ओ सभ खाइत छल जे हमरा आँगनमे पानि नहि पीबैत छल... ई कोन न्याय?' सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि — 'नून गवाही दैत

अध्याय १२९ — नूनक शपथ

अछि जे शुद्धताक दावा प्रायः श्रमक चोरी अछि।' मुन्ना पासवानक भाइ पुलपर खसल मजदूरक पसीनाक नूनक बात करैत छथि — 'जे पुल पार करैत छथि, ओ सभ ओकर नून पर चलैत छथि।' एकटा व्यापारी 'गढ़ नारिकेल स्मृति-नून' नामक व्यावसायिक उत्पाद प्रस्तावित करैत छथि — अनन्याक प्रश्नपर 'ई नून कतऽ सँ आओत?' आ नेनीक जवाबी प्रश्नपर व्यापारी असहज होइत छथि। राघव सिग्नलक गुप्त संदेश ('भावनात्मक सामग्रीकेँ उत्पादमे बदलू') पकड़ल जाइत अछि आ सार्वजनिक रूपसँ पढ़ल जाइत अछि — व्यापारीक चेहरा उतरि जाइत अछि। अनन्या घोषित करैत छथि — 'आइ सँ नून बिकत नहि, बाँटल जाएत।' स्त्री सभ सामूहिक शपथ बनबैत छथि — 'हम जे नून खाइत छी, ओकर श्रम नहि बिसरब...'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२९ — नूनक शपथ

खण्ड २ • मुख्य कथा

सत्यव्रत नून चाखि, आँखि भरि आबैत छथि। साँझमे गामक हर घरमे भोजनमे नून राखैत काल एकटा नाम बजबाक रीति बनि जाइत अछि। 'नव-क्षितिज' परियोजनाक 'स्वाद-नियन्त्रित पोषण' सूची भेटैत अछि — ईरा कहैत छथि 'ओतय नून अछि, मुदा स्मृति नहि।' रातिक कबड्डीमे 'नून' आ 'बेनाम' दू टोली बनैत अछि — जे हारल ओकरो नूनक दाना देल जाइत अछि, पराजय दण्ड नहि, स्मरणक अभ्यास अछि। बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'जकरा नूनक स्वाद बुझि गेल, ओकरा पृथ्वी छोड़यमे देर लागत।' अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'नून शपथ नहि माँगैत, नून शपथक स्वाद बनैत अछि' — आ अगिला खतरा (स्मृतिक गन्ध पर बजारक हमला) क संकेत दैत छथि।

अध्याय १३० — स्वादक न्याय

नूनक शपथक बाद बा घोषित करैत छथि — 'नून खाइत छी, तेँ नूनक न्याय सेहो मानब।' सामूहिक भोजन बनैत अछि — हर घरसँ किछु आनल जाइत अछि, जकरा अन्न नहि, ओ पानि अनैत अछि। एकटा बुजुर्ग जातिगत पाँतिक मर्यादाक बात उठबैत छथि — बा कहैत छथि 'मर्यादा जे भूखकेँ जाति पूछय, से मर्यादा नहि, देहक अपमान अछि।' विरासत-दलक लोक 'चन्ना गाछी स्मृति-भोज' नामसँ नकली, कृत्रिम-गन्धवाला पैकेज्ड उत्पाद (स्मृति-नून, जलसमाधि साग) लऽ आबैत छथि — अनन्या पुछैत छथि 'ककरा भूख लागल छल? के नूनक शपथ लेलक?' सत्यव्रत मेहता पाँतिक सभसँ अन्तमे बैसैत छथि — 'जे सभक नाम खाएल गेल, हुनका बाद।' भोजन शुरू होयबासँ पहिने हर कौरक संग एकटा नाम कहल जाइत अछि — भोजन

अध्याय १३० — स्वादक न्याय

देहक अभिलेख बनि जाइत अछि। मीरा नियम बनबैत छथि — जे रान्हत, ओ पहिने चाखत; जे परोसत, ओ पाँतिमे बैसत। ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ लिखैत छथि — 'गामक स्वाद रसोइ-पुस्तकमे नहि रहैत... संग बैसाय बिनु मिथिला स्वाद झूठ अछि।' ठूँठक हरियर बिन्दु लगमे गोहि सभक लेल सेहो एकटा पाँति बनैत अछि — बा कहैत छथि 'जे देह चिबा गेल, ओकरो भूख बुझबाक प्रयास करब, जाहिसँ हम ओकरा केवल दानव नहि, संसारक भयानक प्रश्न मानि सकी।' विरासत-दलक 'नियमित टिकटसहित आयोजन' प्रस्ताव अस्वीकृत होइत अछि। भोजनक पात नदी किनार माटिमे दबाओल जाइत छथि, हर पातपर आधा-अक्षर (क, न, ज) चिन्हित — गोप कुमार कहैत छथि 'कागचक रजिस्टर रहत, मुदा पातक रजिस्टर माटिमे रहत।'

अध्याय १३० — स्वादक न्याय

साँझमे राखिमे एकटा गन्धक चिन्ह भेटैत अछि — मीरा स्पष्ट करैत छथि — 'स्वाद जीह पर रहैत अछि, मुदा स्मृति गन्ध सँ घुरैत अछि। जकर घरक रसोइ जरि गेल, जकर देह अस्पतालमे जरि गेल, ओकर नाम पहिने गन्ध बनि अबैत अछि।' अध्यायक अन्तमे ठूँठसँ अनिश्चित, आबैत-हटैत गन्ध उठैत अछि, आ अनन्या नव पृष्ठ 'सत्ताइसहम पहरा: गन्धक गवाही' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३१ — साझा थारी

स्वादक न्यायक बाद प्रश्न उठैत अछि — भूख-प्यासक कथा अलग-अलग सुनब आसान अछि, एकहि थारीमे बैसि खाएब कठिन। बा कहैत छथि — 'बेटी, एतय लोक प्रेतक संग बैसि सकैत अछि, मुदा जीवित मनुखक संग पाँतिमे बैसयमे काँपैत अछि।' साझा भोजनक तैयारीमे हर घरसँ योगदान लिखल जाइत अछि। एकटा वृद्ध ब्राह्मण भोजन-घेरामे ठिठकि जाइत छथि, चर्मकार टोलाक युवककेँ देखि — बा उठि हुनकर कातमे बैसि तीखा कहैत छथि — 'चर्मकारणीसँ विवाहक कथा सुनि शास्त्रकेँ बचा लैत छी आ स्त्रीकेँ नुका दैत छी, ओ न्याय नहि, भूखक पाखण्ड अछि।' अनन्या वृद्धकेँ पुछैत छथि 'अहाँक भयक नाम लिखी?' — उत्तर 'कुल', फेर 'भूखक नाम?' — उत्तर 'मनुष्य।' एहि लेखनक बाद वृद्ध भोजन करैत

अध्याय १३१ — साझा थारी

छथि — चर्मकार युवकसँ साग-गुड़क आदान-प्रदान होइत अछि। मुदा सभ देबाल नहि टूटैत — कतेको स्त्री घरक मर्यादा, ससुरक डर आदिक कारणे बैसि नहि पबैत छथि — मीरा कहैत छथि 'बैसू नहि तँ सेहो लिखाएब, जे रोकैत अछि, ओकरो नाम चाही' — ओकर नाम सभ ('घर', 'लाज', 'बेटीक विवाह') सेहो लिखल जाइत अछि। चन्द्रपाल बत्रा अपन बाल्यकालक अपमान (अलग पाँतिमे बैसाओल जायब) मोन करैत काँपि जाइत छथि। सत्यव्रत मेहता अन्तिम पाँतिमे बैसि लिखैत छथि — 'जे मुँह कानून पढ़लक, ओकरा पहिने मुँह भोजनक समानता सीखबाक चाही।' भोजनक बीच बच्चा सभ कबड्डी नहि खेलैत, धीरे-धीरे साँस जोड़ैत छथि — 'कबड्डीमे छू कऽ घुरय पड़ैत अछि; थारीमे छू कऽ रहय पड़ैत अछि।' भोजनक

अध्याय १३१ — साझा थारी

बाद बचल कण माटिमे मिलाओल जाइत अछि — 'जतबा बचल, तकर नाम अपव्यय नहि, अर्पण।' अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'सत्ताइसहम पहरा: साझा थारी... जतय जाति थारी रोकैत अछि, ओतय न्याय अधूरा खाइत अछि' — देविका एकरा 'अगिला संघर्षक पहिल कागच' कहैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

साझा थारीक बाद मीरा स्पष्ट करैत छथि — 'जे रसोइमे जाति बान्हल रहत, ओकर थारीक साझापन केवल उत्सव रहि जाएत।' अनन्या नव पृष्ठ 'रसोइक परीक्षा' खोलैत छथि। बा कहैत छथि — 'न्यायक असली परीक्षा भोजमे नहि, झूठा बासन धोबाक बेर होइत अछि।' चन्ना ठूँठक चारू कात लोक-रसोइ बनैत अछि — हर अन्नक कथा (पुल-मलबासँ प्रभावित खेतक धान, बाढ़िमे बचाओल चूड़ा, चर्मकार बस्तीक साग) कहल जाइत अछि। गंगेशक कथा फेर रसोइमे आबैत अछि — अनन्या पुछैत छथि 'अन्नक तत्त्व की? छुआछूत ओकर प्रमाण अछि कि भूख?' एकटा बूढ़ ब्राह्मण जीवनमे पहिल बेर चर्मकार बस्तीक बीआसँ उगल साग-कड़ाहीमे घी दैत छथि — गन्ध बदलबाक क्षण 'प्रमाण' मानल जाइत अछि। रसोइक श्रम

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

खण्ड २ • मुख्य कथा

2 / 3

पुरुष-स्त्री दुनूमे बाँटल जाइत अछि — आरुणि हँसैत छथि 'जे पुल बना सकैत छी, ओ पनिझरिका किएक नहि धो सकैत?' मीरा नियम बनबैत छथि — 'ककरो हाथक काज नीच नहि कहल जाएत।' सौम्या कहैत छथि 'रसोइमे कैमरा नहि।' पाँच चूल्हि, सात कड़ाही मिलि रसोइक गणराज्य बनैत अछि। परोसबामे पहिल भोजन 'जकर नाम कतहु नहि लिखल गेल' ओहि अनाम पाथरकेँ देल जाइत अछि। जे छुआछूतक भयसँ दूर रहैत छथि, हुनका जोर नहि कएल जाइत — 'न्याय जबरदस्ती खुआबय नहि, भयक नाम पूछैत अछि।' बटुकनाथ स्वप्नमे कानूनक धारा सभकेँ पात बनल देखैत छथि। चन्द्रपाल आ लाउ किन-हंग दुनूकेँ अपन-अपन डिजिटल/पोषण-गोलिका प्रणालीमे स्मृतिक कमीक अनुभव होइत अछि — लाउकेँ बतायल जाइत अछि 'ई

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

डेटा नहि, पकैत अन्नक स्मृति अछि... नामविहीन संसारमे भूख मेटि सकैत अछि, मुदा स्वाद जन्म नहि लैत।' बासन माजबाक बेर 'असली परीक्षा' होइत अछि — जिनका जीवन भरि थारी उठएबाक काज देल गेल छल, हुनका बैसाओल जाइत अछि, आ 'ऊँच कुल' कहनिहार सभकेँ माजबाक काज। नव अनुच्छेद बनैत अछि — 'जे खाय, से पकाबय; जे पकाबय, से खाय; जे खाय, से माजय; जे माजय, ओकर हाथ पवित्र।' अध्यायक अन्तमे बूढ़बा भूत नूनक सूक्ष्म रेखा माथपर फेरि कहैत छथि — 'आब अगिला परीक्षा उच्छिष्टक नहि, बीआ-राखिक अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

'विदेह नाट्य उत्सव' सँ एकटा आमन्त्रण-पत्र आबैत अछि — गढ़ नारिकेलक कथाकेँ रंगमंचपर आनबाक निमंत्रण। लोक सशंकित रहैत अछि — पछिला नकली भूत-जुलूसक अनुभव मोन अछि। अनन्या घोषित करैत छथि — 'नाटक होएत, मुदा अभिनय ओएह करत जे साँस रोकि सकय' — मतलब कबड्डी खेलनिहार बच्चा सभ कलाकार बनताह। एक सय बत्तीस अध्यायकेँ 'अंक' मे बदलबाक निर्णय होइत अछि — अनन्या स्पष्ट करैत छथि 'सारांश गोहि जेकाँ होइत अछि — देह चिबा कऽ अस्थि छोड़ि दैत, नाटककेँ देह चाही।' कबड्डीक अभ्यासमे बच्चा सभ पुरान अध्यायक नाम (जलसमाधि, उपस्थित, तत्त्वचिन्तामणि) बजैत रेखा पार करैत छथि — 'गंगेश' कहनिहार बच्चासँ पुछल जाइत अछि 'प्रमाण की?' — उत्तर 'देह सेहो

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

खण्ड २ • मुख्य कथा

2 / 3

प्रमाण, अपमान सेहो प्रमाण, प्रेम सेहो प्रमाण।' नाट्य उत्सवक प्रतिनिधि स्क्रिप्ट आ तिथि पुछैत छथि, मुदा अनन्या कहैत छथि 'स्क्रिप्टक बादक अंकमे... बेगरता नाटकमे होइत अछि, गवाहीमे नहि।' नियम बनैत अछि — मीरा: 'जकर दु:ख अछि, ओकर अनुमति बिनु ओकर दृश्य नहि', ईरा: 'विदेशी दर्शक पहिने सुनत, बुझबाक दावा बादमे।' गंगेशक पात्र ग्रन्थ लऽ कऽ नहि, प्रश्न लऽ कऽ प्रवेश करत। बटुकनाथक भूमिकाकेँ मसखरा बनएबासँ अनन्या रोकैत छथि — 'मसखरा बनला सँ अपराध हलुक भऽ जाइत अछि।' चन्द्रपालक भूमिका ओहि युवककेँ, राघवक भूमिका दू गोटेकेँ (एक बाजत, एक गायब होएत), लाउ किन-हंगक भूमिका चुप्पी-प्रधान देल जाइत अछि — 'ओकर संवाद कम, चुप्पी बेसी।'

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

सत्यव्रत मेहताक भूमिका एकटा शान्त बालककेँ भेटैत अछि — 'हम, कारण हम कम बजैत छी।' रातिमे कबड्डी खेलनिहार सभ पुरान अंकक नाम धीरे-धीरे दोहरबैत रहैत छथि। बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'रंगमंच सेहो गाछी होइत अछि, जड़ि झूठ हो तँ पात ताली बनैत अछि, जड़ि साँच हो तँ पात नाम बनैत अछि।' आमन्त्रण-पत्रकेँ सेहो जाँचबाक निर्णय होइत अछि — 'आमन्त्रण सेहो गवाही देत।' अध्यायक अन्तमे अनन्या नाट्य-पाठक पहिल पाँती लिखैत छथि — 'रंगमंचक बीचमे पानि भरल अछि; जे प्रवेश करत, से अपन प्रतिबिम्बक नाम पहिने कहत।'

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

बच्चा सभ नाटकक नाम तय करैत छथि — 'पहरा' (उपशीर्षक: कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ) — नायक कोनो व्यक्ति नहि, साँस अछि। मृत पात्रकेँ 'भूत' नहि, 'उपस्थित' कहल जायत, धूर्तकेँ खलनायकक बाहरी रङ्ग नहि, भीतरक खालीपन देल जायत। ईराक पहिल पाँती 'दर्शक प्रवेश करत' अनन्या काटि 'साक्षी प्रवेश करत' बनबैत छथि — 'साक्षी सभसँ पहिने पाथर पर लिखल नाम देखत।' पात्र-सूचीमे कोनो पात्रक आगाँ जाति नहि लिखल जाइत — 'जाति पात्र नहि, पिंजरा अछि, पिंजरा मंच पर खाली लटकत।' मंच-व्यवस्था तय होइत अछि — कटल ठूँठ, पानिक कारी पट्टी, रसोइक धुँआ, खाली पिंजरा। नौ दृश्य लिखल जाइत छथि — (१) कटानक बादक बिहान (सभ पात्र मिलि 'उपस्थित' कहत), (२)

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

पीयर सूचना-पत्र (कागच अक्षरक बदला पसीना छोड़त), (३) गंगेशक प्रश्न (खाली पिंजरा, प्रकाश-रूपमे गंगेशक प्रश्न उतरत), (४) स्मारक-अनुप्रयोग (चन्द्रपालक प्रतिशत चाँदीक सिक्का बनि लुढ़कत, देविकाक प्रश्नपर कारी पड़ि जायत), (५) नकली भूतक जुलूस (नाटकक भीतर नाटक टूटत, कलाकार असली मृतकक नाम बजताह), (६) स्वप्नक अनाम ग्रह (सभ क्रमांक बनत, लाउ किन-हंगक अनाम चेहरा 'नाम नहि' कहत, अनन्या 'नाम नहि, तँ जीवन नहि' उत्तर देती), (७) रसोइक गणराज्य (नूनक बून्द पिंजराक सलाख खाइ जायत), (८) गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ (गज डूबैत समाज, ग्राह लोभ-जाति-स्क्रीन-भूख-प्यासक मिलल आन्हर जबड़ा; बच्चा सभ नामसँ खिंचत)। नवम/अन्तिम दृश्य 'फेर

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

पृथ्वी' पर बहस होइत अछि — उज्ज्वलक आत्मा कहैत अछि 'जँ नाटक बन्द करब, खेल हारब।' मंचपर नब चन्ना कोंपल राखल जायत, धूर्त सभ अपन नाम बिनु लोभक लिखि सकलापर टा छूबि सकत। अन्तिम पाँतीपर बहसक बाद बा तय करैत छथि — 'जकरा साँस बाँकी, ओकर कथा बाँकी' — 'कबड्डी बन्द नहि भेल, खेल केवल धरतीक गोला सँ निकलि स्मृतिक कक्षामे चलि गेल।' रातिमे नाट्य-पाठ पूर्ण होइत अछि, आ बूढ़बा भूत कबड्डीक पुरान मुद्रामे एक पग बढ़ि रुकि जाइत छथि। अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'आइ कथा नाट्य-पाठ बनल, काल्हि नाट्य-पाठ देह माँगत' — अगिला अङ्क मंचनक होयबाक संकेत।

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

बच्चा सभ मंचकेँ ऊँच-नीच रहित, गोल मैदान रूपमे बनबैत छथि — बीचमे कबड्डीक रेखा। पहिल दृश्यमे बालक 'कबड्डी-कबड्डी' धीरे-धीरे 'नाम-नाम' मे बदलैत अछि, आ 'जेकर नाम नहि भेटल' पाथर राखल जाइत अछि — दर्शक साक्षी बनि जाइत छथि। दोसर दृश्यमे गोहि (मुखौटा बिनु, केवल छाहरूपमे) पुछैत अछि — 'हमरा देह दियौ, हम खाएब, मुदा जँ नाम बच्चा लग अछि, हम की करब?' तेसर दृश्य जलसमाधिक — 'डूबल' खेलनिहार धीरे उठि पाथर लग बैसैत अछि: 'देह डूबल, बन्धन छूटल।' चारिम दृश्यमे गंगेशक प्रश्न — खाली आसन, एकटा बालिका पुछैत छथि 'जाति जँ मनुष्यक देह पर पहरा देत, तँ न्याय कागच पर केना जन्म लेत?' — रमानाथ झा/अशोकक नामसँ 'सम्मान जँ सत्य काटि देत, तँ

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

स्मृतिहत्या अछि' कहल जाइत अछि। पाँचम दृश्यमे बटुकनाथक पोथी खोलितहि सूखल पात उड़ि दर्शककोरामे पड़ैत अछि — 'न्यासक मालिक के?' छठम दृश्यमे चन्द्रपालक नकली फोन स्क्रीन ओकरे अधूरा नाम देखबय लगैत अछि। सातम दृश्यमे राघवक संदेश पात बनि खसैत अछि — 'मेटल सन्देशो माटि पढ़ैत अछि।' आठम दृश्यमे लाउ आ ब्रूम 'स्वप्नक अनाम ग्रह' क आमंत्रण दैत छथि, आ कबड्डीक रेखा आकाशमे उछलि ग्रहक खेल बनि जाइत अछि। नवम दृश्यमे लाउक भूमिका निभाबैत खेलनिहार पुछैत छथि — 'हमर नाम कतय अछि?' उत्तर नहि भेटैत। दसम दृश्यमे सत्यव्रत मेहताक भूमिकाक लेल खाली कुर्सी राखल जाइत अछि — अनन्या कहैत छथि 'जे सुनय नहि आयल, ओकर कुर्सी खाली रहत' — सत्यव्रत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

दर्शकमे बैसल काँपि उठैत छथि। अन्तिम दृश्य शुद्ध कबड्डी — हर पकड़ हिंसा नहि, स्मरण। आयोजक ताली बजाबय चाहैत छथि, मुदा बच्चा सभ रोकैत छथि — 'ताली प्रदर्शनक अन्त होइत अछि, एहि राति अन्त नहि चाही।' एकटा वृद्ध, स्त्री, युवक, प्रवासी सभ उठि 'हमरो घरमे एकटा नाम अछि, जे नाटकमे नहि छल' कहैत छथि — मंच लोकक कण्ठमे विस्तार पाबय लगैत अछि। अध्यायक अन्तमे बा कहैत छथि — 'गाछी नहि, जड़ि देखलक। जड़ि जखन मंचन स्वीकार करैत अछि, तखन कथा फेर माटिमे घुरैत अछि' — नाटक अपन मंचन पूरा कऽ फेर उपन्यासमे घुरि आबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

मंचनक बाद उठल ताली धीरे-धीरे सन्नाटामे बदलैत अछि — कलाकार सभ अभिनयक बादक अपराधबोध अनुभव करैत छथि। नाट्य उत्सवक संचालक धन्यवाद-भाषण अधबीचमे रोकि कहैत छथि — 'जे लोकक नाम एहि नाटकमे छूटि गेल, ओ सभ आगाँ अबथि' — मंच आ दर्शकक रेखा टूटि जाइत अछि। दर्शक उठि अपन-अपन छूटल नाम कहय लगैत छथि — एकटा स्त्री पुछैत छथि 'हमर बेटी जीबैत अछि, मुदा घर ओकर नाम नहि लेत, की ओकर नाम सेहो लिखल जाए?' अनन्या उत्तर दैत छथि — 'जकर नाम चुप कराओल गेल, से मृतकसँ कम नहि।' सत्यव्रत मेहताक भूमिका निभेनिहार बालककेँ ओ अलगसँ शिक्षा दैत छथि — 'पीड़ा प्रशंसा लेल नहि, न्याय लेल बजैत अछि।' चन्द्रपाल बत्रा सभागारक बाहर ठाढ़ रहि जाइत छथि, आ ओकर

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

मोबाइलपर संदेश चमकैत अछि — 'तोहर नाम मंच पर नहि, लोकक घाटामे लिखल अछि।' बटुकनाथक प्रतिनिधि नाटकक 'अधिकार' नियन्त्रित करय चाहैत छथि, मुदा बूढ़बा भूतक आवाज पुछैत अछि 'कथा के कीनत? साँसक रसीद बनाओत?' — प्रतिनिधि भागि जाइत छथि। ईरा स्क्रिप्टक लेखकत्वपर कहैत छथि — 'जे कथा जलसमाधि सँ आयल अछि, ओकर लेखकत्व नदीक जेकाँ होएत, बँटाइत नहि, बहैत अछि।' मीरा जोड़ैत छथि — 'खुजल ठामक अर्थ ई नहि जे कियो ककरो निजता तोड़त, अनुमति सभ पूछल जाए।' रातिमे कबड्डी खेलनिहार सभ निर्णय लैत छथि जे अगिला मंचनमे नाटक स्थिर नहि, चलैत पहरा रहत — हर ठामक लोकक नाम पिरोयल जायत। अनन्या धूलिमे नव 'मंचक प्रतिज्ञा' रेखा खिंचैत छथि — रेखा पार

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

करैत सभ 'कबड्डी' नहि, 'उपस्थित' कहैत छथि। रातिक झण्डापर केवल 'विदेह' शब्द साफ चमकैत अछि — बच्चा सभ कहैत छथि 'देहक पार उतरि फेर देहक गरिमा धरि घुरब — ई विदेह होएत।' अध्यायक अन्तमे मंचक धूलिपर स्वतः एकटा पाँती उभरैत अछि — 'जतय नाटक समाप्त, ओतय गाम शुरू' — अनन्या ओकरा स्क्रिप्टक बाहर राखबाक कहैत छथि, कारण 'जे पढ़त, ओ अगिला अंक लिखत।'

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

मंचनक बाद अनन्या रजिस्टर नहि खोलैत छथि — 'आइ पहिने देखब जे दर्शक स्वयं लिखय चाहैत अछि कि नहि।' प्रेक्षागृहसँ एक-एक कऽ लोक उठि अपन गवाही देबय लगैत छथि — एकटा वृद्ध मुंशी स्वीकार करैत छथि जे पुलक मजदूर-गिनतीमे धांधली देखलनि आ चुप रहला, आ पीयर पड़ल पुरान सूची निकालि दैत छथि — 'दर्शकक पहिल गवाही: चुप मुंशी।' एकटा स्त्री कोविड-कालीन दवाइक कालाबाजारीमे संलिप्तताक बात कहि (जकर बेटा ओहि रोगमे मरि गेल) चाभी सौंपैत छथि। एकटा युवक ठगीक विज्ञापन-लेखनक अपराध स्वीकार करैत छथि — मीरा कहैत छथि 'भाषाक दाँत होइत अछि, मुदा जँ ओ सत्य चिबाबय लागय तँ दण्ड सेहो होइत अछि।' अनेक छोट-छोट अपराध (जाति-आधारित विवाह-अवरोध, चुप्पी,

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

'मामला हमरा घरक नहि' कहि हटब) स्वीकार होइत अछि — कथन अछि 'छोट अपराध सभ मिलि कऽ पैघ गोहि बनैत अछि।' बटुकनाथ हरिहरन गुप्त रूपसँ दर्शकमे बैसल छथि, आ गवाही सुनि-सुनि सिकुड़ैत जाइत छथि। सत्यव्रत मेहता कुर्सीसँ नहि उठैत छथि, मुदा 'हम चुप रहलहुँ' सुनि विचलित होइत छथि। कबड्डी खेलनिहार कलाकार सभ दर्शकक गवाहीक पहरा दैत छथि। ईरा नोट करैत छथि जे गवाहीमे अपराध आ पीड़ा घुलल-मिलल रहैत अछि — 'कोनो मनुष्य केवल एक नाम नहि।' अनन्या घोषित करैत छथि — 'भूमिका नहि — अपन नाम' — अगिला अंकमे दर्शकक गवाही नाट्य-पाठमे जोड़ल जायत। मीरा चेतावनी दैत छथि — 'जे गवाही देल गेल, ओकर मालिक गवाह अछि, मंच ओकर सेवक मात्र' — कारण चन्द्रपाल,

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

राघव, ब्रूम सभ एहि 'दर्शक-गवाही' मॉडलकेँ व्यावसायिक बनयबाक अवसर देखि रहल छथि। रातिमे मंचपर राखल जड़िक प्रतिरूपसँ हरियर रेखा चमकैत अछि — कबड्डी खेलनिहार सभ 'उपस्थित' कहैत छथि, आ पूरा प्रेक्षागृह उत्तर दैत अछि। भोरे फाटकपर बच्चा सभक हाथसँ लिखल सूचना चिपकल भेटैत अछि — 'अगिला अंकमे दर्शकक गवाही नाट्य-पाठमे जोड़ल जाएत... कबड्डी जारी अछि' — कथा मंचसँ उठि जन-लेखन बनबाक दिशामे बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

नाटक सभागारसँ बाहर पसरैत अछि — चाह-दुकानपर एकटा महिला अपन भाइक नाम चाहबलाक उधार-पुस्तकमे लिखबैत छथि। बस-अड्डापर एकटा युवक कलाकार (एखनहुँ मुँहपर भूतक चूना) कहैत छथि — 'जाबत धरि हमर बाबूक नाम पूरा नहि लिखाइत, ई रंग धुलत नहि।' नाट्य-मण्डपक पछिला दरबाजा लग कलाकार सभ भूमिकासँ बाहर आबि अपन असली नाम बजैत छथि — कतेको असली नाम भूमिकासँ बहुत मेल खाइत अछि। सूत्रधार पाण्डुलिपिमे नव पन्नापर बिनु स्याहीक लिखल वाक्य पबैत छथि — 'जाहि कथाकेँ दर्शक भीतर लऽ जाए, ओकर लेखक बदलि जाइत अछि।' बच्चा सभ दर्शकक गवाहीक लेल नव पृष्ठ (नाम, ककरा लेल उपस्थित, कथा कतय जाएत) बनबैत छथि। मीरा निजी गवाहीकेँ छपाइसँ बचबैत छथि — 'नामक पहरा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

कण्ठसँ शुरू भेल, मुदा पृष्ठ पर पहुँचि कऽ मर्यादा बदलि नहि जाए।' देविका नियम बनबैत छथि — 'दुखक टुकड़ा बेचू नहि, पूरा सन्दर्भ सुनू।' चन्द्रपालक ऐप 'भावुक दृश्य' अपलोड करय चाहैत अछि, मुदा 'नाम नहि बिकत' पंक्ति आबि अटका दैत अछि। राघव सिग्नलक कोडमे राति भरि केवल 'उपस्थित' शब्द घूमैत रहैत अछि। बटुकनाथकेँ सचिव बतबैत छथि 'भीड़सँ बढ़ि, लोक गवाही दऽ रहल अछि' — बटुकनाथ बुझैत छथि जे 'भीड़ नियन्त्रित कएल जा सकैत अछि, गवाही नहि।' सत्यव्रत मेहता खाली मंचपर अभिनयमे उपयोग भेल असली-पसीना-दागवाला पाथरपर हाथ राखि कहैत छथि — 'गवाहीक अधिकार अदालतसँ पुरान अछि।' भोरे कबड्डी खेलनिहार सभ सभागारक बाहर सड़कपर कबड्डी खेलैत छथि —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

कोनो विजेता घोषित नहि होइत। अनन्या रजिस्टरमे लिखैत छथि — 'नाटक बाहर आयल, मंच आब गामक देहमे पसरल।' अगिला अंकमे की छापल जाए एहि प्रश्नपर ईरा कहैत छथि — 'जतबा छापब, ततबा छूटत, मुदा जे छूटत, तकरा स्वीकार कऽ छापू।' अध्यायक अन्तमे विदेशसँ एकटा पत्र आबैत अछि — विदेशमे बसल बच्चा सभ लिखैत छथि 'हम सभ सेहो नाटक खेलब, मुदा पहिने नाम सुनब' — जुलूस आब समुद्र पार बढ़बाक संकेत।

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

नाटक सभागारसँ पूर्णतः बाट पर उतरि जाइत अछि — दूध लऽ जाइत लोक, तरकारीबला, रिक्शावाला सभ क्षणिक दर्शक बनैत छथि। कबड्डी खेलनिहार सभ बाटक विभिन्न बिन्दुपर 'प्रवेशक सीमा' रेखा बनबैत छथि। पहिल अभिनय हाटमे होइत अछि — साधारण भेषमे खेलनिहार 'उपस्थित' कहैत छथि, आ हाटक लोक स्वतः उत्तर दैत छथि। दोसर दिन बस-अड्डापर संक्षिप्त पात बाँटल जाइत अछि — कंडक्टर स्वयं पढ़ि कऽ सुनबैत छथि 'जे नाम टिकट पर नहि चढ़ल, ओ यात्री नहि होएत? जे नाम जीवनमे नहि चढ़ल, ओ मनुष्य नहि?' तेसर दृश्य अदालतक बरामदामे — एकटा बालिका खाली कागच राखि पुछैत छथि 'जकरा जीवन दबा देल गेल, ओकर प्रमाण कोन खानामे?' — देबालसँ चूना झरि कागचपर धब्बा बनबैत अछि,

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

'देबालक उत्तर' कहल जाइत अछि। सत्यव्रत मेहता ई दृश्य लिखबाक बदला केवल सुनैत छथि। चारिम अभिनय दवाइ-दुकानक सोझाँ — दुकानदार स्वयं स्वीकार करैत छथि 'हमहूँ कीमत बढ़ेलहुँ, डरक समय लाभ लेलहुँ' — मीरा कहैत छथि 'गवाहीक पहिल साँस दोषसँ शुरू भऽ सकैत अछि, मुदा ओतय समाप्त नहि होएत।' व्यापारी, नेता, अधिकारी सभ आपत्ति करैत छथि — बच्चा सभक उत्तर 'हम भड़कबैत नहि, नाम पढ़ैत छी।' बटुकनाथ हरिहरन अनुमति-पत्र, भीड़-नियंत्रणक कानूनी रस्ता खोजैत छथि, मुदा कागचपर अदृश्य हाथ स्वतः 'उपस्थित' लिखि दैत अछि — ओ बुझि जाइत छथि 'चन्ना गाछी आब बरामदामे घुसि चुकल अछि।' चन्द्रपाल कैमरा लगाबय चाहैत छथि, मुदा स्त्री सभ रोकैत छथि —

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

'स्मृतिकेँ फेर बिक्री पर नहि चढ़ाएब' — ओकर ऐपपर केवल खाली पृष्ठ खुजैत अछि। राघव सिग्नल एहि घटनाकेँ 'चल-नाटक' कोडमे दर्ज करय चाहैत छथि, मुदा सन्देश टूटि जाइत अछि — कोनो केन्द्रीय मालिक/नेता/खाता नहि रहलासँ ओकर षड्यन्त्रक नक्शा धुँधला पड़ि जाइत अछि। लाउ किन-हंग दूर बैसल बुझि जाइत छथि — 'ई लोक पृथ्वी नहि छोड़त, जे स्मृति बाट पर खेलय लागल, ओकरा दोसर ग्रहक करारसँ नहि कीनल जा सकैत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४० — चल चौपाल

खण्ड २ • मुख्य कथा

1 / 2

बाटक रंगमंचक बाद बच्चा सभ नियम बनबैत छथि — हर अभिनय-स्थलपर अन्तमे खेल होयत, मुदा हार-जीत घोषित नहि होयत। खेलाड़ी सीमा पार करि, नाम माँगि, साँस टूटबासँ पहिने घुरत — नाम पूरा सुनलापर सफल, नहि तँ अगिला साँस। एहि खेल-चौपालकेँ 'चल चौपाल' नाम देल जाइत अछि — एकरा लेल केवल तीन वस्तु चाही: खुलल ठाम, सुनएबला कान, आ एकटा अनसुना नाम। साँझमे जुलूस थाकल-मुदा-सन्तुष्ट ठूँठ लग घुरैत अछि — अनन्या लिखैत छथि 'आइ कथा बाट सीखि आयल।' एकटा नेना लिखैत अछि — 'नाटक ओ नहि जे मंच पर हो, नाटक ओ जे जीवनकेँ अपन झूठ सुनाबय पर विवश करय।' बा घोषित करैत छथि — 'आब जीवनक बारी अछि... असली रंगमंच रसोइ, ओसारा, खेत, कोठरी, कार्यालय, अदालत,

अध्याय १४० — चल चौपाल

मोबाइल, निन्न अछि।' रातिमे दू सिपाही साइकिलपर आबि 'अनधिकृत मार्ग-अवरोध' सम्बन्धी कागच दैत छथि। बच्चा सभ डेराइत नहि — अनन्या कागचकेँ ठूँठक कगारपर, ओहि ठाम राखैत छथि जतय पहिने पीयर सूचना-पत्र राखल गेल छल। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'काल्हि ई पढ़ल जाए' — मुदा बूढ़बा भूतक स्वर आबैत अछि 'पढ़ल नहि, खेलल जाए।' अध्यायक अन्तमे संकेत मिलैत अछि जे अगिला दिन कागचक कबड्डी खेलल जायत — जतय कानूनक पाँतिसँ साँस चोराकऽ नाम वापस आनल जायत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

अदालतक बरामदामे अभिनय समाप्त भेलाक बादो लोक उठैत नहि। सत्यव्रत मेहता अपन पुरान मौनक परछाईं देखैत छथि। एकटा बूढ़ मुवक्किल कहैत छथि — 'हमर मुकदमा तेइस बरख चलल, बेटा जुआन सँ बूढ़ भऽ गेल, हमरा जीवनक कागच के लिखत?' एकटा भयभीत लिपिक स्वीकार करैत छथि — 'नोकरी बचाबयक डर' — बच्चा सभ लिखैत छथि 'नोकरी बचाबयक डर एहो मौनक एक रूप।' बटुकनाथक पुरान शिष्य (अधिवक्ता) अपन कोट पाथरपर राखि कहैत छथि — 'हम सभ कानूनक भाषा सीखलहुँ, मुदा न्याय सुनबाक भाषा नहि सीखलहुँ' — ओकर जेबसँ खसल तारीख-पर्ची सभ पढ़ल जाइत अछि, हर तारीखक पाछाँ एकटा नामक-जीवनक क्षति। देविका घोषित करैत छथि — 'एहि बरामदामे नाटक भेल, आब पाठ होएत' — कागचक बदला

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

पाथरपर तारीख लिखल जाइत अछि। मीरा कैमरा-धारी युवक सभकेँ रोकैत छथि — 'पहिने अनुमति।' नकली भूतक जुलूसक एकटा कलाकार स्वीकार करैत छथि — 'हम भूत बनि कमाइत छलहुँ, आइ बुझलहुँ जे भूत ओहि कागचमे अछि जे फैसला बनि नहि पाबि सकल।' एकटा छात्रक 'रोदन प्रमाण कोना?' प्रश्नपर आरुणि बूढ़ मुवक्किलक सूजल पएर आ रजिस्टर देखबैत कहैत छथि — 'प्रमाण केवल कागचमे रहय तँ गरीबक जीवन सदिखन अप्रमाणित रहत।' मध्यरातिमे बरामदा खाली नहि होइत — चाहबला चूल्हा लगबैत छथि। सत्यव्रत अन्तमे पुरान पन्ना दैत छथि — 'न्यायालयक बरामदा न्यायालयक बाहर नहि, ओकर अनसुना कान अछि' — अनन्या जोड़ैत छथि 'कान जखन खुलत, बरामदा अदालत बनत।' भोरे बूढ़ मुवक्किल घर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

जाइत काल कहैत छथि — 'आइ फैसला नहि भेटल, मुदा हमरा प्रतीक्षाक नाम भेटल।' अध्यायक अन्तमे अगिला दिन अदालतक रेकर्ड-घरमे पुरान फाइल सभक धूलि अक्षर बनि जाइत अछि — 'हमरो पढ़ू, मुदा एहन पढ़ू जे कागचक भीतर फँसल मनुष्य बाहर आबि सकय' — अगिला संघर्ष रेकर्ड-घरक अन्हारमे बढ़बाक संकेत।

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

अगिला दिन अदालतक रेकर्ड-घर खोलल जाइत अछि — चपरासी भिखारी लाल कहैत छथि 'ताला पुरान नहि, भीतरक साँस भारी अछि।' धूलिक गन्ध ('अनसुनल प्रतीक्षाक गन्धि') सभकेँ छुबैत अछि। अनन्या रद्दीक बोरामे रखल कागचकेँ 'अपमानित कागच' कहैत छथि। मीरा सावधानी बरतबाक कहैत छथि — 'जे कागच फाटत, नाम फेर घायल होएत।' पहिल फाइलमे जमीन-विवादक पाछाँ एकटा टूटल विवाहक निमंत्रण भेटैत अछि — 'कानूनी विवादक भीतर सामाजिक मृत्यु लुकायल अछि।' दोसर फाइलमे पाँच-पाँच बेर आवेदनक 'प्राप्त' मोहर, मुदा उत्तर नहि — भिखारी लाल अपन भूमिका स्वीकार करैत छथि। तेसर फाइलमे लाल सूतक गिट्ठी (चिरईक चोंचक सूतसँ मिलैत) — एकटा युवकक जातिगत कुलनाम-परिवर्तनक मामला —

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

आरुणि कहैत छथि 'नाम काटब केवल अक्षर काटब नहि, मनुष्यक भविष्य काटब अछि।' सत्यव्रत मेहता स्वीकार करैत छथि — 'रेकर्डक धूलि जँ देह पर नहि लागय, तँ न्यायाधीश अपना साफ बुझैत रहैत अछि।' एकटा वृद्धा (जे रातिभर बरामदामे रहलीह) अपन पतिक फाइल खोजबाक लेल भीतर आबि पाथरपर बैसैत छथि — 'हम बरखों धरि पाथर पर बैसल छी, कुर्सी आब हमरा साँच नहि लगैत।' छह प्रयासक बाद आधा-नामक कागच भेटैत अछि — वृद्धा कहैत छथि 'आधा नामो नाम होइत अछि, जँ कियो ओकरा पूरा सुनय।' देविका प्रस्ताव राखैत छथि — 'गुम फाइलक सूची बनत, फाइल नहि भेटल तँ मनुष्य समाप्त नहि मानल जाएत।' बटुकनाथक शिष्य कागच उठाबय शुरू करैत छथि बिनु शुल्क। सत्यव्रत छोट-मुदा-गहन

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

आदेश लिखैत छथि — 'रेकर्ड-घरक प्रत्येक फाइलक पुनर्गणना, गुम फाइलक सार्वजनिक सूची, आ प्रतीक्षारत पक्षकारक मौखिक गवाहीक अस्थायी अभिलेख तैयार हो।' अनन्या ताली रोकैत छथि — 'ई विजयक घड़ी नहि, पहराक शुरुआत अछि।' अध्यायक अन्तमे रजिस्टरमे लिखल जाइत अछि — 'आइ रेकर्ड-घरमे अन्हारक नाम पूछल गेल' — जेकर फाइल नहि भेटल, ओकर अस्तित्वक लड़ाइ आब शुरू भेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

मीरा चेतावनी दैत छथि — 'जे कागच एखन रद्दी कहल जा रहल अछि, कदाचित् ओहि पर ककरो जिनगीक आखिरी आस लिखल हो।' बोरा खोलल जाइत अछि — पन्ना सभ पर 'वादी उपस्थित, पर सुनवाई स्थगित', 'मूल अभिलेख अनुपलब्ध' लिखल भेटैत अछि — आरुणि कहैत छथि 'मूल अभिलेख अनुपलब्ध नहि, मूल मनुष्य अनुपस्थित कएल गेल।' लिपिक अपन बरखोंक 'अभिलेख उपलब्ध नहि' सन लेखनक भार मोन करैत छथि। सत्यव्रत मेहता एकटा विधवाक आवेदन पढ़ैत छथि जाहिपर 'अस्पष्ट' लिखल छल — बुझि जाइत छथि जे व्यवस्था दुःख पढ़बाक अभ्यस्त नहि छल। एकटा पन्नापर केवल 'हमरा सुनू' आ अँगूठाक निशान भेटैत अछि — अनन्या कहैत छथि 'जँ नाम नहि बचल, तँ वाक्यक रक्षा करू।' भिखारी लाल स्वीकार करैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

छथि — 'हमरा सिखाओल गेल जे पुरान कागच साफ करू, मुदा कियो नहि कहलक जे पुरान कागचक भीतर पुरान रोदन सेहो रहैत अछि' — मीरा ओकर नाम लिखबाक आग्रह करैत छथि, 'नाम लिखनाइ आफत नहि, नाम मेटेनाइ आफत अछि।' एकटा गठरीमे भाइ-बहिनक जमीन-विवाद भेटैत अछि जतय पगडंडी नापीसँ हटल छल — नीलिमा नामक नेनी पगडंडी बनबय शुरू करैत छथि। लाउक नामसँ जुड़ल एकटा फाइलमे 'अप्रासंगिक' घोषित अभिलेख भेटैत अछि — सत्यव्रत बुझैत छथि जे रद्दी बोरा 'लापरवाहीक परिणाम नहि, योजना सेहो भऽ सकैत अछि।' मीरा सावधान करैत छथि — 'गवाहीक रक्षा करब, गवाहक देह नहि बेचब।' बच्चा सभ फाइलक श्रेणी बनबैत छथि (मृत, जीवित, अधमरी) — 'जाहि फाइलक कारण कियो एखनहुँ साँस रोकि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

प्रतीक्षा कऽ रहल अछि, ओ जीवित अछि।' बूढ़ मुवक्किल एकटा पन्नाकेँ भाइक आवेदन बुझैत छथि, मुदा मीरा रोकैत छथि — 'सन लगैत अछि, ई गवाहीक आरम्भ अछि, प्रमाणक अन्त नहि।' खाली बोराकेँ 'एतय गवाही दबाओल गेल छल' लिखि चेतावनी-रूपमे राखल जाइत अछि। बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'रद्दी कहब आसान अछि, गवाही बनि उठब कठिन।' अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'जे रद्दीमे फेकल गेल, ओ न्यायक दरबारमे पहिल साक्षी बनि घुरत।'

अध्याय १४४ — नामक यात्रा

रातिमे नाम सभ कागचसँ बाहर 'यात्रा' करय शुरू करैत छथि — भोरे बरामदाक पाथरपर रहस्यमय चिन्ह (माटिक रेखा, लोहाक बुरादा) भेटैत छथि। मीरा नियम बनबैत छथि — 'खबर लऽ जाएब एक बात छै, गरिमा लऽ जाएब दोसर... जुलूस बना कऽ ककरो जखम देखाएब सेहो एक प्रकारक लूट छै।' नामक सूची तीन भागमे बनैत अछि — जीवित (अनुमति लेल जायत), मृत (परिजन खोजल जायत), आ अज्ञात (चन्ना गाछी लग स्मृति-पाठमे पढ़ल जायत, तमाशा नहि)। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'प्रक्रिया जँ मनुष्यक रक्षा नहि करय, तँ ओ केवल कुण्डी अछि।' युवक अधिवक्ता बिनु कोटक आबि मदति करय चाहैत छथि — आरुणि कहैत छथि 'मदति करू, पर मालिक नहि बनू।' पहिल यात्रा जसोदा देवीक फाइल लेल — भिखारी

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४४ — नामक यात्रा

लाल, देविका, युवक अधिवक्ता, बच्चा सभ नदी पार गामतक जाइत छथि, नाविकसँ स्मृति भेटैत अछि। जसोदा देवी नहि रहलीह, मुदा हुनकर भतीजी (आब वृद्धा) भेटैत छथि — अनुमति लऽ नामक पाँति पढ़ल जाइत अछि — 'ओ नाम एखनहुँ जीबैत अछि?' जसोदाक खेत आब कब्जामे अछि, गोदाम-रखवारा 'पुरान बात खोदबासँ की होएत' कहि टारय चाहैत छथि — भिखारी लाल उत्तर दैत छथि 'कागच गलत हाथमे रहल तँ नहि बदलल, आब नामक हाथमे जाएत।' दोसर यात्रा ललन मण्डल नामक मजदूर (जकर नामक वर्तनी अनिश्चित अछि) लेल तय होइत अछि — सत्यव्रत कहैत छथि 'नाम सुधारबासँ पहिने पूछब, कागचक नाम मनुष्य पर मत थोपब।' रातिमे कलाकार सभ एहि नाम सभपर नाटक करय चाहैत छथि, मुदा मीरा रोकैत छथि —

अध्याय १४४ — नामक यात्रा

'पहिने नाम सभ अपन घरमे फेर प्रवेश करय।' रातिमे सत्यव्रत लिपिकसँ बजैत छथि — लिपिक अपन डरक अलग पर्ची 'कर्मचारीक मौनक बयान' बनबैत छथि, कारण अन्याय केवल ऊपरक अपराधीसँ नहि, नीचाँक भयसँ सेहो बनैत अछि। अध्यायक अन्तमे अनन्या कहैत छथि — 'नामक यात्रा पहिल दिनमे समाप्त नहि होएत... जे नाम घर नहि भेटत, ओकरा हम चन्ना गाछी लग स्थान देब।' भोरे पहिल सूची तीन प्रतिलिपिमे (रेकर्ड-घर, बरामदा, चन्ना गाछी) राखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

नामक सूचीक तीन प्रतिलिपि (रेकर्ड-घर, बरामदा, चन्ना गाछी) अपन-अपन बाट पकड़ैत छथि। चन्ना गाछी लग सूची राखल जाइत अछि — 'जे घर भेटत, ओतय पहुँचाओल जाएत; जे घर नहि भेटत, ओकरा एहि गाछीक स्मृतिमे स्थान देल जाएत।' खबरि तेजीसँ पसरैत अछि — चन्द्रपाल घबरा जाइत छथि, राघव पहिने हँसैत छथि फेर चुप भऽ जाइत छथि, लाउ किन-हंग अपन पुरान नकली गवाही-पर्ची सभकेँ पहिल बेर 'दाँतक निशान' जकाँ देखैत छथि। बटुकनाथक उत्तराधिकारी सभ 'गुरुदेवक नाम नहि आबए दियौ' कहि चिंतित होइत छथि। दुपहरमे अदालतक अधिकारी लिपिककेँ झिड़कैत छथि, मुदा लिपिक अपन 'कर्मचारीक मौनक बयान' पर्ची सुनबैत छथि — 'जे कागच रद्दी कहल गेल छल, ओकर भीतर मनुष्यक निवेदन छल,

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

हम बरखों धूलि सहैत रहलहुँ।' भिखारी लाल सेहो स्वीकार करैत छथि — 'हम कहैत छलहुँ रद्दी, आब कहैत छी ओ रद्दी नहि छल।' सत्यव्रत मेहता अधिकारीसँ कहैत छथि — 'हम प्रक्रिया कैँ ओकर मनुष्य घुरा रहल छी।' चन्ना गाछी लग बूढ़ मुवक्किल अपन पोताकेँ नाम पढ़ि सुनबैत छथि — 'ई नाम हमरासँ अधिक ओहि प्रतीक्षाक अछि जे तोहर बाबूजी धरि चलल।' विधवाक बेटी 'अस्पष्ट' लिखावटपर कहैत छथि 'मायक लिखावट टेढ़ छल, मुदा मायक बात सीध छल' — देविका लिखैत छथि 'अस्पष्ट लिखावट नहि, अस्पष्ट न्याय।' चन्द्रपालक दूत सूची सार्वजनिक करबाक विरोध करैत छथि, मुदा मीरा दृढ़ रहैत छथि। रातिमे अफवाह पसरैत अछि, मुदा गामक कान आब प्रश्न पुछैत छथि — 'कागचमे नाम अछि

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

कि नहि?' अधिकारीक कोठरीमे अपराधी-पक्षक बैसकीमे एकटा बुजुर्ग अधिवक्ता पहिल दरार बनबैत छथि — 'ताला बदलि देब, मुदा नाम कतऽ बन्द करब? फाइलक प्रतिलिपि तीन ठाम अछि, लोक सुनि चुकल, भयक समय बीति रहल अछि।' अध्यायक अन्तमे अनन्या घोषित करैत छथि — 'काल्हिसँ घर-घर जएबाक अछि, कोनो कथा बिनु अनुमति नहि लिखब' — आ मीरा जोड़ैत छथि 'भय पसरौनिहारक चिन्हारि ओहि दिन शुरू होइत अछि जखन लोक पूछैत अछि — अहाँ ककरा बचा रहल छी?' ठूँठक छालसँ महीन हरियर बिन्दु देखार होइत अछि, बच्चा सभ ओकरा छुइतो नहि — 'जीवनक प्रमाणकेँ तुरन्त घोषणा बना देब सेहो हिंसा अछि।'

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

खण्ड २ • मुख्य कथा

1 / 4

अनन्या पुरान गठरी 'विशेष अभिलेख' खोलैत छथि — भीतर साधारण लोकक पीड़ाक कागच सभ, हर एकपर एकहि प्रकारक गोल मोहर। आरुणि एकटा खेत-सीमा विवादमे 'सत्यापित' मोहर देखि कहैत छथि — 'जे झूठ देह खा गेल, ओकरा सत्यापित कहल गेल।' मीरा एकटा स्त्रीक फाइलमे 'हाजिरी देल' आ 'अर्जदार अनुपस्थित' दुनू तारीखपर देखि पुछैत छथि — 'एकहि स्त्री एकहि दिन उपस्थितो कोना, अनुपस्थितो कोना?' चन्द्रपालक पुरान मुंशी (जे तहसील-अदालत दुनूमे दलाली करैत छल) घबरा जाइत छथि। सत्यव्रत मेहता ओकरा प्रोत्साहित करैत छथि — मुंशी स्वीकार करैत छथि 'हम फाइल नहि गुम केने रही, हम बस ऊपर देलहुँ, ऊपरसँ घुरल नहि।' 'ऊपर के?' प्रश्नपर मुंशी चुप रहैत छथि। देविका

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

पन्ना सभकेँ श्रेणीबद्ध करैत छथि (हाजिरी, अस्वीकृति, गुम अभिलेख, लाल मोहर) — 'अन्याय एकहि वार नहि होइत, ढेरी-ढेरी बनैत अछि।' बूढ़ मुवक्किल अँगूठाक निशानपर चढ़ल मोहर देखि फुसफुसाइत छथि — 'हमरो अँगूठा एना दबायल गेल छल।' लिपिक तीन पुरान मोहर देखबैत छथि — अनन्या पुछैत छथि 'एहि सभसँ जे लिखल गेल, तकर जिम्मेदारी सेहो उपयोगमे नहि?' मुंशी घबराइत कहैत छथि 'सभ नाम खुलत तँ गाम जलि जाएत' — सत्यव्रत उत्तर दैत छथि 'गाम जलल नहि अछि? किछु आगि बरखों धरि देह भीतर जलैत रहैत अछि।' मुंशी एकटा गुप्त सूची निकालि दैत छथि, जाहिमे अन्तिम पाँतिमे लिखल अछि — 'ब.ह.क आदेश' — बटुकनाथ हरिहरनक संकेत। अनन्या मूल कागचकेँ लाल कपड़ामे

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

सम्हारि रखैत छथि — 'प्रमाणक धूलियो बचत।' बाहर अफवाह पसरैत अछि जे राघव रातिये शहर चलि गेल। एकटा बच्चा ठूँठ लगसँ भेटल लाल-धब्बा-वाला पाथर आनैत छथि, जाहिपर खरौंचल अछि — 'नाम बाँचू।' मीरा चेतावनी दैत छथि — 'आब सभसँ खतरनाक समय शुरू भेल अछि, जखन कागच प्रमाण बनए लगैत अछि, तखन कागच जलाओनिहार जन्म लैत अछि।' भिखारी लाल अपन चाबी अनन्याकेँ सौंपैत छथि, मुदा अनन्या कहैत छथि 'चाबी तोहर हाथमे रहय, फर्क एतबे जे आब हाथ अकेल नहि रहत।' दुपहर धरि मोहरक सूची बीस पन्ना भरि जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे रेकर्ड-घरमे पहिल दीया जरैत अछि, आ रजिस्टरमे लिखल जाइत अछि — 'जखन मोहर मनुष्य पर चढ़ि जाए, तखन पहिल न्याय अछि — मनुष्यक रेखा फेर

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

देखाबू।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

रेकर्ड-घरक मोहरक-दागक बाद टोली घर-घर दस्तक देब शुरू करैत छथि — मीरा कहैत छथि 'हम घोषणा करय नहि, सुनय जा रहल छी।' पहिल घर सुरमणी देवीक — नाम सुनितहि हुनकर देहक बाँचल भाग जागि उठैत अछि, आ ओ कहैत छथि 'ई कागच हम अपने नहि लिखने रही, पटवारीक लड़का लिखने छल, मुदा ओकरा लिखाइमे हमर रोदन कतऽ छल?' पोती पुरान डिब्बामे बीज, चूड़ी, माटि आनि दैत छथि — 'जमीनक प्रमाण केवल नापी-पुस्तक नहि, स्मृतिक माटि सेहो।' दोसर घर रामेश्वर साहक — पुतोहु पहिने डेराइत छथि, मीरा कहैत छथि 'मुकदमा हम नहि खोलि रहल छी, थकानक नाम लिखि रहल छी।' भिखारी लाल पहिल बेर क्षमा माँगैत छथि — 'हम बुझलहुँ नहि जे पर्ची देलासँ ककर चूल्हा बिनु जलल रहि जाइत

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

अछि।' तेसर घर फुलकुमारीक — मायक 'दया नहि, हकक रूपमे लिखू' कहनासँ स्पष्ट होइत अछि जे छात्रवृत्ति रोकाएब गरीबीक कारण छल, 'अधूरा प्रमाण' नहि। बच्चा सभ बन्द दुआरपर जोर नहि दैत छथि, पर्ची छोड़ैत छथि — 'अहाँ चाहब तखन हम सुनबाक लेल आबि सकैत छी।' चन्द्रपालक लोक आ राघवक सलाहकार अफवाह पसारैत छथि, मुदा लोहार नन्दू उत्तर दैत छथि — 'शान्ति ओहि घरमे छल जतय चूल्हा नहि जरल?' सत्यव्रत आ लिपिक नकल बनबैत छथि — लिपिक आब 'अस्पष्ट' नहि, पठनीयता खोजैत छथि। साँझमे फोटोकॉपीवाला मुरारी अतिरिक्त प्रति (जे पैसा नहि देलापर राखल गेल) लऽ आबि क्षमा माँगैत छथि — देविका कहैत छथि 'कखनो-कखनो चोरीसँ बचल प्रति सत्यक सहायक बनि जाइत अछि,

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

मुदा चोरीक अपराध मिटैत नहि।' रातिमे चन्द्रपालक घरमे षड्यन्त्रकारी बैसकी होइत अछि — बटुकनाथक प्रतिनिधि योजना बनबैत छथि 'सत्यकेँ हराबयसँ सहज अछि ओकर भीड़मे झूठ मिला देब।' मीरा एहि खतराकेँ पहिनहि भाँपि पाँच नियम लिखबैत छथि (दू बेर सुनब, आरोप आ अनुभवक भाषा अलग चिन्हब, भीड़मे कोनो व्यक्तिकेँ दोषी नहि घोषित करब)। बूढ़ मुवक्किल चेतावनी दैत छथि — 'सत्यक बाट धीमा होए, मुदा एतेक धीमा नहि जे फेर पीढ़ी बीति जाए।' अध्यायक अन्तमे अनन्या पहिल दिनक सारांश लिखैत छथि, आ चन्ना गाछीक छाहमे गोहिक चालक आवाज सुनाइ दैत अछि — 'शायद नामक दस्तक आब ओकरा धरि सेहो पहुँचि गेल छल।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

मीरा घोषित करैत छथि — 'परखबाक अर्थ अविश्वास नहि, नामक रक्षा अछि।' पहिल आगन्तुक 'भोला मण्डल' सधल कथा लऽ आबैत छथि, मुदा मीराक 'माटिक गन्ध केहन?' प्रश्नपर 'माटि तँ माटि जेकाँ' उत्तर सन्देहास्पद लगैत अछि — देविका कागचक नकल मोड़ आ नील स्याही पकड़ैत छथि। भिखारी लालक दबावपर 'भोला मण्डल' स्वीकार करैत छथि जे ओ भीखन साह छथि, राघवक लोकद्वारा दू सौ रुपैयाक लोभमे झूठा कथा कहबाक लेल भेजल गेल छला — मीरा एकरा अलग पन्नापर 'झूठा बयान देबाक प्रयत्न, स्रोत: राघवक लोक' लिखैत छथि। दोसर आगन्तुक जगमाया — पतिक नाम कागचपर 'हरिमोहन झा', घरमे 'मोहन' — ई विसंगति सत्यक चिन्ह होइत अछि। मीराक सूक्ष्म प्रश्न ('पहिल बेर अदालत गेल रही

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

तखन अहाँ की लऽ गेल रही?') पर जगमाया दवाईक डिब्बाक स्मृति सुनबैत छथि, हँसी आ रोदन एकसाथ। रसीद जाँचल जाइत अछि आ सत्यापित होइत अछि — सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'ई केवल भुगतानक प्रमाण नहि, उपस्थिति बचल आवाज अछि।' मीरा नियम बनबैत छथि — 'कथन परखू, मनुष्यकेँ भीड़मे नापू नहि।' दुपहरमे तीन युवक एकहि हाथक लिखाइवाला अलग-अलग कागच लऽ आबि 'न्याय चाही' दोहराबैत छथि — देविकाक अलग-अलग प्रश्नपर हुनकर कथा उलझि जाइत अछि। एकटा बालक स्वीकार करैत छथि जे एक युवक राघवक ओसारपर देखल गेल छल — मीरा तुरन्त बालककेँ सुरक्षित करैत छथि। हर झूठा कागच नष्ट नहि, 'मिलावट-सन्देह' झोलामे राखल जाइत अछि — मीरा कहैत छथि 'झूठो प्रमाण अछि, एकरा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

राखू, ताकि मिलावटक कारीगरक हाथ चिन्हल जाए।' मुरारी फोटोकॉपीवाला स्वीकार करैत छथि जे ओ राघवक दबावमे तीन झूठा नकल बनौलनि, मुदा जानि-बूझि खरोंच छोड़ि देलनि — मीरा कहैत छथि 'भयमे कएल अपराध अपराधे अछि, मुदा सत्य दिस राखल छोट खरोंच सेहो दर्ज होएत।' जगमाया अपन रसीदक मूल वापस लऽ जाइत छथि, केवल प्रतिलिपि छोड़ैत छथि — 'हमरा नकल चाही, अधिकार नहि।' रातिक अन्तमे मिलावट-सन्देहक बक्सा लाल धागासँ (ताला नहि) बान्हल जाइत अछि — 'ताला विश्वासकेँ कैद करैत अछि, लाल धागा स्मरण करबैत अछि जे खोलब तँ सभक सोझाँ खोलब।' राघव बुझि जाइत छथि जे 'खेल ओकर हाथसँ खिसकि रहल अछि।' सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि — 'न्यायकेँ केवल सचक सूची नहि,

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

झूठक पद्धतियो चाही।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४९ — जालक नक्शा

मीरा कहैत छथि — 'बक्सा खोलब, मुदा आरोप नहि खोलब, पहिने चिन्ह देखब, फेर सम्बन्ध देखब।' भिखारी लाल कागचक भौतिक आकार नापय लागैत छथि — भीखन साहक कागच आ तीन युवकक कागचक बायाँ कोन एकहि ढंगसँ कातर भेटैत अछि, मुदा मुरारीक खरोंच केवल तीन युवकक प्रतिलिपिमे भेटैत अछि — झूठक कारखाना दू ठाम चलैत रहलाक संकेत। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'झूठक पद्धति सत्यक मार्ग खोलैत अछि।' देविका कागचमे अगरबत्तीक गन्ध पकड़ैत छथि — लिपिक बतबैत छथि जे राघवक ओसारपर रोज अगरबत्ती जरैत अछि, जाहिसँ कागच पुरान देखार होइत अछि। मीरा जगमायाक फोटो आ चीज-वस्तुसँ प्रतिलिपि बनाकऽ मूल घुरा दैत छथि। माटिपर जालक नक्शा बनैत अछि — तीन गोला (राघवक ओसार,

अध्याय १४९ — जालक नक्शा

मुरारीक दोकान, अदालतक रेकर्ड-घर) रेखासँ जुड़ैत अछि। लिपिक अपन नाम कैलाश प्रसाद बतबैत छथि आ स्वीकार करैत छथि जे राघवक लोकक कहलापर फाइल 'अस्थायी रूपेँ अनुपलब्ध' लिखल गेल — 'घूस प्रत्येक बेर रुपैया नहि होइत, कखनो बदली रोकबाक भरोसा, कखनो धमकी।' चार लोक (मीरा, सत्यव्रत, भिखारी लाल, कैलाश) रेकर्ड-घरक लकड़ीक पटरा तर जाइत छथि — भीतर बटुकनाथक आश्रमक मोहर आ अदालतक अभिलेख संख्या एकहि पन्नापर भेटैत अछि। सूचीपत्रमे 'भ्रमण' कोड मिलैत अछि — फाइल राघव, बटुकनाथ, चन्द्रपाल तीनूक ठाम घुमैत छल। आरुणि कहैत छथि — 'गोहि चार पाँए नहि, चार संस्था पर चलैत अछि।' भीखन साह दू सौ रुपैयाक नोट लऽ आबि स्वेच्छासँ प्रमाणक रूपमे दैत छथि

अध्याय १४९ — जालक नक्शा

खण्ड २ • मुख्य कथा

3 / 3

— ओकर टूटल-फूटल कथन 'दबावक स्वीकारोक्ति' नामक नव खण्डमे राखल जाइत अछि। मुरारीक खरोंच सूत टाँगि प्रकाश-कोण बदललापर स्पष्ट देखार होइत अछि — 'डरमे अपराध कएल, मुदा भीतर चाहैत छलहुँ जे एक दिन पकड़ा जाए।' सत्यव्रत कठोर होइत छथि — 'एहन इच्छा अपराधकेँ धोइत नहि' — मीरा जोड़ैत छथि 'मुदा ई इच्छा जाल तोड़बाक दरार बनि सकैत अछि।' दूरसँ एकटा अनाम छाताधारी (चन्द्रपालक फाइल-वाहक) देखार होइत छथि, नाम नहि भेटैत मुदा संकेत भेटैत अछि। अध्यायक अन्तमे बक्सा नक्शा-प्रति, बयान, प्रमाण सहित 'जालक प्रथम रूप' शीर्षकसँ बन्द होइत अछि, आ ठूँठक जड़िक हरियर बिन्दु फेर देखार होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५० — मुहरक छाया

सूचीपत्रक आश्रम-मोहर आ अदालत-अभिलेख संख्याक संयोगपर अनन्या कहैत छथि — 'एहि मोहरक बाट खोजय बिनु जालक देह नहि देखाइ पड़त।' मीरा तुरन्त हड़बड़ी रोकैत छथि — 'मोहर देखिते आश्रम पर धावा नहि।' सत्यव्रत मेहता मोहरक गोलाईमे सूक्ष्म कटान पबैत छथि — कैलाश प्रसाद बतबैत छथि जे पुरान अस्थायी मोहर 'खो गेल' लिखल गेल छल, दशक भरि पहिने बटुकनाथक आश्रमक धार्मिक आयोजनक समयमे। स्मृतिक सूत्र आश्रमक पुरान कोठरीक कागच धरि पहुँचैत अछि, जे छेदी कबाड़ीक दोकानतक बिकाइ चुकल छल। मीरा, अनन्या, भिखारी लाल, मुरारी छेदीक दोकान जाइत छथि — छेदी बतबैत छथि जे एकटा 'अर्धगोल, कटायल किनार, उनटा अक्षरवाला पीतल-जकाँ भारी टुकड़ा' ओ एकटा घुमन्तू

अध्याय १५० — मुहरक छाया

'सिक्का' नामक धातु-कीनारकेँ बेचि देलनि। मौसमक स्मृति (नाग-पंचमीक बाद) दुनू घटना जोड़ैत अछि। छेदीक बोरामे आश्रमक दान-पुस्तिकाक फाटल जिल्द, दाताक नाम (चन्द्रपाल, राघव, 'भा...ला...') भेटैत अछि — भिखारी लाल पहचानैत छथि जे ई 'भानु लाल' नामक पुरान मोहर-बनौनिहार भऽ सकैत छथि, जकर बेटा रमेश मुहरिया स्टेशन लग रबर-मोहर बनबैत छथि। रस्तामे सुरमणी देवी भेटैत छथि, आ दान-पुस्तिकामे अपन पति श्यामसुन्दरक नामक सोझाँ 'समझौता-सेवा' लिखल पबैत छथि — बुझि जाइत छथि 'मुलायम नहि, लिपटायल जाइत छल।' दुपहर बाद रमेश मुहरियाक दोकानमे भानु लालक रजिस्टर भेटैत अछि, जाहिमे लिखल छल — 'विशेष गोल मोहर, अस्थायी न्यायालय हेतु, पुनः काटि आश्रम

अध्याय १५० — मुहरक छाया

नाम सँ प्रयुक्त।' सत्यव्रत ई देखि स्तब्ध रहि जाइत छथि। रमेश अपन पिताक अन्तिम शब्द याद करैत छथि — 'मोहर बनब, मुदा मोहरक पाप नहि बनब।' चन्द्रपालक दफ्तरसँ 'मानहानि' क धमकी लऽ हरिचरण (पहिने अनाम छाताधारी) आबैत छथि — मीरा शांत उत्तर दैत छथि 'हम आरोप नहि लिखैत छी, सम्बन्ध लिखैत छी।' हरिचरणक आवागमन सेहो नक्शामे जुड़ैत अछि — जगमाया कहैत छथि 'हमर मोहनक रस्ता अदालत धरि नहि पहुँचि सकल, मुदा हुनकर कागच एतेक घर घूमि आयल।' साँझमे नक्शाक हर गोला लग दीप राखल जाइत अछि। सत्यव्रत कहैत छथि — 'कखनो-कखनो अन्यायक छाह नापबो न्याय दिस पहिल कदम अछि।' सुरमणी देवी अपन खाली लोटा ठूँठ लग राखैत छथि। रमेश रातिमे भानु लालक बचल पुरान

अध्याय १५० — मुहरक छाया

लकड़ीक हत्था (रबर बिनु) आनैत छथि — मीरा एकरा ठूँठ लग राखबाक कहैत छथि — 'जनता देखत जे मोहर हाथमे होइत अछि, देवता नहि बनैत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

रमेश मुहरिया अपन पिता भानु लालक अन्तिम शब्द कहैत छथि — 'बेटा, मोहर चलाओ, मुदा मोहरक बात मत पूछू, मोहर पूछए लागल तँ घर डूबि जाएत।' सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'जँ मोहर गलत हाथमे पड़ल, तखन राज नहि, चोरीक अनुशासन बनैत अछि।' भिखारी लाल स्वीकार करैत छथि — 'हम कतेक बेर मोहर लगल कागच बिनु पढ़ने भीतर पहुँचा देल।' आश्रमसँ दू नवयुवक 'सुविधा लेल' सफाई दैत छथि, मुदा प्रशिक्षणक सीमा उजागर होइत अछि। जगमाया मोहनक एकटा अधूरा पत्र आनैत छथि — 'कागच पर मोहर तँ लगि गेल, मुदा हम पढ़ि नहि सकलहुँ जे हम अपनहि जमीन पर पराया कोना भऽ गेलहुँ।' भानु लालक रजिस्टरक दोसर पन्नापर कोड ('अ', 'च', 'र', 'आ') भेटैत अछि — भिखारी लाल पहचानैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

छथि (अदालत, चन्द्रपाल, राघव, आश्रम)। तिथि मिलान शुरू होइत अछि — तीन तिथि तुरन्त मेल खा जाइत अछि। भीखन चाहबला बतबैत छथि जे राघवक ओसारपर एकटा रहस्यमय ग्राहक बिनु चीनीक चाह पीबैत, लाल धागा जेबमे राखैत छल। छाताधारी अनाम व्यक्तिक नाम भेटैत अछि — रामलखन सहाय, जे अदालत, चन्द्रपाल, आश्रम तीनूमे काज करि चुकल छथि। साँझमे रामलखन खोजि आनल जाइत छथि — मीराक हत्या देखबयलापर ओ खुलि जाइत छथि, स्वीकार करैत छथि कि खाली कागचपर पहिने मोहर लागल, बादमे शब्द भरल जाइत छल। पुछलापर 'ककर आदेश?' रामलखन उत्तर दैत छथि — 'नाम एक नहि छल, सभ करैत अछि' — मीरा एकरा 'सामूहिक अपराधक पहिल बचाव' कहैत छथि। बटुकनाथक नाम पुछलापर रामलखन कहैत छथि

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

— 'बटुकनाथक समयमे मोहरक पूजा होइत छल, हुनकर गेलाक बाद मोहरक कारोबार।' सुरमणी देवी टिप्पणी करैत छथि — 'जखन लोक देवता बनैत अछि, तखन ओकर आसन पर दोसर लोक दुकान खोलि दैत अछि।' हरिचरण साँझमे आबि आश्रमक बचाव करय चाहैत छथि, मुदा देविकाक प्रश्नपर ('जँ आश्रम पवित्र अछि, तँ ओकर नामक कागच अपवित्र हाथमे कोना गेल?') परास्त होइत छथि। सभ पीड़ित अपन-अपन आशा प्रकट करैत छथि (जगमाया: मोहनक नाम, सुरमणी: पानि, भिखारी लाल: दोषक आकार)। ठूँठ लगक खाली लोटामे एकटा पानिक बून्द रहस्यमय ढंगसँ चमकैत अछि। रातिमे रामलखनक बयान आधा पूरा होइत अछि — सत्यव्रत कहैत छथि 'संदेहक भाषा भीड़ कें उकसाबैत अछि, जाँचक भाषा हाथ कें पकड़ैत अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'आइ हाथ लिखलहुँ, काल्हि आदेश लिखब।'

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

मीरा नव नियम बनबैत छथि — 'आदेशक खोजमे व्यक्ति पर धावा नहि, भाषा पर ध्यान' — अपराधी नाम बदलैत अछि, मुदा आदेशक भाषा ('सेवा', 'प्रक्रिया', 'ऊपर सँ कहल') नहि। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'जँ कागच कहए जे ऊपर सँ आदेश अछि, पर ऊपरक नाम नहि, तखन ओ आदेश नहि, दबाव अछि।' भिखारी लाल अपन पुरान लाल किनारवाला पर्ची (नाम-रहित निर्देश, नील स्याहीक विशिष्ट चिन्ह) देखबैत छथि — ई चिन्ह भानु लालक रजिस्टर आ दान-पुस्तिकामे सेहो भेटल छल। रामलखन सहाय स्वीकार करैत छथि — 'निर्णय पहिनेहि भऽ चुकल, ओकरा कागच पर उतारबाक मोन' — सत्यव्रत बुझि जाइत छथि 'अदालत केवल मंच बनि गेल।' रामलखन नव नाम बतबैत छथि — महावीर पाठक, बटुकनाथक पुरान

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

शास्त्र-पाठी, बादमे आश्रम आ चन्द्रपालक 'मौन लेखक'। महावीरक घर आश्रमक पिछला बाटपर — मीरा प्रणाम करैत छथि, आरोप नहि। महावीर पहिने पर्चीक चिन्हसँ इनकार करैत छथि, मुदा दीर्घ मौनक बाद स्वीकार करैत छथि — 'ई चिन्ह बैसकीक स्मरण छल, जे विषय मौखिक ठहरैत, तकरा पर्ची पर बस संकेत देल जाइत।' अनुमतिसँ घरक संदूक खुजैत अछि — भीतर तीन बही: 'बैसकी-स्मृति', 'सेवा-विचार', 'समझौता-सूत्र' — 'गाछीक टुकड़ा' सन संकेत चन्ना गाछीक दिस इशारा करैत अछि — एकटा प्रविष्टि: 'गाछीक टुकड़ा पर प्रत्यक्ष दावा कठिन, धार्मिक उपयोगक स्मरण जगाओल जाए, लोकहितक वाक्य चले।' 'सेवा-विचार' बहीमे धर्मक भाषाक कातमे नील अङ्क (1, 2, 5, 8) भेटैत अछि, जे

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

भानु लालक कोड-तिथिसँ मेल खाइत अछि। हरिचरण भीतर घुसि आश्रमक बचाव करय चाहैत छथि, मुदा सत्यव्रत स्पष्ट करैत छथि — 'विचार अपराध नहि, मुदा जँ विचारक आधार पर फाइल रोकेल गेल, तखन विचार आदेशक स्रोत बनैत अछि।' रामलखन एकटा प्रविष्टि पहचानि याद करैत छथि — 'लोकहितक वाक्य चले' — ओ चन्द्रपालक दफ्तरमे सुनल छल। चारिम पन्नापर 'अदालत', 'दफ्तर', 'ओसार', 'आश्रम' चारि शब्दक बीच बाण आ बीचमे 'मुख्य वाक्य: स्वेच्छा' लिखल भेटैत अछि — जगमाया पुष्टि करैत छथि जे मोहनक जबरदस्तीक कागचपर 'स्वेच्छा' लिखल छल। मीरा महावीरक 'क्षमा' कहबाक कोशिशकेँ रोकैत छथि — 'क्षमा गवाहीक स्थान नहि लऽ सकैत, पहिने पूरा बताउ।' सुरमणी देवी तीखा टिप्पणी

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

करैत छथि — 'जे रोकि नहि सकल, ओकर नाम बाँचि गेल; जे रोकि देल गेल, ओकर जमीन गेल।' साँझमे भीड़ बढ़ैत अछि, मीरा हिंसा रोकैत छथि — 'जे लोक बरखों धरि पाथर बनायल गेल, से आब पाथर फेंकि अपन न्याय छोट नहि करत।' प्रतिलिपि बनि ठूँठ लग आबैत अछि, मूल महावीरक घरमे सीलबन्द रहैत अछि — 'हम मूल छीनब नहि, छीनबो अपराधक भाषा अछि।' अध्यायक अन्तमे अनन्या घोषित करैत छथि — 'काल्हि सँ हम संकेतक नाम खोजब।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

बहीक संकेत सभ ('दक्षिणक किसान', 'नदीक पारक विधवा', 'पुरान मुकदमा', 'गाछीक टुकड़ा', 'मंदिर-बाड़ी लगक जमीन') पर खूँटी गाड़ल जाइत अछि। मीरा नियम बनबैत छथि — 'जेकरा हम नहि जानैत छी, ओकरा खाली छोड़ब सेहो ईमानदारी अछि।' बूढ़ रामपरीक्षित पासवान 'दक्षिणक किसान' संकेतकेँ अपन काका देवन पासवानसँ जोड़ैत छथि, मुदा सावधानीसँ — 'शायद कहैत छी, पूरा प्रमाण बिनु पूरा नाम नहि लिखू' — देवनक नाम 'स्मरण' कोठरीमे जाइत अछि, 'प्रमाण प्रतीक्षा' मे नहि। 'नदीक पारक विधवा' संकेतपर एकटा किशोरी कमला आबि अपन नानी फूलकली देवीक पोटली (माटिक डल्ला, कालिख लागल कपड़ा, 'स्वेच्छा' शब्दवाला अधूरा पन्ना) देखबैत छथि — सुरमणी देवी स्वेच्छाक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

असली परिभाषा समझबैत छथि — 'जे भूखल कैँ कहय खुशीसँ देलहुँ, से स्वेच्छा नहि... जे विधवा कैँ अकेली घेरि अँगूठा ले, से स्वेच्छा नहि।' रामलखन फूलकली देवीक कहानी याद करैत छथि — देवरद्वारा दान-पत्रपर अँगूठा लगाओल गेल — फूलकली देवीक नाम 'प्राथमिक नाम' सूचीमे जाइत अछि। मीरा सतर्क करैत छथि — 'खुशी नहि, सावधानी, नाम भेटलाक अर्थ ई नहि जे न्याय भेटल।' भानु लालक कोड-रजिस्टरमे नव अक्षर 'ब' उभरैत अछि — देविका फुसफुसाइत छथि 'बटुकनाथ?' — मीरा तुरन्त रोकैत छथि 'नाम नहि, संभावना।' महावीर पाठक स्वयं आबि 'ब' कोडकैँ बटुकनाथपर नहि लादबाक आग्रह करैत छथि, मुदा सुरमणी देवी तीखा उत्तर दैत छथि — 'पिता जेकाँ मानल गेल लोक जँ पराया

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

कागच पर संतानक अँगूठा लगबाबय दय, तखन पिता शब्दक सेहो जाँच होएत।' रामलखन बहीमे 'बाबाक वचन बादमे पढ़ब' लिखल पंक्ति उजागर करैत छथि — सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि 'अनाम बाबा: आदेश-वाक्यक उच्च स्रोत।' जगमायाक पास मोहनक पत्रमे सेहो 'गाछीक नाम पर जे बोलथि, ओ सभक नाम कागच पर नहि' पंक्ति भेटैत अछि। सत्यव्रत कहैत छथि — 'जाहि वचनक बल श्रद्धासँ अबैत अछि, ओकरा हस्ताक्षरक जरूरत कम पड़ैत अछि, आ जाहि वचनमे अपराधक गंध अछि, ओकरा हस्ताक्षरक डर अधिक।' कमला माटिक डल्ला ठूँठ लग राखैत छथि, आ देवनक भतीजा रामपरीक्षित अपन लाठी ओतय टेकैत छथि — दू गुम नाम एकहि माटि लग मिलैत अछि। हरिचरण चेतावनी दैत छथि 'ई सभ कागच अदालतमे टिकत नहि' —

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

सत्यव्रत उत्तर दैत छथि 'अदालतमे जे नहि टिकैत, ओ इतिहासमे टिकि सकैत अछि।' महावीर विदा होयबासँ पहिने कहैत छथि 'बाबाक वचन सभ लिखल नहि जाए' — देविका उत्तर दैत छथि 'तखन कागचक नीचाँ मनुष्य दबि गेल।' अध्यायक अन्तमे सूची तैयार होइत अछि, मुदा कोनो नाम पूर्ण रूपसँ सिद्ध नहि — बटुकनाथक परछाईं आब दिशा पाबि लेने अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि — 'जे वचन लिखल नहि जाए, तकरा सुनबाक विधि बनाउ।' मीरा नियम राखैत छथि — 'आइ ककरो बाबा कहि सम्मान नहि, ककरो अपराधी कहि आरोप नहि, पहिने वचनक चाल चिन्हू' (वचन, कर्ता, परिणाम)। महावीर पाठक चार बहीक प्रतिलिपि, बाबाक आसनक कपड़ा, आ घंटीक डोरी लऽ आबैत छथि। 'बैसकी-स्मृति' मे 'दक्षिण टोला शांत राखू', 'दान-पत्रक भाषा सभसँ सरल', 'पुरान नाम विलम्बित' सन वाक्य पढ़ल जाइत अछि। एकटा नव 'ऊपरक सहमति' शब्द भेटैत अछि — मीरा 'बाबा, ऊपर, लोकहित, सेवा' केँ एकहि वृत्तक शब्द कहैत छथि। भानु लालक कोडमे 'ब' अक्षरक सोझाँ तीन तारीख भेटैत अछि, दू मेल खाइत छथि। बूढ़ि शारदा झा (आश्रमक पुरान रसोइयारिन) आगाँ आबि

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

स्वीकार करैत छथि — 'बाबा सीधा नाम कम लैत, संकेत बेसी... हम रोटी बेलैत रही, बुझलहुँ धर्मक बात अछि, पछात बुझायल — रोटी हमर हाथ बेलैत छल, निर्णय दोसरक पेटमे पकैत छल।' सत्यव्रतक पुछलापर शारदा स्पष्ट कहैत छथि — 'सभ कहैत छल, हमहूँ कहैत रही, मुदा बाबा कहला सँ केओ निर्दोष नहि होइत' — बटुकनाथ हरिहरन आ 'बाबा' पहिल बेर स्पष्ट रूपेँ जुड़ैत छथि। मीरा सतर्क शब्दावली राखैत छथि — 'एखन आदेशक प्रत्यक्ष हस्ताक्षर नहि।' रामलखन सहाय भानु लालसँ प्राप्त एकटा पर्ची निकालैत छथि — 'बाबा कहलनि, दान-पत्रक तिथिकेँ पिछला मासमे राखू' — रामपरीक्षित पासवानक काकाक 'हम ओहि दिन गाममे नहि छलहुँ, मुदा कागच कहैत छलहुँ उपस्थित' सँ मिलान होइत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

अछि। शारदा दोसर स्मरण दैत छथि — 'जे नाम बहुत रोए, ओकरा सेवा दऽ शान्त करू' — आरुणि एकरा 'प्रतिकार नहि, शमन' कहैत छथि। हरिचरणक 'अहाँ धर्मकेँ कटघरामे ठाढ़ करैत छी' आपत्तिपर मीरा उत्तर दैत छथि — 'धर्म नहि, धर्मक नाम पर कएल निर्णय। जे धर्म प्रश्नसँ डरए, ओ धर्म नहि, कुर्सी अछि।' बच्चा सभ 'वचन-मानचित्र' बनबैत छथि — बीचमे 'बाबा/बटुकनाथ' आ चारू दिस शाखा। सत्यव्रत टिप्पणी करैत छथि — 'अहाँ सभ कानून नहि पढ़ने, मुदा प्रक्रिया रचि रहल छी।' साँझमे बाबाक पुरान आसनक कपड़ा खोलल जाइत अछि, मीरा एकर पूजा नहि, केवल जाँच करबैत छथि। कमला, रामपरीक्षित, शारदा — तीन पीढ़ी अपन-अपन स्मृति-वस्तु (माटि, लाठी, हाथक दरार) आसनक चारू

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

कात राखैत छथि। अध्यायक अन्तमे मीरा अन्तिम सूची पढ़ैत छथि — 'बाबा शब्दक अर्थ आइ पहिल बेर बटुकनाथ हरिहरनसँ स्मरण-आधारित रूपमे जुड़ल... प्रमाण एखन पूर्ण नहि, पर दिशा अधिक स्पष्ट' — अनन्या कहैत छथि 'आइ बाबाक वचन सुनल गेल, मुदा एखन ओकर जवाब बाकी अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

अनन्या नव शीर्षक 'वचनक बाद परिणाम' लिखैत छथि — सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'आइ अपराधक भाषा नहि, व्यवस्था-लाभक भाषा पढ़ू।' देविका तीन पन्ना बनबैत छथि — दान, सेवा, मौन — आरुणि चारिम जोड़ैत छथि 'बदलामे की गेल?' महावीर पाठक 'सेवा-व्यय' खण्डवाला बही आनैत छथि — फूलकलीक धान, देवनक चिकित्सा-सहाय, दक्षिण टोलाक कीर्तन-भोज, विधवाक कपड़ा। कमला पुछैत छथि 'नानी कें धान भेटल छल?' सुरमणी देवी उत्तर दैत छथि — 'जँ धानक बदला जमीन गेल, तँ ओकरा सेवा कोना कहब?' शारदा झा एकटा पुरान थैली आनैत छथि — रसोईक स्मरण दैत छथि 'जेकर नाम पर चावल निकलैत छल, ओहि नामक घरमे बादमे चुप्पी बेसी होइत छल... भूखक समय देल चावल जँ हकक कागच दबबय लेल

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

हो, तँ ओ अन्न नहि, रस्सी अछि।' रामलखन सहाय स्वयं स्वीकार करैत छथि — 'सेवा-खाताक पन्ना सभ अलग राखल जाइत छल, जेकरा पर मुकदमाक डर, ओकर नामक सोझाँ खर्चा लिखल जाइत' — आ स्वीकार करैत छथि जे ओ स्वयं ओही खातासँ बेटीक दवाई लेलनि, तें चुप रहला। दक्षिण टोलासँ कैलाश मंडल, सकुनी खातुन, हरिबल्लभ दास आबि अपन-अपन 'सहायताक बदलामे मुँह बन्द राखबाक' अनुभव सुनबैत छथि — हरिबल्लभक पिताकेँ 'दक्षिण टोलाक रास्तापर दावा नहि उठाउ' क शर्तपर कीर्तन-दक्षिणा भेटल छल, जे रास्ता चन्ना गाछी दिस जाइत छल। हरिचरणक आपत्तिपर सत्यव्रत उत्तर दैत छथि — 'जे शुद्ध अछि, जाँच ओकरा नष्ट नहि करैत।' शारदा झा भोज-सूची 'चन्ना सेवा-संकीर्तन' आनैत छथि,

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

जाहिमे विवादित परिवार बेसी छथि, आ अधूरा 'नव संकल्प' पंक्ति भेटैत अछि। सकुनी खातुनक माय अनपढ़ रहितो अंगूठा दैत छथि 'भोजक उपस्थिति' समझि — मीरा स्पष्ट करैत छथि 'अंगूठा देहक भरोसा अछि, जँ ओकरा गलत पन्ना पर लगाओल जाए, तँ भरोसा चोरी होइत अछि।' अनन्या 'मौन' पन्नापर 'कारण' स्तम्भ जोड़ैत छथि — भूख, दवा, बेटी, प्रतिष्ठा, जाति, भय। महावीरक बहीक अन्तिम पन्नापर 'बाबाक प्रसाद: मौन-भोज' भेटैत अछि, जकर तिथि फूलकली देवीक दान-पत्रक समकालीन अछि — सुरमणी देवी कठोर कहैत छथि 'जेकर घर गेल, ओकरा भूलबाक उपदेश देब हत्या दोसर बेर करब।' कमला माटिक डल्ला बहीक कातमे राखि पुछैत छथि 'नानीक जमीनक बदला मौन-भोज?' रामपरीक्षित पासवान

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

कहैत छथि 'हम शपथ नहि, खोज चाहैत छी।' अध्यायक अन्तमे मीरा घोषित करैत छथि — 'सेवा-खाता केवल सहायता-सूची नहि, सम्भावित मौन-व्यवस्था सेहो रहल... एखन निष्कर्ष नहि, पर जालक आकार देखाइ पड़ल।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५६ — दानक ऋण

मीरा 'आधा उठल हाथ' सभक जाँच खोलैत छथि। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'पहिने ई बुझब जे ऋण कोना देहक भीतर बसि जाइत अछि।' कैलाश मंडल स्वीकार करैत छथि — पिताक दवाईसँ जान बाँचल, मुदा 'आश्रमक लोक कहैत — जकरा बाबाक दया सँ बाप बचल, ओ बाबाक जमीन पर प्रश्न करत?' मीरा एकरा 'दया कें लाजमे बदलबाक प्रक्रिया' कहैत छथि। सकुनी खातुन कहैत छथि — मायकेँ पंचायतमे कहल गेल 'तूँ गरीब छी, कागचक बात पढ़ल-लिखल लोक बुझत' — 'गरीबी केवल भूख नहि, निर्णयसँ हटाएल जाइनाइ सेहो अछि।' हरिबल्लभ दास कहैत छथि — मंजीराक दक्षिणाक कारणे पिता बाबापर प्रश्न करब पाप मानैत छला। हरिचरण तिवारी व्यंग्य करैत छथि — 'जे खयलक, ओ दोषी; जे देलक, ओ पुण्यवान' —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५६ — दानक ऋण

सत्यव्रत खण्डित करैत छथि 'जे भूखमे खाएल, आ जे भूखक उपयोग करि कागच दबेलक — दूनू एकहि तराजूमे नहि तोलल जाएत।' रामलखन सहाय स्वयं आगू आबि स्वीकार करैत छथि 'हम अपराधी छी, मुदा अकेला नहि' — अनन्या एकरा 'बंधायल अपराध' कहैत छथि। कमला महावीरसँ पुछैत छथि — 'अहाँक घरमे कियो ई पूछलक नहि जे नानीक जमीन सेवा-खातामे किएक नहि?' — कमला कहैत छथि 'गरीबक जमीन लोभ नहि, ओकर देहक छाँह अछि।' निर्मला कुम्हारिन नव आयाम खोलैत छथि — ओ घड़ा देलनि, मुदा 'जे देत, ओहो दान नहि कहल जाइत; धनी जे लेत, सेहो उपकार बनि जाइत' — देविका एकरा 'उनटा ऋण' कहैत छथि। हरिचरणक बेचैनी बढ़ैत अछि — कमला कहैत छथि 'गाम टूटल छल, बस आवाज नहि छल।' भानु लाल

अध्याय १५६ — दानक ऋण

एकटा गुप्त 'सहमति' नामक कापीक बारेमे बतबैत छथि, जे बाबाक विशेष कोठरीमे राखल जाइत छल — महावीर स्वीकार करैत छथि जे हुनकर घरमे एकटा अनखोलल लोहेक संदूक अछि। सुरमणी देवी 'संदूक-नियम' बनबैत छथि — निजता, प्रतिलिपि, गवाह, सूची। महावीर संदूक अनबाक साहस जुटबैत छथि — सत्यव्रत कहैत छथि 'कुलक मान सत्य झेलबा सँ घटैत नहि, झूठ ढकबा सँ सड़ैत अछि।' अध्यायक अन्तमे मीरा घोषित करैत छथि — 'दानक ऋण केवल पैसाक ऋण नहि, ई लाज, कृतज्ञता, धर्म, भूख, श्रम, प्रतिष्ठा आ डरक मिला-जुला बन्धन रहल... आगाँ सहमति-कापी आ लोहेक संदूकक जाँच होएत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

महावीर पाठक आ टोली घरक ऊपरी बन्द कोठरीमे लोहेक संदूक खोलबाक लेल जाइत छथि। नियम पहिने पढ़ल जाइत अछि — एकल हाथसँ नहि खुलत, हर वस्तुक सूची बनत, निज बात पर परदा रहत। हरिबल्लभ दास संदूकपर राखल टूटल मंजीरा देखि सिहरैत छथि। मीरा कहैत छथि — 'कुंजी जे ठाम राखल अछि, ओहो सूचीमे लिखू।' ताला खुलैत अछि — भीतर दू बही, मोहर लागल कागच, लाल कपड़ामे बँधल गड्डी, तामाक डिबिया। पहिल बही 'भोजन-वितरण' मे 'वचन' नामक स्तम्भ भेटैत अछि — 'बाबाक मान राखत', 'भूमि-वाद नहि उठाओत।' दोसर बही 'सहमति' (कारी जिल्द) मे 'दान/सेवा/संकट-सहायताक उपरान्त प्राप्त आश्वासन' नियम लिखल भेटैत अछि — सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'संकट-सहायताक बाद आश्वासन,

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

अर्थात संकट स्वयं दस्तावेज बनाओल गेल।' गवाहक नाम बेर-बेर दोहराइत छथि — हरिचरण तिवारी, रामलखन सहाय, लाउक मुनीम, चन्द्रपालक लोक — भिखारी लाल कहैत छथि 'ई सहमति नहि, घेरेबन्दी अछि।' तामाक डिबियामे अंगूठा-पैड भेटैत अछि — देविका 'अंगूठा-पैडक मालिकाना' सूची बनबैत छथि। फूलकली देवीक कागचमे लिखल भेटैत अछि — 'अस्थायी शरणक बदला सीमा-विवाद स्थगित' — शारदा झा साक्षी दैत छथि जे फूलकली आपदाक बादक राति बरामदामे सुतल छलि। महावीर फूटि पड़ैत छथि — 'हमरा किएक नहि कहल गेल?' सत्यव्रत उत्तर दैत छथि 'कुलक भीतर जे नहि कहल जाए, ओही कुलक असली पाठ होइत अछि।' हरिचरण चिल्ला उठैत छथि 'गवाह रहब अपराध नहि!' — आरुणि उत्तर दैत छथि 'गवाह

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

रहब अपराध नहि, पर भूखक समय सहमति लिखब अपराधक देहरी अछि।' रामलखन स्वयं आबि अपन नाम दू ठाम (गवाह + 'समझाओल') देखि टूटि जाइत छथि — 'हम सोचैत रही बात बुझबैत छी, ई बुझब नहि जे हम सहमति बनबैत छी।' लाल कपड़ामे बँधल गड्डीमे अधूरा नक्शा भेटैत अछि — चन्ना गाछी, पोखर, खेतक सीमा लाल स्याहीसँ फेर खिंचल, बटुकनाथक त्रिशूल-जकाँ चिह्नसहित — सत्यव्रत एकरा 'हस्ताक्षरविहीन अधिकार-चिह्न' कहैत छथि। मीरा हरिचरणक 'डर लगल?' व्यंग्यक उत्तर दैत छथि — 'नहि, हम तोहर जेकाँ जल्दीमे सहमति नहि लिखब।' साँझ धरि संदूक खाली होइत अछि, मुदा कोठरी भारी भऽ जाइत अछि। सुरमणी देवी चेतावनी दैत छथि — 'संदूकक पेटक कथा आब गामक पेटमे जाएत, धीरे पचाउ,

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

नहि तँ जहर बनत।' कमला पुछैत छथि 'नानीक नामक कागच कखन पढ़ल जाएत?' मीरा उत्तर दैत छथि 'जखन अहाँ तैयार होएब, आ जखन हुनकर कथा तमाशा नहि, उपचार बनि सुनल जाएत।' अध्यायक अन्तमे खाली संदूक ठूँठ लग राखल जाइत अछि, मुदा सहमति-कापी अलग सुरक्षित रहैत अछि — 'आधा हाथ' उठौनिहार सभ आब पहरुआ बनि जाइत छथि।

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

मीरा नियम पढ़ैत छथि — पहिने प्रत्येक परिवारसँ अलग गवाही, फेर मिलान, फेर त्रुटिक सूची, तखन सामूहिक सुनवाई। सत्यव्रत मेहता जोड़ैत छथि — 'मिलान बदला नहि, सत्यक माप अछि।' कैलाश मंडलक बहिन रामपरी स्पष्ट करैत छथि — पिताक बीमारीक रातिमे 'बाबाक कृपा' लिखबाक कहि हाथ पकड़ि अंगूठा लगाओल गेल छल, सीमा-विवादक चर्चा तखन भेलहि नहि छल — देविका लिखैत छथि 'बीमारीक राति: स्वेच्छा संदिग्ध।' सकुनी खातुन बतबैत छथि — मायक चुप्पीकेँ 'पंचायत-वचन' लिखल गेल — 'चुप्पी केँ वचन।' कमला (फूलकली देवीक नातिन) आगू आबि तैयार होइत छथि — शारदा झा गवाही दैत छथि जे बरखाक राति फूलकली आश्रमक बरामदामे शरण लेलनि, मुदा सीमा-विवादक चर्चा नहि सुनल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

गेल — 'राहतक हिसाब सँ सीमा-स्थगन धरि छलाँग।' महावीर पाठक दुआरक खम्भा पकड़ि लैत छथि। हरिबल्लभ दासक पिता (मंजीरा-वादक) पढ़ि नहि सकैत छला, केवल गाबय जनैत छला — सत्यव्रत कहैत छथि 'नाम पढ़नाइ पर्याप्त नहि, चाल पढ़नाइ आवश्यक।' रामलखन सहाय स्वीकार करैत छथि — 'हम लोकक डर केँ मुलायम शब्दमे बाँधैत छलहुँ' — मीरा पुछैत छथि 'तूँ दबाव जानैत छलह?' — उत्तर 'देखिकऽ सेहो कहैत रही — डरू नहि, अंगूठा लगा दिअ।' हरिचरण तिवारी 'हम केवल संदेश पहुँचबैत छलहुँ' कहैत छथि — कमला उत्तर दैत छथि 'भूख, रोग आ बरखा बीच मना करब विकल्प नहि होइत।' भानु लाल लाउक मुनीमक बात बतबैत छथि — 'भरोसा सँ अंगूठा जल्दी पड़ैत अछि।' मिलानमे एकटा अत्यन्त

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

गंभीर तथ्य भेटैत अछि — एकटा नाम एहन जे व्यक्ति तिथि-विशेषपर अस्पतालमे मरि चुकल छला, तथापि हस्ताक्षर भेटल — सत्यव्रत विशेष चिह्न लगबाक निर्देश दैत छथि — मीरा कहैत छथि 'जे जीवित पर दबाव डालल गेल, ओ एक अपराध; जे मृतक सँ सहमति लिखाओल गेल, ओ स्मृतिक हत्या।' दुपहर धरि अठारह नाम मिलाओल जाइत छथि (पाँच दबाव, तीन चुप्पी-वचन, दू अस्थायी-सँ-स्थायी, चार पुनरावृत्त गवाह, एक मृतक, तीन अधूरा)। महावीर घोषणा करैत छथि — 'घर झूठ पर बचल रहए, तँ ओ पहिनहि बिकि चुकल' — गामक कागचक प्रति सार्वजनिक रजिस्टरमे रखबाक निर्णय। सुरमणी देवी मर्यादा जोड़ैत छथि — 'अपराधक पद्धति पढ़ल जाएत, पीड़ाक तमाशा नहि बनत।' साँझमे कैलाश, सकुनी, कमला

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

तीनू अपन-अपन परिवारक असली कथा एक स्वरमे दोहरबैत छथि — 'दवा लेलनि, मौन नहि। अनाज लेलनि, बाट नहि। शरण लेलीह, खेत नहि।' अध्यायक अन्तमे चन्द्रपालक नाम बिनु उच्चारणहि सभक मनमे उपस्थित भऽ जाइत अछि — सभ रेखा एकटा अँधार मध्यबिन्दु दिस मुड़ि रहल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

मीरा सफेद कपड़ामे मृतक/अनुपस्थित नामक सूची राखबाक कहैत छथि — 'मृतकक नाम पर कालिख नहि, उज्जर सावधानी चाही।' पहिल मामला जगदीश महतोक — सहमति-कापीक तिथि आ मंदिरक मृत्यु-रजिस्टरक तिथिमे बीस दिनक अन्तर भेटैत अछि। नाति परमानन्द जल-दानक पीतल गिलास लऽ आबि कहैत छथि — 'दादा अंगूठा कोना देलथि?' दोसर मामला सोना झाक — काशी गेल रहितो हुनकर 'आश्रम-उपस्थिति' लिखल छल, ओ बेटा हरिनारायणक पत्रसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओ चलि सकबामे असमर्थ छला। सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'पत्रमे देहक असमर्थता अछि, कापीमे देहक उपस्थिति। ई द्वन्द्व फाइल नहि, अपराध खोलैत अछि।' तेसर मामला रुक्मिणी देवीक — असली हस्ताक्षर (गोल लिपि) आ कापीक हस्ताक्षर

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

(कठोर पुरुष-हाथ) काँचक तख्तीपर मिलानसँ भिन्न सिद्ध होइत छथि। जेलमे बन्द एकटा गवाहक नाम आश्रमक बरामदामे उपस्थित लिखल भेटैत अछि — भीड़मे क्रोध उठैत अछि, सुरमणी देवी शांत राखैत छथि 'जाल कागच सँ बनल अछि, ओकरा हाथापाई सँ नहि, पढ़नाइ सँ फाड़ू।' महावीरक घरसँ पीतल-चिह्नित पुरान बक्सा आनल जाइत अछि — भीतर दान-रजिस्टर, सेवा-खाता, आ 'अधिकार-सूचना' पोथी, जकर बादक पन्ना काटल भेटैत अछि — 'दबायल अधिकारक मार्ग: पोथी अपूर्ण।' पोथीमे लिखल छल — 'जकरा बाबा अपन चिह्न देथि, से विवादमे मध्यस्थ मानल जाए' — आरुणि कहैत छथि 'मध्यस्थ जँ कागच लिखए, तँ ओ पंच नहि, पक्ष बनि जाइत अछि।' रामलखन सहाय स्वीकार करैत छथि — 'हम कहैत रही —

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

बाबाक मोहर अछि, अब बहस कऽ की लाभ? कतेको घरमे हम पन्ना पढ़लो नहि।' भानु लाल एकटा नकली 'छाह मोहर' दान करैत छथि, जकर अर्धचन्द्रक कोना असली मोहरसँ सूक्ष्म रूपसँ टेढ़ अछि — मृतकक तीन पन्नापर एहि टेढ़ चिन्हक मिलान भेटैत अछि। भिखारी लाल जमीन-नक्शा पसारि देखबैत छथि जे मृतक/अनुपस्थितक सीमापर बादमे तीन कीन-पत्र बनल, जकर क्रेता चन्द्रपालक भानिज, मुनीमक साला, लाउक साझीदार छथि — रेखा चन्द्रपालक गोदाम दिस मुड़ैत अछि। साँझ धरि नौ पन्नाक मृतक-सहमति सूची तैयार होइत अछि। महावीर बक्सा बन्द नहि करैत छथि, बल्कि लाल-सफेद धागा बान्हि ठूँठ लग राखि घोषित करैत छथि — 'जखन धरि जाँच पूरा नहि, ई बक्सा गाछीक पहरामे रहत।' अध्यायक

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

अन्तमे कैलाश, सकुनी, कमला अपन-अपन कथाक सारांश दोहराबैत छथि, आ आगामी जाँचक संकेत दैत अछि जे कीन-पत्र, मुनीमक बही, चन्द्रपालक हिसाब मिलाओल जायत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६० — गोदामक छाया

लाभ-सूत्रक लाल सूत मृतक-सहमति पन्नासभसँ निकलि चन्द्रपालक पुरान गोदाम (गामक लोक जकरा 'कागच निगलनिहार कोठरी' कहैत छथि) पर मिलैत अछि। अनन्या 'गोदाम-मिलान' शीर्षक लिखैत छथि, आरुणि चारि प्रश्न ('ककरा लाभ? ककरा आदेश? ककरा लोक? ककरा वस्तु?') लिखैत छथि। लाउक नौकर धीरू फाटक खोलैत छथि, स्वीकार करैत छथि — 'लाउ मालिक कहने छलाह, चन्द्रपाल बाबूक माल अछि, पर देखभाल हमर।' गोदाम भीतर देबालक नक्शा भेटैत अछि, जकर चिन्ह काल्हिक लाल सूतसँ मेल खाइत अछि — सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'एहि नक्शामे राजस्वक रेखा नहि, लालचक रेखा अछि।' महावीर पाठक बुझि जाइत छथि जे हुनकर घरक अधिकार-चिन्ह कब्जाक मोड़पर लगाओल गेल छल। संदूकमे बही सभ ('धान

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६० — गोदामक छाया

आगमन', 'कर्ज खाता', 'दान-व्यय') मे 'छाह मोहर: खर्च समायोजित' सन प्रविष्टि भेटैत अछि। जगदीश महतोक नामपर 'मृतक बाद सेवा; सीमा रोकू' लिखल भेटलापर परमानन्द टूटि जाइत छथि — 'दादाक मरल देह कैँ एतय सेवा कहल गेल।' दोसर संदूकमे मोहरदान (असली, दू नकल, तीन अधूरा) भेटैत अछि — नकलक अर्धचन्द्रक टेढ़ कोन मृतक-पन्नाक चिन्हसँ मेल खाइत अछि। धानक बोरा पाछाँ एकटा लकड़ीक पेटीमे कटल पन्ना, अभ्यास हस्ताक्षर, पहिनहिसँ मोहर लागल खाली कागच, आ अंगूठा-निशानवाला पट्टी भेटैत अछि, जाहिपर नामक बदला 'बूढ़', 'विधवा', 'दूर', 'मृत' सन श्रेणी लिखल छल — सुरमणी देवी कठोर कहैत छथि 'एतय मनुष्य नामसँ सेहो घटा देल गेल... शिकारक श्रेणी बनाओल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६० — गोदामक छाया

गेल।' पाछाँक छोट कोठरीमे कोटक जेबसँ आधा जड़ल कागच भेटैत अछि — 'चन्द्रपाल बाबूक मौखिक निर्देश: पन्ना बाहर नहि जाए' — लाउक हस्ताक्षरसहित। मीरा संयम राखैत छथि — 'मौखिक निर्देशक लिखित स्मरण, चन्द्रपालक सीधा हस्ताक्षर नहि, पर निर्देशक स्वीकार अछि।' धीरू दोसर बयानमे बतबैत छथि जे राति-राति गोदाममे बैसकी होइत छल — 'हमरा चाह देबाक कहल जाइत, भीतर हँसी होइत, बाहर लोक कानैत' — देविका एकरा 'गोदामक नैतिक नक्शा' कहैत छथि। रामलखन स्वीकार करैत छथि जे लाउ कहैत छला — 'मोहर देखाबी, लोक मानि लेत, जे नहि मानत, ओकर ऋणक बही देखाउ' — कर्ज, सेवा, दान, मोहर चारू रस्सी एके गलापर कसैत छल। सत्यव्रत काँपि स्वीकार करैत छथि — 'हम

अध्याय १६० — गोदामक छाया

कानूनक बरामदामे जे नहि सुनलहुँ, से ई गोदाम सुनैत रहल।' साँझ धरि प्राथमिक सूची तैयार होइत अछि। महावीर बक्सा आ प्रमाण मीराकेँ सौंपैत छथि — 'मोहरक पवित्रता ओकर पूजासँ नहि, ओकर दुरुपयोग उजागर करबासँ बाँचत।' अध्यायक अन्तमे रातिमे गाममे पहिल बेर चन्द्रपालक नाम डरक बदला प्रश्न बनि उच्चरित होइत अछि — 'चन्द्रपाल कतऽ अछि? ककरा पाछाँ नुकाएल अछि?'

अध्याय १६१ — फोनक कैद

मीरा नव पृष्ठ 'कागचसँ आगाँक गोहि' खोलैत छथि — 'जे गोहि पहिने खेतक सीमा चिबैत छल, ओ आब आवाज, डर आ संख्या चिबैत अछि।' बूढ़ मुवक्किल भयभीत आबि कहैत छथि — 'हमरा फोनमे कैद कऽ लेल गेल।' राति एकटा नकली अधिकारीक फोन आयल — घरसँ बाहर नहि निकलबाक, 'ककरो नहि कहू' क धमकी — बूढ़क पोता आधा बातचीत रिकॉर्ड कऽ लेने छला। आवाजमे बूढ़क मुकदमा संख्या, खेत-विवाद, बरामदाक तारीख-पाठ धरिक जानकारी छल — देविका कहैत छथि 'रद्दी बोराक गवाही आब फोनक फान्द बनि गेल।' आवाज 'सुरक्षित खाता' मे रकम माँगैत अछि — आधा रकम पहिनहि चलि गेल छल, पोता भोरे रोकि लेलनि। अनन्या चार स्तम्भ बनबैत छथि — भय, जानकारी, रकम, आवाजक अभिनय। सत्यव्रत मेहता कहैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६१ — फोनक कैद

छथि — 'एहि आवाजक पाछाँ केवल शहरक ठग नहि, एहिमे रेकर्ड-घरक गन्ध अछि।' लिपिक स्वीकार करैत छथि जे रेकर्ड-घरमे मोबाइलसँ फोटो खिंचाइत रहल छल — 'ऊपरसँ आदेश अछि।' धीरू फोनक एक छोट आवाज पहचानैत छथि — 'मधुकर' नामक व्यक्ति, जे लाउक गोदाममे चाह पीबैत छल। लाउ→चन्द्रपाल→गोदाम→फोन क सूत्र स्पष्ट होइत अछि। मीरा नियम बनबैत छथि — 'ककरो फोनक उत्तर अकेले नहि, गुप्त संख्या नहि देब, बैंकमे बिनु बुझने हस्तांतरण नहि।' सकुनी हरिचरण तिवारीक शहरपर दोष देबाक जल्दीबाजीपर संदेह करैत छथि। बूढ़क फोन फेर बजैत अछि — मीरा स्पीकरपर सुनैत छथि, आवाज पुछलापर 'शाखाक नाम, पद, लिखित आदेश' — आवाज घबरा कऽ लाइन काटि देत। बूढ़ पहिल बेर सोझ ठाढ़

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६१ — फोनक कैद

भऽ कहैत छथि — 'हम फोनमे कैद छलहुँ, आब आवाज भागल।' भिखारी लाल रेकर्ड-घरक प्रवेश-पुस्तकमे मधुकर प्रसादक नाम तीन बेर (लाउ, हरिचरण, 'चन्द्रपाल बाबूक प्रतिनिधि') भेटैत छथि। अनन्या लाल सूतमे नव सिरा (फोन, बैंक, मधुकर) जोड़ैत छथि — 'जमीनक ठगी आ फोनक ठगी दू अलग नदी नहि, एकहि कारी धारक दू मोड़ अछि।' महावीर पाठक कहैत छथि — 'मोहरक नकल करैत-करैत ओ सभ आवाजक मोहर बनबय सिखि गेल।' साँझ धरि गामक हर टोलमे नव पहरा (दू नेना, दू वयस्क) बनैत अछि। बूढ़ अपन फोन ठूँठपर राखि कहैत छथि — 'ई हमरा राति भरि जेल बनौलक, आब ई गवाही बनत।' अध्यायक अन्तमे खबरि आबैत अछि — मधुकर प्रसाद गायब, ओकर कोठरीमे फोन संख्या, मुकदमा संख्या, आ 'सी.

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६१ — फोनक कैद

बाबू' नामक बेर-बेर उल्लेख भेटल अछि — मीरा सावधान करैत छथि 'खबरि गवाही नहि, मुदा गवाही दिस जाएवाला धुआँ भऽ सकैत अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

भोरे चन्ना गाछी लग फोनक पहिल गोष्ठी होइत अछि — बूढ़ लोक सभ अपन-अपन फोन आनैत छथि। मीरा स्पष्ट करैत छथि — 'जखन कोनो स्वर अपने कें सरकार, अदालत, पुलिस, बैंक, धर्म, डॉक्टर वा गुरु कहि मनुष्यक विवेक पर अधिकार जमा लैत अछि, तखन ओ आवाजक मोहर लगबैत अछि।' आरुणि लिखैत छथि — 'आवाजक मोहर = भरोसाक नकल।' भिखारी लाल स्मरण करैत छथि जे मधुकर फाइल देखबाक बहानामे लोकक कमजोरी नापैत छल। अनन्या 'आवाज-जाल विवरण' रजिस्टर खोलैत छथि — 'बिजली विभाग', 'बैंक सुरक्षा', 'थाना' सन अलग-अलग नामसँ आयल फोन सभक चाल एके होइत अछि। सकुनी गवाही दैत छथि जे हरिचरणक लोककेँ मधुकरक बन्द कोठरीमे दिनमे जाइत देखलनि — मीरा सावधान करैत छथि 'देखल बात

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

लिखू, अनुमान अलग राखू।' मधुकरक कोठरीमे कैलेंडरपर तीन लाल-गोला तारीख भेटैत अछि, जे रेकर्ड-घरक प्रवेश-पुस्तकसँ मिलैत अछि — नीचाँ लिखल छल 'बूढ़, बाहर बेटा, खेत, खाता' — सुरमणी देवी कहैत छथि 'ई मनुष्यक विवरण नहि, शिकारक नाप अछि।' खाटक नीचाँ थैलीमे धमकीक तैयार वाक्य ('गिरफ्तारीक डर पहिने', 'अकेले राखू') आ आवाज-अभ्यासक रिकॉर्डर भेटैत अछि। हरिचरण तिवारी आबि 'गामक नाम खराब होएत' कहैत छथि — मीरा पुछैत छथि 'गामक नाम खराब डरसँ होइत अछि कि अपराधसँ?' सत्यव्रत मेहता कैलेंडरक तारीख हरिचरणक सोझाँ राखैत छथि — 'छाह प्रमाण नहि, दिशा होइत अछि।' साँझमे बैंकसँ खबरि आबैत अछि जे बूढ़क आधा रकम तीन हस्तांतरणमे चलि गेल, एक 'एम.

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

प्रसाद सेवा केन्द्र' नामपर — 'मधुकरक एम फेर उभरल।' रातिमे बूढ़ स्वयं धमकीक वाक्य पढ़ैत छथि, बच्चा सभ हर वाक्यक चाल पहचानैत छथि (जल्दी करू = समय-दबाव, ककरो नहि कहू = अकेलापन)। गामक नव शपथ बनैत अछि — कोनो फोनक धमकी कमसँ कम तीन कानमे सुनाओल जायत। हरिचरण भीड़सँ हटि धीमा फोनपर 'कागच हटाउ' कहैत छथि — सकुनी सुनि लैत छथि आ मीराकेँ सूचित करैत छथि। सत्यव्रत आदेश दैत छथि जे कोठरीक हर वस्तुक चार प्रति (चन्ना गाछी, रेकर्ड-घर, सुरमणी देवी, बच्चा सभक रजिस्टर) बनत। अध्यायक अन्तमे मीरा घोषित करैत छथि — 'जतय डर अकेला होइत अछि, ओतय गोहि नुकाइत अछि, जतय डर बाजल जाइत अछि, ओतय ओकर चमड़ा उतरैत अछि' — गाम आब केवल सुनय वाला

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

नहि, आवाज खोलि पढ़य वाला गाम बनि रहल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

भोरे भिखारी लाल तालाक कड़ीपर ताजा खरौँच पबैत छथि। मीरा घोषणा करैत छथि — 'कागच चोरि भऽ सकैत अछि, मुदा धूरिक पएर सेहो गवाही दैत अछि।' सत्रह नम्बर अलमारीक नीचाँ धूरिक पट्टी टूटल भेटैत अछि, संग नांगट पएरक निशान। एकटा खाली डोरी-वलय भेटैत अछि — कागच गायब, डोरी बाँचल। प्रवेश-पुस्तकक कोनपर मेटाओल दबाव-चिन्ह 'प...मा...' पढ़ल जाइत अछि — परमानन्द नामक नव लिपिकक नाम उभरैत अछि। परमानन्द पहिने इनकार करैत छथि, मुदा सत्य सोझाँ आबि स्वीकार करैत छथि — 'हमरा कहल गेल जे ऊपरसँ आदेश अछि... कहनिहार हरिचरण बाबूक लोक छल, मुदा फोनमे जे स्वर छल, ओ अपन केँ चन्द्रपाल बाबूक दफ्तर कहैत छल।' शेल्फक पाछाँ कार्बनक छाप भेटैत अछि — 'मृतक

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

प्रमाण-पत्र संलग्न', 'उत्तराधिकारी अनुपस्थित', आ 'एम. प्रसाद सेवा' क धुँधला चिन्ह। छापमे नामित 'मृतक' असलमे जीवित नागेश्वर झा छथि — बूढ़ मुवक्किल तुरंत पुष्टि करैत छथि। सत्यव्रत मेहता चौंकैत छथि — 'जीवित लोकक मृतक प्रमाण-पत्र! तखन जमीन, बैंक खाता, उत्तराधिकार सभ रस्ता खुजि जाइत अछि।' मीरा दू टोली बनबैत छथि — एक नागेश्वरक घर, एक बैंक। सकुनी नागेश्वरक घर जाइत छथि — बूढ़ नागेश्वर कहैत छथि 'जे लोक अपन नाम सुनि रहल अछि, ओकरा मृत के लिखलक?' पत्नी पुरान संदूकसँ जमीन-पंजी, बैंकक पास-बही देखबैत छथि। दोसर टोली बैंक जाइत अछि — शाखा-प्रबन्धक पहिने गोपनीयताक बहाना बनबैत छथि, मुदा सत्यव्रतक लिखित निवेदनक बाद 'एम.

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

प्रसाद सेवा' नामक बाहरी भुगतान-केन्द्रसँ छोट-छोट, बेर-बेर लेन-देनक जानकारी भेटैत अछि — देविका कहैत छथि 'ई गोहि एक बेरमे देह नहि खाइत, पहिने नान्हि-नान्हि टुकड़ा काटैत अछि, ताकि पीड़ा देरीसँ बुझाय।' साँझमे चारि कागच चन्ना गाछी लग राखल जाइत अछि। हरिचरण सभामे नहि आबैत छथि — मीरा केवल 'हरिचरण अनुपस्थित' लिखैत छथि। रातिमे अनन्या कार्बन-छापमे संख्या '१७/सी' देखैत छथि — आरुणि पुछैत छथि 'सत्रह नम्बर अलमारी आ सी बाबू?' अध्यायक अन्तमे गोहि नदीक कगारपर आधा जल आधा कादोमे देखार होइत अछि, कागचक फाटल रेखा जकाँ चमड़ीपर धार बनल — सुरमणी देवी कहैत छथि 'जे नाम जीवित अछि, ओ गोहिक पेट फाड़ि बाहर आबि जाइत अछि।'

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

मीरा घोषित करैत छथि — 'आइ हम सभ चन्द्रपालक घर नहि, ओकर छाहक पेट देखब।' सत्यव्रत मेहता पाँच कागच क्रममे लगबैत छथि — 'जँ क्रम मानब, तँ जाल बाजत।' रेकर्ड-घरक पुरान वर्णक्रमक अनुसार '१७/सी' खण्ड विवादित उत्तराधिकार आ मृतक-प्रमाणक कागच राखबाक ठाम अछि — 'हत्या-कागचक गल्ली।' परमानन्द फेर बजाओल जाइत छथि, एहि बेर कुर्सीपर बैसाकऽ — मीरा कहैत छथि 'जे लोक डरमे गलि रहल अछि, ओकरा ठाढ़ राखब तँ ओ झूठक सहारा लेत।' परमानन्द कहैत छथि — फोन करनिहार पहिने 'सी खण्ड' बजि तुरंत चुप भऽ गेल, आ पाछूसँ फुसफुसाहट 'नाम नहि बाजू, सी नहि कहू' सेहो सुनल गेल। सकुनी नागेश्वरक घरसँ एकटा रसीद ('चन्द्रपाल परामर्श केन्द्र') आनैत छथि —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

'दस्तावेज सत्यापन सहायता' क नामपर दू लोक आबि चुकल छला। पुरान लिपिक स्वीकार करैत छथि जे चन्द्रपालक दफ्तरमे 'सी-कक्ष' नामक कमरा अछि, जतय बन्धक-कागच-जाँच-पेंशन-मृत्यु-प्रमाण-जमीन-मापक बिचौलिया बैसैत छथि — 'सभ जनैत छल, मुदा जाननाइ सार्वजनिक सत्य नहि बनल छल।' सुरमणी देवी नव नियम बनबैत छथि — ''सभ जनैत अछि' आब रजिस्टरक बाहर नहि रहत।' टोली चन्द्रपालक दफ्तर जाइत अछि — सी-कक्षमे तीन मेज (फारम, मोहर, कम्प्यूटर) भेटैत अछि, कम्प्यूटर लग 'मृत/जीवित सत्यापन हेतु चिन्हारि आवश्यक' लिखल भेटैत अछि। मेजक दराजमे 'एम. प्रसाद सेवा' मुद्रित खाली लिफाफा भेटैत अछि — नौकर एकरा 'बाहरी एजेंसीक सामग्री' कहैत छथि, मीरा पुछैत छथि

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

'बाहरी एजेंसी भीतरक दराजमे किएक?' सत्यव्रत कम्प्यूटर नहि छूअबाक निर्देश दैत छथि — 'जे नहि छूब, से बाँचि सकैत अछि।' देबालपर एकटा शिकारी नक्शा भेटैत अछि (बूढ़ घर, बाहर बेटा, अकेल दम्पती, बन्धक भूमि सभ चिन्हित) — सुरमणी देवी कहैत छथि 'ई लोक सेवा नहि, शिकारक खेत बनौने अछि।' हरिचरण तमसाइत आबि 'गैरकानूनी प्रवेश' क आरोप लगबैत छथि — मीरा पुछैत छथि 'जीवित लोकक मृतक प्रमाण-पत्र बनब — कानूनक कोन भागमे अछि?' चन्द्रपाल स्वयं अनुपस्थित छथि, मुदा आधा पीबल चाहक कप भेटैत अछि — 'अनुपस्थित लोक कतेको बेर अपन आधा पीबल चाहसँ उपस्थित रहैत अछि।' प्रतीक्षा-कक्षक दू बूढ़ स्त्री पेंशन आ नाम कटबाक धमकीक बात कहैत छथि। साँझमे चन्ना

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

गाछी लग सभ प्रमाण पढ़ल जाइत अछि — कोनो निर्णय नहि, केवल क्रम, मुदा क्रम स्वयं फैसला बनय लागैत अछि। अध्यायक अन्तमे रातिमे नदीमे भँवर उठैत अछि — सुरमणी देवी कहैत छथि 'आब हम पेटक नाप लऽ रहल छी' — चन्द्रपाल अनुपस्थित अछि, मुदा ओकर छाह पकड़ा गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६५ — छायाक देह

अनन्या लिखैत छथि — 'देहक खोज छाहसँ शुरू।' मीरा चेतावनी दैत छथि — 'आइ कोनो घर पर धावा नहि, ओ लोक मात्र नहि, व्यवस्थाक देह अछि।' सत्यव्रत मेहता सुझाव दैत छथि जे 'सी' कोनो कक्ष, खण्ड, कोड, वा नामक अक्षर भऽ सकैत अछि। टोली दफ्तरक पिछुआरी गली जाइत अछि — एकटा पुरान 'संग्रह-कक्ष' दरबाजापर धूरिमे 'सी' चमकैत अछि। परमानन्द बतबैत छथि — भीतर सोझे कियो नहि जाइत, पन्ना बाहर आबैत, भीतरसँ खाली लिफाफा घुरैत छल — सुरमणी देवी कहैत छथि 'जतय खाली लिफाफा भारी कहल जाय, बुझू ओतय अदृश्य घूसक वजन अछि।' नागेश्वर झा (जीवित 'मृतक') स्वयं आबि रोशनदानक रस्ता बतबैत छथि — 'हमरा एक बेर मृतक घोषित कयल गेल, मुदा मृत लोकक कान बहुत किछु

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६५ — छायाक देह

सुनैत अछि।' रोशनदानसँ भीतर देखलापर उज्जर धारीवाला पेटीपर 'सी-१७' लिखल भेटैत अछि — अनन्या बुझैत छथि '१७/सी उनटल क्रममे सी-१७।' मीरा दरबाजा नहि तोड़बाक निर्णय लैत छथि — 'हम दरबाजाक सोझाँ पाठ करब, जे भीतर अछि, ओकर नाम बाहर पुकारब।' गलीमे नामक पाठ होइत अछि — मधुकर प्रसादक नाम तेसर बेर पुकारलापर भीतर किछु खसैक आवाज आबैत अछि। एकटा नेना मधुकरक कोठरीसँ भेटल रसीद अनैत छथि — 'ढुलाइ: चारि पेटी, राति पहर, गन्तव्य — सी गोदाम' — तिथि नागेश्वरक मृतक-प्रमाणक समयक। परमानन्द नाम बतबैत छथि — 'चन्द्रपालक लोक — धरनी महतो' (पूर्व कबाड़ी) — सुरमणी देवी कहैत छथि 'कबाड़ी नहि, नामक हड्डी कीननिहार।' पुरान तौल-काँटा लग कागचक रेशा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६५ — छायाक देह

भेटैत अछि, आ 'मूल प्रति सुरक्षित' लिखल एकटा कागचक टुकड़ा — सत्यव्रत बुझैत छथि जे असली पेटी कतहु बाँचल भऽ सकैत अछि। मीरा रजिस्टरक तीन प्रति (चन्ना गाछी, सत्यव्रत, आ एकटा विधवाक घर) राखबाक निर्णय लैत छथि — 'कमजोरी सभसँ सुरक्षित परदा होइत अछि।' साँझमे बूढ़ मल्लाह बतबैत छथि जे धरनी महतो नदी पार 'पुरान तेतरिक घाट' क आधा धँसल कोठी-बखारीमे राति पेटी ढोइत छल, जतय रातिमे लालटेन देखल जाइत अछि — अनन्या लिखैत छथि 'तेतरि घाट: सम्भावित सी गोदाम।' मीरा राति जाँच रोकैत छथि — 'हम उजासमे जाएब।' अध्यायक अन्तमे नदीक कगारपर गोहि तेतरि घाट दिस मुँह करि स्थिर रहैत अछि — सत्यव्रत सचेत करैत छथि 'हम गोहिक इशारा नहि लिखब, हम

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६५ — छायाक देह

मल्लाहक बयान लिखब।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

भोरे तेतरि घाट दिस पूरा गाम चलैत अछि। सत्यव्रत मेहता नियम दोहरबैत छथि — 'घाट पर जे भेटत, ओकरा उठेबासँ पहिने देखल जाएत, देखलासँ पहिने चिन्हित।' सुरमणी देवी नोनक पोटली राखैत छथि — नमीक पुरानताक जाँचक लेल। बाटपर भारी पेटी घिसिटएबाक चिन्ह भेटैत अछि — 'ताजा नहि, मुदा बरखा बादक।' पुरान कोठी-बखारीपर जंग लागल ताला भेटैत अछि। बूढ़ मल्लाह गवाही दैत छथि — पछिला मास राति दू बेर लालटेन देखल गेल, नाव नहि लगल, 'पानि काटल गेल, कियो घाटसँ नहि, निचला धारसँ आयल।' पंचायतक साक्षी सहित ताला खोलल जाइत अछि — भीतर गील कागच, पुरान बोरा, आ 'सी-१७' लाल खड़ियासँ लिखल पेटी भेटैत अछि। पेटी खोललापर परत-दर-परत लिफाफा भेटैत छथि —

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

नागेश्वर झाक मूल बन्धक-पत्र, धरनी महतोक बयानक मसौदा, दू विधवाक जमीन-सहमति (एकहि हाथसँ बनल हस्ताक्षर)। दू वृद्ध स्त्री अपन नाम आ अंगूठाक गलत वर्तनी पहचानैत छथि — अनन्या लिखैत छथि 'गलत वर्तनी: नकली निकटता।' प्लास्टिकक डिब्बामे बूढ़ लोकक 'अकेला', 'बेटा बाहर', 'डर जल्दी' सन शिकार-विवरण भेटैत अछि — आरुणि क्रोधित होइत छथि, मीरा स्पष्ट करैत छथि 'अकेलापन अपराधक अवसर नहि, समाजक विफलता।' दराजमे आवाज-रिकॉर्डरक संग फोनक धमकीक तैयार वाक्य ('अहाँक आधार दुरुपयोगमे भेटल') भेटैत अछि। पाछाँक देबालमे लोहाक डिब्बा भेटैत अछि — भीतर पाँच लाल कपड़ामे बान्हल बही: नाम-रकम, डर-संकेत, चिन्ह-कोड (क, ख, सी, गो, इ — 'इ' = तेतरि

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

घाट), 'मृत तैयार' लिखल नामक सूची, आ पाँचम बहीमे 'नब ध्वनि सूची तैयार, अगिला खेप: नदी पार।' हरिचरण तिवारी पेटी खुजलाक बादे पहुँचि आपत्ति करैत छथि — सत्यव्रत कहैत छथि 'तूँ देरीसँ आयलह, मुदा ठीक समय पर बजलह।' मीराक पुछलापर हरिचरण 'सी-१७ पेटी', 'मृत तैयार', 'नब ध्वनि सूची' तीनूपर चुप रहैत छथि — देविका चुप्पीक तीन रङ्ग (बचाव, भय, सम्बन्ध) पहचानैत छथि। साँझमे कोठी-बखारी सामूहिक रूपसँ सील कएल जाइत अछि। रातिमे चन्ना गाछी लग पाँच बहीक विवरण पढ़ल जाइत अछि, पीड़ितक निजता बचाकऽ। अध्यायक अन्तमे नदी शान्त अछि, गोहि देखार नहि होइत — सुरमणी देवी कहैत छथि 'पेट फाटि रहल अछि, जे बही बाहर आबि गेल, ओ पचत नहि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज

मीरा टोलीकेँ नदी पार जायबाक कहैत छथि, जुलूस नहि — 'क्रमसँ पकड़ल जाएत।' सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'ई लोक कागचक नकली प्रति बनबैत रहल, आब आवाजक नकली उपस्थिति बनबैत अछि।' आरुणि 'ध्वनि-साक्ष्य' क श्रेणी बनबैत छथि (देह, समय, क्रम, लेनदेन, मौन)। नाव पार करैत काल आरुणिक फोनपर अनचिन्ह कॉल आबैत अछि — 'अहाँक नाम जाँचमे अछि, ककरो नहि कहू' — मीरा सबहक सोझाँ स्पीकरपर सुनबाक इशारा करैत छथि। आरुणिक 'हमर पिता के?' प्रश्नपर आवाज चुप भऽ जाइत अछि — देविका लिखैत छथि 'परिवारक नाम पर विराम: सूची अपूर्ण।' किनार पर मधुकान्त झा आ कमला देवीक घरमे बूढ़ी कानि कऽ बतबैत छथि जे काल्हि नकली बेटाक आवाज आबि 'ककरो नहि कहियौ' कहलक — पति

अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज

कहैत छथि 'स्वर बेटाक जेकाँ, मुदा साँस ओकर नहि, हमर बेटा बात करैत बीच-बीचमे हँसैत अछि, ई आवाज सोझे डरबैत छल।' रकम तीन बेरमे (छोट, मझोल, पूरा जमा-पूँजी) गेल — सत्यव्रत कहैत छथि 'विश्वासक ताला पहिने छोट चाबीसँ खोलल जाइत अछि।' घरक पाछाँसँ भागय चाहैत एकटा युवक (नवल) पकड़ल जाइत छथि, जकर जेबमे दू सिम आ 'माय कानत', 'बाप जल्दी टूटत' सन नोट भेटैत अछि — नवल तीन बचावक सीढ़ी चढ़ैत छथि (अज्ञान, सीमा, दूरी)। नवल नदी पारक 'जनसेवा केन्द्र' मे काज करैत छला — केन्द्र सील कएल जाइत अछि, जतय आधार-प्रति, पेंशन-खाता, आवाज-नमूना ('बेटा, पुलिस, बैंक, कस्टम, अदालत') भेटैत अछि। माइक्रोफोन लगक कागचपर 'माय, जल्दी करू, हम फँसि गेल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज

छी' लिखल भेटैत अछि — कमला देवी चीत्कार करैत छथि 'एहए कहलक!' मीरा कहैत छथि 'आब ई वाक्य ओकर नहि रहल, आब ई प्रमाण अछि।' नवल स्वीकार करैत छथि — 'हम केवल डेटा पठबैत छलहुँ' — सत्यव्रत कठोर उत्तर दैत छथि 'एतय डेटा नहि, घरक साँस पठाओल गेल।' साँझमे केन्द्र सील। रातिमे कमला देवीक बेटाक असली आवाज मल्लाहक फोनपर परदेशसँ आबि माताकेँ आश्वस्त करैत अछि। सुरमणी देवी नोनक पोटली माटिपर छिटकैत छथि — 'आवाजक नमी सुखाउ।' अध्यायक अन्तमे बूढ़बा भूतक कान (मुँह नहि) चमकैत देखार होइत अछि — 'नदी पारक आवाज पकड़ायल, असली गला एखन दूर।'

अध्याय १६८ — शहरक गला

मीरा प्रश्न रखैत छथि — 'नकली गला तँ मशीन बना सकैत अछि, मुदा सही घर, सही बुढ़ापा, सही जमीन-विवाद — ई सभ सूचना कतयसँ आयल?' अनन्या लिखैत छथि — 'गला शहरक, नाम गामक, बीचमे दलालक पथ।' नरेश नामक जनसेवा-केन्द्र-कर्मी काँपैत आबि स्वीकार करैत छथि जे दू बरख पहिने 'एम. सर्विसेज' नामक व्यक्ति सिस्टम मुफ्त साफ करबाक बहानामे पुरान कागच स्कैन कऽ बिनु पूछने प्रति शहर लऽ गेल छल — रसीदपर 'मधुकरक संगी' लिखल छल। भिखारी लाल नरेशक बैगमे 'ग्राम सम्पर्क सूची: वरिष्ठ नागरिक प्राथमिक' नामक पन्ना पबैत छथि — सुरमणी देवी कहैत छथि 'एहि लोक कैँ बुजुर्ग नहि, शिकार देखाइ पड़ल।' शहर जाइबाक निर्णय होइत अछि, सुरमणी देवी गाममे पहरा दैत

अध्याय १६८ — शहरक गला

रुकि जाइत छथि। नरेशद्वारा बतायल पतापर 'मित्र डेटा समाधान' (पहिने 'एम. सर्विसेज') नामक दफ्तर भेटैत अछि, जतय भीतरसँ रिकॉर्ड आ जीवन्त आवाज दुनूक मिश्रण सुनाइ दैत अछि — 'अहाँक विरुद्ध वारंट जारी...' बूढ़ मुवक्किल भीतरसँ आयल आवाजकेँ चिन्हैत छथि — 'हमरा कैद करनिहार गला एतय अछि।' भिखारी लाल 'सी-ग्रुप: ग्रामीण वृद्ध' लिखल डिब्बा देखैत छथि — अदालतक 'सी-कक्ष' सँ मेल। भीतरसँ अनुपस्थित मालिकक पहरेदार-जकाँ एकटा युवक निकलैत छथि, गोपनीयताक बहाना बनबैत छथि — मीरा उत्तर दैत छथि 'गोपनीयता पीड़ितक अधिकार अछि, अपराधीक ढाल नहि।' बूढ़ मुवक्किल साँसक क्रमसँ आवाज पहचानैत छथि। मेजक नीचाँ 'आवाज-बैच ३' आ 'ग्राम कथा संकेत' लिखल

अध्याय १६८ — शहरक गला

रजिस्टर भेटैत अछि, गवाहक सोझाँ अस्तित्व दर्ज कएल जाइत अछि, मुदा खोलल नहि जाइत। स्थानीय पुलिस पहिने 'साधारण साइबर मामला' कहि टारय चाहैत छथि, मुदा सत्यव्रत मेहताक क्रमबद्ध विवरणसँ मामला 'संगठित नाम-लूट' सिद्ध होइत अछि। कम्प्यूटरपर 'चन्द्र २: पुरान फाइल सक्रिय' पंक्ति भेटैत अछि — सत्यव्रत सावधान करैत छथि 'चन्द्र २ चन्द्रपाल भऽ सकैत अछि, नहियो भऽ सकैत अछि, हम अनुमान कें निर्णय नहि बनाएब।' साँझमे टोली गाम घुरैत अछि — मीरा कहैत छथि 'शहरमे गला भेटल, देह आधा भेटल, छाह फेर चन्द्र नाम दिस गेल।' रातिमे नदीक कगारपर गोहि एहि बेर मुँह शहर दिस, पूछार गामक कादोमे — 'अपराधक देह दू ठाम बँटल।' अध्यायक अन्तमे कथाक अगिला

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६८ — शहरक गला

दरबाजा 'चन्द्र २' बनि ठाढ़ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

'चन्द्र २' नाम राति भरि सभक मोनमे टँगल रहैत अछि। मीरा कहैत छथि — 'जे अपराध अपन पुरान मुँह नुकाबय चाहैत अछि, ओ प्रायः आधा नाम राखैत अछि, ताकि चिन्हारियो रहय आ बचावो।' देविका जब्त सूचीसँ 'चन्द्र सेवा कार्यालय' नामक तेसर स्थान छाँटैत छथि, शहरक पुरान तरकारी-मण्डीक पाछाँ। भीतर बूढ़ लोकक भीड़, आ एकटा बाबू फुसफुसाइत छथि — 'घरमे ककरो नहि कहब, नहि तँ काम रुकि जाएत' — सत्यव्रत मेहता एकरा 'एकान्त निर्माण: अपराधक पहिल क्रिया' लिखैत छथि। अनन्या एकटा फाइल 'वृद्ध सहायता, जमीन विवाद, परदेशी पुत्र' शीर्षकसँ देखैत छथि, जाहिमे 'भावनात्मक संकेत' खाँचा (माय जल्दी कानत, विधवा जमीन पर असुरक्षित) भेटैत अछि। काउंटर पाछाँ बैसल

अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

चन्द्रमोहन अपनाकेँ सेवाभावी बतबैत छथि, मुदा मीराक 'चन्द्र २' उल्लेखसँ पहिनहि प्रतिक्रिया दैत छथि, जे संदेह जगबैत अछि। दराजमे मोहर, खाली स्टाम्प, आ दू मोबाइल भेटैत अछि, जाहिमे सम्पर्क 'सी-ग्रुप', 'मधुकर', 'चन्द्र १' भेटैत अछि। पछिला कोठरीमे आवाज-रिकॉर्डर आ 'पुरान विश्वासक नाम प्रयोग' शीर्षकसँ 'बटुक बाबू, पण्डितजी, चन्द्रपाल काका, अदालत बाबू' सूची भेटैत अछि — चन्द्रपालक नाम फोनक धमकीमे विश्वासक नकली मुद्रा बनि प्रयुक्त होइत रहल छल। बाहर भीड़ जमा भऽ अपन-अपन ठगाइक कथा सुनबैत अछि — मीरा भीड़-निर्णय रोकैत छथि। दराजक दोसर मोबाइलमे एकटा आवाज-संदेश भेटैत अछि — 'जकरा अदालत खाइत रहल, ओकरा फोन जल्दी खाएत' —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

सत्यव्रत बुझैत छथि 'ई अपराध केवल नब तकनीकक नहि, पुरान अन्यायक ब्याज अछि।' चन्द्रमोहन दबावमे स्वीकार करैत छथि — 'हम अकेला नहि, ऊपरसँ सूची अबैत छल' — पुछलापर 'ऊपर के?' अन्ततः बजैत छथि 'चन्द्र १।' भिखारी लाल एकटा 'पुरान भरोसा-सूची' नामक बही भेटबैत छथि, जाहिमे 'चन्ना गाछी क्षेत्र' लाल रेखासँ चिन्हित अछि — अनन्या चौंकैत छथि 'ओ सभ हमरा सभकेँ पहिनहिसँ पढ़ि रहल छल।' मीरा बही सील करबैत छथि, आ कार्यालयपर 'जाँचाधीन' क पर्ची सटाओल जाइत अछि। साँझमे चन्ना गाछी लग सार्वजनिक पाठ होइत अछि — 'अपराधक मुँह लोक होइत अछि, मुदा ओकर देह कागच, आवाज, डर, सेवा, पेंशन, अदालत आ बैंकसँ बनैत अछि।' सुरमणी देवी नोन छिटकैत कहैत छथि —

अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

'चन्द्र दू भेटल, आब चन्द्र एक ताकू।' अध्यायक अन्तमे नदीमे गोहिक केवल आँखि चमकैत देखार होइत अछि — अनन्या लिखैत छथि 'चन्द्र २ खुजल; चन्द्र १ एखन अन्हारक भीतर।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at

https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

मीरा सावधान करैत छथि — 'नामक खोल खोलबाक चाही, नामक पूजा नहि।' सत्यव्रत मेहता 'पुरान भरोसा-सूची' मे 'पहिल छननी: न्याय-प्रतीक्षारत परिवार' पढ़ैत छथि — 'डिजिटल अरेस्टक असली हथकड़ी मोबाइलमे नहि, पुरान डरमे अछि।' चन्द्रमोहन स्वीकार करैत छथि जे सूची, आवाज-नमूना, कहबाक पाँति सभ बाहरसँ अबैत छल, ओ पूछैत नहि छला — भिखारी लाल कहैत छथि 'जे नहि पूछैत, ओ उत्तरक भागीदार बनैत अछि।' बहीमे एकटा पातपर केवल चारि शब्द भेटैत अछि — 'चन्द्र १: पितृ-स्वर' — सत्यव्रत बुझैत छथि जे ई कोनो व्यक्ति नहि, 'पिता, काका, बाबू, पण्डित, अदालत' सन शब्दक आवाजी वेशभूषा अछि। बहीमे पता भेटैत अछि — 'पुरान टाइपिंग गल्ली, कमरा सात' — जतय वृद्ध

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

टाइपिस्ट मोहनलाल झा भेटैत छथि, टेबलपर मोहर, स्कैनर, माइक्रोफोन। टेबलपर 'माताक मोन पर दबाव: पाँच चरण' शीर्षकवाला पन्ना भेटैत अछि (अकेला कर, पुरान केस मोन करा, पुत्रक नाम लऽ, अधिकारक आवाज दे, तुरन्त धन माँग) — देविका कहैत छथि 'ई तँ अपराधक पाठशाला अछि।' आरुणि कमला देवीक बयान पढ़ि सुनबैत छथि, मोहनलाल टूटि जाइत छथि — 'हम नहि जनैत छलहुँ जे लोक एतेक टूटि जाइत अछि।' दराजसँ लाल फाइल 'सी-एक' भेटैत अछि — भीतर पुरान पण्डितक प्रवचन, अदालतक घोषणा, बैंक-प्रबन्धकक बोली, आ चन्द्रपालक पुरान जनसभा-भाषणक अंश — 'चन्द्र १' क अर्थ स्पष्ट होइत अछि: पुरान अधिकारक आवाज सभक मिश्रित मुखौटा। सत्यव्रत कहैत छथि — 'चन्द्रपाल जीवित हो

अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

अथवा मृत, ओकर आवाजक प्रताप एखनहुँ लोक कैँ बान्हि रहल अछि।' मोहनलाल कहैत छथि — 'नाम बिकैत अछि बाबू, जे नाम पर लोक माथ झुकबैत अछि, ओकर स्वर मिलाबयमे बेसी दाम भेटैत अछि।' मीरा उत्तर दैत छथि — 'प्रतिष्ठा जखन अन्यायक ढाल बनि जाय, तखन ओ मृतकसँ सेहो खतरनाक होइत अछि।' मोहनलाल अन्ततः स्वीकार करैत छथि जे चन्द्रमोहन, बैंक दलाल, पुरान मोहरनवीस, आ 'मधुकर बाबू' क बीच जाल चलैत छल, आ मधुकर कहैत छला 'पुरान गाछीक क्षेत्र पहिने' — डोरी फेर चन्ना गाछी दिस घुरैत अछि। साँझमे कमरा सात सील होइत अछि, मुदा मीरा जनताक सोझाँ पूरा अपराध-पद्धति पढ़ि सुनबैत छथि। सुरमणी देवी कहैत छथि — 'जे मन्त्र बुझल भऽ जाय, ओकर डर आधा मरि जाइत अछि'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

— ठूँठपर नाम नहि, चेतावनी टाँगल जाइत अछि। कमला देवी आ अनेक स्त्री सामूहिक रूपसँ अपन-अपन ठगीक कथा साझा करैत छथि — 'डिजिटल अरेस्टक जाल लोक सभक सामूहिक बोलीमे फाटय लागल।' सत्यव्रत लिखैत छथि — 'समुदाय जँ सुनय लागय, तँ झूठक स्वर फाटि जाइत अछि' — मीरा जोड़ैत छथि 'सुननाइ सुरक्षा अछि।' अध्यायक अन्तमे नदीमे गोहि चन्द्रमाक प्रतिबिम्ब काटैत अछि, टूटैत-जुड़ैत — अनन्या लिखैत छथि 'चन्द्र एक लोक नहि, अधिकारक नकली प्रकाश अछि, ओकर खोल खुजल, मुदा असली राति एखन बाँकी।'

अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

मीरा घोषणा करैत छथि — 'एहि ठाम कोनो सरकारी फैसला नहि होएत, नाम सुनल जाएत, डर सुनल जाएत, जे बाजय नहि चाहय, ओकर मौन सेहो दर्ज होएत।' अनन्या ठूँठक जड़ि लग लाल सूतक घेरा बनबैत छथि, तीन पाथर (नाम, डर, गवाही) राखैत छथि। कमला देवी पहिल गवाही दैत छथि — 'अपराधी हमरासँ मौन माँगने छल, बेटाक सुरक्षा नहि' — 'मौन ठगक पहिल कोठरी।' किसान लक्ष्मण यादव जमीन-नक्शाक बदलावक बात कहैत छथि — 'कागचमे जखन धरती घटैत अछि, किसानक छाती सेहो घटैत अछि।' परदेशी युवक कहैत छथि — 'हम मायकेँ फोन कम करैत छलहुँ, ठग ओकरा फोन बेसी केलक, घरक असली आवाज दूर होइत अछि तँ नकली आवाज ओकर जगह घुसि जाइत अछि।' पुरान मोहरनवीस शिवनारायण मिश्र स्वीकार करैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

छथि जे ओ मोहनलालक संग धमकी-नमूना लिखैत छला — ओ प्रायश्चित्तस्वरूप 'बचाव-पत्र' (लोकभाषामे सुरक्षा-निर्देश) लिखबाक प्रस्ताव दैत छथि। एकटा नाम-अज्ञात घूँघटधारी स्त्री कहैत छथि — पतिक मृत्युक बाद बैंक-दलाल दबाव देलक 'हस्ताक्षर करू, नहि तँ बेटीक विवाह रुकत' — बच्चा सभ नामक जगह 'देहरी पर दबाव' लिखैत छथि। देविका कहैत छथि — 'कतेको स्त्रीक अपराधक अभिलेखमे नाम नहि, केवल अंगूठा रहैत अछि, असलमे ओ अंगूठा दबावक छाप होइत अछि।' आरुणि अपराधक पद्धति चार शब्दमे संक्षेपित करैत छथि — एकान्त, अधिकार, हड़बड़ी, मौन — 'एहि चारिक जोड़सँ गोहिक मुँह बनैत अछि।' सत्यव्रत मेहता घेराक भीतर आबि कहैत छथि — 'समाजक बेर-बेर दोहराओल भय

अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

स्वयं प्रमाणक प्रारम्भ अछि।' भिखारी लाल अपन चाबी लाल सूतमे बान्हि ठूँठपर टाँगैत छथि — 'ई चाबी फाइलक नहि, सुननाइक।' साँझमे मधुकर बाबूक नाम फेर उठैत अछि — पंद्रह बरख पहिने गामक सर्वेमे आयल, चन्द्रपालक पुरान लोकक संग देखल गेल छला — मीरा गवाही आ अफवाहमे भेद रखबाक नियम दोहरबैत छथि। अनन्या तीन रंगक धागा बाँटैत छथि — लाल (स्वयं देखल), पीयर (सुनल), कारी (डर/अनुमान) — साँझ धरि 'लाल कम, पीयर बेसी, कारी सभसँ बेसी' — देविका कहैत छथि 'हमर समाजमे प्रमाणसँ बेसी डर जमा अछि।' कमला देवी घर जाइत काल मोबाइल खुल्ला हाथमे राखैत छथि — 'आब जँ फोन पर डर आओत, हम पहिने नामक पहरुआ केँ बजाएब।' सत्यव्रत रातिमे लिखैत छथि — 'कोनो

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

फैसला नहि, मुदा भयक व्याकरण खुजल, कोनो न्यायाधीश नहि, मुदा सामूहिक कान।' अध्यायक अन्तमे चिरई ठूँठपर पीयर धागा कारी धागाक बीच फँसा दैत अछि — गोहि जलमे स्थिर रहैत अछि, नामक उजासमे ओकर अन्हार घटैत जकाँ बुझाइत अछि, मुदा नदी अखनो शान्त नहि भेल अछि — मधुकर बाबूक छाह स्पष्ट दिशामे बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

दोसरा दिन गिट्ठऽ-पाठ शुरू होइत अछि। मीरा तीन श्रेणी स्पष्ट करैत छथि — लाल (आँखिसँ देखल), पीयर (कानसँ सुनल), कारी (भीतरक डर)। अनन्या तीन टोकरी राखैत छथि — 'गिट्ठऽ तखन खोलब जखन बाजनिहार स्वयं कहत जे आब डर ढीला भऽ गेल।' आरुणि पहिल लाल गिट्ठऽ (लक्ष्मण यादवक खेतक नाप) पढ़ैत छथि — कागच सभ आपसमे बिरोधाभासी छथि — सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'अदालतमे ई तुलना बरखों बाद होइत अछि, समाजमे ई आइ भऽ सकैत अछि।' दोसर लाल गिट्ठऽ (अस्पताल-भर्ती बूढ़ स्त्रीक अंगूठाक बदनामी) मे तारीख मेल खाइत अछि, मुदा समय अलग — 'एहि गिट्ठऽमे अपराधक छाह गाढ़ अछि।' पीयर गिट्ठऽ बेसी अछि — मधुकर बाबूक सर्वे-यात्रा, चन्द्रपालक लोकक संग देखल जायब

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

आदिक सुनल कथा — मीरा हर कथनक पाछाँ पुछैत छथि 'अहाँ देखलहुँ? के कहलक? तारीख मोन अछि?' शिवनारायण मिश्र आइ अपन 'बचाव-पत्र' लऽ आबैत छथि — सरल भाषामे सुरक्षा-निर्देश (ककरो नहि कहू सुनितहि दोसरा कें कहू, तुरन्त पाइ माँगय तँ रोकू, असली थानासँ अलग सत्यापन करू)। कमला देवी जोड़ैत छथि — 'माय सभ अपन बेटा-बेटीकें पहिनहि गुप्त संकेत-शब्द बताबथि।' कारी गिट्ठऽ सभमे केवल छाह, कोनो तारीख-नाम नहि — एकटा युवक कहैत छथि 'हमरा कोनो फोन नहि आयल, मुदा पुलिसक नाम सुनिते देह काँपैत अछि' — मीरा कहैत छथि 'ई व्यक्तिगत डर नहि, इतिहासक बाँचल काँपनि अछि।' सत्यव्रत लिखैत छथि — 'राज्यक भाषा जखन भय बनि जमा होय, तखन अपराधी ओकर नकली छाह

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

बेचैत अछि।' भिखारी लाल धूरिक उपमा दैत छथि — 'कारी गिट्ठऽ सेहो धूरि जेकाँ अछि, धीरेसँ झाड़ब, झपट्टा मारब तँ अक्षर उड़ि जाएत।' मीरा 'डरक नक्शा' बनाबय क निर्णय लैत छथि। एकटा छोट नेना फुलेसर पुछैत अछि — बाबूजीक 'पढ़ू नहि तँ मजदूरी कर' धमकीक गिट्ठऽ कोन रंगक? — देविका कहैत छथि 'ई कारी सेहो, लाल सेहो।' साँझसँ पहिने वृद्ध पंचायत-सेवक रामकेवल पासवान पुरान पंजी लऽ आबैत छथि — जाहिमे 'मधुकर मिश्र, विशेष सर्वे सहायक' क साफ हस्ताक्षर, पन्द्रह बरख पुरान — रामकेवल बतबैत छथि जे ओ सर्वे बूढ़-विधवा-परदेशी परिवार सभपर निशान लगबैत छल। मीरा पंजीक प्रतिलिपि बनबैत मूल सुरक्षित रखैत छथि। अनन्या लाल धागाक नव भारी गिट्ठऽ बाँधैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

छथि — 'आब मधुकर बाबू छाह नहि, पन्ना पर प्रवेश कऽ गेलाह।' अध्यायक अन्तमे गोहिक अस्थिर चालि नदीमे देखार होइत अछि, लाल सूत काँपैत अछि टूटैत नहि — सत्यव्रत लिखैत छथि 'लाल सत्यक आरम्भ, पीयर स्मृतिक बाट, कारी भयक खदान... तीनूकेँ मिलाओल बिनु अपराधी पकड़ल नहि जाएत।' मधुकरक नामक पन्ना-प्रवेशसँ नव खतराक संकेत — जकर नाम पन्ना पर आबि गेल, ओ पन्ना गुम करबाक प्रयत्न अवश्य करत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७३ — पंजीक पहरा

रामकेवल पासवान पंजी थैलीमे सुरक्षित लऽ आबैत छथि। मीरा घोषित करैत छथि — 'आइ गवाही नहि, पहरा पहिने... तीन प्रतिलिपि बनत।' सत्यव्रत मेहता खाली लिफाफापर लिखैत छथि — 'रामकेवल पंजी: मूल देखल, प्रतिलिपि बनल, पहरा आरम्भ।' भिखारी लाल अभिलेख-सम्भारक विधि सिखबैत छथि। पंजीमे 'विशेष ध्यान' शब्दक कातमे घर-नाम, खेत-संख्या, मुकदमाक स्थिति, विधवा-बूढ़-कर्जदारक निशान भेटैत अछि। रामकेवल बतबैत छथि — 'मधुकर बाबू कहने छलाह — सरकारी सुविधा पहुँचेबाक लेल... बादमे लाभ नहि, नोटिस भेटल, फोन, बन्धकक डर।' देविका लिखैत छथि — 'सुविधाक सूची जँ पहरा बिनु बनत, तकरा अपराधी हथियार बना सकैत अछि।' सत्यव्रत पंजीक तारीख अदालतक फाइलसँ मिलाबय

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७३ — पंजीक पहरा

लगैत छथि। नीलमणि नामक युवक कम्प्यूटर-स्कैनक प्रस्ताव रखैत छथि, पासवर्ड-सुरक्षासहित। दुपहरमे चन्द्रपालक लोक ध्रुवेश आबि पंजी पंचायत-कार्यालयमे जमा करबाक दबाव दैत छथि — मीराक प्रश्न-श्रृंखला सँ ओकर आग्रह टूटि जाइत अछि। ध्रुवेश हाथ बढ़बैत छथि, भिखारी लाल रोकैत छथि — 'कागच हाथ लगाबयसँ पहिने नाम लिखू।' अनन्या घोषित करैत छथि — 'जे पन्ना पर हमर नाम, हमर जमीन, हमर अंगूठा, हमर डर लिखल अछि, ओकर पहरा हमर अधिकार' — भीड़ 'हमर अधिकार' दोहराबैत अछि। ध्रुवेश धमकीसहित विदा होइत छथि — 'रातिमे कागच बचा कऽ राखू।' मीरा तुरन्त तीन-स्थान पहराक व्यवस्था करैत छथि। रातिमे मध्यरातिमे एकटा अनजान छाह देविकाक देबाल लग सरकैत अछि —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७३ — पंजीक पहरा

फुलेसर नामक नेना कंकड़-संकेत दैत छथि, भिखारी लाल आ अनन्या-आरुणि दौड़ैत छथि। छाह भागि जाइत अछि, मुदा एकटा धमकी-पर्ची छोड़ि जाइत अछि — 'पुरान बात खोलब, तँ नब केस बनत।' सत्यव्रत एहि पर्चीकेँ धमकीक संग स्वीकारोक्ति सेहो मानैत छथि। मीरा कहैत छथि — 'धमकी प्रमाणक शत्रु नहि, प्रमाणक छाह अछि, हम लिखि लेलहुँ तँ ई अपराधीक पएरक निशान बनत।' अध्यायक अन्तमे भोर होइत पंजी सुरक्षित बचि जाइत अछि — मूल, प्रति, पर्ची सभ सुरक्षित, पहरुआ थाकल मुदा सोझ — पहरा केवल कागचक नहि, स्मृति, साहस, आ समुदायक नव जन्मक छल।

अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट

चन्ना गाछीक ठूँठ चारूकात घेरा बनैत अछि, लोक बिनु पुकारे जूता खोलि प्रवेश करैत अछि। अनन्या खाली पन्ना राखैत छथि — 'एहि पन्ना पर आइ ओ बात लिखल जाएत जे कागचमे छल, मुदा कागच बनि नहि सकल।' आरुणि दस पाथर सजबैत छथि — नाम, देह, जल, जमीन, कागच, डर, मौन, प्रतीक्षा, फाँस, स्मृति। पुतोहु सोना बरखों 'हाजिर नहि' लिखल जाइत रहलीह जखन कि ओ प्रत्येक तारीखपर उपस्थित छलीह — 'हम उपस्थित छलहुँ, अनुपस्थित केवल ओ लोक छल जे हमरा देखबाक लेल कुर्सी पर नहि छल।' मीरा एकरा 'देहक उपस्थिति' लिखैत छथि। बूढ़ मुवक्किल भोलाराम तेइस बरखक प्रतीक्षाकेँ पारिवारिक घटनाक्रमसँ जोड़ि सुनबैत छथि — 'फैसला तँ हमरे देह पर लिखल गेल।' एकटा युवक अपन

अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट

खण्ड २ • मुख्य कथा

2 / 3

बाबूजीक डिजिटल-अरेस्ट कथा सुनबैत छथि — देविका लिखैत छथि 'आवाजक नकली मोहर।' 'मौन काकी' नामक बुजुर्ग स्त्री अपन नाम तीन बेर सरकारी कागचमे गलत लिखायब बतबैत छथि — भीड़ ओकर सही नाम मिलिकऽ तीन बेर दोहरबैत अछि — मीरा लिखैत छथि 'नामक सुधि, न्यायक पहिल सीढ़ी।' रेकर्ड-घरक लिपिक रामबल्लभ अपन गुप्त नोटबुक पाथरपर राखि देत छथि — 'नाम लिखू, मुदा डर सेहो लिखू' — अनन्या लिखैत छथि 'लिपिक रामबल्लभ — डरल, मुदा उपस्थित।' चन्द्रपालक संगी एकटा नामहीन व्यक्ति कानूनी वैधताक प्रश्न उठबैत छथि — सत्यव्रत मेहता उत्तर दैत छथि 'कानूनी मूल्य बादमे देखब, एखन मनुष्यता मूल्य गनैत अछि' — व्यक्ति अपन नाम कहबासँ इनकार करैत छथि, मीरा एकरा

अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट

'अनाम आपत्ति — मोहरक भरोसा, मनुष्यक अविश्वास' कहैत छथि। साँझमे अनन्या लिखैत छथि — 'आइक कार्यवाही समाप्त नहि, स्थगित नहि, लोकक स्मृतिमे सुरक्षित' — 'नाम' वाला पाथर गाछीक जड़ि लग स्थायी पहरुआक रूपमे छोड़ल जाइत अछि। रातिमे भोलाराम पाछाँ मुड़ि पाथरपर हलुक उजास देखैत छथि। अध्यायक अन्तमे रामबल्लभक नोटबुकक पहिल पन्ना हवासँ खुजि जाइत अछि, जाहिमे बटुकनाथ हरिहरनक वास्तविक मोहरबाहकक नाम भेटैत अछि — अदृश्य अदालत आब पीड़ितक कथा सुनबसँ आगू बढ़ि अपराधक घरक दरबाजा खटखटायबाक दिशामे बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम

रामबल्लभक नोटबुकसँ भोरे 'दीनबंधु झा, मोहरबाहक' नाम भेटैत अछि, संग 'बटुकनाथ हरिहरनक निजी मोहर, बन्धक-पत्र... सूचीसँ सम्बद्ध।' मीरा सावधानी बरतैत छथि — 'नाम भेटल अछि, आरोप नहि, एखन सुननाइ होएत, हल्ला नहि।' सत्यव्रत मेहता दीनबंधुकेँ मोन करैत छथि — पातर, कम बजनिहार, कपड़ाक थैलीमे मोहर आ स्याही ढोनिहार। अनन्या 'मोहरबाहकक भूमिका' पृष्ठ खोलि तीन श्रेणी बनबैत छथि — देखल, सुनेल, जाँचल। कमला देवी गवाही दैत छथि — देवरक बन्धक-पत्रपर अंगूठा, संग दीनबंधुक लाल मोमक मोहर, जकरा तखन 'सरकारी' मानि लेल गेल छल। रामकेवल पासवानक पंजीमे 'विशेष ध्यान' क कातमे अधछाप मोहर भेटैत अछि — सत्यव्रत कहैत छथि 'अधछाप बेसी बोलैत अछि, किएक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम

तँ पूरा मोहर वैधता देखबैत अछि, अधछाप चोरीक जल्दी।' दीनबंधुक बेटा शशिभूषण आबि अपन पिताक नाम पर आपत्ति करैत छथि, मुदा मीराक स्पष्टीकरणसँ शांत भऽ पिताक बचल सामान (कपड़ा, मोहर-पैड, पीतलक मोहर, डायरी) अनैत छथि — 'बाबूक मरलाक बाद ई सभ कोठरीमे पड़ल छल... नाम सुनि लऽ आएलहुँ।' पीतलक मोहरपर 'हरिहरन सेवा निकेतन' क आधा आकार भेटैत अछि। डायरीमे तारीख, नाम, संकेत ('लाल', 'कारी', 'तीन प्रति', 'बी. ह.', 'च. पा.') भेटैत अछि — मीरा फुसफुसाहटकेँ प्रमाण नहि, दिशा मात्र मानैत छथि। आरुणि डायरीक तारीख रामकेवलक पंजीसँ मिलाबैत छथि — कतेको संयोग मेल खाइत अछि। नीलमणि स्कैनक व्यवस्था करैत छथि। ध्रुवेश फेर आबि शशिभूषणकेँ धमकाबय

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम

चाहैत छथि — 'पुरान सामान बेचि देलह तँ काज चलत, ई सभ लोक तोहर बाबूकेँ बदनाम करत' — मीरा शशिभूषणकेँ बल दैत छथि — 'बदनामी ओहि पर होइत अछि जे सत्य नुकाबय।' शशिभूषण मोहरक डिब्बा मीराकेँ सौंपैत छथि — 'बाबू जँ केवल औजार छलाह, तकरो लिखू, जँ जानि कऽ केलनि, तकरो लिखू, मुदा झूठ नहि लिखू।' ध्रुवेशक धमकीपर सत्यव्रत उत्तर दैत छथि — 'स्मृति कानून-विरुद्ध नहि होइत अछि... डरब अपराधक पुरान तरीका अछि' — भिखारी लाल ध्रुवेशक नाम आगन्तुक सूचीमे लिखि लैत छथि। साँझ धरि दीनबंधुक मोहरक प्राथमिक पाठ पूरा होइत अछि — कोनो निर्णय नहि, केवल प्रश्न (मोहर कतेक कागचपर लगल? बी.ह. आ च.पा. के?) सुरक्षित रखल जाइत अछि। अनन्या 'मोहर' नामक नव

अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम

पाथर राखैत छथि — 'नाम मनुष्यक होइत अछि, मोहर विश्वासक, जखन मोहर धोखा दैत अछि, तखन मनुष्य अपन नामो गमाबय लगैत अछि।' अध्यायक अन्तमे भोरसँ पहिने दीनबंधुक डायरीक एकटा पन्ना हवासँ खुजि जाइत अछि, जाहिपर केवल दू शब्द — 'अन्तिम सूची' — बटुकनाथ हरिहरनक सेवा-समारोहक तिथिसहित, जखन गरीब परिवारक नाम मंचपर पढ़ल गेल छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

'अन्तिम सूची' पन्ना चन्ना गाछी लग खोलल जाइत अछि — नामक कातमे 'लाभार्थी', 'प्रार्थी', 'रोकू', 'दू प्रति' सन संकेत भेटैत अछि। भोलाराम पछतबैत छथि — ओ समारोहमे ताली बजौने रहथि, आब ओ ताली काँटा जकाँ चुभैत अछि। मीरा कहैत छथि — 'सेवा जँ कागचक बाटे जमीन, नाम आ अधिकार निगलय, तँ ओकरा सेवा नहि कहल जा सकैत।' सत्यव्रत मेहता डायरीक तारीख पंजीसँ मिलाबैत छथि — समारोहक सप्ताहमे असामान्य संख्यामे प्रतिलिपि तैयार भेल छल। रामबल्लभ लिपिक स्वीकार करैत छथि जे मंच पाछाँ कागचक पृष्ठ बदलल जाइत छल — 'दीनबंधु झा मोहर लगबैत छलाह, चन्द्रपाल सूची जाँचैत छल।' कमला देवी समारोहक नकली पदक, प्रमाण-पत्र, आ दुइ फोटो अनैत छथि, जाहिमे

अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

बटुकनाथ हरिहरन माला पहिरने, कमला देवीक देवर अँगूठा लगबैत देखार होइत छथि। नीलमणि फोटोकेँ सम्मानसहित दस्तावेजीकृत करैत छथि। भिखारी लाल मंचक चादरकेँ अभिलेख-घरक बोरामे देखल होयबाक स्मरण करैत छथि — टोली दू भागमे बँटि जाइत अछि। दोपहरमे लाल किनारीक मटमैला चादर भेटैत अछि, जाहिपर मोमक दाग, स्याहीक खसरा, आ अँगुरीक चिह्न — सत्यव्रत कहैत छथि 'ई कचरा नहि, अपराधक मंचक त्वचा अछि।' भोलारामक पत्नी शान्ति गवाही दैत छथि — स्त्री सभकेँ अलग पाँतिमे राखि 'महिला सहायता योजना' कहि अँगूठा लगाओल गेल, बादमे कागच घर नहि भेटल। मीरा कहैत छथि 'जतय स्त्रीक हस्ताक्षर बिनु पढ़ने लेल जाए, ओतय दान नहि, कब्जाक बाट खुलैत अछि।' शशिभूषण

अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

दीनबंधुक डिब्बाक तलीसँ एकटा पर्ची अनैत छथि — 'मंच-पठनक बाद मूल बदलू, बी.ह. सँ संकेत भेटत।' सत्यव्रत कहैत छथि — 'मूल बदलबाक निर्देश अपराधक ढाँचा देखबैत अछि।' अनन्या नव शीर्षक 'सार्वजनिक वाचन आ निजी अभिलेख' बनबैत छथि। ध्रुवेशक दू लोक साँझमे गाछीक बाहर मोटरसाइकिलपर घूमैत रहैत छथि — सोना समय आ विवरण लिखि लैत छथि। रातिमे नाम-मिलान होइत अछि — दानक भाषा आ कब्जाक भाषा एकहि तारीखपर संग-संग चलैत रहल भेटैत अछि। भोलाराम कहैत छथि — 'हमरा नाम मंचपर पढ़ि कऽ हमर कागचक मुँह बन्द कएल गेल।' अनन्या पाथरपर 'मंचक उजास' लिखैत छथि — 'उजास लिखब, जाहिसँ लोक देखए जे कखन-कखन उजासे अन्हारक काज करैत अछि।' शशिभूषण पर्चीपर हस्ताक्षर

अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

कऽ 'हम स्वयं सौंपैत छी' लिखैत छथि — मीरा कहैत छथि 'जकर घरमे अन्हार भेटए, ओ जँ दीपक लऽ बाहर आए, तकरा गवाहीदार कहब, अपराधी नहि।' अध्यायक अन्तमे रातिमे हवा डायरीक नव पन्ना पलटैत अछि, जाहिपर केवल एक पाँति — 'जिनका मंचपर नाम देल, हुनका घरसँ कागच लिअ' — अगिला दिन घर-घर चलबाक तैयारीक संकेत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

मीरा घोषित करैत छथि — 'जे नाम मंचपर पढ़ल गेल, से नाम आइ अपन घरमे सुनल जाएत... मंचक आवाज आ घरक कागचक मिलान बिनु फैसला नहि।' अनन्या तीन टोली बनबैत छथि — 'सत्य खोजबाक नामपर हम सभ दोसराक निजता नहि लूटब।' पहिल घरमे भोलारामक पत्नी शान्ति पीतल डिब्बासँ 'स्वेच्छा सहमति' लिखल कागच निकालैत छथि, जखन कि ओ केवल 'महिला सहायता योजना' पर अँगूठा देने रहथि — 'सहायता कहल, सहमति लिखल।' दोसर घरमे बूढ़ी सुभद्रा झाक कागचपर 'सम्पूर्ण अधिकार सहित सहमति' लिखल भेटैत अछि — सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'कानूनक भाषा जखन अन्हारमे पढ़ल जाए, तखन ओ हथियार बनि जाइत अछि, अँगूठा सच अछि, ओकरासँ बनाओल अर्थ झूठ भऽ सकैत अछि।' तेसर घर चमरू महतोक —

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

नाम चार रूपमे भिन्न-भिन्न कागचमे भेटैत अछि — आरुणि 'नाम-भ्रम' पन्ना खोलैत छथि। मीरा दोहरबैत छथि — 'नहि बुझल कागचपर अँगूठा देनाइ अपराध नहि, मजबूरीक प्रमाण अछि।' दीनबंधुक घरसँ बुलावा आबैत अछि — विधवा रागिनी देवी पहिल बेर सार्वजनिक स्वीकार करैत छथि 'दीनबंधु सभ नहि बुझैत छलाह... अन्तिम दिन सभ ओ डेरायल छलाह' — तकियाक नीचाँसँ एकटा अधूरा-हस्ताक्षरवाला पन्ना निकालैत छथि — 'मूल ऊपर राखू, प्रतिलिपि नहि देब।' रागिनी देवी गहन बात कहैत छथि — 'बाबूक दोष जतेक अछि, ओतेक लिख, जतेक डर छल, सेहो लिख।' अगिला घरमे ललित नामक पुरान स्वयंसेवक विरोध करैत छथि, बादमे स्वीकार करैत छथि जे 'सम्पूर्ण अभिलेख आयोजन समितिक पास सुरक्षित

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

रहत' क आदेश चन्द्रपालक छल। सत्यव्रत कहैत छथि — 'अपराध व्यक्ति मात्र नहि, पद्धति बनि रहल अछि।' साँझमे टोली गाछी लग घुरैत अछि, बीचमे खाली जगह छोड़ल जाइत अछि — चमरू महतोकेँ बीचमे बैसाओल जाइत अछि — 'हम तँ एके लोक छी, कागचमे हम चार टुकड़ा भऽ गेलहुँ।' मीरा सात-बिन्दु सार पढ़ैत छथि। भिखारी लालक प्रश्नपर रामबल्लभ लिपिक 'ऊपरक कोठरी' क रहस्य खोलैत छथि — पुरान अदालतक ऊपरी कमरा, जतय बन्द फाइलक बक्सा राखल जाइत छल, चाबी सदिखन चन्द्रपालक लोक लग रहैत छल। मूल कागच सभ अनुमति-प्रति राखिकऽ मालिककेँ वापस कएल जाइत अछि — मीरा कहैत छथि 'कागचक रक्षा पहिने ओकर मालिकक हाथमे होएत।' अध्यायक अन्तमे अनन्या रजिस्टरमे नव शीर्षक खोलैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

छथि — 'ऊपरक कोठरी' — कथाक अगिला दिशा।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

'ऊपरक कोठरी' क खबरि गाममे आगिक जकाँ पसरैत अछि — पुरान अदालतक छत लगक बन्द कमरा। भिखारी लाल कहैत छथि — 'जे चाबी रोज झनझनाइत छल, से लोककेँ भरोसा दैत छल, जे चाबी चुप राखल गेल, से असल दरबाजा खोलैत छल।' मीरा नियम राखैत छथि — 'कोठरी खोलब, मुदा कोठरी लूटब नहि।' दरबाजापर तीन मोहरक निशान (न्यायालय, तहसील, निजी सेवा-समिति) भेटैत अछि। पंच-साक्षी सहित ताला तोड़ल जाइत अछि, कुंडी जंग छोड़ि जाइत अछि। भीतर लोहाँक बक्सा, संदूक, गट्ठर भेटैत अछि — रैकपर 'समारोह अभिलेख', 'स्वेच्छा पत्र', 'मूल प्रतिलिपि' सन पर्ची। पहिल बक्सामे 'सम्पूर्ण अधिकार हस्तान्तरण' नामक अलग पन्ना, जकर अँगूठाक दाग मूल हस्ताक्षरक स्थानसँ मिलाओल गेल छल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

— मीरा कहैत छथि 'एहि ठाम अँगूठा नहि बोलि रहल, ओकरासँ झूठ कहल गेल अछि।' रामबल्लभ लिपिक स्वीकार करैत छथि जे 'ऊपरक कोठरीक रजिस्टर चन्द्रपाल लग रहैत छल।' दोसर संदूकमे फोटो भेटैत अछि, जाहिमे कमला देवीक हाथक कागचपर 'सहायता स्वीकृति' लिखल छल, मुदा फाइलमे 'अधिकार-त्याग' — फोटो साक्षी बनि सोझाँ आबैत अछि। तेसर गट्ठरमे लाल सूतसँ बान्हल स्त्री-आवेदन ('पति अनुपस्थित', 'विधवा', 'अशिक्षित' चिन्हित) भेटैत अछि — 'बुझा देल गेल' लिखल पन्नापर नाम नहि, संक्षिप्ताक्षर मात्र — आरुणि कहैत छथि 'ई अनुवाद नहि, आवाजक अपहरण छल।' चारिम बक्सामे 'विशेष सुरक्षित अभिलेख' नामक रजिस्टर भेटैत अछि, जाहिमे नाम कोडमे मेटाओल गेल छल — रामबल्लभ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

कोड-सूची भेटबैत छथि (क=कमला, उ=उज्ज्वला, वि=विधवा समूह, च=चमरू-पाँति)। बाहर ध्रुवेशक लोक हलचल मचाबैत छथि, मुदा शान्ति-सुभद्रा-रागिनी तीन वृद्ध स्त्री सीढ़ीपर बैसि रास्ता रोकि दैत छथि। सत्यव्रत मेहता घोषणा करैत छथि — 'कोनो वस्तु बाहर नहि जाएत, जाधरि मालिक, साक्षी आ सार्वजनिक सूची तैयार नहि भऽ जाएत।' दोपहरमे एकटा डिब्बामे तीन मोहर (सेवा-निकेतन, तहसीलक नकली, खाली रबरक टुकड़ा जाहिमे नाम बदलल जा सकैत छल) भेटैत अछि। एकटा धुँधल पन्नापर 'बटुक बाबूक निर्देश' — 'सार्वजनिक सम्मान', 'कागच सुरक्षा', 'प्रतिलिपि रोकू', 'चन्द्र... देखत' — मीरा दस्ताना पहिरि सावधानीसँ संभारैत छथि। साँझ धरि सभ वस्तु तीन श्रेणीमे बाँटल

अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

जाइत अछि। अनन्या घोषित करैत छथि — 'ऊपरक कोठरीमे घर-घरक हेरायल आवाज भेटल अछि।' शान्ति कहैत छथि — 'हमर अँगूठा आब असगर नहि।' अध्यायक अन्तमे सत्यव्रत कहैत छथि — 'ऊपरक कोठरी खुलल, मुदा आब ऊपरक रास्ता खोलबाक अछि — तहसील, बैंक, रजिस्टर, शहरक दफ्तर' — अनन्या रजिस्टरमे नव शीर्षक 'मोहरक रास्ता' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह

बच्चा सभ मोहरक तीन छाप (सेवा-निकेतनक नील गोल, नकली तहसील-अर्द्धचन्द्राकार, खाली रबर) कागचपर उतारि श्रेणी बनबैत छथि। मीरा तहसील जायबासँ पहिने नियम पढ़बैत छथि — शांतिपूर्ण, केवल पूछब आ लिखब। तहसील भवनमे भूमि हस्तांतरण रजिस्टरमे कमला देवीक नामपर 'स्वेच्छा अधिकार-त्याग' लिखल भेटैत अछि, जखन कि फोटोमे ओ 'सहायता स्वीकृति' लैत देखार होइत छथि — शान्ति चौंकैत छथि, ओकर खेत ओहि दिन गेल छल जाहि दिन ओकरा चादर देल गेल छल। लिपिक स्वीकार करैत छथि जे सेवा-निकेतनक लोक 'पन्ना तैयार रहैत छल, अधिकारी केवल मोहर मारैत छल... भरोसा बेचैत छल।' उज्ज्वलाक जमीनक पन्नापर 'विशेष सत्यापन' मुदा खाली हस्ताक्षर भेटैत अछि। चमरू-मंडलीक चार

अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह

नाम एक कोड ('च-समूह') मे समेटल भेटैत अछि — सत्यव्रत मेहता बुझैत छथि जे 'नामक संक्षेप प्रशासनिक सुविधा नहि, सामाजिक मिटानाइ सेहो भऽ सकैत अछि।' निबंधन-कार्यालय (शहर) मे कमला देवीक खाता खोजलापर 'हस्तांतरण पूर्ण' भेटैत अछि, गवाहमे दुइ लोक जे सेवा-निकेतनक मंचसंचालक छला — फोटोमे कमला देवीक कान्हपर ककरो हाथ दबाओल देखार होइत अछि — मीरा कहैत छथि 'एहि फोटोमे सहमति नहि, दबावक देह-भाषा अछि।' शान्तिक अधिकार-पत्रक तारीख ओहि दिनक अछि जखन ओ अस्पतालमे भरती रहलीह — देह एके दिन दू ठाम कोना, ई प्रश्न उठैत अछि। बैंकमे रकमक जाँच भेल — रकम तीन खाता (सेवा-निकेतन, निर्माण-सामग्री आपूर्तिकर्ता, 'हरिहर कल्याण ट्रस्ट') मे तुरंत

अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह

चलि गेल छल — बटुकनाथक नाम सीधा नहि, मुदा छाह घना छल। बाहर ध्रुवेशक लोक फोटो खिंचबाक प्रयास करैत छथि — देविका उत्तर दैत छथि 'हमर चेहरा खिंचू, मुदा कागचक चेहरा नहि चोराऊ।' साँझमे नक्शा (सेवा-समारोह → तहसील → निबंधन → बैंक → ट्रस्ट) पाथरपर खिंचल जाइत अछि — शान्ति कहैत छथि 'हमरसँ खेत नहि छीनल गेल, हमरसँ भरोसा छीनल गेल छल।' सत्यव्रत कहैत छथि — 'एखन दोषारोपण नहि, संरचना देखू।' अध्यायक अन्तमे गोहि किनार लग निश्चल थूथुन राखि सुनैत रहैत अछि, आ चिरईक चोंचसँ लाल सूतक तन्तु खसैत अछि — 'ऊपरक कोठरीक मोहर आब केवल पगचिन्ह नहि रहल, ओ रास्ता बनि गेल छल।'

अध्याय १८० — शहरक खाता

अनन्या कहैत छथि — 'अपराधक देह देखब बाकी अछि, काल्हि हम केवल ओकर पएर देखलहुँ।' सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'खाता पढ़ब धन गनबाक काज नहि, देखबाक अछि जे ककर भरोसा ककर थैलीमे बदलल।' शान्ति समारोहक पुरान चादर संग लऽ शहरक 'सिद्धि परामर्श सेवा' नामक लेखा-कार्यालय जाइत छथि। लेखाकार गोवर्धन सहाय पहिने बचाव करैत छथि — 'हम केवल कागच व्यवस्थित करैत छलहुँ।' हरिहर कल्याण ट्रस्टक फाइलमे उज्जर उद्देश्यक पाछाँ, दानक सूचीमे प्रभावित परिवारक जमीन-हस्तांतरणक बादक तारीखसँ रकम अबैत देखार होइत अछि — शान्ति अपन खेतक तारीखसँ मेल पबैत छथि। एकटा पन्नापर 'विशेष प्रशासनिक सहयोग' मे कोड 'रा.चं.ल.' भेटैत अछि — आरुणि अनुमान लगबैत छथि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८० — शहरक खाता

मुदा मीरा सतर्क करैत छथि — 'अनुमान रजिस्टरमे नहि, अलग पन्नापर।' गोवर्धन स्वीकार करैत छथि जे ट्रस्टक लेखा ध्रुवेशक लोक लऽ आबैत छल — दराजसँ एकटा गुप्त निर्देश-लिफाफा भेटैत अछि — 'कमला, उज्ज्वला, च-समूह खाताक रकम सेवा-दान मदमे मिलाउ, अलग उल्लेख नहि।' कार्यालयसँ निकलिते अनन्याक फोनपर धमकी-संदेश आबैत अछि — देविका फोनकेँ कपड़ामे लपेटि 'ई डर नहि, प्रमाण अछि' कहैत छथि। साइबर शाखामे अधिकारी पहिने उदासीन, मुदा मीराक व्याख्यासँ ध्यान दैत छथि — 'अंकीय गोहि सेहो पएर छोड़ैत अछि।' साँझमे गाम घुरैत काल टोलीक बस पुरान पुल मोड़पर ध्रुवेशक दू लोकसँ भेंट होइत अछि, जे विडियो बनबैत छथि — मीरा शांत रहैत छथि 'हाथ नहि, केवल

अध्याय १८० — शहरक खाता

दर्ज' — देविका जोरसँ समय-स्थान-विवरण बजैत छथि, जाहिसँ ओ लोक भागि जाइत छथि। गाम पहुँचि प्रमाण तीन प्रतिमे बाँटल जाइत अछि — शान्ति कहैत छथि 'पहिने हमर अँगूठा एकटा पन्नापर अकेला छल, आब ई सभ पन्ना एक-दोसराक पहरा दैत अछि।' रातिमे सभा भेल तँ फोन सेहो गवाहीमे राखल जाइत अछि। सत्यव्रत नक्शाक अगिला रेखा खिंचैत छथि — 'न्यायकेँ फोनक काँचो पढ़य पड़त।' अनन्या नव पन्ना 'अंकीय गोहिक दाँत' खोलैत छथि। अध्यायक अन्तमे शान्ति समारोहक चादरकेँ प्रमाणक मेज बनबैत छथि — 'एहि चादरसँ हमरा लाज ढाँकल गेल छल... आइ ई चादर प्रमाणक मेज हो' — गोहि पानिपर आबि, आँखि खोलि, फेर डूबि जाइत अछि — मीरा सावधान करैत छथि 'दाँत पाछाँ हटैतो फेर काटि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८० — शहरक खाता

सकैत अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८१ — सिमक छाया

सत्यव्रत मेहता संदेशक समय मिलबैत छथि — पछिला तीन मासमे सिम-नम्बर सात बेर बदलल गेल छल, मुदा हर बेर पहिल सक्रिय-टावर गामक बस-ठाढ़ी लगक बाजारमे पकड़ायल। अनन्या नक्शापर बस-ठाढ़ी घेरैत छथि। बाजारक 'माधव संचार सेवा' दुकानपर पहुँचि सत्यव्रत 'सिम पंजी' क बात उठबैत छथि — दुकानदार माधव घबराइत स्वीकार करैत छथि जे तीन मास पहिने 'ट्रस्टक सेवा-शिविर' क बहानामे कागच अनल गेल छल, अँगूठा-फोटो लेल गेल, मुदा फोन ग्राहकक हाथमे नहि गेल। बहीमे रमरतिया देवी, कमलू पासवान आदि नामक कातमे लाल पेंसिलक बिंदु भेटैत अछि — माधव कहैत छथि 'जे कागच बाहरसँ आयल, ओकरापर हम बिंदु करैत छलहुँ' (हरिहर सेवा केंद्र/ध्रुवेशक लोकसँ)। माधवक भतिजा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८१ — सिमक छाया

'लाल बक्सा' क खबरि दैत अछि — भीतरसँ खाली सिम-लिफाफा, कागचक कतरन, आ दू फोटो भेटैत अछि — एकमे रमरतिया देवी (दू बरख पहिने मृत) क चेहरा, दोसरमे हरिहर सेवा केंद्रक झंडा। अनन्या लिखैत छथि — 'मरल स्त्रीक नामपर चलैत सिम... मृत नामसँ जीवित धमकी।' माधव कानि कऽ स्वीकार करैत छथि — 'हम जानैत नहि छलहुँ जे सिम सँ धमकी जाएत' — मीरा कहैत छथि 'नहि जानब पापकेँ धोइ नहि दैत, मुदा सच कहब पापकेँ ढाकबासँ अलग करैत अछि।' तखने बिशम्भर (ध्रुवेशक सेवक) तीन युवकक संग मोटरसाइकिलपर पहुँचि विडियो बनाबय लगैत छथि — देविका तुरंत उल्टा जोरसँ समय-स्थान-विवरण पढ़ि दैत छथि, जाहिसँ ओ रुकि जाइत छथि। माधवक बहीमे बिशम्भरक हस्ताक्षर-जकाँ रेखा

अध्याय १८१ — सिमक छाया

भेटैत अछि — बिशम्भर इनकार करैत छथि, आरुणि कहैत छथि 'हस्ताक्षरक जाँच बादमे, उपस्थिति एखन लिखल गेल।' भीड़ जमा भऽ अपन-अपन ठगीक अनुभव कहय लगैत अछि — बस-ठाढ़ी अदृश्य अदालत बनि जाइत अछि। मीरा दू-पंक्ति व्यवस्था बनबैत छथि। बिशम्भर भागय चाहैत छथि, सत्यव्रत कहैत छथि 'अहाँ जा सकैत छी, मुदा अहाँक आना, समय, आ इंकार लिखल गेल अछि।' दुपहर धरि आठ नाम (तीन मृत, दू बीमार, एक परदेशी, दू अनपढ़ वृद्धा) लिखल जाइत अछि — सत्यव्रत कहैत छथि 'ई केवल फोनक छल नहि, ई अस्तित्वक चोरी अछि।' साँझमे प्रमाण चन्ना गाछी लग सुरक्षित रखल जाइत अछि। रमरतिया देवीक पोता कहैत छथि — 'दादी मरलाक बादो अगर हुनकर नामसँ डर भेजल गेल, तँ ई मरल शरीरक

अध्याय १८१ — सिमक छाया

अपमान नहि, बचल नामक हत्या अछि।' रातिमे टोली अगिला योजना बनबैत छथि। ध्रुवेशक हवेलीसँ ढोलकक आवाज आबैत अछि — 'जखन अपराधी डरैत अछि, तखन ओ सभसँ पहिने उत्सवक आवाज बढ़बैत अछि।' अध्यायक अन्तमे अनन्या लिखैत छथि — 'सिमक छाह पकड़ायल, मुदा छाह जकर, ओ एखन सोझाँ नहि' — आरुणि जोड़ैत छथि 'छाह पकड़ायल तँ देह दूर नहि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

मीरा नियम पढ़ैत छथि — 'कागच देखब, मुदा कागच छीनब नहि... भीड़कँ निर्णय नहि बनए देब।' हरिहर सेवा केंद्र पहुँचि टोली वृद्ध चौकीदार नरहरी काकासँ भेटैत छथि, जे पहिने 'ऊपरसँ आदेश' कहि टारय चाहैत छथि — सत्यव्रत पुछैत छथि 'ऊपर कतँ अछि — छत, दफ्तर, कि डर?' — नरहरी कुंडी खोलि दैत छथि। पहिल कोठरीमे 'वृद्धा-सहायता', 'आवास-लाभ', 'सिम-सहायता' सन गठरी भेटैत अछि — रमरतिया देवीक नामपर तीन अलग मोबाइल नम्बर भेटैत अछि, माधवक बहीसँ तिथि मेल खाइत अछि। नरहरी स्वीकार करैत छथि जे रातिमे बिशम्भर, ध्रुवेशक सहायक, आ चश्माधारी शहरिया बाबू फाइल निकालैत छला। 'ऊपरक अलमारी' खुजैत अछि — 'लाभुक उपस्थिति' आ 'अंकीय सहायता' दू पंजी भेटैत

अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

अछि, जाहिमे 'फोन वापस' सन प्रविष्टि भेटैत अछि — मीरा कहैत छथि 'जकर नामपर फोन, ओकर हाथसँ फोन वापस — माने आवाजक चोरी।' भीड़ जमा होइत अछि, स्त्री-मंडली कतार बनबैत अछि — शान्ति कहैत छथि 'काल्हि हमरा कागचक लाज बचल, आइ दोसरो लोकक लाज बचत।' अनन्या श्रेणी बनबैत छथि — 'नाम-पुष्टि', 'लाभ-अस्वीकार', 'अँगूठा-बिनु-पठन', 'फोन-वापसी'। बिशम्भर आबि निजी संस्थाक दुहाई दैत छथि — सत्यव्रत उत्तर दैत छथि 'निजी सेवा जखन सार्वजनिक लाभक नामपर अँगूठा लेत अछि, तखन ओकर कागच लोकक प्रश्नसँ बचि नहि सकैत।' देविका कहैत छथि 'राखक नीचाँ आगि बहुत पहिनेसँ अछि, हम केवल धुँआ दर्ज करैत छी।' नरहरी काका पहिल बेर बिशम्भरक सोझाँ ठाढ़ भऽ चाबी नहि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

देबाक कहैत छथि — 'बरखों चाबी बचौलहुँ, नाम गँवेलहुँ, आब नौकरी बचा कऽ की करब?' दोसर कोठरीमे कम्प्यूटर, प्रिंटर, स्कैनर, आ 'फोन वितरण' रसीदक बन्द पेटी भेटैत अछि, जाहिमे अलग अँगूठा मुदा समान लिखावट भेटैत अछि। एकटा पेन-ड्राइव ('शिविर फोटो') सील कएल जाइत अछि, साइबर शाखाक अधिकारीक सलाहअनुसार। साँझ धरि नामक कतार बढ़ैत अछि — 'लाभक नामपर चिन्हारिक कब्जा' क एकहि कथा उभरैत अछि। रातिमे रमरतिया देवीक पोता कहैत छथि — 'दादीक नामसँ जँ फोन चलल, तँ दादीक आत्मा नहि, हुनकर नाम गुलाम बनाओल गेल।' सत्यव्रत अन्तिम रेखा खिंचैत छथि — सेवा केंद्र → सिम पंजी → फोन-वापसी → ट्रस्ट खाता → धमकी संदेश → ध्रुवेशक सहायक — मीरा कहैत छथि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

'पुष्टि बाकी, मुदा बाट स्पष्ट।' अध्यायक अन्तमे अनन्या नव पन्ना 'फोनक भीतरक चेहरा' खोलैत छथि — आरुणि कहैत छथि 'जखन उपकरण जबाब देत, तखन छाह बोलत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा

पेन-ड्राइवक सील राति भरि सुरक्षित रहैत अछि। साइबर अधिकारी विनीत झा प्रति बनबैत, मूल सुरक्षित रखबैत छथि — आरुणि लिखैत छथि 'सत्य खोलबाक विधियो सत्यक हिस्सा अछि।' चन्ना गाछी तर मेजपर सील खोलल जाइत अछि। स्क्रीनपर फोल्डर खुजैत अछि — 'शिविर फोटो', 'दस्तावेज', 'लाभुक सूची', 'वापसी फोन', 'विशेष'। पहिल फोल्डरक शिविर-फोटोक किनारमे बिशम्भर देखार होइत छथि। दोसर चित्रमे रमरतिया देवीक कातमे झुकल युवकक गलापर हरिहर सेवा केंद्रक चिन्हवाला पट्टा भेटैत अछि — फोटोक तिथि माधवक बहीक सिम-सक्रियताक तिथिसँ मेल खाइत अछि। तेसर फोल्डर 'वापसी फोन' मे बूढ़ लोकसभर्कें फोन देलाक बाद फेर वापस लैत विडियो भेटैत अछि — मीरा तुरंत रोकैत छथि

अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा

'हम देखब प्रमाण लेल, न कि अपमान लेल।' दस्तावेज फोल्डरमे समान हस्तलेख आ टिक-चिह्नवाला नकली प्रपत्र भेटैत अछि। सभसँ कठिन 'विशेष' फोल्डर खुजैत अछि — पहिल ध्वनि-संदेशमे पुलिसक नामपर धमकी, पृष्ठभूमिमे सेवा केंद्रक पंखाक चरमराहट — नरहरी काका पहचानैत छथि 'हमर पंखा एहनहि बोलैत अछि।' दोसर ध्वनि-संदेशमे सोमरी काकी (गामक बीमार कहल जाइत स्त्री) क डरायल आवाज भेटैत अछि — मीरा बिनु भीड़क दू स्त्रीकेँ हुनकर घर पठबैत छथि। दोसर विडियोमे चेहरा धुँधला, मुदा लम्बा नह, कारी धागा, जख्मवाला हाथ स्पष्ट देखार होइत अछि — सत्यव्रत मेहता पुरान सभा-फोटोसँ मिलान करैत छथि, हाथ ध्रुवेशक सहायकसँ मेल खाइत अछि। अनन्या लिखैत छथि —

अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा

'कखनो-कखनो चेहरा झूठ बाजैत अछि, हाथ सच छोड़ि जाइत अछि।' साँझमे सोमरी काकीक बयान आबैत अछि — 'फोनपर जे पुलिस बोलल, ओकरा पाछाँ केओ हँसि रहल छल' — विनीत झा ध्वनि-संदेशमे हँसी पहचानैत छथि, नरहरी काका पहचानैत छथि — 'ई ध्रुवेशक सहायक नहि, ई शहरिया बाबू अछि।' रातिमे रमरतिया देवीक पोता दीपक दादीक फोटो आगाँ राखि कहैत छथि — 'आइ दादीक चेहरा नहि, दादीक नामक चोरी देखलहुँ' — मीरा कहैत छथि 'चोरी भेटल अछि, अब चोरक बाट भेटत।' बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'पहिने नाम मिटाओल जाइत छल, आब नामसँ आवाज बनाओल जाइत अछि, जे आवाज बनाओत, ओकर साँस खोजू।' अध्यायक अन्तमे अनन्या नव पन्ना 'आवाजक नकाब' खोलैत छथि।

अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

विनीत झा चेतावनी दैत छथि — 'आवाजक मिलान अदालतमे अन्तिम प्रमाण नहि, पर बाट देखाबयवला दीप अवश्य बनि सकैत अछि... आवाजकेँ असगर नहि, समय, स्थान, फोन, चित्र, आ गवाहीक संग पढ़ब।' सोमरी काकीक धमकी-संदेशमे पाछूसँ हलुक हँसी सुनल जाइत अछि — नरहरी काका पहचानैत छथि — 'ई रातिक हँसी अछि, जखन ओ लोक फाइल उठा कऽ ऊपरक कोठरीमे जाइत छल।' नरहरी बतबैत छथि जे शहरिया बाबू कम बजैत छला, 'शीघ्र करू' आ हँसैत 'गामक लोक सभ बिसरि जाएत' कहैत छला। देविका सेवा-समारोहक पुरान विडियोसँ 'पहिने' शब्दक विशिष्ट उच्चारण धमकी-संदेशसँ मिलाबैत छथि — आरुणि लिखैत छथि 'शब्दक रूप बदलैत अछि, आदत नहि।' 'विशेष' फोल्डरमे 'री-चेक' नामक फाइलमे विभिन्न गलासँ

अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

अभ्यासरत धमकी-वाक्य भेटैत अछि। सोमरी काकी स्वीकार करैत छथि — शिविरमे हुनका तीन बेर 'हम लाभ पाबि गेलहुँ' बोलबाओल गेल छल, फोटो लेल बुझल गेल छल — कतेको बूढ़ स्त्री-किसान-विधवा अपन अनुभव साझा करैत छथि। बच्चा सभ 'स्वर-गवाही' पन्ना खोलैत छथि। बिशम्भर भीड़मे चुपचाप आबि जाइत छथि, कारी धागाबला हाथसँ चिन्हल जाइत छथि — मीरा घोषणा करैत छथि 'गवाहीक ठामपर रहला सँ दोष कम नहि, पर सच बोललासँ नाम बचि सकैत अछि।' बिशम्भरक फोन बजैत काल 'सर' शब्द निकलि जाइत अछि, जकर समय दर्ज होइत अछि। नरहरी काका खुलासा करैत छथि — शहरिया बाबू पंखा बन्द नहि कराबैत छला, तीन मास पहिने पुरान पंखा 'मरम्मतक बहाने' शहर लऽ गेल गेल छल — विनीत झा

अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

पेन-ड्राइवक धमकी-संदेशमे उहे पंखाक चरमराहट अलग करैत छथि। सत्यव्रत मेहता नक्शा जोड़ैत छथि — सेवा शिविर स्वर-नमूना → फोन-वापसी → पंखा शहर → धमकी-कमरा → ट्रस्ट खाता। रातिमे बिशम्भर अन्ततः स्वीकार करैत छथि — शहरिया बाबूकेँ ध्रुवेश 'माधवेश बाबू' कहैत छला, ओकर आवाज नकल करबाक अभ्यास सेहो करौलनि। कारी धागाबला जख्मक बारेमे बतबैत छथि — 'ई जख्म ओहि रातिक अछि जखन फोनक डब्बा छीनैत एक बूढ़ हाथ काटि देलक' — दीपकक 'दादी?' प्रश्नपर मौन उत्तर भऽ जाइत अछि। भीड़ उफनैत अछि, मीरा रोकैत छथि — 'अपराधीकेँ भीड़ नहि, गवाही पकड़ेगी।' अध्यायक अन्तमे अनन्या नव पन्ना 'मास्टरक कमरा' खोलैत छथि — आरुणि कहैत छथि 'जतय आवाज बनल, ओतय चेहरा

अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

बचल होएत।'

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

विनीत झा पंखाक चरमराहट फेर बजबैत छथि — नरहरी काका पहचानैत छथि — 'हरिहर सेवा केंद्रक पुरान पंखा एही तरहें अटकैत छल... मरम्मत नामपर बिशम्भरक हाथे उतरल।' सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'अपराध फालतू चीज नहि उठबैत, जे उठबैत अछि, ओकर उपयोग होइत अछि।' बिशम्भर कमराक ठेकाना बतबैत छथि — स्टेशनक पाछाँ फोटोस्टेट दोकानक ऊपर। मीरा छोट टोली बनबैत छथि आ बिशम्भरकेँ प्रमाण दूषित नहि करबाक कहि रोकैत छथि। दोकानक बोर्ड बदलि 'मास्टर मीडिया सेवा' भऽ गेल अछि। भाड़ा-रजिस्टरमे भाड़ादारक नाम 'मधवेश मिश्र' (माधवेश नहि, एक मात्रा छोट) भेटैत अछि, मोबाइल नम्बर ट्रस्ट-निर्देशसँ मेल खाइत अछि। ऊपरक कमरामे पंचनामासहित प्रवेश — छतपर 'हरि-२'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

अंकित पंखा भेटैत अछि, नरहरी काका पहचानि लैत छथि। कमरामे मोबाइल-स्टैंड, दीप-घेरा, पुलिस-थानाक नकली पृष्ठभूमि-परदा भेटैत अछि। मेजपर 'दादी-स्वर', 'किसान-स्वर', 'पुलिस-स्वर', 'बैंक-स्वर' नामक तैयार-पर्ची भेटैत अछि — मीरा कहैत छथि 'ई लोकक भाषा नहि, सम्बन्धक नक्शा पढ़ि रहल छल।' डिब्बामे नाम-पट्टी भेटैत अछि, जाहिमे 'रमरतिया—दादी—दीपक—शहर' पढ़ि दीपकक साँस रुकि जाइत अछि — मीरा ओकरा सांत्वना दैत छथि 'कानि सकैत छह, पर कागच नहि छूबू।' ध्वनि-संचिकाक सूचीमे 'मास्टर-पुलिस-अभ्यास' भेटैत अछि। देबालपर पेंसिलसँ बनल रेखा — हरिहर सेवा केंद्र → फोटोस्टेट कमरा → शहरक खाता → ट्रस्ट → 'डी' → 'एम' — सत्यव्रत सावधान करैत छथि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

'अक्षर दर्ज करू, अर्थ नहि।' सिमक खोल, नकली चिन्हारि-पत्र, पंखा-मरम्मतक रसीद, आ मेज-भाड़ाक रसीद भेटैत अछि। खिड़कीसँ पटरी देखार होइत अछि — ट्रेन गुजरलापर कमरा काँपैत अछि आ बिनु चलेहि पंखा 'खट' करैत अछि — विनीत झा धमकी-कॉलक पृष्ठभूमिक गड़गड़ाहट ट्रेनसँ मिलाबैत छथि, समय-सूची मिलैत अछि। मेजक दराजमे लाल सूत भेटैत अछि, चन्ना गाछीक चिरइक चोंचसँ मिलैत — सत्यव्रत कहैत छथि 'ई वस्तु भेटल, अर्थ बादमे।' बाहर दुकानदारक लड़का बतबैत अछि जे राति साढ़े ग्यारह बजे नकली दाढ़ीवाला लोक दू बैग लऽ भागल छल — मीरा अल्पवयस्कक फोटो नहि लैत छथि। गाम घुरैत बसमे दीपक कहैत छथि — 'दादीक आवाज मरला बादो ओ लोक प्रयोग करैत रहल' — मीरा कहैत

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

छथि 'मृतकक आवाजो परिवारक स्मृति अछि, बाजारक माल नहि।' अध्यायक अन्तमे चन्ना गाछी लग सभ प्रमाण राखल जाइत अछि, बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'पुरान कालमे चोर घरमे पैसैत छल, आब चोर आवाजक घर बनबैत अछि, घर पकड़ायल, पर घरक मालिक एखन पथ पर अछि' — मास्टर स्वयं पकड़ायल नहि, अनन्या नव पन्ना 'मधवेशक असली नाम' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

अनन्या नव पन्ना 'मधवेशक असली नाम' खोलैत छथि। मीरा चेतावनी दैत छथि — 'नामक आधार पर भीड़ नहि उठत... लोक अपराध करैत अछि, नामक खोल ओ अपन रक्षा लेल पहिरैत अछि।' सत्यव्रत मेहता विभिन्न कागचमे नामक भिन्नता क्रमबद्ध करैत छथि। विनीत झा शहरक भाड़ा-कागचमे घर-मालिकक बयान पढ़ैत छथि — तीन भिन्न नाम प्रयुक्त भेल छल। दोकानदारक लड़काक बयानसँ रेल-स्टेशन धरि सूत्र पहुँचैत अछि — साढ़े ग्यारह बजे नकली दाढ़ी उतारैत यात्री, नाम 'मधुकर' कहल गेल छल। नरहरी काका मोन करैत छथि — 'बरखों पहिने हरिहर सेवा केंद्रमे एक लड़का आवाजक नकल करैत छल... हम सभ हँसी-ठट्ठामे मधुकर कहैत रही।' तीन नाम मिलैत अछि — मधवेश, माधवेश, मधुकर। टोली पुरान

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

माध्यमिक विद्यालय जाइत अछि — नामावली-रजिस्टरमे 'मधुकर माधव मिश्र, पिता — महेश्वर मिश्र, गाम — बरियारपुर टोला, अस्थायी पता — हरिहर सेवा केंद्र परिसर' भेटैत अछि। प्रधानाध्यापक बतबैत छथि जे पिता स्वयं नाम बदलवौलनि — 'मधुकर बहुत गामे-घरक सुनाइत अछि।' बिशम्भर महेश्वर मिश्रकेँ ध्रुवेशक मामा पक्षक नातेदार बतबैत छथि। विद्यालयक नाटक-दिवसक फोटोमे बालक 'मधुकर —आवाज-अनुकरण' रूपमे भेटैत अछि। छात्रवृत्ति-प्रपत्रमे मधुकरक खाता सेवा-केंद्रक खातासँ जुड़ल भेटैत अछि — सत्यव्रत कहैत छथि 'अपराधी भऽ गेलाक बादो ओकर बचपनक गोपनीयता पूर्ण रूपेँ हाटमे नहि राखल जाएत।' बरियारपुर टोलामे कातकी बूढ़ि स्त्री बतबैत छथि — 'मधुकर? ओकर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

आवाज मधुमक्खी जेकाँ छल।' घरक देहरीपर कोयलासँ लिखल आधा वाक्य भेटैत अछि — 'आवाज बेचब नहि' — मधुकरक स्वर्गीय माताक लिखल। बिशम्भर बतबैत छथि — मास्टर अपन पुरान नामसँ चिढ़ैत छल, 'मधुकर सुनिते लोक गाम, गरीबी, आ मायक मोन पाड़ै छै, मधवेश सुनिते कागच, शहर, आ भरोसा।' अनन्या लिखैत छथि — 'जे लोक अपन मायक आवाजसँ भागल, से दूसराक मायक आवाज बेचलक।' विनीत झा पूरा रेखा बनबैत छथि — हरिहर सेवा केंद्र → आवाज-अनुकरण → ध्रुवेशक सेवा-जाल → स्टेशन-कमरा → सिम आ ट्रस्ट → गिरफ्तारी — मीरा कहैत छथि 'कमी लिखल अछि, तेँ रेखा ईमानदार अछि।' अध्यायक अन्तमे सत्यव्रत अन्तिम टिप्पणी लिखैत छथि — मीरा नाम सार्वजनिक करबासँ पहिने विधिक प्रति

अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

सुरक्षित रखबाक कहैत छथि — अनन्या नव पन्ना 'छत्ताक भीतरक रानी' खोलैत छथि — आरुणि पुछैत छथि 'मधुमक्खी पकड़ायल, मुदा मधु ककरा घरमे जमा अछि?'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

अनन्या नव पन्ना 'छत्ताक भीतरक रानी' खोलैत छथि। मीरा चेतावनी दैत छथि — 'रानी शब्द सुनिते कोनो स्त्रीपर आरोप नहि लगत... जँ अपराधी लोक स्त्रीक नामकेँ ढाल बनबैत अछि, तँ पहिल काज ढाल हटेनाइ अछि।' विनीत झा मास्टरक कमराक यंत्रमे 'फूल', 'मधु', 'रानी' तीन खण्डवाली सारणी पबैत छथि। अंकीय अपराध अधिकारी छोट-छोट रकम धीरे-धीरे बड़ी रकमक 'रानी' नामक खण्डमे जमा होयबाक धारा देखबैत छथि। पहिल रानी-खाता — रानी देवी, हरिपुर कटान — भेटैत अछि। मीरा सतर्क करैत छथि — 'नाम पढ़ल गेल, अपराध नहि।' टोली हरिपुर कटान पहुँचि रानी देवीकेँ भेटैत छथि, जे बतबैत छथि — वृद्धावस्था-वृत्तिक बहानामे अँगूठा लेल गेल छल, दू मास पैसा आयल फेर बन्द।

अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

हुनकर आध कटल अँगूठा खाताक गोल-स्वच्छ अँगूठासँ मेल नहि खाइत — विनीत झा कहैत छथि 'नाम असली, अँगूठा नकली' — मीरा जोड़ैत छथि 'तेँ स्त्री अपराधी नहि, स्त्रीपर अपराध।' पोता बतबैत छथि जे सेवा केंद्रमे तीन बेर 'यंत्र खराब' कहि दादीक अँगूठा शीशाक पट्टीपर लगाओल गेल छल। दोसर रानी — रानी कुमारी, जे पाँच बरख पहिने विवाह कऽ परदेश चलि गेल छलीह। तेसर 'रानी महिला सहायता समिति' कागचपर मात्र अस्तित्वमे अछि। मीरा कहैत छथि — 'समाज जकरा दुर्बल मानैत अछि, अपराधी ओकर नामकेँ मजबूत तिजोरी बनबैत अछि।' बिशम्भर खुलासा करैत छथि — 'रानी नाम मास्टर नहि देलक, ध्रुवेश बाबूक ऊपर जे महेश्वर बाबू छलाह, ओ कहैत छलाह — स्त्रीक नामपर खाता

अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

खोलू, जल्दी कोनो प्रश्न नहि उठत।' पहिल बेर महेश्वरक नाम स्पष्ट होइत अछि। समिति-पंजीमे 'महेश्वरनाथ सेवक, संयोजक' क मोहर भेटैत अछि। आरुणि कहैत छथि 'ई छत्ताक भीतरक रानी नहि, ई छत्ताक रखवाला भऽ सकैत अछि' — मीरा सावधान करैत छथि 'भऽ सकैत अछि — लिखू, निर्णय एखन नहि।' बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'पुरान समयमे दानक थारीपर स्त्रीक नाम लिखि पाप धोएल जाइत छल, आब अंकीय खातापर स्त्रीक नाम लिखि पाप नुकाओल जाइत अछि, थारी आ खाता बदलल, चाल नहि।' रानी देवीक पोता कहैत छथि — 'दादी कहैत छथि, हुनकर नाम साफ करू।' मीरा 'नाम-शुद्धि सूची' राखैत छथि। दीपक कहैत छथि — 'जकरा सभक नामसँ अपराध चलल, हुनका सभक नामसँ न्याय शुरू हो।' सत्यव्रत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

अन्तिम टिप्पणी लिखैत छथि — 'रानी-खण्ड वास्तविक नियन्त्रक नहि, बहुस्तरीय आवरण प्रतीत होइत अछि... महेश्वर कागचक छत्ता बनबैत देखाइत अछि — पुष्टि शेष।' अध्यायक अन्तमे अनन्या नव पन्ना 'महेश्वरक मोहर' खोलैत छथि — आरुणि कहैत छथि 'हाथ खोजू, हाथकेँ भीड़सँ नहि, प्रमाणसँ पकड़ू।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

सत्यव्रत मेहता तीन कागचमे एकहि गोल मोहर 'महेश्वरनाथ सेवक, संयोजक' पबैत छथि, जाहिमे 'सेवक' शब्दक 'व' दबल छल — आरुणि कहैत छथि 'जे सेवा शब्द दबि जाए, ओहि मोहरपर भरोसा नहि।' मीरा कहैत छथि — 'मोहर अपराधी नहि, मोहरक प्रयोग अपराधक बाट खोलि सकैत अछि।' विनीत झा तीन मोहरक चित्रमे सूक्ष्म भिन्नता देखबैत छथि। नरहरी काका बतबैत छथि — महेश्वर बालपनमे घंटी बजबैत छल, नाम 'महेसर' छल, धीरे-धीरे 'महेश्वर', फेर 'सेवक' जुड़ल — 'नम्रता नामक गमछा अपराधक मुँहपर बाँधि देल जाइत अछि।' गामक पुरान छाप बनौनिहार बजरंग मुद्राकार मोहरक 'व' क दबावसँ यंत्रक दोष चिन्हैत छथि, आ बतबैत छथि जे एहन यंत्र स्टेशन पाछाँक गलीमे छल — मास्टरक कमराक

अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

भूगोल जुड़ि जाइत अछि। बजरंग मुद्राकार मोन करैत छथि जे तीन मोहरक आदेश एकटा चेला आनने छला, जे 'सेवकजीक आदेश अछि' कहि हस्ताक्षर नहि केने छल। रमरतिया दादीक पोता दीपक कहैत छथि — 'हमरा दादीक आवाज चोरि भेल, आब बुझाइत अछि, आवाजपर मुहरो लगाओल गेल' — मीरा स्पष्ट करैत छथि 'दुनू मिलि कऽ अंकीय गोहि बनल।' बैंकक कागचमे मोहरक तिथि अनुमोदन-पत्रसँ पाँच दिन पहिनेक भेटैत अछि — विनीत झा कहैत छथि 'जाहि दिन भविष्य पहिनेसँ तय हो, कागच पाछाँ भरल जाइत अछि।' तीन स्त्री बयान दैत छथि जे महेश्वरनाथकेँ कहियो नहि देखलनि — सत्यव्रत सतर्क करैत छथि 'जकर मोहर चलैत अछि, ओकर चेहरा बहुत बेर अनुपस्थित रहैत अछि।' विनीत झा स्टेशन-पाछाँक

अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

मोहर-दोकानक पुरान बिल भेटबैत छथि। अनन्या नक्शा बनबैत छथि, जकर आकृति गोहिक खुलल जबड़ा जकाँ लगैत अछि। हरिहर सेवा केंद्रक पुरान दान-पुस्तिकामे महेश्वरनाथक पदनाम 'कुंजी-रक्षक' भेटैत अछि — नरहरी काका खुलासा करैत छथि जे बटुकनाथ हरिहरनक समयसँ 'खाली पत्र-मस्तक' पर पहिने हस्ताक्षर, बादमे नाम भरबाक प्रथा चलल आबि रहल छल — कथा फेर अपन जड़ि दिस घुरैत अछि। बजरंग मुद्राकार बतबैत छथि जे नील स्याही खास तौरपर 'फोटोमे साफ आबय' लेल लेल जाइत छल। सोमरी काकी बतबैत छथि जे फोनपर नील गोल छापवाला कागच देखा डराओल गेल छल। साँझमे पुरान चौकीदार गदाधर आबि लोहाँक पेटी क खुलासा करैत छथि, आ 'कहियो प्रयोग नहि करब' कहि देल गेल जंग-लागल

अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

कुंजी निकालैत छथि — बूढ़बा भूत कहैत छथि 'कुंजी जे बन्द पेटी नहि खोलैत, ओ आत्मा बन्द करैत अछि।' मीरा भोरमे विधिपूर्वक पेटी खोलबाक निर्णय दैत छथि। अध्यायक अन्तमे सत्यव्रत टिप्पणी लिखैत छथि — 'निष्कर्ष स्थगित, पर शृंखला स्पष्ट' — अनन्या नव पन्ना 'लोहाँक पेटी' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

मीरा भोरमे नियम दोहरबैत छथि — पंचायत, पुलिस, बैंक, स्त्री-समिति, बच्चा सभक सोझाँ भण्डार-घर खुलत — 'पेटी खोलब कौतूहल नहि, गवाही अछि।' भण्डार-घर खोलल जाइत अछि — सिमेन्टक बोरा पाछाँ लोहाँक कारी पेटी भेटैत अछि। गदाधर काँपैत हाथसँ ताला खोलैत छथि। पहिल तहमे सूखल नारिकेल पात भेटैत अछि — मीरा कहैत छथि 'अपराध शुभक पातसँ शुरू भऽ सकैत अछि, पात दोषी नहि, प्रयोग पढ़ू।' दोसर तहमे खाली पत्र-मस्तकक गड्डी भेटैत अछि — अनन्या कहैत छथि 'जतय नाम बादमे भरबाक हो, ओतय लोक पहिनेही गायब कएल गेल।' नील-काला प्रतिलिपि-पत्र भेटैत अछि। तेसर तहमे रङ्ग-अनुसार थैली भेटैत अछि — लाल (स्त्री-समिति), नील (बैंक), कारी (फोन-सूची, नामक सोझाँ

अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

'बूढ़', 'अशिक्षित', 'राति फोन' सन नोट — दीपक अपन दादीक नाम देखैत छथि), पीयर (मजदूर-दावा, बिसेसर पासवानक अधूरा पन्ना, जाहिमे 'मृत्यु' नहि 'अनुपस्थिति' लिखल छल, बटुकनाथ हरिहरनक पुरान मुहरसहित)। गदाधर स्वीकार करैत छथि — 'हमरा नहि मालूम छल ई सभ अछि' — मीरा कहैत छथि 'नहि मालूम छल — ई लिखल जाएत, पर कुंजी रहितो नहि खोलल — ईहो लिखल जाएत।' चारिम तहमे तीन मुहर भेटैत अछि, बजरंग मुद्राकार पुष्टि करैत छथि। कपड़ाक थैलीमे पाँच अँगूठा-छापक रबरक टुकड़ा भेटैत अछि — सोमरी काकी चिचिआइत छथि 'हमर अँगूठा फेर बनाओल?' पाँचम तहमे नील टिप्पणी-पुस्तिका भेटैत अछि — सत्यव्रत पढ़ैत छथि 'रमरतिया—बेटा बाहर—राति—गिरफ्तारी-पत्र...' —

अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

मधुकरक आवाज-जाल 'व्यवस्थित पाठ्यक्रम' सिद्ध होइत अछि। पंजीक मोड़ल पन्नामे 'बटुकनाथ हरिहरन स्मृति-कोष' भेटैत अछि — महेश्वर, ध्रुवेश, मधुकर तीनू नाम अलग पंक्तिमे। मीरा पीड़ितक नाम सार्वजनिक करबासँ पहिने परिवारसँ बातचीत जरूरी बतबैत छथि — अनन्या कहैत छथि 'पीड़ितक नाम तमाशा नहि।' दीपक पुछैत छथि 'अकेलापन सेहो चोरी होइत अछि?' सत्यव्रत उत्तर दैत छथि 'हो, जखन ओकरा डरक संकेत बनाओल जाए।' बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'लोहाँक पेटीमे लोहाँक चीज कम, लोकक छेद बेसी अछि।' साँझमे पेटी सील कऽ पुलिस-निगरानीमे राखल जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे सत्यव्रत टिप्पणी लिखैत छथि — 'अपराधक पुरान संस्थागत ढाँचा आ नव अंकीय विधि एकहि संग्रहमे

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

सम्बद्ध देखाइत अछि' — मीरा जोड़ैत छथि 'पेटी खुलल, पर लोक एखन बन्द अछि' — अनन्या नव पन्ना 'नील पंजी' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९० — नील पंजी

मीरा सावधान करैत छथि — 'एहि पंजीमे जे नाम अछि, से सभ सार्वजनिक करबाक वस्तु नहि।' विनीत झा विधिक प्रक्रिया जोड़ैत छथि। पंजी खोलल जाइत अछि — पहिल पन्नापर 'सेवा-सूची: विशेष संरक्षण' शीर्षक, स्तम्भ (नाम, सम्बन्ध, भय, आवाज, खाता, हिस्सा, स्थिति)। मीरा कहैत छथि 'एहि पंजीमे नाम नहि, लोककेँ तोड़बाक उपाय राखल अछि।' 'भय' स्तम्भमे 'बेटा बाहर', 'विधवा', 'माय अकेली' सन नोट भेटैत अछि। दोसर पन्नापर स्त्री-नाम — मीरा कहैत छथि 'ई स्त्रीसभ पीड़ित छथि, संदिग्ध नहि।' तेसर पन्नापर मजदूर-नाम, बिसेसर पासवानक 'बि.पा.' — सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'पुरान बात जँ खातामे एखन साँस लैत अछि, तँ पुरान नहि।' बीचक दुमड़ल पन्नामे नील

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९० — नील पंजी

स्याहीसँ बनल नक्शा भेटैत अछि — हरिहर सेवा केंद्र, महेश्वरनाथ न्यास, रानी-खाता, सिम, बैंक, अभ्यास-कमरा — बटुकनाथ स्मृति-कोष आगाँ प्रश्न-चिन्ह। गदाधर बतबैत छथि जे 'सेवकजी' नील स्याहीकेँ 'विश्वास दिलबयवाला' मानैत छला। चारिम पन्नामे 'अभ्यास' — स्वर-नमूना, धमकी-वाक्य सूचीबद्ध — अनन्या कहैत छथि 'ई भाषा नहि, फाँस अछि।' 'मौनक समय' भेटैत अछि — आरुणि लिखैत छथि 'मौनक जाँच आवश्यक अछि।' 'हिस्सा' खण्डमे राशिक प्रतिशत, ध्रुवेशक आद्याक्षर भेटैत अछि। गदाधर स्वीकार करैत छथि — पंजी पहिने 'लाभार्थी-पंजी' छल, ध्रुवेशक आगमनक बाद 'भय-पंजी' बनि गेल — 'नाम हटाओ नहि, नामक पाछाँ कारण जोड़ू।' एकटा पन्नापर आरुणिक पिताक नाम 'नन्द

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९० — नील पंजी

आरुणि' भेटैत अछि — 'पुरान अभियन्ता—रिपोर्ट—मजदूर सूची—वंश सम्बन्ध—सावधान' — आरुणि स्तब्ध भऽ पुछैत छथि 'तखन पिताक रिपोर्ट गायब किएक भेल?' — संकेत 'डायरी', 'गमछा', 'बा' भेटैत अछि, चन्ना गाछी-गमछा-बा-जलसमाधि एके पन्नापर जुड़ि जाइत अछि। हुलासीक नाम 'इनारबाली' रूपमे अपमानसँ भेटैत अछि — मीरा कहैत छथि 'ई नाम नहि, अपमान अछि, असल नामसँ पुनर्स्थापन कएल जाएत।' दुपहर धरि प्रतिलिपि बनैत अछि — मीरा कहैत छथि 'पुरान अपराधी पंजीमे रंग चढ़बैत छल, हम मूल पन्नापर अपन क्रोधो नहि चढ़ाएब।' पाछाँक आवरणसँ पीयर कागच झरैत अछि — 'पंजी सुरक्षित, आदेश मौखिक, कुर्सीसँ पूछने बिना पन्ना नहि खुले' — दू वृत्तक बीच तिरछी रेखा (ध्रुवेशक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९० — नील पंजी

चिन्ह) — गदाधर पहचानैत छथि। पंजीक अन्तिम पन्नापर लिखल भेटैत अछि — 'समाप्त पन्नापर नव नाम नहि, नव नाम अलग पंजीमे' — जाल अखनो सक्रिय अछि, बस पंजी बदलि गेल। सत्यव्रत टिप्पणी लिखैत छथि — 'नील पंजी मूलतः लाभार्थी-पंजी रहल प्रतीत, कालक्रमे भय-आधारित लक्ष्य-पंजीमे रूपान्तरित।' अध्यायक अन्तमे साँझमे केवल खाली नील आवरण गाछी लग राखल जाइत अछि — हुलासी कहैत छथि 'जखन पानि रंग नहि लेत, तखन नाम बाँचत' — अनन्या लिखैत छथि 'ध्रुवेशक कुर्सी... जे बैसल नहि, ओकरा सेहो उठाबय पड़त।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

अनन्या नव पन्ना 'ध्रुवेशक कुर्सी' खोलैत छथि। मीरा नियम दोहरबैत छथि — 'कमरा खुलत, मुदा भीड़ नहि चढ़त, कुर्सी उठाओल नहि जाएत।' गदाधर उपरका कमराक कुंजी खोलैत छथि, स्वीकार करैत छथि जे रातिमे फोनक घण्टी, पुरुषक धीम आवाज, कुर्सी घसिटबाक ध्वनि सुनने छथि। सीढ़ीक हर पायदानपर अलग-अलग धूलि/निशान भेटैत अछि — 'सीढ़ी सेहो गवाही अछि।' कमरामे देबालक कैलेण्डरपर नब कलमसँ लिखल '१७' अङ्क भेटैत अछि। कुर्सीक पहियामे नील धागा भेटैत अछि, जे पंजीक आवरणक नील रंगसँ मेल खाइत अछि। जमीनपर घसीटल पगचिन्हक घेरा भेटैत अछि — 'अधीर प्रतीक्षा।' मेजपर घण्टी, टूटल चार्जर, रबर-मुहरक डिबिया भेटैत अछि — गदाधर बतबैत छथि जे घण्टी बजलापर मधुकर

अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

बेसी अबैत छल, ध्रुवेशक नामपर दरबाजा खुलैत छल। विनीत झा कहैत छथि — 'जे बैसैत अछि, ओ आदेश पढ़ैत अछि, जे आदेश लिखैत अछि, ओ अनुपस्थित रहैत अछि।' पहिल दराजमे 'माय असगर—आवाज नरम' लिखल पर्ची भेटैत अछि — सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि 'अपराध केवल सूचना नहि, अभिनय सेहो अछि।' दोसर दराजमे बन्द ध्वनि-अभिलेखक भेटैत अछि — विनीत तकनीकी परीक्षणक लेल अलग रखैत छथि — मीरा कहैत छथि 'पीड़ितक आवाज सभक कानक मेलेमे नहि खुलत।' तेसर अटकल दराजमे रिक्त बयान-पत्रक गड्डी भेटैत अछि, जाहिपर पेन्सिलसँ लिखल — 'जँ विरोध करय, स्वीकारोक्ति बनाउ' — आरुणि कहैत छथि 'अपराधी पहिने डर लिखैत अछि, फेर पीड़ितक मुँहसँ स्वीकार लिखबैत अछि।' देबालपर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

'शिकार-नक्शा' भेटैत अछि। कुर्सीक पाछाँ पूजाक अवशेष भेटैत अछि — मीरा कहैत छथि 'जतय धूपक गन्धसँ डर छिपाओल जाए, ओतय पूजा नहि, परदा रहैत अछि।' गद्दाक नीचाँ 'ध्रु.' लिखल लिफाफा भेटैत अछि, जाहिमे महेश्वरनाथक पत्र, मधुकरक नियुक्ति-टिप्पणी, ध्रुवेशक हस्ताक्षर-नमूना, पंजीक प्रति, आ नन्द आरुणिक पुरान प्रतिवेदनक फाटल अंश भेटैत अछि — आरुणि थरथरा जाइत छथि। मीरा कहैत छथि 'गंगाक जलसमाधिसँ अंकीय गिरफ्तारी धरि सूत्र आब स्पष्ट भऽ रहल अछि।' कुर्सीक पहियाक नील धागामे चन्ना गाछीक कातक माटि भेटैत अछि। खिड़कीसँ चन्ना गाछीक ऊपरी पात देखार होइत अछि। साँझमे कुर्सी हटाओल नहि जाइत, केवल पीयर रेखा खिंचल जाइत अछि आ कमरा सील होइत

अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

अछि। सत्यव्रत टिप्पणी लिखैत छथि — 'अपराधक केन्द्र आब कुर्सीसँ बाहर, आदेशक स्रोत दिस बढ़त।' अध्यायक अन्तमे चन्ना गाछी लग कुर्सीक धूलिसँ बनल गोल घेरा पाथरपर अंकित होइत अछि — हुलासी कहैत छथि 'ध्रुवेश बैसल रहो वा नहि, कुर्सी ओकर नाम पुकारि रहल अछि' — अनन्या नव पन्ना 'बन्द ध्वनि-अभिलेखकक स्वर' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर

मीरा नियम राखैत छथि — 'रेकॉर्डर खेलौना नहि... सभक कानकमेलेमे नहि बजत।' विनीत झा प्रक्रिया स्पष्ट करैत छथि। शहरसँ ध्वनि-अभिलेखपरीक्षक अभय आबैत छथि, जूता उतारि सम्मान देखबैत छथि। रेकॉर्डरक स्मृति-पत्रपर 'ध्रु' चिन्ह भेटैत अछि, जे कुर्सीक लिफाफापरक चिन्हसँ मेल खाइत अछि — विनीत सावधान करैत छथि 'चिन्ह समान, पर निर्णायक नहि।' संचिकाक सूची भेटैत अछि — 'नरम_माय', 'कानून_डर', 'बेटा_बाहर', 'स्वीकार', 'कुर्सी_राति', 'नन्द_सूची', 'नया_पंजी'। पहिल संचिका 'नरम_माय' सीमित साक्षीक सोझाँ बजाओल जाइत अछि — नकली मीठ आवाज सुनिते एकटा साक्षी स्त्री रोदन करय लगैत छथि, मीरा तुरंत रोकैत छथि। दोसर बेर छोट अंशमे सुनल जाइत अछि —

अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर

पाछूसँ दोसर पुरुष स्वर 'धमकी नहि, ममता' फुसफुसाइत भेटैत अछि — दू स्रोतक संकेत। 'कानून_डर' संचिकामे कठोर शासकीय स्वर भेटैत अछि — सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि 'राज्यक भाषा चुरायल गेल अछि।' बीचमे 'बिसेसरक प्रकरण पुरान अछि, एकरा एखन नहि खोलू' सुनल जाइत अछि, नन्द आरुणिक मृत्यु-सूची जुड़ैत अछि। 'नन्द_सूची' संचिकामे कियो नन्दक फाटल प्रतिवेदन पढ़ैत सुनल जाइत अछि — पाछूसँ आवाज 'एहि भाग काटू, नाम मात्र चाही' — आरुणि क्रोधित होइत छथि। विरामक बाद 'स्वीकार' संचिकामे मधुकरक दबावभरल स्वर भेटैत अछि, जकरा गदाधर पहचानैत छथि — गदाधर पूरा नाम लिखबाक लेल तैयार होइत छथि। 'कुर्सी_राति' मे केवल कमराक ध्वनि, अंततः एकटा फुसफुसाहट

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर

'नव नाम अलग पंजीमे' भेटैत अछि — नील पंजीक अन्तिम पन्नासँ मेल खाइत अछि। अन्तिम संचिका 'नया_पंजी' मे 'पुरान नाम हटाउ, जे उठि गेल ओकरा मृत मानू' सुनल जाइत अछि — तखने एकटा आवाज 'आरुणि?' पुछैत अछि, दोसर उत्तर दैत अछि 'बच्चा सभ केँ छोड़ू नहि, ओ सभ नामक पहरुआ बनि रहल अछि' — कमरामे साँच डर पसरैत अछि। मीरा तुरंत बच्चा सभक सुरक्षाकेँ प्राथमिकता दैत छथि — अनन्या विरोध करय चाहैत छथि, मीरा समझबैत छथि 'डरब नहि आ बेपरवाह रहब — दुनू अलग बात।' अभय कहैत छथि जे स्वर-चिन्हारि लेल नमूना आवश्यक, केवल अनुमानपर नाम नहि। दिनक अन्तमे रेकॉर्डर बन्द होइत अछि, मुदा प्रतिलिपि आ सूची तैयार रहैत अछि — मीरा कहैत छथि 'स्वर सुनल गेल

अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर

अछि, पीड़ा बजारमे नहि खोलल जाएत।' अध्यायक अन्तमे साँझमे चन्ना गाछी लग रेकॉर्डरक बदला खाली माटिक कटोरी राखल जाइत अछि — हुलासी कहैत छथि 'जे आवाज दोसराक कण्ठ चुरा लेत, ओकरा बाँधब पड़त' — मीरा लिखैत छथि 'स्वर भेटल, पर चेहरा एखन बाकी' — अनन्या नव पन्ना 'स्वरक चेहरा' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

मीरा कहैत छथि — 'कानक भरोसापर ककरो दोषी नहि ठहराओल जाएत, आवाजक संग समय, ठाम, उपकरण, साक्षी आ नमूना सभ जोड़ल जाएत।' अभय आवाजक रेखा (स्वरक भूगोल) क तकनीक बुझबैत छथि। मधुकरक स्वर-नमूना लेल जाइत अछि — पाँच वाक्यमे पाँचमपर अटकि जाइत छथि। ध्रुवेशक नमूना खोजबाक लेल गदाधर पुरान सीडी, डिस्क आनैत छथि — तेसर डिस्कमे हरिहर सेवा केंद्रक उद्घाटनक दृश्य भेटैत अछि, ध्रुवेशक भाषण 'गामक पीड़ा हमर पीड़ा अछि।' अभय ध्वनि-लक्षण चिन्हैत छथि — 'र' सँ पहिने खँखार, 'स' क बाद सीटी, वाक्यक अन्तमे बाहर छोड़ल साँस — मीरा सतर्क करैत छथि 'तुलना लिखू, घोषणा नहि।' सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'आवाजो अभ्याससँ बदलैत अछि, मुदा भयक साँस बदलनाइ

अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

कठिन होइत अछि।' बैंक शाखाक पुरान सभा-सूची आ विडियोमे ध्रुवेश कहैत सुनल जाइत छथि — 'पहिने विश्वास, फेर भय' — जे बन्द रेकॉर्डरमे मधुकरक मुँहसँ सेहो दोहरायल छल। मीरा तीन प्रतिलिपि बनबैत छथि। भीड़ अधीर भऽ नाम घोषित करबाक माँग करैत अछि — मीरा रोकैत छथि 'अधीरतामे साक्ष्य बिगड़ल तँ अपराधीसभ ओही अधीरताकेँ अपन बचावक ढाल बना लेत।' मधुकरकेँ केवल 'पहिने विश्वास, फेर भय' वाक्य सुनाओल जाइत अछि — ओ काँपैत स्वीकार करैत छथि जे आवाज 'ध्रुवेश बाबू जेकाँ' छल — मीरा टोकैत छथि 'जेकाँ नहि, निश्चित छी तँ निश्चित कहू।' मधुकर डरक कारण खुलैत छथि — मायक दवा, बेटाक नौकरी, घरक कागच गुम करबाक धमकी देल गेल छल। मधुकर लिखित बयान दैत

अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

छथि जे निर्देश ध्रुवेशसँ भेटैत छल — 'पीड़ितकेँ पहिने सेवा, फेर कागच, फेर भय, फेर खाता दिस लऽ जाउ।' अनन्या लिखैत छथि — 'चेहरा एक, दाँत अनेक।' अभय तकनीकी प्रतिवेदन तैयार करैत छथि। एकटा वृद्धा गुप्त रूपसँ आबि बतबैत छथि — 'सेवा केन्द्रक मंचपर जे बजैत छल, वैह।' अनन्या नामक जगह दीपक बनबैत छथि — 'जखन नाम नुकायब आवश्यक हो, तखन ओकर इजोत लिखू।' ध्रुवेशक घरपर समनक चर्चा उठैत अछि। सेवा केंद्रक पुरान चित्रमे अनन्या ध्रुवेशक काँधक पाछाँ कारी धब्बा देखैत छथि। साँझमे कटोरीमे धूपक राख मिलाओल पानिमे धुँधला मुख, कुर्सीक पीठ, अँगूठा उठाओल हाथक झलक भेटैत अछि — पनिडुब्बी कहैत छथि 'चेहरा पानिमे नहि, लोकक बयानमे टिकत।' बूढ़बा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

भूत कहैत छथि — 'जकर आवाज दोसराक मुँहमे भरल गेल, ओकर असल मालिक खोजू।' अध्यायक अन्तमे रातिमे दिनक सभ प्रमाण लिफाफामे राखल जाइत अछि। सत्यव्रत अन्तिम टिप्पणी लिखैत छथि — 'आवाजक चेहरा अर्ध-उद्घाटित। चेहरापर हाथ राखने अपराधी आब साँस नुका नहि सकत' — अनन्या नव पन्ना 'साँसक समन' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९४ — साँसक समन

अनन्या नव पन्ना 'साँसक समन' खोलैत छथि। मीरा स्पष्ट करैत छथि — 'समन दण्ड नहि, समन बुलाहट अछि... आब अहाँ अपन साँस, अपन आवाज, अपन हस्ताक्षर, अपन कुर्सी आ अपन पंजीक सम्बन्ध स्पष्ट करू।' विनीत झा समन-कागच तैयार करैत छथि। अभय आवाज-तुलनाक संक्षेप दैत छथि — 'साम्य पर्याप्त अछि, मुदा निर्णायक निष्कर्ष लेल विधिक आवाज-नमूना आवश्यक।' गदाधर, सिपाही, आ आरुणि ध्रुवेशक नब पक्क घर समन देबय जाइत छथि — प्रबन्धक शीतांशु 'बाबू शहरमे उपचार लेल छथि, काल्हि राति गेलाह' कहैत छथि — आरुणि टायरक निशान देखि सन्देह करैत छथि। समन विज्ञापन-पट्टक नीचाँ चस्पा होइत अछि। समन चस्पा होइतहि घरमे फोन बजैत अछि — गदाधर आवाज पहचानैत छथि 'ई वैह

अध्याय १९४ — साँसक समन

घण्टी अछि।' आरुणि लिखैत छथि — 'समन देल गेल नहि, समन देखल गेल... ई अन्तर लिखब।' दुपहर धरि खबरि पसरैत अछि जे ध्रुवेश भागि गेला — मीरा अनुमानक भीड़ रोकैत छथि। साँझमे ध्रुवेशक वकीलक पत्र आबैत अछि — मीरा उत्तर दैत छथि 'आवाज-नमूना स्थगित नहि।' अभय पाँच नियन्त्रित परीक्षण-वाक्य बनबैत छथि, अन्तिम वाक्य 'गोहिक दाँत देहपर, मुदा नामपर नहि' पर सभ चुप भऽ जाइत छथि। बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'समन केवल जीवित अदालतक नहि होइत, मृतकसभ सेहो समन पठबैत अछि' — हुलासी बिसेसर, छोटू, सलामत, नन्द आरुणि आदिक नाम हवामे लिखैत छथि। रातिमे ध्रुवेशक घरपर हलचल — गाड़ी आबैत-जाइत — मीरा प्रमाणक अनुशासन दोहरबैत छथि। विनीत झा बैंककेँ

अध्याय १९४ — साँसक समन

खाता-निगरानीक सूचना पठबैत छथि — सत्यव्रत मेहता कहैत छथि 'आवाजक चेहरा खोजैत-खोजैत हम पाइक नाड़ी धरि पहुँचि रहल छी।' अभय ध्वनि-अभिलेखकमे दूरक मन्दिर-घण्टीजकाँ सूक्ष्म ध्वनि पकड़ैत छथि, जे ध्रुवेशक घरक पूजा-कक्षक स्वचालित घण्टीसँ मेल खुआबैत छथि। रातिमे चन्ना गाछी लग मृतकक नाम पुकारि 'समन-पाठ' होइत अछि। भोरे ध्रुवेशक वकीलक दोसर संदेश — निजी अस्पतालमे नमूना देबाक इच्छा — मीरा अस्वीकार करैत छथि 'विधिक नमूना निर्दिष्ट अधिकृत ठामपर।' अन्तमे शीतांशुक पुरान सहायक मोहन पासवान गुप्त रूपसँ आबि स्वीकार करैत छथि जे ओ दू बेर सीलबन्द लिफाफा पहुँचौने छथि, 'रसीद नहि, मोन नहि' कहल गेल छल — मीरा ओकरा पानि-आसन-समय दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९४ — साँसक समन

सत्यव्रत नन्द आरुणिक डायरीक पाँति उद्धृत करैत छथि — 'जतय रसीद नहि, ओतय स्मृति रसीद बनू।' अध्यायक अन्तमे अनन्या 'रोकल खाता' लिखैत छथि — आरुणि जोड़ैत छथि 'धनक बाट बन्द होइतहि डरक आवाज बदलैत अछि' — रातिमे अनुत्तरित फोनक घंटी तीन बेर बजैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९५ — रोकल खाता

भोरे बैंकक शटर खुलैत काल पहिनहि कतार बनि जाइत अछि — काल्हि रातिक खाता-रोक आदेशक खबरि पसरि चुकल छल। अनन्या लिखैत छथि — 'रोकल खाता।' मीरा विनीत झार्कें नियम बतबैत छथि — 'कोनो खाता केवल नाम-समानतापर नहि रोकल जाएत।' पहिल खाता 'हरिहर सेवा केंद्र सहायता कोष' मे जमा छोट-छोट, निकासी भारी, विवरणमे 'विशेष सेवा' — गदाधर कहैत छथि 'विशेष सेवाक अर्थ ऊपरक निर्देश।' दोसर खाता मधुकरक परिवारक नामपर — बूढ़क खातासँ पाइ निकलि रातिमे नकद बनैत छल। सुरजमुखी देवी (पंजीमे 'सुरजा देवी' लिखल) आगू आबि अपन बकरी बेचि दान करबाक कथा सुनबैत छथि — फोनपर बेटाक गिरफ्तारीक धमकी देल गेल छल — मीरा बच्चा सभकेँ पूरा नाम लिखबाक कहैत छथि — आरुणि

अध्याय १९५ — रोकल खाता

लिखैत छथि 'जकर नाम काटल, ओकर पाइ पहिने काटल गेल।' तत्काल पाँच खाता रोकल जाइत अछि। बैंकक देबालपर लिखल जाइत अछि — 'पीड़ितक जीवन-राशि नहि रुकत, अपराधक चाल रुकत।' रोक-आदेशक खबरि पसरलापर धमकी-भरल फोन आबय लगैत अछि, मधुकरक काँपैत स्वर सेहो — मीरा उत्तर नहि दैत छथि। बैंक-प्रबन्धक मनोज मिश्र स्वीकार करैत छथि जे 'ऊपरक फोन' अबैत छल, 'ध्रुवेश बाबूक निर्देश' कहल जाइत छल — सत्यव्रत मेहता सावधान रहैत छथि 'पुष्टिकरण अपेक्षित।' पाछाँक कमरामे पुरान पर्चीक गठरीमे 'नन्द आरुणि प्रतिवेदन-सहायता' लिखल भुगतान भेटैत अछि — असलमे पाइ ऊपर गेल छल — आरुणि थरथरा जाइत छथि, अनन्या पर्ची सुरक्षित रखैत छथि। दुपहर धरि पाँच खाता रोकल, दू

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९५ — रोकल खाता

आंशिक जाँचमे, ध्रुवेशक निजी 'शोध-न्यास' पर विवाद रहैत अछि — अभय देखैत छथि जे न्याससँ आवाज-अभिलेखक कीनल गेल, विश्रामगृहक बिल देल गेल — विनीत कहैत छथि 'स्वतंत्रता कागचपर, निर्भरता लेन-देनमे।' बाहर भीड़ बढ़ैत अछि, मीरा स्पष्ट करैत छथि — 'रोकल राशि न्याय नहि, केवल बहैत अपराधपर बाँध अछि।' साँझ धरि खाताक नक्शा (गोल घेरा) बनि जाइत अछि — आरुणि कहैत छथि 'ई खाता नहि, डरक चक्र अछि।' हरिहर सेवा केंद्रक सोझाँ 'सेवा बचाउ' नाराक भीड़ जुटैत अछि — मीरा कहैत छथि 'जे सेवा खाता रोकलासँ मरि जाए, से सेवा नहि, कारोबार छल।' रातिमे बच्चा सभक अलग बही राखल जाइत अछि — 'पीड़ितक दावा-पंजी अलग, अपराधक खाता अलग।' बूढ़बा भूत कहैत छथि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९५ — रोकल खाता

— 'धनक धार रोकल गेल, मुदा जलसमाधि एखन बुझायल नहि अछि।' आधा राति ध्रुवेशक न्यासक दू अतिरिक्त खाता (एकमे 'लोक-स्मृति-संरक्षण' नामसँ) भेटैत अछि — अनन्या क्रोधित होइत छथि। भोरे मशीनी फोन-कॉल आबैत अछि, पाछाँ साँस सुनल जाइत अछि। सत्यव्रत अन्तिम टिप्पणी लिखैत छथि — 'अगिला चरण — डूबल स्मृति आ जलसमाधिक अर्थक विधिक/लोक-पाठ।' अध्यायक अन्तमे पनिडुब्बी ओसक बून्द बहीपर राखैत छथि, बून्द पन्नामे डूबैत नहि — बूढ़बा भूत कहैत छथि 'जखन जल नहि, विस्मृति डुबाबैत अछि' — अनन्या लिखैत छथि 'जलसमाधिक अर्थ' — आरुणि जोड़ैत छथि 'जे विस्मृतिमे डूबल, ओकर नाम, आब नाम ऊपर उठत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

अनन्या रातिक अन्तिम पाँति पढ़ैत छथि — 'जे पानिमे डूबल, ओकर देह गेल; जे विस्मृतिमे डूबल, ओकर नाम।' आरुणि तीनू जलक प्रतीकस्वरूप खाली लोटा अनैत छथि — मीरा कहैत छथि 'हम पानि नहि, अर्थ भरय जा रहल छी।' बूढ़ मल्लाह फकीरा साहनीक बेटा काँसक कटोरा लऽ आबि पुछैत छथि — 'देह जँ जलमे जाए, तखनो नाम किनारपर अटकि रहैत अछि, मुदा जखन नामकेँ कागचमे काटि दे... तखन नामकेँ किनार कतय भेटत?' मीरा गामक इनारक पानि ढारैत छथि — घरक भीतर मरल स्त्रीसभक स्मृति लेल। आरुणि कमला-बलानक पानि ढारैत छथि — मेड़ नदी खा गेल किसानसभ लेल। देविका गंगाक जल ढारैत छथि — बिसेसर, सलामत, छोटू सन मजदूरसभ लेल, जिनकर देह गोहि बीच गेल आ प्रतिवेदनमे

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

'अनुपस्थित' लिखल गेल। सत्यव्रत मेहता नन्द आरुणिक दैनन्दिनीसँ 'गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि' पंक्ति पढ़ैत भावुक भऽ जाइत छथि। मीरा स्पष्ट करैत छथि — 'जलसमाधि आइ ध्रुवेशक फैसला नहि, आइ अर्थक संस्कार अछि... न्यायक पहिल नियम — जकरा डुबाओल गेल, ओकरा ऊपर आनू।' अनन्या 'ऊपर आनल नामसभ' पन्ना खोलैत छथि — बिसेसर पासवान, सलामत अंसारी, गोपी महतो, रजनू मंडल — पाँचम नाम 'छोटू' क असल नाम अखनो अज्ञात, खाली ठाम छोड़ल जाइत अछि। आरुणि रेखा खिंचैत छथि — छपाक → रोकल खाता, बीचमे नाम। मीरा दोसर रेखा खिंचैत छथि — लाज → गवाही, बीचमे स्त्रीक कण्ठ — 'जलसमाधि केवल पुलपर नहि भेल, घरक भीतर सेहो भेल।' देविका तेसर रेखा खिंचैत छथि — आवाज

अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

→ चेहरा, बीचमे साँस। एकटा बूढ़ी स्त्री जरल नोटक राख (विश्वासक राख) आनि कहैत छथि — 'बेटा सुरक्षित छल, पर हमर विश्वास मरि गेल।' मीरा राख फेकबाक बदला पंजी लग रखबाक कहैत छथि। बूढ़बा भूत पानिमे पुरान दृश्यक झलक देखबैत छथि, जे सभ मिलि 'ऊपर' शब्द बनैत अछि — मीरा कहैत छथि 'जे-जे डुबाओल गेल — देह, नाम, आवाज, माटि, भरोसा, पेंशन, गवाही, बच्चाक असल नाम — सभ ऊपर।' विनीत झा विधिक भाषामे लिखैत छथि — 'जलसमाधि: शारीरिक मृत्यु मात्र नहि, स्मृति, चिन्हारि, अभिलेख, आर्थिक स्वायत्तता, सामाजिक प्रतिष्ठा आ आवाजक संगठित दमन।' सत्यव्रत कहैत छथि — 'कानून कखनो-कखनो लोकक दुखक पाछाँ चलैत अछि, आइ दुख आगाँ अछि, कानून पाछाँ चलत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

बच्चा सभ कटोरा चारूकात पात राखैत छथि। ध्रुवेशक एकटा सहयोगी शहर छोड़ि देत खबरि अबैत अछि — मीरा कहैत छथि 'आइ डूबल सभकेँ ऊपर आनय दियौ।' साँझमे कटोराक पानि विचित्र उज्जर भऽ जाइत अछि। बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'अहाँसभ आब जलसमाधि नहि, जल-उद्घाटन करैत छी।' रातिमे सत्यव्रत कहैत छथि — 'आरम्भकेँ न्याय धरि आनि देलहुँ' — मीरा पहिल बेर खुलि कऽ कानैत छथि। आरुणि अन्तिम पाँति लिखैत छथि — 'जलसमाधि ओ नहि जे देहकेँ पानि लऽ जाए, जलसमाधि ओ अछि जे नामकेँ लोकक स्मृतिसँ काटि दे, आइ पहिल नाम ऊपर आयल।' अध्यायक अन्तमे नव पन्ना 'ऊपर उठल नाम' खुजैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

भोरे कटोराक पानि स्थिर रहैत अछि। मीरा नियम राखैत छथि — 'आइ जे किछु उठत, ओकरा तमाशा नहि बनाओल जाएत, जे परिवार अनुमति देत, ओहि नामक पाठ सार्वजनिक, जे परिवार चुप रहत, ओकर चुप्पी सेहो सम्मान।' कटोराक चारूकात राखल पातसभमे 'छो', 'टू', 'मुसहरिनक बेटा' सन अधूरा अक्षर भेटैत अछि। सत्यव्रत मेहता नन्द आरुणिक दैनन्दिनीसँ बाल-मजदूरक पंक्तिमे 'शिव... लाल' आ काटल 'छोटू' नाम भेटबैत छथि — विनीत झा श्रम-पंजीसँ माताक नाम 'फूलकली' मिलाबैत छथि। एकटा बूढ़ स्त्री (फूलकली) आगू आबि कहैत छथि — 'हम फूलकली छी... हमर बेटा भागल नहि छल, बस ई पढ़ू।' अनन्या लिखैत छथि — 'शिवलाल उर्फ छोटू, माय फूलकली, पुल-कार्यस्थलपर मृत/गुम, पंजीमे

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

अनुपस्थित लिखल' — 'अनुपस्थित' काटि 'जलमे समायल, नाम उपस्थित' लिखैत छथि। फूलकली माथ झुकबैत छथि — 'एते बरख बाद तोहर नाम घर घुरल, बेटा।' बिसेसर पासवानक नाम पिताक नामक भिन्नताक कारण फेर जाँचल जाइत अछि — पोताक गवाहीसँ 'मातृ-स्मृति अनुसार नाम स्थिर' कएल जाइत अछि — विनीत नब स्तम्भ बनबैत छथि। सुरजमुखी देवी अपन नाम-शुद्धिक आग्रह करैत छथि — मीरा कहैत छथि 'मृतकक नाम ऊपर उठत, आ जीवितक नाम धोइत सेहो चलत, दूटा काज अलग नहि।' दुपहरमे ध्रुवेशक वकील 'भावगत दबाव' क शिकायत करैत छथि — मीरा उत्तर दैत छथि 'दबल नामक सार्वजनिक पुनर्स्थापन... न्यायक वाक्य आगि नहि, दीप हो।' महेश्वरनाथक पुरान मुहरवाला सहायता-प्रतिज्ञा पन्नामे

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

हस्ताक्षरक ठाम खाली भेटैत अछि — फूलकली कहैत छथि 'हमर बेटा पानिमे, कागच ऊपर; आब कागच नीचाँ आबि गेल।' सत्यव्रत कहैत छथि — 'झूठा पूरा नाम देब दोसर हत्या अछि' — अनन्या 'अज्ञात' काटि 'नाम-अपूर्ण, खोज जारी' लिखैत छथि। आरुणि 'प्रतीक्षा-टोकरी' राखैत छथि, देविका लाल सूत बाँधैत छथि। साँझमे श्रम-विभागक भिजल पंजीमे मृतक मजदूरसभक भुगतानपर मुंशीक एकहि हस्ताक्षर भेटैत अछि — विनीत कहैत छथि 'मजदूरसभक मजदूरी मृत्यु बादो केओ उठौलक।' फूलकली माटि लऽ कटोराक कात राखैत छथि — 'नाम पानि सँ आयल, आब माटिपर टिकाओ।' बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'नाम ऊपर उठलासँ मृतक मुक्त नहि होइत, जीवितक काज शुरू होइत अछि।' रातिमे ध्रुवेशक घरक ऊपरक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

खिड़कीमे असामान्य चहल-पहल देखार होइत अछि — मीरा अनुमान नहि, केवल देखल बात लिखबाक कहैत छथि। अभय निगरानी राखैत छथि, मुदा पीछा नहि करबाक शर्त रखैत छथि — सत्यव्रत कहैत छथि 'न्याय जे प्रक्रिया तोड़ि जीतैत अछि, ओ जीत नहि, अगिला अन्यायक बीज अछि।' अनन्या दिनक अन्तमे लिखैत छथि — 'आइ ऊपर उठल नाम सभक पहिल सूची बनल।' मीरा चेतावनी दैत छथि — 'अन्त भावुक हो, पर बन्द नहि।' फूलकली छोटूक पात घरमे नहि, थारीमे छोड़ि देत छथि — 'एतय राखू, जाहिसँ सभ ओकरा नाम सँ पुकारत।' अध्यायक अन्तमे रातिमे दूर शहरसँ गाड़ीक आवाज आबैत अछि — निगरानी-युवक सूचित करैत छथि जे ध्रुवेशक घरक पाछाँक फाटकसँ लोहाँक संदूक गाड़ीमे राखल गेल आ गाड़ी कच्चा

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

बाट दिस मुड़ल — मीरा कहैत छथि 'आब अनुमान नहि, कार्रवाईक क्रम' — अनन्या नव पन्ना 'अपराधीक धरती' खोलैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

खण्ड २ • मुख्य कथा

1 / 4

अनन्या नव पन्ना खोलैत छथि — मीरा कहैत छथि 'आइ राति हमर तामस पएर नै बनत, हमर पएर साक्षी बनत।' अभय पीछा नहि, केवल दृश्य-साक्ष्यक निर्देश दैत छथि, तहसीलक रात्रि-दलकेँ सूचना दैत छथि। ध्रुवेशक गाड़ी खरिहानी धारक कच्चा मोड़मे बालुमे धँसि जाइत अछि। मीरा भीड़केँ रोकैत छथि — 'जे बचाबय दौड़त, से छिपेबाक सहयोग बनि जाएत।' दीपक इजोतमे ध्रुवेश, दू सहायक, संदूक धकेलैत देखार होइत छथि — अनन्या समय-स्थान लिखैत छथि। ध्रुवेश दूर गाछीक छाहरि देखैत सिहरि उठैत छथि — बूढ़बा भूतक आवाज सुनैत छथि 'जकरा नाम माटिसँ काटल, ओकर पएर आब माटिपर फँसल।' ध्रुवेश चिचिआइत छथि — 'ई हमर निजी वस्तु अछि' — मीरा उत्तर दैत छथि 'निजी वस्तु राति

अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

पाछाँक फाटकसँ भागैत नै।' सुरजमुखी देवी सेहो पहुँचैत छथि — 'हम चाहैत छी पेटी हमर आँखिक सोझाँ भागि नै जाए।' चौकीक दू कर्मचारी पहुँचि सूची बनबय लगैत छथि। ध्रुवेशक फोन बेर-बेर बजैत अछि, मीरा उच्च स्वरमे बजाबय कहैत छथि, ध्रुवेश काटि दैत छथि। सूचीमे गाड़ी नम्बर, समय, संदूकक दशा, माटिक चिन्ह दर्ज होइत अछि। ध्रुवेश तलाशी-अधिपत्र माँगैत छथि — विनीत झा जब्ती-पंचनामाक प्रक्रिया समझबैत छथि, भीड़क अधीरता मीरा रोकैत छथि — 'अपराधीक अधीरताकेँ न्याय अपन अधीरतासँ उत्तर नै देत।' फूलकली माटि उठा माथपर लगबैत छथि — 'ई धरती ओकर पएर जानैत होएत।' मुहर लगबाक समय ध्रुवेश पाछाँ हटैत छथि, जूता माटिमे अटकल रहि जाइत अछि, नंग पएर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

बाहर निकलैत अछि — भीड़मे दबायल हँसी उठैत अछि, मीरा रोकैत छथि 'नंग पएर लोककेँ अपमानित नै करब।' अभय पएरक निशानक चारूकात काँटी गाड़ैत छथि। ध्रुवेश झुँझलाइत छथि — 'अहाँ सभ हमरा दोषी बना देलहुँ' — सत्यव्रत मेहता उत्तर दैत छथि 'जँ अहाँ निर्दोष छी, ई धरती अहाँक पक्षमे सेहो बोलेत, मुदा भागैत पएर निर्दोषताक भाषा कम जानैत अछि।' संदूक सरकारी मुहरमे बन्द भऽ चौकीक गाड़ीपर लऽ जाओल जाइत अछि, उठौलापर बालुमे चौकोर गाढ़ दाग बचि जाइत अछि — मीरा कहैत छथि 'धरती रंग नै, भारसँ चिन्हित करैत अछि।' बूढ़बा भूत कहैत छथि — 'अपराधी धरती छोड़ि नै भागै, ओकरा माटि चाही, घर चाही, कोठरी चाही, खाता चाही, बस एक दिन वैह धरती ओकर पएर पढ़ि

अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

लैत अछि।' भोरमे मीरा गाछी घुरबाक कहैत छथि, कोनो नारा नहि — 'जे राति धरती साक्षी देलक, ओहि राति पर शोर चढ़ाएब अन्याय होएत।' फूलकली छोटूक पातक कात खरिहानीक माटिसँ बिन्दु बनबैत छथि — 'नाम पानिसँ ऊपर उठल, आब पएर देलहुँ।' सत्यव्रत मेहता लिखैत छथि — 'न्याय केवल दोष सिद्ध करब नै, धरतीकेँ बोलबाक अवसर देब सेहो अछि।' अध्यायक अन्तमे भोर उगलापर ध्रुवेशक जूता माटिमे अटकल रहि जाइत अछि, ओसक बून्द ओहिपर चमकैत अछि — 'कखनो-कखनो अपराधी भागि जाइए, पर ओकर पएर धरती धरि छोड़ि दैत अछि, आ जतय पएर छूटि जाए, ओतय नाम पहुँचयमे देर नै लगैत।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

मीरा सभकेँ भोरे कहैत छथि — 'संदूक खुलत, मुदा उत्सव जेकाँ नै।' चौकीक कमरामे संदूकक मुहर काटल जाइत अछि — गंगाक गाद, पुरान कचहरी, नोट, मजदूरक पसेनाक मिश्रित गन्ध बाहर आबैत अछि। मीरा कहैत छथि 'ई पेटी वस्तु नै राखैत छल, ई समयसँ डर राखैत छल।' ऊपरक तहमे पुरान गमछा, सूखल नारिकेल पात, लाल धागासँ बाँधल पोटली भेटैत अछि — फूलकली गमछा देखि काँपैत छथि, मुदा दर्जसँ पहिने हाथ नहि लगबैत छथि। पोटलीमे मजदूरी पंजीक फाटल पन्ना भेटैत अछि — सत्यव्रत मेहता पढ़ैत छथि 'शिवनाथ सदा, वयस सोलह, माताक नाम फूलकली, दिहाड़ी दर्ज तीन दिन, भुगतान शून्य, टिप्पणी अनुपस्थित' — फूलकली धीरेसँ कहैत छथि 'छोटू।' अनन्या लिखैत छथि — 'छोटूक असली

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

नाम पुष्ट: शिवनाथ सदा।' दोसर तहमे संचिकासभ भेटैत अछि। 'जलसमाधि—पुरान' मे नन्द आरुणिक दैनन्दिनीक प्रतिलिपि भेटैत अछि — 'गोहि देह खाइत अछि, नाम नै' — तीन सय नामक अनुमानित सूची, खाली ठाममे लाल स्याहीसँ 'अतिशयोक्ति' लिखल — सत्यव्रत भर्रायल स्वरमे कहैत छथि 'जखन अपराधी प्रमाण नै काटि पाबैत, ओ पीड़ाकेँ अतिशयोक्ति कहै छै।' रानी खाता संचिकामे बीससँ बेसी स्त्री-नाम भेटैत अछि — एक स्त्री जमुना कहैत छथि 'हम जीवनमे बैंक नै गेलहुँ।' मोमक साँच भेटैत अछि — अनन्या लिखैत छथि 'अँगूठाक चोरी, हाथक अपमानसँ बेसी, अस्तित्वक चोरी।' अंकीय आदेश संचिकामे धमकीक तैयार पटकथा भेटैत अछि — मीरा कहैत छथि 'ई अपराध धनक नै, मनक अपहरण अछि।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

संदूकक कोनामे तीन मोबाइल, पाँच सिम, ध्वनि-अभिलेखक भेटैत अछि, जाहिमे मधुकरक स्वर सुनल जाइत अछि — ध्रुवेश इनकार करैत छथि 'ई आवाज हमर नै' — सत्यव्रत शांत रहैत छथि। संदूकक तलमे थैलीमे कोरा पत्र-मस्तक, मुहर, आ नक्शा भेटैत अछि, बीचमे 'चन्ना' नामक बिन्दु — देविका उत्तर दैत छथि 'हमरासभ लेल ई सुननिहार गाछी।' अन्तिम पन्नामे बटुकनाथ हरिहरन, महेश्वरनाथ, मधुकर, ध्रुवेशक नामक शृंखलाक बाद 'भविष्य उत्तराधिकारी' नामक रिक्त ठाम भेटैत अछि — मीरा काँपैत छथि 'अपराध व्यक्तिसँ पैघ होइ छै, जँ खाली ठाम छोड़ल जाए, तँ अगिला ध्रुवेश जनमि जाइए' — सत्यव्रत रिक्त ठाम सार्वजनिक करबाक निर्णय दैत छथि। सभ वस्तु सूचीबद्ध, मूल सुरक्षित,

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

प्रतिलिपि तीन भागमे बनैत अछि। साँझमे संदूक उनटा राखल जाइत अछि, रिक्त। फूलकली बाहर निकलैत छथि — काल्हि धरि छोटूक माय छली, आब शिवनाथ सदाक माय। रातिमे चन्ना गाछी लग सभ प्रमाण अलग-अलग पाथरपर राखल जाइत अछि। बूढ़बा भूत ऊपरहि रहैत छथि — 'आब जीवितसभ अपने करथि।' मीरा अन्तिम प्रश्न रखैत छथि — 'ई गाछी स्मारक बनत कि पहरुआ' — सत्यव्रत कहैत छथि 'स्मारक मृतककेँ ठाम दै छै, पहरुआ जीवितकेँ काज।' अनन्या लिखैत छथि 'नामक पहरुआ।' आरुणि जोड़ैत छथि — 'अन्त तखन आरम्भ होइ छै जखन गाम अपन आँखि बन्द करबाक अधिकार छोड़ि दे।' अध्यायक अन्तमे भोरसँ पहिने चन्ना गाछीक सभसँ पुरान पात टूटि खसैत अछि — फूलकली ओकरा शिवनाथक पन्नाक कात राखि

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

कहैत छथि 'आब ओकरा पहरा देब।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २०० — नामक पहरुआ (उपन्यासक अन्तिम अध्याय)

भोरे मीरा गाछी लग सभसँ पहिने पहुँचि कहैत छथि — 'आइ अन्तिम अध्याय लिखल जाएत, मुदा ई अन्त नै, ई ओ पन्ना अछि जाहिपर हमसभ आँखि खोलि कऽ अपन-अपन नामक जिम्मेदारी लेब।' अनन्या सभ अध्यायक शीर्षक क्रमवार पढ़ैत छथि — पीड़ित आ अपराधी दुनूक नाम पढ़ल जाइत अछि, कारण 'अपराधीक नाम बिना अपराधो अधूर रहै छै।' फूलकली शिवनाथक पन्नाक प्रतिलिपि पातक कात राखि कहैत छथि — 'ई हमर बेटाक मृत्युपत्र नै, ई ओकर घर-घुरबाक पन्ना अछि।' सत्यव्रत मेहता कहैत छथि — 'जँ संचिका अदालत जाए आ नाम गाममे नै बाँचय, तँ निर्णय आधा... आइसँ दुनू आधा एक-दोसराकेँ खोजत।' गामक नेनासभ गोल घेरा बनबैत छथि — एकटा नेना कहैत छथि — 'गोहि देह खाइत अछि, नाम नै' — ई

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २०० — नामक पहरुआ (उपन्यासक अन्तिम अध्याय)

वाक्य भविष्यक आदर्श वाक्य बनि जाइत अछि। कटोराक पानिमे गामक वर्तमान चेहरा देखार होइत अछि — मीरा कहैत छथि 'पहरा मृतकक नामपर आरम्भ भेल, मुदा पहरा जीवितक देह धरि पहुँचबाक चाही।' अभय पुछैत छथि — 'हमसभ अपन भीतरक मौनक नाम कतऽ राखब?' सत्यव्रत 'मौनक नामावली' खोलैत छथि — डर, लाभ, दिखावा, तिथिपर भरोसाक अति, कागचपर आँखि मूँदबाक आदत, गरीबक दुःखपर चित्र-यन्त्र, पीड़ाक बाजार। दुपहरमे गामक लोक गाछीक चारूकात माटिक पट्टिका लगबैत छथि, प्रत्येकपर एक नाम, अधूरा नामक लेल रिक्त ठाम — फूलकली दीप राखि कहैत छथि 'जेकर नाम नै भेटल, ओकरा अन्हार नै देब।' साँझमे अदालतक बूढ़ मुवक्किल आबि कहैत छथि — 'बरामदामे आइ पहिल बेर केओ पूछलक —

अध्याय २०० — नामक पहरुआ (उपन्यासक अन्तिम अध्याय)

कतेक तिथि खएलहुँ?' रातिमे सभ अध्यायक शीर्षक फेर पढ़ल जाइत अछि। अन्तिम शीर्षक 'नामक पहरुआ' पढ़लाक बाद गाम-भरिक लोक गाछीक बाहरी घेरापर चलैत छथि, प्रत्येक घरसँ एक पाथर, एक अक्षर — सभ मिलि वाक्य बनैत अछि 'नामक पहरा जीवित राखू।' बूढ़बा भूत अन्ततः डारिसँ उतरि रिक्त ठामपर अपन नहसँ किछु लिखैत छथि — 'जे नाम एखन जन्मल नै।' पनिडुब्बी गंगाक गाद कटोरामे मिलबैत छथि, भँवरमे गोहि देखार होइत अछि, जकर दाँतक बीच अक्षर अटकल छल — बाहर आबि तैरैत अक्षर फेर वाक्य बनबैत अछि 'गोहि देह खाइत अछि, नाम नै' — फूलकली पहिल बेर खुलि कऽ कानैत छथि, गामक स्त्रीसभ हुनका घेरि लैत छथि। सत्यव्रत अन्तिम गवाही लिखैत छथि — 'आइ गढ़ नारिकेल नामक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २०० — नामक पहरुआ (उपन्यासक अन्तिम अध्याय)

पहरुआ बनल... कोनो देह बिना नाम नै।' देविका आदेशकेँ गीतमे बदलैत छथि। भोरक पहिने मीरा रिक्त संदूकक प्रतिलिपि-छाया गाछीक बाहर राखि कहैत छथि — 'संदूक स्मारक नै, चेतावनी।' सूर्य उगलापर बच्चा सभ कबड्डी/नाम-पाठ खेलय लगैत छथि — 'जे नाम बिसरि जाए, ओ फेर सीखबाक पारीमे जाए।' गाम धीरे-धीरे अपन दैनिकीमे घुरैत अछि, मुदा देहरीपर एक वाक्य लिखल रहि जाइत अछि — 'नामक बिना कोनो कथा पूर्ण नै।' बा गाछीक निचला डारिपर एकटा रिक्त कपड़ा टाँगि देत छथि — 'जखन कोनो नव अन्याय पहिल बेर काँपत, एहि कपड़ापर ओकर नाम लिखब।' अन्तमे मीरा कटोरा उठा अनन्याकेँ, अनन्या आरुणिकेँ, आरुणि एकटा छोट बच्चाकेँ दैत छथि — बच्चा एक बून्द माटिपर रखैत छथि,

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २०० — नामक पहरुआ (उपन्यासक अन्तिम अध्याय)

जाहिसँ नव घेरा बनैत अछि — कथा फेर आरम्भ होइत अछि, एहि बेर भूतसभ खेलय नहि, देखय अबैत छथि, जीवितसभ खेलैत छथि, मृतकसभ पहरा दैत छथि। बूढ़बा भूत डारिपर घुरि पहिल बेर निर्णायकक डण्डा माटिपर राखि कहैत छथि — 'आब निर्णय जीवित करथि।' चन्ना गाछीक एकटा नव हरियर बिन्दु उगैत अछि — 'पहरा जँ जीवित रहय, तँ सूखल ठूँठो भीतरसँ कोपल राखि सकै छै।' उपन्यास सात छोट अन्तिम सूत्र-वाक्यसँ समाप्त होइत अछि ('पोथीक अन्तिम स्वर') — जाहिमे कहल गेल अछि जे डूबल नाम ऊपर उठि अपन घर घुरल, शिला बाजय लागल कारण ओहिपर सभक नाम लिखायल अछि, गोहि-ग्राह गेल मुदा बच्चाक हाथ रहि गेल जे नाम मँगने छल, गाम अपन इतिहास मोन राखलक तँ नारिकेल गाछ फेर फल

अध्याय २०० — नामक पहरुआ (उपन्यासक अन्तिम अध्याय)

देबय लागल, सत्य बीआ फूटल आ नाम जल उठल, आ अन्तमे — 'ई कथा एतय समाप्त नै होइ छै, ई ओहि मुँहसभमे जीवित रहै छै जे कहै छै — हम छी।'

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

परिशिष्ट

तीन परिशिष्ट : लोककोश, गीत आ अन्तःकथा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

परिशिष्ट-१ — गढ़ नारिकेल लोककोश

भूमिका स्पष्ट करैत अछि जे शून्य अध्यायक मुख्य कथा तेज करबाक लेल संक्षिप्त कएल गेल लोक-सांस्कृतिक विस्तृत सामग्री एतय मूल क्रममे सुरक्षित राखल गेल अछि। परिशिष्टक पहिल भाग (गद्यात्मक निबन्ध) गढ़ नारिकेलक लोक-ज्ञान आ लोक-संस्कृतिक सैद्धान्तिक विशेषता सभ विस्तारसँ बुझबैत अछि — (१) मुँहजबानी संचरण (बा सँ नातिन, माए सँ बेटी, अनुभवसँ अनुभव), (२) सामूहिक स्वामित्व (गीतक कोनो एक लेखक नहि, लोक ओकर रचयिता), (३) स्थानिक चिन्हापरची (नदी, माटि, गाछ सभ गढ़ नारिकेलक विशिष्ट भूगोलसँ बान्हल), (४) बहैत-बदलैत रूप (परम्परा स्थिर रहितो मरैत, बदलैत तेँ जीवित — नाओ-बैलगाड़ीक ठाम अब राहत-नाव, पुल, मोबाइल-सन्देश)। भूगोल, माटि,

परिशिष्ट-१ — गढ़ नारिकेल लोककोश

गोबर-नीपल आँगन, ध्वनि-परिदृश्य (छपाक, पुकार-उत्तर), ऋतु-चक्र, दैनिक विरामक सांस्कृतिक महत्त्व, पेशागत विभाजन (बढ़ही, कमार, कुम्हार, चर्मकार, डोम आदि) आ सामाजिक विषमताक आलोचना (जे ढोल बिना संस्कार अधूरा, ओकर बनौनिहारकेँ आदर किएक नहि), 'ईलम' (देहगत अनुभव-ज्ञान), श्रम-गीतक ताल-सम्बन्ध, मुँहजबानी सत्यक बहुस्तरीय स्वरूप, वीरगाथाक नैतिक आदर्श, गीतक कार्यशील स्वभाव, भावभूमिक विस्तार, बोलचालक भाषा, टेक-पदावृत्तिक रूप — इन सभ विषयपर विस्तृत चर्चा अछि। निबन्धक अन्तमे उपन्यासक मुख्य पात्रसभ (नन्द आरुणि, उज्ज्वल झा, बा, अनन्या, आरुणि) कऽ एहि लोक-संस्कृतिक जीवित वारिसक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि, आ स्पष्ट कएल गेल

परिशिष्ट-१ — गढ़ नारिकेल लोककोश

अछि जे 'गोहि सभक बीच जलसमाधि' एहि लोक-संस्कृतिक आधुनिक महागाथा अछि। निबन्धक अन्तिम पाँति सीधा उपन्यासक पहिल अध्याय (चन्ना गाछीक कबड्डी) सँ जोड़ैत अछि। परिशिष्टक दोसर, बड़ पैघ भाग प्रत्येक सांस्कृतिक प्रसंगक लेल एकटा छोट 'खिस्सा' (गद्य-कथा-सार, अक्सर उपन्यासक पात्रसभ जेना अनन्या, आरुणि, बा, सरयू, नन्द आरुणि, उज्ज्वल झा सहित) आ एकटा सम्बद्ध 'गीत' (लोकधुनसहित पूर्ण गीत) क जोड़ी प्रस्तुत करैत अछि — लगभग साठि-सत्तरि एहन जोड़ी अछि, जे गढ़ नारिकेलक सम्पूर्ण जीवन-चक्रकेँ आवृत्त करैत अछि: घर-वस्तु आ स्थान (खण्डहरक ईंट, गहबरक दीप, पुरान इनार, डबराक चान, घाटक लाल पगड़ी), जल-यात्रा (नाव खेब, नाव खिंचब, जाल समेटब),

परिशिष्ट-१ — गढ़ नारिकेल लोककोश

बाल्यकाल (लोरी, मुड़न, उपनयन, नामकरण), कृषि-चक्र (माटि काटब, बान्ह मरम्मति, पोखरि उराहब, बीआ चुनब, खेत जोतब, मेड़ बनाएब, वर्षा-प्रतीक्षा, सोहनी/निकौनी, पटौनी/सिंचाई, रोग-पहचान, कटनी, बोझा उठाएब, दाउन, मड़ाइ, भण्डारण), मछैर आ पशुपालन, चरखा-कोल्हु, कारीगर-औजार, हाट, रौदी-अकाल, विवाह-संस्कार (गौना, दाम्पत्य, दहेज-विरोधी गारी, स्त्री-व्यंग्य गीत, पातरि-खोइँछ सजावट), गर्भ-मातृत्व, वृद्धावस्थाक ज्ञान, आँगन-नीपब, व्रत-कथा, रसोइक ध्वनि, छोट पहरा (पशु-पक्षीक देखभाल), मिथिला चित्रकला, माटिक पूजा-वस्तु, सिलाइ-कढ़ाइ, धार्मिक-पर्व (मधुश्रावणी, सामा-चकेवा, भगवती-पूजा, घरक देवता, ग्राम-देवता/ गहबर, धर्मराज, शिव-नचारी,

परिशिष्ट-१ — गढ़ नारिकेल लोककोश

विष्णु-हरिगीत, दुर्गापूजा-भसान, सूर्य-छठि, मर्सिया-झरनी, फकीरी-खिस्सा), आ अन्तमे मौखिक-साहित्यिक विधा सभ (पहेली, उपनाम, अतिशयोक्ति, नकल, तात्कालिक तुक, उलटबाँसी, खिस्सा-कहबाक गोष्ठी, पुकार-उत्तर) आ परदेश-शहरमे गढ़ नारिकेलक संस्कृतिक सुरक्षा। प्रत्येक खिस्सा-गीत जोड़ीमे एकटा सामाजिक-नैतिक शिक्षा निहित अछि — जेना जल-न्याय (पटौनीक गीत), स्त्री-श्रमक मान (सोहनी, भगवती), गरीबक हिस्साक रक्षा (भण्डार, रौदी), दहेज-विरोध, सामूहिक जिम्मेदारी (बान्ह-मरम्मति, गहबर), आ नामक महत्त्व (नामकरण, धर्मराज)। समग्र रूपेँ ई परिशिष्ट उपन्यासक केन्द्रीय विषय — 'नाम', 'सामूहिकता', आ 'श्रमक मर्यादा' — क सांस्कृतिक जड़ि आ

परिशिष्ट-१ — गढ़ नारिकेल लोककोश

पृष्ठभूमि प्रस्तुत करैत अछि, जे मुख्य कथाक हरेक अध्यायमे संक्षिप्त लोकगीतक रूपमे झलकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

परिशिष्ट-२ — अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत

भूमिका स्पष्ट करैत अछि जे मुख्य कथामे अध्याय १०१–१०४क 'अनाम ग्रह' प्रसंग स्वप्न-दृष्टान्त रूपमे सघन कएल गेल छल; एतय ओकर सभटा मूल लोकगीत अक्षुण्ण रूपमे राखल गेल अछि। ई परिशिष्ट विशुद्ध गीत-संग्रह अछि, गद्य-कथा नहि — चारि प्रतीकात्मक अध्यायक भावभूमि गीतेंमे बहैत अछि। अध्याय १०१ — 'अनाम ग्रहक आमन्त्रण': दूर ग्रहक बुलाहटपर गामक लोक यात्राक तैयारी करैत अछि। गीतमे प्रश्न उठैत अछि — यात्रामे संग की लऽ जाएब? उत्तर — धन-हथियार नहि, बल्कि 'माटिक गन्ध, मायक गीत, नामक दीप।' दोसर गीतमे ग्रह स्वयं पुछैत अछि 'संग की आनब?' — उत्तर होइत अछि नामक साँस, माटिक गन्ध, नेनाक हाथ। एकटा प्रतीकात्मक दृश्य उभरैत अछि जाहिमे गामक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

परिशिष्ट-२ — अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत

धूलिसँ बच्चाक खेल (कबड्डी) उठि ताराक कक्षा धरि पहुँचि जाइत अछि, आ जखन बच्चा 'उपस्थित' कहैत अछि तँ काँचक अदृश्य देबालमे दरार पड़ैत अछि — मानू पृथ्वीक नाम-संस्कृति दूर ब्रह्माण्ड धरि गूँजि रहल होअय। अध्याय १०२ — 'ग्रहक बीच कबड्डी': कबड्डीक खेलकेँ रूपकक रूपमे विस्तारित कएल गेल अछि — चारि 'पारी' (पृथ्वी लेल, मानवता लेल, न्याय लेल, सह-अस्तित्व लेल) क कल्पना। खेलाड़ीकेँ आग्रह कएल जाइत अछि जे साँस बान्हल राखी, नाम बाजी, मुदा अपन जड़ि नहि बिसराबी। दोसर गीतमे अनन्या लिखैत छथि जे रेखा पृथ्वीसँ दूर गेल, मुदा साँस नहि टूटल — नियम वएह रहल जे 'जकर स्मृति टूटल नहि, ओकर पग अडिग।' बच्चा फेर सँ 'कबड्डी' नहि, 'उपस्थित'

परिशिष्ट-२ — अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत

कहैत अछि, आ अदृश्य देबालमे पहिल दरार चमकैत अछि। अध्याय १०३ — 'अनाम ग्रह पर नाम-पाठ': ताराक बीच तनल एकटा 'नामक झूला' क बिम्ब — एक छोर पुरखाक हाथमे, दोसर छोर नेनाक हाथमे — जे स्मृति, प्रेम आ जिम्मेदारीक तीन लड़िसँ बनल अछि। दोसर गीतमे कहल गेल अछि — जतय नाम नहि, ओतय जीवनक साँस आधा रहि जाइत अछि, आ क्रमांकित घरमे मनुष्य उदास रहैत अछि। अनाम देबालपर नाम उच्चारण करितहि दरार पड़ैत अछि, आ बच्चा पृथ्वी घुरि कऽ कहैत अछि — 'एतहि हमर संसार।' अध्याय १०४ — 'गढ़ नारिकेल फेर पृथ्वी चुनैत अछि': कथाक प्रतीकात्मक निष्कर्ष — शीशा-महल क तुलनामे अपन 'कादो' चुनबाक निर्णय। गीत जोर दैत अछि — पृथ्वी चुनब दीनता नहि, प्रेमक प्रमाण

परिशिष्ट-२ — अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत

अछि; एतय श्रमक पसीना अछि, जनक सम्मान अछि; भागब कायरता होयत, बदलब प्रेमक प्रमाण। अन्तिम गीतमे सामूहिक स्वरमे उद्घोष होइत अछि — 'चुनलहुँ हे पृथ्वी, फेर-फेर पृथ्वीए चुनलहुँ' — कमला-बलानक गन्ध, फाटल मेड़, अपन हवा-माटि, नामक देहरीकेँ क्रमांकित आवास आ ऑक्सीजनक करारसँ श्रेष्ठ मानल जाइत अछि। अन्तमे कहल गेल अछि जे ई अन्तिम पन्ना नहि, 'अगिला पहराक ठौर' अछि। समग्रतः ई परिशिष्ट विज्ञान-कल्पना जकाँ फ्रेमवर्कमे उपन्यासक मूल दर्शन (नाम, स्मृति, माटिसँ जुड़ाव, सामूहिक जिम्मेदारी) कऽ ब्रह्माण्डीय स्तरपर विस्तारित करैत अछि, आ पुष्टि करैत अछि जे 'नामक पहरा' केवल गामक सीमा धरि सीमित नहि, अपितु एकटा सार्वभौमिक नैतिक

परिशिष्ट-२ — अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत

सिद्धान्तक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

परिशिष्ट-३ — न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा

भूमिका स्पष्ट करैत अछि जे मुख्य अध्याय सभमे कथासँ सम्बन्धित संक्षिप्त 'दार्शनिक अन्तर्ध्वनि' राखल गेल अछि (जे प्रत्येक अध्यायक अन्तमे एक-दू पाँतिमे देखार होइत अछि); एतय ओ सभ मूल शास्त्रीय दृष्टान्त आ सिद्धान्त अध्यायानुसार (अध्याय ५७ सँ अध्याय २०० धरि, कुल १४४ खण्ड) पूर्ण विस्तारसँ सुरक्षित राखल गेल अछि। ई परिशिष्ट नव्य-न्याय दर्शन (विशेषतः आचार्य गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि आ ओकर टीका-परम्पराक ज्ञानमीमांसा) क सम्पूर्ण सैद्धान्तिक ढाँचाकेँ लघु-कथाक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। आरम्भिक खण्ड (अध्याय ५७–७६ धरि) आचार्य गंगेश उपाध्यायक अर्ध-काल्पनिक जीवनी-शैलीमे लिखल अछि — बाल गंगेश गढ़ नारिकेलक पुस्तकालयमे

परिशिष्ट-३ — न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा

कादम्बरीक अपूर्ण अन्तिम पन्नाक प्रश्न सुनैत छथि (मंगलाचरणक कार्य विघ्न-नाश अछि, ग्रन्थ-समाप्ति नहि), पञ्जीक जातिगत लाल-चिन्हसँ ग्रस्त भऽ प्रमाण-आधारित यथार्थताक विचार करैत छथि, चर्मकारिणीक दीप लग वस्तुक यथार्थ धर्म आ जन्मगत उपाधिक भेद सीखैत छथि, मामागामक पाठशालामे दुआरि लग बैसि चिलम भरैत-भरैत तर्कशास्त्र सीखैत छथि, आ श्मशानमे तान्त्रिकसँ भेंटक लोककथाक माध्यमसँ 'ज्ञानक प्रमाण' क प्रश्न उठाबैत छथि। एहि जीवनी-खण्डमे उपन्यासक आधुनिक पात्रसभ (कमला, माधव, राघव, चन्द्रपाल, सत्यव्रत मेहता, मीरा, देविका) क समानान्तर दृष्टान्त सेहो जोड़ल गेल अछि — जेना सीप-चानीक भ्रम (माधवक कथा, अख्याति-अन्यथाख्याति सिद्धान्त),

परिशिष्ट-३ — न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा

पीयर शंखक दृष्टान्त (जौण्डिस-रोगीक भ्रम, दोष-सिद्धान्त) आदि। परिशिष्टक बहुसंख्य मध्य आ उत्तर भाग (लगभग अध्याय ८०–२०० धरि) पाँच आवर्ती संरचनात्मक ढाँचा प्रयोग करैत अछि — 'गामक चौपालमे चर्चा उठल', 'कक्षामे गुरु प्रश्न रखलनि', 'गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल', 'शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल, गुरु घटनाक कल्पना करेलनि', आ 'एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक' — ई पाँचो टेम्पलेट बारम्बार दोहराओल जाइत अछि, जाहिमे भिन्न-भिन्न न्याय-सिद्धान्तक विषय-वस्तु भरल जाइत अछि। एहि खण्डमे प्रत्यक्ष, स्मृति, प्रत्यभिज्ञा, तत्त्व-इदन्ता, लक्षणा, षष्ठ्यर्थ, समुच्चय-द्वन्द्व, अनिष्टापादन, हेत्वाभास,

परिशिष्ट-३ — न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा

विशेषण-विशेष्य-सम्बन्ध, अभावज्ञान, स्वप्रकाशत्व, मीमांसक-नैयायिक-प्राभाकर मतभेद आदि जटिल नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसाक विषय क्रमवार आवृत्त कएल गेल अछि, अक्सर परिचित न्याय-दृष्टान्त (घट, शुक्ति-रजत, राजपुरुष, नीलोत्पल, धूम-अग्नि, गर्गसभ भोजन करैत छथि आदि) क माध्यमसँ। प्रत्येक खण्डक अन्तमे कोष्ठकमे सम्बद्ध 'दार्शनिक सिद्धान्त' क नाम लिखल अछि, जे मुख्य उपन्यासक सम्बद्ध अध्यायक अन्तमे संक्षिप्त रूपमे 'दार्शनिक अन्तर्ध्वनि' बनि प्रकट होइत अछि। एहि प्रकार ई परिशिष्ट उपन्यासक अध्यायसभक शीर्षक-क्रम (५७ सँ २०० धरि, जे मुख्यतः ध्रुवेश-मधुकर-महेश्वर सम्बन्धी अन्वेषण-अध्यायसभसँ मेल खाइत अछि) आ नव्य-न्यायक

परिशिष्ट-३ — न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा

तत्त्वचिन्तामणि-आधारित सम्पूर्ण ज्ञानमीमांसीय पाठ्यक्रमकेँ समानान्तर रूपसँ जोड़ैत अछि — मानू कथाक हर अन्वेषणात्मक मोड़ (नाम, प्रमाण, स्मृति, चिन्हारि) क पाछाँ शास्त्रीय तर्कशास्त्रक सूक्ष्म संरचना सेहो चलि रहल हो। अन्तिम खण्ड (अध्याय १८६-२०० धरि) मण्डन आदि उत्तर-नैयायिक/प्राभाकर मतभेदसहित समाप्त होइत अछि, जे मुख्य उपन्यासक अन्तिम अध्याय 'नामक पहरुआ' सँ सँगहि समाप्त होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

WORK / कृति

02 कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

२१६ अध्याय · १८ पर्व · ७ काण्ड

SECTION / खण्ड

पाठक लेल

02 कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

पाठक लेल

ई अध्यायवार सारांश मूल उपन्यासक विकल्प नहि, ओकर कथाक्रम बुझबाक सहायक संकलन थिक। प्रत्येक अध्यायक मूल शीर्षक, पर्व आ रामायण-काण्ड सुरक्षित राखल गेल अछि। मूल पुस्तकमे कतहु जाँच अधूरी होइत अछि, अथवा पात्र जानबूझि निर्णय टारैत अछि, तँ एहि सारांशमे सेहो ओ अनिश्चितता बचाओल गेल अछि।

SECTION / खण्ड

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

अध्याय १–१२ · नाम, स्मृति, परिवार आ नदी-घाटक प्रारम्भिक संकट

अध्याय १ — मृतकक रसोइ

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

विदेहपुरमे जीवित सरिताकेँ डिजिटल अभिलेख मृत घोषित करैत अछि, जखन कि सत्रह वर्ष पहिने मरल हुनकर पतिक नामपर नव औषधिपर्ची निकलैत अछि। बेटी नैरा दुनू विसंगतिक प्रमाण अलग राखि सुधारक प्रक्रिया शुरू करैत छथि। सरिता निजता, जीविका आ दैनिक श्रमक प्रश्न सामने रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २ — सत्ताइस नाम

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

सरिता पुरान पन्नामे दर्ज सत्ताइस नाम नैराकेँ देखबैत छथि। सूचीमे नव जोड़ल नाम, समय आ स्रोतक भेदसँ प्रश्न उठैत अछि। नैरा सूचीकेँ अन्य प्रशासनिक विवादसँ अलग राखि प्रत्येक नामधारीक सहमति आ सुरक्षाक आधारपर जाँच करबाक निश्चय करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ — चौकक समय

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

रेल-चौकपर फकीराक आवागमन, प्रवेश-अनुमति आ बिना रसीदक शुल्कक विवाद उभरैत अछि। ओ देखल-सुनल बात अलग दर्ज करैत छथि आ नदीक नावक बाटक जोखिम विचारैत छथि। यात्रा-समय आ कमाइ गनबाक अधिकार सार्वजनिक बाटक नक्शासँ बेसी महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४ — नदीक पहिल घर

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

प्राचीन हस्तिनापुरमे सत्यवती नदी, नाव आ माछक श्रमसँ अपन निर्णयक अधिकार अर्जित करैत छथि। समकालीन विदेहपुरमे घाटपर उर्मिला आ अन्य श्रमिक अपन सामान, कमाइ आ घाट-उपयोगक शर्त राखैत छथि। नैरा ओहि गवाहीकेँ अप्रमाणित प्रशासनिक तथ्यसँ अलग दर्ज करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ — जनकक माप

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

जनककालमे राजगृहक नव निर्माण पुरान बाट बन्द करबाक खतरा उत्पन्न करैत अछि; श्रमिकक अनुभवसँ गलत खूँटा आ नाप सुधरल जाइत अछि। आधुनिक नगरमे सेहो किरण अपन ढुलाईक व्यावहारिक कठिनाई देखबैत छथि। जमीनक सही माप केवल कागदी रेखा नहि, लोकक दैनिक आवागमनक प्रश्न बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६ — घरक पहाड़ा

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

सरिताक घरक पुरान बहीमे चाउर, तेल, दवा आ भाड़ाक हिसाबक संग अनलिखल घरेलू श्रमक इतिहास उभरैत अछि। सार्वजनिक इनार आ दानक भूमि-रेखामे किरायेदारक अधिकारक प्रश्न उठैत अछि। नैरा उपलब्ध दस्तावेजसँ आगू अनुमान जोड़ने बिना नव गवाहीक प्रतीक्षा करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७ — पाँच पीढ़ीक चौकी

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

शकुन्तला पाँच पीढ़ीक चौकी आ माटिक कामसँ जुड़ल पुरान कागद लऽ सरिताक घर पहुँचैत छथि। परिवारक स्मृति, सहमतिक बिनु लेल अँगूठा, उत्तराधिकार आ नतिनीक शिक्षा पर चर्चा होइत अछि। अलग-अलग दावा स्पष्ट लिखि अगिला पीढ़ीक स्वतन्त्र चुनावकेँ जगह देल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८ — सीमातीर्थक चिट्ठी

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

सीमातीर्थसँ आयल निजी चिट्ठी ओकर अधिकृत प्राप्तकर्ता धरि पहुँचाओल जाइत अछि। रामवती, रमणी आ अन्य स्त्रीसभ मखाना आ जल-श्रमक अलग मजदूरी, विश्राम आ सम्मानक शर्त रखैत छथि। नैरा निजी पत्र आ सार्वजनिक श्रम-गवाहीकेँ अलग रखैत, अधूरा भुगतान-विवाद खुलल छोड़ैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९ — बन्द बाहा

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

बरकी पोखरिक निकट बन्द बाहाक पुरान मुँह भेटबाक आशंका उठैत अछि। तारा, अदिति आ स्थानीय श्रमिक नाप, माटिक सुरक्षा आ अस्थायी पयरबाटक प्रमाण जुटबैत छथि। बाहा तत्काल नहि खोलल जाइत, मुदा निरीक्षण आ सुरक्षित पहुँचक औपचारिक प्रक्रिया आरम्भ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १० — नामक छाँह

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

पुरनाधारक भूमि-नाम, गोदामक देवाल आ पुरान नापपुस्तिकामे भिन्नता देखाइत अछि। नैरा फोटो, प्रशासनिक कागद आ अपन अस्पष्ट अनुभूतिकेँ एकहि प्रमाण नहि मानैत छथि। संकेतक फोनक फोटो सार्वजनिक करबासँ पहिने अनुमति आ अन्य लोकक पहिचानक प्रश्न उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११ — अपन फोन अपन शर्त

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

संकेत गोदामक लाल चिह्नक फोटो खींचैत अछि, मुदा चित्रमे रहल अन्य लोक आ अधूरा सन्दर्भक कारण प्रकाशन रोकैत अछि। नैरा ओकरा सहमति, दृश्य तथ्य आ अनुमानक अन्तर बुझबैत छथि। सामुदायिक नाप-जोखमे फोन युवाक स्वायत्त उपकरण बनैत अछि, सनसनीक साधन नहि।

अध्याय १२ — घाटक पाछाँ शहर

पर्व १ · आदि | बालकाण्ड

घाटक सार्वजनिक नक्शा आ लोकसभक बनाओल नक्शामे बाट, माछक जाल आ पट्टाक भिन्न तथ्य सामने अबैत अछि। रमणी, तारा आ नैरा प्रमाणित प्रति माँगैत छथि, मुदा अधिकारपत्र तत्काल नहि भेटैत। बन्द घाटक पाछाँक शहरमे जीविका आ सार्वजनिक भूगोलक असमानता खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

अध्याय १३–२४ · प्रतिनिधित्व, निजता, अपमान आ विस्थापन

अध्याय १३ — बजाओल गेल मृतका

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

राहत-वितरणक सभामे जीवित सरिताक नाम मृतकक रूपमे प्रस्तुत होइत अछि। ओ अपन बात स्वयं सार्वजनिक करैत छथि, जखन नैरा गलत प्रविष्टि सुधराबबाक प्रक्रिया अलग रखैत छथि। सभाक प्रतिष्ठा आ वास्तविक मताधिकारक अन्तर रुहानीक अगिला संघर्षक प्रस्तावना बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४ — प्रतिनिधिक कुर्सी

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

रुहानीकेँ सामुदायिक सभामे ‘प्रतिनिधि’क सम्मानित कुर्सी भेटैत अछि, मुदा सदस्यक मत देबाक अधिकार नहि। ओ कार्यवृत्तमे एहि अन्तरकेँ लिखएबाक आ आश्रयक निजी सूची सुरक्षित रखबाक माँग करैत छथि। चम्पा अपन अनुपस्थितिमे सहमति नहि देबाक शर्त रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ — द्रौपदीक प्रश्न

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

हस्तिनापुरक सभामे द्रौपदी अपन स्वतंत्रतापर दाँव लगएबाक अधिकार पूछैत छथि; उच्च पदस्थ लोक उत्तरसँ बचैत अछि। आधुनिक विदेहपुरमे अलग व्यक्तिक आवेदन आ प्रमाणकेँ एक आरोपमे नहि मिलएबाक पाठ मिलैत अछि। सार्वजनिक निर्णयमे सम्बन्धित व्यक्तिक वाणी आ सहमतिक प्रश्न मुख्य बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६ — विकर्णक बादक मौन

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

विकर्ण हस्तिनापुरक सभामे द्रौपदीक अनसुन्न प्रश्नक पक्ष लैत अछि, मुदा सभाक सामूहिक मौन बनल रहैत अछि। विदेहपुरक बैठकमे अमला मजदूरीक पंजीमे अपन नामक त्रुटि उठबैत छथि। समिति कार्यवृत्तक प्रति अलग-अलग हाथमे पहुँचेबासँ बादमे झूठ ‘सर्वसम्मति’क दावापर रोक लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७ — कैकेयीक देय

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

अयोध्यामे कैकेयी, मन्थरा आ भरतक उत्तराधिकारक आशंका वचन आ ओहि वचनक वास्तविक लागत सामने अनैत अछि। विदेहपुरमे स्कूल, आश्रय आ अस्पतालक वचन निभाबय पड़निहार श्रमिक अलग ठाढ़ छथि। नैरा ‘वचन देनिहार’ आ ‘वचनक भार उठौनिहार’क अन्तर दर्ज करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८ — उर्मिलाक राति

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

लक्ष्मणक वनगमनक तैयारीमे उर्मिला पाछाँ बचल घरेलू श्रम आ अपन इच्छाक मूल्य पूछैत छथि। आधुनिक उर्मिला अस्पतालक कपड़ा ढोएनिहारक रातिक पालीक मजदूरी लिखित करबबैत छथि। श्रमक समय दबा कऽ झूठ दिनक हिसाब बनएबाक प्रयास रुकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९ — चम्पाक सन्देश

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

चम्पाक निजी संदेशक एक अंश काटि सभामे उपयोग कएल जाइत अछि। ओ अपने आपत्ति दर्ज करैत, निजता आ उपचारसम्बन्धी जानकारीक दुरुपयोग रोकबाक माँग करैत छथि। नकल-पंजी आ बन्द लिफाफाक स्रोतक जाँच बाकी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २० — जल्दी प्रकाशन

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

नैरा महेशक सूचनाक सन्दर्भ पर्याप्त सुरक्षित कएने बिना किछु प्रकाशित करैत छथि; नाम नहियो देलाक बाद महेश पहिचानल जा सकैत छथि। हुनकर परिवारक सुरक्षा पर संकट उठैत अछि। नैरा अपन जल्दबाजी स्वीकार कऽ प्रकाशनक सीमा आ स्रोतक अनुमति फेर जाँचैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१ — ककर आवाज

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

पद्मा, नैरा आ चम्पा ध्वनिसाक्ष्यक स्रोत, बोलनिहारक स्वामित्व आ आधा सुनाओल आवाजक अर्थ अलग करैत छथि। रुहानीपर लागल विशेष आरोपपर तत्काल कार्रवाई रोकल जाइत अछि; मूल सामग्री सुरक्षित रहैत अछि। सुनल आवाजकेँ व्यक्ति स्वयं बजबाक अनुमति मानि नहि लेल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २२ — घरक आदेश

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

प्रशासनिक आदेशसँ ठेकेदारक भुगतान आ घर-सुरक्षाक स्थिति पर अनिश्चितता बढ़ैत अछि। चम्पा, गौरी आ अन्य परिवारक विस्थापन, सामान आ आश्रयक स्वीकृति अलग-अलग दर्ज होइत अछि। नैरा अपन ठेका-विवादकेँ सभ घरक संकटपर अपन पत्रकारिक अधिकारक आधार नहि मानैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २३ — भरतक अस्वीकार

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

अयोध्यामे भरत माताक भयजनित उत्तराधिकारक निर्णय अस्वीकार करैत अछि। आधुनिक आश्रयमे रुहानी विस्थापित यात्रीकेँ भोजन आ अस्थायी स्थान दैत छथि, मुदा मरम्मतिक अनुमति, स्वामित्व आ स्थायी पट्टाक भेद राखैत छथि। आश्रय संरक्षण अछि, कब्जाक अधिकार नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २४ — बाहरक ओसार

पर्व २ · सभा | अयोध्याकाण्ड

चम्पाक कोठरीपर तालाबन्दीक आशंका, बदरीक अपूर्ण पुनर्वास आ सरिताक ओसारक मरम्मति तीन अलग आवास-संकट बनैत अछि। स्थानीय स्त्रीसभ नल, तिरपाल आ स्थानक व्यावहारिक शर्त तय करैत छथि। नैरा ककरो निजी कागद सार्वजनिक नहि कऽ प्रत्येक परिवारक आवेदन अलग सुरक्षित करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

अध्याय २५–३६ · आश्रय, भ्रम, शिक्षाक प्रवेश आ घुमन्तु जीवन

अध्याय २५ — रेलमे खाली जगह

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

रेलचौकपर फकीराक कमाइक घड़ी, जावेदक प्रदर्शनक जगह आ सरिताक घरक पानि-अभाव अलग समय-संघर्ष बनैत अछि। संकेत दिनक तालिकामे प्रत्येकक जरूरी समय लेल जगह बनबैत अछि। ‘खाली’ जगह ककरो बिना दामक श्रम लेल उपलब्ध नहि मानल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २६ — गुहक तट

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

गुहक नदीतट आ समकालीन घाटक प्रसंगमे नाविक हीरा नावक भार, बढ़ल जलस्तर आ यात्राक अनुमति पर निर्णय लैत छथि। नट कलाकारक मञ्च-समय, बच्चाक विद्यालय आ फकीराक सुनवाईक समय जोड़ल जाइत अछि। संकेत अपन चित्रमे नाविकक बैठबाक ठाम फेर जोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ — शबरीक भोर

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

शबरी आश्रमक आगन्तुक-सत्कारमे अन्य स्त्रीक श्रम आ समयक अधिकार सुरक्षित रखैत छथि। विदेहपुरमे अनाजक बोरा, बकाया मजदूरी आ चूल्हा चलएनिहारक काम गनल जाइत अछि। कथामे सत्कारक अर्थ सेवकक निशुल्क प्रतीक्षा नहि, बराबर श्रम-सम्मान बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २८ — हिडिम्बाक सन्धि

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

हिडिम्बा भीमसँ सम्बन्धक निर्णयमे जंगल, परिवार आ अपन स्वायत्तताक शर्त राखैत छथि। आधुनिक वनफाटकपर घुमन्तु परिवार आ बन्द कारखानाक कामगार साझा बाटक उपयोग, मजदूरी आ गोपनीय विवरण लेल अलग-अलग आवेदन करैत छथि। समझौता बिना समानता थोपने बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २९ — बच्चा चोर

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

एक अधूरा वायरल वीडियो जानकीपर बच्चा चोरीक आरोपक अफवाह फैलाबैत अछि। एहि बीच लताक बेटा मिथुन सचमुच हराइत अछि। नैरा गलत दृश्यक सन्दर्भ-सुधार आ बच्चाक वास्तविक खोजक अलग अभिलेख बनबैत छथि; समुदायपर सामूहिक आरोप नहि लगाओल जाइत।

अध्याय ३० — अहल्याक आवाज

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

लता मिथुनक खोज जारी रखैत छथि, जखन बाजारमे कंजर समुदायपर लगाओल गलत फोटो उतारल जाइत अछि। प्राचीन अहल्या अपन अनुभवक कथा स्वयं कहबाक अधिकार माँगैत छथि। एकटा अफवाहक खण्डन बच्चा लौटा देबाक बराबर नहि, मुदा अन्यायपूर्ण आरोप रोकैत अछि।

अध्याय ३१ — एकलव्यक सीख

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

एकलव्यक शिक्षण-प्रसंगमे अभ्यास, उपकरण आ सुरक्षित लक्ष्यक ज्ञानकेँ कुलीन स्वीकृतिसँ अलग देखाओल गेल अछि। विदेहपुरक ओसारमे घुमन्तु बच्चा अक्षर आ चित्र सीखैत छथि। जतनक उलटल अक्षर सुधरैत अछि, मुदा विद्यालयमे स्थायी प्रवेश आ परिवारक डेराक ठाम अनिश्चित अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३२ — अथातो ककर

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

मृणालक प्रश्नसँ भामती-परम्पराक ‘अथातो’ जिज्ञासामे शिक्षार्थीक अधिकार उठैत अछि। विदेहपुरमे रेवाक बच्चाक विद्यालय-प्रवेश आ चन्दाक मजदूरी-विवाद अलग प्रक्रियासँ चलैत अछि। पाठशाला अस्थायी उपस्थिति, सरकारी पंजी आ वास्तविक पढ़ाइकेँ एक नहि मानैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३३ — दीपक आ कागद

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

प्राचीन अध्ययनस्थलमे मृणाल, लोहना आ भामती पाण्डुलिपिक प्रति बनएबाक प्रकाश, कागद आ श्रमक हिसाब करैत छथि। आधुनिक पाठशालामे भीजल छप्पर, सुरक्षित मरम्मति आ महिला श्रमिकक देयक प्रश्न उठैत अछि। ज्ञानक पाछाँक भौतिक श्रम दृश्य होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३४ — अनदेखल कारण

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

हेमा पुरान पोखरि-उराहिक निजी प्रति प्रस्तुत करैत छथि, मुदा मूल अभिलेखक बिना तकर प्रामाणिकता सीमित रहैत अछि। उदयनक शास्त्रार्थमे कारणक आवश्यक आ पर्याप्त शर्त अलग जाँचल जाइत अछि। नैरा मिलैत छायाकेँ एकहि वस्तुक प्रमाण मानबाक गलतीसँ बचैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३५ — गवयक पहिचान

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

मिथुनक खोजमे दू धुँधल तस्वीरक समानतासँ दोषी पहिचानबाक प्रयास होइत अछि। नैरा समान रूप, निश्चित पहचान आ अपराध-सिद्धि अलग दर्ज करैत छथि। घुमन्तु राजोक दू पता कारणे सहायता रोकेबाक प्रश्न पर नियम माँगल जाइत अछि; खोज आ मजदूरी-दाबी जारी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३६ — बाहरक पाठशाला

पर्व ३ · वन | अरण्यकाण्ड

जतनक भीजल कापी आ विद्यालयक असुरक्षित ओसारसँ पढ़ाइक भौतिक कठिनाई सामने अबैत अछि। पद्मा संकेतक संग अलग क्षमता आ जरूरतवला लोकक बाटक अभ्यास करबैत छथि। अस्थायी काठक टेक मिलैत अछि, मुदा पानिक जाँच आ स्थायी विद्यालय-सीमा बाकी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

अध्याय ३७–४८ · श्रमक पहचान, व्यवसाय-पंजी आ सुरक्षित निर्माण

अध्याय ३७ — रान्हनिहारक नाम

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

रान्हनिहारक दैनिक काजक संग भोजनक लागत, मजदूरी आ भोजन ग्रहण करनिहारक चयनक प्रश्न उभरैत अछि। विराट-पर्वक गुप्तवास आ आधुनिक श्रमिकक सेवा-नामक बीच सम्बन्ध बनैत अछि। भोजन तैयार करनिहारक काम मात्र ‘सेवा’ कहि अदृश्य नहि कएल जा सकैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ — बृहन्नलाक कक्षा

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

बृहन्नलाक कक्षाक माध्यमसँ शिक्षा, परिचय आ सम्मानक सीमा पर चर्चा होइत अछि। आधुनिक ओसारक शिक्षणमे भाषाक अनुवाद, सांकेतिक सम्प्रेषण आ छात्रक स्वीकृति महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। कक्षा शिष्यक प्रश्न सुनबाक ठाम बनैत अछि, केवल शिक्षकक अधिकारक प्रदर्शन नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३९ — ताँतीक देय

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

ताँती आ बुनकरक श्रममे सूत, नाप, समय आ भुगतानक हिसाब अलग कएल जाइत अछि। पार्वती अपन बुनाइ आ स्त्री-श्रमक श्रेय पर दावा रखैत छथि। सार्वजनिक सहयोगक नामपर व्यक्तिगत कारीगरक पारिश्रमिक विलीन कएबाक विरोध कथा केँ आगाँ बढ़बैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४० — कपड़ा पंजी

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

अस्पतालक कपड़ा-पंजीमे धोएनिहार, पहुँचेनिहार आ भंडारक अलग जिम्मेदारीक प्रश्न उठैत अछि। उर्मिला त्रुटिपूर्ण प्रविष्टि आ वास्तविक कपड़ाक संख्या मिलाबय कहैत छथि। समान गाड़ी अथवा रसीद देखिकऽ समस्त लेनदेनकेँ एक अपराध बनएबासँ बचल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४१ — बरहीक हस्ताक्षर

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

ललित मरम्मतिक अपरीक्षित उतार-पट्टाक बिलपर हस्ताक्षर करब अस्वीकार करैत छथि। गाड़ीक पहीया, काठक पट्टा आ जलनिकासक विशेषज्ञता अलग जाँचल जाइत अछि। आर्थिक घाटाक जोखिम स्वीकार कऽ ललित दुर्घटनाक झूठ सुरक्षा-प्रमाण देबासँ बचैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४२ — माटिक भविष्य

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

शकुन्तला कुम्हारिन माटिस्थलक पहुँच, भट्ठीक साझा उपयोग, ऋण आ बकाया पर प्रश्न उठबैत छथि। हुनकर नतिनी नव विद्यालयमे प्रवेश करैत अछि; पेशा अपनाएब ओकरा लेल अनिवार्य नहि। माटिक भविष्य श्रमक अधिकार आ अगिला पीढ़ीक चुनाव दुनू सँ जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४३ — कसेरा आ सोनार

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

मीना कसेरा अस्पतालक पीतलक बासनक मरम्मतिक वास्तविक संख्या जाँचैत छथि; कमला सोनार पुरान लेनदेनमे स्त्रीक नामक सुधार चाहैत छथि। तेल-घानीक पारिवारिक धरोहर आ बेचबाक निर्णयमे स्मृति-ऋणक अन्तर खुलैत अछि। अधपरीक्षित वस्तु वापस नहि देल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४४ — लोहारक औजार

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

हरिनारायण लोहार चारि तरहक उपकरणक अलग आदेश, सुरक्षा आ दाम दर्ज करैत छथि। गिरवीखाताक ब्याज आ मजदूरक अँगूठाछापवला रसीदक सत्यापनक प्रश्न उभरैत अछि। हुनकर कार्यशालामे औजारक उपयोग आ ओहि औजारसँ प्रभावित लोकक दायित्वक सीमा स्पष्ट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४५ — जोलहाक खेप

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

यूसुफ जोलहा आयल कपड़ाक खेपमे अपन करघाक थान आ अपरिचित मालक अन्तर पकड़ैत छथि। ओ सही खेप, अटकल अग्रिम आ ढुलाईक घाटा अलग लिखैत छथि। बेटा डिजिटल सूची बनएबामे सहयोग करैत अछि, मुदा अपन इलेक्ट्रॉनिक प्रशिक्षणक स्वतंत्र इच्छा सुरक्षित रखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४६ — धोबि रंगरेज धुनिया

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

उर्मिला, सकीना आ रहीम धोबि, रंगरेज आ धुनियाक अलग काम-पंजी जाँचैत छथि। अस्पताल आ बाजारक मिलैत वाहन-संख्यासँ दोष सिद्ध नहि मानल जाइत। श्रमक प्रत्येक चरणक स्वतंत्र देय रखैत बच्चाक अफवाह, वस्तु-पंजी आ जलपट्टाक प्रमाण अलग सुरक्षित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४७ — फाटकक माप

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

हीरा नाव, गाड़ी आ फाटकक वास्तविक भार, जलगहिराइ आ ढलान नापैत छथि। उर्मिलाक अस्पतालक कपड़ा समयपर पहुँचबाक जरूरत सुरक्षित बाटक शर्तसँ टकराइत अछि। निरीक्षणमे मूल मजदूरी-सूचीक पुकारनाम, व्यक्ति-पहिचान आ भुगतानक मिलान एखन शेष अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४८ — छद्मक तीन कारण

पर्व ४ · विराट | अरण्यकाण्ड

फाटकक मजदूरी-सूचीमे ‘लाल टोपी’ सन छद्म नाम भेटैत अछि। विराटनगरक सैरन्ध्रीक कथा देखबैत अछि जे परिचय नुकएबाक कारण अलग-अलग भऽ सकैत अछि। नैरा मूल पंजी माँगैत छथि; फाटकक सुरक्षा-जाँच रोकलाक संग मजदूरक देय नहि अटकएबाक प्रस्ताव होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

अध्याय ४९–६० · असमान गठबन्धन, श्रमक दाम आ जलसन्धि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४९ — सहयोगक दाम

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

फाटकक अस्थायी सुरक्षाक काममे श्याम आ तारा स्थानीय नाप आ औजारक श्रम दैत छथि। नगरक ‘स्वैच्छिक सहयोग’ प्रपत्र हुनकर ज्ञान आ मजदूरीक अधिकार अस्पष्ट करैत अछि। सार्वजनिक आदेशमे सुरक्षा-काज, दाम आ अन्तिम अनुमतिक सीमा लिखल जाइत अछि; खेतक स्थायी बाटक विवाद शेष रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५० — सुग्रीवक भय

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

किष्किन्धामे सुग्रीवक भय आ रामसँ गठबन्धनक सन्दर्भ चलैत अछि। आधुनिक फाटकपर तारा खतराकेँ मात्र दोसर पगडंडीपर स्थानान्तरित करबाक विरोध करैत छथि। ओ जोखिम, अलग घरक लाभ-हानि आ स्थानीय श्रमिकक देय तीन स्वतंत्र खण्डमे दर्ज करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५१ — ताराक गणना

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

तारा जलमाप, बाटक चौड़ाइ, मानव-श्रम आ प्रभावित घरक सुनवाईकेँ एकहि गणनामे जोड़ैत छथि। राम–सुग्रीव–वालीक विरोधी स्मृतिसँ निर्णयक एकपक्षीयताक जोखिम स्पष्ट होइत अछि। संशोधित पर्चामे तकनीकी प्रमाणन अपूर्ण रहलाक बावजूद स्थानीय परामर्शक श्रेय आ देय लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५२ — अङ्गदक कल्हि

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

अङ्गदक असहमति आ सुग्रीवक राजकीय जिम्मेदारीक समानान्तर घुमन्तु नट-परिवारक बसेरा हटएबाक विवाद उठैत अछि। गौरी खर्चक रसीद देखाबैत छथि आ बच्चासभ पढ़बाक छाँह माँगैत अछि। मंच, वीडियो-अनुमति आ अस्थायी आवासक आपत्ति अलग लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५३ — रुहानीक चाभी

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

रुहानी आश्रयक ताला-चाभी सँ आगू बढ़ि आश्रित स्त्रीसभक अपन बाहर जाएबाक आ सामान लऽ जाएबाक अधिकार स्वीकार करैत छथि। कलाकार जावेद, चन्द्रा आ हरिक कार्यक्रममे श्रमक दाम आ नामक सही श्रेय ठहरैत अछि। आश्रयक सुरक्षा स्वामित्वक रूप नहि लैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५४ — अनुष्ठान बिना प्रधान

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

आश्रयक भण्डार आ सामूहिक भोजनक प्रबन्धमे प्रधानक नामपर आज्ञा थोपबाक प्रयास होइत अछि। दुलारी राहत लेल ऋण छोड़बाक दबाव अस्वीकार करैत छथि। उदयनक दार्शनिक संवादक समानान्तर सामूहिक काजमे प्रत्येक श्रमिकक देय, सहमति आ मना करबाक अधिकार लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५५ — हराएल बच्चाक माए

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

लता अपन हराएल पुत्र मिथुनक यात्राक टिकट, समय आ परिवारक बयान पुनः जाँचबबैत छथि। पुरान बच्चा-चोरी अफवाहकेँ नव आरोपीक रूप नहि देबाक निर्णय होइत अछि। संशोधित खोज-विवरण अधिकृत कक्षमे पहुँचैत अछि, मुदा मिथुनक अता-पता एखन नहि भेटैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५६ — दानक दवाइ

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

जमुना अस्पतालमे प्राप्त वास्तविक उपचार आ दाता देवव्रतक सहायता-कोषक लाभ स्वीकार करैत छथि, मुदा अपन निजी स्वास्थ्यक जानकारीक प्रचार रोकैत छथि। अस्पतालक सार्वजनिक खरीदक जाँचकेँ रोगीक गोपनीयतासँ अलग राखल जाइत अछि। साथे सड़क-नापसँ प्रभावित बेलाक आजीविकाक वैकल्पिक स्थान पर प्रश्न उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५७ — जनक आ जनपद

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

खेत, नाला आ जलनिकासक मापमे रमेश, धनी, मीना आ माछ-श्रमिक अपन-अपन लाभ-हानि प्रस्तुत करैत छथि। जनक आ जनपदक सम्बन्धक माध्यमसँ शासनक सही नापमे कृषकक ज्ञान शामिल करबाक आग्रह अछि। तारा देय, अवरुद्ध पानि आ अधूरा भू-अधिकारक हिसाब अलग रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५८ — कारणक जाल

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

मखानिया डबराक धार, बोरीक अवरोध आ बाढ़ि-समयक माप मिलाबैत तारा एकल कारणक सहज व्याख्या अस्वीकार करैत छथि। रमणी आ माछ-श्रमिक पट्टा आ मजदूरीक शर्त राखैत छथि। दोसर पारक जल-समिति संयुक्त निरीक्षण चाहैत अछि, मुदा निजी खेत-घरक नाम सीमित प्रसारमे रखबाक आग्रह करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५९ — दूतक शर्त

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

दूतक सीमित प्रसारवला पत्रक सम्मान करैत हीरा नावक भार-मापक आ सुरक्षित पारगमन तय करैत छथि। लोकगीतमे आएल नदीक नामकेँ प्रत्यक्ष वर्तमान जलमाप नहि मानल जाइत। दोसर पारक स्त्रीसभ नल, नमूना-परीक्षण आ श्रमक दामक प्रश्न राखैत छथि; संयुक्त निरीक्षणक शर्त विकसित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६० — पहिल सन्धि टूटल

पर्व ५ · उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड

जलनिकासक पहिल सन्धि जमीनक माप, बाढ़िक अपूर्ण आँकड़ा आ खेतक क्षतिपूर्तिपर अटकि जाइत अछि। रमेशक परिवार अस्थायी माटि राखबाक सीमित अनुमति दैत अछि, स्थायी अधिकार नहि। दावाक रकम आ देल भुगतान अलग गनबाक शर्त पर आगूक संवादक बाट बचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

अध्याय ६१–७२ · वचनक भार, साक्ष्य आ अस्पतालक चेतावनी

अध्याय ६१ — गङ्गाक शर्त

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

गङ्गा आ शान्तनुक सम्बन्धमे शर्तक स्वीकार, सन्तानक जन्म-मृत्यु आ देवव्रतक वापसीक गहींर नैतिक मूल्य उभरैत अछि। आधुनिक जलसन्धिक असफल शर्तक प्रति नैरा सुरक्षित रखैत छथि। अध्याय शर्त मानब, शर्त बुझब आ ओकर परिणति भोगबकेँ अलग-अलग क्रिया मानैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६२ — भीष्मक प्रतिज्ञा

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

देवव्रत सत्यवतीक सन्तानक भविष्यक लेल कठोर प्रतिज्ञा करैत छथि आ भीष्म नाम पबैत छथि। सत्यवती एहि वचनक आगामी पीढ़ीक स्त्रीसभपर पड़निहार प्रभावकेँ प्रश्न करैत छथि। विदेहपुरमे तारा सम्झौता-पत्रक भविष्यक दुरुपयोगसँ सावधान करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६३ — अम्बाक समय

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

काशीक अम्बाक स्वयंचयन भीष्मक सैन्य हस्तक्षेप आ शाल्वक अस्वीकारसँ निष्फल होइत अछि। अम्बा अपन इच्छाक उपेक्षा आ न्याय न भेटबाक तीन अलग चरण दर्ज करैत छथि। हुनकर दीर्घ संघर्षकेँ मात्र प्रतिशोधक एक कथा बनएबाक विरोध होइत अछि।

अध्याय ६४ — शिखण्डीक निर्णय

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

शिखण्डी शस्त्र-शिक्षा, व्यक्तिक पहिचान आ आगूक युद्धक परिणामक प्रश्न उठबैत छथि। विदेहपुरमे राघव सामग्री पहुँचबाक तथ्यपर हस्ताक्षर करैत छथि, मुदा ओकर उपयोग-स्थान आ सुरक्षा-परीक्षणक अप्रमाणित कथन नहि स्वीकारैत छथि। पूर्वक आदेश आ वास्तविक काजक दायित्व अलग होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६५ — अस्पतालक पुरान पाँख

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

अस्पतालक पुरान पाँखमे छत चुएब, अवरुद्ध सीढ़ी आ रोगी स्थानान्तरणक खतरा खुलैत अछि। सलमा, अनिरुद्ध आ अदिति प्रत्येक रोगीक सुरक्षित ठाम आ मरम्मतिक कारण-जाँच करैत छथि। भवन बन्द करबाक सूचना वास्तविक स्थानान्तरणक प्रमाण नहि; जलनिकास आ सामग्रीक जाँच शेष रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६६ — कृष्ण अर्जुनक विराम

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

कुरुक्षेत्रमे अर्जुन युद्धक प्रारम्भमे रथ रोकि अपन निर्णय पर प्रश्न करैत छथि। आधुनिक अस्पतालमे उर्मिलाक कपड़ा-गाड़ी सुरक्षा-पट्टीपर अटकि जाइत अछि। नैरा अस्पष्ट आवाज आ अपूर्ण हस्ताक्षरकेँ निष्कर्ष नहि मानैत; अस्थायी सुरक्षा आ उपचारक तत्काल जरूरतक बीच निर्णय लेल जाइत अछि।

अध्याय ६७ — दूरक देखाइ

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

फकीरा अस्पतालक पाछाँ सुनल आवाजक संशोधित गवाही दैत छथि, मुदा ओकर स्रोत देखल नहि छल से स्पष्ट करैत छथि। हुनकर यात्रा-पास पर गलत मृत्यु-प्रविष्टि एखनहुँ नहि सुधरल अछि। सत्यवादी बयान आ जीवित व्यक्तिक प्रशासनिक अस्तित्वक बीच अन्तर उघड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६८ — चेतावनीक प्रति

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

अदितिक पुरान चेतावनी-पत्र, कार्यालयी प्राप्ति आ अधूरा पुनर्निरीक्षणक समयरेखा जाँचल जाइत अछि। रतनक पुरान जलस्मृति आ मजदूरक हालक अनुभव अलग अवधिक तथ्य छथि। नैरा अपन निजी अनुभूतिकेँ सरकारी फाइलक प्रमाण नहि बनबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६९ — अनुपस्थितिक अर्थ

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

चेतावनी-पंजीमे पुनर्निरीक्षणक हस्ताक्षर नहि भेटबाक अर्थ काज कएल गेल की नहि, से एखन सिद्ध नहि। कटानसँ खेत गमओने सूरज ऋणक मूलधन, ब्याज आ दण्ड अलग करबबैत छथि। महेशक समाचारमे संशोधन माँगल जाइत अछि, मुदा मुद्रण रुकैत नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७० — महेशक राति

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

महेशक सन्दर्भ-चिह्नक आधारपर परिवार चिन्हल जाए लगैत अछि; बेटी धरि पुछताछ पहुँचैत अछि। महेशक पत्नी सुरक्षा-आवेदन दैत छथि, आ नैरा प्रकाशनक जिम्मेदारीक प्रश्नसँ जुझैत छथि। तत्काल गश्त मंजूर होइत अछि, मुदा परिवारक पूर्ण गोपनीय सुरक्षा शेष अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७१ — मृत्यु आ दस्तावेज

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

महेशपर हिंसक आक्रमणक बाद अस्पतालमे हुनकर मृत्यु होइत अछि। कबीर घटना-विवरणमे अनिश्चित रङ्ग आ देखल आकृतिक संख्या सावधानीसँ लिखबबैत छथि। मूल दस्तावेज जाँचमे सुरक्षित जाइत अछि; महेशक बेटी अपन नदीक चित्र आ पिताक निजी लिखावट संग शोककेँ जीबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७२ — संजयक दूरी

पर्व ६ · भीष्म | सुन्दरकाण्ड

महेशक मृत्यु-जाँचमे कबीर प्रत्यक्ष देखल, सुनेल, अनुमानित आ अप्रमाणित विवरण अलग करैत छथि। संजयक दूरसँ युद्ध देखबाक प्रसंगक समानान्तर साक्षीक सीमित दृष्टि उभरैत अछि। नैरा मृत्यु-परीक्षण, सामग्री-पंजी, नावक पर्ची आ जल-समितिक पत्र अलग राखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

अध्याय ७३–८४ · शिक्षा, सीमातीर्थ आ स्नोतक प्रमाण

अध्याय ७३ — सीमातीर्थक उतराइ

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

सीमातीर्थक नावक तख्ता, उतार-भाड़ा आ श्रमिकक प्रतीक्षा-समय अलग जाँचल जाइत अछि। कुमुदीक कथनक अनुवाद पद्मा मूल शब्दसँ मिलबैत छथि। लता मिथुनक खोजमे नकल आ प्रत्यक्ष देखल दस्तावेज अलग राखि मूल अभिलेख देखबाक समय प्राप्त करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७४ — द्रोणक देय

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

द्रोणक गुरु-दक्षिणा आ ज्ञानाधिकारक प्रसंगक समानान्तर नाव उतरएनिहार शान्ति आ प्रवासी चन्दाक मजदूरी-बकाया सामने अबैत अछि। ‘सभ भुगतान प्राप्त’ लिखल पन्नापर बिना पढ़ने सही करबाक दबाव रोकल जाइत अछि। लताकेँ मिथुनक कोनो नव सुराग नहि, मुदा मूल पंजी जाँचबाक निश्चित समय भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७५ — एक्के आखिरी अंक

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

विभिन्न अभिलेखमे एक्के अङ्क 'सात' भेटला सँ किछु लोक एके अपराध-सम्बन्ध स्थापित करए चाहैत अछि। कबीर देखबैत छथि जे कतहु ओ पता, कतहु टोकन, कतहु क्रमांक अछि। नैरा महेश-हत्या, मिथुनक खोज आ उपचारक कागद बिना मूल मिलान एक नहि करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७६ — एकलव्यक बाद

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

एकलव्यक बादक ज्ञानाधिकारक प्रसंगमे प्रतिमा अपन सुरक्षा आ प्रशिक्षणक निर्णय लैत छथि। सीमातीर्थमे बिनुक खाताक बचत, रामवतीक दू परिचय-पत्र आ प्रवासी श्रमिकक भाषा-सहायताक मुद्दा उभरैत अछि। निजी देय आ औपचारिक नामक जाँच अलग-अलग चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७७ — त्रिजटाक सन्देश

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

अशोकवाटिकामे त्रिजटा सीताकेँ अनिश्चित परिस्थितिक समाचार दैत छथि; ओ असिद्ध आश्वासन नहि देलीह। सीमातीर्थमे ‘अस्थायी मार्ग-परीक्षण’ केँ ‘स्थायी उपयोगपर आपत्ति नहि’ बनएबाक अनुवादगत अन्तर पकड़ल जाइत अछि। हीरा पूर्ण अनुवाद सुनि मात्र सहमतिक अर्थ तय करबाक माँग करैत छथि।

अध्याय ७८ — मन्दोदरीक घर

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

लंकामे मन्दोदरी युद्ध-सूचनाक बीच घरक भोजन, श्रम आ राजकीय निर्णयक कीमत अनुभव करैत छथि। विदेहपुर विद्यालय अपने सूचना-पट्टपर समुदायविरुद्ध बालक-अपहरणक गलत आरोप प्रकाशित करबाक जिम्मेवारी स्वीकार करैत अछि। पुरान गलत सूचना अभिलेखमे चिह्नित रहलाक संग सुधार प्रकाशित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७९ — चेहराक समानता

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

सरयू सन देखाएबला चित्रक आधारपर गलत नाम जोड़ल जाइत अछि; जानकीक परिवार अपन मूल परिचय पर आग्रह करैत अछि। बाजार आ सीमा-पारक व्यापारमे सेहो समान चेहरा आ वस्तुकेँ समान प्रमाण नहि मानल जाइत। मिथुनक खोज जारी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८० — बुनकरक दोसर खाता

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

यूसुफ अपन करघाक असली थान आ लाल डोरीवला संदिग्ध खेपक अलग हिसाब तैयार करैत छथि। माछबजारमे विनोदक पाटक उपयोगी हिस्सा वास्तविक मापसँ तय करबाक विवाद उठैत अछि। लताकेँ मिथुन-सम्बन्धी मूल अभिलेख देखबाक समयक पुष्टि भेटैत अछि, बच्चा नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८१ — बच्चाक दोसर ठाम

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

रेलचौकक पर्चीमे ‘अगिला पड़ाव’क संकेत मिथुनक खोजकेँ दोसर सम्भावित ठाम धरि लऽ जाइत अछि। नैरा सूचना सावधानीसँ जाँचैत छथि। साथमे प्रवासी गुंजाक घरवापसी, केदारक बकाया आ दुर्गाक लघु खाद्य-व्यवसायक देय अलग कथावृत्त बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८२ — मैथिलीक पन्ना

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

मैथिली अपन पुरान लिखावट आ ईशानक नामसँ चलल ग्रन्थक पन्ना मिलाबैत छथि। बौद्धिक योगदान आ सम्पादनक श्रेयक प्रश्न उठैत अछि। ओ कबीरक जन्मसम्बन्धी निजी अफवाहकेँ पोथीक सार्वजनिक विवादसँ अलग रखैत छथि; मूल पन्नाक क्रमवार जाँच जारी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८३ — सरिताक मेहनत

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

सरिता अपन घरेलू जीवन, गणना आ उदाहरणक पन्ना बचा कऽ रखैत छथि। मैथिली देखैत छथि जे तर्कक उदाहरणमे सरिताक व्यावहारिक श्रम आ समझक योगदान दबि गेल अछि। सरिता अपन नाम अनधिकृत रूपसँ चढ़एबाक बदला अपन लिखल नकलक उचित स्वीकृति माँगैत छथि।

अध्याय ८४ — गुरुक स्वीकार

पर्व ७ · द्रोण | सुन्दरकाण्ड

ईशान पुरान ग्रन्थक पन्ना, मैथिलीक संशोधन आ अनाम श्रेयक प्रश्न स्वीकार करबाक दिशा मे बढ़ैत छथि। मंगरीक मजदूरीक रसीदमे भुगतानक घर खाली अछि, तैं मात्र हाजिरी भुगतानक प्रमाण नहि। गुरुक ज्ञानक संग ओकर श्रेय-हरणक दायित्व सेहो जाँचक विषय बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

अध्याय ८५–९६ · जन्म-पालन, मूल नाम आ अभिलेखक विसंगति

अध्याय ८५ — राधाक श्रम

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

कर्णक पालन करनिहारी राधाक रथक काम आ सन्तान-पोषणक श्रम दृष्टिगोचर होइत अछि। आधुनिक खेतिहर किरण तौल आ ऋणक सत्यापन करैत छथि। कबीर अपन जन्मक अस्पष्ट अभिलेख आ माय द्वारा कएल पालन-पोषणकेँ एक-दोसराक विकल्प नहि मानैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८६ — मूल पन्ना

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

सरिता सत्ताइस नामवला मूल पन्ना खोलैत छथि आ नैरा छब्बीस खुलल प्रविष्टिक मिलान-पत्र तैयार करैत छथि। अन्तिम नाम सुरक्षित आ रिक्त रहैत अछि; सार्वजनिक पहुँचक सीमा लिखल जाइत अछि। घाटपर रमणी रसीद देखे बिना स्त्रीक नावक बाट पर बन्दिश स्वीकार नहि करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८७ — पाँच बदलल परिचय

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

पाँच व्यक्ति-विवरण बदलल अथवा गलत जुड़ल भेटैत अछि, मुदा प्रत्येकक परिचय, जोखिम आ सुधार-पत्रक शर्त अलग अछि। कमली पुरान नाम पुनः सार्वजनिक भऽ जाएबाक भय व्यक्त करैत छथि। नसीम अपन ग्राहकक निजी बहीकेँ फोनपर पसरल लाल कतरनक विरुद्ध सुरक्षित रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८८ — चौदह विसंगति

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

रमा आ नैरा चौदह अभिलेखी विसंगतिक श्रेणी बनबैत छथि—नाम, सामाजिक परिचय, पेशा, मृत्यु-चिह्न आ अन्य प्रविष्टिक अलग आधार चाही। कंप्यूटरक जानकारीक बिनु मूल नकलसँ निष्कर्ष नहि निकालल जाइत। रमणी मूल पट्टाक पूर्ण प्रति देखे बिना सही नहि करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८९ — चारि जीवित चारि मृत

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

सरकारी फाइलमे चारि जीवित व्यक्तिक मृतक-चिह्न आ चारि मृतकक सक्रिय लेनदेनक विसंगति जाँचल जाइत अछि। रमा प्रशासनिक स्थिति स्पष्ट करैत छथि, जखन शारदा गिरवी-ब्याजक गलत जोड़ सुधारि ग्राहककेँ वापसीक विकल्प दैत छथि। एक समान संख्या देखला सँ व्यक्ति-परिचय सिद्ध नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९० — सुभद्राक शर्त

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

सुभद्रा कबीरक जन्म-सम्बन्धी पुरान कागद खोलबाक क्रम आ सीमा अपन हाथमे रखैत छथि। कबीर पालक मायसँ सम्बन्धकेँ कम न करैत जन्मक प्रश्न पूछबाक अधिकार चाहैत छथि। परिवारक निजी कथा तत्काल सार्वजनिक बयान नहि बनैत।

अध्याय ९१ — सुविधाजनक त्रुटि

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

सरिताक मृत्यु-प्रविष्टि सुधारकेँ साधारण ‘लेखा-त्रुटि’ कहि निपटेबाक प्रस्तावक पाछाँ पुरान परिवर्तन-अभिलेखक प्रश्न अछि। रमा मूल बदलावक क्रम माँगैत छथि। नाहिदक मातृपक्षीय जमीन आ ऋणकेँ सेहो सुविधाजनक सहमति मानि नहि लेल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९२ — आरोपक भङ्ग

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

जानकी आ सरयू पर गलत बच्चा-चोरीक आरोपक सार्वजनिक खण्डन होइत अछि, मुदा मूल अफवाहक प्रसारक प्रभाव शेष रहैत अछि। ग्राहकक घरक फोटो दुरुपयोग रोकल जाइत अछि। बाल-सुरक्षा जाँचमे गुंजाक वापसीक चरण आ अन्य ढुलाई-पर्चीक सम्भावित सम्बन्ध अलग परखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९३ — खेपक सम्बन्ध

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

अस्पतालक औषधिक बक्सामे वितरकक मुहर आ लेबल नहि मिललासँ आपूर्ति रोकल जाइत अछि। प्रयोगशाला-जाँच बिनु माल ‘नकली’ सिद्ध नहि मानल जाइत। माधवक खेपक वापसी आ भुगतानक अलग कारण दर्ज होइत अछि; नैरा केवल सत्यापित सम्बन्ध स्वीकार करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९४ — पालकक अधिकार

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

कबीर जन्मक पुरान प्रश्नक संग पालन करनिहारी मायक निर्विवाद जीवन-सम्बन्ध सुरक्षित रखैत छथि। यात्रीगाड़ी आ अस्पतालक आपूर्तिक काममे वाहनक उपयोग पर अलग अनुमति-बात उठैत अछि। कबीर सुभद्रासँ अगिला संवादक प्रश्न राखि तत्काल अन्तिम निष्कर्ष रोकैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९५ — हत्याक आदेश

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

महेशक हत्याक जाँचमे परिवहन-मध्यस्थक भाड़ाक कोठरी, पुरान चालकक बयान आ धमकीक कथन सामने अबैत अछि। पुलिस आदेशक स्रोतक जाँच करैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष आरोप आ सुनल वचनक अन्तर बाकी रहैत अछि। सत्ताइस नामसँ सम्बन्धित निजी भुगतान-सारिणी सेहो सीमित पहुँचमे रहैत अछि।

अध्याय ९६ — सत्ताइसक मिलान

पर्व ८ · कर्ण | सुन्दरकाण्ड

सरिता, रमा आ नैरा सत्ताइस नामक मूल पन्ना आ प्रशासनिक अभिलेखक क्रमशः मिलान करैत छथि। सार्वजनिक विवरण, निजी नाम आ अधिकारक अलग सीमारेखा तैयार होइत अछि। महेशक हत्याक आदेश, सरिताक सुधार आ मिथुनक खोजक निर्णायक उत्तर एखन शेष रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

अध्याय ९७–१०८ · आपदासँ पहिनुक सम्झौता आ जोखिमक परीक्षण

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९७ — शल्यक निष्ठा

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

शल्यक निष्ठा आ पक्ष-चयनक पुरान प्रसंगक समानान्तर नगरमे पाँच अलग आपदा-शर्तक समीक्षा होइत अछि। गाड़ी, गोदाम, जलमाप, भोजन आ अभिलेख पर एक समझौता पूरा भेल नहि। केवल एक रोगीक सुरक्षित आवागमन सम्भव होइत अछि; नैरा समाचारक अतिरंजित शीर्षक सुधारैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९८ — विभीषणक बाट

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

विभीषण लंकाक राजधर्म आ घरक दायित्वक बीच अपन बाट चुनैत छथि। आधुनिक फाटकमे हीरा आ तारा जलनिकासी सुरक्षित नापलाक बाद सीमित गाड़ी-परीक्षण स्वीकार करैत छथि। चालकमजदूरक हड़ताल आ खर्चक पूरा विवाद अलग सुनवाईमे रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९९ — कुम्भकर्णक जागब

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

कुम्भकर्णक जगाओल जाएब युद्धक आदेश आ निजी विवेकक टकराव खोलैत अछि। विदेहपुरमे देवीक प्रशिक्षण आ मायकेँ देखभालक दायित्वक बीच संघर्ष उठैत अछि। कमलेश अपन मरम्मतिक अधूरापन मानि सामग्रीक सुरक्षित उपयोग पर निर्णय टारैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०० — दूसर समझौता

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

दोसर समझौतामे रोगी-वाहन, मजदूरी, सामान, बाट आ आपत्तिक पाँच कागद लिखित रूपमे राखल जाइत अछि। आपातकालक नामपर ठेलावाला आ अन्य श्रमिकक भाड़ा नहिये मेटल जा सकैत। सार्वजनिक प्रति आ मूल आपत्ति अलग संरक्षित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०१ — रोगीक समय

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

अस्पतालक पुरान पाँखमे चुएल छत आ सीमित निकासक बीच रोगी स्थानान्तरणक वास्तविक समय गनल जाइत अछि। सलमा परिवारक संग रहबाक जरूरत आ सुरक्षित गाड़ीक व्यवस्था मिलबैत छथि। बाहर तारा आ हीरा अस्थायी पाट आ कमजोर दीवालक माप फेर जाँचैत छथि।

अध्याय १०२ — मरम्मतिक तह

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

गोमती मरम्मतिक ऊपरक सीमेण्ट हटबैत भीतर कमजोर भराव आ पानिसँ भीजल तह देखैत छथि। तारा बिलक मात्रा, वास्तविक माटि-खेप आ स्थल-जाँच अलग करैत छथि। अदिति छोट मरम्मतिक पर्याप्त होएबाक अपन पहिनुक दावा वापस लैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०३ — सकारात्मक युक्ति

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

उदयनक तर्क-बहसमे सकारात्मक अनुमान आ विरोधी सम्भावनाक अन्तर जाँचल जाइत अछि। अस्पताल लग सफाइक काम, बन्द निकास आ उपकरणक अभाव पर रानीक टोलीक निरीक्षण होइत अछि। काज प्राप्त भेलासँ जलनिकासी सुरक्षित सिद्ध नहि मानल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०४ — शक्तिक प्रश्न

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

नूरजहाँक गाड़ीक सुरक्षित भार आ सुगनीक जलसर्वेक्षणक माध्यमसँ काम करबाक वास्तविक क्षमता पर प्रश्न उठैत अछि। स्त्रीसभ जलचिह्न, गाद आ घरक अनुभव अलग स्रोतसँ जुटबैत छथि। सर्वेक्षण अपने नाली नहि खोलैत, मुदा सुरक्षित निर्णयक आधार बनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०५ — बिनौटक पुल

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

तारा, श्याम, ललित आ हीरा अस्थायी बाँस-पुलक गाँठ, भार, झुकाव आ जलस्तर जाँचैत छथि। निर्धारित परीक्षणक बादो पूर्ण उपयोगक घोषणा नहि होइत। एक मजदूरक छुटल आधा दिनक दाम ठीक कराओल जाइत अछि; तकनीकी सुरक्षा आ श्रमक हिसाब संग चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०६ — उपचारक स्वीकार

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

२०३९क बरखा मे अनिरुद्ध अस्पतालक पुरान औषधि-पेटीक गलत प्रविष्टि सुधारबाक आवश्यकता स्वीकार करैत छथि। कथित दबाववला फोनक सत्यापन एखन बाकी अछि। रोगीक उपचार जारी रखैत पुरान विवरण फाड़बाक बदला नब प्रमाणित सुधार-पन्ना जोड़ल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०७ — पाँच हस्ताक्षर

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

देवव्रतक गोदाम सीमित नियमसँ खुलैत अछि; अस्पताल आ आश्रय लेल जरूरी सामग्री बाहर पहुँचाओल जाइत अछि। पाँच हस्ताक्षरक प्रक्रियामे खाद्यसामग्री, इन्धन, रात्रि-पाली आ श्रमिकक देय स्पष्ट कएल जाइत अछि। राहतक जिम्मेदारी मुफ्त श्रममे नहि बदलैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०८ — जलस्तरक बाहर

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड

हीराक जलमापक लाल चिह्न डूबि जाइत अछि; बाहा आ छरकीपर पानिक दबाव बढ़ैत अछि। तारा आ स्थानीय लोक रेतीक बोरा, चेतावनी-बाँस आ नावक रस्सी जाँचैत छथि। अस्पतालक दवा, आश्रयक भोजन आ जलपहरा एकसंग चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

अध्याय १०९–१२० · बाढ़ि, बचाव, ढाँचा-हानि आ रात्रिक संकट

अध्याय १०९ — रातिक सन्धि

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

बाढ़िक रातिमे रुहानी आ रुखसाना आश्रयक भोजन, पहुँचलक नाम आ सुरक्षा-सूचना सावधानीसँ संचालित करैत छथि। एक परिवारक सुरक्षित होएबाक खबरकेँ समस्त बाट खुलि गेलाक घोषणा नहि मानल जाइत। रात्रिक सन्धिमे प्रत्येक पालि आ पारिश्रमिकक स्पष्ट लेखा रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११० — गोदाम खुलल

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

देवव्रत गोदामक दोसर कक्ष खोलि आवश्यक सामग्रीक अधिकृत वितरण करबबैत छथि। बाहरी नदीक जलस्तर घटितो गोदामक पछिला ठाढ़ पानिक स्रोत स्पष्ट नहि अछि। जाँच, कागदी रसीद आ वस्तु लोक धरि पहुँचबाक वास्तविक बाट अलग महत्त्व पबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १११ — नावक क्षमता

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

घाटपर नावक भार, पाट, रस्सी आ यात्रिक संख्या जाँचि सुरक्षित नावसभ चिह्नित होइत अछि। केशरी पुरान नाव बेचबाक बदला मरम्मति आ श्रमऋणक हिसाब पर निर्णय लैत छथि। प्रत्येक नावक अनुमति समयबद्ध अछि; राहत-नावक जिम्मेदारी अलग राखल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११२ — ईशानक हाथ

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

ईशानक घायल हाथ आ हुनकर पोथीक लेखकीय अधिकार पर चर्चा होइत अछि। मैथिली अपन संशोधनकेँ केवल ‘प्रश्न’ नहि, स्वतंत्र बौद्धिक योगदान कहि मान्यता चाहैत छथि। नावक मरम्मति चालू रहैत अछि, जखन ईशानक मूल पन्ना आ अनाम श्रेयक विवाद फेर खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११३ — अश्वत्थामाक राति

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

कुरुक्षेत्रक रात्रिमे अश्वत्थामाक हिंसा शयनस्थ लोकक मृत्यु आ घायलसभक संकट पैदा करैत अछि। बचल व्यक्ति नाम, देह आ परिवारकेँ खबर पहुँचएबाक काज सम्हारैत छथि। अध्याय विजयक आख्यानसँ अलग रात्रिहिंसाक असैनिक परिणाम आ साक्षी-संकट सामने अनैत अछि।

अध्याय ११४ — दवाइ आ बचल श्वास

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

अस्पतालक पुरान पाँखमे भीजल बोरा आ असुरक्षित देहरी रोगीक आवागमन रोकैत अछि। अनिरुद्ध सेहो चोट पबैत छथि आ अपन उपचारक समय-साक्ष्य देबाक स्थिति अनुभव करैत छथि। बाहरी सुरक्षित घुमाउ बाट चिन्हित होइत अछि; पुरान पल्ला नियमित मार्ग नहि मानल जाइत।

अध्याय ११५ — तस्वीरक अनुमति

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

संकेत पुरान पाँखक जोखिमक फोटो बनबैत काल दृश्य उपयोगक विशेष अनुमति माँगैत अछि। रमाक उपस्थितिमे प्रत्यक्षदर्शीक बयान, संरचनात्मक निरीक्षण आ फोटो-प्रकाशन तीन अलग दस्तावेज बनैत अछि। चित्र आपदाक साक्ष्य भऽ सकैत अछि, मुदा बिना सहमति सबकेँ सार्वजनिक नहि करैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११६ — पुरान पाँख

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

गोमती, ललित आ अदिति पुरान पाँखक कमजोर माटि, दीवाल आ सम्भावित ढहबाक जोखिम देखैत छथि। तत्काल तोड़फोड़क प्रस्ताव सहाराक जाँच बिनु अस्वीकार होइत अछि। स्थिर निषेध-रेखा आ सुरक्षित सहायता-ठाम निर्धारित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११७ — नैराक चुनाव

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

नैरा अस्पतालक संकटस्थलपर रहबाक कठिन निर्णय लैत छथि आ बदलैत जलमाप आ रोगी-बाटक सूचना जुटबैत छथि। सुगनी बाहरी खूँटाक बदलाव देखैत छथि, मुदा भीतरी जमीनक जोखिमक सीमा स्पष्ट करैत छथि। नैराक निर्णय हर नव चेतावनीक संग फेर परखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११८ — उर्मिलाक थाकल हाथ

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

उर्मिला थाकल हाथसँ रोगिणीक खाट आ कपड़ा सम्हारैत छथि, जखन ढाँचा बिगड़ैत अछि। अदिति घटना-समय अनुमानमात्र लिखि तीन स्रोतसँ बादमे मिलान करबाक कहैत छथि। उर्मिला रसीद भरबाक बदला तत्काल रोगी बचएबाक काज चुनैत छथि।

अध्याय ११९ — देरिक दूरी

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

ढहल भागक भीतर उर्मिला आ रोगिणीक बाहर पहुँचबाक प्रमाण समयपर नहि भेटैत अछि। नैरा रिक्त प्राप्ति-घर भरबाक जल्दी नहि करैत छथि। हीरा आ बचाव-दल वैकल्पिक सुरक्षित बाट आ गाड़ीक क्षमता तय करैत छथि; अन्य जीवित लोकक पहुँच अलग पुष्टि होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२० — भोरक पहिने

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड

भोरसँ पहिने बचाव-दल अटकल सहारा आ बढ़ैत जोखिमक बीच प्रवेशक सम्भावना परखैत अछि। नैरा उर्मिलाक अन्तिम सुनेल आवाजकेँ जीवन अथवा मृत्युक निर्णायक प्रमाण नहि घोषित करैत छथि। बचावक निर्णय वैज्ञानिक संरचना-जाँचक अधीन रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

अध्याय १२१–१३२ · निश्चित मृत्यु, स्त्रीक शोक आ बचल जीवन

अध्याय १२१ — नामक पुष्टि

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

अस्पतालक बचावक बाद नैरा आ उर्मिलाक मृत्युक सत्यापित सूचना परिवारधरि पहुँचैत अछि। सरिता अपन जीवित रहितो मृत घोषित होएबाक पुरान अनुभवसँ मृत्यु-प्रमाणक दुरुपयोगक भय बुझैत छथि। एहि बेर कागदी पुष्टि वास्तविक अपूरणीय हानिक नाम अछि; कबीर आ सरिताक शोक आरम्भ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२२ — अन्तिम देह

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

शवगृहमे अन्तिम देहक पहिचान, कपड़ा, समय आ परिवारक सहमतिक बारीकीसँ जाँच होइत अछि। देवी घायल छथि, तेँ हुनका तुरन्त बयान लेल दबाओल नहि जाइत। तीन व्यक्तिक नामक सत्यापन भऽ गेल अछि, चौठमक पहिचान प्रक्रिया शेष रहैत अछि; अनुमानसँ अंतिम सूची नहि भरल जाइत।

अध्याय १२३ — गान्धारीक प्रश्न

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

गान्धारी युद्धपछाति मृतकसभक बीच जाइत पुत्र-शोकक संग अन्य परिवारक अनसुन्न हानिक प्रश्न उठबैत छथि। पाकशालाक श्रमिक आ युद्धमे बिना पदवला लोकक खोज सेहो महत्त्व पबैत अछि। गान्धारी अपन राजकीय शोककेँ एकमात्र शोक मानबासँ अस्वीकार करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२४ — मन्दोदरीक भीतर

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

मन्दोदरी रावणक पतनक बाद लंकाक राजगृहमे शोक, भोजनक वितरण आ सेविकासभक सुरक्षाक जिम्मेदारी सम्हारैत छथि। विभीषणक आगमन विजयक उत्सव नहि, नव प्रशासनक कठिन शुरुआत अछि। घर घुरए चाहनिहार वृद्धा केकरो सामूहिक अपराधक नामपर बन्द नहि राखल जाए, ई प्रश्न उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२५ — कुन्तीक स्वीकृति

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

कुन्ती कर्णक जन्म-सत्य युद्धक बाद बतबैत छथि। पाण्डवसभ राधा आ अधिरथ द्वारा कएल पालनकेँ जन्मसम्बन्धसँ छोट नहि मानैत छथि। कुन्ती स्वीकार करैत छथि जे छूटल सन्तानक जीवनक अधिकांश अनुभव हुनका अपरिचित रहि गेल; देर-सँ आयल सत्य सारा हानि नहि सुधारैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२६ — भातक मात्रा

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

सरिता चूल्हिपर भात परसैत नैराक अनुपस्थितिक सामना करैत छथि। कबीरकेँ घरमे भोजनक पूरा अधिकार अछि, मुदा ओकरा नैराक ‘खाली स्थान’ भरनिहार नहि बनाओल जाइत। शोकमे प्रेम, झुँझलाहट, स्मृति आ दैनिक भोजन अपन-अपन रूपमे बचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२७ — बचलक दोष

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

घायल अनिरुद्ध आ कबीर बचि गेलाक दोषबोधसँ जुझैत छथि; ‘जँ’ सँ शुरू होएवला स्मृतिसभ नैराक मृत्युकेँ पलटि नहि सकैत। जिम्मेदारीक वास्तविक जाँच आ शोकक कल्पित आत्म-दण्ड अलग कएल जाइत अछि। कबीर परिवार लेल भोजन आ देखभालक ठोस काजमे लौटैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२८ — चम्पाक उपचार

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

चम्पा चोट आ मानसिक आघातक उपचार लेल परामर्श लैत छथि। रुहानी बुझैत छथि जे नाम गुप्त राखलो उपचारक विशिष्ट समयसँ व्यक्ति पहिचानल जा सकैत अछि। चम्पा अपन चिकित्सकीय अभिलेख आ प्रत्यक्षदर्शी बयान अलग लिफाफामे राखैत छथि; बयानक समय चुनबाक अधिकार अपन हाथमे रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२९ — रुहानीक सूची

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

रुहानी आश्रयमे सार्वजनिक निवासी-सूची बनएबाक दबावक बदला आगि-पानि संकट लेल सीमित परिचर्या-पंजी तैयार करैत छथि। जुबैदा आ रुखसाना संग साझा चाभी, भोजनक संख्या आ निजी विवरणक सीमा तय होइत अछि। सुरक्षा-सूची निगरानीक सार्वजनिक साधन नहि बनैत।

अध्याय १३० — द्रौपदीक बचल दिन

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

युद्धपछाति द्रौपदी अपन शेष दिनमे भोजन, घायल बालक, कुन्ती आ स्त्रीसभक अलग शोकक सामना करैत छथि। हुनकर जीवन केवल अपमान वा युद्धक कथा नहि रहैत। स्वयं अपन भूखक मात्रा चुनि भोजन करबाक साधारण अधिकार शेष जीवनक मूल स्वर बनैत अछि।

अध्याय १३१ — सीताक अग्नि

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

लंकामे सीताक निर्दोषता नापबाक लेल अग्निक प्रस्ताव उठैत अछि। सीता अपन जीवन आ निर्णयकेँ सार्वजनिक संशयक न्यायालयक वस्तु बनबएबाक प्रश्न करैत छथि। अशोकवाटिकामे घायल लोक आ हराएल सम्बन्धीसभक खोज बीच हुनकर अनुभव स्त्रीक स्वत्वक स्वतन्त्र कथा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३२ — नम्बरक बाद

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड

अस्पतालक मृत्यु-पंजीक संख्या सत्यापित भऽ अन्तिम रूप पबैत अछि, मुदा सहायता, आवास, मुआवजा आ निजी अनुष्ठानक दाबी अलग खुलल रहैत अछि। रमा सरकारी मद आ स्वेच्छिक धार्मिक खर्चकेँ भिन्न पंजीमे राखैत छथि। मृत्यु-संख्या पूरा भेलासँ परिवारक हकक हिसाब पूरा नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

अध्याय १३३–१४४ · जाँच, शासन आ जिम्मेदारीक विश्लेषण

अध्याय १३३ — शासन के लेत

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

आपदापछाति शासन आ समितिक नेतृत्व के लेत, एहि प्रश्नपर २०४०मे चर्चा होइत अछि। अनिरुद्ध चिकित्सा-विशेषज्ञताक आधारपर मतदान वा नेतृत्वक स्वतः अधिकार अस्वीकार करैत छथि। असहमतिक अधिकार आ नेतृत्व बदलबाक प्रक्रिया लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३४ — युधिष्ठिरक अरुचि

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

युधिष्ठिर युद्धक बाद मुकुट पहिरबामे अनिच्छा व्यक्त करैत छथि। विदुर हुनका राजधर्मक संग रसोइक श्रमिक, पशु, घायल आ परिवारक बकाया प्रश्न देखबैत छथि। राजपद स्वीकारे सँ पहिने युद्धक वास्तविक लागतक सार्वजनिक सुनवाई महत्त्व पबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३५ — भीष्मक शय्या

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

भीष्मक शरशय्यापर युधिष्ठिर शासन आ दायित्वक प्रश्न लऽ पहुँचैत छथि। अनौपचारिक सेवा करनिहार आ घायल पशु सम्हारनिहार लोकक देयक उल्लेख होइत अछि। द्रौपदी कहैत छथि जे पहिल सुनवाईमे ककर आवाज सुनल जाए, तकर निर्णय स्वयं न्यायसँ जुड़ल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३६ — पहिल बयान

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

सरिता सार्वजनिक जाँचमे अपन बयान दैत छथि, मुदा पुरान शब्दक अर्थ आ स्रोतक सीमा स्पष्ट रखैत छथि। बदरीक परिवार अस्थायी भूखंडकेँ ‘स्थायी पुनर्वास’ मानि सही करब अस्वीकार करैत अछि। अदिति अपन हस्ताक्षरवला पुरान मापक प्रतिवेदन फेर जाँचबाक निर्णय लैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३७ — पुरान प्रतिवेदन

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

अदिति पुरान नाप-पट्टी, अपन पहिनुक हस्ताक्षर आ नब प्रत्यक्ष प्रमाण मिलाबैत छथि। सफाइ-श्रमिकक सुरक्षित रहि कएल कामक मजदूरी पर सेहो प्रश्न उठैत अछि। दुर्घटनाक भौतिक कारण, कर्तव्य-उपेक्षा, अवैध लाभ आ जानबूझि हिंसाक आरोप अलग जाँच-खानामे बाँटल जाइत अछि।

अध्याय १३८ — दोषक अलग खाना

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

गोमती चारि जाँच-फाइल खोलैत छथि, जाहिसँ ढाँचाक विफलता, दायित्वक उपेक्षा, निजी लाभ आ हिंसक षड्यन्त्र एक नहि भऽ जाए। केवल मालक शंकास्पद ढुलाईसँ जानि-बुझि निकासी बन्द कएल गेल, ई सिद्ध नहि होइत। गवाह, घायल आ आरोपितक अलग भूमिकाक सीमा राखल जाइत अछि।

अध्याय १३९ — तर्कक पुनरागमन

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

उदयनक शास्त्रार्थमे अनेक कारण-शृङ्खलासँ एक चेतन नियन्ताक निष्कर्षपर बहस होइत अछि। आधुनिक जाँचमे सेहो चारि फाइलक छाया मिलितो प्रमाण अलग रखने आवश्यक ठहरैत अछि। विवादक दार्शनिक उत्तर प्रशासनिक दायित्वक साक्ष्यक ठाम नहि लैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४० — कर्म आ कारण

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

गोमती आ रमा आदेशक अधिकार, मजदूरक मौखिक चेतावनी, उपेक्षा आ दुर्घटनाक परिणाम अलग-अलग परखैत छथि। अनुमानित कथनकेँ पक्का लिखित सूचना नहि बनाओल जाइत। सहायता, न्यायिक मुकदमा आ प्रशासनिक उत्तर तीन भिन्न प्रक्रियाक रूपमे आगाँ बढ़ैत अछि।

अध्याय १४१ — मदद आ मुकदमा

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

चिकित्सा-सहायताक पर्चीमे दवाक दान आ मुकदमा छोड़बाक छिपल शर्तक विवाद उठैत अछि। देवव्रत अपन संस्था सँ निकलल सामग्रीक मूल बही जाँच लेल देबाक कहैत छथि। मदद लेनाइ कानूनी अधिकार छोड़बाक सहमति नहि बनबाक सिद्धान्त स्थापित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४२ — दवाइक स्रोत

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

अस्पतालक तीन दवा-पेटीक स्रोत, मुहर आ आपूर्तिक मिलान होइत अछि। सत्यापित औषधि उपयोग लेल जाइत अछि; अस्पष्ट पेटी सीलबन्द रहैत अछि। रहीमक गलत शंकामे रोकल गद्दाक बोरा वापस होइत अछि। अलग-अलग श्रमिक आ रोगीक अधूरा आर्थिक दाबी शेष रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४३ — आश्रयक नियम

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

रुहानी आश्रयक साझा चाभी आ गोपनीय निवासी-देखभालक नियम नव रूपमे बनबैत छथि। संकटमे दरबज्जा खोलने रहब आश्रितक सम्पूर्ण निर्णयक स्वामित्व नहि दैत। जुबैदा, रुखसाना आ अन्य स्त्रीसभक भागीदारीसँ सुरक्षित आश्रयक अधिकार बाँटल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४४ — कामक जिज्ञासा

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड

आश्रयक छोट कक्षमे पढ़ा बच्चासभकेँ खाली कटोरी, रसीद आ नापडोरीसँ प्रश्न करब सिखबैत छथि। विद्यालयक औपचारिक संख्या सँ आगाँ बच्चाक वास्तविक जिज्ञासा महत्त्व पबैत अछि। नन्हि छात्रा ‘हम पढ़ि सकैत छी?’क उत्तर अपन हाथसँ लिखैत अछि।

SECTION / खण्ड

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

अध्याय १४५–१५६ · सामाजिक सहायता, अधिकार आ न्यायिक प्रक्रियासभ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४५ — राशनक पाँति

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

राशनक पाँतिमे रुखसाना, दुलारी आ अन्य स्त्रीसभ अन्नक सही तौल, दूरसँ अएनिहारक बोलबाक अवसर आ ऋणमुक्तिक दबाव अलग करैत छथि। दुलारीक वितरण-हस्ताक्षर ऋण छोड़बाक दस्तावेज नहि बनैत। किछु गलत नाम सुधरैत अछि, मुदा पुरान बकाया एखन शेष अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४६ — फकीराक पास

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

फकीरा अपन यात्रा-पासक गलत मृत्यु-प्रविष्टि सुधारबाक संघर्ष जारी रखैत छथि। साथमे फरीदक व्यक्तिगत देय आ परिवारक साझा ऋणक अन्तर उभरैत अछि। पद्मा आ संकेत पाठशालामे अनेक तरहक उत्तर दऽ सकबाक चलन्त संकेत-पट्टीक तैयारी करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४७ — संकेतक कक्षा

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

संकेत रङ्ग, उभरल धागा, लकड़ीक चिह्न आ अक्षरक सहारे भिन्न क्षमता-वला बच्चासभ लेल पाठशालाक उपकरण बनबैत अछि। देवी स्वास्थ्य-संकेतक सलाह दैत छथि। कक्षामे प्रत्येक छात्र अपन ढंगसँ बुझल बात देखबैत अछि; उपकरण आ शिक्षण-श्रमक दामक प्रश्न सेहो उठैत अछि।

अध्याय १४८ — पञ्चाक फीस

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

पञ्चा नामांकन, शिक्षकक घण्टा आ भाषिक मध्यस्थताक फीस अलग बहीमे रखैत छथि। गरीब बच्चाक परिवारपर शुल्क नहि थोपि सेवा मँगनिहार संस्थासँ उचित पारिश्रमिक लेबाक प्रस्ताव स्वीकार होइत अछि। सांकेतिक शिक्षा ‘नि:शुल्क सहायता’क नामपर शिक्षकक अदृश्य श्रम नहि बनैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४९ — जानकीक खण्डन

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

जानकी विद्यालयक गलत प्रकाशित आरोपक औपचारिक खण्डन आ ओकर आर्थिक प्रभावक प्रश्न उठबैत छथि। राजो अपन ढुलाईक पुरान मजदूरीकेँ सहायता-राशिमे समाहित नहि करए दैत छथि। पुरान वायरल वीडियो फेर पसरिते जानकी ओकर समय आ स्रोत सुरक्षित रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५० — चेहरा आ प्रमाण

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

नव-नव नामसँ पसरैत काटल वीडियोकेँ साजिद आ जानकी स्रोतसहित जाँचैत छथि, मुदा बच्चाक चेहरा सार्वजनिक नहि करैत। रेवा विद्यालय-प्रवेशक वास्तविक खर्चक दाबी रखैत छथि। कक्षा फेर एहि प्रश्नपर पहुँचैत अछि जे के पढ़ि सकैत अछि आ केकरा रोकल गेल छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५१ — शम्बूकक पाठ

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

शम्बूकक पाठक बहाने जाति-आधारित शिक्षा-निषेध आ ज्ञानाधिकारक प्रश्न विद्यालयमे उठैत अछि। जतन अपन नव प्रवेश-पर्ची संग उत्तर खोजैत अछि। समानान्तर जलसमितिमे नावक मरम्मति, नलक पानि आ नदीक नाम-नापक अधूरा मुद्दा चलैत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५२ — माटिक बकाया

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

शकुन्तला टूटल माटिक बासन, भट्ठीक पहुँच आ बकाया पारिश्रमिकक अलग दाबी करैत छथि। नतिनी विद्यालयमे अपन प्रश्न आ चित्रसँ चाकक ‘स्थिर केन्द्र’क विचार जाँचैत अछि। देयक लिखित आदेश भेटैत अछि, मुदा रकम एखन खातामे नहि पहुँचल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५३ — नदीक माप

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

हीरा तिलवाह नदीक पुरान आ नव जल-चिह्न ऋतु आ समयसँ जोड़ि जाँचैत छथि। पोखरिक गाद कतय राखल जाए, एहि निर्णयमे प्रभावित घरक स्त्रीसभ सहभागी बनैत छथि। पुरान अनुमानकेँ अपरिवर्तनीय सत्य नहि मानि नव माप लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५४ — सहमतिक दस्तावेज

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

पोखरिक घाटपर मत्स्यपट्टाक अनुमति आ सार्वजनिक प्रवेशक सीमा टकराइत अछि। रेणु, रमणी, रुहानी आ रमा जल-उपयोग, निजी फोटो, बंद लिफाफा आ सार्वजनिक दस्तावेजक सहमति अलग ठहरबैत छथि। सार्वजनिक सीढ़ी ककरो निजी देह वा जानकारीक मुक्त उपयोग नहि बनैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५५ — हिंसाक गवाही

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

घाटक बाद हिंसाक एक गोपनीय गवाही आश्रयमे पहुँचैत अछि। प्रभावित पुरुष मित्रसँ भेंट चाहैत छथि, मुदा पूरा विवरण साझा करबाक अनुमति नहि दैत। अपन बयानक खाली पन्नापर ‘एखन नहि’ लिखबाक अधिकार मानल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५६ — नियमक अपवाद

पर्व १३ · अनुशासन | उत्तरकाण्ड

गोपनीय चिकित्सा आ बयान लेल आश्रयक सामान्य नियममे सीमित अपवाद बनैत अछि। रुहानी अलग सुरक्षित भेटक ठाम, परदा, कर्मचारीक समय आ खर्चक स्पष्ट प्रावधान रखैत छथि। पीड़ितक ‘सुनू, मुदा सभक आगाँ नहि’क अनुरोध सार्वजनिक तमाशा नहि बनैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

अध्याय १५७–१६८ · साझा अभिलेख, श्रेय आ सार्वजनिक अनुगमन

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५७ — छूटल घोड़ाक बाट

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

अश्वमेधक छूटल घोड़ा राज्यक विस्तार आ अन्य प्रदेशक सहमतिक प्रश्न खोलैत अछि। आधुनिक दौरा-प्रक्रियामे हर गामक स्वतंत्र निर्णय, प्रवेश आ मजदूरीक देय अलग लिखल जाइत अछि। बाजारक त्रुटि सुधरबाक अर्थ सभ शिकायतमे निर्दोष सिद्ध होएब नहि मानल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५८ — अर्जुनक पहिचान

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

मणिपुरमे अश्वमेधक घोड़ा आ अर्जुनक पहिचान वंश, युद्ध आ स्थानीय स्वायत्तताक संघर्ष जगबैत अछि। आधुनिक शिविरक यात्रामे निजी लिफाफा आ सार्वजनिक व्यय अलग राखल जाइत। दुर्गा अपन नव ग्राहक चुनबाक अधिकार व्यापारीक एकाधिकारक विरुद्ध रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५९ — चलैत अभिलेख

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

सरिता चलैत शिविरक अभिलेख सँ गाम-गाम अधिकारक प्रति पहुँचबैत छथि। बच्चाक स्कूलबाट, दस्तावेजक स्थान आ व्यक्तिक सहमति क्षेत्रविशेषमे जाँचल जाइत अछि। यात्रा समाप्त भेलापर ओ नैराक खाली कुर्सी देखैत छथि, मुदा शिविरक अगिला पन्ना खुलल रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६० — सरिताक योगदान

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

सरिता दार्शनिक पन्नाक नकल, उदाहरणक स्रोत, घरेलू श्रमक खर्च आ शिविरक रसीद चारि अलग गड्डरमे बाँधैत छथि। हुनकर बौद्धिक आ घरेलू योगदानक स्वतंत्र श्रेय उठैत अछि। खेत-उपयोगक नवा करारमे परिवार पूर्ण प्रबन्धकीय अधिकार छोड़बाक शर्त जाँचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६१ — मैथिलीक अपना नाम

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

मैथिली पुरान प्रूफ-पन्नासँ अपन लेखकीय संशोधनक प्रमाण प्रस्तुत करैत छथि। ईशानक नामक संग हुनकर अपन नाम आ प्रश्नक अधिकारक चर्चा आगाँ बढ़ैत अछि। साथे रात्रि-श्रमिक लखनक हाजिरी आ वास्तविक पालीक अलग गवाही लेल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६२ — प्रमाताक दावा

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

उदयनक अध्ययन-परम्परामे जाननिहारक विश्वसनीयताक प्रश्न उठैत अछि; भूल पोंछने मात्र मूल निशान नहि मेटैत। मैथिली श्रेय तय करबामे गैरप्रतिष्ठित व्यक्तिक सही गवाहीक स्थान चाहैत छथि। निरु साझा भट्ठीमे तीन वस्तुक अलग गुणवत्ता आ दामक परीक्षण देखबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६३ — पुरान पुस्तक नव भूमिका

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

पुरान पोथीक नव भूमिकामे ईशान, मैथिली आ अन्य सहायकक योगदानक ऐतिहासिक रेखा फेर लिखल जाइत अछि। पुनर्वासिमे बराबर क्षेत्रफलक दूरस्थ जमीन बराबर जीवन-सम्भावना नहि मानल जाइत। उर्मिलाक परिवारक मजदूरी-दाबी पुस्तकक छपाई-खर्चसँ अलग राखल जाइत अछि।

अध्याय १६४ — उर्मिलाक देय

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

सरिता उर्मिलाक मृत्यु-पत्र, आंशिक बैंक-जमा, पुरान मजदूरी-पंजी आ बाँकी देय अलग जाँचबबैत छथि। उर्मिलाक बहिन वास्तविक पैसा पहुँचबाक प्रमाण रखैत छथि। एक श्रमिकक भुगतान भेलासँ अन्यक शेष राशि बन्द नहि मानल जाइत; मृतकक कमाइ परिवारक हक बनल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६५ — वाक्यक तात्पर्य

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

‘मृत्यु उपरान्त खाताक समापन’क सरकारी वाक्यक सटीक तात्पर्य पर पद्मा आ परिवार चर्चा करैत छथि। मृत्यु बाद श्रमिकक बकाया स्वतः समाप्त नहि होइत। बैंक, जमीन, नाप आ घरेलू सम्पत्तिक सीमित सहमति अलग अर्थमे पढ़ल जाइत अछि।

अध्याय १६६ — बुनकरक बाजार

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

बुनकरक बजारमे यूसुफ, पार्वती, पवित्रा आ सकीना अलग सामग्री, रङ्ग, मेहनताना आ साझेदारीक रसीद तय करैत छथि। बिन्देश्वरी पुरान तेल-घानी बेचबाक संग परिवारक मापपात्र आ बही सुरक्षित रखैत छथि। नव बजारमे व्यावसायिक स्वातंत्र्य आ स्मृतिक देय संग-साथ रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६७ — बिना सम्राटक नाप

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

पंचायतमे मौसमी जलमाप आ खेत-नक्शा स्थानीय जनक अनुभवसँ फेर बनैत अछि। तारा ऋतु, पशु-बाट, मजदूरी आ वास्तविक जलनिकासी चिन्हित करैत छथि। केवल ऑनलाइन प्रति उपलब्ध कराएब पर्याप्त नहि; जिनका ज्ञान लेल गेल, हुनका उपयोगी प्रति घुरब आवश्यक ठहरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६८ — फेर लौटत प्रति

पर्व १४ · अश्वमेध | उत्तरकाण्ड

पंचायत स्वीकृत मौसमी नक्शाक प्रति प्रभावित लोक धरि पहुँचबैत अछि। पुनर्वासक ‘स्थायी’ दावापर बदरीक असहमति कारणे अनुदानमे विलम्ब होइत अछि। रमा प्रतिक वास्तविक उपयोग, स्वामित्व आ अगिला अधिकार-प्रक्रियाकेँ खुलल प्रश्न बनाकऽ रखैत छथि।

SECTION / खण्ड

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

अध्याय १६९–१८० · वृद्धावस्था, निजता, श्रम आ व्यक्तिगत दूरी

अध्याय १६९ — धृतराष्ट्रक हाथ

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

धृतराष्ट्र वृद्धावस्थामे देखभालक संग अपन निर्णयाधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। आधुनिक पंचायतमे वृद्ध स्त्री अपन घरक फोटो, निजी पीड़ा आ सुधरल अभिलेखक पहुँच सीमित रखबाक शर्त दैत छथि। रमा जाँचैत छथि जे बुजुर्गक सहमति स्वयं हुनकर अछि, केवल परिवारक सुविधाक आदेश नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७० — गान्धारीक प्रस्थान

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

गान्धारी, धृतराष्ट्र आ संजय राजगृह छोड़ि वनक बाट पकड़ैत छथि। यात्रा डरक बावजूद अपन इच्छा अनुसार कएल निर्णय अछि। आधुनिक वृद्धक बसयात्रामे किराया, चाभी आ परिचर्याक कठिनाई अलग यथार्थ बनैत अछि; महाकाव्य आ समकालीन घटनाकेँ एकहि ऐतिहासिक प्रमाण नहि कहल जाइत।

अध्याय १७१ — कुन्तीक शेष वचन

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

कुन्ती वनप्रस्थानमे कर्णसँ सम्बन्धित अपन मौनक शेष भार स्वीकार करैत छथि। गान्धारी याद करबैत छथि जे अपन बोझक सामना करब दोसरापर बोझ थोपब नहि अछि। समकालीन वृद्ध स्त्री सेहो यात्रा बीच अपन स्वास्थ्य आ ठहरबाक दिन स्वयं चुनैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७२ — ईशानक कमरा

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

ईशान पुस्तकालयक निजी कमरा आ खुलल अध्ययनक पहुँचबारे निर्णय लैत छथि। मैथिलीक उत्तरमे सार्वजनिक पाठ सम्भव अछि, मुदा पुरान वैवाहिक निकटता स्वतः फेर स्थापित नहि होइत। पोथीक अधिकार आ व्यक्तिक निजी सम्बन्धक अलग सीमाक सम्मान कएल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७३ — मैथिलीक दूरी

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

मैथिली अपन अलग अध्ययनक चाभी आ निवासक दूरी बनौने रखैत छथि। आयोजक ‘साहित्यिक दम्पतीक मेल’क फोटो चाहैत छथि, मुदा ओ अपन सम्बन्धकेँ समारोहक नाटक बनएब अस्वीकार करैत छथि। चम्पाक औषधिक व्यावहारिक आवश्यकतामे वास्तविक सहयोगक बाट खुलल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७४ — माइक औषधि

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

चम्पा माइक औषधिक अस्पष्ट पर्चीक सुरक्षित पुष्टि करबबैत छथि, अनुमानसँ दवा नहि किनैत। अपन कमाइ आ प्रेम-सम्बन्धकेँ माइक देखभालक अधीन पूर्णतः विलीन नहि होए दैत छथि। अमरेश संग भेटमे समय, चुनाव आ दैनिक खर्चक बराबर अधिकार स्थापित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७५ — कबीरक चिट्ठी

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

कबीर नैराकेँ सम्बोधित अनपठाओल निजी चिट्ठी सम्हारैत छथि। पुरान दराज, सम्बन्ध आ अधूरा वाक्यक बीच ओ शोककेँ सार्वजनिक घोषणामे नहि बदलैत। सरिता संग साधारण भोरक व्यवस्था आ एक-दोसराक स्वतन्त्रताक आदरमे सम्बन्धक नव रूप बचैत अछि।

अध्याय १७६ — सरिताक भोर

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

सरिता नैराक मृत्यु बादक भोरमे चूल्हा, घुटनाक पीड़ा, विद्यालय आ भोजनक काम जारी रखैत छथि। बेटीक पसिन्नक भोजन याद करैत छथि, मुदा ओकर नामपर हर क्रिया दोहरएबाक बाध्यता नहि बनबैत। दैनिक जीवनक पुनरावृत्ति शोकक समाप्ति नहि, संगमे जिएबाक स्थिति बनैत अछि।

अध्याय १७७ — वृद्धक सहमति

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

चम्पा वृद्ध माय सावित्रीक लाठी, उपचार आ मेलामे जाएबाक इच्छा पर हुनकासँ सहमति लैत छथि। सावित्री अगिला दिन विश्राम चुनैत छथि। देखभालमे स्वास्थ्यक जानकारी दैतो बुजुर्गक निर्णय अपन रहैत अछि; बेटी अपन रोजीक काम जारी रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७८ — विदुरक मार्ग

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

वनाश्रममे विदुरक मार्गप्रसंग अधिकार आ नैतिक स्वतन्त्रताक प्रश्न उठबैत अछि। विदेहपुरमे फूलमतीक समिति-प्रतिनिधित्व आ माछक भावक घाटा पर निर्णयक अधिकार माँगल जाइत अछि। विद्यालयमे असहमति सुनब सार्वजनिक कर्तव्य अछि, मुदा व्यक्तिक निजी क्षमा अलग रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७९ — निजी क्षमा

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

वनाश्रममे गान्धारी, विदुर आ संजय निजी क्षमा आ परिचर्याक सम्बन्धकेँ अलग बुझैत छथि। आधुनिक घुमन्तु परिवारसभ जबरन बेदखली रोकबाक लेल सीमित गठबन्धन बनबैत अछि, मुदा सभकेँ एक बाट चलबाक बाध्यता नहि देत। सार्वजनिक अपील व्यक्तिगत क्षमाक सूची नहि बनैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८० — आश्रयक बाहर

पर्व १५ · आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड

रुहानीक आश्रयक बाहर रहनिहार, अस्थायी रूपसँ अएनिहार आ फेर घुरनिहार लोकक अलग जरूरत सामने अबैत अछि। वनाश्रमक मचानसँ अरुणाक पुरान पानिबाट बन्द होएबाक विरोध उठैत अछि। सहायता-स्थल अपन सीमा बाहरक जीवनपर अधिकार थोपि नहि सकैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

अध्याय १८१–१९२ · उत्सवक विघटन, नवा ठेका आ सुधारक देय

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८१ — यादवक उत्सव

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

यादवक उत्सवक प्राचीन प्रसंगक समानान्तर आधुनिक उत्सवक मैदानमे दाता-कम्पनीक नाम, कलाकारक स्वर आ कारीगरक डिजाइनक अधिकार पर विवाद उठैत अछि। सुमित्रा अपन नमूना, हिस्सा आ परीक्षण-शर्तक लिखित श्रेय प्राप्त करैत छथि। चन्द्राक गीतक पूरा दाम एखन प्रतीक्षित अछि।

अध्याय १८२ — मादक दिन

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

उत्सवक मादक वातावरणमे एक युवकक स्वास्थ्य बिगड़ैत अछि; चम्पा ओकर उपचारक निजता सुरक्षित रखैत छथि। संगमे सुमनक मौलिक डिजाइनक डिजिटल उपयोगक अनुमति पर प्रश्न उठैत अछि। सार्वजनिक शुभकामना रोगीक निजी विवरण अथवा कलाकारक रचनाधिकारकेँ मुक्त नहि करैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८३ — स्मारकक ठेका

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

स्मारकक नवा ठेकामे घाट-सफाइक वास्तविक काम, लोकक नाम आ व्ययक श्रेय पर विवाद उठैत अछि। प्राचीन द्वारकाक जय-चिह्न आ मृत नाविकक स्मृतिक समानान्तर सामूहिक श्रेयक प्रश्न उभरैत अछि। सरिता नैराक नामकेँ चकाचौंधक पट्टी बनबएबाक बदला लोकक अधूरा देय पर ध्यान रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८४ — रुहानीक चुनाव

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

रुहानी आश्रयक नेतृत्व-चुनावमे स्वयं नियन्त्रण छोड़बाक निर्णय लैत छथि। बहिरा वृद्ध सदस्यक मत बुझबाक लेल पद्मा सुलभ सम्प्रेषणक व्यवस्था करैत छथि। झरना नव जिम्मेदारी लेतीह; दाता-कम्पनीक संशोधित शर्त बिना सार्वजनिक समीक्षा स्वीकार नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८५ — दानक शर्त

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

नव अध्यक्ष झरना शैलजक कम्पनी आ देवव्रतक सहायता-संस्थाक दान-पत्र जाँचैत छथि। बीमार बच्चाक तुरन्त दवाइ रोकने बिना दानसँ जुड़ल अनुचित नियन्त्रणक शर्त अलग कएल जाइत अछि। सीमित सहायता भेटैत अछि, मुदा आर्थिक स्वायत्तता आ भविष्यक दायित्वक विवाद खुलल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८६ — ताराक भूल

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

तारा अपन पुरान छायाप्रति आ नापमे भेल त्रुटि सार्वजनिक सुधारसहित स्वीकार करैत छथि। साकीब ढुलाई-भाड़ा आ मजदूरीक एक रसीदमे मिलल राशि अलग करबबैत छथि। व्यक्ति द्वारा भूल स्वीकार करब सम्पूर्ण षड्यन्त्रक प्रमाण नहि; सुधारक प्रति सुरक्षित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८७ — रसोइक घाटा

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

रुखसाना सामुदायिक रसोइक भोजन-संख्या आ छह दिनक श्रमिक-पालीक आर्थिक घाटा देखबैत छथि। ‘समुदाय-सेवक’ कहि नियमित श्रमिकक पारिश्रमिक न देबाक प्रस्तावक विरोध होइत अछि। भोजन चलेबाक संग प्रतिदिनक समय, दाम आ समीक्षा-पत्र बनैत अछि।

अध्याय १८८ — औजारक बाजार

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

हरिनारायण आ अजित औजारक बाजारमे नाव, रस्सी आ मरम्मतिक वास्तविक दाम तय करैत छथि। कमलेश दोकानक अतिरिक्त सुरक्षा-जमाक यथार्थवादी किस्त चाहैत छथि। द्वारकाक बलरामक प्रसंगमे वस्तुपर कुलचिह्न आ श्रमिकक अनाम योगदानक अन्तर सामने अबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८९ — बलरामक दूराइ

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

बलराम द्वारकाक उत्सवक हिंसक विघटन आ राजकुलसँ दूरीक निर्णय लैत छथि। ओ बुझैत छथि जे दूर जाएब पूर्वक दायित्व मेटब नहि। आधुनिक औजारक बाजारमे नजीर पुरान अप्रमाणित आरोपक असर भोगैत छथि; श्रमक प्रतिष्ठा सहज पुनःस्थापित नहि होइत।

अध्याय १९० — कृष्णक अन्त

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

द्वारकाक युद्धोत्तर विघटनमे कृष्णक अन्तक प्रसंग खुलैत अछि। आधुनिक विदेहपुरमे बन्द वन-फाटकसँ कारीगरनीक बजारक बाट आ आय बाधित होइत अछि; सीमित उपयोगक अधिकार लिखल जाइत अछि। सरिता मृत्युकेँ दैवी औचित्य देबाक बदला आजुक जीवितक ठोस देय देखैत छथि।

अध्याय १९१ — सबटा टूटल नहि

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

गोमती पोखरिक उराहि आ श्रमिकक भुगतान जाँचि पुनर्निर्माणक बचल सम्भावना देखैत छथि। तारा वर्षा, रबी आ मौसमी पहुँचक तीन नक्शा बनबैत छथि। सामुदायिक अभिलेखपर ‘केन्द्रीय स्वामी’ चुनबाक नव निविदा एकर स्वायत्तताक लेल संकट बनि उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९२ — नव मालिकक डर

पर्व १६ · मौसल | उत्तरकाण्ड

तारा केन्द्रीय डिजिटल अभिलेख-स्वामित्वक निविदामे सामुदायिक प्रति, सुधारक चाभी आ स्थानीय पहुँच पर उठल खतरा देखबैत छथि। तकनीकी सेवा चलबाक आवश्यकता सेहो वास्तविक अछि। लिखित आपत्ति दैत समुदाय अनेक संरक्षक आ दूरक बस्ती धरि प्रतिक पहुँचक योजना बनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

अध्याय १९३–२०४ · यात्रा, घरवापसी आ गोपनीय स्मृतिक रक्षा

अध्याय १९३ — यात्राक घोषणा

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

युधिष्ठिर परीक्षितकेँ उत्तराधिकार सौंपि महाप्रस्थानक यात्रा आरम्भ करैत छथि। आधुनिक तारा आ संकेत अभिलेखक प्रति लऽ गामसभ धरि जाइत छथि, मुदा प्रत्येक परिवारक निजी सहमति आ मजदूरीक शर्त अलग रखैत छथि। किछु यात्रा स्थगित करब सेहो जिम्मेदार निर्णय होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९४ — द्रौपदीक बाट

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

महाप्रस्थानक कठिन बाटपर द्रौपदीक शारीरिक थकान आ पुत्रसभक निजी स्मृति उभरैत अछि। भीम हुनकर हाथ सम्हारैत छथि, मुदा द्रौपदी फेर नहि उठैत छथि। यात्रा शौर्यक निर्बाध आरोहण नहि, साथी गुमएबाक कठोर अनुभव बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९५ — भाइसभक दूरी

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

महाप्रस्थानमे सहदेव आ अर्जुनसहित भाइसभक दूरी मृत्यु आ थकानसँ बढ़ैत अछि। अर्जुन अन्तिम क्षणमे अपनाकेँ योद्धासँ पहिने ‘भाइ’ कहि सम्बोधित करबाक चाह करैत छथि। समानान्तर आधुनिक लोकक बिछोह आ कलाकार जावेदक नाजुक जीविका जीवित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९६ — फकीराक स्टेशन

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

२०४२मे फकीरा नव स्टेशनक असुरक्षित मालद्वार आ गलत भारमापक पर आपत्ति करैत छथि। ओ अपन अनुभवकेँ निष्कर्ष घोषित नहि कऽ पुनः नापबबैत छथि। सरिता आ फकीराक अलग जीवित बाट चालू रहैत अछि; महाप्रस्थानक छवि एहि यात्रा पर आरोपित नहि कएल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९७ — पहिल कोठरी

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

सरिता पुरान आश्रयक पहिल कोठरी खोलि बचल सामग्री आ अधिकृत रसीदक मिलान करैत छथि। मैत्री पुरान अभिलेखक ‘बन्द’ स्थिति वास्तवमे मालक प्राप्ति अछि वा केवल सूचना, ई जाँचैत छथि। कोठरीक चाभी आ सार्वजनिक सामग्रीक अलग जिम्मेदारी बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९८ — मृतकक फोन

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

कबीर नैराक पुरान फोन खोलबाक अनुमति आ निजता पर विचार करैत छथि। रफीक नदीक नामक भिन्न मौखिक रूप आ नैराक स्रोत-नोटक उल्लेख करैत छथि। मृतकक आवाज बचएबाक नामपर ओकर सभ निजी सन्देश सार्वजनिक करब आवश्यक नहि, ई निष्कर्ष उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९९ — बिना नामक कथा

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

एक अनाम व्यक्ति अपन कथा लेल लिफाफा दैत अछि, मुदा नाम आ पहुँचक सीमा अपन राखैत अछि। पद्मा आ सोमरी अनुवादक श्रमक दाम माँगैत छथि। कथा कहब आ व्यक्तिगत पहचान गुप्त राखब परस्पर विरोधी नहि; अनाम स्वर सेहो सुनेबाक अधिकार रखैत अछि।

अध्याय २०० — शब्दक अन्तिम जाँच

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

पद्मा ‘प्रत्यक्ष’, ‘श्रुत’, ‘अनुमान’ आ ‘कल्पना’ चारि तरहक कथन अलग करैत छथि। रोगीक स्थानान्तरण सम्पन्न होएब उपचारक परिणाम अथवा हड़तालक समाप्ति नहि। अलग वस्तुक साक्ष्य, मजदूरक आवाज आ पाठक लेल शब्दक सीमा स्पष्ट करब कथाक अन्तिम जाँच बनैत अछि।

अध्याय २०१ — सीमातीर्थक विदाइ

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

सीमातीर्थक घाटमे मधु आ शान्ति नावक पटरा, यात्राक परीक्षण आ पुरान देय जाँचैत छथि। चन्दा अपन घरवापसीकेँ पुरस्कार नहि, स्वतंत्र निर्णय मानैत छथि। कर्जक अन्तिम दाबी खुलल रहैत अछि; बिना प्रमाण भुगतान-स्वीकार रोकल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २०२ — कबीरक वापसी

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

कबीर अपन जन्मसम्बन्धी अनिश्चितता आ पालक मायसँ वर्तमान सम्बन्धकेँ अलग स्वीकार करैत छथि। भुगतानक मध्यस्थ ‘साझा कोड’ प्रस्ताव दैत अछि, मुदा संबंधित परिवार सत्यापित प्रति चाहैत छथि। कबीर माय लेल बाजारसँ नून आनबाक सामान्य काजमे घुरैत छथि; घरक अर्थ जीवित रहैत अछि।

अध्याय २०३ — साथक जीव

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

युधिष्ठिरक अन्तिम बाटमे कुकुरक संग रहब निष्ठा आ कमजोर जीवक देखभालक प्रश्न बनैत अछि। आधुनिक रुहानी घायल कुकुर लेल सुरक्षित ओसार, दवा आ निगरानीक व्यवस्था करैत छथि। कियो जीवक संरक्षणकेँ मनोरंजनक तमाशा नहि बनबैत; मानव परिवारक अधूरा देय अलग चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २०४ — पर्वत नहि दरबज्जा

पर्व १७ · महाप्रस्थानिक | उत्तरकाण्ड

महाप्रस्थानक प्रतीकात्मक पर्वतक बदला विदेहपुरक पाठशालाक वास्तविक दरबज्जा, चाभी आ पहुँचक अधिकार केन्द्र बनैत अछि। बच्चासभ किवाड़क मरम्मति आ चित्रक काज करैत अछि। साझा भोजनक संग खुलल विद्यालयक जिम्मेदारी अगिला लोक धरि हस्तान्तरित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

अध्याय २०५–२१६ · अन्तिम कथा-अधिकार, ज्ञानक साझा स्वामित्व आ शेष जीवन

अध्याय २०५ — स्वर्गक सूची

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

स्मारकक नाम-सूचीमे अनाम सफाइकर्मी, श्रमिक आ मृतकसभक श्रेय पर विवाद उठैत अछि। सरिता याद करबैत छथि जे सूची गलतीसँ मुक्त अन्तिम स्वर्ग-द्वार नहि; नब प्रमाणपर सार्वजनिक सुधार आ प्रभावित परिवारकेँ खबर आवश्यक अछि। प्रतिनिधित्व बिना समुदायसँ पुछने कब्जा नहि कएल जा सकैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २०६ — उत्तरा आ परीक्षित

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

उत्तरा आ परीक्षितक उत्तराधिकारक प्रसंगसँ बचल पीढ़ीक भविष्यक प्रश्न जुड़ैत अछि। पाठशालामे अनुष्ठानक नामपर बच्चासभक सहायता-राशि उपयोग करबाक दबाव उठैत अछि। बच्चा पुछैत अछि जे जीवित रहब ककरो दोषक प्रायश्चित्त किएक बनय; पञ्चा प्रश्न सुरक्षित रखैत छथि।

अध्याय २०७ — जनमेजयक प्रश्न

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

जनमेजयक प्रतिशोध आ यज्ञ-रोधक कथा पाठशालामे सुनाओल जाइत अछि। रशीद आ अन्य कलाकार अपन ध्वनि-प्रदर्शनक पुनःप्रसारण, बिक्री आ अध्ययनक अनुमति अलग तय करैत छथि। सुननिहारकेँ बीचमे रोकि प्रश्न करबाक अधिकार सेहो कथा-परम्पराक हिस्सा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २०८ — उग्रश्रवाक श्रोता

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

उग्रश्रवाक कथावाचनमे श्रोता पूर्वजक अलग पाठ रखि बीचमे प्रश्न करैत छथि। विदेहपुरमे चेतन भट भिन्न हस्तलिखित पन्ना तुलना करैत छथि। कथकक अधिकार श्रोताक असहमति मेटब नहि; लव-कुशक अगिला पाठ सेहो एहि प्रश्नसँ जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २०९ — लव कुशक पाठ

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

लव-कुशक कथा आ वर्तमान गीतमे गायकक सहमति, पाठभेद आ नव रचनाक श्रेय अलग कएल जाइत अछि। फूलमती सार्वजनिक गायन लेल आपत्तिजनक पाँति हटबैत छथि, मुदा अध्ययन लेल मूल पाठ सुरक्षित रखैत छथि। बच्चासभ अपन अनुभवकेँ नव सुर आ शब्द देबाक अधिकार पबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१० — भामतीक चारिम सूत्र

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

भामतीक चारिम सूत्र 'तत्तु समन्वयात्'क अध्ययनमे मृणाल पाठ, व्याख्या, आपत्ति आ आजुक प्रश्न अलग राखैत छथि। सरिता मृत श्रमिकक नाम स्मारकमे लिखल गेलासँ बकाया मजदूरी समाप्त मानब अस्वीकार करैत छथि। समन्वय असहमति दबा देबाक नाम नहि बनैत।

अध्याय २११ — उदयनक शेष तर्क

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

उदयनक शेष तर्कमे विरोधी पक्षक प्रश्न आ ओकर प्रतिलिपिकारक श्रमकेँ उचित स्थान देल जाइत अछि। हमीदा अपन गीतक अपमानकारी उपयोग रोकबाक लिखित निर्णय प्राप्त करैत छथि, मुदा पारिश्रमिक एखन बाँकी अछि। बौद्धिक सम्मान आ आर्थिक देय भिन्न दायित्व छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१२ — गङ्गेशक कक्षा

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

गङ्गेशक कक्षामे बच्चासभ उदाहरण ककर जीवनसँ लेल जाए, ई पूछैत अछि। सरिता उर्मिलाक श्रमसँ जुड़ल प्रमाणकेँ मात्र प्रमाणित कालमे लिखबाक कहैत छथि। दार्शनिक पोथीक नब मुखपृष्ठपर सम्पादनसँ अलग शोध-सहायक आ रसोइ-नकलक श्रेय उठैत अछि।

अध्याय २१३ — मैथिलीक अपना वाणी

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

मैथिलीक स्वतंत्र वाणी आ संशोधनक श्रेय प्रकाशित होइत अछि; संगमे हुनकर पहिनुक गलतीक स्वीकृति सेहो रहैत अछि। सरिताक बौद्धिक आ घरेलू श्रमक हिसाब लिखल जाइत अछि, मुदा अधूरा भुगतान स्पष्ट छोड़ल जाइत। विद्यालयक पढ़ाइ-अधिकार आ जन्मपंजीक प्रशासनिक प्रक्रिया अलग होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१४ — नैराक खाली जगह

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

नैराक स्मृति-समारोहमे हुनका सदिखन सबकेँ शान्त करनिहार आदर्श व्यक्तित्व बनबएबाक प्रयास होइत अछि। कबीर हुनकर असहमति, गलती आ जीवित मानवीय रूपक रक्षा करैत छथि। सरिता नैराक निजी कापी आ फोनक प्रकाशन-अनुमति नहि बदलैत छथि; खाली जगह खाली रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१५ — वितरित अभिलेख

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

पोखरिक सामूहिक उराहि आ अभिलेख-वितरणमे तीन अलग संरक्षकक हाथमे प्रतिक जिम्मेदारी बाँटल जाइत अछि। गोमती श्रमिकक सुरक्षित बाट आ बच्चाक प्रवेशक जोखिम देखैत छथि। मूल जाँच, रोकल देय आ निजी फाइलक सीमा खुलल राखल जाइत अछि; एक हाथमे सभ चाभी नहि देल जाइत।

अध्याय २१६ — कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

पर्व १८ · स्वर्गारोहण | उत्तरकाण्ड

अन्तिम अध्यायमे सरिताक चूल्हा आ साझा भोजनक बीच तारा, कबीर, पद्मा, रुहानी आ गोमती जीवित कामक छोटी-छोटी जिम्मेदारी सम्हारैत छथि। नैराक मृत्यु अपूरणीय रहैत अछि; हुनकर निजी कापी बन्द अछि, आ बच्चासभक पाठशाला अगिला दिन फेर खुलत। उपन्यास निष्कर्षक एक घोषणापत्र नहि, बल्कि भोजन, श्रम, प्रश्न आ बाँटल जिम्मेदारीक निरन्तरतामे समाप्त होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

समग्र कथाक संक्षिप्त निष्कर्ष

02 कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

समग्र कथाक संक्षिप्त निष्कर्ष

जीवित सरिताकेँ मृत घोषित करबाक डिजिटल भूलसँ आरम्भ भेल कथा सत्ताइस नाम, निजता, श्रमक देय, नदी-घाटक बाट आ सरकारी अभिलेखक विवेकपूर्ण जाँच धरि बढ़ैत अछि। महाकाव्य आ दार्शनिक कालधारासँ जुड़ैत सामाजिक संघर्ष आपदाक समय अत्यन्त कठोर भऽ उठैत अछि। नैरा आ उर्मिलाक मृत्यु पछाति शोकक सँग वास्तविक दायित्व, न्याय, पुनर्वास, ज्ञानक श्रेय आ सामूहिक स्मृति केन्द्र बनैत अछि। अन्तिम अध्यायमे नैराक अनुपस्थिति मेटाओल नहि जाइत; सरिताक चूल्हा, बच्चाक पाठशाला आ बाँटल अभिलेखक माध्यमसँ जीवित लोकक अपूर्ण काज जारी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

WORK / कृति

03 नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल

१०० अध्याय · आठ कथाखण्ड

SECTION / खण्ड

सम्पूर्ण अध्यायवार सारांश

आठ खण्डमे व्यवस्थित मूल १०० अध्यायक क्रमिक कथा-सार

SECTION / खण्ड

01 प्रमाणक छाया

अध्याय 001–013 | प्रमाणक प्रारम्भिक सीमा, संगणकीय जब्ती आ विशेषाधिकारक प्राथमिक सुनवाई

001 गार्ह एन अरिकेलक प्रभात

01 प्रमाणक छाया

गार्ह एन अरिकेलक भोरमे अन्वेषण अधिकारी आदित्य झा अपतटीय जुआ-सञ्जालसँ सम्बन्धित जब्त संगणकीय सामग्री आ उच्च न्यायालयक आदेशक अध्ययन करैत छथि। मालिनी कर्ण भुगतान, जालस्थल आ ग्राहक-पहिचानसँ जुड़ल कालक्रम बनबैत छथि, मुदा विदेशी नियन्त्रण सिद्ध नहि भेल अछि। दिल्लीक बैठकमे आदित्य प्रमाण, अनुमान आ अनुपलब्धिक सीमा अलग रखबाक संकल्प लैत छथि; इएह हुनकर सम्पूर्ण न्यायिक संघर्षक आधार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

002 प्रमाणक छायाक अध्याय 2

01 प्रमाणक छाया

दिल्लीमे मालिनी अनेक शिकायत, भुगतान-सन्दर्भ आ संगणकीय संकेत जोड़ैत छथि, मुदा आदित्य हुनका साम्य आ सिद्ध सम्बन्धक अन्तर बुझबैत छथि। उच्च न्यायालयमे विद्यानंद मिश्र अधिवक्ता–ग्राहक विशेषाधिकारक रक्षा माँगैत छथि; राज्य अन्वेषणक वैध पहुँच चाहैत अछि। न्यायमूर्ति आर्या पृथक समीक्षा-दल, गोपनीयताक कारणक लेखा आ प्रतिबिम्बक अखण्डताक निर्देश दैत छथि। विशेष अनुमति याचिकाक तैयारीसँ सर्वोच्च न्यायालयक अगिला संघर्षक संकेत भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

003 प्रमाणक छायाक अध्याय 3

01 प्रमाणक छाया

विद्यानंद मिश्र उच्च न्यायालयक आदेश विरुद्ध सर्वोच्च न्यायालयमे विशेष अनुमति याचिका दाखिल करैत छथि। आदित्य आ मालिनी भुगतानक समय, उपकरणक घड़ी आ प्रवेश-चिह्नक प्रामाणिकता जाँचैत छथि; याचिका दाखिल भेनाइ स्थगन आदेश नहि अछि। पत्रकार अनन्या कश्यप सेहो सनसनीक बदलामे अभिलेखसम्मत समाचार देबाक महत्त्व बुझैत छथि। राज्य अपन प्रत्युत्तरमे याचिकाक कथन, प्रत्यक्ष आधार, अनुमान, अपूर्णता आ अपेक्षित न्यायिक उत्तर पृथक करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

004 प्रमाणक छायाक अध्याय 4

01 प्रमाणक छाया

सर्वोच्च न्यायालयमे सुनवाईक तैयारी संग अन्वेषण-दल, स्वतंत्र समीक्षा-दल आ विधिक सलाहकारक भूमिका पर प्रश्न उठैत अछि। संगणकीय समय-साम्यसँ नियन्त्रणक निष्कर्ष निकालबाक जल्दबाजी पर आदित्य रोक लगबैत छथि, जखन विद्यानंद अपन ग्राहकक हित आ अभिलेखक सच्चाइ बीच सन्तुलन खोजैत छथि। रक्षा-पक्षक देर रातिक परामर्श आ याचिकाक सूचीकरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे संघर्ष व्यक्तिक संख्या नहि, प्रक्रियाक शुद्धता पर केन्द्रित रहत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

005 प्रमाणक छायाक अध्याय 5

01 प्रमाणक छाया

उच्च न्यायालयमे जब्त सामग्रीक छँटाइ आ अन्वेषण-दलक पहुँचक वास्तविक सीमा परीक्षणमे अबैत अछि। समीक्षा-क्षेत्रमे देवव्रतक प्राविधिक प्रवेशक तथ्य सामने अबैत अछि; सूची देखाइ सकबाक सम्भावना रहितहुँ अन्तर्वस्तु खोलबाक प्रत्यक्ष चिह्न नहि भेटैत अछि। आदित्य ई असुविधाजनक तथ्य नुकबैत नहि छथि आ संशोधित अनुपालन-पत्र दाखिल करबैत छथि। न्यायिक विश्वासक आधार त्रुटि मेटायब नहि, ओकरा स्रोत आ सीमा सहित स्वीकारब बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

006 प्रमाणक छायाक अध्याय 6

01 प्रमाणक छाया

विधि मंत्रालय सर्वोच्च न्यायालयमे राज्यक स्थिति पुनर्गठित करबाक लेल आदित्य आ अन्वेषण-दलसँ प्रमाण-सार माँगैत अछि। जब्त गणना-पुस्तिका, प्रवेश-संकेत, हैश-मिलान आ विशेषाधिकार सम्बन्धी सामग्रीक स्रोत, सम्बन्ध आ सीमा अलग-अलग लिखल जाइत अछि। अधिकारी लोकनि व्यापक आरोपक बजाय सत्यापनाधीन बिन्दु आ प्रक्रियागत सुरक्षाक आधार पर उत्तर देबाक सहमति बनबैत छथि। मंत्रालयी टिप्पणीमे ई स्पष्ट होइत अछि जे अभिलेखक अखण्डता ओकर कथ्यक सत्यता नहि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

007 प्रमाणक छायाक अध्याय 7

01 प्रमाणक छाया

मंत्रालयक संयुक्त विधिक तैयारीमे उच्च न्यायालयक सुरक्षा-व्यवस्था आ सर्वोच्च न्यायालयक सम्भावित प्रश्नक विस्तृत परीक्षण होइत अछि। भुगतान-मध्यस्थक उत्तरसँ किछु मिलान भेटैत अछि, मुदा लाभार्थी आ अगिला धन-प्रवाहक पुष्टि बाकी अछि। राघव सेठिया विद्यानंद मिश्रसँ भेटि अपन पक्षक चिन्ता रखैत अछि। अध्यायमे राज्यक विधिक रणनीति, पक्षकारक दबाव आ आदित्यक तथ्यपरक सावधानी तीनू एक-दोसराक सामने अबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

008 प्रमाणक छायाक अध्याय 8

01 प्रमाणक छाया

उच्च न्यायालयमे जब्त गणना-पुस्तिकाक नाम, खाते आ नियन्त्रणक बीचक अन्तर स्पष्ट कएल जाइत अछि। दीपनारायणक भय, पूर्व भुगतानकर्मी नरेश महतोक प्रतिफलक अपेक्षा आ कुसुमक अपराध-बोध—तीन साक्षीक अलग मानवीय स्थिति सामने अबैत अछि। आदित्य कहैत छथि जे भयक कारण, स्वार्थक प्रभाव आ अपराध-बोधक विधिक अर्थ स्वतन्त्र जाँच चाहैत अछि। न्यायालय साक्षीक मनःस्थिति कैँ आपराधिक निष्कर्षक स्थानापन्न नहि बनबैत अछि।

009 प्रमाणक छायाक अध्याय 9

01 प्रमाणक छाया

न्यायमूर्ति आर्याक समक्ष अधिवक्ताक कार्यालयमे भेटल साधारण व्यावसायिक अभिलेख आ गोपनीय विधिक परामर्शक पृथक्करण विवादक केन्द्र बनैत अछि। राज्य अन्वेषणीय वित्तीय तथ्य अलग करय चाहैत अछि, विद्यानंद छँटाइक क्रममे विधिक रणनीति उद्घाटित होबाक जोखिम देखबैत छथि। न्यायालय संकेत दैत अछि जे संचिकाक स्थान वा नाम मात्रसँ ओकर विशेषाधिकार निर्धारित नहि होयत। आदित्य प्रमाणक मर्यादा अपन प्रिय निष्कर्षक विरुद्ध सेहो लागू करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

010 प्रमाणक छायाक अध्याय 10

01 प्रमाणक छाया

विशेषाधिकारक वर्गीकरणक सूची, अन्वेषण-दैनिकीक उपयोग आ मुहरबन्द सामग्रीक स्थिति पर फेर सुनवाई होइत अछि। भुगतान-सन्दर्भ आ दूरस्थ पहुँचसँ सम्बन्धित अनुमति-प्राप्त अभिलेखक सीमा निर्धारित कएल जाइत अछि। न्यायालय आ अन्वेषण-दल ई भेद रेखांकित करैत अछि जे अन्वेषण-दैनिकी कार्यवाहीक अभिलेख अछि, स्वतन्त्र दोषसिद्धि नहि। गोपनीय दस्तावेजक अस्तित्व ओकर भीतरक कथनक वजन स्वतः नहि बढ़बैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

011 प्रमाणक छायाक अध्याय 11

01 प्रमाणक छाया

मालिनी आ आदित्य ग्रामीण शिकायत, चलदूरभाष आ जब्त संगणकीय प्रतिबिम्बक साम्य फेर परखैत छथि। अनन्या कश्यप पत्रकारितामे सनसनीसँ दूर तथ्यक बहुस्तरीय जाँचक पाठ सीखैत छथि। गामसँ मायक बातचीतक माध्यमसँ आदित्य प्रत्यक्ष देखल वस्तु आ ओकर भीतरक यथार्थक अन्तर स्मरण करैत छथि। विभिन्न सामग्री एक दिशा देखबैत अछि, मुदा साझा जालस्थल, स्वामी वा उपयोगकर्ता सिद्ध करब एखन बाकी अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

012 प्रमाणक छायाक अध्याय 12

01 प्रमाणक छाया

सर्वोच्च न्यायालयक तैयारीमे राज्य आ रक्षा पक्ष दुनू न्यायिक आदेश, साक्ष्य-छँटाइ आ विशेषाधिकारक सीमा पर अपन पक्ष स्पष्ट करैत अछि। विद्यानंद मानैत छथि जे अधिवक्ताक कार्यालयक प्रत्येक वस्तु संरक्षित नहि; मुदा वास्तविक विधिक सलाह आ ग्राहकक गोपनीय संवाद सुरक्षित रहबाक चाही। आदित्य अपन बाल्यकालक पगचिह्न प्रसंगक माध्यमसँ देखल संकेत आ अनुमानित व्यक्ति बीचक अन्तर देखबैत छथि। न्यायालयक कार्यवाही सावधानीपूर्ण वर्गीकरण दिस बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

013 प्रमाणक छायाक अध्याय 13

01 प्रमाणक छाया

जब्ती, प्रयोगशाला प्रवेश आ संगणकीय प्रतिबिम्बक समयमे अन्तर रक्षा-पक्षक प्रश्न बनैत अछि। आदित्य मूल सत्यापित प्रतिबिम्ब आ परीक्षणक दौरान बदलैत कार्य-प्रतिलिपिक हैश-मान अलग स्पष्ट करैत छथि। समयक विसंगति केँ बिना परीक्षण छेड़छाड़ वा निर्दोषता दूनूमे सँ कोनो सिद्धान्तक रूप नहि देल जाइत अछि। प्रमाणक पहिल खण्डक अन्तमे असुविधाजनक तथ्य सुरक्षित रखबाक पद्धति अनुमानक अगिला चरणक आधार बनैत अछि।

SECTION / खण्ड

02 अनुमानक जाल

अध्याय 014–026 | स्रोतक मेल, साक्षीक कथन, अनुमानक तार्किक सेतु आ विरोधी सम्भावना

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

014 अनुमानक जालक अध्याय 1

02 अनुमानक जाल

अनुमानक खण्ड आरम्भ होइते गृह मंत्रालय संकेतक परस्पर सम्बन्ध बुझबाक लेल राज्यसँ स्पष्ट रणनीति माँगैत अछि। आदित्य सत्यापित तथ्यक छोट नक्शा आ सम्भावित सम्बन्धक व्यापक नक्शा अलग करैत छथि। सर्वोच्च न्यायालयक उत्तरमे अन्वेषणक वैध अधिकार, प्रक्रियागत सुरक्षा आ प्रमाणाधारित सीमित अनुमान तीन स्तर पर राखबाक तैयारी होइत अछि। नक्शाक खाली स्थान कथा रचबाक अवसर नहि, अगिला परीक्षणक प्रश्न बनैत अछि।

015 अनुमानक जालक अध्याय 2

02 अनुमानक जाल

मालिनी भुगतान-मध्यस्थक उत्तर आ प्रशासकीय समय-अभिलेखसँ किछु सम्बन्धक आंशिक पुष्टि पबैत छथि। विद्यानंदक दल राज्यक प्रस्तावित अनुमानी सम्बन्धक विरोधी उदाहरण खोजैत अछि। आदित्य प्रत्येक अनुमान लेल प्रत्यक्ष आधार, तार्किक सेतु, सम्भावित खण्डन आ अपेक्षित न्यायिक निष्कर्ष अलग लिखबैत छथि। एहि अनुशासनसँ अनुमानित साझा संचालन केँ सिद्ध स्वामित्व अथवा आपराधिक सहभागिताक रूपमे प्रस्तुत करब टारल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

016 अनुमानक जालक अध्याय 3

02 अनुमानक जाल

सर्वोच्च न्यायालयमे शंका, विशिष्ट आरोप आ प्रमाणक अन्तर पर प्रश्न होइत अछि; न्यायालय राज्यक अन्वेषणक अधिकार आ प्रतिरक्षाक सुरक्षा दुनू मानैत अछि। लेखा-सहायक मनोज महतो सहित साक्षीसभक कथन, भय, लाभ आ स्मृतिक भिन्नता अन्वेषणमे जुड़ैत अछि। पुरान दस्तावेजक तिथि आ वास्तविक लेखन-समयक समानता सेहो मानि नहि लेल जाइत अछि। सामूहिक शंकाकेँ स्वतः प्रमाणक दर्जा देबाक विरुद्ध सावधानी केन्द्रमे अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

017 अनुमानक जालक अध्याय 4

02 अनुमानक जाल

न्यायमूर्ति आर्या अलग-अलग अभिलेखक उत्पत्ति आ ओकर प्रयोजनक जाँच करैत छथि। अधिवक्ताक कार्यालयमे राखल व्यावसायिक तथ्य स्वतः विधिक परामर्श नहि भऽ जाइत, मुदा समीक्षा-प्रक्रियामे संरक्षित संवाद पढ़बाक सीमा आवश्यक अछि। मालिनी लेखक-क्षेत्र आ प्रतिरूपक मूल स्रोत बिना निर्णायक निष्कर्ष देबासँ बचैत छथि। विद्यानंद सेहो एक कमजोर सम्बन्धक आधार पर समस्त सामग्री अमान्य कहबाक अतिशयोक्तिसँ रुकैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

018 अनुमानक जालक अध्याय 5

02 अनुमानक जाल

क्षेत्रीय वित्तीय अभिलेखागारमे तीन प्रविष्टिक सीमित निरीक्षणसँ भुगतान-सन्दर्भक किछु मेल सामने अबैत अछि। न्यायालयमे साक्षीक मूल वाक्य आ अन्वेषण-दैनिकीमे ओकर विस्तृत अर्थापनक अन्तर उद्घाटित होइत अछि। राज्य दैनिकीसँ तथ्य बना कऽ लिखल अतिरंजित अंशक संशोधन स्वीकार करैत अछि। अध्याय स्थापित करैत अछि जे दैनिकी अनुमानक आरम्भ भऽ सकैत अछि, मुदा सत्यापनक अन्तिम स्रोत नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

019 अनुमानक जालक अध्याय 6

02 अनुमानक जाल

सर्वोच्च न्यायालयमे रक्षा पक्ष पूरक आधार-पत्र दाखिल करैत अछि आ राज्य अपन संशोधित कालक्रमसँ उत्तर तैयार करैत अछि। जाल-नाम, नाम-पंजीकरण, भुगतान-मध्यस्थ आ प्रशासनिक चिह्नक अनेक रेखामे किछु टिकैत, किछु टूटैत अछि। पत्रकारिता राहत नहि भेटबाक स्थितिक राजनीतिक अर्थ निकालबाक प्रयास करैत अछि, मुदा न्यायिक निष्कर्ष सीमित रहैत अछि। आदित्य असफल अनुमानक अभिलेख सेहो जोगा कऽ रखबाक आग्रह करैत छथि।

020 अनुमानक जालक अध्याय 7

02 अनुमानक जाल

सर्वोच्च न्यायालयक समक्ष व्यापक प्रतिरक्षा-दल एक्के अवसंरचनाक उपयोग आ साझा नियन्त्रणक अन्तर दिखबैत अछि। आदित्य मानचित्रमे जालस्थल, सामग्री-वितरण सेवा, नाम-पंजीकरण आ भुगतान-मार्गक स्वतंत्र स्रोत बतबैत छथि। पुरान सरकारी प्रारूपमे अतिव्यापक वाक्य भेटलापर ओकर संशोधनक इतिहास सामने राखल जाइत अछि। अदालत अधिक सटीक हैश, अभिरक्षा आ भुगतान-स्रोतक विवरण माँगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

021 अनुमानक जालक अध्याय 8

02 अनुमानक जाल

राज्य आ बचाव पक्षक विस्तृत आपत्तिसभक बीच आह्वान-पत्र, सेवा-तिथि, संगणकीय कार्य-प्रतिलिपि आ अभिरक्षा-पञ्जी पर अलग परीक्षा होइत अछि। एक स्वचालित अभिलेखक समय आ औपचारिक सेवा-प्राप्तिक समय भिन्न पड़ैत अछि; तीन मिनटक अन्तरक कारण अनिश्चित रहैत अछि। आदित्य एहि रिक्तिकेँ न नुकबैत छथि, न अपराधक प्रमाण बनबैत छथि। अन्वेषणक काज असुविधाजनक वैकल्पिक व्याख्याकेँ सेहो स्थान देब ठहरैत अछि।

022 अनुमानक जालक अध्याय 9

02 अनुमानक जाल

वरिष्ठ अधिकारी लोकनि राज्यक पक्ष मजबूत शब्दमे रखय चाहैत छथि, मुदा आदित्य ‘एकीकृत अपतटीय संचालन’ सन व्यापक दावा हटबैत छथि। उपलब्ध सामग्री केवल किछु अवयवमे परीक्षणाधीन सम्बन्ध देखबैत अछि। संशोधित प्रतिवेदनमे प्रत्येक स्रोत आ असिद्ध प्रश्नक अलग विभाग बनैत अछि। राज्यक प्रतिष्ठाक रक्षा अतिरंजित वाक्यसँ नहि, प्रमाण-सम्मत प्रस्तुति सँ होयत—ई दृष्टि स्वीकृत होइत अछि।

023 अनुमानक जालक अध्याय 10

02 अनुमानक जाल

गृह मंत्रालय राज्यक पक्ष सर्वोच्च न्यायालयमे अधिकृत विधिक नेतृत्वक समक्ष रखबाक तैयारी करैत अछि। विद्यानंदक पत्नी शैलजाक स्वास्थ्य आ उपचार-संबन्धी आर्थिक चिन्ता हुनकर निजी जीवनक संघर्ष बढ़बैत अछि। दूरस्थ प्रशासनिक प्रवेशक संकेत केँ निश्चित विदेशी नियन्त्रण कहल जाएबासँ राज्य बचैत अछि। महान्यायवादी आ महान्याय-अभिकर्ताक संयुक्त तैयारी संग पारिवारिक संकट आ पेशागत कर्तव्यक तनाव समानान्तर चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

024 अनुमानक जालक अध्याय 11

02 अनुमानक जाल

सर्वोच्च न्यायालयमे तीन साक्षीक भय, भुगतान-सन्दर्भ आ पछतावा पर पुनः प्रश्न उठैत अछि। मनोज महतोक धमकी-संबन्धी स्मृतिक शब्दशः संशोधन होइत अछि; राज्य ई सुधार सार्वजनिक अभिलेखमे राखैत अछि। न्यायपीठ शंका, आरोप आ सिद्ध तथ्यक भेद पर बल दैत अछि। विद्यानंद शैलजाक उपचार, ग्राहकक दबाव आ न्यायालयमे सटीक प्रतिवाद बीच कठिन नैतिक स्थिति अनुभव करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

025 अनुमानक जालक अध्याय 12

02 अनुमानक जाल

उच्च न्यायालयमे मिश्रित सञ्चारक विशेषाधिकार पर सुनवाई होइत अछि। विधिक व्याख्या आ स्वतंत्र व्यापारिक निर्देश एक्के दस्तावेजमे रहि सकैत अछि, मुदा ओकर पृथक्करण गोपनीय सलाह खोलि कऽ नहि कएल जा सकैत। न्यायमूर्ति आर्या मूल अन्वेषण-दलक पहुँच रोकैत छथि आ बाह्य कालचिह्नक सीमित उपयोग स्वीकार करैत छथि। अध्याय अनुमानक खण्डक अन्तमे अधिकारक रक्षा आ तथ्य-प्राप्तिक वैध मार्गक मेल बनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

026 अनुमानक जालक अध्याय 13

02 अनुमानक जाल

अनुमानक खण्डक अन्तिम सुनवाईमे न्यायमूर्ति आर्या स्वतंत्र प्रमाण, अन्वेषण-दैनिकीक अर्थापन, साक्षी-सुरक्षासँ सम्बन्धित गोपनीय सूचना आ विशेषाधिकार-प्राप्त सामग्री अलग श्रेणीमे रखबाक निर्देश दैत छथि। राज्य अन्वेषणक असफल मोड़ सेहो दैनिकीमे सुरक्षित राखबाक वचन दैत अछि। न्यायालय स्पष्ट करैत अछि जे मुहरबन्द सामग्री देखनाइ ओकर तथ्यात्मक वजन बढ़ेनाइ नहि। संशोधित अभिलेखसँ अगिला उपमान-आधारित तुलना आरम्भ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

03 उपमानक नक्शा

अध्याय 027–039 | जालस्थलक समानता, संरचनात्मक तुलना आ साझा स्वामित्वक असिद्ध दावा

027 उपमानक नक्शाक अध्याय 1

03 उपमानक नक्शा

उपमानक खण्डमे मालिनी दू जालस्थलक पृष्ठ-विन्यास, सहायता-सन्देश, भुगतान-पथ आ प्रशासनिक संरचनाक समानता दिखबैत छथि। आदित्य साझा सेवा-प्रदाता आ साझा स्वामित्वक अन्तर रेखांकित करैत छथि। स्वतंत्र मध्यस्थ-अभिलेख किछु भुगतान-साम्य पुष्ट करैत अछि, मुदा अन्तिम लाभार्थी एखन अज्ञात अछि। राज्यक संशोधित मानचित्रमे तुलना अन्वेषणक दिशा बनैत अछि, व्यक्ति-दोषक स्वतन्त्र प्रमाण नहि।

028 उपमानक नक्शाक अध्याय 2

03 उपमानक नक्शा

मालिनी अपन पहिल सतरह तुलनामे सँ नौ उपयोगी सम्बन्ध बचबैत छथि; अन्य सम्बन्ध सामान्य सेवा, अधूरा अधिदत्तांश अथवा असमर्थित अनुमानक कारण कमजोर पड़ैत अछि। न्यायालय प्रत्येक साम्यक संग वैकल्पिक कारण आ विफलता-शर्त लिखबाक आग्रह करैत अछि। एक प्रशासनिक सम्पर्क-संकेत साझा प्रदाताक स्वचालित पद्धति सेहो भऽ सकैत अछि। राज्य घटित मानचित्रकेँ वास्तविक सुधार मानैत अछि, अन्वेषणक हार नहि।

029 उपमानक नक्शाक अध्याय 3

03 उपमानक नक्शा

उपमानक प्रमाण-सारमे सहायता-सन्देशक एकरूपता, हैश-मिलान आ प्रतिलिपि-पठनक अन्तर पर परीक्षण होइत अछि। महान्यायवादी राज्यक संशोधित मानचित्र न्यायालयमे प्रस्तुत करैत छथि। एक प्राविधिक विसंगतिक अधिक सम्भावित कारण प्रतिलिपि-पठन त्रुटि मानल जाइत अछि, मुदा निर्णयक सीमा न्यायपीठ पर छोड़ल जाइत अछि। आदित्यक लेल त्रुटिपूर्ण रेखा समय पर हटायब प्रमाणक विश्वसनीयता बनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

030 उपमानक नक्शाक अध्याय 4

03 उपमानक नक्शा

गृह मंत्रालयमे तुलनात्मक सम्बन्ध चारि श्रेणीमे बाँटल जाइत अछि—स्वतंत्र पुष्ट, साम्य-आधारित, वैकल्पिक व्याख्यासहित आ असमर्थित। अधिकारी सभ अनेक समानता जोड़ि एक निर्णायक आरोप बनबय चाहैत छथि, मुदा आदित्य प्रत्येक रेखाक उत्पत्ति जाँचबाक पक्ष लैत छथि। नव्य न्यायमे उपमानक अवधारणाकेँ न्यायालयक आधुनिक अभिलेखीय भाषामे कोना रखल जाए, एहि पर सेहो विचार होइत अछि। लक्ष्य दर्शनक नाम नहि, पद्धतिक शुद्ध उपयोग अछि।

031 उपमानक नक्शाक अध्याय 5

03 उपमानक नक्शा

राज्यक संयुक्त तैयारीमे समानताक प्रारम्भिक शब्दावली सीमित कएल जाइत अछि। आदित्य सार्वजनिक पदक प्रतिष्ठाक बजाय स्रोतक दृढ़ता पर बल दैत छथि। सर्वोच्च न्यायालयमे संक्षिप्त उल्लेखक अवसर भेटैत अछि आ महान्यायवादी देवव्रत सिन्हा तथा महान्याय-अभिकर्ता मृणाल धर संशोधित पद्धति रखैत छथि। सरकारी मार्गदर्शक टिप्पणी स्थापित करैत अछि जे संगणकीय नक्शाक प्रत्येक रेखाक वजन अलग-अलग लिखल जाए।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

032 उपमानक नक्शाक अध्याय 6

03 उपमानक नक्शा

साक्षी मनोज, रजत आ सुदीपक बदलैत कथनक पाछाँ भय, धन आ पछतावाक कारण जाँचल जाइत अछि। मनोजक फोन पर बाह्य सम्पर्कक तथ्य भेटैत अछि, मुदा धमकी देनिहारक पहचान स्वतः सिद्ध नहि होइत। रजतक अतिरिक्त भुगतान सत्यापित अछि, तकर कारण विवादित रहैत अछि। न्यायालय सीमित साक्ष्यक आधार पर अपतटीय जालक स्वामी अथवा कोनो व्यक्तिक अपराधक निष्कर्ष देबासँ बचैत अछि।

033 उपमानक नक्शाक अध्याय 7

03 उपमानक नक्शा

उच्च न्यायालयमे एक्के जकाँ लिखल सञ्चार आ दस्तावेजक आधार पर विशेषाधिकार-प्राप्त विधिक परामर्श खोलबाक सरकारी प्रस्तावक परीक्षा होइत अछि। न्यायमूर्ति आर्या कहैत छथि जे भाषिक समानता स्वतंत्र उत्पत्ति-सूत्रक पुष्टि बिना संरक्षित अन्तर्वस्तु देखबाक आधार नहि। राज्य साक्ष्य-संग्रहक वैध आवश्यकता मानबैत अछि, मुदा गोपनीय सलाहक रक्षा स्वीकार करैत अछि। साम्य सूचक मात्र अछि, अधिकृत प्रवेश-पत्र नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

034 उपमानक नक्शाक अध्याय 8

03 उपमानक नक्शा

मुहरबन्द सामग्री, अन्वेषण-दैनिकीक सीमित गोपनीयता आ अधिवक्ता–ग्राहक विशेषाधिकारक अलग कारण न्यायालय जाँचैत अछि। राज्य पाँच सम्बन्ध देखबैत अछि, मुदा दू एक्के प्रदातासँ, एक समय-साम्यसँ, एक भुगतान-अभिलेखसँ आ एक समीक्षा-अधीन श्रेणीसँ जुड़ल अछि। अदालत कारण-दर-कारण गोपनीयता आ प्रतिपक्षकेँ उत्तरक अवसर सुरक्षित रखबाक निर्देश दैत अछि। गृह मंत्री शिवेश्वर प्रसाद सेहो न्यायालयक विश्वासकेँ त्वरित विजयसँ अधिक महत्त्व दैत छथि।

035 उपमानक नक्शाक अध्याय 9

03 उपमानक नक्शा

अस्पष्ट पूरक निवेदनक चित्र बाहर अबैत अछि आ समाचार-माध्यम नक्शाक अनेक रेखाकेँ निर्णायक प्रमाण जकाँ देखाबय लगैत अछि। न्यायालय नाम-साम्य, समय-साम्य आ संरचनात्मक साम्यक प्रकार अलग करबैत अछि। राघव सेठियाक पक्ष आ सरकारी अधिकारी लोकनि अपन-अपन कठोर सार्वजनिक अवस्थिति चाहैत छथि, मुदा विद्यानंद आ आदित्य दूनू विरोधी सम्भावनाक स्थान बनबैत छथि। स्वतंत्र भुगतान-साम्य सेहो स्वामित्वक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि बनैत अछि।

036 उपमानक नक्शाक अध्याय 10

03 उपमानक नक्शा

विद्यानंद राज्यक समस्त सामग्री असत्य कहबाक दबाव टारैत छथि आ प्रमाणित सम्बन्ध स्वीकार करैत असमर्थित सम्बन्धक विरोध करैत छथि। गृह मंत्रालयक भीतर प्रचार बनाम शान्त अभिलेखीय उत्तरक रणनीति पर विवाद अछि। बहुते वरिष्ठ अधिवक्ताक विशेषज्ञता अनुसार बचाव-पक्षक कार्य-विभाजन सामने अबैत अछि। आदित्य ई स्पष्ट करैत छथि जे न्यायालयक भरोसा भेटब राज्यक कथाक जीत नहि, ओकर सीमित दावाक परीक्षणयोग्यता अछि।

037 उपमानक नक्शाक अध्याय 11

03 उपमानक नक्शा

संगणकीय संग्रहकक अभिरक्षा-पञ्जी, हस्तान्तरण, हैश-मिलान आ समयक किछु मिनट-अन्तर फेर परीक्षणमे अबैत अछि। आदित्य स्वीकार करैत छथि जे आरम्भिक पृथक्करण-प्रक्रिया बादमे लिखित रूपेँ अधिक सुदृढ़ कएल गेल। प्रमाणक अभिरक्षा-श्रृंखला साफ होयब महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ओकरा सँ सामग्रीक भीतरक आरोप सत्य सिद्ध नहि होइत। मालिनी नक्शाक पाँच दृश्य बिन्दु तीन स्रोत-समूहमे पुनर्गठित करैत छथि।

038 उपमानक नक्शाक अध्याय 12

03 उपमानक नक्शा

गृह मंत्री शिवेश्वर प्रसाद संशोधित उपमान-मानचित्रक सभ व्यापक दावा पढ़ि छँटाइ करबैत छथि। एक्के जकाँ जाल-पृष्ठ बहुत रास वैकल्पिक कारणसँ बनि सकैत अछि, तें समुद्रपार साझा नियन्त्रणक कथन संशोधित होइत अछि। पूर्व संस्करण सेहो सुरक्षित रखबाक आदेश देल जाइत अछि, जाहिसँ परिवर्तनक इतिहास नुका नहि रहय। वरिष्ठ विधिक अधिकारी सभकेँ केवल निष्कर्ष नहि, ओकर संशोधन-पथ सेहो देल जाएत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

039 उपमानक नक्शाक अध्याय 13

03 उपमानक नक्शा

उपमानक खण्डक अन्तमे महान्यायवादी आ महान्याय-अभिकर्ता समक्ष समानता, प्रशासकीय समय आ भुगतान-रेखाक संयुक्त समीक्षा होइत अछि। उपकरणक अलग समय-स्रोत आ स्वचालित अनुरक्षणक सम्भावना अनेक तुलना कमजोर करैत अछि। बचाव पक्ष राज्यक संशोधन पर प्रश्न उठबैत अछि, मुदा संशोधन अपनेमे दुर्भावना सिद्ध नहि करैत। आदित्यक निष्कर्ष अछि जे समान वस्तु देखाइतहि समान कारण मानब बौद्धिक भूल अछि।

SECTION / खण्ड

04 शब्दक कसौटी

अध्याय 040–052 | विधिक पदावली, साक्षीक मूल वाक्य आ मुहरबन्द सामग्रीक खुला सार

040 शब्दक कसौटीक अध्याय 1

04 शब्दक कसौटी

शब्दक खण्ड उच्च न्यायालयमे राज्यक प्रतिवेदनक पदावलीक कसौटीसँ आरम्भ होइत अछि। 'प्रशासक-स्तर प्रवेश', 'प्रशासनिक पहुँच' आ 'नियन्त्रणक आरोप' अलग अर्थ रखैत अछि। मनोज, रजत आ सुदीपक मूल वाक्यक बदला सारांशमे अर्थ जोड़ल गेल स्थल चिन्हित कएल जाइत अछि। न्यायालय मूल कथन, अन्वेषकक व्याख्या आ स्वतंत्र समर्थन पृथक रखबाक आदेश दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

041 शब्दक कसौटीक अध्याय 2

04 शब्दक कसौटी

एक मिश्रित सञ्चारमे विधिक राय, ग्राहक-संवाद आ व्यवसायिक निर्देशक परस्पर सम्बन्ध पर विवाद होइत अछि। राज्य स्वतंत्र व्यवसायिक तथ्य खोजय चाहैत अछि; विद्यानंद चेतबैत छथि जे विधिक परामर्शक प्रसंग खोलेब विशेषाधिकार भंग कऽ सकैत अछि। अदालत ‘विशेषाधिकारयुक्त’ आ ‘गैर-विशेषाधिकारयुक्त’ शब्द कें अपराधक सत्य अथवा असत्यसँ अलग ठहरबैत अछि। पहुँचक वैधानिक वर्गीकरण कोनो आपराधिक निष्कर्ष नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

042 शब्दक कसौटीक अध्याय 3

04 शब्दक कसौटी

मुहरबन्द स्रोतक उल्लेखसँ न्यायिक अभिलेखमे अनावश्यक रहस्य आ अतिरिक्त भार बनबाक जोखिम उठैत अछि। न्यायालय आदेश दैत अछि जे आवश्यक खुला सारमे स्रोतक प्रकार, समय, देखल घटना, राज्यक सीमित व्याख्या आ किछु असिद्ध रहने बात स्पष्ट हो। मालिनी ‘हैश’, ‘समय’ आ ‘संख्या’क अर्थसँ आगाँ स्रोतक स्वतन्त्रताक परीक्षा सीखैत छथि। एके सामग्रीक अनेक प्रति कतेको स्वतंत्र प्रमाण नहि अछि।

043 शब्दक कसौटीक अध्याय 4

04 शब्दक कसौटी

सर्वोच्च न्यायालयक लंबित प्रकरणमे पूरक निवेदनक तैयारीसँ उच्च न्यायालयक खुला सारक प्रारूप पुनः परीक्षणमे अबैत अछि। विद्यानंद तीन प्रविष्टिमे मूल अभिलेखसँ बेसी निष्कर्ष जोड़ल गेल कहैत छथि। न्यायमूर्ति आर्या पक्षसभक टिप्पणी माँगि पूर्ण आदेश सुरक्षित रखैत छथि। राज्य एक महत्त्वपूर्ण प्रविष्टिक उपयोग रोकैत अछि, कारण स्रोत-पहिचान आ प्रतिवादक पर्याप्त आधार एखन उपलब्ध नहि।

044 शब्दक कसौटीक अध्याय 5

04 शब्दक कसौटी

राज्यक ‘प्रशासकीय नियन्त्रण’ सन पुरान शब्दावली आ वास्तविक प्रवेश-संकेतक फरक उजागर होइत अछि। उच्च न्यायालय मूल अभिलेख आ सारांशक मेल माँगैत अछि; बचाव पक्ष प्रश्न करैत अछि जे बारम्बार संशोधनसँ राज्य जिम्मेदारीसँ बचि रहल अछि कि नहि। अनन्या कश्यप ‘नौ वरिष्ठ अधिवक्ता बनाम राज्य’ सन सनसनीपूर्ण शीर्षकक आकर्षण देखैत छथि। गृह मंत्री प्रचारसँ दूर न्यायालयाधीन स्थितिक सीमित सार्वजनिक वक्तव्य स्वीकार करैत छथि।

045 शब्दक कसौटीक अध्याय 6

04 शब्दक कसौटी

न्यायपीठ आह्वान-पत्र, हैश-मिलान आ अभिरक्षा-श्रृंखलाक मूल आधार पर एक-एक शब्द परखैत अछि। आदित्य परिवहन-समय, सीलयुक्त पेटी आ प्रवेश-पञ्जीक विवरण स्पष्ट करैत छथि। हैश-मिलान संगणकीय प्रतिलिपिक अपरिवर्तन देखबैत अछि, ओकर अन्तर्वस्तुक सत्यता नहि। वाक्यक मूल स्रोतसँ बाहर फूटि निकलैत अर्थक सीमा पुनः निर्धारित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

046 शब्दक कसौटीक अध्याय 7

04 शब्दक कसौटी

मंत्रालयी संयुक्त बैठकमे भुगतान, नियन्त्रण, लाभ, अधिकार आ ‘केन्द्रीय व्यक्ति’ सन शब्दक अलग-अलग प्रमाण-भार पर चर्चा होइत अछि। गणना-पुस्तिका आ साक्षी-संकेतक आधार पर ककरो नाम अबैते ओकर आर्थिक लाभ वा संचालन-शक्ति सिद्ध नहि भऽ जाइत। आदित्य व्यापक पद हटबैत अथवा सीमित करबैत छथि। राज्यक संशोधित शब्द-सूचीमे ‘भूमिका’, ‘परिकल्पना’ आ ‘अप्रचालित—कारण अनिश्चित’ सन अधिक सटीक अभिव्यक्ति स्थापित होइत अछि।

047 शब्दक कसौटीक अध्याय 8

04 शब्दक कसौटी

न्यायिक पूरक टिप्पणीमे राज्यक संशोधित शब्द-सूचीक उपयोग आ मुहरबन्द सामग्रीक खुला सारक सीमा पर विचार होइत अछि। विधिक परामर्शक मात्र तिथि दऽ तकर आधार पर ‘जोखिम जानि संरचना बदलल’ लिखब असिद्ध छलाँग मानल जाइत अछि। महान्यायवादी आ विद्यानंद दुनू प्रसंगहीन शब्दकेँ हथियार बनाबय सँ बचबाक पक्ष रखैत छथि। न्यायालय एहन सारक विरोधाभासी प्रभाव आ प्रतिवादक अधिकार पर अगिला परीक्षण राखैत अछि।

048 शब्दक कसौटीक अध्याय 9

04 शब्दक कसौटी

साक्षीसभक भय, लोभक आशंका आ पछतावाक कथन न्यायालयमे फेर सुनल जाइत अछि। न्यायमूर्ति आर्या साक्षीक भावनाकेँ यथार्थ मानबैत छथि, मुदा ओहि भावनाक कारण अथवा दोसर व्यक्तिक अपराधकेँ स्वतः सिद्ध नहि मानैत छथि। अन्वेषण-दल भयक स्रोत आ घटना-विशेषक स्वतंत्र परीक्षणक आवश्यकता स्वीकार करैत अछि। शब्दक सचेत प्रयोग मानव अनुभवक सम्मान करैत अछि, मुदा न्यायिक तथ्य बनबय लेल अलग मार्ग माँगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

049 शब्दक कसौटीक अध्याय 10

04 शब्दक कसौटी

विशेषाधिकार सम्बन्धी बारह प्रविष्टिक सूची उच्च न्यायालयमे परीक्षा पर चढ़ैत अछि। किछु विवरणकेँ खुला राखिते विधिक रणनीति प्रकट भऽ सकबाक आशंका अछि; न्यायमूर्ति आर्या न्यूनतम बाह्य विवरण आ चयनित सामग्रीक सीमित न्यायिक निरीक्षणक आदेश दैत छथि। नवम, एगारहम आ बारहम प्रविष्टिक वर्गीकरण विशेष सावधानीसँ होएत। विशेषाधिकारक दावा मात्रसँ अपराध-सन्देह अथवा निर्दोषता सिद्ध नहि कएल जा सकैत।

050 मुहरबन्द लिफाफाक भीतर

04 शब्दक कसौटी

‘मुहरबन्द लिफाफाक भीतर’ न्यायालयक नियन्त्रणमे सामग्री खोलबाक प्रक्रिया पर केन्द्रित अछि। लिफाफाक अभिरक्षा, जमा-समय, हस्ताक्षर आ खोलबाक सीमित उद्देश्य दर्ज कएल जाइत अछि। न्यायमूर्ति आर्या ‘नियन्त्रण’ शब्दक सम्भावित अर्थ—स्वामित्व, प्राविधिक पहुँच, निर्णयाधिकार वा प्रश्न—अलग करैत छथि। न्यायिक निरीक्षण, पक्षकारसँ साझा सामग्री, स्वतंत्र पुष्ट तथ्य आ गोपनीय अनुमानक उपयोग पर पृथक सीमा निर्धारित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

051 शब्दक कसौटीक अध्याय 12

04 शब्दक कसौटी

मुहरबन्द निरीक्षणक बाद विद्यानंद मिश्र ओकर न्यायिक उपयोगक सीमा पर बल दैत छथि। पत्रकारिता गोपनीय लिफाफाकेँ निर्णायक नाटकीय घटना बनबय चाहैत अछि, मुदा वास्तविक प्रश्न अछि जे प्रतिपक्ष केँ कतेक खुला आधार देल जाए। मृणाल धर गोपनीयताक कारणक पृथक श्रेणी प्रस्तावित करैत छथि। न्यायालय स्पष्ट करैत अछि जे जँ कोनो मुहरबन्द अंशक आधार पर प्रतिकूल आदेश माँगल जाए, तकर विशेष परीक्षण आवश्यक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

052 शब्दक कसौटीक अध्याय 13

04 शब्दक कसौटी

शब्दक खण्डक अन्तिम सुनवाईमे वरिष्ठ अधिवक्ता अरुणेश सेन राज्यक संशोधित खुला सारक उत्पत्ति आ भाषिक परिवर्तन पर प्रश्न उठबैत छथि। न्यायपीठ अनुवाद, स्रोत-स्वतन्त्रता आ पुरान संस्करणक खुला इतिहासक जाँच करैत अछि। त्रुटि स्वीकारब मूल स्रोत नष्ट नहि करैत, मुदा ओकरा नुकेनाइ विश्वास घटबैत अछि। प्रतिरक्षा सेहो शब्दक त्रुटिक आधार पर सभ मूल अभिलेख अस्वीकार नहि कऽ सकैत। अध्याय अर्थापत्तिक अगिला प्रश्न खोलैत अछि—स्थापित तथ्यक बीच खाली कड़ीक व्याख्या कोना हो।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

05 अर्थापत्तिक मोड़

अध्याय 053–065 | समय-विरोध, सेवा-कुञ्जी आ न्यूनतम आवश्यक व्याख्याक परीक्षा

053 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 1

05 अर्थापत्तिक मोड़

अर्थापत्तिक खण्ड संगणकीय समयक एक विरोधाभाससँ आरम्भ होइत अछि—जाल-दर्शक प्रवेश निलम्बित रहने बादो सेवा-अनुरोध कोना स्वीकार भेल। मालिनी पहिने मानवीय हस्तक्षेपक सम्भावना उठबैत छथि, फेर पता लगैत अछि जे स्वतंत्र सेवा-कुञ्जी मार्ग ओहि दू तथ्य कैँ संगत बना सकैत अछि। आदित्य सिखबैत छथि जे वैकल्पिक व्यवस्था जीवित रहने एक अनुमानकेँ ‘आवश्यक’ नहि कहि सकैत छी। न्यायालय परीक्षणयोग्य प्रश्नक सीमा निर्धारित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

054 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 2

05 अर्थापत्तिक मोड़

मंत्रालयमे समय-अन्तर, सेवा-कुञ्जी, भुगतान-सन्दर्भ आ गोपनीय स्रोतक आधार पर पाँच प्रश्नक परीक्षण-योजना बनैत अछि। सेवा-प्रदातासँ अनुमति, कुञ्जी-निर्माण, परिवर्तन आ प्रयुक्त मार्गक अभिलेख माँगबाक प्रस्ताव होइत अछि। आदित्य स्थापित तथ्य, आवश्यक अतिरिक्त स्थिति, विरोधी व्यवस्था आ असिद्ध पहचान अलग रखैत छथि। प्रतिरक्षाकेँ प्रभावी उत्तर देबाक न्यूनतम खुला सामग्री सेहो प्रस्तावित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

055 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 3

05 अर्थापत्तिक मोड़

महान्यायवादीक विधिक कक्षमे पाँच अर्थापत्ति-प्रस्तावक पुनरीक्षण होइत अछि। स्वचालित, कतारबद्ध अथवा समयान्तरित प्रक्रियाक सम्भावना सामने अबैत किछु भारी अनुमान सीमित होइत अछि। विद्यानंद शैलजाक उपचार आ घरेलू खर्चक चिन्ताक बीच अपन पेशागत उत्तर लिखैत छथि। राज्य न्यायालयसँ आवश्यक व्याख्या आ सिद्ध तथ्यक बीच अन्तर राखबाक आग्रह करैत अछि। अर्थापत्ति जांचक दिशा अछि, स्वतः आरोप अथवा दोषसिद्धि नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

056 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 4

05 अर्थापत्तिक मोड़

सर्वोच्च न्यायालयमे तीन विवादित सम्बन्ध—असामान्य भुगतान, स्वीकृति-संकेत आ सुदीपक उपस्थिति—पर परीक्षण होइत अछि। नियमित अनुमोदन संकेतक अनुपस्थिति देखबैत असाधारण भुगतानक कारण निश्चित नहि होइत, कारण वैध बादक समायोजन सम्भव अछि। ‘आर.एस.’ नामक पहिचान राघव सेठिया रूपमे सिद्ध नहि मानल जाइत। न्यायालय तथ्य, प्रस्तावित अर्थ आ स्वतंत्र साक्ष्यक अलग ब्योरा माँगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

057 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 5

05 अर्थापत्तिक मोड़

उच्च न्यायालय तीन विशेषाधिकार-विवादित प्रविष्टि ९, ११ आ १२क सीमित जाँच करैत अछि। राज्य कुछ बाह्य समय आ भुगतान-सन्दर्भ माँगैत अछि, मुदा न्यायमूर्ति आर्या संरक्षित सलाहक सहारे खुला अभिलेख सत्यापित करबाक अनुमति नहि दैत छथि। पूर्वस्थित व्यापारिक तथ्य अधिवक्ताकेँ भेजलासँ स्वतः गोपनीय नहि होइत, मुदा अधिवक्ताक चयन आ क्रम विधिक रणनीति खोलि सकैत अछि। स्वतंत्र स्रोतसँ सत्यापनक मार्ग प्राथमिक ठहरैत अछि।

058 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 6

05 अर्थापत्तिक मोड़

अन्वेषण-दैनिकीक पुरान गोपनीय संकेत सभ फेर देखल जाइत अछि। मेटायल संचिका, सक्रिय सेवा-कुञ्जी आ साक्षीक अपराध-बोधपर आधारित मानवीय कर्तृत्वक भारी अनुमान अलग कएल जाइत अछि। स्वचालित प्रक्रिया उपलब्ध रहने व्यक्ति-विशेषक तुरन्त हस्तक्षेप आवश्यक नहि मानल जा सकैत। आदित्य असफल अथवा छोड़ल गेल अन्वेषण-दिशा सेहो सुरक्षित रखैत छथि, जाहिसँ बादक जाँच ओकर इतिहास परखि सकय।

059 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 7

05 अर्थापत्तिक मोड़

राज्य आ बचाव पक्ष अर्थापत्तिक अर्थ—स्थापित तथ्यक बिना असम्भव सह-अस्तित्व लेल न्यूनतम अतिरिक्त स्थिति—पर बहस करैत छथि। गोपनीय स्रोतसँ आरम्भ भेल प्रस्तावकेँ स्वतंत्र तथ्य जकाँ प्रस्तुत करबाक विरुद्ध रक्षा-पक्ष आपत्ति करैत अछि। न्यायालय वैकल्पिक कारणक वास्तविक परीक्षण आ पक्षकारक उत्तर-अधिकार पर अन्तरिम निर्देश दैत अछि। पहिल अनुमान सही बनबय लेल विपरीत सम्भावना हटेनाइ आवश्यक अछि, मात्र छाँटि देनाइ नहि।

060 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 8

05 अर्थापत्तिक मोड़

बड़े अधिवक्ता-दल सामने सेवा-कुञ्जीक सक्रियता आ भौतिक संग्रहकक अभिरक्षामे समय-अन्तर पर प्रत्यक्ष बहस होइत अछि। राज्य स्वीकार करैत अछि जे निष्क्रिय जाल-दर्शकक बाद सेवा-सक्रियता लेल मानवीय नियन्त्रण अनिवार्य नहि; किछु परिचालन व्यवस्था पर्याप्त अछि। अभिरक्षा-पञ्जीक चारि मिनटक रिक्ति स्वतः छेड़छाड़ नहि बनैत। विस्तृत प्रतिज्ञप्ति सँकुचित होइते वास्तविक विवादक आकार छोट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

061 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 9

05 अर्थापत्तिक मोड़

सेवा-प्रदाताक उत्तर किछु अवधि सेवा-कुञ्जी सक्रिय रहबाक पुष्टि करैत अछि, मुदा उपयोगकर्ता आ तत्काल मानवीय उपस्थिति अज्ञात रहैत अछि। न्यायमूर्ति आर्या खुला रिक्ति कैँ नाम देनाइ आ अधूरा स्रोतक सीमा स्वीकारब उचित मानैत छथि। न्यायालयक निर्देशमे कोनो व्यक्तिक स्वामित्व, भूमिका अथवा आपराधिक दोषपर निष्कर्ष नहि अछि। अर्थापत्तिक प्रश्नसँ अनुपलब्ध अभिलेखक परिभाषा दिस कथानक मुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

062 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 10

05 अर्थापत्तिक मोड़

प्रक्रियागत अभिलेखमे अनुसूचक, अधिप्रमाणन-मार्ग आ भुगतानक समयक सम्बन्ध जाँचल जाइत अछि। आदित्य स्वीकार करैत छथि जे एक घटनाक तुरन्त बाद दोसर घटना होएब कारण-संबन्ध नहि सिद्ध करैत। वैध प्राविधिक मार्गक न्यूनतम आवश्यकता मानल जा सकैत अछि, पर उपयोगकर्ता अथवा उद्देश्यक पहिचान लेल अलग प्रमाण चाही। विपरीत तथ्य लेल स्वतंत्र स्तम्भ राखि अनुमानकेँ असीम विस्तारसँ बचाओल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

063 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 11

05 अर्थापत्तिक मोड़

महान्यायवादी आ महान्याय-अभिकर्ता राज्यक अद्यतन तथ्य-सार पढ़ैत छथि। लापता अभिलेखक व्याख्या करबाक पहिने ओकर नियमित सृजन, संरक्षण, वैधानिक उपलब्धता आ खोजक परिधि निर्धारित करबाक आवश्यकता सामने अबैत अछि। एक मिनटक अभिरक्षा-अन्तर दर्ज रहैत अछि; राज्य ओकरा न छेड़छाड़ सिद्ध मानैत, न नगण्य कहैत अछि। विद्यानंद अपनी आपत्ति सीमित स्रोत-प्रश्नपर रखैत छथि, अन्वेषकक नीयतपर आरोप नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

064 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 12

05 अर्थापत्तिक मोड़

न्यायालय शंका, आरोप, स्थापित तथ्य आ अर्थापत्ति आधारित प्रस्तावक अलग कसौटी पर बहस सुनैत अछि। असाधारण भुगतान अथवा प्रक्रियात्मक विचलन देखिते ‘गुप्त प्रोत्साहन’क कथा बनबय पर रोक लगैत अछि। साक्षीसभक भय, आर्थिक लज्जा आ पछतावा सुनल जाइत अछि, मुदा ओ मनोदशा ककरो अपराधक प्रमाण नहि बनैत। राज्य अपन व्याख्याकेँ स्रोत-समर्थित न्यूनतम कथन धरि सीमित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

065 अर्थापत्तिक मोड़क अध्याय 13

05 अर्थापत्तिक मोड़

विशेषाधिकारयुक्त विधिक चयन-सूची आ स्वतंत्र बाह्य वित्तीय अभिलेखक सम्बन्ध पर कठिन विवाद उठैत अछि। बाह्य सेवा-संगणक, भुगतान-द्वार आ समय-तथ्यक सामान्य स्रोत होयबाक सम्भावना संयुक्त पुष्टिक भार घटबैत अछि। न्यायालय अधिवक्ताक चयन-क्रमसँ रणनीति प्रकट होबाक खतरा स्वीकार करैत अछि। आदित्य राज्यकेँ संरक्षित देवाल भेदबाक बजाय स्वतंत्र बाह्य सत्यापन पूर्ण करबाक दिशा दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

06 अनुपलब्धिक धार

अध्याय 066–078 | नहि भेटल अभिलेख, खोजक सीमा आ संरक्षित रहबाक कारण अप्रस्तुति

066 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 1

06 अनुपलब्धिक धार

अनुपलब्धिक आरम्भमे मेटायल अथवा नहि भेटल सन्देश, पुरान कुञ्जी आ अभिलेखक अस्तित्वक प्रश्न उठैत अछि। आदित्य स्पष्ट करैत छथि जे स्थानीय प्रतिबिम्बमे संचिका नहि भेटब संसारमे ओकर अस्तित्व नहि रहबाक प्रमाण नहि। न्यायालय अपेक्षित अभिलेख, खोजक दायरा, अवधिक संरक्षण आ वैकल्पिक स्थानक उपयुक्त जाँच माँगैत अछि। प्रतिकूल अनुपलब्धिक निष्कर्ष लेल बचाव पक्षकेँ खोजक पर्याप्त खुला सार देब आवश्यक मानल जाइत अछि।

067 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 2

06 अनुपलब्धिक धार

विद्यानंद अनुपलब्धिक अनेक कारण अलग करैत छथि—अभिलेख बनले नहि, समय बीति गेल, खोज अधूरी, विधिक संरक्षण, प्राविधिक अप्राप्यता अथवा पर्याप्त खोजक बाद अभाव। सुप्रीम कोर्टमे पूरक निवेदन एहि श्रेणीकरणक कसौटी उठबैत अछि। बाह्य मेटातथ्य उपलब्ध रहने मूल सन्देशक अनुपस्थिति अलग प्रश्न अछि। न्यायालय स्रोत-सुरक्षा आ प्रभावी प्रतिवाद बीच सन्तुलन बनाबय चाहैत अछि, दोषपर निष्कर्ष नहि दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

068 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 3

06 अनुपलब्धिक धार

सर्वोच्च न्यायालय अनुपस्थित अभिलेखकेँ मूल प्रणालिक प्रकृति अनुसार परखबाक निर्देश दैत अछि। पत्राचारक किछु सन्दर्भ अछि, मुदा मूल सन्देश नहि भेटैत; अपेक्षित घटना-अभिलेखक अभाव केवल ओकर संभावित दर्ज होएबाक सीमा धरि अर्थवान अछि। हैश-सत्यापित भौतिक प्रतिबिम्ब बाह्य अथवा दूरस्थ प्रणालीक सम्पूर्ण अस्तित्व सिद्ध नहि करैत। अनन्या कश्यप न्यायालयक सावधानीपूर्ण निर्देशकेँ सनसनीक बदला सही शीर्षकमे व्यक्त करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

069 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 4

06 अनुपलब्धिक धार

सेवा-प्रदाताक प्रशासकीय अभिलेखक संरक्षण-अवधि नव्वे दिन रहने पुरान प्रविष्टि नहि भेटब अर्थवान मुदा सीमित तथ्य बनैत अछि। संग्रहकक ‘पूर्ण प्रतिबिम्ब’क भाषा संशोधित भऽ ‘जब्त भौतिक संग्रहकक पूर्ण बिट-स्तरीय प्रतिबिम्ब’ होइत अछि। एक अभिरक्षा-समयक अन्तर आ बादक हैश-मिलान अलग रहैत अछि। न्यायालय घटना असिद्ध, रिक्ति अभिलेखित आ वस्तुक अखण्डता सत्यापित—ई तीन स्तर अलग निर्धारित करैत अछि।

070 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 5

06 अनुपलब्धिक धार

गृह मंत्रालयमे अनुपलब्ध सामग्री लेल लक्षित संरक्षण-आदेशक रणनीति बनैत अछि। अनिश्चित व्यापक खोजक बदला पहिचानल स्रोत, परिभाषित अवधि आ विधिसम्मत आह्वान-पत्रक निर्णय होइत अछि। शिवेश्वर प्रसाद राज्यक अतिव्यापक भाषा कम करबाक निर्देश दैत छथि, मुदा वास्तविक अनुपलब्धि-संकेत जोगेबाक पक्ष लैत छथि। मालिनी कानूनन जरूरी कटौतीकेँ पाछाँ हटब नहि, प्रमाणक दायरा सही करब बुझैत छथि।

071 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 6

06 अनुपलब्धिक धार

मेटानाइ-संकेतक तीन स्रोत पर परीक्षण होइत अछि: एकमे समय स्पष्ट मुदा उपयोगकर्ता अज्ञात, दोसरमे अधिकार ज्ञात मुदा अवधि व्यापक, तेसरमे स्वचालित विलोपन सम्भव। आदित्य हैश-मानकेँ निर्दिष्ट प्रतिबिम्बक अखण्डता धरि सीमित करैत छथि। न्यायालयमे राज्य असमर्थित व्यापक कथन छोट करैत अछि आ प्रतिरक्षा असिद्ध दोषारोपणक विरोध करैत अछि। ‘मेटायल गेल’ आ ‘फलाँ व्यक्ति मेटौलनि’ बीचक प्राविधिक सेतु एखन अनुपस्थित अछि।

072 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 7

06 अनुपलब्धिक धार

सर्वोच्च न्यायालय परीक्षणाधीन सम्भावना, पर्याप्त खोजक बाद अनुपलब्धि, संरक्षण-अवधि बीति गेल कारण अनुपलब्धि आ विशेषाधिकारक कारण अप्रस्तुत सामग्रीक पृथक श्रेणी बनबैत अछि। अनेक स्रोतक संख्या केँ स्वतन्त्रता अथवा प्रमाण-भारक विकल्प नहि मानल जाइत अछि। राज्य स्वीकार करैत अछि जे विशिष्ट आरोपक परीक्षणक आवश्यकता आ संरक्षित सञ्चारक दायरा एक्के बात नहि। अगिला चरणमे स्रोतसँ निष्कर्ष धरि प्रत्येक प्रमाण-पथक परीक्षणक तैयारी होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

073 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 8

06 अनुपलब्धिक धार

उच्च न्यायालय स्वतंत्र उपलब्ध अभिलेख आ संरक्षित विधिक सञ्चारक अन्तर्वस्तुक पृथक्करण करैत अछि। न्यायमूर्ति आर्या कहैत छथि जे स्वतंत्र स्रोत रहते गोपनीय संचार खोलब पहिल विकल्प नहि होबाक चाही। राज्य एक चुम्बकीय संग्रहकमे सन्देशक बाह्य सन्दर्भ भेटबाक तथ्य स्वीकार करैत अछि, मुदा वास्तविक सन्देश सामग्री अन्यत्र संरक्षित अछि। न्यायालय हैश, अभिरक्षा आ विशेषाधिकारक विधिक प्रश्नक अलग सीमा लिखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

074 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 9

06 अनुपलब्धिक धार

न्यायालय खोजक बाद वास्तवमे नहि भेटल सामग्री आ संरक्षित रहने अप्रस्तुत सामग्री बीचक भेद पुनः स्पष्ट करैत अछि। अन्वेषण-दैनिकीमे नाम, समय आ जाल-पताक दर्ज घटना तथा ‘फलाँ व्यक्ति नियन्त्रण करैत अछि’ सन निष्कर्ष अलग मानल जाइत अछि। गोपनीय स्रोतपर निर्भर प्रतिकूल उपयोग लेल राज्यकेँ उचित आधार उपलब्ध कराबय पड़त। छह प्रमाण-पथक संयुक्त नक्शा बनएबाक प्रस्तावसँ अगिला समेकित तर्क-चरणक प्रारम्भ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

075 गंगेश उपाध्यायक सूत्र

06 अनुपलब्धिक धार

‘गंगेश उपाध्यायक सूत्र’ अध्यायमे आदित्य प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति आ अनुपलब्धिक अलग-अलग निष्कर्ष एक प्रमाण-नक्शामे जोड़ैत छथि। प्रत्येक प्रतिज्ञप्ति लेल व्यक्ति, काल, सम्बन्ध, स्रोत, वैकल्पिक कारण आ अधिकतम उपयोग लिखबाक आवश्यकता सामने अबैत अछि। देवव्रत सिन्हा आ विद्यानंद मिश्र सीमित प्रस्तावपर सटीक प्रतिवाद सम्भव मानैत छथि। नक्शा अन्तिम सत्य नहि; नव अभिलेख आ न्यायिक निर्णयसँ संशोधित होयवाला जीवित पद्धति अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

076 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 11

06 अनुपलब्धिक धार

समेकित प्रमाण-नक्शाक परीक्षणमे एक्के मूल स्रोतसँ बनल अनेक अभिलेखक पारस्परिक सम्बन्ध आ स्वतंत्र स्रोतक वास्तविक पुष्टि अलग होइत अछि। विद्यानंद अर्थापत्ति आधारित छूटल कड़ीक तर्कपर प्रश्न उठबैत छथि; देवव्रत स्वीकार करैत छथि जे बहुलता स्वतन्त्रताक पर्याय नहि। अन्वेषण-दलक आह्वान-पत्र, प्रतिबिम्ब-निर्माण, हैश-सूची आ अभिरक्षा-पञ्जीक स्पष्ट ब्योरा माँगल जाइत अछि। सुधारक इतिहास स्वयं अविश्वसनीयताक निर्णायक प्रमाण नहि बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

077 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 12

06 अनुपलब्धिक धार

उच्च न्यायालयमे अनुत्पादित सामग्री आ खोजक बाद अनुपलब्ध सामग्रीक वर्गीकरणक आधार पर संयुक्त साक्ष्यक भार जाँचल जाइत अछि। एके प्रतिबिम्बक अनेक व्युत्पन्न रूप अलग स्वतंत्र प्रमाण नहि मानल जाइत। न्यायालय आह्वान-पत्रक माँगसँ बाहर सामग्री नहि देबाक घटनाकेँ अवज्ञा कहब अस्वीकार करैत अछि। विद्यानंद पुरान सरकारी अतिव्यापक कथनक सार्वजनिक प्रभाव पर सेहो प्रश्न उठबैत छथि, जखन आदित्य अभिलेखक शुद्धताक पक्ष लैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

078 अनुपलब्धिक धारक अध्याय 13

06 अनुपलब्धिक धार

अनुपलब्धिक खण्डक अन्तमे प्रवेश-पञ्जी, सुरक्षा-द्वारक समय आ अधिकृत उपयोगकर्ता-सूचीक अलग प्रमाण-मूल्य सामने अबैत अछि। साझा अथवा प्रत्यायोजित प्रवेशक सम्भावना कर्तृत्वक निश्चित पहचान रोकैत अछि। निर्यातित सारणी उपलब्ध रहितहुँ मूल स्रोतक पुनर्परीक्षण सम्भव नहि रहने ओकर सीमा दर्ज कएल जाइत अछि। पर्याप्त बाह्य आधार बिना अभिलेखक रिक्तिसँ आपराधिक व्यक्ति-भूमिकाक अनुमान निकालब अनुचित सिद्धान्त ठहरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

07 तर्कक वज्र

अध्याय 079–091 | वैकल्पिक कारणक परीक्षण, स्वतंत्र स्रोत आ प्रतिज्ञप्तिक सहनशीलता

079 तर्कक वज्रक अध्याय 1

07 तर्कक वज्र

तर्कक खण्डमे समेकित प्रमाण-नक्शाक प्रत्येक दावाकेँ सम्भावित विरोधी कारणक कसौटी पर चढ़ाओल जाइत अछि। आदित्य प्रतिज्ञप्ति, स्रोत, निष्कर्ष आ असिद्ध विकल्पक अलग रजिस्टर बनबैत छथि। विद्यानंद बारम्बार एके मूल स्रोतक अनेक प्रतिकेँ स्वतंत्र समर्थन मानबाक विरोध करैत छथि। न्यायालय परीक्षणाधीन सम्बन्धकेँ परीक्षणाधीन रूपमे राखबाक आदेश दैत अछि, जाहिसँ एक अनिर्णीत प्रस्ताव दोसराक छद्म प्रमाण नहि बनि जाए।

080 तर्कक वज्रक अध्याय 2

07 तर्कक वज्र

न्यायालय शंका, आरोप आ प्रमाणक बीचक तार्किक सेतु साक्षी-सन्दर्भसँ परखैत अछि। सुदीपक भवनमे उपस्थितिक समय आ किछु बैठकीक समय मेल खाइत अछि, मुदा ओकर अवैध निर्णयमे भागीदारी स्वतः सिद्ध नहि। प्रतिरक्षा वैकल्पिक व्याख्या दैत अछि; राज्य ओकर परीक्षणक विधि स्पष्ट करैत अछि। विशेषाधिकार-विवादित संचार आ स्वतंत्र बाह्य सामग्रीक उपयोगक सीमा फेर उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

081 तर्कक वज्रक अध्याय 3

07 तर्कक वज्र

मेटायल विद्युत-पत्र, विलोपन-समय आ गोपनीय सञ्चारक बीच अन्वेषकक प्रस्तावित सम्बन्ध जाँचल जाइत अछि। राज्य स्वीकार करैत अछि जे विलोपन-घटना दर्ज रहितहुँ मेटौनिहार, उद्देश्य आ संरक्षित सलाहसँ सम्बन्ध असिद्ध अछि। स्वतंत्र बाह्य व्यवहार न्यायिक परीक्षणक विषय भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा सँ विशेषाधिकार-अपवाद स्वतः नहि सिद्ध होइत। अधिकारक दावा करब स्वयं अपराधक सङ्केत नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

082 तर्कक वज्रक अध्याय 4

07 तर्कक वज्र

न्यायालय मुहरबन्द स्रोतसँ प्रेरित खोज, स्वतंत्र रूपेँ प्राप्त भौतिक सामग्री आ अन्वेषण-दैनिकीक कथनक बीच तीन प्रकारक सम्बन्ध अलग करैत अछि। राज्यक असफल विकल्प आ अप्रयुक्त दिशा सहित जाँचक इतिहास दर्ज करबाक प्रश्न उठैत अछि। न्यायमूर्ति आर्या संकेत करैत छथि जे समय पर स्पष्ट कएल गेल कमी न्यायिक विश्वासक आधार भऽ सकैत अछि। गोपनीय सामग्रीक परोक्ष उपयोग पर सेहो प्रतिरक्षाक चुनौतीक सीमा आवश्यक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

083 तर्कक वज्रक अध्याय 5

07 तर्कक वज्र

प्रतिरक्षा कहैत अछि जे अप्रकटीकृत सामग्रीक प्रतिकूल उपयोग पर रोक रहबाक चाही; राज्य प्रभावी उत्तरक व्यवस्था प्रस्तावित करैत अछि। न्यायालयक सामने गोपनीयताक रक्षा आ निष्पक्ष सुनवाईक अधिकार परस्पर टकराइत नहि, बल्कि वैधानिक सीमा माँगैत अछि। बचाव-पक्षक कनिष्ठ अधिवक्ता राज्यक नीयतपर व्यापक आरोप लिखय चाहैत छथि, मुदा विद्यानंद अभिलेख आधारित संकीर्ण प्रतिवाद चुनैत छथि। 'देखल नहि'क आधार पर आरोप-निर्माण दूनू पक्ष लेल जोखिमपूर्ण ठहरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

084 तर्कक वज्रक अध्याय 6

07 तर्कक वज्र

तर्कक कसौटी पर मेटायल डाक-सामग्री, साझा संगणकीय स्रोत आ रक्षा-पक्षक अनेक वरिष्ठ अधिवक्ताक उपस्थिति पर चर्चा होइत अछि। आदित्य खुला अभिलेखक साम्य स्वीकार करैत छथि, मुदा व्यक्ति-विशिष्ट नियन्त्रणक निष्कर्ष रोकैत छथि। वैकल्पिक सम्भावना वास्तविक प्रमाण-सेतु केँ कमजोर करैत अछि कि केवल अटकल अछि, ओकर परीक्षण होइत अछि। न्यायालयक नीति अछि जे प्रचार अथवा पक्षकारक संख्या साक्ष्यक वजन नहि बढ़बैत।

085 तर्कक वज्रक अध्याय 7

07 तर्कक वज्र

तर्कक अष्टम चरणक तैयारीमे आह्वान-पत्रक निश्चित अवधि, प्रशासकीय प्रवेश-अभिलेख आ सेवा-कुञ्जी परिवर्तनक माँगक कानूनी सीमा जाँचल जाइत अछि। बचाव पक्ष साझा उपयोगक वैकल्पिक व्यवस्था उठबैत अछि, जखन राज्य यन्त्रक हैश-अखण्डता आ भीतरक कथनक सत्यता अलग मानैत अछि। भुगतान-द्वारक संकेत मूलतः एकहि ग्राहक-प्रवाहसँ उत्पन्न हो सकबाक सम्भावना स्वतंत्र पुष्टिक दावाकेँ कमजोर करैत अछि। अभिरक्षा-पञ्जीक सात मिनटक अन्तर खुला दर्ज रहैत अछि।

086 तर्कक वज्रक अध्याय 8

07 तर्कक वज्र

राज्यक तर्क-सहनशीलता-सार मंत्रालयमे तैयार होइत अछि। मालिनी संरचनात्मक सम्बन्धक दावाकेँ स्वतंत्र पहुँच-अभिलेख जतेक अछि, ओतेक धरि सीमित करैत छथि। अधिकारी लोकनि विचार करैत छथि जे जँ रक्षा-पक्षक वैकल्पिक व्याख्या पुष्ट हो, तखन सरकारी दावाक कोन अंश घटाओल जाए। ई संशोधित सूची महान्यायवादी आ महान्याय-अभिकर्ताक समक्ष पठाओल जाइत अछि। तर्कक उपयोग दावाकेँ परीक्षणसँ बचायब नहि, ओकर सम्भावित असफलता देखब अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

087 तर्कक वज्रक अध्याय 9

07 तर्कक वज्र

बचाव पक्ष साझा अधिकृत उपयोगक सम्भावना उठबैत अछि; राज्य अपेक्षित अनुमति-पञ्जी, उपयोगकर्ता-सूची आ संरक्षकक अभिलेखक परीक्षण माँगैत अछि। अदालतमे पूरक निवेदन स्पष्ट करैत अछि जे वैकल्पिक व्याख्याक तर्क स्वतन्त्र प्रमाणक स्थान नहि लेत। किछु विकल्प सम्भव अछि, मुदा उपलब्ध बाह्य समर्थनक स्तर अलग-अलग अछि। व्यक्ति-विशिष्ट निष्कर्ष सुरक्षित करबाक लेल केवल सिद्ध अभिलेखीय सेतु स्वीकार्य रहत।

088 तर्कक वज्रक अध्याय 10

07 तर्कक वज्र

संगणकीय पहुँच-पञ्जी दू व्यक्ति लेल समर्थन दैत अछि, तेसर लेल केवल समय-सन्निकट ध्वनि-अभिलेख उपलब्ध अछि। ध्वनि-सामग्रीक स्वतंत्र वक्ता-पहिचान पूर्ण नहि भेल अछि। न्यायालय स्रोतक प्रामाणिकता, स्वीकार्यता, स्वतन्त्रता, प्रसंग आ प्रतिवादसँ साक्ष्यक वजन निर्धारित करबाक बात दोहरबैत अछि। स्थापित उपस्थिति आ असिद्ध व्यक्तिगत अपराधक बीचक अन्तर तर्कक अगिला केन्द्र बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

089 तर्कक वज्रक अध्याय 11

07 तर्कक वज्र

संरक्षित विधिक सूची देखलाक बाद बाह्य साक्ष्य खोजल गेल कि पहिने सँ स्वतंत्र खोज-पथ उपलब्ध छल, एहि पर मूल विवाद केन्द्रित होइत अछि। मालिनी एक सार्वजनिक जाल-संकेतक पुरान सुरक्षित प्रति देखबैत छथि, जकर समय संरक्षित सूचीसँ पहिलुक अछि। विद्यानंदक पक्ष सेहो पुरान सार्वजनिक पंजीकरणक प्रमाण रखैत अछि। अदालत ई जाँचबाक निर्देश दैत अछि जे बाह्य सामग्रीक उत्पत्ति वास्तवमे स्वतंत्र अछि कि गोपनीय सूत्रक प्रभावसँ चिन्हित।

090 तर्कक वज्रक अध्याय 12

07 तर्कक वज्र

सर्वोच्च न्यायालयमे अज्ञात अथवा संरक्षित प्राविधिक स्रोतक विश्लेषणक पद्धति साझा करबाक कठिन प्रश्न उठैत अछि। राज्य नाम-पहिचान सुरक्षित राखि सार्वजनिक जाल-नाम इतिहास, प्रमाणपत्र-समय, सेवा-अवसंरचना आ खोजक विधिक सार देबाक प्रस्ताव करैत अछि। प्रतिरक्षा चाहैत अछि जे अनदेखल सामग्रीक संग तुलना आधार बनि कोनो प्रतिकूल आदेश नहि दे। न्यायालय किछु प्रश्नपर आदेश सुरक्षित राखैत अछि आ किछुमे विस्तृत स्रोत-निरपेक्ष विवरण माँगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

091 तर्कक वज्रक अध्याय 13

07 तर्कक वज्र

तर्कक अन्तिम अध्यायमे मुहरबन्द अंशक खोज-पथ आ अन्वेषण-दैनिकीक परिकल्पनाक सीमित उपयोग पर निर्णय होइत अछि। जे बाह्य स्रोत स्वतंत्र प्राप्त भेल अछि, ओकर समय-क्रमक उपयोग सम्भव; व्यक्ति-कर्तृत्व अथवा अन्तर्वस्तुक सत्यता अलग परीक्षण चाहैत अछि। बचाव पक्ष चारि प्रतिकूल प्रयोग रोकबाक आग्रह करैत अछि। न्यायालय दैनिकीकेँ साक्ष्यक स्थान नहि दैत, ओकरा अन्वेषणक दिशा आ स्रोत-उत्पत्तिक ब्योरा रूपमे सीमित करैत अछि।

SECTION / खण्ड

08 निर्णयक प्रभात

अध्याय 092–100 | समेकित प्रमाण-पथ, व्यक्ति-विशिष्ट सीमा आ प्रक्रियागत निर्णय

092 निर्णयक प्रभातक अध्याय 1

08 निर्णयक प्रभात

निर्णयक खण्डक प्रारम्भमे न्यायालय समग्र प्रमाण-नक्शामे प्रत्येक सम्बन्धक आधार एक बेर फेर पूछैत अछि। भुगतान, समय, साक्षी-वाक्य आ स्वतंत्र बाह्य अभिलेखक अलग स्रोत प्रस्तुत होइत अछि। न्यायपीठ कहैत अछि जे वरिष्ठ अधिवक्ताक संख्या, मन्त्रालयक प्रतिष्ठा, समाचारक शीर्षक वा अधिकारीक आत्मविश्वास न्यायिक वजन नहि बनैत अछि। अन्तिम विवेचनक कसौटी स्रोतक स्वतंत्रता आ प्रतिवादक पर्याप्त अवसर अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

093 निर्णयक प्रभातक अध्याय 2

08 निर्णयक प्रभात

अदालत संगणकीय प्रतिबिम्बक 'पूर्णता' शब्द पर ठहरैत अछि। आदित्य स्पष्ट करैत छथि जे निर्दिष्ट समयमे जब्त एक माध्यमक पूर्ण प्रतिरूप समस्त संसारक सभ सम्भावित सञ्चारक प्रमाण नहि। यन्त्र, खाता, भुगतान-अनुरोध, प्रशासनिक समय आ वास्तविक मनुष्यक सम्बन्ध अलग-अलग वाक्यमे परीक्षण होइत अछि। न्यायमूर्ति आर्या राज्यसँ व्यक्तिक नियन्त्रणक दावा कहने पर ठीक कुन प्रमाण-पथ उपलब्ध अछि, तकर विवरण माँगैत छथि।

094 निर्णयक प्रभातक अध्याय 3

08 निर्णयक प्रभात

निर्णयक समेकित सूचीमे मूल संगणकीय प्रतिरूपक समय, सीमा आ बाह्य स्रोतक निर्भरता अलग निर्धारित कएल जाइत अछि। जब्त संग्रहकक उपलब्ध सामग्रीक सत्यापन अन्य सेवा-संगणक वा अज्ञात बाह्य उपकरणक पूर्णता सिद्ध नहि करैत। न्यायालय जाल-सम्बन्धक संरचनात्मक संकेत, व्यक्तिगत पहुँच आ स्वामित्वक बीचक स्तर अलग करैत अछि। प्रारूप तैयार करैत समय 'अधिग्रहित प्रतिरूप'क संकीर्ण अर्थ सुरक्षित राखल जाइत अछि।

095 — निर्णयक प्रभातक अध्याय 4

08 निर्णयक प्रभात

राज्यक अन्तिम निवेदनमे बहु-स्रोत संगणकीय आ वित्तीय संरचनाक किछु सीमित समर्थन सामने अबैत अछि, मुदा व्यक्ति-विशिष्ट सञ्चालनक आधार सभ लेल एक्के नहि अछि। विद्यानंद स्वतंत्र, प्रतिवादयोग्य प्रमाणक बिना प्रतिकूल निष्कर्ष नहि देबाक आग्रह करैत छथि। पुरान सरकारी दावाक संशोधनक इतिहास सेहो न्यायालयक सामने राखल जाइत अछि। असिद्ध कर्तृत्व, अनुपलब्ध सामग्रीक उद्देश्य आ किछु स्रोतक स्वतन्त्रता खुलल प्रश्न रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

096 — निर्णयक प्रभातक अध्याय 5

08 निर्णयक प्रभात

न्यायालयमे राज्य साझा सेवा-संरचनाक अस्तित्वक व्यापक निष्कर्ष चाहैत अछि; रक्षा-पक्ष खाता साझा पहुँच, स्वचालित सत्र आ दूरस्थ परिचालनक वैकल्पिक सम्भावना उठबैत अछि। न्यायपीठ स्वीकार करैत अछि जे स्वतंत्र अभिलेखसँ स्थापित वास्तविक लेन-देन अथवा उपस्थिति केवल आपराधिक उद्देश्य असिद्ध रहने नकारल नहि जा सकैत। मुदा संरचनात्मक जाल आ ककरो जानि-बुझि कऽ संचालन करबाक तथ्य अलग-अलग कसौटी पर रहल चाही।

097 — निर्णयक प्रभातक अध्याय 6

08 निर्णयक प्रभात

संरक्षित विधिक सञ्चारक नजदीक पहुँचल अन्वेषण-सूत्रक आधार पर बाह्य सामग्रीक स्वतंत्रता पर सुनवाई होइत अछि। राज्य सार्वजनिक करार आ पुरान बाह्य अभिलेखक आधार पर संरक्षित सूचीसँ अनभिज्ञ पृथक दल द्वारा पुनरुत्पत्तिक विधि प्रस्तावित करैत अछि। न्यायालय मिश्रित व्यवसायिक निर्देश आ विधिक परामर्शक वर्गीकरण सेहो जाँचैत अछि। अन्तिम निर्णयमे कोनो प्रतिकूल तथ्य राखबाक लेल स्वतंत्र स्रोत वा पर्याप्त खुला खोज-पथ देखाबय आवश्यक होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

098 — निर्णयक प्रभातक अध्याय 7

08 निर्णयक प्रभात

स्वतंत्र पुनरुत्पत्ति कहल गेल सामग्री वास्तवमे स्वतंत्र स्रोतसँ खोजल गेल कि मुहरबन्द संकेतकेँ अनुसरण कऽ, एहि पर गहन परीक्षा होइत अछि। एक मध्यवर्ती निर्यातक उत्पत्ति-विवरण अधूरा रहैत अछि, तें ओकर प्रभाव सीमित होइत अछि। न्यायालय पूरक अथवा सहायक सामग्रीकेँ निर्णयमे निर्णायक बनायब अस्वीकार करैत अछि। खुला बाह्य अभिलेखक सत्यापित स्वतंत्रता रहिते ओकर मूल्य गोपनीय समानतासँ स्वतः नहि बढ़ैत।

099 — निर्णयक प्रभातक अध्याय 8

08 निर्णयक प्रभात

उच्च न्यायालयक पूर्व निर्देश आ सर्वोच्च न्यायालयक लंबित विशेष अनुमति प्रकरणक समन्वय पर सुनवाई होइत अछि। न्यायालय प्रत्येक प्रतिकूल प्रतिज्ञप्तिक स्रोत, खोज-पथ, प्रकटीकरण, उत्तरक अवसर आ अधिकतम प्रमाण-मूल्य लिखबाक आदेश दैत अछि। मुहरबन्द अथवा विशेषाधिकार-सन्निकट सामग्रीक अज्ञात सेतु पर व्यक्ति-विशिष्ट निष्कर्ष रोकल जाइत अछि। पक्षकारसभकेँ अन्तिम निर्णय लेल संक्षिप्त प्रमाण-पथ सारणी प्रस्तुत करबाक निर्देश भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

100 — गंगा पर निर्णयक उजास

08 निर्णयक प्रभात

अन्तिम अध्यायमे गंगाक प्रतीकात्मक उजासक बीच न्यायिक संघर्षक सार एक प्रक्रिया-प्रधान निर्णयमे आकार लैत अछि। स्वतंत्र बाह्य अभिलेखसँ किछु भुगतान-पथ, सेवा-संरचना आ प्रशासनिक अन्तरफलकक सीमित अस्तित्व समर्थित होइत अछि; मुदा एहि सँ प्रत्येक व्यक्तिक स्वामित्व, मंशा अथवा अपराध सिद्ध नहि होइत। गोपनीयता, विशेषाधिकार, अनुपलब्धि, साक्षीक कथन आ संगणकीय प्रतिबिम्बक दायरा स्पष्ट राखबाक निर्देश दैत न्यायालय प्रभावी प्रतिवादक अवसर सुरक्षित करैत अछि। ई आदेश दोषसिद्धि अथवा निर्दोषता-सिद्धिक अन्तिम फैसला नहि, न्यायसंगत परीक्षणक सीमा-निर्धारण अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

समग्र कथासूत्र

03 नव्य न्याय आ अपतटीय जुआ-जाल

समग्र कथासूत्र

आरम्भमे अन्वेषण-दल अपतटीय जुआ-सञ्जालक कथित सम्बन्ध खोजैत अछि; मुदा न्यायालयक प्रश्न अन्वेषणक प्रक्रिया, संगणकीय अभिलेखक अखण्डता आ विधिक गोपनीयताक सीमा निर्धारित करबाक दिस बढ़ैत अछि। आदित्य आ मालिनी तथ्यक संख्या घटि जेनाइकेँ हार नहि मानैत; ओ प्रमाणक शुद्धता बढ़बाक प्रक्रिया बुझैत छथि।

आठो खण्डमे प्रमाणक प्रकार बदलैत अछि, मुदा केन्द्रीय नैतिक परीक्षा एक्के रहैत अछि—कोन वस्तु देखल गेल, ककर कारणसँ एक सम्बन्ध मानल जाइत अछि, ओकर विरोधी सम्भावना की अछि, आ कोन कथन न्यायालयमे व्यक्तिक अधिकारक विरुद्ध उपयोग कएल जा सकैत अछि। राज्य आ बचाव पक्ष दूनूक भाषा एहि कसौटी पर चढ़ैत अछि।

अन्तमे उपन्यास अभियुक्तक आपराधिक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समग्र कथासूत्र

दोषक अन्तिम घोषणा नहि करैत, बल्कि न्यायिक परीक्षणक वैध शर्त सभ स्थापित करैत अछि। गंगाक उजासक बिम्ब नव्य न्यायक ओहि अनुशासनसँ जुड़ैत अछि, जाहिमे असिद्ध बातकेँ असिद्ध कहब न्यायिक साहसक आवश्यक रूप बनैत अछि।

WORK / कृति

04 अनुवादक

१०० अध्याय

अध्याय १ • मिथिलाक अनुवादक

मिथिलाक नव्य-न्याय पढ़ल युवक शशांक झा पारिवारिक ऋण, घरक अभाव आ बहिनक पढ़ाइक चिन्ताक बीच जीविका लेल दिल्ली अबैत अछि। चीनी भाषा सीखबाक संकल्प ओकरा भारतीय विद्या भवन, लाल किला आ पितमपुराक ताओ मंदिर धरि पहुँचबैत अछि। चीनी पर्यटकसँ पहिल संवाद आ साधिका जुलियानाक शिक्षा ओकरा बुझबैत अछि जे अनुवाद शब्दक विनिमय मात्र नहि, विश्वास आ नैतिक उत्तरदायित्वक काज अछि। गंगेशक तर्कपद्धति आ नव भाषाक स्वर एक-दोसरासँ जुड़ए लगैत अछि।

अध्याय २ • तीन पोथीक पाठ

भारतीय विद्या भवनमे शशांक तीन पोथीक माध्यमसँ ध्वनि, वाक्य आ व्यवहारक सम्बन्ध सीखैत अछि। चीनी स्वरक फेरबदल ओकर नव्य-न्यायीय अवच्छेदक-बोधसँ मेल खाइत अछि। शिक्षक ओकरा प्रसंगक अर्थ बचबैत मिथ्या जोड़बासँ मना करैत छथि। लाल किलापर पर्यटकक अस्पष्ट प्रश्न दोहरायब कहनाइ ओकर पहिल व्यावहारिक सफलता बनैत अछि। एक चीनी छात्र जुलियानाक पता दैत अछि। अध्यायक मूल निष्कर्ष अछि जे अनुवादकक त्रुटि केवल शब्दमे नहि, ओकर उद्देश्य आ प्रसंगक दुरुपयोगमे सेहो जन्म लैत अछि।

अध्याय ३ • मिथिलासँ दिल्ली 3

आर्थिक संकटमे पड़ल शशांक एक छोट कार्यालयमे भुगतान-संबन्धी चीनी वार्ताक अनुवाद लेल जाइत अछि। अलग-अलग खाता, भुगतान-द्वार, हवाला आ धनक तहदार प्रवाहक शब्द ओकरा सशंकित करैत अछि। ओ प्रमाण बिना अपराध घोषित नहि करैत, मुदा लिखित कार्य-सीमा माँगैत अछि। ओतहि मैथिल युवक मृणाल कर्णसँ भेंट होइत अछि, जे ओकरा खाता आ हस्ताक्षरसँ सावधान करैत अछि। शशांक काज छोड़ि दैत अछि; मित्रता आरम्भ होइत अछि। शंका, आरोप आ प्रमाणक भेद ओकर जीवनक व्यावहारिक सूत्र बनैत अछि।

अध्याय ४ • मिथिलासँ दिल्ली 4

शशांक मकाऊमे तीन दिनक लाभदायक अनुवाद-काज स्वीकार करैत अछि। कार्य-विवरण सीमित भाषिक सहायता बतबैत अछि, मुदा प्रदर्शन-प्रणालीमे उपलब्ध एक अतिरिक्त प्रतिवेदन-पृष्ठ ओ जिज्ञासावश खोलि देखैत अछि। ई ओकर पहिल स्पष्ट कार्य-सीमा उल्लंघन अछि। मृणालसँ बातचीतमे ओ एहि प्रसंगकेँ पूरा नहि बतबैत अछि। पारिश्रमिकसँ घरक सहायता करैत आ अपन लेल नव कलम किनैत ओकर भीतर धनक संग प्रतिष्ठा आ विशेष पहुँचक भूख सेहो बढ़ैत अछि। अध्याय एहि सूक्ष्म चयनक माध्यमसँ नैतिक विचलनक आरम्भ देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ • मिथिलासँ दिल्ली 5

मकाऊसँ लौटल शशांक अधिवक्ता राघव भसीनक कार्यालयमे चीनी ई-मेल, सेवा-करार आ भुगतान-परिशिष्ट पढ़ैत अछि। मूल चीनी पाठ आ अंग्रेजी मसविदाक अर्थगत अन्तर देखिते राघव स्पष्टता आ मूल अभिप्राय सुरक्षित रखबाक आग्रह करैत छथि। शशांक बुझैत अछि जे अनुचित शब्द-चयन कानूनी उत्तरदायित्वक आकार बदलि सकैत अछि। काजमे तत्काल अपराध सिद्ध नहि होइत, मुदा गोपनीयता आ सम्भावित सहभागिताक बीचक अन्तर ओकरा बेचैन करैत अछि। अपन भय आ जिज्ञासाकेँ ओ निजी नोटमे दर्ज करैत अछि।

अध्याय ६ • मिथिलासँ दिल्ली 6

कर-जाँचसँ सम्बन्धित विदेशी ग्राहकक पत्र पढ़ैत शशांक ‘ऊपर’, ‘मुख्य शाखा’ आ सम्पर्कक अस्पष्ट शब्दसभक निश्चित अर्थ देबासँ बचैत अछि। स्थानीय जाँच स्थगित भेलाक सूचना भेटैत अछि, मुदा लिखित आदेशक कारण स्पष्ट नहि। दोसर दिस अधिकारी आदित्य मिश्र मूल आपत्ति आ स्थगन-आदेश अलग-अलग दर्ज करैत छथि। शशांक आ आदित्य एक-दोसरासँ अपरिचित रहितो एकहि अनुशासन पर टिकैत छथि—जे सिद्ध नहि, तकरा सिद्ध नहि कहब। मृणाल शशांककेँ न अन्ध अविश्वास, न अन्ध विश्वासक सलाह दैत अछि।

अध्याय ७ • मिथिलासँ दिल्ली 7

एक डिजिटल समाचारमे शशांकक नाम विदेशी कम्पनीक कर-जाँच रुकबेबाक सम्भावित मध्यस्थक रूपमे छपि जाइत अछि। शशांक आ मृणाल लेखक कथन, अज्ञात स्रोत आ सत्यापित तथ्यकेँ अलग करैत छथि। आदित्यक कार्यालयमे मूल कागजक जाँच होइत अछि, मुदा केवल परिचय वा अनुवाद-काजसँ हस्तक्षेप सिद्ध नहि होइत। सार्वजनिक अपमान शशांककेँ क्रोधित करैत अछि, तइयो ओ प्रतिशोधमे असिद्ध आरोप नहि जोड़बाक प्रयास करैत अछि। प्रश्न रहल जे अपन बचावमे ओ अपनहि अतीतक कतेक सत्य स्वीकार करत।

अध्याय ८ • लाल किलाक चीनी पर्यटक

अध्याय भविष्यक अदालती जिरहसँ आरम्भ भऽ लाल किलाक एक पुरान घटना दिस लौटैत अछि। चीनी पर्यटक लिन युए केर बैग लोप भेलाक भ्रममे एक व्यक्तिपर संदेह पड़ल छल; बादमे बैग वाहनमे भेटल आ चोरी सिद्ध नहि भेल। शशांक तत्काल शान्ति बनबेबाक सुविधामे पर्यटकक मूल कथनमे रहल महत्त्वपूर्ण ‘नहि’ सुरक्षित नहि रखि सकल। अदालतमे ओ अपन भाषिक omission स्वीकारैत अछि। छोट त्रुटि ओकर भविष्यक नैतिक संकटक आरम्भ बनैत अछि: जे नहि देखल गेल, ओकरा देखल जेकाँ प्रस्तुत नहि करबाक चाही।

अध्याय ९ • मिथिलासँ दिल्ली 9

शशांककेँ औपचारिक समन भेटैत अछि आ ओ आदित्य मिश्रक कार्यालयमे बयान देबय जाइत अछि। चीनी अभिलेखक 'payment route' जेकाँ बहुअर्थी शब्द, भुगतानक दिशा आ एकाधिक संस्थाक भूमिका पर प्रश्न होइत अछि। डिजिटल परीक्षण लेल ओकर फोन आ लैपटॉप विधिपूर्वक जब्त कएल जाइत अछि। ओ बयानक दू अस्पष्ट वाक्य सुधारबैत अछि, कारण सम्भावना आ निश्चित ज्ञान अलग बात अछि। समन अथवा जब्ती अपने-आप अपराधसिद्धि नहि; मुदा जाँचमे अपन भाषिक प्रतिभाक महत्त्व देखिकए ओकर गर्व सेहो जागैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १० • मिथिलासँ दिल्ली 10

आदित्यक कार्यालयमे पुनः बोलाओल गेल शशांक करार-श्रृंखला, भुगतान-पाबनिहार आ वास्तविक लाभकारी स्वामित्वक अन्तर स्पष्ट करैत अछि। एकाधिक संस्थाक समान शब्दावली वा मिलैत-जुलैत हस्ताक्षर देखिकए ओ व्यापक नियन्त्रणक अनुमान लगाबय लगैत अछि, मुदा आदित्य ओकरा स्वतंत्र बैंक आ स्वामित्वक प्रमाण माँगैत छथि। शशांक अपेक्षासँ बेसी निष्कर्ष देबाक अपन उत्साह पहचानैत अछि। मृणाल कहैत अछि जे सत्यक सीमित अर्थ बतौनाइ उपलब्धि अछि, मुदा तकरा अपन व्यक्तिगत विजय बना लेब खतरा अछि।

अध्याय ११ • मिथिलासँ दिल्ली 11

आदित्य शशांककेँ बैंक-सारांश, भुगतान-द्वार आ खाताक सीमित अभिलेखक भाषिक मिलानमे लगबैत छथि। एकहि आर्थिक प्रवाहसँ स्वामित्व वा आपराधिक उद्देश्य निष्कर्षित नहि होइत, ई बात बारम्बार स्पष्ट होइत अछि। लाल किलाक पहिल भाषिक त्रुटि शशांककेँ सावधान करैत अछि। अनजान सन्देश आ पेशागत आकर्षण ओकर मनमे संशय जगबैत अछि, जखन मृणाल प्रश्न करैत ओकरा तथ्य आ कथाक अन्तर स्मरण करबैत अछि। मित्रता ओकर बहानाक समर्थन नहि, ओकर विवेकक परीक्षा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२ • मिथिलासँ दिल्ली 12

शशांककेँ मकाऊक दोसर औपचारिक भाषिक बैसारक प्रस्ताव भेटैत अछि। पैघ पारिश्रमिक आ विशेष पहुँचक सम्भावना ओकरा आकर्षित करैत अछि। यात्रा आ सीमित प्रदर्शनमे ओ किछु एहन व्यापारिक संकेत देखैत अछि जकर सम्बन्ध दिल्लीक पुरान अभिलेखसँ सम्भव लगैत अछि, मुदा ई सम्बन्ध सिद्ध नहि। मृणालसँ ओ पूरा खुलि नहि पबैत अछि; आदित्य समक्षो प्रमाणक सीमा बनल रहैत अछि। विशेष व्यक्ति होयबाक इच्छा धनक लोभसँ बेसी प्रभावशाली भऽ रहल अछि। ओ अन्तमे जुलियानासँ फेर भेटबाक विचार करैत अछि।

अध्याय १३ • पितमपुराक ताओ मंदिर

पितमपुराक ताओ मंदिरमे जुलियाना शशांककेँ शब्दक उच्चारणसँ आगाँ अपन मौन, भय आ सत्य-चयन सुनबाक शिक्षा दैत छथि। एहि बीच राघवक कार्यालयमे एक गोपनीय विधिक बैठकक अनुवाद करैत शशांक व्यापारिक कागज आ विधिक सलाहक अन्तर सुरक्षित रखैत अछि। एक अस्पष्ट चैट, नाम बदलबाक प्रसंग आ सीमित सूचना पर अपराधक निर्णय टारल जाइत अछि। बादमे शशांक स्वीकारैत अछि जे ओ किछु महत्त्वपूर्ण अनुभव समय पर पूरा नहि कहने छल। मंदिर ओकरा सहज क्षमा नहि, आत्मस्वीकृतिक अनुशासन दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४ • भाषाक साधना 1

शब्द-प्रमाणक विश्वसनीयता पर कक्षाक पाठ शशांककेँ अपन पुरान चुप्पीक प्रश्न दिस घुरबैत अछि। कर-जाँचक प्राथमिकता घटबेबाक टिप्पणी, ‘ऊपर’ सँ आयल अनिश्चित कथन आ भाषा नरम करबाक अनाम फोनक बीच ओ कोनो असिद्ध षड्यन्त्र घोषित नहि करैत। आदित्यकेँ ओ समय पर नहि बताओल अनुभव बादमे स्वयं सुनबैत अछि आ लिखित कथन देबाक निश्चय करैत अछि। सत्य देर सँ कहब आ सत्य बिगाड़ब अलग बात रहितो ओकर नैतिक दूरी शशांककेँ सालैत अछि। भाषाक साधना आत्मनिरीक्षण बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ • भाषाक साधना 2

शशांकक नाम फेर समाचारमे गोपनीय सामग्री आ जाँच-प्रभावक भूमिकासँ जोड़ल जाइत अछि। ओ अपन मकाऊक सीमाबाह्य पृष्ठ देखबाक कृत्य स्वीकारि लिखित स्पष्टीकरण दैत अछि, मुदा कर-जाँच रोकबाक गोपनीय समझौता अथवा निर्णायक भूमिका ओकरा ज्ञात नहि रहबाक सीमा बतबैत अछि। आदित्य प्रमाणक आधार पर कथन दर्ज करैत छथि; मृणाल आ जुलियाना अपमानक प्रतिकारमे भाषा बिगाड़बासँ रोकैत छथि। शशांकक चुनौती अछि जे अपन वास्तविक भूलकेँ नहि नुकाए, मुदा असिद्ध आरोपकेँ सेहो स्वीकार नहि करे।

अध्याय १६ • भाषाक साधना 3

न्यायालयमे शशांकक लम्बा प्रतिपरीक्षण होइत अछि। सीमाबाह्य सर्वर-पृष्ठ देखब, अनुवादक व्याख्या जोड़ब आ मूल कथनक आशयक विषयमे ओकर उत्तर जाँचल जाइत अछि। ओ स्वीकारैत अछि जे भाषा बुझब, वक्ताक वास्तविक उद्देश्य अथवा अभिलेखक सत्यता स्वतः सिद्ध नहि करैत। कतेको प्रश्न ओकर पुरान शब्दसँ टकराइत अछि। जिरहक अन्त धरि शशांक अपन सजाओल आत्मकथा पर सेहो शंका करब सीखैत अछि। भाषिक कौशलक साधना अन्ततः अहंकार घटेबाक शिक्षा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७ • भाषाक साधना 4

पूरक समनपर शशांक जब्त ध्वनि-सन्देश आ चीनी पाठक अर्थ जाँचैत अछि। ‘मार्ग’, ‘चैनल’ आ ‘भुगतान-द्वार’ जेकाँ शब्दक सम्भावित अर्थ अलग कएल जाइत अछि। अपने पुरान शब्द अथवा परिचित व्यक्तिक नाम जाँचमे देखिकए ओ पक्षधर व्याख्या नहि दैत। आदित्य हर कथनक स्रोत आ अनुमतिक सीमा स्पष्ट करबैत छथि। जुलियानाक शिक्षासँ शशांक सीखैत अछि जे ‘नहि’ कहब, ‘सिद्ध नहि’ कहब आ ‘हम नहि जानैत छी’ कहबक बीच न्यायसंगत भेद अछि।

अध्याय १८ • भाषाक साधना 5

भारतीय विद्या भवनमे प्रतिनिधि, हस्ताक्षरकर्ता, भुगतान-पाबनिहार आ वास्तविक लाभकारी स्वामीक अलग-अलग अर्थ पढ़ाओल जाइत अछि। आदित्यक जाँचमे करारक चीनी मूल आ अंग्रेजी अनुवाद बीच स्वामित्वसँ सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण अर्थान्तर देखाइत अछि। शशांक अपन भाषिक सूक्ष्मदृष्टिक उपयोग करैत अछि, मुदा वास्तविक स्वामित्व घोषणा करबाक लोभसँ बचैत अछि। चीनी परिचितक प्रश्न सेहो ओकरा गोपनीय ज्ञानक प्रदर्शनसँ सावधान करैत अछि। सटीक अनुवादक अर्थ अछि सम्बन्ध देखेनाइ, बिना प्रमाण स्वामित्व तय नहि करब।

अध्याय १९ • भाषाक साधना 6

आदित्य भुगतान-द्वार, पराया खाता, हवाला आ डिजिटल सम्पत्तिसँ जुड़ल शब्दक अलग-अलग अभिलेख देखबैत छथि। शशांक अनेक संकेत जोड़बाक प्रयास करैत अछि, मुदा जाँचकर्ता प्रत्येक अनुमानक स्वतंत्र आधार माँगैत छथि। मृणालक स्पष्ट आपत्ति आ जुलियानाक बातचीत ओकरा बुझबैत अछि जे मित्रता अन्ध समर्थन नहि, प्रश्न करबाक साहस अछि। शशांक अपन नोटमे मित्रक चेतावनीकेँ शत्रुता नहि मानबाक सूत्र लिखैत अछि। भाषा ओकरा अबहियो धन आ प्रतिष्ठाक निकट पहुँचबैत अछि, मुदा एहि निकटताक नैतिक जोखिम कायम अछि।

अध्याय २० • जुलियानाक पाठ

शशांककेँ मकाऊक समूहसँ नियमित मासिक भाषिक परामर्शक प्रस्ताव भेटैत अछि, जाहिमे सीमित चयनित सर्वर-पृष्ठ पढ़बाक अनुमति सेहो अछि। पैघ पारिश्रमिक आ विशेष पहुँच ओकरा लुभबैत अछि। जुलियाना समक्ष ओ पुरान सीमाबाह्य जिज्ञासाक स्पष्ट स्वीकारोक्ति करैत अछि आ आदित्यकेँ पूरक कथन देबाक बाट चुनैत अछि। मृणाल प्रस्तावक लिखित सीमा आ हित-संघर्ष देखबाक सलाह दैत अछि। अध्याय लोभ समाप्त भऽ गेल एहन दावा नहि करैत; जुलियानाक शिक्षा अछि जे पहिने ओकर सही नाम पहचानू।

अध्याय २१ • भाषाक साधना 8

राघवक गोपनीय कानूनी बैसारमे शशांक चीनी कथनक अनुवाद करैत गोपनीय सलाह, व्यापारिक तथ्य आ अपन प्रत्यक्ष सहभागिताकेँ अलग रखबाक प्रयास करैत अछि। ओ जुलियानासँ पुछैत अछि जे चुप रहब कखन उचित गोपनीयता आ कखन तथ्य नुकेनाइ बनैत अछि। मृणाल ओकरा तिथि, स्थान, भूमिका आ अनुवादित विषयक सीमित निजी अभिलेख रखबाक सलाह दैत अछि, बिना गोपनीय सामग्री खोलने। पुरान भुगतान-नामक संकेत देखाइत अछि, मुदा अपराध अथवा व्यक्ति-सम्बन्ध सिद्ध नहि होइत। सही मौनक कठिनाई अध्यायक केन्द्र अछि।

अध्याय २२ • भाषाक साधना 9

आदित्यक फाइलमे मूल सत्यापन-आवश्यकताक तुलना मे जाँचक प्राथमिकता घटेबाक आदेश भेटैत अछि। ‘ऊपर’ सँ निर्देश आ एक सारांशक हलुक भाषा विषयमे प्रश्न उठैत अछि, मुदा लिखित साक्ष्य अधूरा अछि। शशांक शब्दक स्रोत, संशोधनक क्रम आ सुनी-सुनाओल कथनक अन्तर देखबैत अछि। जुलियाना विश्वासघातक अनुभूति आ अपराध-सिद्धिक बीच दूरी चिन्हबैत छथि। प्रकरण स्पष्ट करैत अछि जे संस्थागत निर्णयक भाषा बदलल भऽ सकैत अछि, मुदा एतबे सँ निश्चित व्यक्ति वा षड्यन्त्रक पहचान नहि कएल जा सकैत।

अध्याय २३ • भाषाक साधना 10

एक समाचार-माध्यम शशांककेँ मुहरबन्द अभिलेखमे चीनी नेटवर्कक मुख्य भाषिक कड़ी कहैत अछि। लेख मकाऊ-यात्रा, सीमित सर्वर-पहुँच आ पुरान भुगतान-नामकेँ जोड़ि धन-संचालनक भूमिका घोषित करबाक दिस बढ़ैत अछि। आदित्य स्वतंत्र सत्यापनक बिना सामग्री लीक भेल मानबासँ बचैत छथि। शशांक आ मृणाल आरोपक अंश, वास्तविक स्वीकारोक्ति आ अज्ञात जानकारी पृथक करैत छथि। सार्वजनिक अपमानक बादो शशांक तथ्य दूषित कऽ अपन नाम साफ करबाक लोभसँ बचेबाक कोशिश करैत अछि।

अध्याय २४ • भाषाक साधना 11

अदालतमे शशांकक अनुवादित शब्द, प्रसंगजन्य जोड़ आ अस्पष्टता पर विस्तारसँ प्रश्न होइत अछि। ओ किछु ठाम अपन व्याख्या मूल कथनसँ आगाँ गेल रहबाक बात स्पष्ट स्वीकारैत अछि। न्यायालय मुहरबन्द सामग्रीक उपयोगक सीमा देखैत अछि, मुदा एहि सुनवाईमे व्यापक आपराधिक उद्देश्य सिद्ध नहि होइत। शशांक आत्मस्वीकृतिक अर्थ सभ दोष अपन माथ लऽ लेब नहि, बल्कि अपन वास्तविक जोड़ आ अनिश्चितता चिन्हबैत उत्तर देब बुझैत अछि। ओकर महत्त्वाकांक्षा अबहियो जीवित अछि।

अध्याय २५ • भाषाक साधना 12

पूरक समन शशांककेँ जब्त डिजिटल सामग्रीक चयनित चीनी अंश सत्यापित करबाक लेल बजबैत अछि। ओ सम्भावित अर्थ आ निश्चित आशय अलग लिखबैत अछि। जाँचमे उपयोगी बनबाक सुख ओकर भीतर फेर जागैत अछि, मुदा ओ स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे जतय ओ प्रकरणसँ व्यक्तिगत रूपेँ जुड़ल अछि, ततय ओकर व्याख्या स्वतंत्र सत्यापनक बिना अन्तिम नहि मानल जाय। एहिसँ शशांक पहिल बेर अपन अनिवार्यताक दाबी पर कार्य-विधिक सीमा लगबैत अछि।

अध्याय २६ • भाषाक साधना 13

भारतीय विद्या भवनमे प्रतिनिधि आ स्वामीक पदगत अन्तरक पाठ शशांककेँ पुनः भाषिक विनम्रता सिखबैत अछि। आदित्य संग करार, विदेशी संस्थाक नाम आ भुगतान-सूचक अभिलेख देखैत ओ केवल नामक समानतासँ व्यक्तिक पहचान अथवा वास्तविक स्वामित्व सिद्ध करबाक विरोध करैत अछि। लाल किलाक पर्यटक-संवादमे सेहो ओ अर्थक सीमा स्पष्ट रखैत अछि। मुदा नोएडाक नव पेशागत काज ओकरा आकर्षित करैत अछि। अध्याय भाषाक गर्वक उचित उपयोग आ आर्थिक अवसरक नब परीक्षा बीच सेतु बनैत अछि।

अध्याय २७ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 1

नोएडामे शशांक छोट मरम्मत-कॉन्ट्रैक्टक भाषा आ प्रशासनिक समन्वयक बनैत अछि। मृणाल पहिनेसँ करार पढ़ि कामक सीमा तय करबैत अछि। वातानुकूलनक रिसाव, सामग्री-आपूर्ति आ तेसर खाता द्वारा भुगतानक विषयमे अलग-अलग कागज जाँचल जाइत अछि। एक अपरिचित फोन असुविधा पैदा करैत अछि, मुदा धमकीक आशय निश्चित नहि। वास्तविक समस्या निकासक अवरोध निकलैत अछि। वैध आपूर्तिकर्ताक भूमिका लिखित रूपमे स्पष्ट कएल जाइत अछि। शशांक सीखैत अछि जे छोट ठेकामे सेहो अस्पष्ट शब्द आ अनाम दबावक बीच अभिलेख चाही।

अध्याय २८ • नोएडाक पहिल कॉन्ट्रैक्ट

नोएडाक पहिल मरम्मत-कॉन्ट्रैक्ट निरीक्षण आ कागजी जाँचक बाद पूरा होइत अछि। मृणाल भुगतानक भूमिका, सामग्री-आपूर्ति आ भाषिक सेवाकेँ अलग-अलग दर्ज करबैत अछि। एही बीच मकाऊसँ अधिक शुल्क, यात्रा आ सीमित प्रणाली-पहुँचक प्रस्तावक संकेत भेटैत अछि। शशांक पाछाँक अनुभवसँ सीखि तत्काल सर्वस्वीकृति नहि दैत, मुदा नव अवसरक चमक ओकरा आकर्षित करैत अछि। अध्याय सफल छोट काजक ठोस यथार्थ आ विदेशी विशेष पहुँचक कल्पित प्रतिष्ठाक बीच अन्तर उघारैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २९ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 3

मकाऊक गोपनीयता-पत्रक मसविदामे शशांककेँ किछु धारासँ व्यापक समन्वय अथवा प्रतिनिधित्वक जोखिम देखाइत अछि। राघव भसीन अस्पष्ट कानूनी शब्दक संशोधन करबैत छथि। मृणाल निजी मौखिक निर्देशक बदला लिखित, अधिकृत संवाद पर बल दैत अछि। ओहि काल अनाम फोन आ जाँचक प्राथमिकता घटेबाक टिप्पणीक समानता शशांक केँ विचलित करैत अछि। आदित्य मात्र एहि समानतासँ षड्यन्त्र घोषित नहि करैत छथि। शशांकक भय बढ़ैत अछि, मुदा ओ अनुबन्धक सीमा लिखित करबैत अछि।

अध्याय ३० • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 4

निचला आयुक्तालयक मूल टिप्पणीमे सत्यापन अधूरा कहल गेल रहैत अछि, जखन ऊपरक सारांशमे आशंका अपेक्षाकृत नरम बनि जाइत अछि। आदित्य, शशांक आ सम्बन्धित कर्मी संस्करणसभक तुलना करैत छथि। शशांक अपन सावधान कथन कटि जाएब देखिकए आहत होइत अछि, मुदा ककर निर्देश पर संशोधन भेल, से असिद्ध रहैत अछि। ओ कार्यालयमे पूरा मूल वाक्य फेर राखबाक आग्रह करैत अछि। संस्थागत विश्वासघातक अनुभूति आ दस्तावेजी प्रमाणक बीच तनाव बढ़ैत अछि। अगिला भोर ओकर नाम समाचारमे छपि जाइत अछि।

अध्याय ३१ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 5

समाचार शशांकक नोएडाक भूमिका, मकाऊक प्रस्ताव आ मुहरबन्द सामग्रीक कथित सूचनाकेँ जोड़ि ओकर विरुद्ध प्रभावशाली कथा रचैत अछि। शशांक मृणाल आ राघवक सहायतासँ तथ्य, स्रोत-अनिर्णीत कथन आ आरोप अलग करैत सीमित सार्वजनिक स्पष्टीकरण दैत अछि। जुलियाना ओकरा स्मरण करबैत छथि जे अपमान तथ्यक पर्याय नहि। ओ अपने भूमिका बढ़ा कऽ कहबाक पुरान आदत सेहो देखैत अछि। बदनामिक उत्तरमे असिद्ध दोष लगेनाइ ओकर अपन आलोचनाक विषय बनैत अछि।

अध्याय ३२ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 6

अदालतमे नोएडाक मरम्मत-काज, गोपनीय सामग्रीक कथित स्रोत आ अलग-अलग चीनी पदबंधक अनुवादक जिरह होइत अछि। शशांक स्वीकारैत अछि जे किछु भिन्न मूल शब्दकेँ ओ एके भारतीय रूपमे देलक, जाहिसँ अर्थगत भेद कम भऽ सकैत छल। मुदा एके अनुवाद, एके स्रोत वा एके अपराध स्वतः सिद्ध नहि करैत। न्यायालय सामग्रीक प्रामाणिकता आ स्रोतक प्रश्न खुलल रखैत अछि। शशांक महसूस करैत अछि जे समन अथवा जाँचक केन्द्रमे होयब ओकर महत्त्वक प्रमाणपत्र नहि।

अध्याय ३३ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 7

पूरक समनमे शशांकक कथन, पुरान भुगतान-सन्देश, उपकरण-सूची आ भाषा-सेवाक भूमिका जाँचल जाइत अछि। एक पुरान अनुवाद-तालिका आ सम्बन्धित व्यक्ति सभक नामक आधार पर व्यापक संचालनक दाबी बनबाक सम्भावना उठैत अछि। ओ अपन शब्द छोट रखैत अछि, मुदा अनिवार्य अनुवादक बनबाक भीतरक इच्छा फेर जागैत अछि। मृणाल स्पष्ट करैत अछि जे उपयोगी होयब आ अपरिहार्य होयब अलग बात अछि। जाँच अभिलेख, अनुमत प्रवेश आ उत्तरदायित्वक सीमा पर टिकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३४ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 8

तीन द्विभाषिक करार, भुगतान-सारणी आ विक्रेता-सूची जाँचैत शशांक करार-पक्ष, प्रतिनिधि, सेवा-पाबनिहार, भुगतान-पाबनिहार आ लाभकारी स्वामीक अन्तर बतबैत अछि। ओकर पहिनुका सारांशमे किछु सुविधा-जन्य जोड़ भेटैत अछि, जकर वास्तविक प्रभाव अलग परीक्षणीय अछि। मृणाल आ आदित्य अनुमानक जल्दबाजीसँ रोकैत छथि। एक अनाम फोन फेर दबाव पैदा करैत अछि। अध्याय देखबैत अछि जे समान नाम वा समान भाषा कड़ीक सम्भावना दैत अछि, मुदा पहचान आ अपराध-संबन्ध सिद्ध नहि करैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३५ • गुंडाक फोन

अपरिचित फोन शशांककेँ नोएडाक कागज, कर-जाँच आ अपन भूमिकासँ दूरी राखबाक संकेत दैत अछि। मृणालक सामने ओ फोनक मूल शब्द सुरक्षित रखैत अछि; आदित्य ओकर समय, स्वर आ उपलब्ध विवरण लिखबैत छथि। गुंडागर्दीक आशंका उठैत अछि, मुदा फोन करनिहारक पहचान आ पूर्व घटनासँ सम्बन्ध असिद्ध अछि। शशांक भयक कारण भाषा बदलि वा अपूर्ण तथ्य पेश करबाक बदला दस्तावेजी सावधानी अपनबैत अछि। एतहि मकाऊसँ फेर आकर्षक आमन्त्रण अबैत अछि, जाहिसँ बाहरी दबाव आ भीतरक लोभक टकराव तेज होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३६ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 10

नोएडाक ठेका समापनक दिस बढ़ैत अछि, जखन शशांक मकाऊक आमन्त्रण स्वीकार करब कि नहि, तकरा पर विचार करैत अछि। विशेष पहुँच आ प्रतिष्ठाक लोभक बीच ओ मृणाल, राघव आ जुलियानाक सावधानी स्मरण करैत अछि। भाषिक प्रस्तुतीकरणमे अपन उपयोगिता महसूस करितो ओ निर्धारित पृष्ठसँ बाहर नहि बढ़बाक प्रयास करैत अछि। राघव छह-मासीय परामर्श प्रस्तावक गोपनीयता आ सहायता-संबन्धी दू अस्पष्ट धारा चिन्हैत छथि। आगामी निर्णयक केन्द्र तकनीकी पटल नहि, अनुबन्धक शब्द बनि जाइत अछि।

अध्याय ३७ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 11

राघव भसीन छह-मासीय विदेशी परामर्श-प्रस्तावक चीनी आ अंग्रेजी प्रति मिलबैत छथि। अस्पष्ट सहभागिता, गोपनीयता आ सम्भावित वित्तीय उत्तरदायित्वक धारासभ संशोधित कएल जाइत अछि। शशांक सोचैत अछि जे स्पष्ट सीमा राखलासँ ग्राहक प्रस्ताव वापस लऽ सकैत अछि, मुदा ओ सीमित संशोधित रूपपर हस्ताक्षर करैत अछि। मृणाल ओकरा अवसरसँ अधिक नियमक मूल्य बुझबैत अछि। एही बीच सरकारी फाइलमे फेर अनिश्चित ‘ऊपर’ सँ रोकबाक सन्देश देखाइत अछि। साम्यक आधार पर दोषारोपणक बदला शशांक सन्देश सुरक्षित रखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 12

आदित्य सरकारी फाइलक रोकबाक कथन आ विदेशी पक्षक सन्देशमे मिलैत-जुलैत भाषा देखैत छथि, मुदा दुनूक बीच कारण-सम्बन्ध सिद्ध नहि करैत। शशांक मृणाल आ जुलियानासँ चर्चा कऽ मूल संदेशक समय, स्रोत आ सम्भावित अर्थ अलग लिखैत अछि। सरकारी कार्यालयक सीमित सूचना बाहिर गेल कि कियो केवल चतुर अनुमान लगा रहल अछि, प्रश्न अनिर्णीत अछि। अध्याय छाया, सादृश्य आ वास्तविक साक्ष्यक दूरी पर केन्द्रित अछि। शशांक सीखैत अछि जे पहिने स्रोत खोजू, तखन व्यक्ति चिन्हू।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३९ • कॉन्ट्रैक्ट आ छाया 13

अज्ञात संदेश मुहरबन्द जीएसटी फाइलमे निचला कार्यालयक आपत्ति दबेबाक दावा करैत अछि। आदित्य शशांककेँ प्रतिबन्धित निरीक्षणक अनुक्रमणिका आ उपलब्ध सार्वजनिक अभिलेखक सीमा देखबैत छथि। समाचारक ‘दबाओल गेल’ जेकाँ वाक्यक प्रमाण खोजल जाइत अछि, मुदा अज्ञात भेजनिहार अथवा निश्चित लीक सिद्ध नहि होइत। शशांक अपन अपमानक कारण तेज प्रतिकार करय चाहैत अछि, पर अनुमानक स्तर अलग रखैत अछि। अगिला अदालतक सुनवाईमे एहि भाषिक छायाक परीक्षा होएबाक संकेत मिलैत अछि।

अध्याय ४० • कैंटनिजक केवाड़ी 1

न्यायालयमे वीवो कम्पनीक सेवा-करार, चीनी भाषिक सहायता आ कैंटनिज बोलयवला पक्षसभक सम्बन्धमे शशांक सँ प्रश्न होइत अछि। ओ मानक चीनी, कैंटनिज आ व्यापारिक सेवा-शब्दक अन्तर स्पष्ट करैत अछि। सामान्य ‘तकनीकी सेवा’ पदसँ कम्पनी-साझेदारी, वित्तीय नियन्त्रण वा लाभकारी स्वामित्व सिद्ध नहि होइत, ई बात ओ रेखांकित करैत अछि। अपन सुविधा लेल शब्द नरम करबाक पुरान प्रवृत्ति ओ स्वीकारैत अछि। जाँच डिजिटल जब्तीक अगिला चरण दिस बढ़ैत अछि।

अध्याय ४१ • कैंटनिजक केवाड़ी 2

शशांकक भाषिक सेवा-संबन्धी पुरान डिजिटल टुकड़ा, ध्वनि-सन्देश आ कैंटनिजक उल्लेख आदित्य जाँचैत छथि। एक रिकॉर्डिंगमे शशांक स्वयं कठिन पद सरल करबाक बात कहने भेटैत अछि। ओ स्वीकारैत अछि जे ओकर आवाज आ टिप्पणी वास्तविक अछि, मुदा एहि सँ कोन निर्णय बदलल अथवा अवैध काज सम्पन्न भेल, से स्वतंत्र प्रमाण माँगैत अछि। शशांक अपन महत्त्वाकांक्षाक दबाव पहचानैत अछि। अध्याय भाषाक केवाड़ी आ आर्थिक स्वामित्वक स्वतन्त्र अभिलेखीय घरक रूपक स्थापित करैत अछि।

अध्याय ४२ • VIVOक गेट

नोएडाक वीवो परिसरमे शशांक आ आदित्य प्रमाणित कम्पनी-अभिलेख, भुगतान-सूची आ द्विभाषिक करारक मिलान करैत छथि। कम्पनीक सेवा-सम्बन्धकेँ अन्य विवादित विक्रेता वा जुआ-सम्बन्धी सन्दर्भसँ स्वतः जोड़बासँ बचल जाइत अछि। शशांक फेर ‘सम्पर्क’ आ ‘नियन्त्रण’क अन्तर स्पष्ट करैत अछि। किछु अभिलेखमे मृणालक नाम अथवा परिचित सन्दर्भ देखिते ओकर ध्यान अचानक मित्रताक ओर मुड़ैत अछि। जाँचक प्रश्न ओकर लेल केवल पेशागत नहि, व्यक्तिगत सेहो बनि रहल अछि।

अध्याय ४३ • कैंटनिजक केवाड़ी 4

भुगतान-द्वार, तेसर खाता आ सन्देश-श्रृंखलामे मृणालक सम्भावित सम्बन्ध पर प्रश्न उठैत अछि। शशांक अपन मित्रकेँ निर्दोष सिद्ध करबाक सहज इच्छा आ प्रत्येक वित्तीय संकेतकेँ दोषक प्रमाण मानबाक भय बीच फँसैत अछि। आदित्य अलग-अलग कागजक स्वतंत्र अर्थ देखैत छथि। मृणाल स्पष्ट करैत अछि जे मित्रक पक्षमे असिद्ध अनुमान लगा देब सेहो विश्वासघात अछि। अध्यायमे मित्रताक रक्षा तथ्य छिपेबामे नहि, प्रत्येक व्यक्तिक भूमिका स्वतंत्र प्रमाणसँ जाँचबामे देखाओल गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४४ • कैंटनिजक केवाड़ी 5

शशांक मकाऊक पहिल आ पछिला प्रदर्शन-अभिलेखक सामने अपन विशेष पहुँचक पुरान स्मृति जाँचैत अछि। अतिथि-पटल खोलब, देखब आ टिप्पणी देबकेँ संचालन, नियंत्रण अथवा स्वामित्वसँ अलग कएल जाइत अछि। ओ अनुभव करैत अछि जे ‘हमरा बिना ई काज नहि होएत’ जेकाँ वाक्य ओकर गर्वक रचना रहि सकैत अछि। उपलब्ध सामग्री ओकर सीमा-उल्लंघन जेकाँ वास्तविक भूल देखबैत अछि, मुदा व्यापक अपराध-सहभागिताक दावा स्वतंत्र जाँच माँगैत अछि। लोभक बाद भय फेर प्रमुख होइत अछि।

अध्याय ४५ • कैंटनिजक केवाड़ी 6

राघवक कार्यालयमे गोपनीय विधिक सलाह आ बादक व्यावसायिक संचालन-सन्देश अलग-अलग देखल जाइत अछि। शशांक अपन अनुवादित सारांशक शब्द आ वकीलक वास्तविक सल्लाहक बीच फरक पहचानैत अछि। जुलियाना आ मृणालसँ संवादमे ओ स्वीकारैत अछि जे ‘सभ ठीक अछि’ कहब कखनो कानूनी स्वीकृतिक अनुचित छाया बना सकैत अछि। एक नव संदेश निचला आयुक्तालयक विरोध आ ऊपरक मौखिक निर्देशक अन्तर उभारैत अछि। अध्याय गोपनीयता आ विश्वासघातक आशंका बीच दस्तावेजी सीमारेखा राखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४६ • कैंटनिजक केवाड़ी 7

निचला आयुक्तालयक अधिकारीक लिखित सत्यापन-आग्रह आ ऊपरक प्राथमिकता घटेबाक निर्देशक तुलना होइत अछि। शशांकक क्रोध सहजहि ककरो अपराधी कहबाक दिस बढ़ैत अछि, मुदा आदित्य ओकरा स्मरण करबैत छथि जे शशांक स्वयं पूर्वमे भाषा नरम कऽ चुकल अछि; एहि समानतासँ दोसरक उद्देश्य तय नहि कएल जा सकैत। मृणालक चेतावनी आ उपलब्ध संस्करण-क्रमक आधार पर विश्वासघातक कथन एखन प्रश्न रूपमे रहैत अछि। सार्वजनिक अपमानक नव सम्भावना उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४७ • कैंटनिजक केवाड़ी 8

एक अनजान संदेश शशांककेँ ‘दू नेटवर्कक बीच कड़ी’ कहलनि कि नहि, ई प्रश्न करैत अछि। शशांक शब्द ‘कड़ी’क अस्पष्टता देखबैत अछि—ई भाषिक, परिचयात्मक, व्यापारिक वा वित्तीय सम्बन्ध हो सकैत अछि। आदित्य समाचार, उपलब्ध अभिलेख आ वास्तविक सम्पर्कक स्तर अलग करैत छथि। मृणाल शशांकक आक्रोश बुझैत तकरा सीमित उत्तर देबाक सलाह दैत अछि। अदालतमे अगिला प्रश्न केवल शब्द के कहलक नहि, काटल-सँवारल शब्दसँ कतेक अनुमान उचित अछि, से होएत।

अध्याय ४८ • मैंडरिन सँ कैंटनिज धरि

न्यायालयमे मैंडरिन आ कैंटनिजक भाषिक भेद, मुहरबन्द सामग्रीक कथित छायाचित्र आ सार्वजनिक रूपान्तरक स्रोत पर जिरह होइत अछि। समान शब्द वा दृश्य समान स्रोतक निर्णायक प्रमाण नहि, ई बात शशांक स्पष्ट करैत अछि। ओ किछु पुरान व्याख्यात्मक सुविधा स्वीकारैत अछि, मुदा न्यायिक निष्कर्षकेँ उपलब्ध दस्तावेज धरि सीमित रखैत अछि। अदालत उपकरण, कथन आ मूल अभिलेखक अगिला मिलानक दिशा तय करैत अछि। शशांक लेल भाषिक समझक महत्त्व ओकर स्वयं घोषित शक्ति नहि, जाँचयोग्य सीमा अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४९ • कैंटनिजक केवाड़ी 10

न्यायालयीय निर्देशनुसार शशांकक बयान फेर दर्ज होइत अछि आ दू डिजिटल उपकरणक जब्ती-सूची पढ़ल जाइत अछि। पुरान शब्द, रिकॉर्डक समय-क्रम आ मूल कथनक व्याख्यात्मक जोड़ पर ओ संशोधन करबैत अछि। आदित्य प्रत्येक याददाश्तकेँ तत्काल सिद्ध तथ्य नहि मानैत छथि। शशांक अपन उत्तरक सजावट कम करैत अछि। अन्तमे जुआ-अनुप्रयोगसँ जुड़ल एक विक्रेताक पुरान प्रसंग स्मरण होइत अछि, जे एखन अभिलेखसँ पुष्ट होयबाक प्रतीक्षामे अछि।

अध्याय ५० • जुआ ऐपक vendor

‘L-W/vendor’ संकेतक आधार पर शशांक ली वेनचाओ नामक परिचित आ एक जुआ-सम्बन्धी ऐपक विक्रेता-विषयक पुरान बैठक स्मरण करैत अछि। आदित्य काजक प्रस्ताव, भाषिक सहायता, प्राप्त भुगतान आ आर्थिक स्वामित्वक प्रश्न अलग करैत छथि। शशांक मानैत अछि जे ओ भाषिक भूमिका सँ शुरू कएल संवादमे अधिक महत्त्व पाबय चाहैत छल। मृणालकेँ संग लएबाक सुझाव सेहो सामने आएल छल। अध्याय एखन विक्रेता-सम्बन्धक सम्पूर्ण प्रकृति तय नहि करैत; अगिला जाँच लेल भेट, दस्तावेज आ धनक अलग कड़िसभ चिन्हैत अछि।

अध्याय ५१ • कैंटनिजक केवाड़ी 12

शशांक आ मृणाल दुनूक अलग-अलग बयान, पुरान ई-मेल, भुगतान-रसीद आ सेवा-करारक अंश एकत्र जाँचल जाइत अछि। ली वेनचाओक परिचय, मृणालक नाम सामने आनब आ भाषिक काजक सीमा पर प्रश्न होइत अछि। शशांक अनुभव करैत अछि जे मित्रक परिचय देब सहज सामाजिक क्रिया छल, मुदा कागज पर तकरा संस्थागत सम्बन्ध बुझल जा सकैत अछि। ओ अपन आर्थिक आ प्रतिष्ठागत आकर्षणकेँ एकटा सरल कारणमे नहि समेटैत। पुरान विदेश-यात्राक वास्तविकता अगिला सत्यापनक विषय बनैत अछि।

अध्याय ५२ • कैंटनिजक केवाड़ी 13

पासपोर्ट, विमान-आरक्षण, होटल, मकाऊक बैठक-सूची आ सीमित प्रणाली-प्रवेशक अभिलेख शशांकक स्मृतिसँ मिलाओल जाइत अछि। ओ विदेशी भवन, भाषिक प्रस्तुति आ अतिथि-खाताक उपयोगक विवरण दैत अछि। ओ स्वीकारैत अछि जे ‘विशेष पहुँच’क चर्चा सुनि अपन पहुँच वास्तविकतासँ पैघ देखेबाक इच्छा भेल। जाँचकर्ता अतिथि बनि कऽ देखबाक अधिकार आ वित्तीय अथवा प्रशासनिक संचालनक अधिकार अलग राखैत छथि। राघव भसीनसँ जुड़ल कागज अगिला प्रश्नक आधार बनैत अछि।

अध्याय ५३ • मकाऊक दर्पण 1

गोपनीय विधिक समीक्षा नामक संचिकामे राघव, विदेशी समूह आ शशांकक अनुवादित सारांशक सम्बन्ध देखल जाइत अछि। दस्तावेज पर ‘गोपनीय’ लिखल रहब कानूनी सुरक्षा अथवा अपराधक स्वतः प्रमाण नहि। आदित्य संस्करण, समय-क्रम, अनुमति आ अलग व्यापारिक क्रियाक चिह्न जाँचैत छथि। शशांक अर्थापत्ति द्वारा रिक्त स्थान भरबाक मोह सँ सावधान रहैत अछि। समान मूलसँ जुड़ल कागजक दू रूप अलग निष्कर्षक दिशा खोलैत अछि, जकर सही स्रोत निर्धारित करब बाँकी अछि।

अध्याय ५४ • मकाऊक दर्पण 2

निचला आयुक्तालयक मूल कर-सूचना आ ऊपरी कर-गुप्तचर शाखाक प्रसारित संस्करणक शीर्षक तथा तिथि समान अछि, मुदा निष्कर्ष आ सावधानीक भाषा भिन्न अछि। शशांक पहिने ‘कियो सम्पादन केलक’ कहैत अछि, फेर ककरा द्वारा आ कखन, से स्पष्ट प्रमाण नहि रहबाक बात स्वीकारैत अछि। प्राप्ति आ प्रसारक समयक्रममे खाली स्थान अछि। आदित्य दस्तावेजी भेद सिद्ध करैत छथि, मुदा जानि-बुझि अपराध नुकेबाक उद्देश्यकेँ तत्काल घोषित नहि करैत। एहि अन्तरक समाचारमे दुरुपयोगक आशंका उभरैत अछि।

अध्याय ५५ • मकाऊक दर्पण 3

आदित्य मुहरबन्द सामग्रीक अनुमति-सीमित अंश शशांक आ राघवक समक्ष रखैत छथि। बाहिरक समाचारक निर्णायक भाषा आ भीतरक मूल सावधानीक अन्तर देखल जाइत अछि। शशांक अपन विरुद्ध नियोजित षड्यन्त्रक भावना अनुभव करैत अछि, मुदा अनेक स्रोतसँ सूचना जुटल होयबाक सम्भावना सेहो स्वीकारैत अछि। राघव अपन नाम सँ जुड़ल सार्वजनिक दाबी प्रश्नांकित करैत छथि। अदालतमे मूल पाठ, मसविदा-श्रृंखला आ सार्वजनिक रूपान्तरक जिरहक तैयारी होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५६ • मकाऊक दर्पण 4

न्यायालय सार्वजनिक समाचार-संक्षेप, ओकर पूर्व मसविदासभ आ मूल मुहरबन्द अंशक तुलना करैत अछि। शशांक स्वीकारैत अछि जे अपन अतीतमे ओ किछु भाषिक सुविधा बरतने छल, मुदा ओकर व्यापक वित्तीय भूमिका स्वतः सिद्ध नहि होइत। अदालत दोष अथवा निर्दोषताक अन्तिम निर्णय नहि दैत; स्रोत-श्रृंखला आ रूपान्तरक विश्वसनीयता जाँचैत अछि। शशांक अपमानसँ अधिक अपन क्रियाक वास्तविक जिम्मेदारी देखब शुरू करैत अछि। अगिला जाँच पुरान फोन आ लैपटॉपक डिजिटल निशान पर केन्द्रित होयत।

अध्याय ५७ • मकाऊक दर्पण 5

न्यायालयक सीमित आदेशपर शशांकक पुरान मोबाइल आ लैपटॉप जब्त कऽ चयनित अवधि केर सुरक्षित प्रतिलिपि देखल जाइत अछि। सन्देश आ अनुवादक मसविदामे ओकर स्वयं अपन भूमिका पैघ बतबेबाक प्रवृत्ति सामने अबैत अछि। ओ एहि महत्त्वाकांक्षाकेँ स्वीकार करैत अछि, मुदा उपलब्ध डिजिटल सामग्रीमे वित्तीय नियन्त्रणक स्वतन्त्र चिह्न खोजबाक आवश्यकता स्पष्ट रहैत अछि। पुरान करार, विक्रेता-श्रृंखला आ स्वामित्वक प्रश्न नव रूपमे उठैत अछि। राघवक नाम फेर महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५८ • वकील जे चीनी नहि बुझैत

आदित्यक कार्यालयमे राघव भसीन, शशांक आ आदित्य द्विभाषिक सेवा-करारक मूल, अंग्रेजी मसविदा आ विधिक समीक्षा देखैत छथि। राघव चीनी मूल नहि बुझैत छलाह; तेँ शशांकक अनुवाद कतय विश्वसनीय आ कतय प्रसंगजन्य जोड़युक्त छल, तकर परीक्षा आवश्यक होइत अछि। राघवक विधिक टिप्पणीकेँ स्वतः विदेशी व्यापारिक संरचनाक स्वीकृति मानब अनुचित अछि। शशांकक भाषिक भूमिका, वकीलक जिम्मेदारी आ भुगतानक अलग प्रश्न सामने अबैत अछि। आगामी मिलान धनक प्रवाह आ मृणालक पुरान परिचयसँ जुड़त।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५९ • मकाऊक दर्पण 7

भुगतान-द्वारक सारांश, खाताक सूची, अपूर्ण प्रेषण-टिप्पणी आ पुरान संदेश शशांकक सामने राखल जाइत अछि। मृणालक नाम बीच-बीचमे उठैत अछि, मुदा मित्रताक आधार पर कागजक रिक्त कड़ी भरबाक अधिकार ककरो नहि। शशांक अपन चिह्नित भूमिका आ अलग भुगतान-निर्देशक प्रश्नक अन्तर देखैत अछि। मृणाल सेहो अपन स्मृति आ दस्तावेज सीमित रखैत अछि। मकाऊक ‘विशेष पहुँच’क पुनः आमन्त्रण शशांकक भीतर महत्त्व पाबय चाहबाक पुरान इच्छा जगबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६० • मकाऊक दर्पण 8

मकाऊक दोसर यात्राक दस्तावेज, बैठक आ अस्थायी प्रणाली-प्रवेशक अभिलेख जाँचल जाइत अछि। शशांक स्वीकारैत अछि जे एहि यात्रा के ओ साधारण अनुवादक-काजसँ अधिक ‘भीतर पहुँच’क अनुभव बनौने छल। उपलब्ध अभिलेख सामग्री देखब, भाषा समझेनाइ आ सीमित प्रस्तुति बतबैत अछि; व्यापक वित्तीय संचालन अथवा आपराधिक सहभागिता एतबसँ सिद्ध नहि होइत। राघवक परामर्श आ अनुवादित दस्तावेजक प्रभाव अगिला प्रश्न बनैत अछि। शशांक अपन प्रतिष्ठाक लोभक वास्तविक आकार बुझबाक प्रयत्न करैत अछि।

अध्याय ६१ • मकाऊक दर्पण 9

आदित्य न्यायालयक अनुमतिक अनुसार विधिक परामर्शक बाह्य समय-क्रम, मसविदाक भेद आ शशांकक भाषा-सारांश जाँचैत छथि। राघवक गोपनीय सलाहक मूल विषय अनावश्यक रूपसँ नहि खोलल जाइत। शशांकक पहिल संक्षेपमे लाभकारी स्वामित्वक सत्यापन बाकी रहबाक सावधानी हलुक भेल रहबाक प्रश्न उठैत अछि। ओ मानैत अछि जे एहन सारांश अपूर्ण रहि सकैत अछि, मुदा जानि-बुझि अपराधक रक्षा करबाक आशय सिद्ध नहि। कथा अब संस्थागत विश्वास आ संशोधित कर-अभिलेख दिस बढ़ैत अछि।

अध्याय ६२ • मकाऊक राति

निचला आयुक्तालयक आरक्षण-पत्र, ऊपरी शाखाक प्रसार-सूची आ मकाऊक एक रातिक सन्देशक समय-क्रम एकत्र देखल जाइत अछि। शशांक याद करैत अछि जे अस्पष्ट सन्देशकेँ ओ स्रोत पूछने बिना पैघ अर्थ देने छल। आदित्य तिथिक समीपता अथवा समान शब्दसँ गोपनीय सूचना लीक भेल मानबासँ बचैत छथि। ‘ककरा की कखन ज्ञात भेल’ प्रश्न जाँचक केन्द्र बनैत अछि। शशांक स्वीकारैत अछि जे ओहि राति ओकरा गोपनीय कागज नहि, एक अप्रमाणित कथन भेटल छल।

अध्याय ६३ • मकाऊक दर्पण 11

नव सार्वजनिक आरोप शशांककेँ भारतीय धन चीनी जुआ-समूह धरि पहुँचेबयवला अनुवादक कहैत अछि। मुहरबन्द मूल अंशमे ओकर भाषिक सम्पर्कक भूमिका स्वीकारल रहितो खाताक वास्तविक नियन्त्रण अलग सत्यापनक विषय रहैत अछि। राघव स्पष्ट करैत छथि जे शशांकक नरम कएल भाषा हुनकर कानूनी स्वीकृति नहि छल। शशांक अपन पुरान आत्म-प्रचारक वाक्य सार्वजनिक मिथ्या आरोपक विश्वसनीयता बढ़ाबयमे सहायक भेल रहबाक कटु अनुभव करैत अछि। मूल अभिलेख आ समाचारक कथनक दूरी अगिला अदालती प्रश्न बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६४ • मकाऊक दर्पण 12

अदालत मूल मुहरबन्द सारांश, सार्वजनिक समाचार आ आर्थिक शीर्षकसभक तुलना करैत अछि। शशांक कहैत अछि जे सावधानीक पंक्ति हटला पर जाँचाधीन भूमिका सिद्ध भूमिका जेकाँ प्रस्तुत होइत अछि। आदित्य सम्भावित अनेक स्रोत स्वीकारैत छथि; विशिष्ट लीक करनिहारक नाम बिना स्वतंत्र प्रमाण नहि देल जा सकैत। न्यायालय समाचारक रूपान्तर-स्रोतक अलग जाँच आ पुरान उपकरणसँ भेटल सीमित संदेशक पुनर्परीक्षणक निर्देश दैत अछि। शशांक अपन वास्तविक भूल स्वीकारबाक संग असिद्ध पैघ आरोप नकारबाक मर्यादा रखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६५ • मकाऊक दर्पण 13

न्यायालयक आदेशपर पुरान डिजिटल मसविदा, सन्देश आ भुगतान-सन्दर्भ फेर देखल जाइत अछि। शशांकक अपने शब्दमे ‘भीतरक आदमी’ होयबाक इच्छा, भूमिकाक आत्म-विस्तार आ प्रतिष्ठाक प्रदर्शन स्पष्ट होइत अछि। ओ एहन डींगकेँ नुकेबाक बदला स्वीकारैत अछि, मुदा आर्थिक नियन्त्रणक प्रमाण तकरासँ अलग माँगैत अछि। जाँचक परिणाम एक पूर्ण अपराध-निर्णय नहि, ओकर महत्त्वाकांक्षाक दस्तावेजी चिह्न बनैत अछि। अगिला कथाखण्ड जन्मदिनक भव्य भोज दिस जाइत अछि।

अध्याय ६६ • भोज, देवता, अपमान 1

भव्य जन्मदिनक भोजमे शशांक विदेशी अतिथि, व्यवसायी आ प्रसिद्ध कलाकार सभक बीच ‘विशेष भाषिक अतिथि’क सम्मान पबैत अछि। मंचपर किछु समयक अनुवाद ओकरा अपन सामाजिक शक्ति जेकाँ बुझाइत अछि। आदित्य बादमे निमन्त्रण-सूची, आयोजनक सेवा-विक्रेता, भुगतानक संकेत आ कलाकारक उपस्थितिक अलग-अलग अर्थ जाँचैत छथि। प्रसिद्ध व्यक्तिक संग चित्र खिंचाओल वा मंच साझा करब व्यावसायिक साझेदारीक प्रमाण नहि। मृणालक ‘सावधान रह’ चेतावनी शशांक फेर स्मरण करैत अछि। मंच ओकर नहि, केवल किछु क्षण लेल आवाज ओकर छल।

अध्याय ६७ • भोज, देवता, अपमान 2

जन्मदिनक भोजसँ सम्बन्धित भुगतान-सूची, पुरान संदेश आ मृणालक कथनक मिलान होइत अछि। शशांक मित्रकेँ ‘हमर आदमी’ कहबाक अपन सहज, मुदा कानूनी रूपेँ भ्रमोत्पादक भाषा पहचानैत अछि। सेवा-शुल्क, आयोजकक भुगतान, दोसर संस्था आ मृणालक वैध सहभागिताक प्रश्न अलग रखल जाइत अछि। शशांक सहज निष्कर्षक बदला जाँचयोग्य सम्बन्ध स्वीकारैत अछि। मृणाल पुनः पूछैत अछि जे मित्रताक भरोसा कखन शशांकक प्रतिष्ठाक प्रदर्शनमे बदलि गेल। अगिला प्रसंग मकाऊक ‘विशेष पहुँच’ दिस लौटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६८ • भोज, देवता, अपमान 3

भोजक प्रशंसापछाति शशांक मकाऊमे फेर आयोजित बन्द बैठकक स्मृति सुनबैत अछि। यात्रा-अभिलेख, अतिथि प्रवेश आ प्रणालीक सीमित पटल देखल जाइत अछि, जतय खेल-बाजी सम्बन्धी सामग्री सेहो छल। शशांककेँ केवल देखबाक आ भाषिक टिप्पणी देबाक अधिकार रहबाक संकेत भेटैत अछि। ओकर पुरान व्यापक पहुँचक दावा वास्तविक अभिलेखसँ मेल नहि खाइत। ओ स्वीकारैत अछि जे भीतरक मेज धरि पहुँचिकए अपनाकेँ भीतरक स्वामी मानि लेब ओकर गर्व छल। राघवक गोपनीय विधिक सल्लाहक सीमा पुनः प्रश्न बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६९ • भोज, देवता, अपमान 4

मकाऊक विधिक परामर्शक बाह्य समय-क्रम, राघव भसीनक उपस्थिति आ अलग व्यावसायिक संदेश जाँचल जाइत अछि। राघवक नाम आरम्भिक कानूनी सत्रमे रहबाक अर्थ बादक भुगतान अथवा संचालन-बैठकमे हुनकर सहभागिता नहि। शशांकक भाषिक संक्षेप कतहु कानूनी सावधानी हलुक कएने होयबाक प्रश्न अछि, मुदा ककरो अपराध-सहभागिता घोषित करबाक प्रमाण एखन आवश्यक अछि। जाँच भुगतान-द्वार, निचला आयुक्तालयक प्रश्नचिह्न आ हवाला तथा डिजिटल सम्पत्तिक सन्दर्भ दिस बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७० • हवाला आ बिटकॉइन

आदित्य निचला आयुक्तालयक आरक्षण, ऊपरी कर-गुप्तचर सारांश आ भुगतान-मिलानक पर्चीमे ‘हवाला?’ तथा ‘अंकीय परिसम्पत्ति?’ प्रश्नचिह्न जाँचैत छथि। शशांक कागजमे उल्लिखित वित्तीय शब्दक सामान्य अर्थ स्पष्ट करैत अछि, मुदा केवल शब्दक उपस्थितिक आधार पर अवैध हस्तान्तरण मानबासँ बचैत अछि। जाँचक किछु सावधानी बादक सारांशमे कम देखाइत अछि, जे संस्थागत भरोसाक प्रश्न पैदा करैत अछि। मुहरबन्द अंश सार्वजनिक भेलासँ प्रश्नचिह्न अपराध-सिद्धिक पूर्णविराम बनि जाएबाक खतरा अध्याय रेखांकित करैत अछि।

अध्याय ७१ • भोज, देवता, अपमान 6

समाचार ‘हवाला-बिटकॉइन भोजक भारतीय सूत्रधार’ कहि शशांकक मंचीय चित्र आ सरकारी जाँचक अधूरा प्रश्न जोड़ैत अछि। शशांक मूल मुहरबन्द सावधानी आ सार्वजनिक निर्णायक शीर्षकक अन्तर चिन्हैत अछि। आदित्य शशांकक वास्तविक अनुवाद-त्रुटि आ व्यापक वित्तीय अपराधक असिद्ध दाबीक अलग समीक्षा करैत छथि। मृणाल ओकरा ‘सभ मिथ्या’ कहि अपन अतीत धोएबाक प्रवृत्तिसँ रोकैत अछि। अदालतमे भोजक फोटो, मूल पाठ आ आरोपक तुलनात्मक जाँचक तयारी होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७२ • भोज, देवता, अपमान 7

न्यायालय भोजक चित्र, मुहरबन्द मूल प्रश्न, शशांकक द्विभाषिक सारांश आ भुगतान-शीर्षक एक संग रखैत अछि। भाषिक सेवा लेल शुल्क भेटब, आयोजनक आर्थिक स्वामी होयबक समान नहि, ई शशांक स्पष्ट करैत अछि; तथापि शुल्कक स्रोत जाँचयोग्य रहल। ओ अपन द्वारा कएल सुविधाजन्य परिवर्तन स्वीकारैत अछि, मुदा असिद्ध विस्तारकेँ अपराध मानबाक विरोध करैत अछि। अदालत व्यापक निर्णय टारि पुरान डिजिटल सामग्रीक सीमित पुनर्परीक्षण निर्देशित करैत अछि। अपन महत्त्वाकांक्षाक पुरान संदेश अगिला परीक्षा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at

https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७३ • भोज, देवता, अपमान 8

पुरान मोबाइल, संगणक आ सुरक्षित प्रतिलिपिमे शशांकक ‘हमरे बिना निर्णय नहि’, ‘हम सभ जोड़ि दैत छी’ जेकाँ अतिरञ्जित कथन उभरैत अछि। ओ स्वीकारैत अछि जे ओ कठिन बैठकक भाषा जोड़ैत छल, मुदा आर्थिक अथवा प्रशासनिक निर्णयक अधिकार ओकरा रहबाक प्रमाण अलग चाही। आदित्य वास्तविक सहभागिता, आत्म-प्रचार आ असिद्ध वित्तीय भूमिका अलग चिन्हैत छथि। शशांक अपन डींगक जिम्मेदारी लेल तैयार होइत अछि। अगिला प्रश्न आयोजन-करार आ लाभकारी स्वामित्वक होएत।

अध्याय ७४ • भोज, देवता, अपमान 9

आदित्य आयोजन-करार, आतिथ्य-विक्रेता, भुगतान-निर्देश आ लाभकारी स्वामित्वक सत्यापन-पत्रक तुलना करैत छथि। शशांक पहिने ‘असल स्वामी बुझैत छी’ जेकाँ भाषिक गर्व सँ भूमिका बढ़ेबाक बात स्वीकारैत अछि। करार-पक्ष, पैसा देनिहार, सेवा देनिहार आ वास्तविक स्वामी अलग होयबाक प्रमाणिक सीमा स्पष्ट होइत अछि। ओकर शब्द-चयन दस्तावेजक अर्थ प्रभावित कएने होयबाक सम्भावना जाँचयोग्य अछि, मुदा शब्दक प्रभाव स्वामित्व नहि। मृणालक नामसँ जुड़ल एक संकेत अगिला धन-प्रवाहक प्रश्न खोलैत अछि।

अध्याय ७५ • भोज, देवता, अपमान 10

भोजक भुगतान-द्वार, मध्यवर्ती खाताक सीमित सूचना, अंकीय परिसम्पत्तिक अपूर्ण टिप्पणी आ मृणालसँ पुरान पत्राचार पर जाँच होइत अछि। मृणाल उपस्थित रहि अपन वैध सेवा-प्रतिपूर्ति आ मित्रताक भूमिका स्पष्ट करैत अछि। शशांक एहि बेर मित्रक नामकेँ अपन पक्षक समर्थनक बदला स्वतंत्र तथ्यक रूपमे देखैत अछि। आदित्य अनुमानित धन-श्रृंखलाक प्रत्येक कड़ी प्रमाणसँ जाँचबाक आग्रह करैत छथि। अगिला सत्र फेर मकाऊक अतिथि-पहुँच आ जन्मदिनक मंचीय दाबी पर केन्द्रित होयत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७६ • जन्मदिनक मंच

जन्मदिनक मंच पर शशांक अपन 'विशेष पहुँच'क डींग हाँकने छल, जकरा मकाऊक यात्रा, बैठक-सूची आ प्रणालीक अनुमति-सारसँ मिलाओल जाइत अछि। अभिलेख ओकर दर्जा अतिथि भाषिक समीक्षक बतबैत अछि; भुगतान स्वीकृति, उपयोगकर्ता-अधिकार बदलब वा प्रणालीक स्वतंत्र नियन्त्रणक चिह्न नहि भेटैत। मृणाल मंचीय आत्म-प्रचारक गवाही दैत अछि, मुदा तकरा व्यापक अपराधक प्रमाण नहि बनबैत। शशांक विशेष प्रवेशक सुख आ वास्तविक अधिकारक दूरी स्वीकारैत अछि। अगिला चरण गोपनीय विधिक परामर्शक होएत।

अध्याय ७७ • भोज, देवता, अपमान 12

राघव भसीनक विधिक परामर्शक बाह्य समय-क्रम, शशांकक भाषिक सारांश आ अलग व्यापारिक सन्देश जाँचल जाइत अछि। राघव स्पष्ट करैत छथि जे ‘विधिक पक्ष साफ’ जेकाँ निरपेक्ष वाक्य हुनकर पेशागत परामर्शक ठीक प्रतिनिधित्व नहि। किछु अनुवाद-पंक्तिमे शशांकक कोनो त्रुटि नहि भेटैत अछि; ओ अनावश्यक आत्म-दोष आरोपित नहि करैत। भोजमे राघवक उपस्थिति सेहो वित्तीय निर्णयमे सहभागिता नहि बतबैत। प्रश्न आब कर-गुप्तचर शाखाक बदलैत सारांश दिस मुड़ैत अछि।

अध्याय ७८ • भोज, देवता, अपमान 13

निचला आयुक्तालयक मूल आपत्ति, बीचक मसविदा, अन्तिम ऊपरी सारांश आ व्यापारिक पक्षमे पहुँचल नरम शब्दावली एकत्र तुलना होइत अछि। निचला अधिकारी सावधानीक ह्रास पर प्रश्न उठबैत छथि; शशांक अपन मिलैत शैली आ स्मृतिक सीमा स्पष्ट करैत अछि। सुरक्षित पहुँच-सूचीमे ओकर प्रत्यक्ष सरकारी प्रवेश दर्ज नहि, मुदा केवल एहि आधार पर सूचना बाहिर गेल नहि वा गेल, निष्कर्ष सम्भव नहि। भोजक चमक, विधिक भय आ संस्थागत संशोधनक बीच कथा अनुपस्थित अभिलेखक महत्त्व पर पहुँचित अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७९ • समझौताक दरार 1

जाँचमे निचला आयुक्तालयक आपत्ति घटब, मुहरबन्द सामग्रीक सार्वजनिक रूपान्तर आ कथित आन्तरिक मिलीभगत लेल अपेक्षित दस्तावेज खोजल जाइत अछि। आदित्य आ अधिकारी बुझबैत छथि जे प्रमाण नहि भेटब आ प्रमाणक अस्तित्व असम्भव होयब अलग बात अछि। किछु आरोपक विरुद्ध सकारात्मक उपस्थिति-अभिलेखो भेटैत अछि। शशांक सीखैत अछि जे अनुपस्थित चिह्न तखने अर्थपूर्ण होइत अछि जखन तकर सामान्यतः उपलब्ध होएबाक अपेक्षा स्थापित हो। अदालत एहि विषयमे अगिला जिरह तय करैत अछि।

अध्याय ८० • समझौताक दरार 2

न्यायालय प्रवेश-नोंद, संशोधन-इतिहास, पहुँच-सूची आ मूल आपत्तिक क्रम देखैत अछि। सरकारी पक्ष अनुपस्थित कारण-टिप्पणी आ सम्भावित अनधिकृत सूचना-प्रसारक प्रश्न उठबैत अछि। शशांक अपन भाषा नरम करब, विशेष पहुँच बढ़ा-चढ़ा कऽ कहब आ प्रसिद्ध लोकक निकटता भुनाएब स्वीकारैत अछि। मुदा ओ बुझैत अछि जे वास्तविक प्रायश्चितक अर्थ प्रमाणहीन सभ आरोप अपन माथ लेब नहि। अदालत अभिलेखक रहबाक अपेक्षा आ खोजक सीमा पर बल दैत अछि। अगिला जाँच डिजिटल प्रतिलिपि दिस बढ़ैत अछि।

अध्याय ८१ • समझौताक दरार 3

पूरक समनपर शशांकक पुरान फोन आ संगणकक सीमित समयखण्डक डेटा देखल जाइत अछि। जाँचक केन्द्र ओकर ‘भीतरक पहुँच’क दाबी, कर-जाँचक संशोधन आ सार्वजनिक आरोपक संगति अछि। शशांक मानैत अछि जे अपन प्रभाव बढ़ा कऽ देखेबाक लेल ओ किछु सन्देश जानि-बुझि अस्पष्ट लिखने छल। मुदा उपलब्ध प्रतिलिपिक सीमा बाहर निष्कर्ष नहि निकालल जाइत। ‘अन्तिम लाभकारी स्वामी: सत्यापन शेष’ जेकाँ रिक्त स्थान देखिते ओकरा अपन पुरान अनुमान-प्रवृत्ति स्मरण होइत अछि।

अध्याय ८२ • समझौता कएल एजेंसी

आदित्य करार, विक्रेता-पंजी, स्वामित्व-घोषणा आ एजेंसीक अभिलेखीय क्रम जाँचैत छथि। किछु दस्तावेजमे अपेक्षित संलग्नक नहि भेटैत, मुदा एहि अभावसँ अपराध अथवा सम्पूर्ण निर्दोषता स्वतः सिद्ध नहि होइत। शशांकक पुरान ‘असली स्वामी हम बुझैत छी’ डींग सामने अबैत अछि। किछु भुगतानक समर्थनकारी कागज स्पष्ट आ किछुक अधूरा अछि। अध्याय संस्थागत समझौता मानबाक पहिने यथार्थ सत्यापनक अभाव, पंजीकरणक नियम आ उत्तरदायित्वक चरण अलग रखैत अछि।

अध्याय ८३ • समझौताक दरार 5

भुगतान-द्वार, मध्यवर्ती खाता, हवाला-सम्बन्धी प्रश्नचिह्न, डिजिटल सम्पत्ति आ मृणालक पुरान संदेश एकत्र जाँचल जाइत अछि। मृणाल प्रश्न करैत अछि जे शशांक मित्र चाहैत छल कि अपन कथाक सत्यापन-मुहर। वैध प्रतिपूर्ति स्वतंत्र रूपेँ दर्ज अछि। कथित आर्थिक संचालनक लेल अपेक्षित निर्देश, लाभ आ नियन्त्रणक चिह्न सभ अलग खोजल जाइत अछि। शशांक न मित्रक पक्षमे प्रमाण छोट करैत अछि, न शंकाक कारण ओकर नाम दोषक पर्याय बनबैत अछि। अगिला प्रश्न मकाऊक व्यापक पहुँचक दाबी अछि।

अध्याय ८४ • समझौताक दरार 6

मकाऊक विदेश-यात्रा, होटल, आगन्तुक-पास, बैठक आ सीमित प्रणाली-प्रवेशक सुरक्षित अभिलेख देखल जाइत अछि। शशांकक पुरान ‘भीतरक पटल देखलहुँ’ कथनकेँ ‘सर्वर चलौलहुँ’ नहि मानल जा सकैत। उपलब्ध चिह्न अतिथि भाषिक समीक्षाक अनुमति देखबैत अछि; व्यापक प्रशासनिक नियन्त्रणक दावा लेल आवश्यक अतिरिक्त निशान एखन नहि भेटैत। शशांक अपन विशेष पहुँचक लोभ मानैत अछि, मुदा भीतर गेल रहबाक अर्थ भीतरक स्वामी होयब नहि। अगिला प्रश्न कानूनी गोपनीयता आ सहभागिताक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८५ • समझौताक दरार 7

राघवक उपस्थिति, गोपनीय विधिक बैठकक बाह्य क्रम, शुल्क आ बादक व्यापारिक संदेश जाँचल जाइत अछि। शशांक मानैत अछि जे ‘वकील सहमत’, ‘सभ साफ’ जेकाँ अपन संक्षेप कानूनी सावधानी कम देखबैत छल। मुदा वैध विधिक सलाहकेँ अपराधक योजना मानबाक लेल स्वतंत्र परिचालन, लाभ, निर्देश अथवा साझा उद्देश्यक साक्ष्य आवश्यक अछि। गोपनीय सामग्री अनुमतिबिना नहि खोलल जाइत। शशांकक भाषिक जिम्मेदारी आ राघवक कानूनी भूमिका अलग राखल जाइत अछि। कथा फेर संस्थागत प्रतिरोधक प्रश्न दिस लौटैत अछि।

अध्याय ८६ • समझौताक दरार 8

निचला आयुक्तालयक मूल आरक्षण आ ऊपरी कर-गुप्तचर सारांशक पूरा संस्करण-क्रम, कार्य-वितरण आ बैठकक नोंद देखल जाइत अछि। किछु प्रश्न नरम कएल गेल, मुदा किछु जाँच-काज जारी रहबाक निशान सेहो भेटैत अछि। तेँ ‘सभ विरोध कुचलि देल गेल’ जेकाँ व्यापक दावा उपलब्ध सामग्रीसँ मेल नहि खाइत। शशांक स्वयं भाषा हलुक करबाक अपन कृत्य स्वीकारैत अछि, मुदा एहि आधार पर ककरो संस्थागत अपराध सिद्ध नहि करैत। सार्वजनिक समाचारक असमर्थित विस्तार अगिला परीक्षा बनैत अछि।

अध्याय ८७ • समझौताक दरार 9

आदित्य मुहरबन्द अभिलेख आ समाचारमे प्रकाशित आरोपक मूलभूत भेद जाँचैत छथि। एक सार्वजनिक शीर्षक विशिष्ट सरकारी सम्पर्क वा वित्तीय नियन्त्रणक दावा करैत अछि, मुदा अपेक्षित पहचानयोग्य स्रोत आ कार्यालयीय चिह्न पर्याप्त नहि भेटैत। निचला अधिकारी सेहो अपन मूल कथन समाचारमे बढ़ा-चढ़ा कऽ देल गेल रहबाक सीमा बतबैत छथि। शशांक अपमानक उत्तरमे दोसरक विरुद्ध असिद्ध आरोप नहि रचबाक निश्चय करैत अछि। अगिला सत्रमे मिथिलाक एक दोसर गामक जाँचकर्ता ओकर अपन तर्ककेँ उलटा कसौटी पर रखत।

अध्याय ८८ • दोसरा गामक जांचकर्ता

निचला आयुक्तालयक मिथिलावासी अधिकारी शशांक सँ कहैत छथि जे जकर तर्कपद्धतिसँ ओ अपन बचाव करैत अछि, ओही पद्धतिसँ ओकर अपन कथन जाँचल जाय। यदि शशांक सचमुच व्यापक वित्तीय निर्णायक छल, तऽ करार, स्वीकृति, लाभ, पहुँच आ निर्देशनमे कोन अपेक्षित चिह्न रहबाक चाही? अधिकारी अपन निष्कर्षक सीमा सेहो जाँचैत छथि। शशांक अनुभव करैत अछि जे गंगेशक पद्धति ओकरा भाषिक शक्ति देने छल, मुदा आब ओकर आत्म-विस्तारक छाया काटि रहल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८९ • समझौताक दरार 11

समनपर शशांकक ‘निर्णायक’, ‘भीतरक आदमी’ आ ‘हमरे बिना नहि होएत’ जेकाँ पुरान संदेश जब्त अभिलेखसँ मिलाओल जाइत अछि। ओ साफ स्वीकारैत अछि जे ओ अपन प्रतिष्ठा बढ़ाबय चाहैत छल। भाषिक समन्वयक रूपमे ओकर वास्तविक उपयोगिताक प्रमाण अछि, मुदा कथित व्यापक नियन्त्रणक चिह्न अलग जाँचल जाइत। किछु डिजिटल माध्यम अपूर्ण होएबाक कारण एहन प्रमाण सर्वथा नहि अछि, ई निष्कर्षो उचित नहि। शशांकक आत्म-प्रचार अभिलेखमे रहि गेल; तकर पाछाँ वास्तविक शक्ति कतय छल, प्रश्न जारी अछि।

अध्याय ९० • समझौताक दरार 12

करार, विक्रेता-पथ, मूल द्विभाषिक सारांश, बादक जोखिम-टिप्पणी आ लाभकारी स्वामित्व सत्यापनक माँग-पत्रक तुलना होइत अछि। शशांकक एक सामान्य भाषिक अनुमान बादक दस्तावेजमे अधिक निश्चित स्वामित्वक रूप धारण कएने होयबाक सम्भावना भेटैत अछि। ओ स्वीकारैत अछि जे मूल सारांश उपलब्ध ज्ञानसँ व्यापक छल, मुदा त्रुटिक उद्देश्य आ परिणाम अलग जाँचयोग्य अछि। अधिकारी ओकरा आत्मस्वीकृतिक सीमा सेहो राखब सिखबैत छथि। शब्द प्रमाण बिना शक्ति जेकाँ देखाइ सकैत अछि, मुदा वास्तविक नियन्त्रण नहि बनि जाइत।

अध्याय ९१ • समझौताक दरार 13

मध्यवर्ती खाताक जाँच, भुगतान-द्वार, हवाला आ डिजिटल सम्पत्तिसँ जुड़ल अभिलेख फेर देखल जाइत अछि। मृणालक वैध यात्रा, भोजन आ भाषिक प्रतिपूर्तिक पावती अलग राखल जाइत अछि। शशांकक पुरान सन्देशमे स्थानीय भुगतान सम्भारबाक बढाबल दावा भेटैत अछि, मुदा वास्तविक धनक नियन्त्रणक स्वतंत्र कड़ी निर्णायक रूपसँ स्थापित नहि। ओ मृणालकेँ बचेबाक लेल तथ्य नहि काटत आ दोषी देखेबाक लेल नाम नहि जोड़त। मित्रताक भरोसा आ प्रमाणक अनुशासन बीच तनाव बनल रहैत अछि।

अध्याय ९२ • दोस्ती सँ दुश्मनी

मकाऊक यात्रा, सीमित अतिथि-पहुँच आ शशांकक व्यापक दाबीक समेकित निर्णय-जाँच आरम्भ होइत अछि। मिथिलाक निचला अधिकारी पुरान ‘भीतरक’ वाक्यक सामने वास्तविक अनुमति-अभिलेख रखैत छथि। शशांक लोभ स्वीकारितो एहि शब्दसभक आधार पर दोषक असीम विस्तारक विरोध करैत अछि। किछु कठोर प्रश्न मित्रता टूटबाक अनुभूति जगबैत अछि, मुदा ओ बुझैत अछि जे प्रमाण कोनो व्यक्तिक पक्ष नहि लैत। अगिला चरण वकील राघवक गोपनीयता आ सम्भावित सहभागिताक निर्णय-सीमा अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९३ • दू नव्य न्याय 2

राघव भसीनक विधिक परामर्शक संरक्षित विषय-वस्तु आ तकर बाहरक समय, शुल्क, व्यापारिक संदेश आ बादक क्रिया अलग जाँचल जाइत अछि। शशांकक ‘विधिक पक्ष साफ’ ओकर अपन सारांश छल; ओकरा वकीलक अन्तिम कानूनी स्वीकृति मानल नहि जा सकैत। वास्तविक अपराध-सहभागिता साबित करबाक लेल विधिक मौनक बाहर स्वतंत्र संकेत आवश्यक अछि। शशांक स्वीकारैत अछि जे राघवक नाम उधार लऽ ओ अपन महत्त्व बढ़बैत रहल, मुदा एहि सँ न अपराध घटैत अछि, न अन्य व्यक्तिक दोष स्वतः बढ़ैत।

अध्याय ९४ • दू नव्य न्याय 3

निचला आयुक्तालयक आपत्ति, बीचक मसविदा, ऊपरक कर-सारांश, कार्य-वितरणक आदेश आ बैठक-नोंदक संयुक्त निरीक्षण होइत अछि। सावधानीक किछु पंक्ति हलुक भेल, जखन किछु सत्यापन-काज निरन्तर रहल। अधिकारी सेहो एकरे न सम्पूर्ण संस्थागत षड्यन्त्र, न पूर्ण शुद्ध प्रक्रिया कहि सरल करैत छथि। शशांक बुझैत अछि जे प्रमाणक एकहि धार अपने पक्ष आ विपक्ष दुनूमे लागू होएबाक चाही। ‘दू नव्य न्याय’क अन्तर निष्पक्ष निर्णयक अनुशासनमे कम होइत अछि।

अध्याय ९५ • दू नव्य न्याय 4

शशांक पर सार्वजनिक आरोप सभकेँ स्थापित तथ्य, सम्भावित अनुमान, असमर्थित विस्तार आ स्रोत-अनिर्णीत कथनमे बाँटल जाइत अछि। भोज, मकाऊ, मुहरबन्द कागज आ पुरान आत्म-प्रचारमे वास्तवमे की प्रमाणित अछि, तकर वर्गीकरण होइत अछि। शशांक मानैत अछि जे ओकर डींग सार्वजनिक भ्रमकेँ विश्वसनीय बनबैत छल, मुदा एहि कारण समाचारक सभ आरोप सत्य नहि। अपन त्रुटि नुका कऽ सम्मान बचेनाइ आ दोसरा पक्षक असिद्ध विस्तार चलि देनाइ दुनू अनुचित अछि। अगिला अध्याय एहि वर्गीकरणक अदालती परीक्षा अछि।

अध्याय ९६ • मिथ्या आरोप

अदालत शशांककेँ ‘विदेशी जुआ-जालक वित्तीय नियंत्रक’ कहल सार्वजनिक शीर्षकक आधार जाँचैत अछि। शशांक तथ्य-विरुद्ध, आधारहीन आ जानि-बुझि मिथ्या कथनक बीच कानूनी भेद राखैत अछि। ओ अपन वास्तविक डींग, नरम कएल भाषा आ समन्वयक काज नकारैत नहि, मुदा उपलब्ध प्रमाणसँ बेसी वित्तीय स्वामित्व स्वीकारितो नहि। न्यायालय उद्देश्यक अन्तिम निर्णय बिना स्रोत आ कथनक सीमा निर्दिष्ट करैत अछि। शशांकक आत्मबोध अछि जे अपन वास्तविक दोषसँ न छोट बनब, न अकारण पैघ।

अध्याय ९७ • दू नव्य न्याय 6

पूरक बयानमे जब्त डिजिटल सामग्रीक ‘हमर माध्यमे मुख्य लोक’ जेकाँ कथन फेर जाँचल जाइत अछि। किछु महत्त्वपूर्ण भाषिक संवाद शशांकक माध्यमसँ भेल, मुदा सभ व्यापारिक निर्णय ओकरा पर निर्भर नहि छल। अधिकारी निर्णयक मसविदामे व्यापक दाबी ‘असत्य सिद्ध’ कहबाक बदला उपलब्ध प्रमाणक सटीक सीमा लिखबैत छथि। शशांक अपन अतिशयोक्ति स्वीकारैत अछि, मुदा अन्य सम्भावित त्रुटि अनावश्यक रूपेँ नहि जोड़ैत। न्यायिक निर्णयक प्रत्येक वाक्यक भार स्वतन्त्र प्रमाण पर आधारित होयबाक पाठ मजबूत होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९८ • दू नव्य न्याय 7

सेवा-करार, विक्रेता-पंजीकरण आ ग्राहक-पहिचान प्रपत्र एके व्यापारिक सम्बन्धक अलग पक्ष देखबैत अछि। शशांक ‘वास्तविक स्वामी’क पुरान व्यापक दाबी अपन ज्ञानसँ बेसी रहल स्वीकारैत अछि। मुदा ओ निश्चित रूपेँ विपरीत तथ्य जानि-बुझि नुकौने छल, से अलग सिद्धिक विषय अछि। आदित्य आ मिथिलाक अधिकारी प्रत्येक नाम, हस्ताक्षर, लाभ आ अधिकारक चिह्न अलग जाँचैत छथि। भाषाक अर्थक सूक्ष्मता तखने न्यायोचित बनैत अछि जखन ओ विशिष्ट अभिलेख आ व्यक्ति-संबन्धसँ पुष्ट हो।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९९ • नव्य-न्यायक अंतिम परीक्षा

अन्तिम वित्तीय वर्गीकरणमे भुगतान-द्वार, मध्यवर्ती खाते, हवाला-सन्दर्भ, डिजिटल सम्पत्ति आ मृणालक ‘एम.के.’ आद्याक्षरक प्रश्न उठैत अछि। वैध प्रतिपूर्तिक अभिलेख भेटैत अछि, मुदा आद्याक्षरसँ व्यक्ति आ अपराध-संबन्ध सिद्ध नहि। शशांक अपन जोखिमपूर्ण आत्म-प्रचार आ जाँचयोग्य आर्थिक पृष्ठभूमिक वर्णन सहजहि हटेबय चाहैत अछि, मुदा प्रमाणसंगत कठोर वाक्य रहने दैत अछि। ओ मित्रक पक्षमे नियम नहि बदलैत। निर्णयक अन्तिम कसौटी ओकर प्रिय नाम आ अपन वास्तविक दोष दुनू पर समान प्रमाण-मानदण्ड लागू करब अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १०० • अनुवादकक निर्णय

निर्णयक दिन अदालत शशांकक वास्तविक भाषिक चूक, सीमाबाह्य पहुँच, आत्म-प्रचार, वित्तीय भूमिकाक आरोप आ दस्तावेजी अपूर्णताकेँ अलग-अलग स्तर पर देखैत अछि। किछु बात स्वीकारल अथवा स्थापित अछि; किछु दाबी स्वतंत्र पुष्टिक अभावमे सिद्ध नहि। मृणालक वैध प्रतिपूर्ति आ अस्पष्ट आद्याक्षरसँ दोष तय नहि कएल जाइत। आदित्य, राघव, मिथिलाक जाँचकर्ता आ मृणालसँ शशांकक सम्बन्ध नव परिप्रेक्ष्य पबैत अछि। ओ अन्तिम नोटमे लिखैत अछि जे अनुवादकक सही निर्णय अपन लाभ लेल शब्द मोड़ब नहि, प्रत्येक शब्दकेँ ओकर प्रमाणसंगत सीमामे रखब अछि। अन्त विजय-घोष नहि, कठिन आत्मस्वीकृति आ न्यायोत्तर शान्तिसँ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

WORK / कृति

05 जल-पाँजि

४८ अध्याय

अध्याय १ — कुसहा

१८ अगस्त २००८ कैं कुसहामे कोसीक पूर्वी तटबन्ध टूटबाक समाचार रामानुग्रह मिश्रक दैनिकीमे क्रमशः फोन, अस्पष्ट सूचना आ समयसहित दर्ज होइत अछि। जल-संसाधन विभागमे कार्यरत हुनकर पुत्र मोहन कटानक पूर्वसूचना, कागज बचएबाक आवश्यकता आ गाम खाली करबाक संकट विषयमे बात करैत अछि। रामानुग्रह पुरान नक्शा, १९६३क सर्वे-सूची आ घरक पाँजि जाँचैत छथि, मुदा सरकारी निर्णयक अनिश्चितता बनले रहैत अछि। लोक घर छोड़ि रहल अछि; ओ पोथी ऊपर राखि दैनिकी बन्द करैत छथि। अन्तिम लेखमे पोथीकैं ‘सुरक्षित’ मानल गेल अछि, मुदा पछाति एहि शब्दक नीचाँ लाल रेखा खींचल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २ — पोथीक गट्ठर

१९ अगस्त केँ नाविक भोला सहनी बाढ़िक जलसँ निकालल एक अज्ञात, भीजल पाँजि-गट्ठर रामानुग्रहक घर पहुँचबैत अछि। गट्ठरमे ताड़पत्र, पुरान कागज, डोरी, सिक्का, विवाह-जन्म सम्बन्धी पुर्जा आ अनेक क्षतिग्रस्त पन्ना अछि। रामानुग्रह ककरो अनुमानकेँ तथ्य नहि बनबैत, वस्तुक प्राथमिक सूची आ संरक्षणक उपाय दर्ज करैत छथि। पन्ना सुखबाक क्रममे तीन नाम आ हुनकर आगाँ रिक्त भाग प्रकट होइत अछि। भोला केँ गट्ठर प्राप्तिक साक्षी लिखल जाइत अछि। एतयसँ मूल प्रश्न उठैत अछि—जल अक्षर मेटौलक, कि पन्नाक इतिहासमे पहिनहिसँ कोनो अनकहल बात छल?

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ — पँजीकारक विधि

भीजल अभिलेख पढ़बाक पहिने रामानुग्रह पँजीकारक अपन कार्यविधि सात शीर्षकमे स्पष्ट करैत छथि—पहिचान, मूल, ग्राम, अधिकार, सम्बन्ध, साक्ष्य आ अभिलेख। ओ बतबैत छथि जे स्मृति, मौखिक कथन, सरकारी कागज आ पुरान पाँति सभक प्रमाण-मूल्य समान नहि; अस्पष्ट ठाम अनुमानक स्थान नहि। विवाह-जाँचमे मातृक सम्बन्धक महत्त्व, गामक बदलैत नाम आ मूल प्रविष्टि नहि मेटबाक अनुशासन पर बल देल गेल अछि। एहि नियमक कसौटी पर तीन नामक रिक्ति फेर देखल जाइत अछि। पुरान क्षति जलक कारणेँ भेल, ई मान्यता स्थगित होइत अछि; अपन परिवारक अभिलेख जाँचैत समय निष्पक्ष रहबाक कठिनाइ सेहो उद्घाटित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४ — कोसी — १

एहि अध्यायमे कोसी स्वयं प्रथम पुरुषमे बोलैत अछि। नदी अपन बहाव, बालू, गाद, पुरान धार, कछेर आ तटबन्धक दबावक वर्णन करैत मानव-निर्मित सीमानामे अपन अस्थिर स्थान देखबैत अछि। मनुष्य जे भूमि, वंश, जाति आ अधिकारक स्थिर लेखा बनबैत अछि, नदी ओकर भौतिक चिह्नकेँ समय-समय पर ढाँकैत वा फेर प्रकट करैत अछि। नदी कोनो नामक न्याय नहि करैत; ओकरा केवल ढलान आ जलक दबाव ज्ञात अछि। एहि स्वरमे कुसहाक संकट आ भीजल पाँजिक अनिश्चित अक्षर एकहि परिदृश्यमे अयबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ — तीन नाम

रामानुग्रह भीजल पन्नामे तीन नाम पढ़ैत छथि—श्रीधर मिश्र, रत्नेश्वर झा आ जयनारायण मिश्र। हुनकर पिता-पितामह, मूल आ ग्रामक जतेक अंश स्पष्ट अछि, ततेक नकल कयल जाइत अछि; आगाँक वंशक्रम तीनू ठाम अलग-अलग रूपेँ अपूर्ण अछि। कागजक धब्बा, खरोंच आ रिक्ति जाँचि ओ जलक क्षति, रगड़ अथवा जानि-बुझि कऽ मेटेबाक सम्भावनाक बीच निर्णय स्थगित करैत छथि। प्रति अस्थायी राखल जाइत अछि। अध्याय प्रमाणक कमीकेँ कथा बनाकऽ भरबाक प्रवृत्ति विरुद्ध पँजीकारक सावधानी देखबैत अछि।

अध्याय ६ — मोहनक फोन

राहत-शिविरसँ मोहनक फोन आ सन्देश रामानुग्रहक चिन्ताकेँ दुइ दिशामे बाँटैत अछि—बेटाक कुशलता आ तटबन्धक प्रशासनिक उत्तरदायित्व। शिविरमे विस्थापित परिवारसभक नाम, ग्राम आ टोल अलग-अलग सूचीमे मेल नहि खाइत अछि। मोहन घर नहि छोड़बाक, स्वच्छ पानि पीबाक आ दवा रखबाक सलाह दैत अछि; पिता कुसहाक क्षेत्रमे ओकर विभागीय भूमिकाक प्रश्न पुछैत छथि। मोहनक उत्तर सीमित आ आंशिक अछि। दुनू बीच ‘विचार प्रमाण नहि’ आ ‘सभ तथ्य कागज पर नहि होइत’क असहमति उभरैत अछि। घटनाक तथ्य आ पारिवारिक आशंका अलग रखबाक प्रयास अध्यायक केन्द्र अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७ — कैम्प

सुभाषक आग्रह पर रामानुग्रह विद्यालयमे बनल बाढ़ि-राहत शिविर जाइत छथि। ओतय परिवार-पंजीकरण आ वितरणक रजिस्टरमे एकहि गामक अलग नाम, बिना कागजक विस्थापित लोक आ छूटल परिवारक समस्या सामने अबैत अछि। पँजीकार अपन पुरान ग्राम-सूची सँ उच्चारण आ ठाम बुझबामे सहायता करैत छथि, मुदा सरकारी पात्रता प्रमाणित करबाक दावा नहि करैत छथि। मोहन आ पिता देखैत छथि जे राहतक सूचीमे नाम छूटब तत्काल भोजन वा सहायता छूटबाक कारण बनि सकैत अछि। घर घुरि रामानुग्रह पूछैत छथि—‘नाम नहि भेटब’ आ ‘नाम नहि लिखल जाएब’ की समान बात अछि?

अध्याय ८ — मेटाओल पाँति

सुखैत पन्नाक बारीक परीक्षणसँ रामानुग्रहकेँ स्पष्ट होइत अछि जे श्रीधर मिश्रक आगाँक भाग मात्र भीजल नहि, कागजक सतह घिसि मेटाओल गेल अछि। पँजीक दू तिरछा चिन्ह, अक्षर-शैली, अङ्क आ संशोधनक तुलना हुनकर पितामहक पिताक हस्तलिपिसँ प्रबल मेल देखबैत अछि। रत्नेश्वर आ जयनारायणक रिक्तिक कारण अलग भेटैत अछि। मोहनकेँ जाँच देखाओल जाइत अछि, मुदा उद्देश्य निश्चित नहि कहल जाइत। ‘संशोधन’ आ ‘उच्छेदन’क भेद उभरैत अछि। अभिलेखमे मेटेनिहार हाथ अपनहि वंशसँ जुड़ल सम्भावना कथा केँ पारिवारिक प्रश्न बना दैत अछि।

— — —

अध्याय ९ — धरती हिलल

कथावाचक १५ जनवरी १९३४क भूकम्पक सम्बन्धमे अलग-अलग बुजुर्गक स्मृति प्रस्तुत करैत छथि। पितामहक स्मृतिमे लोटाक खसबाक ध्वनि अछि, पितामहीक स्मृतिमे घंटी आ गोहाल, बुधन सदाक कथनमे साझा खुला खेतमे राति काटैत विविध जातिक लोक। भूकम्पक पछाति घर, गल्ली आ टोलक स्थान बदलल, मुदा सामाजिक असमानता नहि मेटायल। रामानुग्रह स्मृति आ अभिलेख दुनूकेँ अपूर्ण मानैत छथि। अध्यायक अन्त संकेत दैत अछि जे १९३४मे भूकम्पक अतिरिक्त एक एहन घटना भेल जकर विषयमे गामक बुजुर्ग मौन रहलाह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १० — साक्षी एक: पुरोहित

पहिल साक्षी हरिनारायण झा पुरोहित १९३४क फुलझरी सम्बन्धी प्रसंगकेँ विधिवत् विवाह मानब अस्वीकार करैत छथि। हुनकर अनुसार मन्त्र, अग्नि, कन्यादान, कुल-अनुमति आ पाँजि-अधिकार अनुपस्थित छल; मुदा फुलझरी अपन इच्छा प्रकट कयने छलीह, ई बात हुनका कथनमे उभरैत अछि। पुरोहित उपस्थितिक समय, देखल वस्तु आ अपन भूमिकाक सीमा विषयमे अनेक असंगति रखैत छथि। रामानुग्रह हुनकर आत्म-समर्थन आ प्रत्यक्ष अनुभवकेँ अलग-अलग दर्ज करैत छथि। फुलझरीक कथित प्रश्न—‘पाँजिमे हमर इच्छा कतय लिखल अछि?’—एहि साक्ष्यक नैतिक केन्द्र बनैत अछि, मुदा मूल शब्द प्रमाणित नहि।

अध्याय ११ — साक्षी दुइ: भौजी

फुलझरीक पैघ भौजी कमला देवी १९३४क घटनाकेँ रसोई, चूल्हि, थारी, तेलक शीशी आ घरक दैनिक क्रमक आधार पर याद करैत छथि। हुनकर अनुसार फुलझरी साँझसँ पहिने घरसँ निकललीह, देवस्थानक प्रसंग पछाति घुरि कऽ जेष्ठ पुरुषसभक सोझाँ अपन निर्णय फेर कहलीह, आ रातिक पछिला भागमे दृष्टिसँ ओझर भऽ गेलीह। कमला देवी फुलझरीक निर्णयसँ सहमत नहि छलीह, तथापि प्रत्यक्ष देखल बात बदलय चाहैत नहि छलीह। घरक पुरुषसभक क्रोध आ हुनकर ‘भोर धरि रुकू’ सलाहसँ अनिष्टक आशंका झलकैत अछि। कथन निश्चयात्मक अपराध-प्रमाण नहि दैत।

अध्याय १२ — कोसी — २

दोसर कोसी-अध्यायमे नदी भूकम्प, धरतीक महीन दरार, माटिक ढलान आ वर्षाक बीच दीर्घ सम्बन्ध देखबैत अछि। एक घटना मनुष्यक स्मृतिमे अलग-अलग क्रममे बचैत अछि, मुदा धरतीक भीतर बदलल तहक प्रभाव अगिला वर्षसभमे फैलैत रहैत अछि। पुरोहितक शास्त्रीय भाषा, भौजीक घरेलू स्मृति आ खेतिहरक देहगत अनुभव परस्पर भिन्न माध्यम बनैत अछि। नदीक स्वर जतय कागज एक तिथि खोजैत अछि, ओतय भूगोलक अनेक तिथि होयबाक बोध करबैत अछि। अन्तमे खेत जोतैत हाथक साक्ष्यक ओर संकेत कयल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३ — साक्षी तीन: हरवाह

तेसर साक्षी बुधन सदा, मुसहर टोलक हरवाह, अपन खेत-मजूरीक अनुभवक भाषा मे फुलझरी आ जगेसर सदाक सम्बन्धक बात कहैत छथि। हुनकर अनुसार दुनू संग रहबाक निश्चय कयने छलाह; बादमे गाममे ‘दुनू भागि गेल’ आ ‘जगेसर नेपाल चलि गेल’ सन परस्पर-विरोधी कथा फैलल। बुधन रातिमे एक रक्तसिक्त देह देखबाक बात कहैत छथि, मुदा देहक पहिचान आ मारनिहार प्रत्यक्ष प्रमाणित नहि करैत। ओ नामक प्रचलित सामाजिक स्वामित्व पर प्रश्न उठबैत छथि—कागज केवल मालिकक किएक? रामानुग्रह एहि गवाहीक सीमा आ अनकहल पक्ष सुरक्षित रखैत छथि।

अध्याय १४ — साक्षी चारि: पँजीकार

ई अध्याय पारम्परिक गद्यक बदला १९३४क विवादित पँजी-पृष्ठक रूपमे रचल अछि। मूल अभिलेखमे श्रीधर मिश्रक कन्या फुलझरी, जगेसर सदा संग गृहस्थ-सम्बन्धक दावा, विवाह-विधि पर मतभेद आ रातिक अनिष्टक सूचना दर्ज छल। परिवारक सामाजिक प्रतिष्ठा आ अन्य सन्तानक विवाह-विवादक आशंकासँ सम्बन्धक प्रविष्टि हटेबाक दबाव बनैत अछि। क्रमशः पहिल, दोसर आ तेसर लेख घिसल जाइत अछि; फुलझरीक नाम आ जगेसरक उल्लेख मुख्य पाँतिसँ अनुपस्थित भऽ जाइत अछि। पछिला स्वच्छ नकलमे घर्षणक इतिहासो नहि बचैत। अभिलेख स्वयं नामक योजनाबद्ध विलोपनक प्रक्रिया देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ — जे लिखल नहि गेल

रामानुग्रह पुरोहित, कमला देवी, बुधन सदा आ पँजी-पृष्ठ—चारू स्रोत एक संग राखि समय, वस्तु, उपस्थिति, इच्छा आ अनिष्टक कथनसभमे मेल-विरोधक सूची बनबैत छथि। थारी, लाल सूत, घरक ओसार, देवस्थान, जगेसरक नाम आ रातिक आवागमन अलग-अलग साक्ष्यमे भिन्न अर्थ लैत अछि। फुलझरी अपन निर्णय कहलनि, ई अनेक स्रोतसँ उभरैत अछि; मुदा विवाहक विधिक स्थिति, रातिक घटना, मृत्यु वा पलायन निष्कर्षरूपेँ सिद्ध नहि होइत। अध्याय अवशिष्ट प्रश्नक ठाम खाली छोड़ैत अछि आ अभिलेखक मौनकेँ छिपेबाक बदला देखबैत अछि।

अध्याय १६ — १९३४क बाढ़ि

१९३४क भूकम्पक किछु मास पछातिक बाढ़ि दक्षिणक मुसहर टोलक ठाम बदलि दैत अछि। रामानुग्रह घर-क्षतिक सूची, अन्न-सहायताक बहि आ लगानक नकल मिलबैत छथि। पहिने जतय ‘मुसहर टोलीक बास’ लिखल छल, पछिला राजस्व-पत्रमे ‘बालूमय परती’ आबि गेल; विस्थापित लोकक परिवार परिचय सेहो बदलल। जगेसर आ हुनकर परिवारक नामक अनुपस्थितिक सामाजिक परिणाम उभरैत अछि। नदीक जलक भौतिक मेटेनाइ आ पँजीकारक हाथसँ पाँति खुरचबाक जानि-बुझि कयल काज अलग कहल गेल अछि। स्थल-इतिहासक क्षरण वंशक अभिलेखसँ जुड़ैत अछि।

— — —

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७ — सन्धि

१९५४मे भारत–नेपाल कोसी-सन्धिक खबरि गाममे अनेक अप्रमाणित रूपमे पहुँचैत अछि। सर्वेक्षणकारी लोक खेत, पोखरि, टोला आ पुरान धारक माप लैत छथि; लाल खूँटी, रेखा आ नवल कागज लोकक रोजमर्राक स्थानपर प्रवेश करैत अछि। युवा रामानुग्रह अपन पँजी-पठनक दक्षताक कारण नाम, ग्राम आ पुरान बसावटक प्रश्नमे जुड़ैत छथि। अलग-अलग स्रोतक खबरि, लोकक भूमि-संबन्धी चिन्ता आ सरकारी योजनाक भाषा परस्पर भिड़ैत अछि। अध्याय देखबैत अछि जे एक शब्द अथवा टोला नक्शामे कतेक आसानीसँ स्थगित भऽ सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८ — नक्शा

सर्वेक्षणक पछाति मुखियाक ओसार पर नक्शा आ राजस्व-बहि खोलल जाइत अछि। रामानुग्रहकेँ स्थानीय ग्रामनाम पढ़बाक सात दिनक पारिश्रमिकवला काज भेटैत अछि। पुरान नक्शाक नाम, राजस्व-सीमा, जीवित बस्ती आ लोकक मुँहक उच्चारण सभक मेल सहज नहि अछि। कर्मचारी ‘पुरान बसावट’ सन सामान्य पद लिखैत छथि, जाहिमे खास टोलक पहचान छूटि सकैत अछि। एही सात दिनमे रामानुग्रह राज्यक लेखा बनबाक विधि निकटसँ देखैत छथि। अध्यायक अन्तमे ई अन्तर स्पष्ट अछि जे सरकारी नक्शामे जे दर्ज होइत अछि से पँजीक सम्पूर्ण जानकारी नहि, आ पँजी नक्शाक सम्पूर्ण दुनिया नहि।

अध्याय १९ — कोसी — ३

तेसर नदी-स्वरमे कोसी सर्वेक्षणक सीधी रेखा आ धरतीपर उठैत तटबन्धक बीचक सम्बन्धक वर्णन करैत अछि। बाँध बनबाक संग ‘भीतर’ आ ‘बाहर’क नवल सामाजिक भूगोल बनैत अछि; खेत, घाट, विवाहक बाट, मवेशीक गमन आ शवयात्रा धरि बदलैत अछि। नदी स्वयं प्रशासनिक सीमा नहि पढ़ैत; ओ माटिक नमी, अवरोध, जलनिकास आ दबावक प्रभाव देखबैत अछि। तटबन्ध लोककेँ सुरक्षाक भरोसा दैत अछि, मुदा जलक संचय, पुरान धार आ बदलैत ढलान पर स्थिरता पूर्ण नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २० — भीतरका गाम

१९५८क आसपास तटबन्धक बीच पड़ल गामसभ ‘भीतरका गाम’ कहल जाए लगैत अछि। पाँच गामक लोक रामानुग्रह लग प्रशासनक आवेदन लिखएबाक लेल अबैत छथि। गृहस्थ, खेतिहर मजदूर आ भूमिहीन परिवारक हित सरकारी कोष्ठमे समान रूपसँ नहि समाइत। कार्यालय, प्रपत्र, अग्रसारण आ अलग विभागक काजक बीच लोकक वास्तविक कठिनाइ लटकल रहैत अछि। बुधन सन मजदूरक बसावट आ रोजीक प्रश्न कागजमे सहज स्थान नहि पबैत अछि। अन्तमे फाइल अपन सरकारी मार्गें निकसैत अछि, मुदा तटबन्धक भीतरक गाम ओहि ठामे रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१ — दुइ मिथिला

भीमनगरक बैराजक निर्माणक समय सप्तरीक गाममे ठहरल विवाहक बरियात सीमा पर रोकल जाइत अछि। पँजीक आधार पर वर-कन्याक वंश-मिलान स्पष्ट अछि, मुदा सीमा-अधिकारीक प्रश्न विवाहक नाता नहि—बरियातक पेटीमे राखल वस्तु, देश आ आवागमन सम्बन्धी अछि। रामानुग्रह विवाहक कागजक अतिरिक्त सामानक सूची बनबैत छथि। विवाह सम्पन्न होइत अछि, परन्तु भारत आ नेपालक प्रशासनिक लेखन नातेदारीकेँ दोसर प्रकारेँ वर्गीकृत करैत अछि। एहि अनुभवसँ ‘दुइ मिथिला’क सांस्कृतिक एकता आ राज्यीय विभाजनक तनाव स्पष्ट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २२ — विवाह

रामानुग्रहक अपन विवाह शारदा झा संग ठहरैत अछि। एखन पँजीकार स्वयं विवाहक पक्ष छथि, तेँ पितामह निर्देश दैत छथि जे सम्बन्धक अन्तिम जाँच आ प्रवेश दोसर पँजीकार करथिन। पत्राचार, मूल-ग्राम, मातृक सम्बन्ध, निषेध आ साक्षीक सावधानीक संग विवाह सम्पन्न होइत अछि। अध्यायक एक भाग विवाह-पाँजिक औपचारिक प्रविष्टिक रूपमे प्रस्तुत अछि। अन्तमे नवविवाहित दुनू जनक कोठलीक संकोचपूर्ण मौन दर्ज अछि। ई अध्याय अभिलेखीय औपचारिकता आ सम्बन्धक जीवित, निजी क्षणक अन्तर देखबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २३ — अकाल १९६६

१९६६क अकालक वर्णन रामानुग्रह वर्षाक सरकारी आँकड़ा नहि, घरक व्यय-बहि सँ करैत छथि। चाउर, दालि, घी, तेल, गुड़ आ नूनक मात्रा घटैत अछि; बनियाँक उधार बढ़ैत अछि; चारा, बीआ आ अगिला रोपनीक चिन्ता एक संग अबैत अछि। चारि वर्षक मोहन द्वारा नून खसा देलापर शारदा माटिसँ साफ नून सेहो बटोरि रखैत छथि। ई छोट घटना अभावक दैनिक कठोरता देखबैत अछि। पँजीमे जन्म-विवाहक पाँति चलैत रहैत अछि, मुदा अकालक वास्तविक असर व्यय-बहि आ भानसक वस्तुमे दर्ज होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २४ — इन्जीनियर बाबू

सन् १९६२मे मोहनक जन्मक दिन घरमे दुइटा कागज पहुँचैत अछि—शारदाक प्रसव लेल आवश्यक वस्तुक पुर्जा आ तटबन्धक रक्षण-मरम्मतिक सरकारी निविदा। रामानुग्रह एक कात प्रसवक चिन्ता करैत छथि, दोसर कात माटि, बोरा, बोल्डर, ठीका आ मापनक शब्द पढ़ि सुनबैत छथि। प्रसव सफल होइत अछि आ मोहनक नाम वंश-पाँतिमे चढ़ैत अछि। समकालीन तटबन्ध-मरम्मत केर कार्यादेश अलग कागजमे रहैत अछि। पछाति मोहन अभियन्ता बनत, ई भविष्यक तथ्य कथावाचक स्मरण करैत छथि; तत्काल दुनू घटनाकेँ कारण-संबद्ध नहि कहल गेल अछि।

अध्याय २५ — चुप्पी

‘चुप्पी’ मे कथाक स्थापित अभिलेखीय स्वर बदलि एक स्त्री-देहक मौन, संवेदनात्मक अनुभव सामने अबैत अछि। भूकम्पक पछातिक माटि, देबालक चिरा, चूल्हिक धुआँ, देहक पीड़ा, घैल, साड़ी, बाली, कंघी आ साँझक स्पर्श क्रमशः अंकित अछि। एतय घटना विषयक कोनो स्पष्ट स्वीकारोक्ति वा निष्कर्ष नहि; दिनक गति देहक ताप, श्रम, भय आ मौनक माध्यमेँ बनैत अछि। अध्याय ओ अनुभवक क्षेत्रकेँ स्थान दैत अछि जे पँजीक मूल, ग्राम अथवा अधिकारवला कोष्ठमे सामान्यतः दर्ज नहि होइत।

अध्याय २६ — कोसी — ४

चौठम कोसी-स्वर धरतीमे दबायल राख, हड्डी, दाँत, ईंट आ गादक तहक विषयमे बोलैत अछि। नदी वस्तुक भार, आकार आ प्रवाहकेँ बुझैत अछि, मुदा मानवीय पहिचान, अपराध वा निर्दोषताक निर्णय नहि करैत। बालूसँ उघरल अस्थि मनुष्यकेँ पुरान स्थल आ कथनक जाँच दिस फेर घुरबैत अछि। एहि स्वरमे ‘देहक अवशेष’ आ ‘नामक अपूर्ण अभिलेख’ बीच प्रश्नक सम्बन्ध बनैत अछि; किन्तु नदी स्वयं कोनो हड्डीकेँ फुलझरी वा जगेसरक नाम नहि दैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ — अनुराधाक स्वर-सन्देश एक

दिल्लीक अस्पतालमे राति-पारीक बीच अनुराधा अपन दादाकेँ पहिल स्वर-सन्देश पठबैत छथि। ओ रामानुग्रहक स्वास्थ्य, दवा, भोजन आ भीजल पन्ना छूबाक सावधानीक चिन्ता करैत छथि। अस्पतालक रजिस्टर, औषधि-पत्र, रोगीक नाम, आपात सम्पर्क-संख्या आ परिवारक प्रतीक्षा सँ हुनका अपन दादाक पाँजि-पद्धतिक एक नवल साम्य देखाइत अछि। ओ घर आबि पुरान तीन नामक बात सुनबाक इच्छा व्यक्त करैत छथि। सन्देशमे परिवारक स्नेह आ अभिलेखक जिम्मेवारी एक संग अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २८ — देह आ जाति

रामानुग्रह जाति, विवाह-अधिकार आ देहक अनुभव विषयमे विचार करैत छथि। पँजीमे जन्म, पिता, पति, वंश आ वैवाहिक पात्रता लिखल जाइत अछि, मुदा प्रसव, श्रम, घाव, इच्छा आ देहक निजी अनुभव प्रायः बाहर रहैत अछि। अध्याय २५क मौन स्त्री-अनुभव एहि अभावक समांतर उपस्थित अछि। श्रीधरक मेटाओल पाँति अपन वंशक हाथसँ जुड़ल देखबापर कथावाचकक निष्पक्षताक परीक्षा तीक्ष्ण होइत अछि। ओ साक्ष्यक सात बिन्दु पृथक रखैत छथि—पन्नाक क्षति, स्याही, हस्तलेख, नकल, मौखिक कथन, हिंसाक संकेत आ अस्थिक ठाम—मुदा अन्तिम निष्कर्ष स्थगित।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २९ — स्वर-सन्देश दुइ

दोसर स्वर-सन्देशमे अनुराधा मोहन पठाओल छायाचित्रसँ श्रीधर, फुलझरी आ जगेसरक नाम देखलाक बात कहैत छथि। ओ दादा सँ चारि स्पष्ट प्रश्न करैत छथि—फुलझरीक पारिवारिक स्थान, जगेसर संग सम्बन्ध, हरिनारायणक भूमिका आ पाँति मेटेबाक आधार। हुनका जिज्ञासा जाति-नियमक पुनर्व्याख्या नहि, परिवार द्वारा एक स्त्रीक नामकेँ इतिहाससँ बाहर करबाक उत्तरदायित्व अछि। ओ स्वेच्छासँ चुप रहबाक अधिकार आ दोसर द्वारा थोपल मौनमे अन्तर करैत छथि। रामानुग्रहक लम्बा अनुत्तरित मौन आब नवल पीढ़ीक प्रश्नक सोझाँ अछि।

अध्याय ३० — हड्डी

२००८क बाढ़िक जल उतरला पर राहतक कच्ची बाट लग मजदूरसभकेँ माटिसँ अस्थिक टुकड़ा भेटैत अछि। पुलिस, स्थानीय साक्षी आ चिकित्सकीय जाँचक प्रारम्भिक प्रक्रिया ठाम, दूरी, माटि, तिथि आ वस्तुक क्रम सुरक्षित करैत अछि। रामानुग्रह पुरान मुसहर टोलक नक्शा लऽ पहुँचैत छथि; स्थलसँग आंशिक मेल भेटैत अछि, मुदा देहक पहिचान अज्ञात अछि। मानव-अस्थि होयबाक सम्भावना कहल गेल अछि, परीक्षण शेष अछि। फुलझरी वा जगेसरक नाम जोड़बाक लेल प्रमाण नहि। नदीसँ उघरल वस्तु पुरान विवादकेँ फेर जगबैत अछि, समाधान नहि दैत।

अध्याय ३१ — मोहनक स्वीकार

अस्थि भेटलाक पछाति मोहन अपन पिता लग विभागीय पुरान फाइल आ मापन-पुस्तिकाक नकल लऽ अबैत अछि। ओ २००७क तटबन्ध-रक्षणक काजमे वास्तविक मात्रासँ भिन्न मापन दर्ज करबाक आ अनुचित नकद स्वीकार करबाक बात स्वयं कबूल करैत अछि। एहि धनक किछु भाग घरक ऋण आ अनुराधाक पढ़ाइमे खर्च भेल, मुदा खर्चक प्रयोजन गलत प्रविष्टिक तथ्य नहि बदलैत। रामानुग्रह हस्ताक्षर आ कथन लिखैत छथि, स्वतन्त्र सत्यापनक शेष आवश्यकता सेहो दर्ज करैत छथि। ई स्वीकार १९३४क फुलझरी–जगेसर प्रसंगक उत्तर नहि; ई मोहनक अपन हस्ताक्षरवला अलग उत्तरदायित्व अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३२ — जकर नाम नहि

मोहनक स्वीकारक कागज आ पुरान मेटाओल वंश-पाँति जाँचि रामानुग्रह एक नवल हरियर जिल्दवाली बहि खोलैत छथि—‘प्रति-पाँजि’। ई मूल पाँजिक नकल नहि, ओकर विरुद्ध नवल निर्विवाद इतिहास सेहो नहि; एतय मूलमे छूटल नाम, साक्ष्य, प्रश्न आ रिक्ति लिखल जाएत। श्रीधरक खुरचल पाँति आ हरिनारायणक हस्तलेख-साम्य, विवाहक विवादित स्थिति, अस्थिक अज्ञात पहिचान आ मूल स्रोतक सीमा पृथक दर्ज होइत अछि। प्रति-पाँजि मूल अभिलेखक एकमात्र अधिकारकेँ प्रश्न करैत अछि, बिना अप्रमाणित कथाकेँ सत्य घोषित कयने।

अध्याय ३३ — मस्कट

अनुराधा दिल्लीक नर्सिंग-कामक वेतन, ऋण, आवास आ व्ययक हिसाबसँ मस्कटमे रोजगार खोजबाक निर्णय लैत छथि। भर्ती-अभिकर्ताक शुल्क, अनुबन्ध, अस्पतालक नाम, सरकारी पंजीकरण, पासपोर्ट आ यात्रा-पत्रक सूक्ष्म जाँच करैत छथि। मस्कट पहुँचलाक पछाति परिवारकेँ मात्र ‘हम पहुँचि गेलहुँ’ आ ‘कागज सभ हमर लग अछि’ कहि सन्देश पठबैत छथि। फुलझरी सम्बन्धी पुरान प्रश्न आधामे रुकि जाइत अछि। परदेसक यात्रा व्यक्तिगत आयक अवसर अछि, मुदा नवल प्रशासनिक अभिलेख आ पुरान पारिवारिक मौन सँ घेरल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३४ — कोसी — ५

पाँचम नदी-अध्यायमे कोसी गामक खाली होइत घर, बाहरी रोजगार, बन्द दुआर आ घाटपर घटैत आवागमनक साक्षी जकाँ बोलैत अछि। पंजाब, दिल्ली, काठमाण्डू आ मस्कट सन दूर ठामक श्रम बैंकक रकम, दवा, छत आ विद्यालय-शुल्क बनि गाममे पहुँचैत अछि। मुदा धन पहुँचब आ देह घुरब एक वस्तु नहि। फोन, समयक अन्तर, परदेसमे काम आ घरक प्रतीक्षा नदीक किनारक नवल जीवन रचैत अछि। पासपोर्ट पर स्थायी पता रहलो पर परिवार वास्तविक रूपेँ अनेक देशमे बँटल अछि।

अध्याय ३५ — हम सभ

‘हम सभ’ एकक पात्रक बदला सामूहिक प्रवासी-स्वर अछि। श्रमिक, नर्स, चालक, सेवा-कर्मी आ बाहर गेल परिवारक लोक अपन-अपन प्रस्थान, रोजगार, ऋण, पठाओल धन, साझा कोठली आ लौटबाक कठिनाइ कहैत छथि। गाममे रहि गेल स्त्री, वृद्ध, बालक आ अशक्त देहक बढ़ल श्रम सेहो एहि कथामे शामिल अछि। प्रवास किछु घरकेँ आर्थिक सुरक्षा आ शिक्षा दैत अछि, मुदा दूरी, अनुपस्थिति आ विलम्बित शोक सेहो बनबैत अछि। अन्तमे ‘हम सभ’ शब्द गेल, बचल, घुरल आ प्रतीक्षा करनिहार सभकेँ समाहित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३६ — गाम जे खाली भेल

२०१६मे रामानुग्रहकेँ पूर्वी टोलक एक बन्द घरसँ पुरान वंश-सूची निकालबाक काज भेटैत अछि। मालिक परिवारक लोक सूरत, दिल्ली आ नेपालमे बसल अछि। घरक बासन, कपड़ा, चिट्ठी, बैंक-पर्ची, मस्कटक धन-प्रेषण, तसवीर आ सन्दूक एकाधिक पीढ़ीक जीवनक चिह्न रखैत अछि। निजी वंश-सूचीमे एक स्त्रीक नैहर-ग्राम भेटैत अछि जे मुख्य पँजीमे अनुपस्थित छल। रामानुग्रह आवश्यक कागजक प्रति लैत छथि, घरक निजी वस्तु व्यवस्थित राखि ताला बन्द करैत छथि। घरक ‘खाली’ होयब ओकर समस्त इतिहास मेटि देब नहि अछि।

अध्याय ३७ — स्वर-सन्देश तीन-चारि-पाँच

मस्कटसँ अनुराधाक तेसर, चारिम आ पाँचम स्वर-सन्देश श्रम आ धनक दैनिक हिसाब प्रस्तुत करैत अछि। सकल वेतन आ हाथमे भेटल रकमक अन्तर, बीमा-कटौती, ऋणक किस्त, बैंकक माध्यमसँ घर पठाओल राशि आ सहकर्मी नर्ससभक परदेस-जीवनक चर्चा होइत अछि। प्रत्येक बैंक-सन्देशक पाछाँ घरक औषधि, ऋण अथवा पढ़ाइक आवश्यकता अछि। ओ पुरान फुलझरी-विषयक प्रश्न नहि बिसरैत छथि, मुदा एहि बेर तुरन्त उत्तरक दबाव नहि दैत छथि। सन्देशसंख्या बढ़ैत अछि, घरक मौन रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ — पँजीकारक ग्राहक

समयक संग रामानुग्रह लग आबि रहल पँजी-ग्राहक बदलैत अछि। मोबाइल-छायाचित्र, विवाह-वेबसाइट, जाति-प्रमाणपत्र, विद्यालयक वंश-वृक्ष, डिजिटल भुगतान आ पीडीएफक माँग बढ़ैत अछि। पँजीक लम्बा सम्बन्ध-सूत्र छोट डिजिटल कोष्ठमे सहज नहि समाइत; छायाचित्र लैत समय पुरान कागज क्षतिग्रस्त होयबाक जोखिम सेहो अछि। रामानुग्रह सरकारी प्रमाणपत्र आ परम्परागत वंश-पत्रक भेद स्पष्ट करैत छथि। प्रति-पाँजिमे ओ भौतिक कागजक क्षरणक संग ‘अर्थक क्षरण’क सम्भावना दर्ज करैत छथि—यद्यपि एकरा अनुमानात्मक चिह्नित करैत छथि।

अध्याय ३९ — कोसी — ६

छठम नदी-स्वर पुरान पाँजि, छायाप्रति, सरकारी प्रपत्र, मोबाइल छवि आ डिजिटल फाइलक बीच बढ़ैत दूरी पर केन्द्रित अछि। जखन मूल सम्बन्धक पाँति छोट कोष्ठमे समेटल जाइत अछि, किछु नाम अथवा सन्दर्भ छूटि सकैत अछि। नदी अक्षरक जलजनित क्षरणक समकक्ष मानव-चयनक कारण अर्थक क्षरण देखबैत अछि। स्रोत, तिथि, प्रश्नचिह्न आ ‘ज्ञात नहि’ सन सावधानी अभिलेख बचएबाक छोट किन्तु आवश्यक उपाय रूपमे उभरैत अछि। सीमा-पार परिवारक नामक वर्तनी आ स्थान सेहो एहि प्रवाहमे जुड़ैत अछि।

अध्याय ४० — काठमाण्डू आ मधेस

२०१५मे काठमाण्डूसँ सप्तरीक पुरान विवाह-सम्बन्धी परिवारक लिफाफा अबैत अछि। नागरिकता-पत्र, जन्म-दर्ता, हाथक वंश-रेखा आ पुरान विवाह-निमन्त्रणक तुलना रामानुग्रह भीमनगरक बरियातवला अभिलेखसँ करैत छथि। नेपाल आ भारतक कागजमे नाम, मायक परिचय, नागरिकता आ ठामक अलग-अलग कोष्ठ अछि। ओ आवश्यक मेल प्रमाणित करैत छथि, मुदा अनिश्चित नाम बलपूर्वक नहि जोड़ैत। मधेसक राजनीतिक-सामाजिक परिवेशक बीच पुरान वंश-सूत्र आ आधुनिक राज्यीय परिचय एक-दोसरक सहायक होय सकैत अछि, प्रतिस्थापन नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४१ — घुरब

२०२०मे महामारीक कारण मस्कटमे अनुराधाक अस्पताल-पारी आ यात्रा पर प्रतिबन्ध लगैत अछि। ओ घर घुरबाक तैयारी, बदलैत उड़ान, स्वास्थ्य-परीक्षण, अनेक प्रशासनिक जाँच आ क्वारन्टीनक क्रम पार करैत छथि। भारत पहुँचबाक पछाति सेहो यात्रा चरण-दर-चरण जारी रहैत अछि; अन्तमे गाम धरि पैदल चलबाक पड़ैत अछि। रामानुग्रह आ मोहन अपन घरमे हुनकर प्रतीक्षा करैत छथि। घरक भोजन भेटलाक क्षण भावनात्मक अछि, मुदा अनुराधा अपन नोटबुकमे अनिवार्य अनुमति आ यात्रा-तिथि व्यवस्थित दर्ज करैत छथि। घुरब केवल दूरी पार करब नहि रहल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४२ — तीन पीढ़ी एक कोठली

पृथक्करणक सात दिनक समाप्तिक पछाति रामानुग्रह, मोहन आ अनुराधा एक छत तर संग रहैत छथि। घरक दैनिक व्यवस्था—रसोई, स्नानघर, बिजलीक तार, स्वास्थ्य-सावधानी—पर छोट-छोट असहमति होइत अछि। तीन पीढ़ीक दस्तावेज, जीवनानुभव आ निर्णय-प्रक्रिया अलग-अलग अछि; पुरान वंश-जाँचक नियम आ नवल चिकित्सकीय अनुशासनक बीच संवाद बनैत अछि। संग रहला मात्रसँ पीढ़ीसभक अनकहल प्रश्न मेटाइत नहि। रामानुग्रह अन्तमे दैनिकीमे तीनू नाम घरमे उपस्थित रूपेँ लिखैत छथि; पारिवारिक निकटता एतबा सटीक, दैनिक क्रियासभमे दिखाई पड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४३ — कोसी — ७

सातम कोसी-अध्याय महामारीक समयक बन्द सड़क, खाली स्टेशन, रुकल रेल, घुरैत मजदूर आ घरक भीतर सीमित मानव-जीवनक बरक्स नदीक निरन्तर गतिक स्वर अछि। लोक स्वास्थ्य, स्पर्श, देश, जिला आ घरक नवल सीमा बनबैत अछि; नाम बेराबेरी सरकारी सूचीमे लिखल जाइत अछि। एक घरमे तीन पीढ़ी रहितो पिता-पुत्र-नातिनक बीच पुरान प्रश्न शेष अछि। नदीक नीचाँ सरकैत बालू जकाँ अदृश्य अन्तर्विरोध सतहक शान्तिक संग चलैत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४४ — प्रति-पाँजि

अनुराधा विद्युत्-तार खोजैत समय मेजक नीचाँ राखल झोलासँ हरियर जिल्दवाली प्रति-पाँजि निकालि लैत छथि। रामानुग्रहक निजी जाँच आ अज्ञात/छूटल नामक विवरण हुनकर सोझाँ खुलैत अछि। ओ स्रोत, अनुमान, फुलझरी–जगेसरक प्रश्न आ अन्य अनाम व्यक्तिक सन्दर्भ पढ़ैत छथि; दादा ओतय लिखल बातक सीमा स्पष्ट करैत छथि। अनकहल पारिवारिक इतिहास आब एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीक पाठमे प्रवेश करैत अछि। दैनिकीमे रामानुग्रह ई दर्ज करैत छथि जे प्रति-पाँजि अनुराधाक हाथ पड़ल आ ओ पढ़ि सुनौलनि। पोथी आब गुप्त झोलामे बन्द नहि अछि।

अध्याय ४५ — जे बाँचल

अनुराधा प्रति-पाँजिमे फुलझरीक सम्भावित वंश-शाखाक स्रोत पुछैत छथि। १९३४क बाढ़ि-पछिला कागजसँ रामानुग्रह, मोहन आ अनुराधा एगारह किलोमीटर पूब-दक्खिनक मुसहर टोल पहुँचैत छथि। ओतय लक्ष्मी सदा अपन परिवारक निजी कागज देखबैत छथि—सुगनीक विवाह-विवरणमे मायक नाम फुलझरी, सुगनीक पुत्र बिन्देश्वर आ बिन्देश्वरक कन्या लक्ष्मीक क्रम भेटैत अछि। एहि सँ जीवित शाखा प्रमाणित होइत अछि, मुदा जगेसर सदाक पितृत्व असिद्ध रहैत अछि। लक्ष्मी मूल कागज अपन घरमे रखैत छथि। परिवारक विलोपनक इतिहास स्वीकार कयल जाइत अछि; नाम फेर लिखबाक काज अगिला दिन लेल स्थगित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४६ — नाम लिखब

अत्यन्त छोट, अभिलेखीय शैलीक अध्यायमे रामानुग्रह मेटाओल वंश-शाखाक नवल प्रविष्टि लिखैत छथि। श्रीधर मिश्रक कन्या फुलझरी, जगेसर सदा संग हुनकर विवादित गृहस्थ-सम्बन्ध, सुगनीक माता रूपमे फुलझरीक नाम, सुगनी–बिन्देश्वर–लक्ष्मीक क्रम आ जीवित मुसहर-टोलक ठाम दर्ज होइत अछि। जगेसरक पितृत्व अनिश्चिते कहल गेल अछि; विवादित विवाहकेँ निर्विवाद सिद्ध नहि कयल गेल अछि। अन्तिम पाँतिमे फुलझरीक नाम मुख्य वंश-पाँतिमे पुनः प्रविष्ट होइत अछि।

अध्याय ४७ — मृत्यु आ पोथी

२०२४क वर्षामे वृद्ध रामानुग्रहक आँखि आ देह कमजोर भऽ रहल अछि। ओ मूल पँजि, प्रति-पाँजि आ फुलझरीक पुनर्लिखित पृष्ठ सँभारैत छथि आ अनुराधाकेँ सन्दूकक कुंजीक स्थान बतबैत छथि। पछाति रामानुग्रहक मृत्यु होइत अछि। परिवार आ अन्य पँजीकार पोथी सुरक्षित राखबाक अस्थायी प्रबन्ध, सूची आ पहुँच-विधि पर विचार करैत छथि। अनुराधा स्वयं पँजीकार बनबाक दावा नहि करैत छथि; ओ संरक्षण आ पारदर्शी व्यवस्था पर ध्यान दैत छथि। विवाहक नवल ग्राहक आबि पाँजि देखबाक प्रश्न करैत अछि, मुदा सन्दूक तुरन्त नहि खोलल जाइत। रामानुग्रह नहि रहलाह, पोथी बचल रहल।

अध्याय ४८ — कोसी — ८

अन्तिम अध्यायमे कोसीक स्वर १९३४क भूकम्प-बाढ़ि, २००८क कुसहा-टूटन आ २०२४क समयकेँ माटि, गाद आ पुरान धारक तहमे एक संग रखैत अछि। नदीक दृष्टिमे तटबन्ध, घर, नाम, हड्डी, पाँजि आ सन्दूक सभ परिवर्तनशील वस्तु अछि। फुलझरीक नाम पुनः लिखब ऐतिहासिक विलोपनक महत्त्वपूर्ण सुधार अछि, मुदा एहि सँ पुरान हिंसा अथवा भूगोलक अस्थिरता स्वतः समाप्त नहि होइत। रामानुग्रहक हाथ रुकि गेल, दोसर हाथमे कुंजी पहुँचि गेल, आ नदी बहैत रहल। उपन्यास जीवन, अभिलेख आ जलक निरन्तर गतिक संग समाप्त होइत अछि।

SECTION / खण्ड

समग्र कथासूत्र

05 जल-पाँजि

समग्र कथासूत्र

उपन्यासक कथा कोसी-बाढ़िक २००८क वर्तमानसँ आरम्भ भऽ १९३४क भूकम्प आ फुलझरीक मेटाओल पाँति, १९५४क सन्धि आ तटबन्ध, १९६०क दशकक घरेलू इतिहास, बादक प्रवास, २०२०क वापसी आ २०२४क अभिलेखीय उत्तराधिकार धरि फैलैत अछि। रामानुग्रहक दैनिकी, मौखिक साक्षी, पुरान पँजी, आधुनिक सरकारी कागज, अनुराधाक स्वर-सन्देश आ स्वयं कोसीक प्रथम-पुरुष स्वर एहि कथाकेँ अलग-अलग दृष्टिबिन्दु दैत अछि। मूल प्रश्न ई अछि जे नाम लिखबाक अधिकार ककरा लग अछि, नाम मेटलाक पछाति कोन साक्ष्य बचैत अछि, आ अपूर्ण सत्यक प्रति लिखनिहारक उत्तरदायित्व की अछि।

WORK / कृति

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

४१८ मूल प्रसंग · ४२ सम्पादकीय सारांश-समूह

SECTION / खण्ड

पाठ-विभाजनक स्पष्टता

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

पाठ-विभाजनक स्पष्टता

मूल पाण्डुलिपिमे क्रमाङ्कित अथवा शीर्षकयुक्त अध्याय नहि अछि। कथाक ४१८ प्रसंग '❖' चिह्नसँ अलग होइत अछि। पाठकक सुविधा लेल एतय मूल क्रम सुरक्षित राखि प्रति दस प्रसंगक लगभग एक सारांश-समूह बनाओल गेल अछि (अन्तिम समूहम ८ प्रसंग)। ४२ शीर्षक सम्पादकीय सुविधा लेल देल गेल अछि; ई मूल पुस्तकक अध्याय-शीर्षक नहि थिक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

समग्र कथासार

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

समग्र कथासार

गढ़ नारिकेलक घरमे बिज्जी द्वारा बालक ईशानकेँ गहुमनसँ बचेनाइ एक एहन प्रतीक स्थापित करैत अछि जे कथा भरि लौटैत रहैत अछि। ईशानक पिता सत्यप्रकाश कर्ण सरकारी निर्माण-निविदाक उगाही-जालक विरोध करैत छथि आ सन्दिग्ध सड़क-दुर्घटनामे मरि जाइत छथि। पत्नी मृणालिनी, पुलिस अधीक्षक अनिरुद्ध चौधरी, लेखाधिकारी मयंक झा आ बादक साइबर जाँच-अधिकारी रचना सिन्हाक प्रयाससँ आर्थिक षड्यंत्रक अनेक परत खुलैत अछि। ठेकेदारीक जाल डिजिटल खेल, ऑनलाइन जुआ, म्यूल-खाता, धनशोधन आ निवेशक-संस्थासँ जुड़ैत अछि। अदालत प्रत्येक अभियुक्तक कर्तव्य आ दोष अलग जाँचैत अछि; पुरान मृत्युक पूरा उत्तर नहि, सीमित किन्तु महत्त्वपूर्ण न्याय भेटैत अछि। अन्तिम

समग्र कथासार

अंशमे शोक, अपील, पुनर्वास, नीति-सुधार, शोध, स्मृति आ ईशानक लेखन एक नब पीढ़ी धरि पहुँचैत अछि। बिज्जीक पहरा अपराधक सम्पूर्ण अन्त नहि, जागरूकताक निरन्तरता ठहरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 01 | बिज्जीक पहरा आ ठेकाक अदृश्य मूल्य

समग्र कथासार

गढ़ नारिकेलमे धनेश्वरीक घरमे घुसल गहुमनसँ बालक ईशानक प्राण एक बिज्जी बचबैत अछि। आठ बरख बाद सत्यप्रकाश कर्ण तटबन्ध-निर्माणक सरकारी निविदा पाबैत छथि। हुनका ठेकाक रकमसँ छह प्रतिशत देबाक दबाव पड़ैत अछि; अस्वीकार करिते सामग्री, यातायात आ जाँचमे बाधा शुरू होइत अछि। सत्यप्रकाश धमकीक समय आ विवरण कारी डायरीमे लिखैत छथि। लेखा-अधिकारी मयंक झा 'प्रवाही परामर्श'क संदिग्ध भुगतान देखैत छथि। शीघ्र सत्यप्रकाश आ हुनकर चालक रघुनाथ सड़कपर ट्रकसँ टकरा कऽ मरैत छथि। पत्नी मृणालिनी एहि घटनाकेँ दुर्घटना मानबासँ इनकार करैत छथि। पुलिस अधीक्षक अनिरुद्ध चौधरी निष्पक्ष जाँच आरम्भ करैत छथि; एही बीच धमकीवला डायरी गायब होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 01 | बिज्जीक पहरा आ ठेकाक अदृश्य मूल्य

समग्र कथासार

2 / 2

बिज्जी परिवारक सतर्कता आ अविचल प्रतिरोधक प्रतीक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 02 | सन्देह, प्रारम्भिक साक्ष्य आ पहिल निर्दोषक जोखिम

समग्र कथासार

टोल-प्लाजाक फुटेज, ट्रकक विवरण, मृणालिनीक बयान आ मयंकक आर्थिक संकेत अनिरुद्धक जाँचक आधार बनैत अछि। परित्यक्त गोदाममे जारल वाहन भेटैत अछि, मुदा ओकर पहचान सावधानीपूर्वक कएल जाइत अछि। कौशल महतो ट्रकक पुरान मालिक होयबाक आ कन्हैया रजक मार्फत बिक्रीक बात कहैत अछि। मयंक दिगन्तसँ सम्बद्ध सम्भावित परामर्श-शुल्क आ छह प्रतिशतक समान रकम देखबैत छथि। घरमे शोकसँ जूझैत ईशान बदला आ न्यायक अन्तर पर धनेश्वरीसँ प्रश्न करैत अछि। जारल वाहन असल दुर्घटनावला ट्रक नहि निकलैत अछि; एहि गलत सुरागसँ जाँच फेर दिशा बदलैत अछि। तखन दोसर ठेकेदार शिवकुमार मंडलक यार्डमे आगि लगैत अछि आ मजदूर मोहन पासवान मरैत अछि। जाँचक विषय एक मृत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 02 | सन्देह, प्रारम्भिक साक्ष्य आ पहिल निर्दोषक जोखिम

समग्र कथासार

2 / 2

ठेकेदारसँ आगाँ बढ़ि प्रतिस्पर्धा दबेबाक संगठित व्यवस्थासँ जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 03 | कागचपर साफ संस्था, भीतरक सम्बन्ध

समग्र कथासार

1 / 2

‘लोकसेतु जनसंपर्क सेवा’क कार्यालय आ मालती घोषक प्रस्तुत कागच पहिल नजरिमे व्यवस्थित लगैत अछि, मुदा कार्यक्रमक तारीख आ वास्तविक परिस्थितिक बीच विसंगति देखाइत अछि। संयुक्त जाँचमे लेखा-परीक्षक नैना वर्मा सेहो जुड़ैत छथि। ‘प्रवाही परामर्श’ आ ‘लोकसेतु’क साझा बाहरी लेखाकारक माध्यमसँ ‘प्रणव बाबू’ नामक व्यक्तिक संकेत भेटैत अछि। कई समान नाम भेटलाक कारण बिना पुष्टि ककरो दोषी नहि मानल जाइत अछि। दिगन्त समूह आ देवांशु रक्षितक भूमिका पर संशय गहिराइत अछि। मयंकक पीछा होयबाक आशङ्का परिवारक भय बढ़बैत अछि। मोहन पासवानक पत्नी सरोजिनी अपन बच्चाक भविष्य आ शिक्षाक खर्च पूछैत छथि; एहि प्रसंगमे अपराधक आर्थिक साक्ष्य आ पीड़ितक

समूह 03 | कागचपर साफ संस्था, भीतरक सम्बन्ध

समग्र कथासार

जीवनक वास्तविक हानि एक संग सामने अबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 04 | प्रणवेशक बयान आ दिगन्तक जाल

समग्र कथासार

प्रणवेश स्वयं जाँचकर्तासभक समक्ष पहुँचि दिगन्त समूह, परामर्श कम्पनी आ स्थानीय जनसम्पर्क संस्थाक बीच लेनदेनक व्यवस्था बयान करैत अछि। ओकर कथनसँ निविदा वापस करेनाइ, दबाव बनौनाइ आ भुगतानक आन्तरिक पद्धति सामने अबैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष हिंसाक जिम्मेदारी अस्पष्ट रहैत अछि। जाँचकर्ता बयानक प्रत्येक अंश लेल स्वतन्त्र पुष्टि ताकैत छथि। दिगन्तक अभिलेख मँगाओल जाइत अछि; प्रणवेशक सुरक्षाक चिन्ता बढ़ैत अछि। कन्हैया रजकक नाम समाचारमे लीक होयबासँ ओकर व्यवसाय आ बेटीक विवाह-वार्तापर प्रतिकूल प्रभाव पड़ैत अछि। ओ निर्दोष व्यक्तिक प्रतिष्ठा बचेनाइ सेहो जाँचक दायित्व थिक, ई प्रश्न पुलिसक सोझाँ रखैत अछि। संगठनक प्रभावशाली

समूह 04 | प्रणवेशक बयान आ दिगन्तक जाल

समग्र कथासार

आवरणक भीतर सम्बन्धक अनेक स्तर धीरे-धीरे स्पष्ट होमय लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 05 | समायोजन सूची आ देवांशुक गिरफ्तारी

समग्र कथासार

जनविश्वास सहकारी समितिक खाता, जितेन्द्र पालक स्थिति आ प्रणवेशक बताओल ‘समायोजन सूची’ जाँचमे जोड़ल जाइत अछि। सूचीमे ठेकेदारसभकेँ दबावक दृष्टिसँ वर्गीकृत कएल गेल अछि; सत्यप्रकाशक नामक सामने ‘कठोर’ आ ‘अलग उपाय’ जकाँ टिप्पणी भेटैत अछि। मुदा ई शब्द हत्या-आदेशक निश्चित प्रमाण नहि बनैत। सत्यप्रकाशक कॉल अभिलेख फेर देखल जाइत अछि। ‘अम्बर’ नामक खेल-मीडिया संस्थाक संस्थापक विहान सारंगक परिचय होइत अछि। वित्तीय अनियमितता आ उगाहीक आरोपमे दिगन्तक देवांशु रक्षित गिरफ्तार होइत अछि, तथापि सत्यप्रकाशक मृत्यु सम्बन्धी प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि। मीडिया आ परिवार दुनू तत्काल निष्कर्ष चाहैत अछि, जखन कि जाँचक मुख्य अनुशासन

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 05 | समायोजन सूची आ देवांशुक गिरफ्तारी

समग्र कथासार

प्रमाणक सीमामे रहब अछि।

समूह 06 | पहिल मुकदमा, सीमित न्याय आ नव पीढ़ी

समग्र कथासार

देवांशुक विरुद्ध आर्थिक अपराधक मुकदमा चलैत अछि आ ओहि आरोपसभमे दोषसिद्धि होइत अछि। मुदा सत्यप्रकाशक कथित हत्याक प्रश्न तत्काल हल नहि होइत। कन्हैया रजकक नाम औपचारिक रूपसँ साफ करबाक प्रयास होइत अछि। मोहन पासवानक परिवारकेँ क्षतिपूर्ति भेटैत अछि, मुदा सरोजिनीक दैनन्दिन असुरक्षा समाप्त नहि होइत। समय बीतैत अछि; ईशान कॉलेजक दिशामे बढ़ैत अछि। दोसर दिस अम्बरक खेल-आधारित डिजिटल अनुप्रयोग विकसित होइत अछि आ ‘उत्तरायण डिजिटल होल्डिङ्ग’क निवेश ओहिमे जुड़ैत अछि। निविदा-आधारित पुरान जालक कथा एखन डिजिटल खातासभक संसार दिस मुड़ैत अछि। बीतेल अपराधक आंशिक न्याय परिवारक भीतर अधूरा प्रश्न छोड़ि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 07 | अम्बरक डिजिटल विस्तार आ खाताक दुविधा

समग्र कथासार

1 / 2

बूढ़ भऽ रहल धनेश्वरी गाममे छथि, जखन कि ईशान डेटा-विश्लेषणक व्यावसायिक संसारमे प्रवेश करैत अछि। अम्बरक खेल-प्रणाली, प्रचार-भुगतान आ वित्तीय प्रवाहक जाँचमे ओ कई असामान्य खाता-सम्बन्ध देखैत अछि। छात्र अभिषेक झा आर्थिक दबावमे रितेशक मार्फत अपन खाता लेनदेन लेल देबाक जालमे फँसैत अछि। संस्थाक आधिकारिक तन्त्र आ बाहरी म्यूल-खाताक नेटवर्कक सीमा स्पष्ट नहि अछि। ईशानक प्रारम्भिक प्रतिवेदन असुविधाजनक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा प्रत्येक असामान्य प्रवाह अपराध सिद्ध नहि करैत। अभिषेकक खाता रोकि देल जाइत अछि; ओकर बहिन मंजरीक पढ़ाइ आ प्रवेश-संबन्धी रकम संकटमे पड़ैत अछि। डिजिटल आर्थिक अपराध एतय एक परिवारक भविष्यक बाधा बनैत

समूह 07 | अम्बरक डिजिटल विस्तार आ खाताक दुविधा

समग्र कथासार

2 / 2

अछि।

समूह 08 | साइबर जाँचक आरम्भ आ रात्रि कक्ष

समग्र कथासार

मंजरीक प्रवेश छूटबासँ अभिषेक पर अपराध-बोध आ भयक भार बढ़ैत अछि। ओ साइबर थानामे निरीक्षक रचना सिन्हाक सोझाँ अपन भूमिका बतबैत अछि। रचना अभिषेककेँ तुरन्त समग्र षड्यंत्रक अपराधी नहि मानि खाताक वास्तविक नियन्त्रण आ ओकर ज्ञानक सीमा जाँचैत छथि। अन्य शिकायतसभ, अम्बरक प्रचार-पैटर्न आ ‘रात्रि कक्ष’सँ सम्बन्धित संकेत एकत्र होइत अछि। ईशान डिजिटल आँकड़ा सँ पुरान दिगन्तक दस्तावेज तुलना करैत अछि, मुदा इतिहासकेँ वर्तमानक स्वतन्त्र प्रमाणक स्थान नहि दैत। मनोज नायकक फोटो आ सम्भावित सम्बन्ध पर जाँच बढ़ैत अछि। सहयोग करबासँ अभिषेकक बैंक, परिवार आ समाजक समस्या तुरन्त समाप्त नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 09 | जुआक अड्डा, उत्तरायण आ संस्थागत संकट

समग्र कथासार

मनोज नायकक अनुसरणमे पुलिस ऑनलाइन जुआक वास्तविक संचालन-संसारक एक ठाम धरि पहुँचैत अछि। छापा, जब्त कम्प्यूटर आ खाता-जाँचसँ ‘उत्तरायण’ नाम उभरैत अछि। मनोज पकड़ा जाइत अछि। ईशानक विश्लेषण प्रतिवेदन अम्बरक निदेशक-मण्डल धरि पहुँचैत अछि आ संस्थाक आन्तरिक उत्तरदायित्व पर विवाद बढ़ैत अछि। ईशान अनिरुद्धसँ सलाह लैत अछि, जखन कि मृणालिनी ओकर सुरक्षाक लेल चिन्तित छथि। राज्यक आर्थिक-अपराध शाखा धनशोधनक सम्भावना जाँचमे जोड़ैत अछि। विहान सारंगसँ औपचारिक प्रश्न होइत अछि। पहिल कथा सँ जोड़बाक लोभक बीच जाँचक चुनौती अछि—नव लेनदेन अपने-आपमे की सिद्ध करैत अछि, आ पुरान नामक पुनरावृत्ति मात्र की?

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 10 | विभिन्न एजेंसी आ सात खाताक प्रश्न

समग्र कथासार

विहानक विस्तृत बयानक बाद अन्तर-एजेन्सी जाँचक आवश्यकता सामने अबैत अछि। दिल्लीमे अलग-अलग एजेन्सी अपन-अपन अधिकारक्षेत्र आ प्रमाणक सीमा निर्धारित करैत छथि। सात संदिग्ध खाताक भीतर किछु छोट व्यवसायिक नाम आ एक मृत युवकक खाता सेहो सामने अबैत अछि। पवनक परिवार, नीलकण्ठ एग्रीगेट्स आ प्रदीप महाजनक सम्बन्धित अभिलेख देखल जाइत अछि। ‘सहस्त्र ट्रेडलिंक’क नाम वित्तीय परतक एकटा आर संकेत दैत अछि। एन.आई.ए. अपन भूमिका सीमित रखबाक निर्णय करैत अछि; सभ असामान्य डिजिटल गतिविधिकेँ स्वतः राष्ट्रीय सुरक्षाक अपराध नहि मानल जाइत। एकटा जटिल जाँचमे कानूनक अलग-अलग पथक उचित सीमा निर्धारित करब स्वयं महत्त्वपूर्ण घटना बनैत अछि।

समूह 11 | केशवक नाम, धनेश्वरीक मृत्यु आ पुरान कोठी

समग्र कथासार

अम्बरक केशव मेहताक व्यवहार बदलैत अछि आ निदेशक-मण्डल ओकरा अवकाश पर पठबैत अछि। ईशान अम्बरक व्यावसायिक कामसँ अलग होइत अछि। एहि बीच धनेश्वरीक स्वास्थ्य खराब भऽ अन्ततः हुनकर मृत्यु होइत अछि। परिवारमे बिज्जीक पुरान प्रतीक नव अर्थ ग्रहण करैत अछि। डिजिटल अभिलेखक वैधानिक हस्तान्तरण आ केशवक बयानसँ पुरान निर्माण-जाल आ नव वित्तीय नेटवर्कक बीच जीवित सम्पर्कक संकेत भेटैत अछि। प्रदीप महाजनक खोज तेज होइत अछि। ‘नदी पार पुरान कोठी’ सम्बन्धी जानकारीसँ जाँच बिरजू साहक ठाम पहुँचैत अछि। ईशान लेल दादीक मृत्यु केवल निजी शोक नहि, सतर्कता आ न्यायक परम्पराक एक पुरान स्रोतक वियोग बनैत अछि।

समूह 12 | बिरजू साहसँ चन्द्र धरि

समग्र कथासार

बिरजू साहक पुरान कोठी जाँचक केन्द्र बनैत अछि। बिरजू पुरान दलालीक काज स्वीकार करैत अछि, मुदा अधूर नाम आ अपूर्ण कथन तत्काल निष्कर्ष बनि नहि सकैत। ओकर बीमारी आ मृत्युसँ जाँच एक महत्त्वपूर्ण सम्भावित गवाह गमबैत अछि। ओकर बेटाक कागचसँ ‘चन्द्र’ नामक संकेत निकलैत अछि। पुरान न्यास आ सहयोगी संस्था सम्बन्धी दस्तावेजक खोज शशांक देवव्रत धरि जाइत अछि। अनिरुद्ध आ रचना पुरान आर्थिक व्यवस्थाक उत्तराधिकारी रूपक बुझबाक प्रयास करैत छथि। मृत्यु, स्मृति आ कागचक अनुपस्थितिक कारण दशकों पुरान सम्बन्ध पुनर्निर्मित करब कठिन होइत अछि। ईशानक जिम्मेदारी सेहो केवल तकनीकी विश्लेषणसँ आगाँ बढ़ि ऐतिहासिक प्रमाणक संयमित उपयोग दिस जाइत

समूह 12 | बिरजू साहसँ चन्द्र धरि

समग्र कथासार

2 / 2

अछि।

समूह 13 | प्रदीप महाजनक आत्मसमर्पण आ परिवारक दण्ड

समग्र कथासार

शशांक देवव्रतसँ जाँच-मुलाकातक बीच ईशानकेँ नव व्यावसायिक दायित्व भेटैत अछि। वित्तीय आँकड़ा पुराने खातासभक सम्बन्ध बतबैत अछि। प्रदीप महाजन स्वयं सामने आबैत अछि आ ओकर भूमिकाक आधारपर न्यायिक प्रक्रिया शुरू होइत अछि। कारागारक भीतर ओकर समय केवल कानूनी सुनवाईक तारीखसभमे बँधि जाइत अछि। पत्नी आ बेटी तृषासँ दूरी ओकर अपराधक निजी परिणाम बनैत अछि। मजिस्ट्रेटक समक्ष बयानसँ दस्तावेजी समर्थन आ खाताक परतसभक जानकारी भेटैत अछि। अम्बरक मुख्य कार्यालयमे संकट बढ़ैत अछि। उत्तरायण निधिक जाँच नव वित्तीय उलझन देखबैत अछि। प्रदीपक आंशिक सहयोगक बावजूद अपन कृत्यक नैतिक परिणामसँ ओ मुक्त नहि होइत अछि।

समूह 14 | अदितिक दस्तावेज, पुरान कागच आ संशय

समग्र कथासार

समृद्धि ग्राम-वित्त मंडलक पुरान सम्बन्धक खोज शशिभूषण लालक परिवार आ हुनकर बेटी अदिति धरि पहुँचैत अछि। अदिति अपन स्मृति आ उपलब्ध कागच साझा करैत छथि, मुदा जाँचकर्ता ओहि जानकारीक स्वतंत्र पुष्टि चाहैत छथि। प्रदीपक बेटी तृषाक आगमनसँ पिता-पुत्रीक सम्बन्धमे कठिन प्रश्न उठैत अछि। कमला-बलान पर बरखा आरम्भ होइत अछि; पुरान घटनाक धुँध आ वर्तमानक जाँच एक संग आगाँ बढ़ैत अछि। बीस बरख पुरान खेल-प्रचार परियोजनाक अभिलेख निकालल जाइत अछि। कृपानन्द वर्माक डायरी किछु अक्षर आ अनुमान दैत अछि, मुदा अधूर अक्षरकेँ मनमाना नाम देबाक प्रलोभनसँ रचना बचैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 15 | पुरान दुर्घटनाक नव साक्ष्य आ केशवक गिरफ्तारी

समग्र कथासार

देवांशु रक्षित पुरान दण्ड भोगलाक बाद फेर जाँचक सन्दर्भमे आबैत अछि। हरिचरण मंडलक फाइल, मृणालिनीक बयान आ सत्यप्रकाशक मृत्यु-संबन्धी पुरान परिस्थितिक पुनर्मूल्यांकन शुरू होइत अछि। वर्तमान जुआ-जालमे केशव मेहताक घर आ कार्यालयक वैधानिक तलाशी होइत अछि; ओकरा गिरफ्तार कऽ न्यायिक हिरासतमे पठाओल जाइत अछि। प्रदीप कारागारमे अन्य बन्दीसँ भेटैत अछि, जकर माध्यमसँ अपराध-पश्चात मनुष्यक बदलावक जटिलता सामने अबैत अछि। अम्बरक निदेशक विहान सारंग अपन संस्था भीतरक ई-पत्र संग्रह जाँचकेँ दैत अछि। एहि अभिलेखसँ नलिन बरुआक दिशा खुलैत अछि, आ वर्तमान वित्तीय अनियमितता पुरान घटनासँ दस्तावेजी रूपेँ जोड़बाक सम्भावना मजबूत होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 16 | सत्यप्रकाशक मृत्यु-जाँच फेर खुलैत अछि

समग्र कथासार

नलिन बरुआक बयान आ अदितिक पुरान पेटीसँ उपलब्ध सामग्री पर विचार कएल जाइत अछि। रचना सिन्हा सत्यप्रकाश कर्णक मृत्यु-जाँच औपचारिक रूपसँ पुनः खोलबाक सिफारिश करैत छथि। ईशानक परिवारक लेल ई घटना आशाक संग पुरान घाव सेहो खोलैत अछि। केशवक गिरफ्तारीक बादो ऑनलाइन जुआक नेटवर्क बन्द नहि होइत, कारण ओकर व्यवस्था व्यक्तिसँ पैघ अछि। मृणालिनी अपन घर आ स्मृतिक बीच रहबाक निर्णयक अर्थ फेर सोचैत छथि। रचना जाँचक प्रत्येक कड़ी—पुरान अभिलेख, वर्तमान पैसा, व्यक्तिक कथन आ भौतिक साक्ष्य—अलग-अलग रखैत छथि। कथा एतय दिगन्तक पहिल मुकदमासँ बहुत आगाँ बढ़ि बीस वर्ष पुरान अपूर्ण न्यायकेँ नव प्रक्रिया दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 17 | दुर्घटनास्थलक पुनर्परीक्षण आ उदयनाथक संकेत

समग्र कथासार

पुनः खोलल जाँचक मीडिया-प्रभावक बीच रचना मूल दुर्घटनास्थल देखैत छथि। बासुदेव मरिकसँ पुरान वाहनक स्मृति, परिवहन अनुज्ञप्ति आ चालकसँ सम्बद्ध कागच प्राप्त करबाक प्रयास होइत अछि। विभिन्न कौशल नामक कारण पहचानमे कठिनाई रहैत अछि। वर्तमान जुआक मामलेमे मनोज नायक, रितेश दास आ रघुवीर तांतीक सम्बन्धक जाँच आगाँ बढ़ैत अछि। ‘उदय बाबू’ नामक व्यक्ति सम्भावित आर्थिक संरचनासँ जुड़ैत अछि, मुदा कथनक स्वतन्त्र पुष्टि एखन बाकी अछि। शैलेश मंडल जकाँ व्यक्ति जुआक ऋण, भय आ सामाजिक लाजक दबावमे फँसैत छथि। उदयनाथ मिश्र जाँचक सोझाँ अबैत अछि; ओकर सार्वजनिक भूमिका आ वास्तविक ज्ञानक बीच अन्तर जाँचल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 18 | सौरभ बर्धन धरि पहुँचैत वित्तीय जाँच

समग्र कथासार

उदयनाथ मिश्रक वित्तीय व्यवहार, पुरान मृत्यु-जाँचक वैकल्पिक सम्भावना आ मनोजक फोन अभिलेख अलग-अलग जाँचल जाइत अछि। रघुवीर तांती पकड़ा जाइत अछि। केशव, मनोज आ रघुवीरक कथनसँ सौरभ बर्धनक नाम उभरैत अछि। रचना सौरभक अभिलेख आ पदक वास्तविक सीमा देखैत छथि, ताकि केवल प्रभावशाली नामक आधारपर दोष तय नहि हो। सौरभ जाँचमे उपस्थित होइत अछि; पहिल पूछताछ तुरन्त निर्णायक नहि होइत। वैधानिक रूपसँ प्राप्त ई-पत्र आ बैठकक कागचसँ वित्तीय सम्बन्धक किछु कड़ी स्पष्ट होइत अछि। गढ़ नारिकेलमे मृणालिनी पुरान चश्मा हाथमे लऽ अपन पति आ वर्तमान संघर्षक बीच स्मृतिक दूरी अनुभव करैत छथि।

समूह 19 | गिरफ्तारी, निवेश आ पुरान गवाहीक अन्तिम टुकड़ा

समग्र कथासार

उदयनाथ पर तत्काल गिरफ्तारी नहि होइत, जखन कि सौरभ बर्धनक सम्भावित वित्तीय सहायता-जालक विस्तृत परीक्षण होइत अछि। प्रदीपक जेल-जीवन आ बेटी तृषाक भेट ओकर परिवारक क्षति आ अपराध-बोधकेँ उजागर करैत अछि। कागच देखबैत अछि जे संदिग्ध पैसा सीधा निजी खातामे नहियो जा सकैत अछि; व्यावसायिक मार्ग आ सहायक ऋणक अनेक परत ओकर स्रोत झँपि सकैत अछि। आलोक भसीनक बैकअप अभिलेख, रजत चौबेक गोदामक बही, बासुदेवक वाहन-स्मृति आ रामअवतार यादवक पुरान जानकारी जाँचमे जुड़ैत अछि। सौरभ गिरफ्तार भऽ न्यायिक हिरासतमे जाइत अछि। ईशान डिजिटल जोखिम पर सार्वजनिक प्रतिवेदन दैत अछि, मुदा पुरान मृत्यु-विवादक निष्कर्ष पूर्ण नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 20 | ‘एस.के. प्रकरण’ आ बाढ़िक संकट

समग्र कथासार

सौरभक अभिलेखमे ‘एस.के. प्रकरण’क उल्लेख सत्यप्रकाशक पुरान मृत्यु-जाँचसँ सम्बन्धित सम्भावित कड़ी बनैत अछि। रचना स्पष्ट करैत छथि जे पुरान नाम भेटब अपने-आपमे हत्या सिद्ध नहि करैत। एहि बीच कमला-बलानमे बाढ़ि बढ़ैत अछि; गढ़ नारिकेलक विद्यालय राहत-शिविर बनैत अछि आ ईशान-मृणालिनी सहित स्थानीय लोकक प्राथमिक आवश्यकता जीवन बचेनाइ भऽ जाइत अछि। पुरान वाहनक बीमा-अभिलेखसँ नव सुराग भेटैत अछि। रचना देवांशु रक्षितसँ फेर पूछबाक निर्णय लैत छथि। देवांशुक नव बयानक प्रमाणिकता अलग जाँचल जाइत अछि। जुआ-जालमे मनोजक गिरफ्तारी आ सौरभक जमानत-प्रक्रिया चलैत अछि। पुरान अपराधक सत्यक खोज आ वर्तमान प्राकृतिक विपत्ति कथा मे एक-दोसराकेँ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 20 | ‘एस.के. प्रकरण’ आ बाढ़िक संकट

समग्र कथासार

बाधित नहि, विस्तृत करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 21 | अन्तरिम प्रतिवेदन आ अभियोजनक तैयारी

समग्र कथासार

बाढ़ि उतरलापछि ईशान घरमे भीजल पुरान पोथी भेटैत अछि। रचना सत्यप्रकाशक मृत्यु-जाँचक अन्तरिम प्रतिवेदन तैयार करैत छथि, जाहिमे प्रमाणित तथ्य, अनुमेय सम्बन्ध आ शेष अनिश्चितता स्पष्ट अलग कएल जाइत अछि। मृणालिनी सार्वजनिक सार पढ़ैत छथि आ बुझैत छथि जे आंशिक स्पष्टता सेहो दीर्घ मौनसँ अलग अछि। नब जुआ-मामलाक आरोप-पत्र बनैत अछि; अभियुक्त, साक्षी, खाताधारक आ सहायक व्यक्तिक भूमिकाकेँ एक श्रेणीमे नहि रखबाक प्रयास होइत अछि। वित्तीय हानि, पारिवारिक अवरोध आ समाजक कलङ्कक सूची विधिक अभिलेखसँ पैघ अछि। मुकदमा विशेष न्यायालयमे पहुँचेबाक तैयारी करैत अछि आ न्यायिक परीक्षाक चरण आरम्भ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 22 | विशेष न्यायालयमे खाता आ साक्षीक परीक्षा

समग्र कथासार

विशेष न्यायालयमे अभियोजन डिजिटल खाताक प्रवाह, संदिग्ध गतिविधि आ आयोजकसभक भूमिका प्रस्तुत करैत अछि। बैंक अनुपालन अधिकारी, सबीना खातून, अभिषेक झा, रितेश दास, रघुवीर तांती आ प्रदीप महाजनक बयान एक-एक कऽ जाँचल जाइत अछि। अभियोजनक कथा आ प्रत्येक साक्षीक व्यक्तिगत ज्ञान अलग रखल जाइत अछि। सबीना आ अभिषेक जकाँ व्यक्तिक खाता उपयोग भेल अछि, मुदा एतेक बातसँ समान आपराधिक आशय सिद्ध नहि होइत। रितेशक भर्ती, दबाव आ आर्थिक लाभ पर प्रतिपरीक्षण होइत अछि। प्रदीप अपन दस्तावेजी भूमिकाकेँ स्वीकार कऽ सेहो अपन ज्ञानक सीमा आ निजी पछतावाक प्रश्नसँ गुजरैत अछि। अदालत साक्ष्यक समेकित मूल्यांकनक पहिने एक-एक कड़ीक परीक्षण करैत अछि।

समूह 23 | साझा वित्तीय तन्त्र, अलग-अलग उत्तरदायित्व

समग्र कथासार

केशव मेहताक लेखांकनक भूमिका, सौरभक निवेशक-सहायता आ उदयनाथ मिश्रक सम्भावित नैतिक लापरवाहीक बीच भेद राखल जाइत अछि। उदयनाथ एखन अभियुक्त नहि; अदालत ओकर कथन आ अन्य साक्ष्यक उपयोगक सीमा तय करैत अछि। बाहर मीडिया आ समाज मुकदमाकेँ सरल नायक-अपराधीक कथामे बदलय चाहैत अछि। गढ़ नारिकेलमे मृणालिनी बाढ़िक दाग पर नब चूना लगबबैत छथि, मुदा पुरान स्मृतिक एक चिन्ह सुरक्षित राखैत छथि। सत्यप्रकाश-मामलामे सेहो अलग आरोपक न्यायिक विचार शुरू होइत अछि। इलेक्ट्रॉनिक विशेषज्ञ आ मयंक झा वित्तीय कड़ीसभ पर बयान दैत छथि। शैलेशक परिवार आ रितेशक पुनर्स्थापनक कठिनाई देखबैत अछि जे अदालतक प्रक्रिया बाहर जीवन चलैत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 24 | अन्तिम बहस आ दोषसिद्धिक भिन्न स्तर

समग्र कथासार

विशेष न्यायालयमे मुकदमा महीनासभ चलैत अछि। मनोज, रघुवीर, केशव, प्रदीप आ सौरभक पक्ष अलग-अलग अपराधक अवयव, आशय आ प्रमाणक विश्वसनीयतापर बहस करैत छथि। पुरान सत्यप्रकाश-मामलाक न्यायिक कार्यवाही समानान्तर जारी रहैत अछि। रघुवीरक सहयोगीसभक सीमित अपराध स्वीकार करबाक बात आउत अछि; केशव अपन लेखांकनक निर्णयकेँ तकनीकी कार्य कहैत बचाव करैत अछि; सौरभक पक्ष निवेशक पद आ प्रत्यक्ष जुआ-संचालनक बीच अन्तर उठबैत अछि। निर्णयक दिन अदालत विभिन्न आरोपसभमे अलग-अलग परिणाम दैत अछि। मनोज, केशव, प्रदीप आ सौरभ पर किछु आरोप सिद्ध होइत अछि, मुदा व्यापक षड्यंत्रक प्रत्येक दावा सिद्ध नहि। सबीना आ अभिषेकक स्थिति अलग मानल जाइत अछि। न्याय एक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 24 | अन्तिम बहस आ दोषसिद्धिक भिन्न स्तर

समग्र कथासार

2 / 2

सरल सामूहिक घोषणा नहि बनैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at

https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 25 | दण्डक बादो सत्यप्रकाशक प्रश्न शेष

समग्र कथासार

नब जुआ-मामलाक निर्णयक समाचारक शीर्षकसभ न्यायालयक सूक्ष्म भेदकेँ सरल बना दैत अछि। दण्ड-निर्धारणमे प्रदीपक सहयोग आ पछतावा, मनोजक भूमिका, केशवक उत्तरदायित्व आ सौरभक विशिष्ट ज्ञानक स्तर पर विचार होइत अछि। ईशान आ मृणालिनी बुझैत छथि जे एहि निर्णयसँ सत्यप्रकाशक मृत्यु अपने-आप सिद्ध नहि होइत। पुरान मामलामे देवांशुक विरुद्ध परिस्थितिजन्य साक्ष्यक श्रृंखलापर अन्तिम बहस चलैत अछि। अभियोजन गैरकानूनी दबाव, हरिचरणक हिंसक भूमिका, वाहनक उपयोग आ मृत्युक समय जोड़ैत अछि; बचाव प्रत्येक कड़ीमे शेष संशय देखबैत अछि। अदालतकेँ सम्भावना आ संदेहातीत प्रमाणक बीच निर्णायक रेखा खींचबाक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 26 | आधा उत्तरवला निर्णय आ प्रतिशोधसँ दूरी

समग्र कथासार

सत्यप्रकाश कर्णक मृत्युक सम्बन्धमे अदालत पुरान ‘साधारण सड़क-दुर्घटना’ निष्कर्षकेँ अविश्वसनीय मानैत अछि। हरिचरणक हिंसक दबाव-अभियान, सम्भावित वाहन-सम्बन्ध आ देवांशुद्वारा गैरकानूनी दबाव प्रारम्भ करबाक तथ्य पर विचार कऽ देवांशुकेँ जोखिमपूर्ण गैरकानूनी षड्यंत्रक सीमित दायित्वमे दोषी मानल जाइत अछि। मुदा हत्या कराबयक विशिष्ट निर्देश वा मृत्युक अभिप्राय संदेहातीत रूपेँ सिद्ध नहि होइत; ताहि आरोपक पूर्ण दोषसिद्धि नहि होइत। मृणालिनी राज्यद्वारा मान्य कएल गेल आंशिक सत्य ग्रहण करैत छथि, मुदा क्षमा अथवा प्रतिशोधक सार्वजनिक प्रदर्शनसँ दूर रहैत छथि। ईशान नदीक कात सोचैत अछि जे न्यायक परिणाम जानब आ जीवित लोकक रक्षा करब

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 26 | आधा उत्तरवला निर्णय आ प्रतिशोधसँ दूरी

समग्र कथासार

2 / 2

दुनू अलग दायित्व अछि। रचना जाँच-पद्धतिक स्थायी मूल्य फेर रेखांकित करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 27 | निर्णयक बाद न्यायकेँ जीवनमे बदलनाइ

समग्र कथासार

ईशान अपन म्यूल-खाता जोखिम प्रतिवेदनमे व्यावहारिक अनुशंसा जोड़ैत अछि। मृणालिनी धनेश्वरीक पुरान पोथी सुरक्षित करैत छथि। अपराधक मुकदमा समाप्त होइतो डिजिटल जोखिम, पीड़ितक कठिनाई आ संस्थागत सुधारक प्रश्न बचल रहैत अछि। सौरभ आ देवांशु अपील करैत छथि। तृषा अपन पिता प्रदीपसँ धीरे-धीरे संवाद पुनः आरम्भ करैत छथि। अम्बर संस्थागत सुधारक दबावमे अपन संचालन जारी रखैत अछि; रचना नव पद पर स्थानान्तरित होइत छथि। ईशानक प्रशिक्षण आ सबीना, अभिषेक, शैलेश, रितेश जकाँ व्यक्तिक सामाजिक पुनर्स्थापन अलग-अलग गति सँ आगाँ बढ़ैत अछि। एहि समूहक कथासार न्यायालयक आदेशसँ पीड़ितक रोजमर्रा जीवन धरि कथाक केन्द्रकेँ स्थानान्तरित करैत अछि।

समूह 28 | अनिरुद्धक अन्तिम पाठ आ बैंक-दिशानिर्देश

समग्र कथासार

ईशानक परियोजना विश्वविद्यालयसभक प्रशिक्षणमे प्रवेश करैत अछि। सबीना अपन कारोबार, मंजरी अपन नर्सिङ्ग शिक्षा, शैलेश शिक्षक-जगत आ रितेश मोबाइल-मरम्मतिक काज दिस धीरे-धीरे आगाँ बढ़ैत छथि। देवांशु अपील करैत अछि, मुदा मृणालिनी दण्डक वर्ष गनि मृत पतिदेवकेँ फेर नहि पायबाक यथार्थ स्वीकार करैत छथि। पूर्व पुलिस अधीक्षक अनिरुद्ध चौधरी अस्वस्थ होइत छथि; ईशानकेँ सही निष्कर्षसँ बेसी सही पद्धतिक महत्त्व कहि ओ विदा लैत छथि। हुनकर मृत्युसँ परिवार आ जाँचक एक पीढ़ीक अन्त होइत अछि। बादमे राज्य सरकार म्यूल-खाताक जानि-बुझि सहभागी, चेतावनीक बादो लाभ लेल जुड़ल व्यक्ति आ ठगी/अज्ञानक शिकारक बीच भेद करबाक नव दिशा-निर्देश दैत अछि।

समूह 28 | अनिरुद्धक अन्तिम पाठ आ बैंक-दिशानिर्देश

समग्र कथासार

आंशिक संस्थागत सुधार एक ठोस उत्तर बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 29 | सार्वजनिक स्मृति आ घरक निजी दुख

समग्र कथासार

सत्यप्रकाशक आपत्ति सार्वजनिक वित्तीय अभिलेखमे उचित नामसँ दर्ज होइत अछि। एक शोधार्थी ओकर उपयोग करबाक अनुमति पुछैत अछि; मृणालिनी सार्वजनिक सत्य आ घरक निजी पीड़ाक सीमा अलग करैत छथि। कमला-बलान लग नव तटबन्ध-कार्य शुरू होइत अछि। ईशान नदी, गाम, पुरान घर आ बिज्जीक प्रतीककेँ नब दृष्टिसँ देखैत अछि। रचना नब कार्यालयमे नव जाँचकर्तासभकेँ प्रमाण आ अनुमानक अन्तर सिखबैत छथि। परिवारक कथा एखन एक व्यक्तिक हत्या-जाँच धरि सीमित नहि, बल्कि अधिकार, पारदर्शिता आ स्मृतिक सार्वजनिक प्रश्न बनैत अछि। मुकदमाक दण्ड समाजमे धीरे-धीरे चर्चासँ हटैत अछि, मुदा प्रभावित व्यक्तिक निजी जीवनमे ओकर असर जारी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 30 | अपीलक समय आ परिवारक नव भाषा

समग्र कथासार

उच्च न्यायालयमे सौरभ आ केशवक अपील स्वतंत्र रूपेँ चलैत अछि। केशवक किछु प्रमुख वित्तीय अपराधक निष्कर्ष कायम रहैत अछि; कारागारमे पुनर्वासिक साहित्य पढ़ैत ओ रकमक पाछाँ छिपल मनुष्यसभक कठिनाई बुझय लगैत अछि। प्रदीप शेष कारावास पूरा कऽ बाहर अबैत अछि, मुदा घरक विश्वास फेर बनौनाइ ओकर नब काज अछि। बेटी तृषा कानून पढ़ैत स्वयं दोष, आशय आ दण्डक प्रश्नकेँ निजी अनुभवसँ मिलबैत अछि। मृणालिनी ईशानकेँ कथा लिखबाक प्रेरणा दैत छथि, मुदा भावुक निष्कर्ष थोपबाक पक्षमे नहि छथि। रचना अपारदर्शी निष्कर्षक बदला आवश्यक सावधानीक प्रशिक्षण जारी रखैत छथि। बैंकक दिशानिर्देशक समीक्षा आगाँ बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 31 | धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोष आ लेखनक आरम्भ

समग्र कथासार

शैलेशक विभागीय मामला, सबीनाक बेटीकेँ चिकित्सा-सहायता, अभिषेकक जागरूकता अभियान आ उत्तरायण निधिक पुनर्गठन जकाँ घटनासभ अपराध-पश्चात समाजक नब अवस्थाकेँ देखबैत अछि। मृणालिनी धनेश्वरीक नामपर विद्यालयमे पुस्तक-कोष स्थापित करैत छथि। वैदेही झा शोधक रुचि लऽ गाम अबैत छथि आ न्यायिक अनिश्चितताक दीर्घ सामाजिक प्रभाव बुझबाक प्रयास करैत छथि। नदीक कात, घरक पोथी आ दादीक स्मृतिक बीच ईशान अनिरुद्धक पुरान कलमसँ अपन कथा लिखब आरम्भ करैत अछि। अपराध-जाँचक बाहरी घटनासभ आब आत्मकथात्मक नहि, सार्वजनिक प्रश्नसभसँ भरल उपन्यासक सामग्री बनय लगैत अछि।

समूह 32 | पाण्डुलिपि, शोध आ पुनर्वासक विस्तृत जीवन

समग्र कथासार

ईशानक पाण्डुलिपिक पन्ना बढ़ैत अछि। वैदेही झा अपन शोधमे दीर्घकालीन न्यायिक अनिश्चितताकेँ सामाजिक अनुभवसँ जोड़ैत छथि। रचना नव जाँचमे छोट ठगी-जालकेँ आवश्यक मात्रामे जाँचैत छथि; प्रत्येक समानता पैघ षड्यंत्र नहि बनैत। विद्यालयक पुस्तक-कोष, प्रदीपक वित्तीय-साक्षरता कक्षा आ रितेशक व्यवसाय सम्बन्धी अनुभव समाजमे सुधरबाक व्यावहारिक रूप देखबैत अछि। मनोजक अपील आंशिक सफल होइत अछि, मुदा समग्र निर्दोषता घोषित नहि होइत। सौरभ अपन अपीलक अभिलेख मँगबैत अछि। ईशान लिखैत समय दोषी व्यक्तिक निजी जीवनक प्रतिनिधित्व कतेक करू, एहि लेखकीय दुविधासँ गुजरैत अछि। तृषा आ वैदेही जकाँ नव पीढ़ीक स्त्री पात्र कानूनी-सामाजिक समझक नब आवाज

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 32 | पाण्डुलिपि, शोध आ पुनर्वासक विस्तृत जीवन

समग्र कथासार

2 / 2

बनैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 33 | बिज्जीक परिवार, वास्तविक गोहि आ रूपकक सीमा

समग्र कथासार

गढ़ नारिकेलक आँगनमे बिज्जीक नव परिवार देखाइत अछि। कमला-बलानक किनारपर एक वास्तविक गोहि सेहो देखायलाक बाद ईशान बुझैत अछि जे रूपक आ जीव-जगत दुनूकेँ एक नहि मानल जा सकैत। घरमे मृणालिनीक उमेर बढ़ैत अछि; ओ अपन जीवनक छोट-छोट वस्तु आ स्मृति सँ जुझैत छथि। ईशान पाण्डुलिपि मित्रसभकेँ पढ़बबैत अछि आ लेखकीय भाषा पर प्रतिक्रिया प्राप्त करैत अछि। तृषा कानूनक अध्ययनमे अभिव्यक्तिक सार्वजनिक प्रभाव देखैत छथि। रचना एक जाँचमे अनावश्यक गिरफ्तारिसँ एक व्यक्तिकेँ बचा न्यायिक सावधानीक नकारात्मक उपलब्धि—जे अन्याय नहि भेल—समझबैत छथि। धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषक पहिल वर्ष पूरा होइत अछि; छोट संस्थागत परम्परा सतर्कताक वाहक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 34 | अम्बरक आत्मसमीक्षा आ लेखनक मानवीय धरातल

समग्र कथासार

विहान सारंग ईशानकेँ अम्बरक सार्वजनिक संगोष्ठीमे बजबैत अछि। ईशान व्यक्तिक नामक बदला जोखिम, उत्तरदायित्व आ संस्थागत सजगतापर जोर दैत अछि। अम्बरक भीतर असुविधाजनक प्रश्न राखबाक आवश्यकता स्वीकार होइत अछि। सौरभक उच्चतर अपील आंशिक सफल होइत अछि, मुदा मुख्य आर्थिक सहायता सम्बन्धी दोष बनल रहैत अछि। केशव कारागारमे लिखनाइ शुरू करैत अछि। रितेश, शैलेश आ मंजरी अपन अनुभवक आधारपर अन्य लोककेँ आर्थिक ठगीसँ सावधान करैत छथि। ईशान पाण्डुलिपिमे अनेक पात्रक दुःख समेटबाक सीमा बुझैत अछि; मनुष्यकेँ केवल अपराध-उदाहरण नहि बनबाबय चाहैत अछि। मृणालिनीक एक रातिक भयक कम होयब सेहो कथा मे प्रगतिक महत्त्वपूर्ण रूप ठहरैत अछि।

समूह 35 | नब जोखिमक भाषा आ सुधारक छोट प्रमाण

समग्र कथासार

ईशानक पाण्डुलिपि आ घरक दैनन्दिन जीवन एक-दोसराक बीच चलैत अछि। बैंक संघसँ नब आर्थिक जोखिमक सूचना भेटैत अछि; रचना सेहो समान तरहक एक मामला देखैत छथि। ईशान एकर आधारपर प्रशिक्षण-सामग्री तैयार करैत अछि। ठगी, खाताक गलत उपयोग आ चेतावनीक भाषा समयानुसार बदलैत अछि, ताहि कारण पुरान नियमकेँ यथावत दोहरायब पर्याप्त नहि। तृषा एक कानून-लेख लिखैत छथि; सबीना अपन कारोबारक अनुभवसँ चेतावनीक महत्त्व देखबैत छथि। शैलेशक विद्यालयमे एक छात्र जुआ-जकाँ खेलमे पकड़ा जाइत अछि आ ओकरा केवल अपराधी घोषित करबाक बदला सुधारक अवसर पर विचार होइत अछि। रितेशक व्यवसाय स्थिर होइत अछि; एहि प्रसंगसभमे पुनर्वास नाटकीय घटना नहि, अनेक छोट सचेत निर्णय

समूह 35 | नब जोखिमक भाषा आ सुधारक छोट प्रमाण

समग्र कथासार

2 / 2

बनैत अछि।

समूह 36 | संस्थागत रिक्त स्थान आ वृद्ध होइत मृणालिनी

समग्र कथासार

विहान अम्बरमे प्रशिक्षण-कक्ष बनबैत अछि जतय अपूर्ण प्रश्नकेँ प्रश्न रूपेँ राखबाक स्थान अछि। सौरभ सजा भोगि बाहर अबैत अछि, मुदा सार्वजनिक जीवनमे ओकर भूमिका सीमित रहैत अछि। मृणालिनी वृद्ध होइत छथि; धनेश्वरीक पोथी हुनकर सिरहाना लग रहैत अछि। वैदेही अपन शोधप्रबन्धक अंतिम प्रति लऽ अबैत छथि। रचना प्रशिक्षण पुस्तिका तैयार करैत छथि। ईशानक पाण्डुलिपि पूर्ण उपन्यासक आकार ग्रहण करैत अछि, मुदा ‘समाप्ति’क भाव एखन नहि बनैत। कमला-बलानक पानि, गाम आ परिवारक छोट दिनचर्या अपराध-कथाक बादो जीवित अछि। मृणालिनीक स्वास्थ्य चिन्ताजनक होमय लगैत अछि; ईशान लेखनक गति घटा घरक देखभाल दिस मुड़ैत अछि।

समूह 37 | माएक बीमारी आ बेटाक प्रथम दायित्व

समग्र कथासार

मृणालिनी धनेश्वरीक पोथी सिरहाना लग राखि जीवनक शेष समयमे अपन सम्बन्धसभ पर विचार करैत छथि। ईशान लेखन धीमा करैत अछि; माए ओकरा पहिने बेटा बनि रहबाक बात कहैत छथि। पोथीक आठम पाँति, छोट अनाम पर्चा आ सावधानीक सूत्र पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत अछि। रचना अपन प्रशिक्षणमे भयक सामाजिक असर पर चर्चा करैत छथि। तृषा परिवारक दायरा सँ बाहर साझा न्यायिक समझक वाहक बनैत छथि। मृणालिनीक श्वासक असुविधा बढ़ला पर अस्पतालक देखभाल आरम्भ होइत अछि। स्वास्थ्य किछु समय स्थिर होइतो वृद्धावस्थाक सीमा स्पष्ट रहैत अछि। ईशानक अनुभव अछि जे हर घटनाकेँ कथा वा सिद्धान्तमे बदलनाइ उचित नहि; कतेको क्षणमे केवल संग रहब जरूरी अछि।

समूह 38 | मृणालिनीक अन्तिम समय आ शोकक मौन

समग्र कथासार

रचना एक अनाम पन्नाक भाषा पर सोचैत छथि, जखन कि ईशान अपन पाण्डुलिपिक अन्तिम तिहाई फेर पढ़ैत अछि। मृणालिनीक स्वास्थ्य अचानक बहुत बिगड़ैत अछि। अस्पतालक निर्णय चिकित्सकीय यथार्थ, इच्छा आ परिवारक चिन्ताक बीच लेल जाइत अछि। भोरसँ पहिने मृणालिनी शान्तिपूर्वक चलि जाइत छथि; न कोनो रहस्योद्घाटन, न अन्तिम नाटकीय भाषण। ईशान हुनकर हाथ पकड़ने रहैत अछि आ ओहि क्षण लेखक बनबाक बदला पुत्र बनि रहैत अछि। अन्त्येष्टि आ शोकक बाद घरक खाली बरामदा नव अर्थ लैत अछि। धनेश्वरीक पोथी, रचनाक पत्र आ तृषाक उपस्थिति ईशानकेँ एकदम असगर नहि रहय दैत अछि; तथापि पीड़ाक प्रतिनिधित्व करब फेर कठिन बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 39 | शोकक बाद पोथी आ संस्थाक साझा पहरा

समग्र कथासार

ईशान धीरे-धीरे पाण्डुलिपि फेर खोलैत अछि। मृणालिनीक मृत्यु बाद ऋतु आ समयक अनुभव बदलि जाइत अछि। धनेश्वरीक पोथी विद्यालयक पुस्तकालयमे सुरक्षित रखबाक प्रस्ताव पर विचार होइत अछि, मुदा पारिवारिक वस्तुकेँ केवल प्रदर्शन-सामग्री बनाबयक सीमा उठैत अछि। तृषा कानून पूरा कऽ अधिवक्ता बनैत छथि आ प्रदीपसँ सम्बन्धमे पुरान अपराधक छाया संपूर्ण परिचय नहि रहैत। रचना उच्च पद पर प्रशिक्षणक माध्यमसँ न्यायिक पद्धति हस्तान्तरित करैत छथि। अम्बरक प्रशिक्षण-कक्षमे असुविधाजनक प्रश्नक जगह बचल रहैत अछि। केशव सजा पूरा कऽ बाहर अबैत अछि। एहि घटनासभमे पहरा आब एक परिवार वा अधिकारीक निजी गुण नहि, शिक्षा, व्यवसाय आ संस्थामे वितरित अभ्यास बनि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 39 | शोकक बाद पोथी आ संस्थाक साझा पहरा

रहल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 40 | नव सार्वजनिक जीवन, शोध आ अन्तक प्रश्न

समग्र कथासार

सौरभ सार्वजनिक प्रतिष्ठामे सावधान दूरी रखैत अछि; प्रदीपक घरमे तृषा धनेश्वरीक सूत्रकेँ नव रूप दैत छथि। शैलेशक विद्यार्थी, सबीनाक दोकान आ वैदेहीक प्रकाशित शोधक माध्यमसँ पुरान त्रासदीक अनुभव अनाम चेतावनी आ सामाजिक ज्ञान बनैत अछि। ईशान अपन उपन्यासक अन्तिम खण्ड लिखैत सोचैत अछि जे अदालतक निर्णय कथा समाप्त करबाक पर्याप्त कारण नहि। धनेश्वरीक पोथी, अनिरुद्धक कलम आ मृणालिनीक चश्मा ओकर सोझाँ एके टेबुलपर पड़ल अछि। रचना सेवानिवृत्त होइत छथि, मुदा प्रशिक्षण आ सही प्रश्नक संस्कार जीवित रहैत अछि। अन्ततः ईशान अनावश्यक साक्षात्कार, पूर्ण निर्णय आ हर पात्रक अन्तिम वाक्यक लोभसँ स्वयंकेँ बचबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 41 | लेखनक अन्तिम दिशा आ खुलल रहबाक अधिकार

समग्र कथासार

कमला-बलानक किनार नब पक्का पथ बनि गेल अछि, मुदा नदीक जीव, गामक दैनन्दिन जीवन आ स्मृति पूर्णतः स्थिर नहि भेल अछि। ईशान उपन्यासक अन्तिम पन्ना लिखैत अछि। रचना आ तृषासँ संवाद ओकरा भाषा, घटनाक गति आ न्यायक अनिश्चितताक मर्यादा पर फेर सोचबैत अछि। अम्बरक प्रशिक्षण-कक्षमे प्रश्न पूछबाक परम्परा आगाँ बढ़ैत अछि; केशव आ सौरभ अपन-अपन सीमित सार्वजनिक जीवनमे अछि। ईशान पुरान घरक मरम्मति करबैत बुझैत अछि जे घरक काजो कहियो पूर्ण अर्थमे ‘अन्तिम’ नहि होइत। जेना अपराधक जाल अनेक रूप धारण कएलक, तहिना सावधानीक अभ्यास सेहो पीढ़ी आ परिस्थिति अनुसार नव होमय पड़त।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समूह 42 | बिज्जी, गहुमन आ गोहिक बीच अधूर पहरा

समग्र कथासार

ईशान अपन पाण्डुलिपिक आखिरी संशोधन करैत अछि; तृषा ओकर अन्तक गति आ भाषा पर सुझाव दैत छथि। राति नदीक कात जा कऽ ओ गहुमन, गोहि आ बिज्जीक प्रत्यक्ष अस्तित्वक बीच परिवारक दीर्घ इतिहास स्मरण करैत अछि। घर लौटि ओ अन्तिम पृष्ठ लिखैत अछि, मुदा जीवनक सभ प्रश्नक पूर्ण समाधान देबाक प्रयास नहि करैत। धनेश्वरीक अधूर पोथी, अनिरुद्धक कलम आ मृणालिनीक चश्मा घरमे सतर्कताक विरासत बनल अछि। विद्यालयक बच्चा पुस्तक लेन-देन करैत छथि; गाममे किसान, विद्यार्थी आ साधारण जीवन चलैत अछि। अन्तिम दृश्य मे गहुमन घासमे, गोहि पानिक भीतर आ बिज्जी किनारपर अछि। प्रकाश मद्धिम होइत अछि, मुदा पहरा समाप्त नहि होइत—ई उपन्यासक खुलल अन्त अछि।

समूह 42 | बिज्जी, गहुमन आ गोहिक बीच अधूर पहरा

समग्र कथासार

एहि सूचीमे मूल कथा-प्रसंगक आरम्भिक कथनक संक्षिप्त अंश देल अछि, जाहिसँ पाठक मूल पाण्डुलिपिमे सम्बन्धित प्रसंग चिन्हि सकथि। ई उद्धृत आरम्भक टुकड़ा थिक, स्वतंत्र सारांश नहि। समूहवार कथासार ऊपर देल गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 01 — मूल प्रसंग 1–10

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 01 — मूल प्रसंग 1–10

001. गढ़ नारिकेलमे ओहि राति बरखा नहि भेल छल, तैयो माटि भीजल छल। दिनमे कमला-बलानक एकटा पातर धार...

002. आठ बरख बाद गढ़ नारिकेल बदलि गेल छल।

003. अगिला सप्ताह काम शुरू भेल।

004. राजधानी नगरक लोक निर्माण विभागमे सहायक लेखाधिकारी मयंक झा सत्यप्रकाशकेँ पहिने सँ चिन्हैत...

005. सत्यप्रकाशक पाँचम फोन साँझमे आयल, जखन ओ बाँधक साइट सँ घर घुरि रहल छलाह।

006. दू सप्ताह बाद सत्यप्रकाश मरि गेलाह।

007. जिला पुलिस अधीक्षक अनिरुद्ध चौधरी दुर्घटनास्थलपर सामान्यतः नहि जाइत छलाह। मामला थाना स्तर...

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

सारांश-समूह 01 — मूल प्रसंग 1–10

भोरमे बिज्जी फेर सत्यप्रकाशक आँगनमे आयल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 02 — मूल प्रसंग 11–20

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

सारांश-समूह 02 — मूल प्रसंग 11–20

011. अनिरुद्ध चौधरीक मेजपर तीन वस्तु एक संग पहुँचल।

012. परित्यक्त गोदाम शहरक बाहरी भागमे छल, मुदा “परित्यक्त” केवल कागच पर।

013. कौशल महतो दुपहर धरि थाना पहुँचि गेल।

014. मयंक झा राजधानी नगरसँ साँझक बस पकड़ि अयलाह।

015. सत्यप्रकाशक घरमे शोकक भीड़ कम होमय लागल।

016. जारल वाहनक जाँच तीन दिन बाद पहिल झटका देलक।

017. दबाव सचमुच आयल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 03 — मूल प्रसंग 21–30

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 03 — मूल प्रसंग 21–30

021. लोकसेतुक पंजीकृत कार्यालय एक सांस्कृतिक केन्द्रक ऊपर दू कोठलीमे छल।

022. कार्यालय छोड़ैत समय मयंक आस्ते सँ कहलनि—“तारीखक गलती संयोग भऽ सकैत अछि।”

023. मृणालिनीक घरक बाहर एक साँझ मोटरसाइकिल रुकल।

024. अगिला सप्ताह सरकार एक संयुक्त जाँच-व्यवस्था स्वीकृत केलक।

025. नैना वर्माक काज शुरू भेल भुगतान-अभिलेखसँ।

026. दू सप्ताहक भीतर पहिल ठोस सम्बन्ध भेटल।

027. “प्रणव बाबू”क खोजमे पाँच प्रणव निकलल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 04 — मूल प्रसंग 31–40

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 04 — मूल प्रसंग 31–40

031. कक्षमे फेर बैठक भेल।

032. प्रणवेश स्वयं पुलिस लग आयल।

033. प्रणवेशक बयान तखने लिखल नहि गेल।

034. दिगन्त कार्यालयमे देवांशु रक्षित साँझ धरि बैसल छल।

035. गढ़ नारिकेलमे ईशान ओहि राति पहिल बेर बाबूक पुरान कागच अपन हाथसँ क्रमबद्ध करैत छल।

036. राति गढ़ नारिकेलमे कमला-बलानक कछार पर कुहेस उतरल।

037. प्रणवेश पाठकक सुरक्षा लेल ओकरा शहरसँ बाहर एक सरकारी अतिथि-गृहमे राखल गेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 05 — मूल प्रसंग 41–50

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 05 — मूल प्रसंग 41–50

041. जनविश्वास सहकारी समिति कागच पर लगभग निष्क्रिय संस्था छल।

042. जितेन्द्र पाल अस्पतालक बिछौनापर बहुत कमजोर छल।

043. प्रणवेश द्वारा बताओल एक बात अन्ततः स्वतन्त्र प्रमाणसँ पुष्ट भेल।

044. सत्यप्रकाशक फोन अभिलेख फेर खोलल गेल।

045. अम्बरक संस्थापकक नाम छल—विहान सारंग।

046. दिगन्त विरुद्ध पहिल कानूनी कार्रवाई हत्या लेल नहि, वित्तीय अनियमितता लेल भेल।

047. प्रणवेशकेँ अदालतक समक्ष बयान लेल आनबाक दिन मौसम खराब छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

सारांश-समूह 05 — मूल प्रसंग 41–50

करबाक आरोपमे...

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 06 — मूल प्रसंग 51–60

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 06 — मूल प्रसंग 51–60

051. देवांशुक गिरफ्तारीक बाद सत्यप्रकाशक घरमे पहिल बेर लोक मिठाई लऽ कऽ आयल।

052. मामला अदालतमे चलऽ लागल।

053. आर्थिक मामलामे देवांशु दोषी सिद्ध भेल।

054. कन्हैया रजकक नाम औपचारिक रूपेँ साफ भेल।

055. मोहन पासवानक परिवारकेँ क्षतिपूर्ति भेटल।

056. वर्ष बीतल।

057. गढ़ नारिकेलमे ईशान कॉलेज जाएबाक उमेरक भऽ गेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 07 — मूल प्रसंग 61–70

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

सारांश-समूह 07 — मूल प्रसंग 61–70

061. कमला-बलानक किनार पर धनेश्वरी बहुत बूढ़ भऽ गेल छलीह।

062. ईशानक नब कार्यालय राजधानी नगरक काँचवला व्यावसायिक भवनमे छल।

063. अम्बर इंटरैक्टिव आब केवल खेल-परिणामक अनुप्रयोग नहि छल।

064. पहिल सप्ताहमे किछु विशेष नहि भेटल।

065. अभिषेक झा एहि बीच अपन छात्रावासक कोठरीमे तीन राति लगातार नहि सुतल।

066. अम्बरक आधिकारिक प्रणालीमे “म्यूल खाता” शब्द कतहु नहि छल।

067. रितेश अभिषेकक खातामे पहिल भुगतान अनौलक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 08 — मूल प्रसंग 71–80

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 08 — मूल प्रसंग 71–80

071. मंजरीक प्रवेश छूटि गेल।

072. राजधानी नगरक साइबर थाना मे निरीक्षक रचना सिन्हा अभिषेकक बयान लेलनि।

073. अभिषेकक फोनसँ रचना कैँ कोनो पैघ अपराधी तुरन्त नहि भेटल।

074. ईशानक दलकैँ एक नब आँकड़ा भेटल।

075. मृणालिनी एखन गढ़ नारिकेलमे छोट पुस्तक-दोकान चलबैत छलीह।

076. राज्य साइबर केन्द्रमे अभिषेकक बयान अन्य शिकायतसभसँ मिलाओल गेल।

077. अम्बरक “रात्रि कक्ष” एहि बीच तेजी सँ फैलि रहल छल।

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 09 — मूल प्रसंग 81–90

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 09 — मूल प्रसंग 81–90

081. मनोज नायकक पीछा करैत पुलिस एक एहन ठाम पहुँचल जतऽ जुआक वास्तविक रूप पहिल बेर प्रत्यक्ष भेल।

082. छापाक खबर मीडिया पर आयल।

083. जब्त कम्प्यूटरक परीक्षणसँ एक विचित्र नाम उभरल—“उत्तरायण।”

084. मनोज नायक अन्ततः पकड़ा गेल—भागैत नहि, अपन घरमे।

085. ईशानक विश्लेषणक अन्तिम प्रतिवेदन अम्बरक निदेशक-मण्डल धरि पहुँचल।

086. ओ राति ईशान पहिल बेर माएकेँ फोन नहि, अनिरुद्धकेँ केलक।

087. गढ़ नारिकेलमे ओही राति मृणालिनी दोकान बन्द करैत देहरी लग एक बिज्जी देखलीह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

सारांश-समूह 09 — मूल प्रसंग 81–90

ईशान कार्यालयक छतपर राति अकेले ठाढ़ छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 10 — मूल प्रसंग 91–100

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 10 — मूल प्रसंग 91–100

091. विहान सारंगक औपचारिक बयान अगिला दिन चारि घण्टा चलल।

092. ओही साँझ राज्य आर्थिक-अपराध शाखाकेँ केन्द्रसँ सूचना आयल।

093. अन्तर-एजेन्सी बैठक राजधानी नगरमे नहि, दिल्लीमे भेल।

094. सात खातामे पाँच छोट व्यवसायीक नाम पर छल।

095. सातम खाता एक एहन युवकक छल जे एक महीना पहिने मरि चुकल छल।

096. पवनक माए घरक आँगनमे अनाज सुखा रहल छलीह जखन दल पहुँचल।

097. नीलकण्ठ एग्रीगेट्सक दफ्तर पहिल नजरिमे जाँचक सभ अनुमान खराब करैत छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 11 — मूल प्रसंग 101–110

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 11 — मूल प्रसंग 101–110

101. केशव मेहता एहि बीच अम्बर कार्यालय आबि रहल छल, मुदा ओकर व्यवहार बदलि गेल।
102. अगिला भोर अम्बर निदेशक-मण्डल केशव मेहताकेँ अवकाश पर पठौलक।
103. ईशानकेँ अम्बर खातासँ औपचारिक रूपेँ अलग कऽ देल गेल।
104. ओहि सप्ताह धनेश्वरीक स्वास्थ्य अचानक बिगड़ल।
105. गढ़ नारिकेलमे अन्त्येष्टि बाद घर बहुत चुप भेल।
106. अभिषेक झाक घरमे सेहो समय रुकल नहि छल।
107. एन.आई.ए.क अलग जाँचसँ एक महीना बाद छोट डिजिटल अभिलेख राज्य दलकेँ वैधानिक प्रक्रिया सँ हस्त...

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 12 — मूल प्रसंग 111–120

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 12 — मूल प्रसंग 111–120

111. लिफाफा ओतहि नहि खोलल गेल।
112. अनिरुद्ध एहि राति बहुत देर जागल रहलाह।
113. गढ़ नारिकेलमे धनेश्वरीक श्राद्धक बाद ईशान राजधानी नगर लौटबाक तैयारी करैत छल।
114. बिरजू साहक कोठीपर अगिला भोर स्थानीय पुलिसक पहरा लगा देल गेल।
115. बिरजू पुरान कालक दलाल छल—ई बात ओ बिना घुमाओने मानि लेलक।
116. ओहि राति बिरजू साह अचानक बीमार पड़ल।
117. शव-परीक्षणमे तत्काल कोनो विषाक्तता संकेत नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 13 — मूल प्रसंग 121–130

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 13 — मूल प्रसंग 121–130

121. शशांक देवव्रत बैठक लेल स्वयं समय देलक।
122. ओहि दिन ईशानकेँ औपचारिक रूपेँ एक नब दायित्व भेटल।
123. आँकड़ा विचित्र कथा कहैत।
124. प्रदीप महाजन अन्ततः स्वयं सामने आयल।
125. जिला काराक प्रवेश-द्वार प्रदीप कल्पना सँ छोट छल।
126. पहिल मुलाकातमे पत्नी नहि आयलीह।
127. मजिस्ट्रेट समक्ष प्रदीपक विस्तृत बयान धीरे-धीरे भेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 14 — मूल प्रसंग 131–140

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 14 — मूल प्रसंग 131–140

131. समृद्धि ग्राम-वित्त मंडलक परिसमापक बहुत पहिले मरि चुकल छल।
132. शशिभूषण लालक परिवारक खोजमे एक बेटी भेटलीह—
133. मुदा अदिति एक अन्तिम बात कहलीह—
134. राति ईशान गढ़ नारिकेलक पुरान घर फोन केलक।
135. जिला कारामे प्रदीपक दोसर मुलाकातमे बेटी आयली।
136. कमला-बलान पर बरखा शुरू भेल।
137. राजधानी नगरमे ओहि समय रचना सिन्हाक टेबुलपर एक नब कागच राखल जा रहल छल।

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 15 — मूल प्रसंग 141–150

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 15 — मूल प्रसंग 141–150

141. देवांशु रक्षित एहि समय कारावास काटि चुकल छल।
142. हरिचरण मंडलक पुरान फाइल खोलल गेल।
143. मृणालिनीकेँ रचना स्वयं भेटलीह।
144. वर्तमान जुआ-जाँचमे पहिल निर्णायक तलाशी केशव मेहताक घर आ निजी कार्यालयपर एक्के भोर भेल।
145. केशव गिरफ्तार भेल।
146. केशव न्यायिक हिरासतमे गेल।
147. जेल पुस्तकालयमे प्रदीपक भेट एक नव बंदीसँ भेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 16 — मूल प्रसंग 151–160

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 16 — मूल प्रसंग 151–160

151. नलिन बरुआ कहलक—

152. नलिन एक आर बात बतौलक।

153. अदिति लाल एहि बेर स्वयं एक पुरान पेटी निकाललीह।

154. रचना एहि सभ नब सामग्रीक आधार पर पुरान मृत्यु-जाँच औपचारिक रूपेँ पुनः खोलबाक सिफारिश केलनि।

155. केशवक गिरफ्तारी पछि निजी जुआ-जाल तुरन्त बन्द नहि भेल।

156. गढ़ नारिकेलमे एक साँझ मृणालिनी अकेली बरामदामे बैसल छलीह।

157. राजधानी नगरक जाँच-कक्षमे रचना सिन्हा राति अकेली बैठल छलीह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

सारांश-समूह 16 — मूल प्रसंग 151–160

भेटल—बासुदेव मरिक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 17 — मूल प्रसंग 161–170

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 17 — मूल प्रसंग 161–170

161. पुरान परिवहन अनुज्ञप्ति अभिलेखसँ पाँच कौशल निकलल।
162. रचना एहि खोजक सूचना मृणालिनीकेँ तुरन्त नहि देलीह।
163. वर्तमान जुआ-जालमे मनोज नायक पर दबाव बढ़ि रहल छल।
164. रितेशक बयान मजिस्ट्रेटक सामने लेल व्यवस्था कएल गेल।
165. मनोज नायककेँ फेर पूछताछ लेल बजाओल गेल।
166. लोकविस्तार डिजिटल सेवाक कॉर्पोरेट कागचमे “उदय” नामक कोनो निदेशक नहि।
167. एहि बीच ऑनलाइन जुआक त्रासदी एक अन्य घरमे फूटल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 18 — मूल प्रसंग 171–180

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 18 — मूल प्रसंग 171–180

171. उदयनाथक वित्तीय व्यवहार साफ देखाइत।

172. पुरान सत्यप्रकाश जाँचमे सेहो एहन दू संसार बनाओल गेल।

173. मनोजक फोन अभिलेखमे एक नव तथ्य भेटल।

174. रघुवीर तीन दिन बाद राज्य सीमा पर पकड़ा गेल।

175. केशव, मनोज आ रघुवीरक अलग-अलग बयानक बीच एक नव नाम बेर-बेर नहि, एक बार मात्र आयल—

176. गढ़ नारिकेलमे मृणालिनी एहि राति सत्यप्रकाशक पुरान चश्मा हाथमे लेलनि।

177. रचना सिन्हा सौरभ बर्धनक फाइल खोललीह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 19 — मूल प्रसंग 181–190

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 19 — मूल प्रसंग 181–190

181. उदयनाथ पर तुरन्त गिरफ्तारी नहि भेल।
182. जिला कारामे प्रदीपक तीसरा महीना चलि रहल छल।
183. तृषा अगिला मुलाकातमे फेर आयली।
184. सौरभक वित्तीय इतिहासमे अपराधक पैसा सीधे ओकर निजी खातामे नहि भेटल।
185. रचना एहि संरचना पर सौरभकेँ फेर पूछलीह।
186. आलोक भसीनक पुरान कम्पनी-लैपटॉपक बैकअप वैधानिक रूपेँ उपलब्ध छल।
187. सौरभक गिरफ्तारीक खबर गढ़ नारिकेल पहुँचली।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 20 — मूल प्रसंग 191–200

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 20 — मूल प्रसंग 191–200

191. तीन दिन बाद रामअवतारक पोता स्वयं रचना कैँ फोन केलक।

192. सौरभ बर्धन न्यायिक हिरासतमे भेजल गेल।

193. ईशान एहि बीच म्यूल खाताक जोखिम-रिपोर्ट राज्य बैंक संघक सामने प्रस्तुत करैत छल।

194. मृणालिनी राति ईशानक प्रस्तुति विषय फोन पर सुनलीह।

195. रचना सिन्हा रातिक अन्तिम बैठकमे टीमकैँ दू फाइल सामने रखलीह।

196. रामअवतारक स्वास्थ्य फेर बिगड़ल।

197. गढ़ नारिकेलमे ओहि राति भीषण बरखा भेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

सारांश-समूह 20 — मूल प्रसंग 191–200

छोट छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 21 — मूल प्रसंग 201–210

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 21 — मूल प्रसंग 201–210

201. गढ़ नारिकेलक विद्यालय राहत-शिविरमे तीस परिवार रहैत छल।

202. भोर धरि कमला-बलानक पानि आर चढ़ल।

203. राजधानी नगरमे पुरान दुर्घटना-जाँचक वाहनक एक नब धागा बीमा अभिलेखसँ आयल।

204. रचना देवांशु रक्षितकेँ फेर एक बेर पूछबाक निर्णय लेलनि।

205. देवांशुक नब बयान तुरन्त सत्य नहि मानल गेल।

206. मृणालिनीकेँ खबर ईशान सँ नहि, रचना सँ भेटल।

207. नब जुआ-मामलामे मनोज नायक गिरफ्तार भेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 22 — मूल प्रसंग 211–220

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 22 — मूल प्रसंग 211–220

211. रचना सिन्हा पुरान जाँचक अंतरिम प्रतिवेदन लिखलनि।

212. मृणालिनी प्रतिवेदनक सार्वजनिक सार पढ़लीह।

213. नब जुआ-मामलाक आरोप-पत्र बनब शुरू भेल।

214. आरो एक सूची बनल—

215. राति राजधानी नगरमे रचना कार्यालय सँ निकललीह तऽ बरखा रुकि चुकल छल।

216. गढ़ नारिकेलक राति साफ छल।

217. नब अपराध-मामलाक पहिल विस्तृत सुनवाई राजधानी नगरक विशेष न्यायालयमे शुरू भेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 23 — मूल प्रसंग 221–230

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 23 — मूल प्रसंग 221–230

221. अभिषेकक गवाही आर कठिन छल।

222. रितेश दासक गवाही दिनभरि चलल।

223. रघुवीर तांतीक विरुद्ध मारपीटक मामला अपेक्षाकृत सीधा छल।

224. प्रदीप महाजन साक्षी-बॉक्समे आयल तऽ अदालतक वातावरण बदलल।

225. बचाव प्रदीपक जेल डायरीक एक अंश प्रस्तुत करय चाहलक—

226. केशव मेहताक बचाव रणनीति स्पष्ट छल—

227. सौरभ बर्धनक पक्ष आर जटिल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 24 — मूल प्रसंग 231–240

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 24 — मूल प्रसंग 231–240

231. पुरान सत्यप्रकाश-मामला न्यायालयमे प्रारम्भिक आरोप-विचार धरि पहुँचल।

232. देवांशु न्यायालय बाहर सीढ़ी उतरैत लड़खड़ायल।

233. नब मुकदमामे निर्णायक डिजिटल विशेषज्ञक गवाही आयल।

234. मयंक झा वित्तीय विशेषज्ञ रूपेँ साक्षी आयलाह।

235. अदालत बाहर शैलेश मंडलक पत्नी आरती पहली बेर ओकरा भेटबाक आयलीह।

236. रितेश दास सेहो सरकारी संरक्षण मे गवाह बनल बाद गाम लौटल।

237. सौरभ बर्धनक जमानत अवधि मे एक दिन उत्तरायण निधि स्वयं घोषणा केलक—

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 25 — मूल प्रसंग 241–250

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 25 — मूल प्रसंग 241–250

241. विशेष न्यायालयमे मुकदमा महीना-दर-महीना बढ़ैत रहल।

242. मनोज नायकक प्रतिपरीक्षणक दिन अदालत भरल छल।

243. रघुवीरक दू सहयोगी अलग मामला स्वीकार कऽ हलुक दण्डक आवेदन केलनि।

244. सौरभ बर्धनक पक्ष अन्तिम बहसमे कहलक—

245. केशव मेहताक अन्तिम बहस अधिक व्यक्तिगत भेल।

246. प्रदीप महाजनक वकील अन्तिम बहसमे दण्ड-निर्धारणक भविष्य दिस देखैत छल।

247. पुरान सत्यप्रकाश-मामलामे देवांशुक परीक्षण अलग न्यायालयमे धीमा चलैत।

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 26 — मूल प्रसंग 251–260

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 26 — मूल प्रसंग 251–260

251. बाहर मीडिया पहिल पाँच मिनटमे शीर्षक बना देलक—
252. दण्ड-निर्धारणक दिन प्रदीपक बेटी तृषा आयली।
253. केशवक दण्ड सुनैत विहान सारंग अदालतमे नहि छल।
254. मनोजक माए दण्ड सुनि रोइत कहलीह—
255. पुरान सत्यप्रकाश-मामलाक निर्णय एखन बाकी छल।
256. देवांशु-मामलाक अन्तिम बहसमे अभियोजन कहलक—
257. निर्णयक दिन मृणालिनी आयलीह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 27 — मूल प्रसंग 261–270

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 27 — मूल प्रसंग 261–270

261. ओहि साँझ कमला-बलानक किनार पर ईशान अकेले गेल।

262. राजधानी नगरमे रचना सिन्हा अंतिम संयुक्त समीक्षा-बैठकमे बोर्ड साफ करैत छलीह।

263. ईशान अपन म्यूल-खाता जोखिम परियोजनाक अंतिम सार्वजनिक प्रतिवेदनमे एक पाँति जोड़लक—

264. मृणालिनी एक दिन आँगन साफ करैत धनेश्वरीक भीजल पोथी धूपमे सुखेलनि।

265. राति देहरी बाहर सरसराहट भेल।

266. निर्णयक बाद शहर शान्त नहि भेल।

267. सौरभ बर्धन अपील दायर केलक।

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 28 — मूल प्रसंग 271–280

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 28 — मूल प्रसंग 271–280

271. ईशानक म्यूल-खाता परियोजना राज्यक दू विश्वविद्यालयमे प्रशिक्षण-पाठ्यक्रमक हिस्सा बनल।
272. सबीना खातूनक सिलाइ-दोकान फेर चलल।
273. अभिषेकक बहिन मंजरी नर्सिङ्ग प्रशिक्षण पूरा करबाक कगार पर छलीह।
274. शैलेश मंडल विद्यालयक नौकरीमे तुरन्त वापस नहि आयल।
275. रितेश दासक मोबाइल-मरम्मति दोकानक नाम ओ बदललक—
276. देवांशु रक्षित दण्डक विरुद्ध अपील केलक।
277. अनिरुद्ध चौधरीक स्वास्थ्य तेजी सँ गिरल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 29 — मूल प्रसंग 281–290

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 29 — मूल प्रसंग 281–290

281. उदयरेखा लोकन्यास आ उत्तरायणक नब सार्वजनिक अभिलेखमे सत्यप्रकाशक आपत्ति पूरा नामसँ दर्ज भेल।

282. कमला-बलानक किनार पर नव तटबन्ध-मरम्मति शुरू भेल।

283. एक साँझ छोट बिज्जी आँगनमे आयल।

284. ईशान राति माएक संग बरामदामे बैसल।

285. राति गहिर भेल।

286. रचना सिन्हाक नब कार्यालयमे पहिल प्रशिक्षण सत्र छल।

287. गढ़ नारिकेलमे भोरक पहिल उजास।

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 30 — मूल प्रसंग 291–300

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 30 — मूल प्रसंग 291–300

291. किछु दिन बाद कारामे वित्तीय अपराध विषय एक वैधानिक पुनर्वास सत्र भेल।
292. सौरभ जेलमे किछु अवधि काटय लागल।
293. प्रदीपक शेष कारावास पूरा भेला पर रिहाइ भेल।
294. तृषा पहिल वर्षक कानून कक्षामे “आपराधिक आशय” विषय पढ़ैत घर आयली।
295. मृणालिनी एक दिन ईशानकेँ कहलीह—
296. ईशान लिखनाइ शुरू नहि केलक।
297. रचना सिन्हा नब जिलामे जाँच करैत एक युवककेँ गिरफ्तार करबाक आदेश रोकलीह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 31 — मूल प्रसंग 301–310

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 31 — मूल प्रसंग 301–310

301. अभिषेक बैंकक एक स्थानीय जागरूकता शिविरमे स्वयंसेवक बनल।

302. उत्तरायण निधि पुनर्गठन बाद सौरभक नाम संचालक-मण्डलसँ हटाओल गेल।

303. मृणालिनी ओहि रकमक एक हिस्सा धनेश्वरीक नामपर गामक विद्यालयमे पुस्तक-कोष देलीह।

304. एक वर्ष बाद ईशानक प्रशिक्षणक छात्रसभमे सँ एक युवती गढ़ नारिकेल आयलीह।

305. संध्याकाल वैदेही कमला-बलानक किनार देखय गेलीह।

306. राति मृणालिनी पोथी खोललीह।

307. अगिला भोर मृणालिनी अकेली नदीक कात गेलीह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 32 — मूल प्रसंग 311–320

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 32 — मूल प्रसंग 311–320

311. रचना सिन्हाक नब जिलाक ठगी-जाल अपेक्षासँ छोट निकलल।
312. ईशानक प्रशिक्षणमे एक नब उदाहरण आयल।
313. मृणालिनी धनेश्वरी स्मृति-पुस्तक कोषक किताब देखय विद्यालय गेलीह।
314. प्रदीपक वित्तीय-साक्षरता कक्षा धीरे प्रसिद्ध होय लागल।
315. मनोज नायकक अपील आंशिक सफल भेल।
316. रितेश एक दिन मनोजक पिता सँ बजारमे टकरायल।
317. सौरभ बर्धन उच्चतर अपीलक तैयारीमे पुरान उत्तरायण अभिलेख माँगलक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 33 — मूल प्रसंग 321–330

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 33 — मूल प्रसंग 321–330

321. आँगनमे बिज्जीक नब परिवार स्थिर भऽ गेल।

322. एक दिन कमला-बलानक किनार पर सचमुच एक गोहि धूप खाइत देखायल।

323. मृणालिनी ओ पाँति पढ़लीह।

324. समय आर आगाँ बढ़ल।

325. एक राति मृणालिनी ईशानकेँ बजौलीह।

326. भोरमे कमला-बलान पर कुहेस।

327. ईशानक पाण्डुलिपि आब एक गोपनीय फोल्डरमे नहि रहि गेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 34 — मूल प्रसंग 331–340

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 34 — मूल प्रसंग 331–340

331. विहान सारंग अम्बरक नब कार्यालयमे ईशानकेँ एक सार्वजनिक संगोष्ठी लेल आमन्त्रण पठौलक।

332. ईशान अपन प्रस्तुति मे अपराधी नाम नहि लेल।

333. संगोष्ठी बाद विहान ईशानसँ अकेले कहलक—

334. सौरभक उच्चतर अपील आंशिक रूपेँ स्वीकार भेल।

335. केशव जेल पुस्तकालयमे नियमित लिखनाइ शुरू केलक।

336. रितेशक दोकानमे एक किशोर आयल।

337. शैलेशक विद्यालयमे वित्तीय जागरूकता सप्ताह भेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 35 — मूल प्रसंग 341–350

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 35 — मूल प्रसंग 341–350

341. भोरमे ईशान पोथी खोललक।

342. कमला-बलानक किनार पर एहि वर्ष पानि कम छल।

343. ईशानक लिखाइ धीरे-धीरे घरक चीज भऽ गेल।

344. एक दिन ईशानकेँ बैंक संघसँ फोन आयल।

345. रचना सिन्हाकेँ सेहो एहन मामला भेटल।

346. ईशान एहि नब जोखिम पर प्रशिक्षण बनौलक।

347. मृणालिनी एहि प्रशिक्षणक बात सुनि हँसलीह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 36 — मूल प्रसंग 351–360

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 36 — मूल प्रसंग 351–360

351. रितेशक दोकान आब स्थिर आय देब लागल।

352. विहान सारंग अम्बरक प्रशिक्षण-कक्ष तैयार केलक।

353. सौरभ बर्धन दण्डक शेष अवधि पूरा कऽ बाहर आयल।

354. मृणालिनी वृद्ध भऽ रहल छलीह।

355. धनेश्वरीक पोथी आब अलमारीक ऊपर नहि, मृणालिनीक सिरहाना लग रहैत।

356. एक दिन वैदेही झा अपन शोधप्रबन्धक अंतिम प्रति लऽ आयलीह।

357. रचना सिन्हा एक प्रशिक्षण-पुस्तिका तैयार करैत छलीह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 37 — मूल प्रसंग 361–370

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 37 — मूल प्रसंग 361–370

361. गढ़ नारिकेल लौटि ओ सिरहाना लग धनेश्वरीक पोथी रखलीह।

362. ईशान लिखनाइ धीमा कऽ देलक।

363. एक साँझ पोथी खोलि ओ आठम पाँति लिखबाक कहलीह।

364. रचना सिन्हा प्रशिक्षणक बीच एक केस सुनलीह—

365. तृषा छुट्टी मे गढ़ नारिकेल आयलीह।

366. ईशान आठ पाँतिक एक छोट पन्ना बनौलक।

367. किछु सप्ताह बाद मृणालिनीक साँस फेर खराब भेल।

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 38 — मूल प्रसंग 371–380

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 38 — मूल प्रसंग 371–380

371. रचना सिन्हा कार्यालयमे अनाम पन्ना देखलीह।
372. ईशान एक राति पाण्डुलिपिक अंतिम तिहाई फेर पढ़लक।
373. अगिला भोर मृणालिनीक स्वास्थ्य अचानक बहुत गिरल।
374. दिन धीमा।
375. भोर होयबासँ किछु पहिने मृणालिनी चलि गेलीह।
376. अन्त्येष्टि साधारण।
377. तेरहम दिनक बाद ईशान पहिल बेर अकेले बरामदामे बैसल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 39 — मूल प्रसंग 381–390

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 39 — मूल प्रसंग 381–390

381. ईशान पाण्डुलिपि फेर खोललक।

382. कमला-बलानक किनार पर ओ महीना बाद गेल।

383. मृणालिनीक मृत्यु बाद पहिल बरख ईशान लेल ऋतु नहि, दूरी बनि गेल।

384. धनेश्वरीक पोथी एक दिन विद्यालयक पुस्तकालयमे काँचक पेटीमे राखबाक प्रस्ताव आयल।

385. तृषा कानून पूरा कऽ अधिवक्ता बनलीह।

386. ओहि राति प्रदीपकेँ फोन केलक।

387. रचना सिन्हा वरिष्ठ पद पर पहुँचलाक बाद जाँच स्वयं कम, प्रशिक्षण अधिक करैत छलीह।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 40 — मूल प्रसंग 391–400

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 40 — मूल प्रसंग 391–400

391. सौरभ सार्वजनिक जीवनमे वापस पूर्ण रूपेँ नहि आयल।

392. प्रदीप एक दिन प्रशिक्षण-कक्षा बाद घर लौटि देखलक तृषा धनेश्वरीक आठ पाँति फ्रेम करि लाई छलीह।

393. शैलेशक छात्र जे जुआ-जइसन खेलमे पकड़ा गेल छल, एक वर्ष बाद विद्यालय परीक्षा पास कऽ शहर पढ़य...

394. सबीना खातूनक दोकान बाहर सरकारी पोस्टर लगल—

395. वैदेही झाक शोध पुस्तक रूपमे प्रकाशित भेल।

396. ईशान अपन पाण्डुलिपिक आखिरी खण्ड लिखैत एक समस्या पर अटक गेल—

397. एक संध्या ईशान धनेश्वरीक पोथी, अनिरुद्धक कलम आ मृणालिनीक चश्मा एके टेबुलपर देखलक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

सारांश-समूह 40 — मूल प्रसंग 391–400

रचना सँ अंतिम औपचारिक साक्षात्कार नहि केलक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 41 — मूल प्रसंग 401–410

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 41 — मूल प्रसंग 401–410

401. कमला-बलानक किनार पर एक नब पक्का पथ बनल।

402. राति ईशान पाण्डुलिपिक अंतिम पन्नासभक आरम्भ लिखलक।

403. भोरक समय ओ बरामदासँ बाहर आयल।

404. एक वर्ष बाद ईशानक उपन्यास लगभग पूरा छल।

405. ओहि सप्ताह रचना सिन्हाक फोन आयल।

406. तृषा आब नियमित वकालत करैत छलीह।

407. केशव एक सार्वजनिक पुनर्वास कार्यक्रममे बोलबाक निमन्त्रण ठुकरा देलक।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

सारांश-समूह 42 — मूल प्रसंग 411–418

06 बिज्जी : गोहि सभक बीच

सारांश-समूह 42 — मूल प्रसंग 411–418

411. ईशानक पाण्डुलिपिक अंतिम संशोधन तेज भेल।

412. तृषा एक सप्ताहांत गाम आयलीह।

413. ओहि राति ईशान नदीक कात अकेले गेल।

414. घर लौटि ओ अंतिम पृष्ठ लिखलक।

415. भोरमे ईशान धनेश्वरीक पोथी खोललक।

416. दुपहर विद्यालयक दू बच्चा पुस्तक लौटाबय आयल।

WORK / कृति

07 पातक भीतर लिखल नाँव

३२ अध्याय

अध्याय १ — घर खोलबाक दिन

पाँच वर्ष बाद मृणालिनी पैतृक घर खोलय पहुँचैत अछि। परिवार घर बेचबाक निर्णय कऽ चुकल अछि, आ ईशान ओकरा तीन मासक भीतर कागज-पत्तर आ स्मृति-सामग्री छाँटबाक जिम्मेदारी दैत अछि। बसन्ती काकीक दही-चूड़ा, पुरान भानसघर, सिलौट आ बचपनक स्वाद ओकरा बुझबैत अछि जे फोटो आ सूचीमे गन्ध, आवाज आ श्रमक पूरा इतिहास नहि समाइत। काकी नामहीन कागजक संग नामहीन लोककेँ सेहो मोन रखबाक प्रश्न उठबैत छथि। ऊपरक कोठलीमे मृणालिनी केँ एक सन्दूकसँ ‘भानस-पोथी’ भेटैत अछि। मुख्य देवनागरी लिखाइक कातमे अपरिचित महीन, सम्भवतः तिरहुता, लिखाइ देखिते ओकर काज साधारण सूची-निर्माणसँ इतिहासक अन्वेषणमे बदलय लगैत अछि।

अध्याय २ — दोसर लिखाइ

ईशान भेटल भानस-पोथीकेँ सम्भावित पुस्तक आ व्यावसायिक आकर्षण बुझैत अछि, मुदा मृणालिनी लेखकत्व निश्चित कएने बिना ओकर प्रचार स्वीकार नहि करैत अछि। पोथीक मुख्य लिखाइ व्यवस्थित देवनागरीमे अछि, किन्तु किनारमे दोसर हाथक तिरहुता टिप्पणी, प्रश्न आ सुधार भेटैत अछि। शशिभूषण काका बिना संशय पोथीकेँ देवकान्तक बतबैत छथि आ हुनकर हस्तलिपि-साक्ष्य आनबाक बात करैत छथि; मृणालिनी तुलना करबाक आग्रह राखैत अछि। सतरहम पृष्ठपर नूनक निश्चित मापक बाद ‘नून स्वाद अनुसार’ जोड़ल भेटैत अछि। एहि परिवर्तनसँ दू ज्ञान-दृष्टिक संवादक सम्भावना खुलैत अछि—एक माप निश्चित करय चाहैत अछि, दोसर परिस्थिति आ स्वादक भिन्नता देखबैत अछि। मृणालिनी लेखकक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २ — दोसर लिखाइ

नामक बदला पहिने प्रमाण जुटेबाक निर्णय करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ — पात

मृणालिनी पोथीक पन्नासभ, तिथि आ बीचमे दबायल सूखल पातक जाँच करैत अछि। बसन्ती काकी पातकेँ सम्भवतः तिलकोर कहैत छथि, मुदा पहचान निश्चित नहि मानल जाइत अछि। पोथीक तिथिसभ सीधा क्रममे नहि, आ १५ जनवरीक एक पन्ना अधूर भेटैत अछि; मृणालिनी दस्तावेजक समयरेखा आ अपन कल्पना अलग रखबाक सावधानी अपनबैत अछि। कथा तत्पश्चात् पुरान समयमे पहुँचैत अछि। कलकत्तासँ घुरल देवकान्त भोजन आ लोकजीवनक ज्ञान जमा करय चाहैत छथि, मुदा जानकी पहिने खेनाइ, तकर बाद लिखनाइ सिखबैत छथि। पात छाँटैत माधवीसँ हुनकर परिचय होइत अछि। जानकी स्पष्ट करैत छथि जे पात-सागक बहुत ज्ञान माधवीकेँ हुनकासँ बेसी अछि। एतहिसँ पुरान भानस-पोथीक मानवीय कथा शुरू होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४ — पन्द्रह जनवरी

१५ जनवरी १९३४ केर भोर देवकान्त साधारण भोजन, चाउर धोएब आ भानसक श्रमक नोट बना रहल छथि। अचानक भूकम्प धरती, घर आ दैनिक अनुशासन सभ केँ हिला दैत अछि। भानसघरक भित्ति चिरि जाइत अछि, लोक बाहर निकलैत अछि आ आँगन पड़ोसीसभक अस्थायी आश्रय बनैत अछि। माधवी चोट खायल बच्चाक देखभाल, असुरक्षित कोठलीसँ दूर रहबाक निर्णय आ पीबाक तथा घाउ धोबाक लेल पहिने पानि उबालबाक निर्देश दैत अछि। आपदामे हुनकर स्थितिजन्य ज्ञान सभसँ उपयोगी प्रमाणित होइत अछि। देवकान्त पहिल बेर केवल सामग्री नहि, निर्णय लेनिहार व्यक्तिक नाँव लिखैत छथि—‘माधवी—पानि पहिने’। ओ पोथीक लेल नियम बनबैत छथि जे जकर निर्णय, तकर नाँव दर्ज होअय।

अध्याय ५ — खिच्चड़ घर

भूकम्पक बाद घरमे अनाज सीमित अछि आ आश्रय लेने पड़ोसी, वृद्ध तथा घायल लोकसभकेँ खुअएबाक प्रश्न उठैत अछि। सभक लेल एक पातिल खिच्चड़ बनैत अछि; चाउर-दालि, पानि, ईंधन आ परोसबाक क्रम परिस्थितिक अनुसार बदलय पड़ैत अछि। पुरान सामाजिक आदत आ अलग बासनक झिझक पूर्णतः समाप्त नहि होइतहुँ बच्चा, जरूरतमन्द आ श्रम करनिहार लोकक आवश्यकता महत्त्व पबैत अछि। माधवी, जानकी, हेमलता, रमानन्द आ दोसर लोकक योगदान देवकान्तक नोटमे प्रवेश करैत अछि। स्वयं देवकान्त करछुल लऽ कऽ परोसब सीखैत छथि। नून कम भेला पर जानकीक हँसी भयाकुल वातावरण हलुक बनबैत अछि। देवकान्त बुझैत छथि जे आपदा-भोजनक इतिहास केवल विधि नहि, अनेक हाथक सहयोग, परिस्थितिक स्वाद आ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ — खिच्चड़ घर

नाँवक इतिहास अछि।

अध्याय ६ — माधवी

भूकम्पक तेसर भोर माधवी देवकान्तकेँ बारीमे तिलकोर तथा दोसर पात चिन्हब सिखबैत अछि। पातक कोमलता, नस आ डाँठक अन्तर केवल ‘कोमल’ लिखि देने सँ स्पष्ट नहि होइत; स्पर्श आ अभ्यासक आवश्यकता अछि। देवकान्त पुछैत छथि जे माधवी एतेक कोना जानैत अछि। ओ खेत, पोखरि, घरक स्त्रीसभ आ अपन नानासँ प्राप्त ज्ञानक परम्परा बतबैत अछि, संगहि अपन तिरहुता लिखाइ देखबैत अछि। देवकान्त साझा भानस-पोथीक प्रस्ताव रखैत छथि। माधवी पाँच शर्त राखैत अछि—जकर योगदान तकर नाँव, अज्ञात बात नहि गढ़ब, एक घरकेँ सम्पूर्ण मिथिला नहि मानब, निजी पन्नाक गोपनीयता, आ भाषा बदललासँ पहिने अर्थक सहमति। देवकान्त स्वीकार करैत छथि। एहि सहमतिसँ पोथी एकल लेखकक

अध्याय ६ — माधवी

परियोजनासँ साझा बौद्धिक श्रममे बदलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७ — कुर्थीक मास

जाड़क साँझि कुर्थी दालि बनैत अछि। जानकी परिवारमे प्रचलित मान्यता सुनबैत छथि जे सालमे एक मास कुर्थी खएलासँ पथरी नहि होइत। देवकान्त आरम्भमे एकरा निश्चित चिकित्सकीय तथ्य जकाँ लिखि दैत छथि, मुदा माधवी पूछैत अछि जे ई प्रत्यक्ष अनुभव, सुनेल बात अथवा जाँचल प्रमाणमे सँ की अछि। लोक-विश्वासकेँ बिना जाँच सत्य कहब आ ओकर उपहास करब—दूनू अनुचित ठहरैत अछि। देवकान्त अपन नोट तीन खण्डमे बाँटैत छथि: ‘सुनल’, ‘देखल’, ‘पुछबाक’। वैद्य, दोसर परिवार आ खेती करनिहारसँ बुझबाक योजना बनैत अछि। अध्याय लोक-अनुभव आ चिकित्सकीय प्रमाणक अन्तर, कथनक स्रोत, आ जाँच बाकी राखबाक ईमानदारीकेँ केन्द्रमे आनैत अछि।

अध्याय ८ — नूनक माप

देवकान्त नूनक वैज्ञानिक माप निर्धारित करबाक लेल तराजू आ बाट लऽ भानसघर पहुँचैत छथि। माधवी आ जानकी प्रश्न उठबैत छथि— कतेक लोक, केहन भूख, कोन नून, कोन संगक भोजन, आ ककर ‘चुटकी’? निश्चित मात्रा सभ परिस्थिति लेल एकसमान नहि रहैत। माधवी हुनका तीन अलग घरक दालि चखबैत अछि। एके अरहरिक दालि पानि, आगि, हाँड़ी, परोसाइ आ घरक पसिन अनुसार भिन्न स्वाद लैत अछि। देवकान्त अन्ततः आधार-विधि संग भिन्नता आ प्रत्यक्ष जाँचक संकेत लिखबाक पद्धति स्वीकार करैत छथि। ‘स्वाद अनुसार’ अंग्रेजीमे कोना व्यक्त हो, सेहो सहज नहि। एक पाक-विधिक नापकेँ सम्पूर्ण लोकजीवनक अन्तिम नियम बना देबाक सीमा एहि अध्यायमे स्पष्ट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९ — तिलकोर

अतिथिसभक लेल तिलकोरक तरुआ बनैत अछि। माधवी कोमल पात चुनबाक, धोकऽ सुखेबाक, पीठारक गाढ़पन आ तेलक तापक अन्तर देखबैत अछि; जानकी आ हेमलता सेहो अलग-अलग काज करैत छथि। देवकान्त आरम्भमे पकवानक एक ‘मुख्य बनौनिहार’ खोजैत छथि, मुदा अन्ततः प्रत्येक हाथक योगदान नाम सहित दर्ज करैत छथि। एहि बीच माधवी एक विशेष कोमल तरुआ देवकान्तक थारीमे रखबबैत अछि; हुनका एकर भाव निजी लगैत अछि, किन्तु ओ अनुमानकेँ निश्चित तथ्य नहि बनबैत छथि। लिखाइमे ‘आज’क बदला ‘आइ’ चुनबाक प्रसंग भाषा आ घरक आवाजक प्रश्न खोलैत अछि। अध्यायमे श्रमक साझा श्रेय, भाषिक स्वाभाविकता आ देवकान्त–माधवीक अनकहल निकटता एक संग बढ़ैत अछि।

अध्याय १० — पोखरिक आँखि

माधवी देवकान्तकेँ रमानन्दक संग भोरमे पोखरि देखबय लऽ जाइत अछि। ऊपर सँ सुन्नर देखाइत पानिक पाछाँ मखानक बीआ उठेबाक जोखिम, कादो, काँट, साँस रोकबाक श्रम, मजूरीक अनिश्चितता आ मालिकाना व्यवस्था उपस्थित अछि। रमानन्द अपन हाथक निशान आ काज देखबैत छथि तथा कहैत छथि जे पुस्तकमे 'बीआ एकत्र कएल गेल' लिखलासँ शरीरक परिश्रम अदृश्य भऽ जाइत अछि। बादमे बीआ सुखेबाक, गरम करबाक आ चोट दऽ मखान फोड़बाक क्रिया देखाओल जाइत अछि। देवकान्त 'उत्सवक श्रेष्ठ पदार्थ' जकाँ सतही वर्णन बदलि जल-श्रमक पूरा सन्दर्भ लिखैत छथि। रमानन्दक नाँव आ कथन दर्ज होइत अछि। मखानक हलुक स्वादक पाछाँक भारी श्रम एहि अध्यायक केन्द्रीय सत्य अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११ — भाप

जानकी आ माधवी देवकान्तकेँ चाउरक पीठार आ दालिक भरावनसँ बगिया बनबैत सिखबैत छथि। पीठारमे पानिक माप, किनार जोड़ब, भापक ताप आ पकबाक चिन्ह केवल घड़ीक समयसँ तय नहि होइत। देवकान्तक पहिल बगिया फाटैत अछि, दोसरमे सुधार होइत अछि; ओ अपन अनुभवक रूपक माधवीक कथन बनाकऽ लिखबाक गलती सँ सावधान होइत छथि। माधवी हुनका सँ आधा बगिया बाँटैत अछि, आ एहि सहज व्यवहारमे दुनूक सम्बन्धक सूक्ष्म निकटता प्रकट होइत अछि। हेमलता अपन इतिहास स्वयं लिखबाक बात कहैत अछि, जकरा देवकान्त ओकर नाम सहित दर्ज करैत छथि। भोजनक विधि संग व्यक्तिगत श्रेय, अनुभवक असफलता आ भीतरक अर्थकेँ बिना आरोपित रूपकक सुरक्षित रखबाक शिक्षा एहि अध्यायमे अछि।

अध्याय १२ — माछक काँट

माछ-बजारमे नसीमा देवकान्तकेँ छोट-पैघ माछक भेद, ताजगी चिन्हबाक संकेत, मूल्य आ खरीदक व्यवहार सिखबैत अछि। माधवी आ नसीमा हुनका एक परिवारक नियमकेँ सम्पूर्ण मिथिलाक अपरिवर्तनीय भोजन-नियम नहि बनएबाक सावधानी दैत छथि। घरमे माछ बनबाक समय सफाइ, काँट, बासन आ खेनिहारक भिन्न आदतक चर्चा होइत अछि। भोजन करैत देवकान्तक गला मे माछक काँट अटकैत अछि, जाहिसँ विधि लिखनिहारक अपन देहक असावधानी सेहो सामने अबैत अछि। साँझि हुनकर अंग्रेजी वाक्य ‘मैथिल माछ पसिन करैत अछि’ पर माधवी ‘सभ?’ पूछैत अछि। देवकान्त बुझैत छथि जे आकर्षक सामान्यीकरण मे अनेक लोकक भिन्नता मेटि सकैत अछि। नसीमाक नाँव आ बजारक प्रत्यक्ष ज्ञान लिखित कथाक जरूरी स्रोत

अध्याय १२ — माछक काँट

बनैत अछि।

अध्याय १३ — अक्षर

देवकान्त तिरहुता सीखैत आ माधवीक लिखल पन्नासभ बुझबाक प्रयास करैत छथि। छपाइ आ व्यापक पाठकक सुविधा लेल देवनागरीमे प्रतिलिपि बनेबाक प्रश्न उठैत अछि, मुदा माधवी पूछैत अछि जे सुविधा केकरा लेल आ मूल अक्षरक आवाज कतए बचत। ओ अपन निजी कागजक सीमा स्पष्ट रखैत अछि। तिलकोरक विधि लिखबामे ‘घोल’क बदला ‘पीठार’ आ ‘पत्ता’क बदला ‘पात’ राखबाक आग्रह भाषा तथा अर्थक सम्बन्ध देखबैत अछि। अन्तमे माधवी अपन तिरहुता हस्ताक्षर पन्नाक तलमे करैत अछि आ जकर ज्ञान, तकर नाम संग रखबाक नियम लागू करबबैत अछि। देवकान्त मूल हस्ताक्षर सुरक्षित राखि पाठक लेल देवनागरी उल्लेख जोड़बाक सहमति दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४ — जे शब्दक अनुवाद नहि

अंग्रेजी लेख लेल देवकान्त तरुआ, बगिया, अमट, अदौरी, पाग आ पाँति जकाँ शब्दक अनुवाद खोजैत छथि। माधवी देखबैत अछि जे एक अंग्रेजी पद कतेको बेर वस्तु, बनबाक ढंग, ऋतु, सामाजिक प्रसंग आ घरक आवाजकेँ एक संग नहि समेटि सकैत। दुनू निर्णय करैत छथि जे मूल मैथिली नाम रहत, पहिल उल्लेखपर पर्याप्त व्याख्या देल जाएत। तिलकोरकेँ केवल ‘तलल पात’ कहला सँ चयन आ श्रमक पूरा प्रक्रिया ओझरा जाइत अछि। बातचीत धीरे-धीरे सम्बन्धक परस्पर बुझाइ धरि पहुँचैत अछि: जे नहि बुझल गेल, ओकर ठाम अनुमानसँ नहि भरबाक। पान बाँटबाक एक शान्त क्षणमे दुनूक अनकहल प्रेम-भाव देखाइत अछि। सभ स्वाद, शब्द वा अनुभवकेँ पोथीमे बन्द करब आवश्यक नहि—ई समझ प्रबल होइत

अध्याय १४ — जे शब्दक अनुवाद नहि

अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ — तरुआक थारी

गर्मीमे जानकी पाँच प्रकारक तरुआ—कदिमा, आलू, बैंगन, तिलकोर आ काँच केला—तैयार करबबैत छथि। एके पीठारक भीतर पदार्थसभक अलग देह, नमी आ पकबाक समय देखाओल जाइत अछि। अतिथि-थारी सजेनाइ पर देवकान्त मिथिलाकेँ एक थारीक रूपकमे समेटय चाहैत छथि, मुदा माधवी पूछैत अछि जे एहि सजावटसँ बाहर रहल श्रम, अभाव, लोक आ भोजनक की होएत। रूपकक सीमा लिखल जाइत अछि। शिक्षित अतिथि शारदा देवकान्तक लेख आ माधवीक योगदानक चर्चा करैत छथि। देवकान्त–शारदाक सहज बातचीत बीच माधवीक मौन बदलैत बुझाइत अछि, मुदा देवकान्त बिना प्रमाण ओकर भावकेँ ‘ईर्ष्या’ नहि कहैत छथि। अन्तमे माधवीक देल तिलकोरक टुकड़ा सम्बन्धक अनकहल अर्थ सुरक्षित राखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६ — आमक अमट

आमक मौसममे माधवी आ जानकी काँच आम काटि धूपमे सुखा कऽ अमट तैयार करैत छथि। आमक प्रकार, कटान, धूप, नमी, गन्ध आ भण्डारणक सावधानी सँ देवकान्त बुझैत छथि जे भोजन-संरक्षण भविष्यमे अनुपस्थित ऋतुक स्वाद बचेनाइ अछि। एही बीच कलकत्ताक सम्पादक जल्दी आ संक्षिप्त लेख माँगैत छथि, विशेषतः घरेलू विस्तार घटेबाक आग्रह करैत छथि। माधवीक एक महत्त्वपूर्ण कथन—स्वाद बचलाक संग ज्ञान देनिहार हाथक नाँव सेहो बचबाक चाही—देवकान्तकेँ अंग्रेजी लेखक निष्कर्ष बनय योग्य लगैत अछि। मुदा जगह आ स्वीकृतिक चिन्तामे ओ कथन छोट करबाक वा काटबाक दबाव अनुभव करैत छथि। ऋतु-पार संरक्षणक संग लिखित इतिहासमे श्रेय बचेनाइ केर प्रश्न एहि अध्यायमे तीक्ष्ण होइत

अध्याय १६ — आमक अमट

अछि।

अध्याय १७ — अरिकञ्चन

बरखाक प्रारम्भमे अरिकञ्चन बनबाक तैयारीमे कचूक पात, मसाला आ तह-दर-तह मोड़बाक कौशल सामने अबैत अछि। देवकान्तकेँ बुझाइत अछि जे बाहरसँ एक देखाइत वस्तु भीतर अनेक पातक श्रम राखैत अछि। माधवी अपन नानीसँ जुड़ल किछु निजी तिरहुता पन्ना सार्वजनिक पोथीक हिस्सा बनेबा सँ रोकैत अछि। देवकान्त ज्ञानक उपयोगिताक नाम पर ओकरा देखबाक आग्रह करैत छथि, मुदा माधवी स्पष्ट करैत अछि जे निजी कागजक अन्तिम निर्णय ओकर। तेज वर्षामे एक निजी पन्ना गठरीसँ खसि खुलि जाइत अछि। देवकान्त पढ़ि सकैत रहितहुँ ओकरा बिना पढ़ने सुरक्षित राखि दैत छथि। माधवीक भरोसा गहिर होइत अछि। अध्याय साझी विद्या आ व्यक्तिक गोपनीय अधिकारक बीच आवश्यक सीमा स्थापित करैत

अध्याय १७ — अरिकञ्चन

अछि।

अध्याय १८ — नाम रहित विधि

बरखाक पहिल फूलसँ कदिमाक फूलक पकवान बनैत अछि। माधवी अपन नानी धनेश्वरी आ हुनकर जेठ बहिनसँ सम्बन्धित विधि बतबैत अछि, मुदा स्थानीय नामक उच्चारण आ लिखित रूप निश्चित नहि भेला सँ शीर्षक खाली छोड़य कहैत अछि। स्रोतक पाँतिओ पूरा होय सँ पहिने धुँधलाएब आ स्थगनक शिकार होइत अछि। कथा २०२६ मे घुरैत अछि, जतए मृणालिनी मूल पोथीक एहि पन्नापर रिक्त शीर्षक, पोंछल/घसाइल स्याही आ सम्भावित ‘माध...’ अक्षर चिन्हैत अछि। ओ जानि-बुझि कऽ ‘माधवी’ निश्चित नहि लिखैत अछि। ईशान भोजनालयक मेनूमे पकवान जोड़य चाहैत अछि, मुदा दूनू जाँच धरि नाम रोकबाक निर्णय करैत छथि। नामक रिक्त ठाम अब सामान्य भूल नहि, सम्भावित श्रेय-लोपक प्रमाण-संबन्धी प्रश्न

अध्याय १८ — नाम रहित विधि

बनैत अछि।

अध्याय १९ — जनकपुरक बाट

देवकान्त, माधवी, हेमलता आ गोनू जनकपुर यात्रा पर निकलैत छथि। चूड़ा, सत्तू, गुड़ आ अमट जकाँ बाटक भोजनसँ प्रारम्भ भेल यात्रा १९३४ केर भूकम्पपछाति भूगोल, कठिन सड़क आ भारत–नेपालक सीमा-पार नातेदारीकेँ देखबैत अछि। देवकान्त पबैत छथि जे कागजक नक्शा जतेक सीधा, लोकक बोली, सामग्री, नाँव आ व्यवहार ओतेक सरल सीमा मानैत नहि। जनकपुरक बाजारमे समान देखाइत पकवानक विधि आ नाम अलग भेटैत अछि। भीड़मे माधवी किछु देर नजरिसँ ओझरा जाइत अछि, आ ओकरा खोजैत देवकान्त अपन भीतरक गहीर भय चिन्हैत छथि। माधवी सुरक्षित भेटला पर प्रेमक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि, मुदा दुनू हतबड़ीमे सम्बन्धक नाँव नहि दैत छथि।

अध्याय २० — वर्षा

जनकपुरसँ घुरलाक बाद लगातार वर्षा ताजा भोजन, सुखायल अमट, भण्डार, चूल्हि आ कागज सभ पर प्रभाव दैत अछि। माधवी, जानकी आ हेमलता नमी लागल सामग्री अलग करैत अछि आ ऋतु अनुसार बचाओल अदौरी, अमट आ अन्य पदार्थक उपयोग करैत अछि। देवकान्त बुझैत छथि जे भण्डारण भूखक भविष्यक विरुद्ध परिवारक श्रम अछि। वर्षाक बूँद भानस-पोथीक किछु पन्ना भीजा दैत अछि; नसीमाक नाँव सहित माछक नोटक सुरक्षा चिन्ताजनक होइत अछि। मूल पन्ना बचेनाइ, पुनः नकल करब आ क्षतिग्रस्त स्थानकेँ यथावत् दर्ज करब आवश्यक ठहरैत अछि। भोजन आ दस्तावेज दुनू नाजुक भण्डार छथि—एक देहक भविष्य लेल, दोसर स्मृतिक भविष्य लेल।

अध्याय २१ — अदौरी

वर्षाक बीच मौसम खुललापर अदौरी बनेबाक क्रम शुरू होइत अछि। भिजाओल दालि, पीसबाक दशा, छोट आकार देब, धूप, फेराइ आ नमी सँ बचाएब—सभमे समय आ निरन्तर श्रम आवश्यक अछि। देवकान्त भविष्यक दिनक भूख लेल धूपक दिनक परिश्रमक अर्थ बुझैत छथि। एही अध्यायमे हेमलता तिरहुता आ देवनागरीक अभ्यास करैत-करैत पुरान भानस-पन्नासभक सावधान प्रतिलिपि तैयार करैत अछि। ओ तिलकोर, अमट, अदौरी आ नसीमाक माछ सम्बन्धी नोटमे स्रोतक नाँव बचबैत अछि। माधवीक हस्ताक्षरक नकल करबाक बदला ‘मूल पन्ना पर माधवीक हस्ताक्षर’ लिखैत अछि। धुँधलायल अथवा काटल पाठ अपनासँ सुधारि नहि देबाक नियम ओ स्पष्ट लिखैत अछि। भविष्यक सत्यापन लेल एहि अभ्यास-पोथीक महत्त्व स्थापित

अध्याय २१ — अदौरी

होइत अछि।

अध्याय २२ — पिरुकियाक मोड़

पर्वक समय घरमे पिरुकिया बनैत अछि। भरावन, पीठार आ किनारक मोड़ सँ हेमलता धीरे-धीरे हस्तकौशल सीखैत अछि; देवकान्त ओकर पहिल सफल मोड़ नाम सहित लिखैत छथि। माधवी देवकान्तक पसिन-मिठास मोन राखि हुनका लेल पिरुकिया अलग बनबैत अछि। राति देवकान्त जनकपुरमे शुरू भेल अपन प्रेम-भाव स्पष्ट शब्दमे कहैत छथि। माधवी भावना अस्वीकार नहि करैत अछि, मुदा प्रश्न उठबैत अछि जे समानता आ साथक अर्थ परिवार, कुल-प्रतिष्ठा तथा सामाजिक विरोधक सामने की होएत। देवकान्त तत्काल स्पष्ट निर्णय नहि दे पबैत छथि आ ‘एखन नहि जानैत छी’ स्वीकार करैत छथि। पिरुकियाक नीक मोड़ सम्बन्धक नाजुक जोड़क संकेत बनैत अछि: प्रेमक मिठासक संग कठिन सामाजिक निर्णय आवश्यक

अध्याय २२ — पिरुकियाक मोड़

अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २३ — काटल पाँति

कलकत्ताक सम्पादक अंग्रेजी लेख संक्षिप्त करबाक निर्देश संग फेर पठबैत छथि। भोजनक विवरण राखि स्त्री-श्रम, स्रोत, नाँव आ श्रेयक बहस अलग करबाक सुझाव दैत छथि। माधवी देवकान्तकेँ देखबैत अछि जे सम्पादनक अन्तिम निर्णय लेखकहि करैत छथि। लेख छोट करैत-करैत 'भानसक इतिहास बनौनिहार स्त्रीसभक नाँव बिना अधूर अछि' वाक्य कटि जाइत अछि। देवकान्त भविष्यक दोसर लेखमे एकरा रखबाक आश्वासन दैत छथि, मुदा तत्काल सुधार नहि करैत छथि। माधवी साझा पोथीसँ अपन निजी तथा किछु स्रोत-पन्ना फेर आपस लैत अछि आ भरोसा नवसँ जाँचबाक निर्णय करैत अछि। देवकान्त अन्तिम क्षण धरि काटल पाँति फेर जोड़ि सकैत छथि, तैयो बन्द लिफाफा डाकमे पठा दैत छथि। प्रेम आ

अध्याय २३ — काटल पाँति

बौद्धिक नैतिकताक बीच पहिल प्रत्यक्ष दरार पड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २४ — भोजक बाहर

घरक पैघ संस्कारक भोजमे देवकान्त पाहुनसभक स्वागत आ बाहरी व्यवस्था देखैत छथि, जखनकि भीतर स्त्रीसभ, गोनू आ अनेक सहायक भोरसँ भोजन तैयार करैत छथि। परोसबाक क्रम, विशेष अतिथि, अलग बासन, श्रम करनिहार लोकक पाँति आ अन्तमे भोजन करनिहार स्त्रीसभक प्रतीक्षा—सभ सामाजिक सम्बन्धकेँ दृश्य बनबैत अछि। बाहरक लोक ‘मिथिलाक भोज’क प्रशंसा करैत अछि, मुदा ओकर पाछाँक परिश्रम आ भेद बहुधा अनाम रहैत अछि। देवकान्त अपन नोटमे देखल घटनाकेँ मात्र एहि घरक एहि संस्कारसँ जोड़ि लिखबाक सावधानी बरतैत छथि। ‘हमर संग्रह’ कहि देला पर हुनका असहजता होइत अछि, कारण नसीमा, माधवी, जानकी, रमानन्द आ हेमलताक काज ओहि पन्नासभमे निहित अछि।

अध्याय २५ — छपल लेख

देवकान्तक अंग्रेजी लेख कलकत्ताक पत्रिकामे छपैत अछि। परिवार गर्व अनुभव करैत अछि, मुदा शीर्षकक नीचाँ केवल देवकान्तक नाँव अछि, जखनकि अनेक महत्त्वपूर्ण विधि आ विचार माधवी तथा दोसर स्रोतसँ आएल छल। माधवी प्रत्यक्ष तुलना कऽ देखबैत अछि जे छपल पाठमे ज्ञान देनिहारक नाँव गायब अछि। आरो गम्भीर रूपसँ कुर्थी सम्बन्धी जानकीक लोक-मान्यता सम्पादनक बाद लगभग चिकित्सकीय नियम जकाँ प्रस्तुत भेल अछि, जखनकि मूल नोटमे ‘जाँच बाकी’ स्पष्ट छल। देवकान्त सार्वजनिक सुधार आ स्रोत-श्रेय सम्बन्धी पत्र लिखैत छथि। माधवी एकरा आवश्यक मुदा अपर्याप्त मानैत अछि, किएक तँ पहिल छपल संस्करण नाँव-विहीन रूपमे लोक धरि पहुँचि चुकल अछि। ओ अपन किछु

अध्याय २५ — छपल लेख

पन्ना वापस लैत अछि; नैतिक दरार सार्वजनिक भऽ जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २६ — जे नहि कहल गेल

परिवार देवकान्तक विवाह लेल सम्पन्न घरक प्रस्ताव आनैत अछि। देवकान्तक मोन माधवी लग अछि, मुदा पिता आ बुजुर्ग सभक सामने ओ पहिने ओकर नाँव स्पष्ट नहि कहि सकैत छथि। माधवी किछु दिन लेल जनकपुर दिस जाएबाक निर्णय करैत अछि। पोखरिक कात दुनूक बातचीतमे प्रेम स्वीकारल रहितहुँ भविष्यक सहमति नहि बनैत; माधवी अपन जीवन आ पन्ना सम्बन्धी स्वतन्त्र निर्णयक अधिकार रखैत अछि। प्रस्थानक पूर्व देवकान्त परिवारमे माधवीक नाँव कहैत छथि, मुदा सामाजिक उत्तर एखन बाकी रहैत अछि। माधवी अपन मूल कागज संग लऽ जाइत अछि आ हेमलता अपन अभ्यास-पोथी सुरक्षित रखैत अछि। देवकान्त पोथीमे माधवीकेँ महत्त्वपूर्ण सहभागी ज्ञान-स्रोत रूपमे दर्ज करैत छथि, मुदा

अध्याय २६ — जे नहि कहल गेल

‘सहलेखक’क उपाधि ओकर सहमति बिना नहि दैत छथि। ओकर प्रस्थान निश्चित, वापसी अनिश्चित रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ — एखनक भानस

२०२६ मे ईशानक आधुनिक भोजनालय ‘मिथिला अनुभव’ परीक्षण-भोजन आयोजित करैत अछि। तिलकोर, मखान, बगिया आ कुर्थीकेँ विरासत-स्वादक रूपमे प्रस्तुत कएल जाइत अछि। मृणालिनी प्रत्येक पकवानक स्रोत, उत्पादक, श्रम आ लिखल दाबी देखैत अछि। कुर्थीक प्रचार-पर्चीमे लोक-विश्वासकेँ ‘पथरी-रोधी’ स्वास्थ्य-दाबी बना देबाक गलती भेटैत अछि। ओ ईशानकेँ मूल भानस-पोथीक सावधानी देखबैत अछि, आ व्यवसायिक प्रस्तुति सत्य आ स्रोत-सम्मानक आधारपर सुधारबाक बहस होइत अछि। राति बसन्ती काकीक साधारण कुर्थी दालि-भात खाइत मृणालिनी अनुभव करैत अछि जे स्वाद केवल सजावट वा विपणनक वस्तु नहि—श्रम, स्मृति, भूख आ सम्बन्धक संयुक्त अनुभव अछि। भूलयुक्त विज्ञापनकेँ

अध्याय २७ — एखनक भानस

सेहो अभिलेखमे राखबाक निर्णय होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २८ — स्वादक मालिक

एक प्रकाशक पुरान भानस-पोथीकेँ ‘देवकान्तक मिथिला भानस’ नामसँ आकर्षक विरासत-संस्करण रूपमे छपबाक आर्थिक प्रस्ताव दैत अछि। ईशान आ शशिभूषण उत्साहित छथि, मुदा मृणालिनी बिना लेखकत्व-जाँच आ योगदानक उचित श्रेय प्रकाशनकेँ रोकैत अछि। ओ स्पष्ट करैत अछि जे कागजक भौतिक स्वामित्व, लिखित पाठक लेखकत्व, ज्ञानक स्रोत आ प्रकाशनक निर्णय-अधिकार अलग-अलग प्रश्न छथि। मुख्य देवनागरी हाथ देवकान्तसँ जुड़ैत अछि, किन्तु तिरहुता किनार, माधवीक योगदान आ हेमलताक प्रतिलिपि अनदेखा नहि भऽ सकैत। प्रकाशन स्थगित करैत मृणालिनी नेपालक पुरान सम्बन्ध आ अधूर पताक खोज शुरू करैत अछि। ‘स्वादक मालिक’ प्रश्न एकल परिवार अथवा बाजारक अधिकारसँ बेसी व्यापक

अध्याय २८ — स्वादक मालिक

बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २९ — रेणुकाक स्मृति

मृणालिनी जनकपुर पहुँचि वृद्ध रेणुकासँ भेटैत अछि। ओ मूल पोथीक छवि, तिरहुता पन्ना आ हेमलताक लिखाइक नमूना देखबैत अछि, मुदा उत्तर सुझा कऽ नहि दैत अछि। रेणुका मौखिक स्मृतिक सीमा बतबैत छथि; विशेष रूपसँ माधवी आ हेमलताकेँ जैविक बहिन मानबाक प्रचलित भ्रम सुधारैत छथि। हुनका लग सुरक्षित हेमलताक अभ्यास-पोथीमे तिलकोर, अमट आ दोसर सामग्री संग ‘माधवी दीदी सँ सुनल/देखल’ जकाँ स्पष्ट श्रेय भेटैत अछि। नाँव, तिथि, गीत आ पातक चिह्नक किछु अर्थ एखनहुँ अप्रमाणित रहैत अछि। रेणुका अनुमति अनुसार चुनल पन्नाक छवि आ मौखिक स्मृति दर्ज करबय दैत छथि। मृणालिनी एकल निष्कर्ष नहि, परस्पर जाँच योग्य लिखित आ मौखिक प्रमाण लऽ घुरैत अछि।

अध्याय ३० — अन्तिम पात

जनकपुर सँ भेटल प्रतिलिपिक आधार पर मृणालिनी मूल पोथीक तिलकोरवला पृष्ठ ४१–४२ फेर जाँचैत अछि। पृष्ठक भीतरक तहमे अतिरिक्त कागज होएबाक सम्भावना पर विशेषज्ञक सावधान निरीक्षण कराओल जाइत अछि। ओतयसँ एक छोट तिरहुता पर्ची भेटैत अछि, जकर पाठक आरम्भमे ‘हम माधवी’ पढ़ाइत अछि आ तिथि २१.९.१९३४ मजबूत रूपसँ चिन्हाइत अछि। पाछाँक देवनागरी टिप्पणीमे माधवीक छूटल नाँव फेर धरबाक आशय भेटबाक सम्भावना अछि; लिखाइ देवकान्तक मुख्य हाथसँ मिलैत अछि, मुदा अन्तिम प्रमाण-जाँच बाकी अछि। मृणालिनी न नाँव-लोपक दोष तुरन्त मिटबैत अछि, न पछतावाक संकेत नकारैत अछि। पर्ची भेटला सँ माधवीक नाँव बचैत अछि, पर ओकर पूरा जीवन वा न्याय एखन पुनर्निर्मित

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३० — अन्तिम पात

नहि भऽ पबैत अछि।

अध्याय ३१ — सम्पादकक अपराध

माधवीक पर्चा भेटलापर मृणालिनी अपन २०२६ केर टंकित प्रतिलिपिक आलोचनात्मक जाँच करैत अछि। मूल ‘पीठार’, ‘भानस’, ‘अमट’ आ अन्य शब्दकेँ सुविधा लेल बदलि देने, अनिश्चित पाठ निश्चित कएने, अलग हाथक टिप्पणी एक वाक्यमे मिला देने आ स्रोतक नाम कातमे खिसकाएब जकाँ भूल देखाइत अछि। ओ बुझैत अछि जे सम्पादकक सुविधा लेखक आ स्रोतक स्वर बदलि सकैत अछि। तदनुसार मूल छवि, कूटस्थ प्रतिलिपि, पाठ-सहायक रूप, अलग-अलग हस्तलिपि, स्रोत-श्रेय, अनिश्चितता आ सम्पादनक खुला विवरणवाली नीति बनैत अछि। परिवारक बैठकमे शशिभूषण आ ईशान एकल लेखकक दाबी त्यागि प्रमाणानुसार बहुस्तरीय श्रेय स्वीकार करैत छथि। मृणालिनी अपन भूलयुक्त प्रारम्भिक प्रतिलिपि सेहो

अध्याय ३१ — सम्पादकक अपराध

भविष्यक अभिलेख लेल सुरक्षित रखबाक निर्णय करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३२ — नाँव सहित

नव प्रकाशन-खसड़ामे शीर्षक ‘मिथिला भानस-पोथी’ राखल जाइत अछि। देवकान्तक संकलन आ मुख्य लेखन, माधवीक प्रमाणित लिखाइ आ ज्ञान-स्रोत, हेमलताक प्रतिलिपि-साक्ष्य, जानकी, नसीमा, रमानन्द सहित अन्य स्रोत तथा मृणालिनीक आलोचनात्मक सम्पादन—सभकेँ प्रमाणक सीमा अनुसार श्रेय देबाक व्यवस्था बनैत अछि। ईशानक भोजनालय स्वास्थ्य-दाबी सुधारि स्रोतक जानकारी जोड़ैत अछि। पैतृक घरक बिक्री अन्ततः होइत अछि, मुदा मूल दस्तावेज सुरक्षित अभिलेख-ठाम पहुँचाओल जाइत अछि। विदाइपूर्व परिवार पुरान आँगनमे सामूहिक भोजन करैत अछि। माधवीक बादक जीवन, विवाह, निवास आ मृत्यु सम्बन्धी अनेक प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि। मृणालिनी एहि रिक्तताकेँ कल्पनासँ नहि

अध्याय ३२ — नाँव सहित

भरैत अछि; अन्तिम अभिलेखमे ‘व्यक्ति-नाम: माधवी’ लिखि ओकर नाँव सुरक्षित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

WORK / कृति

08 सातम साक्षी

४२ अध्याय

SECTION / खण्ड

कथाक समग्र परिचय

08 सातम साक्षी

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथाक समग्र परिचय

‘सातम साक्षी’क कथा कचहरीक बन्द अभिलेख-कोठरीमे वसुधा कर्णक संदिग्ध मृत्युसँ आरम्भ होइत अछि। घड़ीक चारि बजि सतरह मिनट, गायब दस्तावेज, चायक कप, सुपारीक डिबिया आ दुलारी सदायक अनुपस्थिति एक रहस्य रचैत अछि। जयनारायण मंडल, माधवी, विनय ठाकुर आ अभिराम एहि घटनाक अलग-अलग साक्ष्य एकत्र करैत छथि।

जाँच धीरे-धीरे सात टोला निवासीक भूमि-अधिकार, १९३४क भूकम्पपछाति बनल दस्तावेज, कुसुमा आ रासबिहारीक अधूर इतिहास, आ ‘सूत्र’ नामक संगणकीय विश्लेषण-प्रणालीक सीमासँ जुड़ि जाइत अछि। सत्य केवल गणना, केवल स्मृति अथवा केवल लोककथासँ नहि, स्रोतसभक जाँच आ परस्पर मिलानसँ आकार पबैत अछि।

अन्तिम भागमे वसुधाक मृत्यु सम्बन्धी आपराधिक निर्णय

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

कथाक समग्र परिचय

होइत अछि, मुदा भूमि-अधिकारक विवाद जारी रहैत अछि। पुरान पत्रक एक नव अखण्ड प्रति भेटलाक बाद ओकर उत्पत्तिक प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि। एहि सारांशमे मूल कथाक ई भेद सुरक्षित अछि—जे सिद्ध अछि तकरा सिद्ध, जे सम्भावना अछि तकरा सम्भावना, आ जे अज्ञात अछि तकरा अज्ञात कहल गेल अछि।

सम्पादकीय सूचना : आगाँक अध्यायवार विवरणमे कथाक अन्तिम घटनाक्रम सहित रहस्यक समाधान स्पष्ट कएल गेल अछि।

अध्याय १ — बरखाक चारि बजि सतरह मिनट

कथाक समग्र परिचय

बरखाक रातिक भोरमे कचहरीक पुरान अभिलेख-कोठरी भीतर अधिवक्ता वसुधा कर्ण मृत भेटैत छथि। दुआरि भीतरसँ बन्द अछि, देवाल-घड़ी चारि बजि सतरह मिनट पर अटकल अछि, आ मेज पर अधलिखल चेतावनी, सुपारीक डिबिया, चायक दूटा दाग तथा गायब दस्तावेजक सङ्केत भेटैत अछि। उपनिरीक्षक विनय ठाकुरक प्रारम्भिक जाँच आत्महत्याक सम्भावना उठबैत अछि। मुदा सेवानिवृत्त अन्वेषक जयनारायण मंडल वसुधाक रोजक आदति आ कोठरीक असङ्गति देखैत छथि। वसुधाक सहयोगिनी माधवी जानकारी देबय लगैत छथि। अन्तिम बेर वसुधा लग गेल युवती दुलारी सदाय सेहो घर नहि घुरल अछि; तेँ मृत्यु आ गुमशुदगीक रहस्य एक-दोसरासँ जुड़ि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २ — सुपारीक डिबिया

कथाक समग्र परिचय

जयनारायण कचहरीक लोकसँ अलग-अलग पूछताछ कऽ वसुधाक स्वभाव आ दिनचर्याक नक्सा बनबैत छथि। माधवी बतबैत छथि जे वसुधा राति सुपारी नहि खाइत, चायमे चीनी नहि लैत आ डिबिया सदिखन मेजक दहिना रखैत छलीह। कमली देवीक चाय-दोकानसँ राति दू कप गेल छल, मुदा घटनास्थल पर सफेद कप मात्र भेटल; नील किनारीक कप बादमे नालीमे भेटैत अछि। दुलारीक माय फूलो धमकी आ गायब बेटीबारे बतबैत छथि। वसुधाक झोरा, पुरान जमीनक नकल आ सुपारी-डिबियाक असङ्गति सन्देह बढ़बैत अछि। एही बीच तकनीकी सहायक अभिराम ‘सूत्र’ नामक प्रणालीसँ समय-रेखा जोड़बाक प्रस्ताव दैत अछि, जकर उपयोगपर अनुभवी अवलोकन आ आँकड़ाक बीच पहिल बहस शुरू होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ — सूत्रक पहिल उत्तर

कथाक समग्र परिचय

अभिरामक डिजिटाइज कक्षमे ‘सूत्र’ प्रवेश-अभिलेख, ताला-संवेदक, दूरभाष-सङ्केत आ दस्तावेजक गतिविधि जोड़ि घटनाक सम्भावित क्रम देखबैत अछि। प्रारम्भिक परिणाममे आत्महत्या अथवा आकस्मिक विषप्रभावक सम्भावना ६१ प्रतिशत देल जाइत अछि। जयनारायण बुझबैत छथि जे फोनक स्थान फोनक मालिकक स्थान नहि, आ ताला खुलबाक सङ्केत मानवीय आवागमनक सम्पूर्ण प्रमाण नहि। वायु-नलीक बाट साँकल लगाओल जाएबाक सम्भावना जोड़िते गणना बदलि जाइत अछि। माधवी दुलारीक सामाजिक परिस्थिति आ साझा दूरभाषक बात उठबैत छथि। अन्तमे माधवीक फोन पर धमकी अबैत अछि—दुलारीकेँ खोजब बन्द करब आ ‘सातम पन्ना’ छोड़ब। एहिसँ रहस्यक नब दिशा खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४ — दुलारी गायब

कथाक समग्र परिचय

धमकीक बाद जयनारायण, माधवी, विनय आ अभिराम सात टोला पहुँचि दुलारीक घर, बस्ती आ रातिक पाठशालाक जाँच करैत छथि। दुलारीक माय फूलो बतबैत छथि जे बेटी सामान्यतः बरखामे जूता घर छोड़ि चप्पल पहिरैत छलीह; तेँ जूता छूटल रहब भागबाक प्रमाण नहि। ओकर कापीमे फाटल पन्ना, दबल लिखावट आ जमीनक कागज पढ़बाक अभ्यास भेटैत अछि। बस्तीमे ओकर चरित्र आ चोरीबारे पसरल अफवाहक समानान्तर ओकरा भेटल धमकीक कथा उभरैत अछि। दुलारीक अपन लिखल पाँति—‘हम भागब नहि’—माधवीकेँ ओकर दृढ़ता देखबैत अछि। जाँचमे गरीब युवतीक अनुपस्थितिकेँ अपराध मानि लेबाक प्रवृत्तिपर प्रश्न उठैत अछि।

अध्याय ५ — माधवीक पहिल सपना

कथाक समग्र परिचय

दुलारीक खोज आ वसुधाक मृत्यु सँ थाकल माधवी अपन माय मालती देवी लग घर घुरैत छथि। रातिमे हुनका सात सीढ़ी, लाल ओढ़नी आ साँस लैत देवालक रहस्यमय सपना अबैत अछि। जागलापर हथेलीमे उज्जर धूरिक कण देखिकऽ ओ सशङ्कित होइत छथि, मुदा सपना आ तथ्यकेँ एक नहि मानबाक प्रयत्न करैत छथि। वसुधाक झोरामे देखल मोट पोथीक स्मृति हुनका पुलिसक सूची दिस लऽ जाइत अछि। जयनारायण आ अभिराम धूरिक सम्भावित भौतिक कारण जाँचबाक बात कहैत छथि। एहि अध्यायमे माधवीक अपराध-बोध, स्मृति, भय आ अन्तःअनुभव जाँचक वस्तुगत पद्धतिक संग टकराइत अछि, मुदा कोनो अलौकिक निष्कर्ष घोषित नहि होइत।

अध्याय ६ — बन्द कोठरीक दोसर साँस

कथाक समग्र परिचय

जाँचक केन्द्र बन्द अभिलेख-कोठरीक वेंटिलेटर आ ओकर पाछाँक पुरान वायु-नली बनैत अछि। जयनारायणक सूक्ष्म निरीक्षण, अभिरामक वायु-परीक्षण आ भवनक ऐतिहासिक मरम्मत-अभिलेखसँ बुझाइत अछि जे बन्द बुझाएवला कोठरीमे हवा प्रवेशक वैकल्पिक बाट अछि। दुलारीक छाता आ बरखाक दिशा सेहो परीक्षणमे अबैत अछि। पुरान भवनक नक्शा, निरीक्षण-पट्टी आ मरम्मत-कक्षक सम्बन्ध साँकलक रहस्यकेँ सम्भव भौतिक तर्क दैत अछि, यद्यपि घटनाक वास्तविक क्रियाविधि एखन सिद्ध नहि। माधवीक सपनासँ मिलैत हवा आ देवालक संकेतकेँ जाँचक प्रेरणा मानल जाइत अछि, प्रमाण नहि।

अध्याय ७ — वसुधाक घर

कथाक समग्र परिचय

जयनारायण आ माधवी वसुधाक शोकमग्न घर पहुँचि हुनकर पति अरुण, भाई प्रखर, माय आ सासुसँ बात करैत छथि। घरक सदस्य सभ वसुधाक जिद, भूमि-मुकदमा, धमकी आ पारिवारिक तनावकेँ अलग-अलग अर्थ दैत छथि। वसुधाक अध्ययन-कक्षमे कागजक बामा कोन मोड़बाक आदति, चीनी-विहीन चाय आ लेखनक अन्य नियमित ढङ्गक पुष्टि होइत अछि। माधवी प्रखरक फोनपर ‘फेर फोन नहि करू’ सन सन्देश देखैत छथि, मुदा तुरन्त अपराधक अर्थ नहि निकालैत छथि। प्रयोगशालाक कप-परीक्षण चीनीक असमानता प्रमाणित करैत अछि। एहि अध्यायमे मृत्युकेँ घरक प्रतिष्ठा आ निजी सम्बन्धक कथा बनाओल जाएबाक खतरा सेहो सामने अबैत अछि।

अध्याय ८ — रोजक आदति

कथाक समग्र परिचय

कमली देवी, माधवी आ आन परिचित लोकसँ वसुधाक दैनिक समय-सारिणी, चाय, सुपारी, कागज मोड़बाक ढङ्ग आ कचहरीक कामक विस्तृत सूचना एकत्र होइत अछि। स्वतन्त्र स्मृति आ छोट प्रयोगसँ घटनास्थलक कागजक मोड़ सामान्य आदतिसँ अलग बुझाइत अछि। अभिराम पुरान मरम्मत-अभिलेखमे वायु-मार्गक सूचना आनैत अछि। जयनारायण चेतबैत छथि जे एकटा आदति कानूनन निर्णायक प्रमाण नहि, मुदा अनेक असङ्गतिक मेल महत्त्वपूर्ण जाँच-बिन्दु होइत अछि। माधवी आ अभिरामक बीच तर्क-वितर्क धीरे-धीरे सहयोग आ निकटतामे बदलए लगैत अछि। घटनास्थलकेँ मृतकक व्यवहारक आलोकमे पढ़बाक पद्धति एहि अध्यायमे विकसित होइत अछि।

अध्याय ९ — माधवी आ अभिराम

कथाक समग्र परिचय

साँझक डिजिटाइज कक्षमे माधवी आ अभिराम सात टोला, १९३४, ‘सातम चिन्ह’, नछत्तर-पोथी आ वायु-मार्गसँ सम्बन्धित पुरान अभिलेख खोजैत छथि। दू युवक-युवतीक बीच आँकड़ा, स्मृति, भरोसा आ अपन-अपन जीवनक अनुभवपर लमहर संवाद होइत अछि। सम्भावित ऐतिहासिक छवि आ प्रवेश-अभिलेखक जानकारी भेटितो जयनारायण मूल स्रोत देखल बिना अन्तिम निष्कर्ष नहि निकालबाक सलाह दैत छथि। माधवीक सम्बन्धक प्रसङ्गसँ अभिरामक अव्यक्त स्नेह स्पष्ट होमय लगैत अछि। अन्तमे सूचना भेटैत अछि जे वसुधाक झोरामे एक पुरान कपड़ामे बान्हल पोथी सुरक्षित अछि। दुनू एके छाताक नीचाँ घर दिस बढ़ैत छथि; रहस्यक बीच व्यक्तिगत नेहक सूत्र सेहो खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १० — नछत्तर-पोथी

कथाक समग्र परिचय

पुलिसक उपस्थितिमे वसुधाक मोहरबन्द झोरा खोलल जाइत अछि। भीतर ‘जन्म-नछत्तर आ घर-बही’ नामक पुरान पोथी भेटैत अछि, जाहिमे जन्म-तिथि मात्र नहि, बाढ़ि, विवाह, घरक झगड़ा, कर्ज आ विस्थापनक स्मृति सेहो लिखल अछि। अंबिका काकी एहि पोथीमे विभिन्न परिवार, कुसुमा, लाल ओढ़नी, पुरान राहत-शिविर आ सात प्रमाण-सङ्केतक चिन्ह पहिचानबाक प्रयास करैत छथि। नक्षत्रक लेखाक सामाजिक इतिहास बनि जाएब कथा लेल महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। ‘सातम साक्षी’ व्यक्ति छथि अथवा प्रमाणक कोनो रूप—ई एखन प्रश्न रहैत अछि। सूत्र अधूर पाठपर कम भरोसाक सूचना दैत अछि आ अनुसन्धान पुरान पारिवारिक इतिहास दिस मुड़ैत अछि।

अध्याय ११ — घरक एकटा झूठ

कथाक समग्र परिचय

सूत्रक सड़क-कैमरा, गाड़ी आ दूरभाषक मिलानसँ वसुधाक पति अरुणक कथन गलत सिद्ध होइत अछि—ओ राति घरसँ बाहर गेल छलाह। पूछताछमे बुझाइत अछि जे अरुण अपन सम्बन्धिनी रूपाक निजी चिकित्सकीय सङ्कटमे सहायता करए गेल छलाह; परिवारक लाज बचाबय ओ झूठ बजलाह। एहि झूठकेँ वसुधाक मृत्युक सीधा प्रमाण मानब अनुचित ठहरैत अछि। अरुण रातिमे वसुधासँ फोन पर बात भेलाक समय दुलारीक उपस्थितिक सङ्केत सेहो दैत छथि। सासुक पुरान पारिवारिक कथा आ ‘कनियाँक कोठरी’क उल्लेख जाँचकेँ घरक बन्द कोठरी दिस लऽ जाइत अछि। अध्याय देखबैत अछि जे सभ गुप्त बात अपराध नहि होइत।

अध्याय १२ — कनियाँक कोठरी

कथाक समग्र परिचय

वसुधाक घरक बन्द ‘कनियाँक कोठरी’ विधिसम्मत उपस्थिति आ सूची बनाकऽ खोलल जाइत अछि। पुरान फोटोमे १९३४क राहत-शिविर, लाल ओढ़नीवाली एक युवती आ वर्तमान अभिलेख-भवनसँ मिलैत वेंटिलेटर देखाइत अछि। परिवारक बुजुर्ग स्त्री कुसुमाक नामसँ जुड़ल मनाहीक परम्पराक सङ्केत दैत छथि। कोठरीमे भेटल वस्तु, लिखावट आ फोटो वसुधाक पुरान इतिहास खोजबाक प्रयत्नकेँ स्पष्ट करैत अछि। माधवीक सपनामे देखल आकृतिक संग फोटोसँ किछु समानता बुझाइत अछि, मुदा जाँच-दल ओकरा स्वतंत्र प्रमाण नहि मानैत। ‘कनियाँक कोठरी’ पारिवारिक मौन, लोकस्मृति आ ऐतिहासिक दस्तावेजक संगम बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३ — भूकम्पक बर्खं

कथाक समग्र परिचय

कथा माघ १९९० सालक विनाशकारी भूकम्पक समयमे पाछाँ घुरैत अछि। राहत-शिविरमे उच्च घरानाक पढ़ल युवती कुसुमा आ नकल-लेखनक काज करनिहार रासबिहारी परिचित होइत छथि। लोकक नाम, बस्ती, राहत आ पुरान सीमा लिखैत दुनू देखैत छथि जे आपदामे गरीबक घरक संग ओकर निवासक प्रमाणो नष्ट भऽ जाइत अछि। कुसुमा निम्नवर्गीय परिवारक स्त्री-पुरुषक नाम सुरक्षित राखबाक प्रश्न उठबैत छथि। सात टोला परिवारक संयुक्त भूमि-अधिकारक आवश्यकता धीरे-धीरे स्पष्ट होइत अछि। सामाजिक सेवा आ साझा संवेदनाक बीच कुसुमाक मनमे रासबिहारी लेल स्नेह जन्मैत अछि।

अध्याय १४ — मनाहीक नेह

कथाक समग्र परिचय

राहत-शिविरक काम बढ़लाक संग कुसुमा आ रासबिहारीक प्रेम विकसित होइत अछि। मुदा जाति, धन, परिवारक प्रतिष्ठा आ स्त्रीक स्वाधीनतापर नियंत्रण एहि सम्बन्धक विरुद्ध ठाढ़ अछि। कुसुमाक घरक काका हुनकर कचहरी जाएब पसिन्न नहि करैत छथि। दादीक नछत्तर-बही, पत्र आ निजी नील सूतक गाँठि हुनकर स्नेहक सांकेतिक भाषा बनैत अछि। दुनू एक-दोसराकेँ सामाजिक कर्तव्य आ सात टोला जमीनक मुद्दासँ अलग नहि देखैत छथि। दादी सम्बन्धक आभास पबैत छलीह, मुदा कुसुमाकेँ सावधान करैत छथि जे प्रेम आधा झूठपर दीर्घकाल नहि टिकत।

अध्याय १५ — सात टोला

कथाक समग्र परिचय

भूकम्पपछाति सात टोला परिवार अपन-अपन नाम, सीमा, पोखरि, बाट, सामूहिक उपयोग आ पुरान बसावट सुरक्षित करबाक लेल बैठक करैत अछि। रासबिहारी प्रतिनिधि सभक कथन, अँगूठा-छाप आ उपलब्ध नक्शाक आधारपर संयुक्त दस्तावेज तैयार करैत छथि; कुसुमा सेहो एहि काममे योगदान दैत छथि। दस्तावेज बनब लोककेँ अपन अधिकार स्पष्ट रूपेँ कहबाक साहस दैत अछि, विशेषतः स्त्री आ हाशियाक परिवारकेँ। कुसुमाक हस्ताक्षर घराना-स्वार्थक विरुद्ध प्रमाण बनैत अछि। कागज बनलाक खबर घर पहुँचैत अछि आ काका कुसुमाक बाहर जाएब रोकि दैत छथि। सार्वजनिक अधिकारक सङ्घर्ष आब घरक भीतरक विद्रोह बनि जाइत अछि।

अध्याय १६ — गायब दस्तावेज

कथाक समग्र परिचय

कुसुमाकेँ घरमे रोकि देल जाइत अछि आ एही बीच सात टोला मुकदमाक मुख्य लाल बस्ता, मूल हस्ताक्षर आ सत्यापन-सामग्री कचहरीसँ गायब होइत अछि। दस्तावेज हटेबाक दोष रासबिहारीपर देल जाइत अछि; रिश्वत, निजी सम्बन्ध आ घरानाक बदनामीक अफवाह पसरैत अछि। कुसुमा बाहर नहि निकलि सकैत छलीह, मुदा नन्दलालक माध्यमसँ गोपनीय सूचना पहुँचबाक सम्भावना बनैत अछि। काका हुनकासँ लिखाबय चाहैत छथि जे रासबिहारी बहकाकऽ हस्ताक्षर लेलनि। कुसुमा झूठा बयान देबासँ साफ मना करैत छथि। गायब दस्तावेजक रहस्य आ स्त्रीक व्यक्तिस्वातन्त्र्यक प्रश्न एकहि सङ्घर्षमे बदलैत अछि।

अध्याय १७ — लाल ओढ़नीक राति

कथाक समग्र परिचय

आषाढ़क भीषण बरखामे घरमे बन्द कुसुमा दादीक सहायता सँ पिछला बाटसँ निकलैत छथि। ओ सुरक्षित नकल आ सात टोला लोकक कागज बचाएबाक आशा लऽ पुरान भण्डार-भवन दिस जाएबाक सोचैत छथि। तकर बाद हुनकर पक्का ठेकान नहि भेटैत। घरक खोज, प्रशासनक सूचना आ रासबिहारीक उपस्थिति-बही एक सीमा धरि तथ्य दैत अछि; मुदा कुसुमाक नदीमे डूबब, भागि जाएब, हवेलीमे बन्द होएब अथवा प्रेमी संग पलायनक अनेक विरोधी लोककथा पसरैत अछि। लाल ओढ़नी आ पायलक आवाज स्मृतिक रहस्यमय प्रतीक बनैत अछि। उपन्यास एहि ऐतिहासिक गुमशुदगीक कोनो निश्चित समाधान नहि दैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८ — देवालक पेट

कथाक समग्र परिचय

कथा वर्तमानमे घुरैत अछि। माधवीकेँ फेर पायलक झनकार सुनाइत अछि आ पुरान हवेलीक ‘कनियाँ-कोठरी’क खोज शुरू होइत अछि। वसुधाक परिवारक अनुमति तथा उपस्थित साक्षीक संग निरीक्षण कएलापर भूकम्पक मरम्मत, वेंटिलेटर आ देवालक पुरान तह महत्त्वपूर्ण सिद्ध होइत अछि। विशेषज्ञ सभ सावधानीसँ देवालक खोखर खोलैत छथि आ ओतऽ आधा ऐतिहासिक पत्र तथा नील धागाक चिन्ह भेटैत अछि। भेटल सामग्री सुरक्षित कऽ जाँच लेल पठाओल जाइत अछि। झनकारक सम्भावित कारण पुरान लोहेमे हवा सेहो मानल जाइत अछि। तर्कसङ्गत अनुसन्धानक बीच कुसुमाक अधूर कथा फेर जीवित होइत अछि।

अध्याय १९ — हथेली पर दू रेखा

कथाक समग्र परिचय

हवेलीसँ भेटल धागा आ पत्रक बाद माधवी अपन हथेली आ स्वप्नपर सोचैत छथि। ओ अंबिका काकी लग जाइत छथि, जतऽ अनुभव, हस्तरेखा, मानवीय निरीक्षण आ आधुनिक आँकड़ाक अर्थपर बातचीत होइत अछि। काकी कहैत छथि जे लमहर जीवनानुभवकेँ जादू कहि छोड़ब आ संगणककेँ त्रुटिहीन मानब दुनू गलत अछि। माधवी आ अभिरामक बीच हल्का व्यङ्ग्य आ निकटता सेहो बढ़ैत अछि। एही बीच सूत्र बैंक निकासी, दूरभाष आ नदीपारक स्थानक आँकड़ा जोड़ि दुलारीकेँ ‘प्राथमिक संदिग्ध’ घोषित करैत अछि। एहि निष्कर्षसँ आनन्दपूर्ण वातावरण फेर आशङ्कामे बदलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २० — सूत्रक पहिल भूल

कथाक समग्र परिचय

दुलारीक विरुद्ध सूत्रक प्रमुख आधार—बारम्बार नगद निकासी, साझा दूरभाष, अपरिचित खातासँ भुगतान आ गायब रहब—स्वतन्त्र सत्यापनमे दोसर अर्थ पबैत अछि। निकासी परिवारक औषधि आ आवश्यकता लेल छल; सम्पर्क-संख्या अनेक घरक साझा साधन छल; बारह सय रुपैया विधिक-सहायता समितिक यात्रा-व्यय छल। अभिराम मानैत अछि जे संदर्भहीन आँकड़ा गरीब जीवनकें अनुचित रूपें संदिग्ध बना सकैत अछि। वसुधाक दुलारीक सम्बन्धमे लिखल ‘सम्पर्क सुरक्षित नहि’ सन टिप्पणी खतरेकें प्रकट करैत अछि। तखन माधवीकें सात सेकण्डक आवाज भेटैत अछि—‘हम भागल नहि छी’। ई दुलारीक जीवित होएबाक महत्त्वपूर्ण सङ्केत बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१ — दुलारीक आवाज

कथाक समग्र परिचय

सात सेकण्डक आवाज माधवीकेँ दुलारीक लगैत अछि, मुदा जयनारायण पहिचान आ विधिसम्मत प्रमाणनकेँ अलग रखैत छथि। दूरसंचार जाँच आवाजक सन्देश नदीपारक टावर-क्षेत्रसँ जुड़ल देखबैत अछि; निश्चित गाम वा घर चिन्हित नहि होइत। स्थानीय भौगोलिक जानकारी आ नाविकक सहयोग लेल जाँच-दल बरैला-दियारा दिस जाएबाक निर्णय करैत अछि। दुलारीक माय चाहैत छथि जे माधवी संग रहय, ताकि बेटी पुलिसदेखि नहि नुकाए। नावमे जयनारायण, माधवी, अभिराम, महिला सिपाही आ भोला सहनी निकलैत छथि। एहि अध्यायमे गुमशुदगीक अमूर्त सन्देह वास्तविक खोजक दिशा पबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २२ — नाव पर राति

कथाक समग्र परिचय

नदीपारक यात्रामे आँधी-बरखा आ तेज धार नावकेँ सङ्कटमे डालैत अछि। नाविक भोला सहनीक स्थानीय अनुभूति यांत्रिक नक्शाक अपेक्षा कतेको क्षणमे अधिक उपयोगी होइत अछि। दल राति अस्थायी आश्रयमे बितबैत अछि आ दियारा-लोकसँ पूछताछ कऽ दुलारीक सम्भावित बाटक जानकारी जोड़ैत अछि। जोखिमक बीच माधवी आ अभिरामक परस्पर सहारा नेहकेँ नब निकटता दैत अछि; दुनू एक-दोसराक अनुभवक सीमाकेँ सेहो स्वीकारैत छथि। पर्याप्त सूचना बिना चरमे आगाँ बढ़नाइ सुरक्षित नहि मानि दल अन्ततः शहर घुरैत अछि। दुलारी एखन नहि भेटैत, मुदा खोजक भूगोल स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय २३ — ज्योतिषी नहि, स्मृतिकार

कथाक समग्र परिचय

अंबिका काकी अपन निजी बही सभ जाँच-दलकेँ देखबैत छथि। एहि दस्तावेजमे जन्मक ज्योतिषीय लेखासँ अधिक महत्त्वपूर्ण लोकक पलायन, विवाह, कर्ज, बाढ़ि आ विस्थापनक स्मृति अछि। सात टोला परिवारक पुरान बसावट अलग-अलग सम्बन्धक भीतर दर्ज भेटैत अछि, जाहिसँ औपचारिक अभिलेखक खाली जगह भरबाक दिशा बनैत अछि। काकी केवल भविष्य कहनिहार नहि, स्थानीय इतिहासक स्मृतिकार रूपमे सामने अबैत छथि। अभिराम आ माधवी बुझैत छथि जे मौखिक स्मृति मूल्यवान स्रोत भऽ सकैत अछि, मुदा सत्यापन आवश्यक रहत। वसुधा सेहो मृत्यु सँ पहिने एहि इतिहासक खोज करैत छलीह—ई बात महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २४ — आध रातिक पायल

कथाक समग्र परिचय

हवेलीक पुरान आ वर्तमान फोटो तुलना करैत माधवी एक एहन देवालक हिस्सा देखैत छथि जाहिपर मरम्मतक नब चून पुरान लिखावटकेँ झाँपने अछि। रातिमे पायलक झनकारक अनुभव दोहराइत अछि, मुदा ओ ओकरा स्वतन्त्र प्रमाण नहि बनबैत छथि। अगिला निरीक्षणमे विशेषज्ञ सभ चून नहि हटाकऽ तिरछा प्रकाश आ फोटोग्राफीसँ अक्षर उभारैत छथि। लिखावटमे कुसुमाक नाम आ 'हम एतऽ रही' सन वाक्य पढ़ल जाइत अछि। ई कुसुमाक उपस्थितिसँ सम्बन्धित सम्भावित ऐतिहासिक चिन्ह अछि, मुदा लिखावट कखन आ के कएलक, से अज्ञात रहैत अछि। सपना आ दस्तावेजक बीचक अन्तर कथामे सुरक्षित रहैत अछि।

अध्याय २५ — दुलारी भेटल

कथाक समग्र परिचय

स्थानीय नाव-दल दुलारीसँ मेल खाइत युवतीक सूचना दैत अछि आ माधवी, पुलिसक महिला अधिकारी तथा जाँच-दल नदीपारक चर पर जाइत छथि। फुलमतिक आश्रयमे दुलारी जीवित भेटैत अछि। ओ बतबैत अछि जे कागज जरबैत एक व्यक्तिकेँ देखला बाद आ स्वयं आरोपित होएबाक डर सँ घर नहि घुरल। वसुधासँ जुड़ल छाया-नकल ओ तेल-कागजमे सुरक्षित रखने अछि, जेकर स्वैच्छिक सुपुर्दगीक स्पष्ट अभिलेख ओ चाहैत अछि। दुलारीक अविश्वास ओकर सामाजिक अनुभवसँ उपजल अछि—पुलिस गरीबक कथन पहिने नहि मानत, ई ओकर डर छल। शहर लौटैत ओ पूछैत अछि जे ओ साक्षी अछि कि आरोपी।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २६ — गिरफ्तारी

कथाक समग्र परिचय

थानामे दुलारी अपन बयान पढ़ि सत्यापित करबाक अधिकार माँगैत अछि आ सुरक्षित छाया-नकल पुलिसकेँ दैत अछि। मुदा वसुधाक अन्तिम भेटनिहार, गायब रहबाक अवधि, नकल अपन लग रखब आ सूत्रक पहिल प्रतिवेदनक आधारपर पुलिस ओकरा गिरफ्तार करैत अछि। विधिक-सहायताक अधिवक्ता रचना मंडल पहुँछि गिरफ्तारीक आधार, संशोधित विश्लेषण आ दुलारीक अधिकारपर प्रश्न उठबैत छथि। दुलारीक स्वैच्छिक सहयोगक बादो ओकरा हिरासतमे जाएब पड़ैत अछि। जयनारायण आ अभिराम बुझैत छथि जे तकनीकी त्रुटि सुधारलाक बादो पहिल गलत निष्कर्ष प्रशासनिक कागजमे जीवित रहि सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ — जमानतक बहस

कथाक समग्र परिचय

सत्र न्यायालयमे दुलारीक जमानतपर रचना मंडल सुनियोजित बहस करैत छथि। ओ साझा दूरभाष, औषधि लेल बैंक निकासी, विधिक-सहायता भुगतान आ दुलारी द्वारा स्वेच्छासँ देल छाया-नकलक तथ्य प्रस्तुत करैत छथि। अभियोजन ओकर गायब रहब आ अन्तिम भेटक आधारपर हिरासतक माँग करैत अछि, मुदा बचाव पक्ष सूत्रक संशोधित संस्करण आ मूल अभिलेखक अनुपस्थितिपर जोर दैत अछि। न्यायाधीश इरा सिन्हा जाँचमे सहयोग आदि शर्तक संग जमानत मंजूर करैत छथि आ प्रणालीक सभ संस्करण सुरक्षित राखबाक निर्देश दैत छथि। दुलारी मुक्त होइत अछि, मुदा ओकर दोष-अदोषक प्रश्न एखन समाप्त नहि भेल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २८ — साक्ष्यक मालिक के

कथाक समग्र परिचय

जमानतक बाद न्यायालयमे मुख्य प्रश्न बनैत अछि—सूत्रक निष्कर्षक उत्तरदायित्व ककर? अभिराम पहिल आ संशोधित प्रतिवेदन, आँकड़ाक स्रोत, गलत वर्गीकरण आ सीमित विश्वसनीयताक बात स्पष्ट करैत अछि। न्यायालय निर्णय दैत अछि जे तकनीकी विश्लेषण स्वतन्त्र प्रत्यक्ष साक्षी नहि; ओकरा उपयोग करबाक लेल मूल स्रोत, संरक्षण-क्रम, गणना-विधि आ मनुष्यक जिरह योग्य उत्तरदायित्व आवश्यक अछि। दुलारी विरुद्ध पहिल मशीन-आधारित शङ्काक आधार कमजोर होइत अछि। सुनवाईक बाद कमली देवी कैँ भोर चारि बजि दस मिनट पर दू चमच चीनीवाली चाय लेनिहार परिचित व्यक्तिक बात मोन पड़ैत अछि, जे घड़ी रुकबाक सात मिनट पहिनेक नब सङ्केत बनैत अछि।

अध्याय २९ — कमली देवीक चारि बजिया चाय

कथाक समग्र परिचय

कमली देवी अपन चूल्हि, दूधक आपूर्ति आ रोजक क्रमसँ भोरक समय अनुमान करैत छथि। ओ एक परिचित चाय लेनिहार व्यक्तिक विधिसम्मत बयान दैत छथि, मुदा पहिचान तत्काल निश्चित नहि होइत। घड़ीक यांत्रिक जाँच देखबैत अछि जे जोरक झटकासँ ओ रुकि सकैत छल; चिकित्सा-परीक्षणमे आत्महत्याक निर्णायक विष-प्रमाण नहि भेटैत। वायु-नली आ साँकलक प्रतिरूप बनाकऽ दूरसँ दुआरि अँटकाओल जाएबाक सम्भावना प्रयोग द्वारा देखाओल जाइत अछि। भोरक मीठ चाय, रुकल घड़ी, जड़ल कागज आ गायब नकल एक-दोसराक लग अबैत अछि, मुदा समय-समीपता मात्रसँ दोष सिद्ध नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३० — बनाओल आत्महत्या

कथाक समग्र परिचय

पुलिस न्यायालयमे वसुधाक मृत्युक प्रारम्भिक ‘आत्महत्या’ धारणा पर पुनर्विचारक आवेदन दैत अछि। पाँच तरहक आदति-विसङ्गति, दू कप, चोट, घड़ी, राख, छाया-नकल आ साँकलक सम्भावित यान्त्रिक नियन्त्रणक आधारपर घटनास्थल जानि-बुझि बदलल होएबाक शङ्का मजबूत होइत अछि। न्यायालय सम्भावित हिंसक मृत्यु आ प्रमाण-हेरफेरक दिशामे विस्तृत जाँच स्वीकार करैत अछि। जयनारायण चेतबैत छथि जे बनाओल दृश्यक लेखक एक नहि सेहो भऽ सकैत अछि—वसुधाक आदति जाननिहार आ भवनक पुरान वायु-नली जाननिहार भिन्न व्यक्ति भऽ सकैत छथि। एहि अध्यायमे आत्महत्याक आसान कथा औपचारिक रूपसँ टूटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३१ — जयनारायणक पक्षपात

कथाक समग्र परिचय

कमली देवी पहिल पहिचानमे वसुधाक पति अरुणक फोटो चुनैत छथि। मुदा समय-रेखा, चिकित्सकक आगमन आ दूरभाषक दृश्य-संवादक आधारपर अरुणक चारि बजिक आसपास कचहरीमे उपस्थिति अत्यन्त असम्भव सिद्ध होइत अछि। जयनारायण स्वीकारैत छथि जे चन्द्रकलाक एक पुरान जाँचमे पतिक झूठकेँ समय पर नहि पकड़ि सकबाक स्मृति हुनका अरुणक विरुद्ध पक्षपाती बना रहल छल। ओ अपन पुष्टि-पक्षपातकेँ स्पष्ट रूपेँ दर्ज करबैत छथि। मानवीय स्मृति आ प्रत्यक्षदर्शीक अनिश्चितताकेँ स्थान देबाक आवश्यकता सामने अबैत अछि। एही बीच पुरान अभिलेखमे ‘रासबिहारी’ नाम देखिकऽ अभिरामक अपन परिवारक इतिहाससँ सम्बन्धित शङ्का जागैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३२ — अभिरामक घरक कागज

कथाक समग्र परिचय

अभिराम अपन घरक पुरान संदूकमे रासबिहारीक नामवला १९३५क पुनर्नकल-आवेदन आ १९५०क दशकक नकल भेटबैत अछि। कागजपर ओकर पुरखाक हस्ताक्षर, लाल पेन्सिलक टिप्पणी आ सात टोला सीमासँ सम्बन्धित जानकारी अछि। ई स्रोत वसुधाक शोधकेँ महत्त्वपूर्ण सहायता दऽ सकैत अछि, मुदा परिवारपर आरोप लगबाक डर अभिरामकेँ रोकैत अछि। ओ पहिने कागजक छवि बनबैत अछि, मुदा तत्काल पूरा जानकारी माधवी अथवा जाँच-दलसँ साझा नहि करैत। निजी भयकेँ स्रोत-पुष्टिकरणक उचित सावधानी कहि ओ अपनहि केँ बुझबैत अछि। ओकर मौन नेह आ व्यावसायिक ईमानदारी दुनू लेल समस्या बनैत अछि।

अध्याय ३३ — नेहमे दरार

कथाक समग्र परिचय

माधवीकेँ अभिरामक घरमे भेटल कागज आ ओकर चुप्पीक बात मालूम पड़ैत अछि। ओ आहत छथि, कारण अभिराम पहिनेसँ मानि लेलक जे परिवारक नाम सुनि माधवी ओकरा दोषी बुझतीह। दुनूक विश्वासमे दरार पड़ैत अछि। जयनारायण स्रोत रोकबकेँ जाँचक त्रुटि मानैत छथि, मुदा अभिरामक भयकेँ अलग मानवीय समस्या रूपमे देखैत छथि। अन्ततः मूल कागज विधिसम्मत रूपेँ सुपुर्द होइत अछि, ओकर उत्पत्ति आ परीक्षणाधीन स्थिति स्पष्ट लिखल जाइत अछि। सूत्र विभिन्न बर्खक नक्शा जोड़ि सीमा एके दिशामे सरकबाक प्रारम्भिक सङ्केत देखबैत अछि। तकनीकी काम आगाँ बढ़ैत अछि, मुदा व्यक्तिगत भरोसा तुरन्त नहि घुरैत।

अध्याय ३४ — सूत्रक नव नक्सा

कथाक समग्र परिचय

नब स्रोत जोड़ि सूत्र १९३४, १९४१, १९५७ आ वर्तमानक सीमांकन-नक्शा तुलना करैत अछि। पोखरि, मन्दिर, स्थिर स्थल-चिन्ह आ कागजक सिकुड़नक भेद ध्यानमे रखिते सात टोला सीमाक क्रमिक विस्थापन एके दिशा मे देखाइत अछि; बहुत हिस्सा लगक घराना-जमीनमे जोड़ल देखाइत अछि। सरकारी बहीमे ‘सीमा सुधार’ टिप्पणी अछि, मुदा अनेक पन्नापर वैधानिक निरीक्षण आ प्रतिनिधिक हस्ताक्षरक अभाव अछि। मैदानी सत्यापन तकनीकी चित्रकेँ परखैत अछि। पुरान नकलमे गोलक भीतर सात बिन्दुक चिन्ह फेर देखाइत अछि। जाँच एखन दोषी नहि, बल्कि अभिलेख-परिवर्तनक ठोस प्रक्रियाकेँ खोजैत अछि।

अध्याय ३५ — रहमत काकाक गाँठि

कथाक समग्र परिचय

पुरान पोथी बान्हनिहार रहमत काका नील धागाक भौतिक बनावट आ मरम्मत-बहीक प्रविष्टि देखैत छथि। ओ चेतबैत छथि जे धागाक रंगसँ ककरो पहचान निश्चित करब उचित नहि। पुरान कार्य-पर्चीमे नील सूत ‘कन्याक निज चिन्ह’ कहल गेल अछि, सम्भवतः कुसुमाक, सरकारी मुहर नहि। रहमत काका १९३५क दाखिल-बही जिल्दमे फाटल पत्रक भाग जोगाओल गेल होएबाक सम्भावना बतबैत छथि। हुनकर पुस्तक-बँधनक अनुभव भूलेल इतिहासक नब स्रोत बनैत अछि। माधवी आ अभिरामक बीच किछु संवाद फेर सम्भव होइत अछि, मुदा भरोसाक दरार एखन पूरापूर नहि भरल।

अध्याय ३६ — सातम साक्षी शब्दक असल अर्थ

कथाक समग्र परिचय

जिला अभिलेखागारक १९३५क दाखिल-बहीक जिल्द भीतर सुरक्षित कागजक दोसर टुकड़ा भेटैत अछि, जकर किनार हवेलीसँ भेटल आधा पत्रसँ मेल खाइत अछि। प्रारम्भिक पठनसँ ‘सातम साक्षी’क ऐतिहासिक अर्थ स्पष्ट होइत अछि—सात टोला भूमि-दस्तावेजक सातम प्रमाण-चिह्न, अर्थात् घराना-पत्रक पुरान स्वीकारक चिन्ह; ई कोनो निश्चित व्यक्तिक नाम नहि। गोल भीतर सात बिन्दु नकलक सत्यापनमे सहायक छल, जखन कि नील सूत कुसुमाक निजी पहिचान। सूत्रक पुरान वर्गीकरण संशोधित कएल जाइत अछि। मुदा पत्रक अन्तिम प्रश्न—‘जे देखैत अछि मुदा नाम नहि कहैत, ओकरा कोन लेखामे राखब?’—एकटा नब अनिर्णीत अर्थ छोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३७ — परिवारक टूटल घेरा

कथाक समग्र परिचय

वसुधाक भाई प्रखरक ऋण, कारोबारी भुगतान आ भूमि-समूहसँ आर्थिक सम्बन्धक कागज भेटैत अछि। परिवारक कथनसभ ओकर रातिक उपस्थिति सिद्ध करबाक प्रयत्न करैत अछि, मुदा स्रोतक तुलना अनेक खाली जगह देखबैत अछि। माधवी पहिने प्रखरक फोनपर जे गोपनीय सन्देश देखलीह, ओकर सम्बन्ध भूमि-समूहक दलाल विजय मल्लिकसँ निकलैत अछि। कमली देवीक भोरक चायवला पहिचान फेर परीक्षणमे प्रखर दिस सङ्केत करैत अछि, यद्यपि ओ पूर्ण प्रमाण नहि। प्रखरक दोसर फोनसँ वरिष्ठ अभिलेख-सहायक नवलकिशोर झा संग राति आ भोरक सम्पर्क भेटैत अछि। जाँचक केन्द्र आब प्रखर आ अभिलेख-कर्मीक सम्बन्ध बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ — चारि बजि सतरह मिनट

कथाक समग्र परिचय

स्रोत, बयान आ भौतिक परीक्षण जोड़लाक बाद घटनाक निर्णायक क्रम सामने अबैत अछि। प्रखर भूमि-समूहक ऋणक दबावमे वसुधाक नकल रोकबाक उद्देश्यसँ भोरमे कोठरी पहुँचैत अछि। बहिनसँ झगड़ाक समय ओ हिंसक धक्का दैत अछि; वसुधाक माथ अलमारीक कठोर कोनासँ टकराइत अछि आ घड़ी चारि बजि सतरह मिनट पर रुकैत अछि। प्रखर चिकित्सा-सहायता बजाबयक बदला नवलकिशोरकेँ बजबैत अछि। नवलकिशोर कागज जरबैत, मेजक दृश्य बदलैत आ पुरान वायु-नलीसँ साँकल लगा कऽ बन्द कोठरीक भ्रम रचैत अछि। राति दुलारी छाया-नकल बचा चुकल छलीह। जाँच घटना, हिंसा, सहायता नहि देब आ प्रमाण नष्ट करबकेँ अलग-अलग लिखैत अछि; विधिक दोषक अन्तिम निर्धारण न्यायालय लेल छोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३९ — दुलारीक आँखि

कथाक समग्र परिचय

दुलारी पुनः बयान देबय पहुँचि स्पष्ट पूछैत अछि जे ओ आरोपी अछि कि साक्षी। विधिसम्मत पहिचान-प्रक्रियामे ओ जे देखल, केवल ओतबे कहैत अछि—कागज जरबाक आगि, एक व्यक्तिक चाल आ चाभीक चमक; ओ हत्या देखबाक दावा नहि करैत। ओ बतबैत अछि जे छाया-नकल सुरक्षित राखबाक, सामाजिक पूर्वग्रह आ भूमि-समूहक धमकीसँ बचबाक लेल नदीपारक फुलमतिक घर गेल छल। पुलिस प्रखर आ नवलकिशोर विरुद्ध अलग-अलग आरोपक आवेदन करैत अछि। दुलारीक नामपर रहल सन्देह हटब शुरू होइत अछि। एहि अध्यायमे सीमित मुदा सत्य कथनक नैतिक मूल्य मुखरित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४० — अन्तिम बहस

कथाक समग्र परिचय

1 / 2

आठ महीना बाद न्यायालयमे प्रखर आ नवलकिशोर विरुद्ध अन्तिम बहस होइत अछि। अभियोजन आर्थिक हित, हिंसक धक्का, चिकित्सा-सहायता नहि बजाओल, दस्तावेज जराबय आ घटनास्थल बदलबाक संयुक्त साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि; बचाव पक्ष प्रत्येक स्रोतक सीमा उठबैत अछि। न्यायाधीश इरा सिन्हा पहिनेसँ नियोजित हत्या पर्याप्त सिद्ध नहि मानैत छथि, मुदा प्रखरकेँ मृत्युक कारण बनल हिंसक काज आ प्रमाण-नाशक षड्यन्त्रमे दोषी ठहरबैत छथि। नवलकिशोर प्रमाण नष्ट करब, अभिलेख-छेड़छाड़ आ जाँच भटकाबयमे दोषी ठहरैत अछि। दुलारी विरुद्ध शङ्का पूर्णतः हटाओल जाइत अछि। अदालत स्पष्ट करैत अछि जे ‘सूत्र’ स्वतन्त्र साक्षी नहि; न्यायिक निर्णय सत्यापित स्रोत आ मानवीय

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४० — अन्तिम बहस

उत्तरदायित्वपर टिकल रहत।

अध्याय ४१ — माटि फेर नाम पबैत अछि

कथाक समग्र परिचय

आपराधिक मुकदमाक निर्णय भेला बादो सात टोला परिवारकेँ जमीन स्वतः वापस नहि भेटैत अछि। रचना मंडल दीवानी न्यायालयमे अन्तरिम संरक्षणक माँग करैत छथि, कारण सरकारी नकलक श्रृंखलामे छेड़छाड़क प्रमाण अछि आ विस्थापन अपूरणीय क्षति कऽ सकैत अछि। न्यायालयक देखरेखमे पुनः सीमांकन, पुरान रसीद, परिवारक बसावट, पोखरिक उपयोग आ स्थानीय गवाहीक मिलान शुरू होइत अछि। सूत्रक नक्साकेँ सहायक दृश्य कहल जाइत अछि, वैधानिक माप नहि। माटि, विद्यालय, चूल्हा आ स्मृतिसँ जुड़ल अधिकारक अर्थ सामने अबैत अछि। अन्तिम स्वामित्व एखन अनिर्णीत अछि, मुदा सात टोलाक नाम फेर अभिलेख आ सार्वजनिक आवाजमे घुरए लगैत अछि।

अध्याय ४२ — जतऽ तर्क थमि जाइत अछि

कथाक समग्र परिचय

आपराधिक प्रकरण समाप्त, भूमि-मुकदमा जारी आ हवेली संरक्षित अभिलेख-स्थल बनि चुकल अछि। आधिकारिक निरीक्षणक समय सील कएल कोठरीमे नील धागासँ बान्हल एक अखण्ड पत्र भेटैत अछि, जे पहिने दू अलग सुरक्षित टुकड़ामे भेटल ऐतिहासिक पत्रक पूर्ण पाठसँ मेल खाइत अछि। मूल टुकड़ाक मोहर सुरक्षित अछि आ कैमरा-लेखामे तत्काल कोनो स्पष्ट अनधिकृत प्रवेश नहि देखाइत; मुदा एहि सँ रहस्य समाधान नहि होइत। नव पत्रक उत्पत्ति, कागजक आयु आ रखबाक मार्ग अज्ञात रहैत अछि। माधवी अपन सपना प्रमाण नहि मानैत, अभिराम अज्ञातकेँ अज्ञात लिखबाक पाठ स्वीकारैत आ जयनारायण चुप्पीकेँ बुद्धिक अंश कहैत छथि। उपन्यास प्रश्नकेँ जबरन उत्तर दिए बिना समाप्त होइत अछि।

SECTION / खण्ड

समापन-सङ्केत

08 सातम साक्षी

समापन-सङ्केत

एहि ४२ अध्यायक कथाक केन्द्रमे वसुधाक मृत्यु-जाँच आ सात टोला माटिक अधिकार अछि। ‘सातम साक्षी’ एक दिस पुरान दस्तावेजक सातम प्रमाण-चिह्न बनैत अछि, दोसर दिस मौन, अपूर्ण गवाही आ अज्ञात प्रश्नक साहित्यिक प्रतिध्वनि बनि रहैत अछि। न्यायालयक निर्णय, भूमिकालीन इतिहास आ व्यक्तिगत स्मृतिकेँ एक-दोसरासँ जोड़ितो उपन्यास सभ प्रश्नक अन्तिम उत्तर देबाक दावा नहि करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

WORK / कृति

09 सहस्रबाढ़नि

२३ सम्पादकीय पाठ-खण्ड

SECTION / खण्ड

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

09 सहस्रबाढ़नि

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

झिंगुर → कलित → नन्द → आरुणि : ई वंशानुक्रम कथाक रीढ़ अछि। मिथिलाक नदी, बाढ़ि आ ग्रामजीवनक संग आधुनिक शिक्षा, सरकारी अभियंत्रण, नैतिक संघर्ष, भ्रष्टाचारक जाँच, पारिवारिक स्मृति, विज्ञान-अदृश्यक द्वन्द्व आ जीवन-मृत्युक अनुभव एक क्रममे जुड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

01 झिंगुरक आँगनमे कलितक बाल्यकाल आ नव शिक्षाक दिशा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

झिंगुर ठाकुर आ हुनकर पत्नी अपन पुत्र कलितक बचपनक घटना मोन पाड़ैत छथि। ठेहुनियाँ मारब, खिड़की धरि पहुँचबाक प्रयास, बड़का लोकक बोलीक नकल आ घरक छोट-छोट हँसी-ठट्ठा सँ कथा आरम्भ होइत अछि। एहि घरेलू स्मृतिक बीच सन् १८८५ मे कलितक जन्मक उल्लेख अबैत अछि। अंग्रेजी राजक बढ़ैत प्रभाव आ सरकारी सेवामे अंग्रेजीक आवश्यकताक कारण झिंगुर बाबू पुत्रकेँ केवल परम्परागत संस्कृत शिक्षामे सीमित नहि राखए चाहैत छथि। ओ कलकतियाबाबू आ दरिभङ्गाक बंगाली शिक्षकक माध्यमसँ अंग्रेजी पढ़बाक व्यवस्था करैत छथि।

झिंगुर बाबूकेँ अपन बालकक भविष्यक गर्व अछि, मुदा अखड़ाहामे आन बालक सभक संग ओकर कम सहभागितासँ कचोट सेहो होइत अछि। घरक भीतर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

01 झिंगुरक आँगनमे कलितक बाल्यकाल आ नव शिक्षाक दिशा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

सम्मानसूचक बोलचाल आ लोकाचारक अन्तरक चर्चा होइत अछि। पिता मोनहि-मोन चाहैत छथि जे कलित नव समयक व्यवहार आ पुरान जंजालक बीच अपन स्वतंत्र बाट बनाबथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

02 गोत्रीय निमंत्रण, सभागाछी आ बलान-कमलाक बदलैत धार

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

1 / 2

एकौरसँ आएल समादी तिरहुता लिपिमे लिखल गुलाबक पत्र झिंगुर ठाकुरकेँ दैत छथि। पत्रमे गड़ेस आ चन्द्रमोहनक उपनयनक निमंत्रण, वंशगत सम्बन्ध बनाए रखबाक आग्रह आ झिंगुर बाबूकेँ आचार्य बनेबाक प्रस्ताव अछि। एहि प्रसंगसँ पुरखा, गोत्र, पारस्परिक समाचार आ मिथिलाक सभागाछी-परम्परा सामने अबैत अछि। झिंगुर बाबू कलितकेँ संग लऽ एकौर जाइबाक योजना करैत छथि।

बलानक गहींर आ शांत धारा, कमलाक फेनिल बाढ़ि आ नव धारक निर्माणक विवरण कथा केँ भूगोलक दीर्घ कालसँ जोड़ैत अछि। पिपराघाट दिस गाछ खसला सँ धार बदलबाक, कमलाक बालु जमबाक आ परतापुरक सभागाछीक उजड़बाक विवरण अबैत अछि। एहि परिवर्तित परिदृश्यमे पिता-पुत्र एकौर पहुँचैत छथि, जतए विद्वत्

02 गोत्रीय निमंत्रण, सभागाछी आ बलान-कमलाक बदलैत धार

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

चर्चा, इतिहास आ सामुदायिक भेंटघाँट एकहि संग चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

03 एकौरक सभा, कलितक विवाह आ कटिहारक प्रारम्भिक सेवा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

एकौरमे विद्वान लोकनिक चर्चामे अंग्रेजी शासन, सैनिक अभियान, मँगरूबाबूक युद्ध-स्मृति आ कांग्रेसक उल्लेख अबैत अछि। एहि वातावरणमे राजे गामक फन्नू बाबू कलितक विषयमे जानकारी लैत छथि। कलितक अंग्रेजी शिक्षा आ कटिहारमे राजस्व-वसूलीक सम्भावित काज जनबाक बाद ओ अपन पुत्रीक लेल विवाह-सम्बन्धक विचार करैत छथि। दियाद लोकनिक मध्यस्थतासँ सम्बन्ध शीघ्र निश्चित भऽ जाइत अछि।

महफा, कटही गाड़ी, पैदल बरियात, परिछनि, गीत, शास्त्रार्थ आ रातिभरि चलैत विधि-विधानक वर्णनसँ विवाहक सामाजिक संसार उभरैत अछि। विवाहक बाद कलित कटिहार जाइत छथि। ओतए कोशी क्षेत्रक कठिन परिवेशमे ओ राजस्व-वसूलीक काज सीखि प्रतिष्ठा अर्जित करैत छथि आ भ्रष्ट

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

03 एकौरक सभा, कलितक विवाह आ कटिहारक प्रारम्भिक सेवा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

वसूली-पद्धतिमे सुधारक प्रयास करैत छथि। एहि बीच हुनकर माएक मृत्यु भऽ जाइत अछि। विवाहक उल्लासक पाछाँ पारिवारिक शोकक पहिल पैघ छाया पड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

04 झिंगुरक निधन, बुचियाक विवाह आ भाइक दायित्व

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

कलितक द्विरागमनक तेसर साल झिंगुर ठाकुर अपन मृत्यु निकट देखैत पुत्रकेँ बहिन ‘बुचिया’क जिम्मेवारी सौंपैत छथि। पत्नी-वियोग हुनका भीतरसँ तोड़ि देने अछि। घर-गाम छोड़ि पुत्रसँ संग रहबाक आग्रह स्वीकार नहि कऽ सकैत छथि। झिंगुरक निधनक बाद कलितक जीवनमे पिता-समर्थनक स्थान पर परिवारक निर्णयक पूर्ण भार आबि जाइत अछि।

पिताक बरखी आ गामक भोजक बाद कलित बुचियाक योग्य वर ताकए लगैत छथि। परतापुरक सभागाछीमे मनोनुकूल वर नहि भेटला पर ओ गिद्धौर आ बाढ़ क्षेत्रक परिचयक आधारपर दूरक एक सुयोग्य युवक चुनैत छथि। विवाह निश्चित करबाक हुनकर त्वरित शैली झिंगुरक निर्णयक स्मृति जगा दैत अछि। बुचियाक विवाह विधिपूर्वक होइत अछि। भौजी आ ननदिक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

04 झिंगुरक निधन, बुचियाक विवाह आ भाइक दायित्व

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

स्नेह, द्विरागमनक प्रतीक्षा आ दूर गंगापारक सासुरक कारण उपजल व्याकुलतासँ परिवर्तित गृहस्थी देखाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

05 १९३४ क भूकम्प, नव डीह आ कलितक परिवारक मृत्यु-छाया

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

समयक संग कलित अपन पत्नी, पुत्री-पुत्रक संग परिवार बढ़बैत छथि। १९३४ क भूकम्पमे घर ढहि जएबाक बाद महादेव पोखरिक कात परिवार सहित राति बिताबए पड़ैत अछि। लगातार झटका सँ किछु दिन कटिहार रहबाक पश्चात गामक पुरान डीह छोड़ि फुलवारीक कात नव घर बसाओल जाइत अछि। एहि तरहें प्रकृतिक आपदा परिवारक स्थान आ जीवन-रचना बदलि दैत अछि।

पुत्री सभक विवाह होइत अछि, मुदा प्रसवक समय पहिल पुत्रीक मृत्यु होइत अछि; ओकर छोट बच्ची सेहो बादमे पेट-दर्दसँ नहि बचि सकैत अछि। हैजा, प्लेग आ गामक मृत्यु-समाचार निरन्तर उपस्थित छथि। कटिहारमे कलितक प्रतिष्ठा बढ़ैत अछि, दू पुत्र पढ़ए लगैत छथि। छोट पुत्र नन्द गणित-विज्ञान दिस बढ़ैत छथि, मुदा अदृश्य

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

05 १९३४ क भूकम्प, नव डीह आ कलितक परिवारक मृत्यु-छाया

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

शक्तिपर सेहो विश्वास करैत छथि। एक दिन कलित अचानक खसि मृत्यु प्राप्त करैत छथि; नन्द एहि अप्रत्याशित मृत्युकेँ अपन आँखिसँ देखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

06 नन्दक शिक्षा : भय, गणित आ अभियन्ता बनेबाक यात्रा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

पिताक मृत्यु पश्चात नन्द अपन माए यशोदाक संरक्षणमे पढ़ैत बढ़ैत छथि। गहुमन साँपक टुकड़ा आ नेना सभक माथ लग बिज्जीक पहराक घटना घरक स्मृतिक हिस्सा बनैत अछि। बँटवारा मे संपत्तिक विभाजन होइत अछि, मुदा नन्द पढ़ाइ नहि छोड़ैत छथि। छात्रवृत्तिक सहारे आर.के. कॉलेज, मधुबनीमे गणित सहित विज्ञानक अध्ययन करैत छथि। आरम्भमे विषय कठिन लगैत अछि; रटन्त अभ्यास धीरे-धीरे समझमे बदलैत अछि आ ओ प्रथम श्रेणी प्राप्त करैत छथि।

१९५९ मे मुजफ्फरपुर इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजीमे सिविल इंजीनियरिंग पढ़ए जाइत छथि। धोती-कुर्ता सँ पैंट-शर्टमे बदलबाक प्रसंग आधुनिक तकनीकी संस्थान आ ग्रामीण संस्कारक टकराव देखबैत अछि। पढ़ाइक खर्च ससुर द्वारा

06 नन्दक शिक्षा : भय, गणित आ अभियन्ता बनेबाक यात्रा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

2 / 2

उठेबाक शर्त पर विवाह होइत अछि, यद्यपि छुट्टीक मासक खर्च काटि लेल जाइत अछि। १९६३ धरि पढ़ाइ पूर्ण कऽ नन्द सरकारी अभियंत्रण सेवामे प्रवेश करैत छथि आ १९६४ सँ सहायक अभियन्ता बनैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

07 राष्ट्रभावना, लोकसेवा आ नन्दक नीतिगत दृढ़ता

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

नन्दक स्मृतिमे १५ अगस्त १९४७ क उत्सव आ १९६२ क चीनी आक्रमणक हताशा दुनू अछि। १९६५ क युद्धक समय सेनामे अभियन्ता-अधिकारी बनबाक आवेदन करैत छथि, मुदा शारीरिक वजनक कारण छाँटि देल जाइत छथि। सरकारी अभियन्ताक रूपमे विभिन्न क्षेत्रमे नियुक्ति हुनका ग्रामीण श्रमजीवी आ आदिवासी समाजक निकट आनैत अछि। डेहरी-ऑन-सोनक विकासकार्य मे स्थानीय लोकक सहयोग, मजदूरकेँ अवसर देब आ अनुचित कमाइ अस्वीकार करब हुनकर स्वभावक अङ्ग बनैत अछि।

दमा रोगक आक्रमणक समय स्थानीय वैद्यक जड़ी-बूटीसँ राहत भेटबाक अनुभव हुनका आधुनिक चिकित्सा सँ इतर लोक-उपचारक प्रति आकर्षित करैत अछि। संगी लोकनि स्नेहसँ ‘भोलेनाथ’ कहैत छथि। अपन गाममे कोठाक घर बनाओलक सपना

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

07 राष्ट्रभावना, लोकसेवा आ नन्दक नीतिगत दृढ़ता

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

आ पत्नीकेँ प्रत्यक्ष सम्बोधनक नव व्यवहार हुनकर गृहस्थीमे परिवर्तनक संकेत दैत अछि। हुनकर लोकसेवाक आदर्श धीरे-धीरे व्यवस्था सँ टकराबए लगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

08 बा केर बिछोह, सिंचाइक प्रयास आ कमला-बलानक संकट

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

नन्दक बाल-बच्चा बढ़ैत छथि, मुदा भातिज नवीनक अकाल मृत्यु ओहि परिवारमे गहींर पीड़ा अनैत अछि। दिल्लीक प्रशिक्षणक समय नन्दक स्वप्नमे भातिजक मृत्यु-सदृश दृश्य अबैत अछि; गाम पहुँचलापर घटना सत्य भेटलाक विश्वास हुनकर अदृश्य शक्तिपर भरोसा बढ़ा दैत अछि। दोसर दिस माए, जिनका बच्चा सभ 'बा' कहैत अछि, पेटक रोगसँ पीड़ित होइत छथि। इलाजक पश्चात कैंसरक पता चलैत अछि, मुदा पटनेमे मृत्यु भऽ जाइत अछि। बा केर स्मृति नाति-नातिनक घरमे बनल रहैत अछि।

नन्द शुष्क बाधमे बोरिंग लगबैत छथि, मुदा भूमिगत पानि नहि भेटैत अछि। बादमे सरकारी बोरिंग उचित स्थान पर लगबए लेल प्रयत्न होइत अछि। कमला-बलानक छहर, बालु जमब, खेतक उपज बदलि जाएब,

08 बा केर बिछोह, सिंचाइक प्रयास आ कमला-बलानक संकट

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

पोखरि-बाहा, रोपनी आ पुरान गामक झगड़ाक खिस्सा सभ एहि पारिवारिक कथा केँ ग्रामीण पर्यावरणक इतिहास बना दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

09 आरुणिक जन्म, दु:स्वप्न आ बालमनक जिज्ञासा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

1 / 2

नन्दक छोट पुत्र आरुणिक जन्मक समय पहिने पुत्रीक जन्मक गलत समाचार पहुँचैत अछि; किछु दिन बाद वास्तविकता स्पष्ट होइत अछि। ई प्रसंग आरुणिक चेतनामे सत्यक बदलैत प्रत्यक्ष रूपक प्रश्न जगबैत अछि। जन्मक पहिनहि मरि चुकल बा केर कथासँ ओ अपन परिवारक अदृश्य अतीतकेँ जानए लगैत छथि। बाल्यकालमे हुनका रातिमे डराओन स्वप्न अबैत अछि—छतक कातसँ खसबाक अनुभूति, प्रकृतिक अज्ञात आकर्षण आ जन्म-मृत्युक प्रश्न हुनकर मोनमे बसल अछि।

पिता नन्द स्वयं बचपनमे ‘सहस्रबाढ़नि’ नामक झोंटाबला, आगि उगलैत भयावह आकृतिक स्वप्न देखबाक बात सुनबैत छथि; लोककथामे ओकर आगमन अनिष्ट आ अकालसँ जोड़ल गेल अछि। आरुणि निद्रा कखन अबैत अछि, स्वप्नक बोध केना बनैत

09 आरुणिक जन्म, दुःस्वप्न आ बालमनक जिज्ञासा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

2 / 2

अछि, एकरा बुझबाक प्रयास करैत छथि। अक्षर, अङ्क, संस्कृत श्लोक आ संख्याक क्रममे रुचि हुनकर प्रश्नशील प्रतिभाक पहिल संकेत बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

10 १९७६ : गंगा-ब्रिज कॉलोनी आ आरुणिक डायरी

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

आरुणि अपन डायरीमे १९७६ केँ जीवनक एकटा निर्णायक रेखा मानैत छथि। हाजीपुरक गंगा-ब्रिज परियोजनाक कॉलोनीमे माता-पिता आ भाइ-बहिनक संग रहैत ओ पिताक सरकारी अभियंता रूपक संग होम्योपैथिक चिकित्साक सेवा देखैत छथि। नन्दक घरक एक भाग रोगीक लेल खुलल रहैत अछि। कॉलोनीक बच्चा सभ लेल नव विद्यालय बनेबाक प्रसंग सँ सामुदायिक शिक्षा-व्यवस्थाक चित्र तैयार होइत अछि।

आरुणि अपन स्मृतिमे तथ्य, कल्पना आ अनुभूतिक सीमा जाँचैत छथि। खेल, प्रश्न, विद्यालय, वैज्ञानिक जिज्ञासा आ सहपाठीक डायरी हुनकर भीतरक कथाकारकेँ आकार दैत अछि। एक परिचित बालकक काल्पनिक दुर्घटना आ दीर्घ आरोग्यलाभ सम्बन्धी लेखन सेहो ओ पढ़ैत छथि। ई लिखित स्मृति आगाँ चलि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

10 १९७६ : गंगा-ब्रिज कॉलोनी आ आरुणिक डायरी

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

आरुणिक अपन जीवनक दुर्घटना आ पुनर्प्राप्ति सँ अचम्भित ढंगसँ मेल खाइत अछि। एहि प्रसंगमे बालक दृष्टि आ भविष्यक स्मृति एक दोसराक प्रतिध्वनि बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

11 गामक डेढ़ साल : खेल, समाजबोध आ बालनाटक

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

1 / 2

गाममे रहबाक कालमे आरुणिक स्मृतिमे खेलक मैदान, छोट-बड़का गोटक झगड़ा, लोकगीत, नाटक आ विद्यालयक सांस्कृतिक प्रतियोगिता एक संग जुड़ैत अछि। लालछड़ी बेचि जीविका चलेबला व्यक्ति आ मजदूरक परिवारक कठिनाई देखि बालमनमे गरीबी आ सामाजिक असमानताक प्रश्न उठैत अछि। पिता द्वारा रिश्वतक सूटकेस लात मारि हटेबाक घटना आरुणिक ईमानदारी सम्बन्धी आरम्भिक शिक्षामे बसि जाइत अछि।

ओ विजय, हारि, दोस्ती आ सामूहिक प्रतिस्पर्धा पर अपन तर्क गढ़ैत छथि। गाममे रामलीला आ अन्य नाटक देखबाक उत्साहसँ प्रेरित भऽ बालकलाकार ‘दानवीर दधीची’ मंचित करबाक तैयारी करैत छथि। शिक्षकक अनुपस्थिति, पैघ छौड़ा सभक उपद्रव आ मंचक अव्यवस्था अनुभवक भाग बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

11 गामक डेढ़ साल : खेल, समाजबोध आ बालनाटक

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

विद्यालयक पढ़ाइ, ग्रामीण मेलजोल आ संघर्षक बीच आरुणि अपन स्मृतिलिपि तैयार करैत छथि। बादमे नन्दकेँ पुत्रक डायरी हाथ लगैत अछि आ ओ पढ़ाइ पर ध्यान देबाक सलाह दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

12 पटना घुरब, पारिवारिक जीवन आ गंगा-पुलक विवाद

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

गामक समयक बाद परिवारक पटना घुरबाक प्रसंग अबैत अछि। नन्द अग्रजक आग्रह पर गंगा-पुलक क्षेत्रीय निर्माणकार्यसँ हटि ऑफिसक काज लेबाक प्रयास करैत छथि। परिवारक संग सामान्य जीवन बिताबए, बच्चाक पढ़ाइ देखब आ व्यवस्थित गृहस्थी चलाएब हुनका लेल सहज नहि अछि। पटनेमे चिड़ियाखानाक नाम, वनस्पति उद्यान आ जैविक उद्यानक भिन्नता पर पिता-पुत्रक चर्चा आरुणिक जिज्ञासाकेँ आगू बढ़बैत अछि।

गंगा-पुल निर्माणक अनियमितता नन्दकेँ गहींर आहत करैत अछि। कथानकमे कमजोर पाया, दरारि, रातिमे तोड़फोड़ आ मजदूरक दुर्घटनासँ मृत्यु सम्बन्धी हुनकर अनुभव आ आरोप दर्ज अछि। भ्रष्टाचारक विरोध सँ हुनकर वेतन, पदस्थापन आ सामाजिक सम्बन्ध प्रभावित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

12 पटना घुरब, पारिवारिक जीवन आ गंगा-पुलक विवाद

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

रेडियो-ट्रांजिस्टरक माध्यमसँ अदृश्य तरंगक चर्चा सेहो विज्ञान आ नन्दक अदृश्य जगतप्रतिक आकर्षणक बीच अन्तर्विरोध स्थापित करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

13 शोभाबाबूक पुनर्भेंट आ नन्दक नैतिक आघात

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

पटनामे बहुत वर्षक बाद कछबी गामक शोभाबाबूसँ नन्दक भेंट होइत अछि। ओ नन्दक दिवंगत पैघ बहिनक दिअर छथि। जमीन्दारीक अन्त, परिवारक आर्थिक पतन, चाय-पानक दोकान सँ आत्मनिर्भर बनबाक संघर्ष आ पुरान सम्बन्धक टूटन पर दुनू गोटे भावुक बातचीत करैत छथि। ई भेंट नन्दकेँ बहिन आ अल्पायु भाँजिकी मृत्यु फेरसँ मोन पाड़ैत अछि।

पुलक उद्घाटनक बाद नन्दक पीड़ा आरो बढ़ैत अछि। हुनकर कथनानुसार दुर्घटनामे मरल बहुत मजदूरक नाम स्मारकमे नहि अछि, जखनकि अभियन्ता सभ पुरस्कृत भेल छथि। एहि अन्यायकेँ ओ अपन संघर्षक अधूरापन मानैत छथि। अग्रज हुनका समझबैत छथि जे बच्चा सभकेँ एहि पीड़ाक दण्ड नहि देबाक चाही। मुदा नन्दक अन्तर्मन पर हारिक अनुभूति भारी

13 शोभाबाबूक पुनर्भेट आ नन्दक नैतिक आघात

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

पड़ैत अछि। ओ ज्योतिष, रत्न आ तांत्रिक उपाय दिस आकर्षित होमए लगैत छथि।

14 नन्दक आध्यात्मिक उलझन, अकस्मात् मृत्यु आ अन्त्येष्टि

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

1 / 2

पुल-निर्माणक संघर्षक बाद नन्दक नियमित अध्ययन, पारिवारिक संगति आ गाम जएबाक पुरान क्रम प्रभावित होइत अछि। पूजा-पाठ, तांत्रिक आस्था आ दूरक सम्बन्धीक संग धार्मिक सम्पर्क बढ़ैत अछि। घरमे पुत्र द्वारा अनल टेलीविजनपर महाभारत देखबाक छोट सुखक प्रसंग एहि जीवनक अन्तिम समयमे अबैत अछि। एक रविदिन महाभारत देखलाक बाद विश्राम करैत नन्दकेँ माए चाह देबाक प्रयास करैत छथि, मुदा ओ नहि जागैत छथि। चिकित्सक हुनकर मृत्यु घोषित करैत छथि।

आरुणि पिता केँ गामसँ रहल लगाव याद करैत पटनेसँ मृतदेह गाम लए जेबाक निर्णय करैत छथि। गंगा-पुल पार करैत काल मजदूरक नामक सूची, बाल्यकालक कॉलोनी आ पिता द्वारा लिखल पीड़ाक स्मृति फेर सामने अबैत अछि।

14 नन्दक आध्यात्मिक उलझन, अकस्मात् मृत्यु आ अन्त्येष्टि

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

गामक कलम-गाछीमे दाह-संस्कार होइत अछि। श्राद्धक अनुष्ठान आ गरुड़पुराणक पाठक बीच आरुणि मृत्यु, सामाजिक रीति आ पिताक नैतिक जीवनकेँ नव रूपमे देखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

15 शोकक बाद आरुणिक आत्मपुनरावलोकन आ रोजगारक बाट

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

नन्दक मृत्युक बाद आरुणिक कथामे स्मृति आ वर्तमान बारम्बार एक दोसरामे प्रवेश करैत अछि। कलकत्ताक अपार्टमेंटमे अस्वस्थ अवस्था सँ अतीत देखैत आरुणि अपन परिवारक अपेक्षा, माएक स्नेह, घरक आर्थिक असुरक्षा आ पिताक असफल बुझल गेल नैतिक संघर्षक पुनर्मूल्यांकन करैत छथि। कथा एहिठाम पारिवारिक इतिहाससँ अधिक आत्मवृत्तात्मक मननक स्वर ग्रहण करैत अछि।

पढ़ाइक विषय चुनबाक समय आरुणि पिताक इच्छाक विपरीत विज्ञान छोड़ि कला लेलन्हि। बादमे विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा देबाक आ केन्द्र सरकारक वर्दीबला समूह ‘बी’ सेवामे प्रवेश करबाक विवरण अबैत अछि। पिता हुनकर कारोबारी प्रवृत्ति सँ प्रसन्न नहि रहैत छलाह, मुदा सरकारी नौकरी सँ किछु संतोष

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

15 शोकक बाद आरुणिक आत्मपुनरावलोकन आ रोजगारक बाट

भेटलन्हि। क्रिया-कर्मक बाद आरुणि महसूस करैत छथि जे अब पिता अनुपस्थित छथि, मुदा हुनकर बाटसँ जुड़ल नैतिक उत्तरदायित्व समाप्त नहि भेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

16 नवम्बर १९९५ क बसयात्रा : आजम साहेबक माध्यमसँ पिताक पुनर्पहचान

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

1 / 2

नवम्बर १९९५ मे पिताक श्राद्धक पश्चात केश कटेने आरुणि दरिभङ्गासँ पटना बस पर चढ़ैत छथि। सहयात्री अपन मकान, पद, संतान आ उपलब्धिक बखान करैत रहैत छथि। आरुणि आरम्भमे चुप रहैत छथि। गंगा-ब्रिज कॉलोनी लग पहुँचला पर बाल्यकालक विद्यालय आ घरक चर्चा उठैत अछि। पिताक नाम नन्द ठाकुर सुनितहि सहयात्री अपना केँ ‘आइ.ए. आजम’ बतबैत अपन पुरान परिचय स्मरण करैत छथि। हुनकर पुत्र नेहाल आरुणिक सहपाठी रहल छल।

आजम साहेब नन्दक निःशुल्क होम्योपैथिक सेवा, बच्चाक रोग ठीक करबाक घटना, मजदूरक प्रति सहानुभूति आ घूस सँ दूरीक साक्ष्य अपने अनुभवसँ सुनबैत छथि। आरुणि पुलपर मजदूरक अल्प नामवाली सूची देखैत छथि। पिताक जीवन जे घरक दैनिक तनावमे अधूर

16 नवम्बर १९९५ क बसयात्रा : आजम साहेबक माध्यमसँ पिताक पुनर्पहचान

बुझाइत छल, से आनक स्मृतिमे आदरणीय बनि पुनः उपस्थित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at

https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

17 पिताक ईमानदारीक मूल्य, भय आ घरक असुरक्षा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

बसयात्राक बाद आरुणि पटनेमे नव किरायाक घर ताकैत छथि आ अतीतक अनेक तनाव पुनः सोचैत छथि। नन्दक रिश्वत अस्वीकार करब घरक आर्थिक कठिनाई बढ़बैत रहल, मुदा परिवारक भीतर एहिपर एकमत नहि छल। माय घर-खर्च, बच्चाक भविष्य आ अतिथिक सम्मानक चिन्ता करैत छलीह, जखनकि पिता सिद्धान्तक लेल अधिक कठोर होइत गेलाह। बच्चाक मनमे ई प्रश्न उठैत रहल जे जँ पिता केँ किछु भऽ जाएत तँ परिवारक की होएत।

आरुणि एहन घटनार्कें सेहो मोन पाड़ैत छथि जाहिमे एक दिन विद्यालयसँ घुरैत ओ सड़क दुर्घटनाक समाचार सुनि बुझि बैसलाह जे पिता मरि गेलाह। बादमे पता चलल जे अन्य परिवारक गोटे मरल छथि। अपन राहतक संग दोसरक शोक अनुभव करब हुनका विचलित करैत अछि। पिताक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

17 पिताक ईमानदारीक मूल्य, भय आ घरक असुरक्षा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

2 / 2

मृत्युक बाद किरायाक घर बदलि माए कैँ फेर पटना आनल जाइत अछि; आरुणि अपन सेवा-स्थल घुरि जाइत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

18 स्वर्ण प्लाइ पर छापा आ आरुणिक जाँचक पहिल विफलता

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

सरकारी गुप्तचर-विजिलेंस सम्बन्धी कार्यमे आरुणि ‘स्वर्ण प्लाइ’ नामक प्लाइवुड कम्पनी पर कर-चोरीक सूचना पबैत छथि। अनुमति लऽ कारखाना, घर आ डीलरक ठिकानापर छापा पड़ैत अछि, मुदा कोनो ठोस प्रमाण नहि भेटैत अछि। प्रतिष्ठित व्यापारी अपमान आ व्यवसायिक क्षतिक गप कहैत छथि; विभागक भीतर अधिकारीगण आरुणिक निर्णय पर प्रश्न उठबैत छथि। आरुणि बिना प्रमाण दोष सिद्ध करबाक जोखिम बुझैत छथि, मुदा मामला तुरन्त बन्द नहि करैत छथि।

ओ दस्तावेज, उत्पादन, आपूर्ति आ कर-भुगतानक अनुपातक पुनः परीक्षण शुरू करैत छथि। मुख्य कम्पनीक बाहरक आपूर्ति-शृंखला ताकबाक योजना बनैत अछि। पहिल विफलताक बाद आत्मरक्षामे केस छोड़ि देबाक बदला ओ गहींर छानबीनक

18 स्वर्ण प्लाइ पर छापा आ आरुणिक जाँचक पहिल विफलता

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

निर्णय करैत छथि। कथानक एतए पारिवारिक स्मृतिसँ तथ्य-संग्रह आ प्रशासकीय संघर्षक रोमांचक धरातलपर पहुँचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

19 अररियाक नवल, गुप्त सूचना आ असमान व्यापारक व्यवस्था

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

छानबीनमे आरुणि अररिया क्षेत्रक प्लाइवुड-कारखाना धरि पहुँचैत छथि। चाह-पानक दोकानसँ सूचना लैत ओ एकटा सहयोगी कारखाना पहुँचैत छथि, जतए नवल नामक युवा व्यापारीक संग भेंट होइत अछि। स्थानीय बन्द आ हिंसाक कारण नवल हुनका अपन अतिथि-गृहमे राखैत छथि। गपशपमे रंगदारी, राजनीतिक दबाव, पुलिस-प्रशासनक खर्च आ व्यापारीक कथित ‘एडजस्टमेन्ट’क चर्चा होइत अछि। नवल दाबी करैत छथि जे ओ प्रत्यक्ष कर-चोरी नहि, बल्कि परिस्थितिक दबावमे व्यवहारिक समझौता करैत छथि।

रातिमे दूरभाष अएलाक बाद नवलक व्यवहार बदलैत अछि। भोरमे ओ आरुणिक परिचय विजिलेंस अधिकारीक रूपमे खोलि दैत छथि आ बतबैत छथि जे मूल कम्पनीक कार्यालयसँ हुनकर यात्राक सूचना पहुँचल छल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

19 अररियाक नवल, गुप्त सूचना आ असमान व्यापारक व्यवस्था

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

2 / 2

एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे जाँचक गोपनीयता भंग भेल अछि। आरुणि फेर कोलकातामे कम्पनीक लेनदेन आ पुलिस अभिलेखक अधिक सूक्ष्म खोज शुरू करैत छथि।

20 चोरीक डायरी, कर-घोटालाक खुलासा आ नवलक संदिग्ध मृत्यु

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

कम्पनीक विरुद्ध प्रत्यक्ष प्रमाण नहि भेटला पर आरुणि थानाक सम्पर्क बनाए रखैत छथि। लगभग छह मास बाद साल्ट लेक थानासँ एक सूटकेस चोरीक शिकायतक समाचार भेटैत अछि। शिकायतमे १.७९ लाख रुपये नगद आ १.८३ लाखक चेकक उल्लेख अछि। छापामे मिलल डायरीक नगद-चेक प्रविष्टिकेँ अररियाक कारखानाक रिटर्नसँ मिलाओल जाइत अछि। पता चलैत अछि जे बहुत लेनदेनक लगभग आध भाग नगदमे देल जाइत छल, जे नियमित लेखा आ कर विवरणसँ बाहर छल।

डायरीक आधारपर आरुणि निदेशककेँ प्रतिवेदन दैत छथि आ ‘स्वर्ण प्लाइ’ विरुद्ध करोड़ों रुपैयाक कर अनियमितताक नोटिस जारी होइत अछि। एतहि नवलक सड़क दुर्घटनामे मृत्यु होएबाक समाचार अबैत अछि; पात्र लोकनि दुर्घटना वा सम्भावित

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

20 चोरीक डायरी, कर-घोटालाक खुलासा आ नवलक संदिग्ध मृत्यु

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

षड्यंत्रक शंका प्रकट करैत छथि, मुदा हत्या सिद्ध नहि होइत अछि। आरुणि विचार करैत छथि जे हुनकर अनुसन्धान अनचाहल रूपमे नवलक मृत्यु सँ कोन नैतिक सम्बन्ध रखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

21 शशांकक षड्यंत्र, विदेशक फोन आ आरुणिक आत्मरक्षा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

व्यावसायिक जाँचमे सफलताक बाद आरुणिक नियुक्ति आ पदस्थापनक निर्णयसँ किछु सहकर्मी नाराज होइत छथि। शशांक नामक अधिकारी अपन लोकक पक्षमे व्यवस्था मोड़बाक कोशिश करैत छथि। आरुणिक कार्यालयक फोनसँ अबुधाबी आ दुबइ फोन भेलाक आरोप उठैत अछि, जखन कि ओहि समय फोन खराब रहबाक दावा अछि। आरुणिक जानकारी बिना अन्तरराष्ट्रीय कॉलक सुविधा चालू कएल गेल रहैक। शिकायत आ जाँचक बीच आरुणिक स्थानान्तरण भऽ जाइत अछि; शशांकक गुट एहि घटनाकेँ हुनकर पराजय मानैत अछि।

आरुणि पिताक अनुभवसँ सबक लैत छथि। मित्र मणीन्द्रक सहयोगसँ फोनक सूची, शिकायत आ कथित विदेश-सम्पर्कक क्रम जँचबैत छथि। प्रत्यक्ष अभिलेख सीमित रहितो उपलब्ध नम्बरक विश्लेषण आरोपक कमजोरी

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

21 शशांकक षड्यंत्र, विदेशक फोन आ आरुणिक आत्मरक्षा

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

देखबैत अछि आ आरुणि विभागीय जाँचसँ मुक्त होइत छथि। ई जीत हुनकर जीवनमे पिताक अधूर संघर्षक नकल नहि, बल्कि ओकर भिन्न रणनीतिक उत्तरक रूपमे उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

22 दिल्लीक सूचना-प्रौद्योगिकी शाखा आ शशांकक पर्दाफाश

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

आरुणि दिल्लीक विजिलेंस विभागक सूचना-प्रौद्योगिकी शाखामे नियुक्ति स्वीकार करैत छथि। आन लोकक नजरिमे ई उपेक्षित पद अछि, मुदा ओ कम्प्यूटरक अध्ययन, कर्मचारीक सुविधा आ नव तकनीकी उपकरणक उपयोगमे संलग्न भऽ जाइत छथि। विभागमे दूरभाष-वार्त्तालापक अभिलेखनक व्यवस्था आरम्भ होइत अछि। शशांकक एक तस्करसँ संबंधक समाचार अखबारमे प्रकाशित होइत अछि आ मंत्रीक आदेश पर जाँच बैठैत अछि।

जाँचक बैठकमे आरुणि अभिलेखित छोट-छोट फोन वार्त्तालापक तिथि आ क्रम प्रस्तुत करैत छथि। शशांक द्वारा तस्करकेँ भेटबाक आग्रह, तकर बाद तस्करक कर्मचारिकेँ रातिमे बुलाएब आ अगिला भोरक निष्फल छापा—एहि कड़ी सभसँ छापाक सूचना लीक करबाक शंका ठोस बनैत अछि। जाँच

22 दिल्लीक सूचना-प्रौद्योगिकी शाखा आ शशांकक पर्दाफाश

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

2 / 2

अधिकारीगण प्रमाणक अगिला प्रक्रिया करैत छथि। शशांककेँ अनिवार्य सेवानिवृत्ति अथवा आगाँक जाँचक विकल्प देल जाइत अछि; ओ सेवानिवृत्ति स्वीकार करैत छथि। मणीन्द्र आरुणिक रणनीतिक धैर्यकेँ पिताक सम्मानसँ जोड़ैत छथि।

23 दुर्घटना, पुनर्प्राप्ति आ ‘सहस्रबाढ़नि’क अन्तिम प्रतिध्वनि

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

1 / 2

शशांकक प्रसंग समाप्त भेलाक बाद आरुणिक जीवन फेर एकटा अप्रत्याशित मोड़ लैत अछि। सरकारी यात्राक बाद भीषण दुर्घटनामे ओ आहत होइत छथि। पन्द्रह दिन वेंटिलेटर पर आ लगभग एक वर्ष वैशाखीक सहारे बितबैत छथि। अनेक शल्यचिकित्सा आ दीर्घ आरोग्यलाभक बीच पुरान डायरीक ओ कल्पनात्मक दुर्घटना-कथा फेर वास्तविक जीवनसँ मेल खाइत प्रतीत होइत अछि। समयक क्षति, सामाजिक सम्बन्धक क्षीणता, शारीरिक असहायता आ अपन मानसिक दृढ़ताक विषयमे आरुणि आत्मपरीक्षण करैत छथि।

अनेस्थीसियासँ बाहर अबैत काल हुनका अनुभव होइत अछि जे झोंटाबला ‘सहस्रबाढ़नि’ हुनका झमारि कऽ संसारमे फेर फेंकि दैत अछि। बाल्यकालक भयावह स्वप्नक आकृति एहि प्रकारे जीवन-मृत्युक

23 दुर्घटना, पुनर्प्राप्ति आ ‘सहस्रबाढ़नि’क अन्तिम प्रतिध्वनि

कथाक संक्षिप्त रूपरेखा

2 / 2

सीमान्त पर पुनः अबैत अछि। डेढ़ बरखक बाद ओ कार्यालय घुरैत छथि, मुखपर पुरान हँसी बनाए। लोक एहि दुर्घटनाकेँ नवलक दुर्घटना सँ तुलना कऽ संदेह करैत अछि, मुदा कथामे षड्यंत्रक निश्चायक प्रमाण प्रस्तुत नहि अछि। आख्यान जीवित रहबाक जिद, स्मृति आ अनिश्चितताक संग समाप्त होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

समग्र कथासार

09 सहस्रबाढ़नि

समग्र कथासार

‘सहस्रबाढ़नि’ तीन सँ अधिक पीढ़ीक स्मृति-सम्बद्ध कथाक माध्यमसँ मिथिलाक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनक चित्र प्रस्तुत करैत अछि। झिंगुरक घरेलू संसार आ कलितक अंग्रेजी शिक्षासँ आरम्भ कथा नन्दक सरकारी सेवा, गंगा-पुल निर्माणक नैतिक संकट आ आरुणिक प्रशासनिक संघर्ष धरि जाइत अछि। तीनू पीढ़ीमे जीवनक आकांक्षा आ मृत्यु-अनुभव परस्पर दोहराइत अछि। आरुणिक जाँचक सफलताक बावजूद दुर्घटनाक घटना दिखबैत अछि जे नियति, सामाजिक हिंसा आ मनुष्यक प्रयत्नक बीच संघर्ष समाप्त नहि होइत। बाल्यकालक ‘सहस्रबाढ़नि’ अन्तिम समय फेर स्वप्नक आकृति बनि आबैत अछि, आ पाठककेँ स्मृति, भय आ जीवनक पुनरारम्भक प्रश्न लग छोड़ि जाइत अछि।

WORK / कृति

10 सहस्रं शीर्षा

३४ कल्लोल

SECTION / खण्ड

समग्र कथा-सूत्र

10 स॒हस्र॑ शीर्षा॒

समग्र कथा-सूत्र

गढ़ नारिकेलक चर्मकार टोलमे जन्मल मुखदेव रामक जीवन, जागेश्वर झाक संग हुनकर मित्रता, बहिन ममतोड़क बचपन आ विवाह, स्थानीय शिल्प एवं लोकगीत, स्वतंत्रता-संघर्षक हिंसा, दीर्घ कारावास आ स्वतंत्र भारतक बदलैत राजनीतिक अर्थव्यवस्था—ई उपन्यासक मुख्य सूत्र छथि। नदी, बाढ़ि, बान्ह आ विस्थापनक विवाद एहि सूत्रकेँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी जोड़ैत अछि। अन्तिम कल्लोलमे गामक नव पीढ़ी दिल्ली पहुँचि रहल अछि, मुदा बूढ़ मोहन गबैय्याक स्वर लोकस्मृतिक सतत प्रवाह बनि रहैत अछि।

01 गढ़ नारिकेल- महिसबार ब्राह्मणक गाम

समग्र कथा-सूत्र

उपन्यास गढ़ नारिकेल गामक भोर, काजक गति आ मुखदेव रामक परिवारसँ आरम्भ होइत अछि। मुखदेव, दयाराम आ हुनकर बहिन ममतोड़क स्नेहपूर्ण बचपनक माध्यमसँ बाँस, माटि, चाम, ढोल-पिपही, पोखरि आ खेतसँ जुड़ल श्रम-संस्कृति देखाओल गेल अछि। चर्मकार टोल अपन आजीविकामे आत्मनिर्भर अछि, मुदा आन टोलसँ सामाजिक दूरी एक अदृश्य देबाल जकाँ ठाढ़ अछि।

कथाकार गामक पोखरि, कमला-बलान, कोसी, खेती, जाति-पेशा आ पाबनि-तिहारक विस्तृत परिचय दैत छथि। लाला महराज, छेछनमल, लुकेसरी, दुलरा दयाल आ अनेक लोकदेवताक खिस्सा गामक स्मृतिक हिस्सा बनैत अछि। एहि विस्तारमे गामक विविध समुदायक पारस्परिक निर्भरता आ ऊँच-नीच दुनू सामने अबैत अछि। मुखदेवक बालसंसार एकटा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

01 गढ़ नारिकेल- महिसबार ब्राह्मणक गाम

समग्र कथा-सूत्र

सामाजिक आ सांस्कृतिक जगतक प्रवेश-द्वार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

02 की बन्है छी? पुरबा-पछबा।

समग्र कथा-सूत्र

कल्लोलक पहिल पल्लवमे लोकविश्वास आ सर्पकथाक संग मुखदेवक कारावासक वर्तमान समय आपसमे जुड़ैत अछि। जेलक अधिकारी आ सहबन्दीक बीच बिहुला-बिसहराक कथा सुनबैत मुखदेव स्वतंत्रता, राज्य आ प्रशासनपर व्यंग्यपूर्ण प्रश्न उठबैत छथि। कथा आ वर्तमानक संवाद जेलक पहराक अर्थ बदलि दैत अछि।

दोसर पल्लवमे गढ़ नारिकेलक खढ़क घर, साँपक भय, बालखेल आ बँसबिट्टीक आर-पारक सामाजिक दूरी फेर उभरैत अछि। जागेश्वर झा आ मुखदेव रामक मित्रता जातिगत सीमा लाँघि कऽ बढ़ैत अछि। जागेश्वर हुनका अपन टोल, गाछी आ पोखरिक दुनियाँमे लऽ जाइ छथि। बचपनक एहि स्नेहक संग दाता-मंगनहारक असमान सम्बन्धक बोध सेहो मुखदेवक चेतनामे जगह बनबैत अछि।

03 कतेक जना हरिवासर ठानल/ भात बहुत कै सपना

समग्र कथा-सूत्र

जागेश्वरक मृत्यु-स्मृति सँ कल्लोल शुरू होइत अछि। मुखदेव हुनकर अल्पायुक कारण पूछैत छथि आ सर्प, मनसा, चिरायुक धार्मिक आख्यानक माध्यमसँ मृत्यु आ जीवनक असमानता पर विचार करैत छथि। मिथिलाक अकालक वर्णन, रौदीक कवित्त आ गरीबक भुखमरीक स्मृति समाजक आर्थिक संकटकेँ उजागर करैत अछि।

एहि पृष्ठभूमिमे कमला-बलानक पानि आ जमीन्दारी बान्ह गामक अस्तित्व लेल खतरा बनैत अछि। मुखदेव, जागेश्वर, जीवछ मुखिया आ आन गौँआ मिलि जलनिकासक उपाय सोचैत छथि। गामकेँ डुबबासँ बचेबा लेल जागेश्वर आ जीवछ रातिमे बान्ह काटैत छथि; पानि पीअर बच्चाक खेत दिस बहैत अछि। पछाति सामूहिक श्रमसँ बाहा खोदल जाइत अछि। ओइ वर्ष बाढ़िक बाद अकाल नहि अबैत अछि। लोकहित

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

03 कतेक जना हरिवासर ठानल/ भात बहुत कै सपना

समग्र कथा-सूत्र

2 / 2

आ जमीन्दारी हितक टकराव एहि कल्लोलक केन्द्रीय घटना अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

04 विश्वकर्माक रखबाड़िमे इन्द्र लग अमृत

समग्र कथा-सूत्र

स्वतंत्रताकेँ समुद्र-मन्थनसँ प्राप्त अमृतक रूपकमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। मुखदेव बाँकीपुर कैम्प जेलमे घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण, रुद्रमति आ रघुवरनक संग छथि। स्वतंत्र देशमे स्वतंत्रता सेनानी जेलक भीतर किए छथि, ई प्रश्न बारम्बार उठैत अछि। मैथिली पाबनि, गीत आ सांस्कृतिक रीतिक स्मृति कारागारक संवादकेँ समृद्ध करैत अछि।

मुखदेव अपन परिवारक चर्मशिल्प, ढोल-मृदंग बनएबाक कौशल आ साहेबगंजवालीक प्रसव-सहायताक घटना सुनबैत छथि। जागेश्वर आ हुनकर परिवारक परस्पर स्नेह, जमीन्दारक लठैत बा झाक दुर्व्यवहार आ जागेश्वरक प्रतिरोधक स्मृति हिंसाक पृष्ठभूमि बनबैत अछि। 'अमृत' वास्तवमे ककरा भेटल, एहि सवालक संग

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

04 विश्वकर्माक रखबाड़िमे इन्द्र लग अमृत

समग्र कथा-सूत्र 2 / 2

स्वतंत्रताक अर्थ पुनः जाँचल जाइत अछि।

05 बो-बो

समग्र कथा-सूत्र

दक्षक यज्ञ आ महादेवक क्रोधक पुराणकथासँ 'बो-बो' उच्चारणक उत्पत्ति सुनाओल जाइत अछि। कारावासक श्रोता सभ मुखदेवक कथा-चातुरीक आनन्द लैत छथि, मुदा खिस्सा बीच-बीचमे स्त्रीक असमान स्थिति आ पितृसत्तात्मक व्यवस्थापर प्रश्न सेहो करैत अछि।

नागपंचमीक अवसरपर घर-आँगन नीपब, लावा छीटब, कुश-नीमक प्रयोग, साँपक मन्त्र आ स्थानीय धाइ-झाड़फूँकक प्रथा सामने अबैत अछि। अशोक ठाकुरक कनियाँ जगदरवाली आ मोहम्मद शमशूलक कनियाँ मछधीवालीक प्रसंग विभिन्न समुदायमे ज्ञानक आदान-प्रदान देखबैत अछि। धार्मिक विश्वासक संग वास्तविक लोकजीवनक उपचार, भय आ सामुदायिक व्यवहारक वर्णन ई कल्लोलक प्रमुख विषय अछि।

06 छुच्छो हाथ भैया अबितथि बैसितथि माड़ब चढ़ि रे/ ललना अपने सड़िया पहिरतौं भैया नाम लितौं रे

समग्र कथा-सूत्र

1 / 2

कुमरव्रता आ पतिव्रताक कथा मार्फत स्त्रीक तप, विवाह, सेवा आ ऋषिक श्रापक विचित्र सम्बन्ध सामने अबैत अछि। मुखदेव प्रश्न करैत छथि जे धर्मक कथामे पुरुख ऋषि सभ बारम्बार शाप देबामे तत्पर छथि, मुदा स्त्रीक जीवनमे निष्ठा आ कष्टक भार किएक केन्द्रित अछि। एहि प्रसंगसँ ममतोड़क जन्म, बचपन आ लोकगीतक स्मृति जुड़ैत अछि।

हिरनी-बिरनी नटिनक आख्यान, मुस्लिम पमरियाक बधावा, नजरि उतारबाक मन्त्र आ ममतोड़क खेल मुखदेवक आत्मीय संसार खोलैत अछि। अन्तमे मुखदेव आ जागेश्वर ममतोड़क सासुर दिस जाइत समय पुलिसक गिरफ्तमे पड़ैत छथि। गुप्त सूचना आ पीअर बच्चापर शंका उठैत अछि। दुनूकेँ गंभीर अभियोगमे पटनाक जेल पठाओल जाइत अछि; ममतोड़क प्रतीक्षा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

06 छुच्छो हाथ भैया अबितथि बैसितथि माड़ब चढ़ि रे/ ललना अपने सड़िया पहिरतौं भैया नाम लितौं रे

समग्र कथा-सूत्र

2 / 2

अधूरी रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

07 धुन-धुन धुन-धुन बोलै चरखा, डर लागै घमासान हो

समग्र कथा-सूत्र

उमा, पार्वती आ गंगाक पुराणकथा सँ कल्लोल प्रारम्भ होइत अछि, मुदा केन्द्रमे ममतोड़क विकास आ हुनकर अपन सामाजिक परिवेशक भीतर सीखब अछि। साहेबगंजवाली आ परमेश्वर रामक घरमे पलैत बच्ची लोकगीत, हस्तकला, घरक काज आ सामुदायिक व्यवहारसँ ज्ञान अर्जित करैत अछि। कथा औपचारिक विद्यालय आ जीवनसँ प्राप्त शिक्षाक अन्तरकेँ उभारैत अछि।

जागेश्वर खादीक कपड़ा अनैत छथि; ममतोड़ अपन सखी सभक संग खादी आ चामक झोरा बनबैत आ नक्काशी करैत अछि। ई झोरा कॉमरेड सभ धरि पहुँचैत अछि, चरखा घर-घर पहुँचैत अछि। मुदा बा झाक घटनाक बाद ममतोड़क मनमे भय आ मौन आबि गेल अछि। चरखाक गीतमे श्रमक संगे प्रतीक्षा आ असुरक्षाक स्वर मिलैत अछि; जेलमे सुननिहार सभ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

07 धुन-धुन धुन-धुन बोलै चरखा, डर लागै घमासान हो

स्तब्ध रहि जाइ छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

08 आजु धीया कोना अमा बिनु रहती/ छन-छन उठति चेहाय

समग्र कथा-सूत्र

भगीरथ द्वारा गंगा अनबाक आख्यानसँ आरम्भ करैत कथा ममतोड़क विवाह दिस बढ़ैत अछि। कुमरम, मटकोर, पुरबा-पछबा, नगहर, मधुपर्क, विवाह-होम आ लावा-छींटब आदिक विधिक बहुत विस्तृत विवरण प्रस्तुत अछि। स्त्रीगणक गीत, लोकनियाँ, पुरहित आ परिवारक सहभागितासँ बियाह व्यक्तिगत घटनाक संग सामुदायिक आयोजन बनैत अछि।

विवाहक रस्मक बाद ममतोड़क विदाइ होइत अछि। बा झाक उत्पातसँ उपजल भय विवाहक अवसरपर किछु कम भेल बुझाइत अछि, मुदा माय-बापक बिछोहक पीड़ा गहींर अछि। जेलमे कथा सुनैत दौलति जहाँ आ रुद्रमतिकेँ अपन बेटीक विदाइ मोन पड़ैत अछि। मुखदेवक दृष्टि स्मृतिक शून्यमे अटकि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

09 मुँह चन्द्रसन, आँखि कमल सन, भौँह कामदेवक धणुष सन, ठोर पाकल तिलकोर सन, नाक सुग्गाक लोल सन, बोली कोइली सन

समग्र कथा-सूत्र

गौरीक तपस्या, महादेवक परीक्षा आ कामदेवक दहनक पुराणकथा सँ स्त्री-पुरुषक सम्बन्धक आदर्शक प्रश्न उठैत अछि। एकर बाद गढ़ नारिकेलमे ‘छबड़ा सभक थइर’ नामक सामूहिक बैसकीक चर्चा अबैत अछि। मुखदेव, जागेश्वर, दुखन महतो, बासू चौपाल आ जीवछ मुखिया गामक समस्याक समाधान खोजैत छथि; पीअर बच्चाक बैसकीक लक्ष्य मुख्यतः अपन हित अछि।

घेंघी अर्थात् कुसुमावतीक शिक्षा-प्रयास एतऽ महत्वपूर्ण घटना अछि। हुनकर लग विभिन्न जातिक बालिका सभ पढ़ऽ अबैत अछि, ममतोड़ सेहो शामिल अछि। रूपक सुन्दरतासँ बढ़ि कऽ ज्ञानक प्रकाश मुख्य बनैत अछि। कारागारमे रघुवरनक तमिल बालगीत आ हुनकर भावार्थसँ भारतीय भाषाक बीच आत्मीय सम्बन्ध उभरैत अछि।

10 किए तोहर आहो लालाजी मुँह मलिन भेल/ किए मन लागैए उदास

समग्र कथा-सूत्र

महादेव-गौरीक विवाहक हास्यपूर्ण पुराणकथा एहि कल्लोलक पहिल भागमे अछि। मैनाक संकोच, शिवगणक रूप, विवाह आ गौरीक पारिवारिक जीवनक प्रसंग विवाह-संस्कारक लोकप्रिय व्याख्या रूपमे अबैत अछि।

फेर लालबन बाबाक लोकगीत आ बाघिनसँ हुनकर मुठभेड़, वन्यजीवन, श्रम आ वीरताक स्मृतिक चर्चा चलैत अछि। लोकगीतमे मयूरक वध आ मयूरनीक विधवापनक प्रश्न मुखदेवक विचारकेँ आलोचनात्मक दिशा दैत अछि। रघुवरन सुब्रह्मण्य भारतीक तमिल बालगीत सुनबैत छथि, जकर सन्देश अन्याय करनिहारसँ नहि डेराएब अछि। मुखदेव जागेश्वरक निर्भीकता आ स्वतंत्र भारतक नव सत्ताधारीक आचरणक तुलना करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

11 उक्खड़ि सन सन बीट, समाठ सन सन शीस, सेर बरोबड़ि, सेर बरोबड़ि

समग्र कथा-सूत्र

गौरी-महादेवक पुत्र कार्तिकेय आ गणेशक जन्मक लोकप्रचलित कथासँ कल्लोल खुलैत अछि। खेत, कृषिकर्म आ कातिकक रीति-रिवाजक बीच उक्खड़ि, समाठ आ अन्नक माप सम्बन्धी कहबीक सांस्कृतिक अर्थ सामने अबैत अछि। गामक समाजमे पाबनि खेतीक समय-सारिणी आ श्रमसँ अभिन्न रूपेँ जुड़ल अछि।

कथा जातिगत बँटवारा, परम्परागत पेशा, शिल्प आ ज्ञानक प्रश्नकेँ बारम्बार छुबैत अछि। मुखदेव लोकाचारकेँ मात्र आस्था रूपमे नहि, बल्कि गामक संसाधन, अधिकार आ सामूहिक स्मृति रूपमे देखैत छथि। पुराणक कथाक संग वर्तमानक सामाजिक प्रश्न रखबाक एहि पद्धतिसँ कल्लोल समग्र आख्यानक सांस्कृतिक धरातल विस्तार करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

12 लोभेलै छौड़ा बभना रे दैव ना रे/ रौ पूछऽ जब लगलै बभनमा रौ/ जतिया रौ ठेकनमा रौ दैव ना रे

समग्र कथा-सूत्र

गौरी, संध्या आ लीलीक कथामे धर्म-सोहागक विरोधाभास, महादेवक व्यवहार आ विवाहक प्रसंग अछि। मुखदेव एहि लोककथाकेँ चर्मकार टोलक अलगाव आ समस्त गाममे समान संस्कार-गीतक उपस्थिति सँ जोड़ैत छथि। प्रश्न उठैत अछि जे सामाजिक सीमा एतेक कठोर होइतहुँ सांस्कृतिक जड़ि एतेक समान किएक अछि।

लालमैन बाबा, मनसाराम, लुकेसरी आ आन गृहदेवताक आख्यान, चर्मकार स्त्री सभक दगरिनक भूमिका, चामक कला आ तकर सामाजिक अवमूल्यनक चर्चा चलैत अछि। रघुवरन बाटा जूता उद्योगक उदाहरण दऽ श्रमक प्रतिष्ठाक अन्तर देखबैत छथि। गंगेश आ चर्मकारिणीसँ विवाहक चर्चाक माध्यमसँ ज्ञान, जाति आ ऐतिहासिक स्मृतिक उलझन पाठमे सामने अबैत अछि।

13 कुशक डेफसँ नथबौ गे धमिआइन तोहरो पनियादराध/ अस्सी मनक पत्थल छेदि कऽ हेबै गे बहार

समग्र कथा-सूत्र

सुकन्या आ वृद्ध ऋषिक कथा संग अश्विनीकुमार द्वारा नवयौवनक प्रसंग सुनाओल जाइत अछि। एकर बाद मुसहर समाजक दीना-भदरीक विस्तृत लोकगाथा अछि। जमीन्दार कनक सिंह आ बुधनीक अत्याचारक विरुद्ध दीना-भदरीक संघर्ष, छलसँ हुनकर मृत्यु आ लोकदेवता रूपमे हुनकर पुनर्स्थापन मुख्य घटना बनैत अछि।

बिचकुन सदाय, जेठियाहीवाली, भुरकुरी आ आन मुसहर परिवारक आजीविका, कृषि, बिसाँढ़, मधुमाछी पालन, सिलाइ आ शिक्षाक विस्तार सेहो वर्णित अछि। जागेश्वरक संग जुड़ल बिचकुन सामुदायिक उन्नतिक प्रयास करैत छथि। समाजक तिरस्कृत वर्गक अपन वीरगाथा, दक्षता आ परिवर्तनक आकांक्षा एहि कल्लोलक केन्द्रमे अछि।

14 ब्रह्माक देल कोदारि/ विष्णुक चाँछल बाट

समग्र कथा-सूत्र

एक गरीब पुतोहुक पीड़ा आ बाल-बसन्त नागक सहायताक कथा सँ नागक संरक्षण-मन्त्रक उद्भव सामने अबैत अछि। बासुकी परिवारक लोकविश्वासक बाद भूमिहारक ऐतिहासिक पहिचान, बौद्ध आ जैन परम्पराक सम्बन्ध पर चर्चा होइत अछि।

डाकू रौहिणेयक विस्तृत जैन कथा कल्लोलक दोसर मुख्य अंश अछि। महावीरक प्रवचनक एक छोट अंश सुनबाक कारण ओ मंत्री अभयकुमारक छलकेँ पहचानि जाइत अछि; अभयदान भेटलापर अपराधक स्वीकारोक्ति करैत अछि आ अन्ततः जैन दीक्षा ग्रहण करबाक निर्णय लैत अछि। जेलमे रघुवरन महावीरक वस्सावास, विदेहक बौद्ध-जैन इतिहास आ मिथिलाक दार्शनिक परम्परापर चर्चा करैत छथि।

15 गहना रे जटा तड़बाक धूर/ घरे रहु रे जटा नयना हजूर

समग्र कथा-सूत्र

बैरसी, गोसाउनी आ लीलीक लोककथासँ कल्लोल शुरू होइत अछि। ओहिमे विवाह, छल-भेष आ ससुरक श्रापक कथा अछि। एकर बाद जट-जटिन लोकनाट्यक इतिहास, गीत आ प्रस्तुति प्रमुख स्थान लैत अछि। स्त्रीगण द्वारा साओन-भादवमे खेलाओल जाइत जट-जटिनमे नैहर जेबाक इच्छा, दाम्पत्यक मनमुटाव, प्रवास आ पुनर्मिलन नाटकीय ढंगसँ उपस्थित अछि।

कथाक गीतमे गहना आ साड़ी सँ बेसी घरमे पतिक उपस्थितिक मूल्य उभरैत अछि। ई विरहक स्वर जागेश्वरक अनुपस्थिति आ घेंघीक प्रतीक्षासँ जुड़ि जाइत अछि। पीअर बच्चा, जमीन्दारी शक्ति आ लोकक प्रतिरोधक चर्चा लोकनाट्यक सामाजिक अर्थकेँ वर्तमानसँ जोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

16 छाती लात, झोँटा हाथ आ सौतिनक पोखड़िमे अढ़ाइ झाक माटि उघब

समग्र कथा-सूत्र

श्रीकरक पुत्रीक कुण्डलीमे लिखल कष्टपूर्ण भाग्य, सुवर्ण राजासँ विवाह, भूख-अपमान आ मधुश्रावणीक व्रतक कथा सुनाओल जाइत अछि। छोटकी रानीक विरोध आ समाचार नहि पहुँचनाइ राजकुमारीक दुर्दशाक कारण बनैत अछि; अन्तमे सत्य प्रकट होइते ओकर सम्मान घुरैत अछि। गणेश द्वारा सोहाग बाँटबाक आख्यान सेहो एहि प्रसंगक हिस्सा अछि।

मुखदेव जेलकेँ निन्नक तुलनामे देखैत छथि, जतऽ स्मृतिक संसार आ वास्तविक असुरक्षा एकमेक होइत अछि। जागेश्वरक दर्शन-सम्बन्धी पुरान चर्चा—वैदिक भाषा, प्रकृति, ईश्वर, वाचस्पति मिश्र आ ज्ञानक परम्परा—क पुनर्स्मरण होइत अछि। राति, धारक आवाज आ लेखनक इच्छा कल्लोलक अन्तमे मुखदेवक आत्मचिन्तनकेँ गहींर बनबैत अछि।

17 गविया बाँझिन, बड़द बियाय, बूँदमे देखहुँ समुद्र समाय

समग्र कथा-सूत्र

राधा-कृष्णक झूला-गीतसँ आरम्भ होइत अछि, मुदा जल्दीए कथा जटमलपुरक लचका पुल तोड़बाक गुप्त क्रान्तिकारी अभियानपर आबैत अछि। जागेश्वर, मुखदेव आ विभिन्न क्षेत्रक कॉमरेड ब्रिटिश शासन आ जमीन्दारीक साधन बनल पुल-रस्ताकेँ लक्ष्य करबाक निर्णय लैत छथि। मुदा मुखदेव सामान्य लोककेँ होमयबला असुविधाक प्रश्न सेहो उठबैत छथि।

अभियानसँ पहिने विभिन्न समुदाय, भाषा आ सांस्कृतिक इतिहासक चर्चा होइत अछि। टोली बनि बारूद लऽ पुलक निकट पहुँचैत अछि आ विस्फोटसँ लचका पुल नष्ट होइत अछि। भागैत काल चेथरू घायल भऽ खसि पड़ैत अछि; हुनका धनेसरक कामतपर आनल जाइत अछि। संघर्षक सामूहिक लक्ष्य आ एक व्यक्ति पर पड़ल मूल्य एहि कल्लोलक निष्कर्ष अछि।

18 मारबौ आरे कोइली, फोड़ब दुनू अँखिया/ तोर बोली सुनि पिया गेल परदेस/ तोरे बोली सुनि ना

समग्र कथा-सूत्र

घायल चेथरूकेँ धनेसरक कामतपर राखि वैद्य अनाओल जाइत अछि। मुखदेव आ साथी सभ काँटी निकालब, घाव साफ करब आ रक्तस्राव रोकबाक प्रयास करैत छथि। राष्ट्रीयता आ गरीबक प्रतिरोधक चर्चा घायल क्रान्तिकारीक असहाय देहक संग चलैत अछि। मुखदेव एहि प्रश्नपर सोचैत छथि जे मृत साथीक जीवन फेर नहि देल जा सकत, मुदा हुनकर विचार बचाओल जा सकैत अछि।

एहि बीच कमला, बहुरा गोढ़िन आ नटुआ दयालक कथाक पुनरावृत्ति नवीन रूपमे अबैत अछि। नदीक पानि, तंत्र, नृत्य आ प्रेमक प्रसंग लोककथामे जुड़ैत अछि। अन्तक गीतमे परदेस गेल प्रियजनक प्रतीक्षा आ विछोह मुख्य स्वर बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

19 सूतलिमे छलिऐ रे सुगना एके संग रे सेजिया/ सपनेमे देखलौं रे सुगना हंसा गेलै रे चोरिया

समग्र कथा-सूत्र

चेथरूक मृत्यु भऽ चुकल अछि। तार काटब, नौताल-धनहरक पुल उड़ाएब आ थानापर कार्रवाईक घटनामे कुञ्जन, मुसाइ आ ढिनाइ सेहो मारल जाइ छथि। मुखदेव आ जागेश्वर बचैत छथि, मुदा संग-साथी सभक क्षति विद्रोहक वास्तविक मानवीय मूल्य रूपमे सामने अछि।

मुखदेव कृष्णपर स्यामन्तक मणि चोरबाक मिथ्या आरोपक पुराणकथा सुनबैत छथि। एकर पाछाँ जागेश्वरक प्रश्न—गरीबक लेल संघर्ष केनिहारक अन्त की केवल विनाश अछि?—भावनात्मक केन्द्र बनैत अछि। अंग्रेजी पुलिस विस्फोटक आ कॉमरेड सभक विषयमे जागेश्वरसँ जानकारी माँगैत अछि, ओ उत्तर नहि दैत छथि। जेलमे सुननिहार लोकनि हुनकर मृत्यु-स्मृति सँ व्यथित होइत छथि; विछोहक गीत कल्लोल समाप्त करैत अछि।

20 मैयाजी हे राखि लियौ अरज केर लाज/ जगदम्बा सेवक कल जोड़ैए हे

समग्र कथा-सूत्र

रघुवरन मुखदेवकैँ नव समाचार सुनबैत छथि। पीअर बच्चाक प्रभावसँ शिक्षा आ सामाजिक समावेशमे बाधा आएल, धनेश्वर-पर्शुराम आदिक प्रतिरोध भेल, मुदा स्वयं पीअर बच्चा स्वतंत्रता सेनानीक पेंशन आ विधायकक पद पाबि रहल छथि। कृपानन्दक शिक्षा-संघर्ष सेहो एहि विडम्बनाक उदाहरण अछि।

युधिष्ठिरकेँ कृष्ण द्वारा सुनाओल अनन्त चतुर्दशी व्रतक कथा, शीला-कौण्डिन्यक समृद्धि आ विपत्तिक घटनाक संग प्रस्तुत अछि। एहि कथाक संदर्भमे मुखदेवक जेल-मुक्तिक प्रतीक्षा आ घेंघीक कष्टक प्रश्न उठैत अछि। गाममे भगवतीक आराधना आ मुखदेव-जागेश्वरक कुशल लेल विनती चलि रहल अछि; जागेश्वरक मृत्युबारे गामक लोक स्पष्ट रूपसँ अनभिज्ञ अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

21 बछड़ूले कुहकै छै धेनु गाय

समग्र कथा-सूत्र

ब्राह्मण टोल, गुअरटोली, महिसबार समाज आ जातिगत सम्बन्धक चित्रणसँ कल्लोल आरम्भ होइत अछि। जागेश्वरक हत्या आ मुखदेवक कारावासक चर्चा संग सत्यनारायण यादवक उभार देखाओल गेल अछि। यादव समाजक पशुपालन, खेती आ गीतक संग कालिदास नामक लोकदेवताक दीर्घ लोककथा प्रस्तुत अछि।

नव संविधान, सार्वभौम मताधिकार आ चुनावक तैयारी गामक राजनीति बदलैत अछि। राधामोहन राय समाजवादी पक्षसँ आ पीअर बच्चा कांग्रेससँ प्रतिस्पर्धा लेल तैयार छथि। सत्यनारायण यादव गौँआकेँ मतदानक अधिकारक मूल्य बुझबैत छथि आ स्वतंत्रता लेल बलिदान देनिहारक बदला सत्ता पाबऽ चाहनिहारक विडम्बना उठबैत छथि। जनप्रतिनिधि पुरनका जमीन्दारक नव रूप नहि बनि जाए, ई मूल आशंका अछि।

22 हर ने बड़द, ढोढ़ाय मड़र

समग्र कथा-सूत्र

राधामोहन राय द्वारा विभिन्न टोलमे इनार खुनाबाक सामूहिक प्रयत्नक स्मृति सँ कथा खुलैत अछि। डोमी मिआँ, लछमी ततमा, बंजारा आ आन लोकक श्रमसँ पानिक सुविधा बढ़ल छल; ई सार्वजनिक हित पीअर बच्चाक ईर्ष्याक कारण बनल। मुखदेव-जागेश्वरक गिरफ्तारी आ हुनकर अनुपस्थितिक सम्बन्धमे अफवाह पसरैत रहैत अछि।

चुनाव अभियानमे पीअर बच्चा कांग्रेसक नाम, खादी आ नबका विकासक वादा करैत छथि, मुदा जागेश्वरक मृत्यु, घेंघीक पेंशन आ मुखदेवक कारावासपर ठोस सहायता नहि दैत छथि। राधामोहन राय समाजवादी सोच आ सामाजिक संसाधनक पक्ष रखैत छथि; सत्यनारायण यादव सेहो विरोधक स्वर छथि। अन्तमे जनस्मृति अधूरी रहला कारण पीअर बच्चा चुनाव जीतैत छथि।

23 सात पाँच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसाँतर आँतर भेल।

समग्र कथा-सूत्र

भारतक संविधान २६ जनवरी १९५० सँ लागू भेल, मुदा मुखदेव स्वतंत्र भारतक कारागारमे बन्द रहैत छथि। रघुवरन आ सहबन्दीक संग संविधान, स्वतंत्रता आ राजनीतिक अधिकारक चर्चा चलैत अछि। कथा तिरहुतक नीलक खेती, औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था, बंजारा समुदाय आ अनेक धार-बान्हक इतिहासक स्मृति सँ गुजरैत अछि।

कारावासक अभिलेखमे स्वतंत्रता सेनानी आ अपराधीक बीच भेदक जटिलता मुखदेवक रिहाईकेँ कठिन बनबैत अछि। अन्ततः सहबन्दी आ जेलरक सहयोगसँ मुखदेव छुटैत छथि। ओ घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमतिसँ विदा लैत छथि। मुक्ति सुखक संग दीर्घ बिछोह आ घेंघीक अनिश्चित प्रतीक्षाक स्मृति लऽ कऽ अबैत अछि।

24 अंडीक कोरो बघंडीक बाती, केहन घर छारलैँ रे पोदिनमाक नाती

समग्र कथा-सूत्र

मुखदेव जेलसँ निकललाक बादो गढ़ नारिकेल नहि पहुँचैत छथि। रघुवरनक कॉमरेड हुनका संग लऽ जाइ छथि; गाममे पीअर बच्चा हुनकर मुक्ति लेल झूठा श्रेय लेबाक प्रयत्न करैत छथि। कुसुमावती, राधामोहन राय आ आन पात्रक माध्यमसँ १९४२क आन्दोलन, खादी, झण्डा, खेतीक निर्णय आ स्वतंत्रता-पूर्व संगठनक संघर्षक स्मृति फेर खुलैत अछि।

डोमी मिआँक मुस्लिम लीग, पाकिस्तानक कल्पना आ ओकर राजनीतिक भ्रमसँ जुड़ल प्रसंग धर्मक आधारपर राष्ट्रीय विभाजन आ स्थानीय जीवनक अन्तर देखबैत अछि। लछमी ततमा हुनका घुराबि अनैत छथि। राधामोहन रायक समाजवादी पक्ष, पीअर बच्चाक कांग्रेस आ कमजोर कम्युनिस्ट संगठनक जटिल स्थिति संग गामक राजनीतिक दिशा खुलैत अछि।

25 बैसने पहर चलने कोस

समग्र कथा-सूत्र

मुखदेव रघुवरनक संग मदुरै पहुँचैत छथि, जतऽ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक राजनीति आ भारतक स्वतंत्रताक अर्थपर चर्चा होइत अछि। एक सभामे मुखदेव गीत गाबि अपन विचार प्रस्तुत करैत छथि। लोक हुनका ‘मोहन गबैय्या’ कहय लगैत अछि; एहि नव नामक संग ओ सभासभामे गीत गाबऽ लगैत छथि।

गामक विकासक प्रश्न आब बाढ़ि, कमला-बलानक बान्ह, पाँक, माछ-मखान आ लोक-निर्मित जलनिकासक व्यवस्थासँ जुड़ैत अछि। सत्यनारायण यादव आ आन पात्र नदीकेँ बाँधबाक योजनाक उपयोगिता आ खतरा पर बहस करैत छथि। मुखदेवक बारह वर्षक कारावासक बाद घेंघी आ कुसुमावतीक बदलिएल जीवन आ जागेश्वरक अनुपस्थिति स्थायी क्षति रूपमे सामने अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

26 एतै दुख देलेँ हे माइ कोसिका एतै दुख देलेँ/ आरी चढ़ि रोबै छै किसान

समग्र कथा-सूत्र

पटवा जगदीश माइल आ हुनकर बेटा महेशक बुनाइ, खादीक व्यवसाय आ नव शिल्पक अवसरक विस्तृत चित्रणसँ कल्लोल खुलैत अछि। एक बाहरी कलाप्रेमीक गाममे आगमनक प्रसंगसँ भोला पंडितक माटिक कला, चर्मशिल्प, दर्जी, तेली, राजमिस्त्री, मलाह आ अन्य समुदायक दक्षता उजागर होइत अछि। मोहन गबैय्याक लोकज्ञान औपचारिक प्रयोगशालाक ‘विकास’-दृष्टिक सामने रखल गेल अछि।

कमला-बलानक नाव, बेड़, बाढ़ि आ पूजा-संस्कृति बीच बाँधक संभावित दुष्परिणामपर प्रश्न उठैत अछि। गामक राजनीतिक समीकरणो बदलि रहल अछि। १९५७क चुनावमे पीअर बच्चाकेँ टिकट नहि देबाक चर्चा आ समाजक भीतर नव नेतृत्वक सम्भावना उपस्थित अछि।

27 उत्तर दक्खिनसँ एलै नटनियाँ रे जान/ जान बैसि गेलै चनना बिरिछिया रे जान

समग्र कथा-सूत्र

कोसीक बान्हबन्दी आ विनाशकारी बाढ़िक बीच भारतीय कम्युनिस्ट पार्टीक पालघाट आ अमृतसर अधिवेशनक प्रसंग चलैत अछि। मुखदेव 'मोहन गबैय्या' रूपमे राजनीतिक सभामे सक्रिय छथि। १९५७क चुनावमे पीअर बच्चा टिकटसँ वंचित होइत छथि; राधामोहन राय पुनः कांग्रेसमे अबैत छथि आ सत्यनारायण यादव समाजवादी उम्मीदवार बनि जीतैत छथि।

यात्राक दौरान मोहन आ रघुवरन वेदक भीतर लोकगीत-नृत्यक परम्परा, कट्टरता, शिक्षा आ समाजक वंचित वर्गपर बात करैत छथि। ट्रेनमे बंजारा, संथाल आ आन समुदायसँ भेँट होइत अछि। बंजाराक भाषा, वस्त्र, गोदना आ संथालक उत्पत्तिक लोककथा सँ सामाजिक विविधता तथा घुमन्तु समुदायक अलग संघर्ष देखाओल गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

28 कटबै सोना सुतरिया बिनबै झुमरि जाल हे

समग्र कथा-सूत्र

अकाल आ सुखाइत पोखरिक बीच बिचकुन सदाय आ मुसहर परिवारक जीवन-रक्षा लेल बिसाँढ़क खोज देखाओल गेल अछि। एक दिस वर्षाक अभाव, दोसर दिस नदीक बान्हक कारण उत्पन्न नव बाढ़ि-रूप, विस्थापन आ खेत-पथारक संकट वर्णित अछि। ऊँच बान्ह, जलनिकास आ पुनर्वासक निर्णय सामान्य कृषकक अनुभवसँ कटि गेल देखाइत अछि।

कोसीक प्रवाह, रानू सरदार, कोइलाबीर, बैदला आ नदीक विवाहक लोकगाथा वैज्ञानिक-प्रशासनिक बान्ह-बहसक संग चलैत अछि। लोकगाथामे कोसीक स्वच्छन्द प्रवाह आ मजदूरक विधवापनक करुणा विशेष रूपेँ उभरैत अछि। बाढ़ि पीड़ित गामक किछु परिवारकेँ देल गेल पुनर्वास-भूमि व्यवहारमे अनुपलब्ध निकलैत अछि; एहि विरोधाभासक विरुद्ध धरना होइत अछि।

29 भगता कहलकै अकास बान्हब पताल बान्हब/ बौहु कहलकै-पहिने घरक कोनटा जे टूटल छै से ने बान्हौ

समग्र कथा-सूत्र

मोहन गबैय्या बागमतीक ऊँच कएल गेल बान्ह, बन्द जलनिकास आ बाढ़ि नियंत्रणक अपूर्ण व्यवस्था पर चर्चा करैत छथि। एहि पृष्ठभूमिमे इन्द्रकान्त मिश्रक छोट भाए धीरेन्द्रक बाल्यजीवन खुलैत अछि। ओ विद्यालयक पढ़ाइसँ बेसी भगता, योग, तंत्र आ अतीन्द्रीय शक्तिक कथामे रुचि रखैत अछि।

कमलाक उत्पत्ति, नटुआ दयाल, कोइलाबीर, अमरसिंह आ हड्डीक बान्हक विस्तृत लोकगाथा धीरेन्द्र सुनैत अछि। लोककथामे नदीकेँ बाँधबाक हिंसक प्रयास आ ओकर मुक्ति वारम्बार सामने अबैत अछि। साधुक चमत्कारक प्रभावमे किशोर धीरेन्द्र घरसँ ऋषिकेश चलि जाइत अछि; परिवार चिन्तित होइत अछि आ समयक संग गाम ओकरा बिसरि जाइत अछि।

30 भादवक अन्हरियो नामी, इजोरियो नामी, रौदो नामी, गुमारो नामी

समग्र कथा-सूत्र

गामक रिंग-बान्ह, जमीन्दारी बान्ह आ गढ़ अरड़नेबाक अलग भौगोलिक पहिचानक चर्चा होइत अछि। महानन्दा, कारी कोसी, गंडक, बागमती आ कमलाक जल-परियोजनाक विवरणक माध्यमसँ नदीक प्रवाह रोकबाक नीतिक सीमा पर प्रश्न उठैत अछि। गामक भीतर सामाजिक मतभेद आ आर्थिक हितक टकराव जारि अछि।

धीरेन्द्र मिश्रक विषयमे समाचार पहुँचित अछि जे ओ दिल्लीमे प्रसिद्ध योगी बनि गेल छथि आ प्रभावशाली नेता सभकेँ योग सिखबैत छथि। ओकरा गामकेँ बाढ़िसँ बचेबाक सामर्थ्य देनिहार महात्माक रूपमे देखल जा रहल अछि। लोकमे आशा, अविश्वास आ अफवाह तीनू व्याप्त अछि। एहि अनिश्चित स्थितिमे कथा आगाँ बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

31 चिन्नी सेहो आब लगैए जे कम मीठ होइ छै

समग्र कथा-सूत्र

पुराणमे मृत्युकेँ लाल-पीअर वर्णक स्त्री रूपमे रचबाक कथा सँ धीरेन्द्रक स्मृति जागैत अछि। ओ गाम घुरैत छथि, अपन माए आ भाए इन्द्रकान्तसँ भेँट करैत छथि। दिल्लीक प्रभावशाली योगी रूपमे गाममे हुनकर प्रतिष्ठा बढ़ल अछि। गामकेँ ऊँच बान्हसँ घेरबाक प्रस्ताव पर राजनीतिक आ प्रशासनिक समर्थन जुटैत अछि।

मुदा सत्यनारायण यादव, अरुणा झा आ मुखदेव आदि लोकक जमीनक क्षति आ स्थानीय हितक प्रश्न उठबैत छथि। अधिकारी, ठेकेदार, मन्त्री, मुख्यमन्त्री आ प्रधानमन्त्रीक बेटा धरि मामला पहुँचैत अछि। अरुणा झाक गिरफ्तारी आ सरकारी रोक-टोकक बादो बान्हक काज चालू होइत अछि। ‘चिन्नी सेहो आब कम मीठ’ लगबाक रूपकसँ स्वतन्त्र भारतमे आपसी विश्वास आ बोलक

31 चिन्नी सेहो आब लगैए जे कम मीठ होइ छै

समग्र कथा-सूत्र

मिठास घटबाक पीड़ा व्यक्त होइत अछि।

32 दिनमे कौआ देखि कऽ डेराइ, रातिमे नदी हेलि जाइ

समग्र कथा-सूत्र

मोहन गबैय्याक लोकसंस्कृति आ नव भारतक बदलैत आर्थिक-सामाजिक इतिहास एक व्यापक चित्रपट बनबैत अछि। मजदूरी, सरकारी सड़क, जमीन्दारी अवशेष, मोबाइल, उद्योग, चुनाव, भारत-चीन युद्ध, आपातकाल, नक्सलबाड़ी, बाबरी मस्जिद, हरित क्रान्ति आ वैश्वीकरण सन प्रसंग एहि कल्लोलमे आबैत अछि। स्थानिक गामक कथा राष्ट्रीय घटनासँ जोड़ल जाइत अछि।

हरित क्रान्तिक फसल-वृद्धिक संग कीटनाशक, विषमता आ श्रमिकक समस्या पर विचार होइत अछि। भूदान, भूमिहीनता, सूचना-प्रौद्योगिकी आ शिक्षा सभक वास्तविक पहुँच प्रश्नक विषय बनैत अछि। गौरीशंकर स्थान आ परमानन्द पासवानक सामाजिक कामक चर्चा सँ स्थानीय स्तरपर दलित शिक्षा, पानि आ सामूहिक संगठनक महत्व सामने अबैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

32 दिनमे कौआ देखि कऽ डेराइ, रातिमे नदी हेलि जाइ

अछि।

33 अगहन उपास कालक कोन डर

समग्र कथा-सूत्र

सरकारी रोजगार आ न्यूनतम मजदूरीक दरमे विसंगतिक विरोधमे मोहन गबैय्या आवाज उठबैत छथि। ठेकेदार सभक मस्टर-रोल, फर्जी दस्तखत, कमजोर वा महिला मजदूरकेँ बाहर रखबाक प्रवृत्ति आ मजदूरीक सूचना नहि देबाक समस्या मुख्य बनैत अछि। नबी बकस, हुनकर माए आ अनेक गौँआ संगीतक संग एकत्रित होइत छथि।

मोहनक गीतक स्वर धीरे-धीरे मजूरी आ अधिकारक सामूहिक मागमे बदलैत अछि। बी.डी.ओ. परमानन्द पासवानक सहयोगसँ जनसुनबाही शुरू होइत अछि, एस.डी.ओ. अनिच्छासँ सुनबाही करैत छथि आ मजदूरकेँ उचित भुगतान भेटऽ लगैत अछि। पाठमे एहि स्थानीय प्रक्रियाकेँ २००५क सूचनाक अधिकार कानूनसँ पहिनुक सार्वजनिक जवाबदेहीक प्रयास रूपमे देखाओल गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

34 सेर भरि गहूम बरिख दिन खेबै/ पिआकेँ जाए नै देबै हे

समग्र कथा-सूत्र

1 / 2

समापनक पहिल पल्लवमे गढ़ नारिकेलक अगिला पीढ़ीक दिल्ली—किशनगढ़, मेहरौली आ वसन्तकुञ्ज—मे बसबाक विस्तृत चित्रण अछि। जाति-पेशा आधारित पुरनका गामक लोक आब शिक्षक, चिकित्सक, बैंक अधिकारी, ठेकेदार, सफाईकर्मी, राजमिस्त्री, कारीगर आ दोकानदार बनि भिन्न आर्थिक स्थितिमे छथि। दूटा माएक चिट्ठीक माध्यमसँ प्रवासी सन्तानक समृद्धिक संग मातृस्नेहक उपेक्षा आ गामसँ बढ़ैत दूरीक पीड़ा सामने अबैत अछि।

दोसर पल्लवमे खेती, माटि, हर-बड़द, बदलिएल बीआ, खाद, रासायनिक खेती, बाढ़ि-बान्ह आ गामक परिवर्तित जीवनक चर्चा अछि। ढोलन आ मड़ुवन कन्याक लोकगाथा स्मृति आ कथा-परम्पराकेँ पुनः जीवित करैत अछि। तेसर पल्लवमे मुठिया चाउर, भिक्षा, श्रम आ

34 सेर भरि गहूम बरिख दिन खेबै/ पिआर्कें जाए नै देबै हे

समग्र कथा-सूत्र

कृषकजीवनक चित्रक संग बूढ़ मोहन गबैय्या फेर देखाइत छथि। गामक लोक हुनकर गीत आ संघर्षकेँ जीवित परम्परा मानैत छथि। अन्तमे स्पष्ट होइत अछि जे मुखदेव ‘सहस्रशीर्षा’क मूल खिस्सा सुनेबे नहि केलन्हि; उपन्यास स्वयं हजार माथ, आवाज आ अनुभवक सामूहिक कथाक रूप ग्रहण करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

WORK / कृति

11 कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

अध्याय ०–१२ · उपसंहार · अतिरिक्त अन्तिम अध्याय ०

SECTION / खण्ड

समग्र कथासार

11 कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

समग्र कथासार

एहि उपन्यासमे अपराधक रूप बन्दूक, भय आ प्रत्यक्ष हिंसासँ बदलि मोबाइल, डिजिटल संख्या आ अदृश्य आर्थिक ठगी धरि पहुँचैत अछि। अभिलेख पढ़निहार नन्द आरुणि आ हुनकर मार्गदर्शक गोप कुमार पुरान खटाँस-प्रकरणक बाद ‘बादक पानि’क नव फाइल खोलैत छथि। एक गरीब, तकनीकी प्रतिभावान बालक सामाजिक अपमान आ देखल जाएबाक भूखसँ प्रेरित भऽ ‘तलगोहि’ आ फेर ‘पनिकौआ’ नामक अदृश्य ठगी-जालक संचालक बनैत अछि। ओकर असली नाम छोटन अछि।

विशेष कार्यदलमे अरुणेश मिश्रक प्रमाण-सावधानी, अभयकान्त झाक अनुभव, सुनयना ठाकुरक तकनीकी विश्लेषण आ धीरकेतु झाक पुरान आर्थिक नेटवर्कक समझ एक संग अबैत अछि। मनोज सन गरीब युवकसभक माध्यमसँ फैलल ठगी, बिरजू साह द्वारा अवैध

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

समग्र कथासार

धनक रूपान्तरण आ अपराधीक पहचान-भूख मिलि ओकर जालमे दरार अनैत अछि। नाम बदलैत रहितो छोटन अपन व्यवहारक विशिष्ट निशान नहि मेटा सकैत अछि।

अध्याय १२ आ पहिल उपसंहार सार्वजनिक कथनक अनुसार नदीमे छोटनक जलसमाधि मानैत अछि, यद्यपि देह नहि भेटैत अछि। मुदा मूल पोथीक अतिरिक्त अन्तिम ‘अध्याय ० : जालक भीतर जाल’ एहि निर्णयकेँ उलटैत अछि। गुप्त रेकर्ड बतबैत अछि जे मृत्यु देखाबऽक दृश्य भ्रामक छल; नियंत्रित छाह-जाल, दोहरायल व्यवहार, मानवीय कड़ी आ स्वतंत्र प्रमाणसँ छोटन जीवित पकड़ल गेल आ न्यायिक हिरासतमे अछि। पोथीक निष्कर्ष अछि जे व्यक्ति वा कूटनाम नहि, अपराधक तरीका आ प्रमाणित निशान चिन्हनाइ दीर्घकालिक सामाजिक स्मृतिक आधार अछि।

अध्याय ०

समग्र कथासार
1 / 2

चन्ना गाछीक पाछाँक पुरान अभिलेख-कोठरीमे नन्द आरुणि आ गोप कुमार नगरक अपराध-स्मृतिसँ जुड़ल फाइल सभ पढ़ैत छथि। नन्द ‘खटाँस मारल गेल’ शीर्षकवला पुरान मोटरी बन्द करैत छथि। गोप कुमार हुनका मोन पाड़बैत छथि जे एकटा अपराधीक मृत्यु अपराधक व्यवस्था समाप्त भेलाक प्रमाण नहि होइत अछि। व्यक्ति मरि सकैत अछि, मुदा ओकर जाल आ तरीका दोसर रूपमे जीवित रहि सकैत अछि।

गोप कुमार ‘बादक पानि’ नामक नव पेटार खोलैत छथि। ओहिमे गोली, लहू वा पोस्टमार्टमक कागच नहि, बल्कि फोन, खाता, कार्ड आ स्क्रीनसँ जुड़ल संख्या भेटैत अछि। एहि दस्तावेजसभमे बेर-बेर एकटा विचित्र हस्ताक्षर उभरैत अछि—‘तलगोहि’। नन्दकेँ बुझाएत अछि जे नव अपराधी दूर बैसल लोकक

अध्याय ०

समग्र कथासार

2 / 2

जमा-पूँजी बिना घर घुसने लूटि सकैत अछि। गोप कुमार हुनका नामक बदला व्यवहारक निशान पढ़बाक शिक्षा दैत छथि।

ई आरम्भ मुख्य कथाक अभिलेखीय चौखटा बनबैत अछि। खटाँसक प्रत्यक्ष हिंसासँ ‘तलगोहि’क अदृश्य आर्थिक हिंसा धरि परिवर्तन एहि ठाम स्थापित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १ : नाम बिना जाल

समग्र कथासार

1 / 2

खटाँसक मृत्युक बाद राजधानी नगरमे बाहरी शान्ति घुरि अबैत अछि, मुदा मोबाइल फोन आ डिजिटल लेन-देनक विस्तारसँ अपराधक नव बजार बनैत अछि। कमला-बलानक बाढ़ग्रस्त क्षेत्रक एक गरीब परिवारमे जन्मल बालकक पिता ईंटा-भट्ठामे प्रवासी मजदूरी करैत छथि आ माता दोसराक खेतमे रोपनी करैत छथि। बालक विद्यालयसँ आकर्षित नहि होइत, मुदा खराब रेडियो, घड़ी आ फोन ठीक करबामे ओकर असाधारण रुचि अछि। एक बूढ़ीक रेडियो मरम्मति करबाक बाद भेटल स्नेहसँ ओ पहिल बेर ‘देखल जाएब’क सुख अनुभव करैत अछि।

तेरह बरखक उमेरमे ओ शहरक मोबाइल-दोकानमे काज पकड़ैत अछि। कम मजदूरी, अपमान आ मालिकक ईर्ष्याक बीच ओ चुपचाप फोन मरम्मति सीखि लैत अछि। दुकानसँ पाइ हराएलापर

अध्याय १ : नाम बिना जाल

समग्र कथासार

2 / 2

बिना प्रमाण चोर ठहराएल जाइत अछि; ओकर मजदूर पिता आ जातिकेँ अपमानित करैत मालिकक बात ओकरा गहींर चोट पहुँचबैत अछि। ओ प्रतिज्ञा करैत अछि जे दुनियाँ ओकर शक्ति महसूस करत, मुदा ओकर असली परिचय नहि जानि सकत।

साइबर-कैफेमे ओ नामरहित ऑनलाइन ठगीक संसार देखैत अछि। अपन तकनीकी दक्षता उपयोग कऽ ओ अनेक बेरोजगार आ कर्जदार छोट ठगकेँ एक्के तरीकेसँ जोड़ैत अछि आ प्रत्येक ठगीसँ हिस्सा लेबाक अदृश्य व्यवस्था बनबैत अछि। ओ स्वयं सामने नहि आबैत; ‘तलगोहि’क कूटनाम ओकर पहचान बनैत अछि। ओकर भीतरी द्वन्द्व अछि—पूर्ण अदृश्यता चाहब आ सभसँ देखल जाएबाक तीव्र इच्छा।

अध्याय २ : कार्यदलक नव पानि

समग्र कथासार

खटाँस प्रकरणमे बनल अस्थायी विशेष कार्यदल आब स्थायी संस्थाक रूप लऽ चुकल अछि। अरुणेश मिश्र नव अधिकारी सभकेँ बेर-बेर चेतबैत छथि—‘अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू।’ अभयकान्त झा फोनक आवाज, सम्पर्क आ चुप्पीक संकेत पढ़बाक अनुभवी अधिकारी छथि, मुदा स्क्रीन आ संख्यामे घटैत नव अपराधक सोझाँ हुनकर पुरान साधन अपर्याप्त बुझाइत अछि।

एहि परिस्थिति मे सुनयना ठाकुर कार्यदलमे अबैत छथि। सूचना आ तकनीकी निशान पढ़बाक हुनकर दक्षताकेँ शुरू मे पुरान अधिकारी कम आँकैत छथि। मुदा ओ तीन राति धरि सैकड़ो छोट-छोट ठगीक शिकाइत पढ़ि पबैत छथि जे रकम, स्थान आ शिकायतकर्ता भिन्न रहितो छलक तरीका आ एक विशिष्ट गलती समान अछि। ओ निष्कर्ष निकालैत छथि जे

अध्याय २ : कार्यदलक नव पानि

समग्र कथासार

अलग-अलग ठगकेँ कियो एक्के ढंग सिखा रहल अछि।

अभयकान्त एहि साझा सूत्रकेँ ‘गिट्ठऽ’ कहैत छथि, आ अरुणेश स्पष्ट करैत छथि जे ई एखन जाँच योग्य अनुमान अछि, न्यायिक प्रमाण नहि। कार्यदल नामक सूची छोड़ि तरीकाक सूची तैयार करैत अछि। बिखरल शिकाइतसभक पाछाँ ‘तलगोहि’क हस्ताक्षर धीरे-धीरे स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय ३ : दू पानिक संगम

समग्र कथासार

1 / 2

तलगोहिकेँ ठगीसँ अथाह डिजिटल धन भेटैत अछि, मुदा स्क्रीनक संख्या सीधे भात, घर वा जमीन नहि बनि सकैत अछि। अपराधक कमाइकेँ वास्तविक दुनियामे उतारबाक लेल ओकरा एकटा अलग नेटवर्क चाही। एहि आवश्यकता मे ओकर सम्बन्ध बिरजू साहसँ होइत अछि, जे खटाँसक समय अवैध कमाइकेँ कागच, कारोबार आ लेन-देनक सहारे वैध देखाबऽमे निपुण छलाह।

दुनूक भेट आमने-सामने नहि होइत; संदेशक माध्यमसँ साझेदारी बनैत अछि। बिरजू धनक पुरान बाट जनैत छथि, तलगोहि डिजिटल ठगीक नव प्रणाली। दुनू अपन-अपन क्षेत्रमे अदृश्य रहबाक शर्तपर संगठित होइत छथि। तलगोहि आब छोट ठगसभपर एक प्रकारक अदृश्य कर लगा दैत अछि; हिस्सा नहि देनिहारक सूचना पुलिस धरि पहुँचि जाइत अछि।

एहि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ : दू पानिक संगम

समग्र कथासार

2 / 2

अध्यायमे खटाँसक पुरान आर्थिक जाल आ नव साइबर अपराध एक सूत्रमे बान्हल जाइत अछि। बिरजूक व्यवस्था तलगोहिकेँ बल दैत अछि, मुदा ओहि व्यवस्थासँ ओकर धन जमीनपर उतरैत अछि आ ओकरा पकड़बाक सम्भावना सेहो बनैत अछि।

अध्याय ४ : पहिल गिट्ठऽ

समग्र कथासार

1 / 2

सुनयना ठाकुर दोहरायल छलक शैली आ एक्के गलतीक आधारपर ठगीक समूहक भीतर सम्बन्ध खोजैत छथि। अरुणेश मिश्र सलाह दैत छथि जे विशाल नेटवर्ककेँ केवल अनुमानपर नहि, ओकर कोनो छोट, वास्तविक मानवीय कड़ीसँ पकड़ल जाए। एहि क्रममे मनोज नामक गरीब युवक चिन्हल जाइत अछि। बीमार पिता, बहिनक बियाहक कर्ज आ भोजनक संकटसँ परेशान मनोज अपन बैंक खाता भाड़ापर देलक, जाहिसँ दोसराक चोरीक पाइ बहैत छल।

पुलिस पकड़ैत अछि, मुदा अभयकान्त झा मनोजकेँ खाली छोट अपराधी बुझि कारागार पठाबऽक बदला ओकर बात सुनैत छथि। ओ मनोजक गलत काजकेँ गलत कहैत ओकर अपन शोषण सेहो देखबैत छथि। भरोसा भेटलापर मनोज ओ मंच, सम्पर्क आ शब्द सभ बतबैत अछि, जकरा माध्यमसँ ओकरा जालमे

अध्याय ४ : पहिल गिट्ठऽ

समग्र कथासार

2 / 2

जोड़ल गेल छल। अन्तमे ‘तलगोहि’क संकेत सामने अबैत अछि।

एहि पहिल ठोस कड़ीसँ कार्यदलकेँ जाँचक दिशा भेटैत अछि। तथापि अभयकान्त स्पष्ट करैत छथि जे सूत्र भेटब आ अपराधीकेँ वैध प्रमाणक संग पकड़ब अलग बात अछि। कथामे छोट माछ, गिट्ठऽ आ गोहि—तीनू रूपकक आपसी सम्बन्ध उजागर होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ : नाम बदलल, निशान बचल

समग्र कथासार

1 / 2

मनोजक अचानक गायब होएब, ठगीक एक मंचक चुप भऽ जाएब आ एक पुरान साथी द्वारा उत्तर बन्द कएल जाएब तलगोहिकेँ चेतबैत अछि। बिरजू साह ओकरा गहींरमे लुकि रहबाक सलाह दैत छथि। तलगोहि अपन पुरान डिजिटल पहचान ‘तलगोहि’ समाप्त कऽ नव कूटनाम ‘पनिकौआ’ अपनबैत अछि, जाहिसँ जाँचकर्ता भ्रमित भऽ सकथि।

सुनयना पहिने एहि परिवर्तनकेँ जाँचक पराजय बुझैत छथि। अभयकान्त हुनका हुनकर अपन सिद्धान्त मोन पाड़बैत छथि—नाम बदलल जा सकैत अछि, तरीका आ आदतिक विशिष्ट चालि बदलनाइ कठिन अछि। सुनयना नव शिकायतसभ जाँचि पबैत छथि जे ‘पनिकौआ’क काजमे वएह दोहरायल गलती आ समान संगठनात्मक ढंग जीवित अछि।

नन्द आरुणि आ गोप कुमारक संवादमे ई बात उभरैत अछि जे अपराधक

अध्याय ५ : नाम बदलल, निशान बचल

समग्र कथासार

2 / 2

इतिहास नामक सूची नहि, निशानक स्मृति अछि। कथाक केन्द्रीय सूत्र एतय स्पष्ट बनैत अछि—तलगोहि आ पनिकौआ अलग व्यक्ति नहि, एक्के अपराधीक दूटा आवरण छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६ : दूरीक द्वन्द्व

समग्र कथासार

1 / 2

कार्यदल पनिकौआक ऑनलाइन गतिविधि तकैत रहलोपर ओकर वास्तविक ठाम नहि पबैत अछि। ओ अपन डिजिटल उपस्थिति निरन्तर बदलैत रहैत अछि। अभयकान्त समझबैत छथि जे अपराधीकेँ ओकर सबल क्षेत्र—अदृश्य स्क्रीनक भीतर—पकड़बाक प्रयास कार्यदलकेँ थका देत। वास्तविक कमजोरी ओ क्षण अछि, जखन चोरायल संख्या दुनियाक धन, सम्पत्ति वा कारोबार बनैत अछि।

जाँचक दिशा तदनुसार परिवर्तित होइत अछि। स्क्रीनक संकेतक संग हवाला, निविदा, बेनामी कारोबार, अचानक भवन-निर्माण आ अन्य आर्थिक गतिविधिक अन्वेषण शुरू होइत अछि। अरुणेश मिश्र सुनयनाक नव तकनीकी दृष्टि आ अभयकान्तक पुरान आर्थिक अनुभवकेँ एक-दोसरक पूरक मानैत छथि।

एहि काममे धीरकेतु झाकेँ फेर बजाओल जाइत अछि।

अध्याय ६ : दूरीक द्वन्द्व

समग्र कथासार

2 / 2

ओ पुरान अपराध-जगतक सम्पर्क, चेहरा आ कारी पाइक आवागमनक बाट चिन्हैत छथि, भले नव डिजिटल व्यवस्था नहि बुझैत होथि। ‘नव पानि’ आ ‘पुरान माटि’क ई संयुक्त पद्धति पनिकौआक आर्थिक आधार धरि पहुँचबाक तैयारी थिक।

अध्याय ७ : बूढ़ गोहिक छाया

समग्र कथासार

जिलाक अनेक स्थानपर अचानक धनक गतिविधि देखाइत अछि—बन्द चीनी-मिलक खातामे लेन-देन, बिना स्पष्ट दानदाताक धर्मशालाक जीर्णोद्धार आ अनचिन्ह खरीददार द्वारा गामक पोखरिक ठेका उठाएब। अलग-अलग ई घटना सामान्य बुझाइत अछि, मुदा अभयकान्त झा पुरान खटाँस-प्रकरणक कागच मँगबैत छथि आ दुनू कालक लेन-देनक शैली मिलबैत छथि।

ओ पबैत छथि जे बेनामी कारोबारक श्रृंखला, कागचक क्रम आ धन उतारबाक तरीका पुरान जालसँ मिलैत अछि। धीरकेतु एहि विशिष्ट छापकेँ चिन्हि ‘बिरजू साह’क नाम दैत छथि। स्पष्ट होइत अछि जे पनिकौआ ऑनलाइन ठगी करैत अछि आ बिरजू ओकर आमदनीकेँ जमीनपर उतारबाक बाट उपलब्ध करबैत छथि।

अरुणेश बिना पर्याप्त प्रमाण बिरजूकेँ गिरफ्तार करब उचित

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७ : बूढ़ गोहिक छाया

नहि मानैत छथि, कारण एहन जल्दबाजीसँ पनिकौआ सावधान भऽ सकैत अछि। कार्यदल बिरजूक गतिविधि दूरसँ देखबाक निर्णय करैत अछि। अपराधक पुरान स्मृति एहि ठाम दोहरा भूमिका निभबैत अछि—अपराधक निरन्तरता सेहो बनबैत अछि आ ओकर पहचानक साधन सेहो।

अध्याय ८ : जे नाम मेटौलक, से देखाइ चाहैत छल

समग्र कथासार

अपन असली नाम आ चेहरा नुका लेने पनिकौआक भीतर ‘देखल जाएब’क पुरान भूख बढ़ैत अछि। ओकरा मोन पड़ैत अछि जे मोबाइल-दोकानक मालिक ओकरा मजदूरक बेटा कहि अपमानित केने छल। अपरिमित धनक बादो ओ अपन उपलब्धि ओहि व्यक्तिक सोझाँ अपन नामसँ प्रदर्शित नहि कऽ सकैत अछि।

ओ बिरजू साहक माध्यमसँ अपन पुरान इलाकामे धन पठाबैत अछि। ओकर माएक कच्चा घर पक्का बनैत अछि, गामक बाट ढलाइ होइत अछि आ ओहि अपमान करनिहार दोकानदारक बेटाकेँ रहस्यमय रकम भेटैत अछि। पनिकौआ सोचैत अछि जे असली परिचय छिपाएल रहितो लोक ओकर उपस्थितिकेँ महसूस करत; मुदा एही निजी लगावक कारण ओकर अदृश्यता कमजोर होइत अछि।

धीरकेतु एहि कस्बामे अस्वाभाविक धन-प्रवाह देखैत छथि। सुनयना

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८ : जे नाम मेटौलक, से देखाइ चाहैत छल

समग्र कथासार

2 / 2

पुरान जनगणना, विद्यालय आ दोकानक अभिलेख जाँचैत छथि आ बरख पहिने गाम छोड़निहार मजदूरक बालकक नाम पबैत छथि। एखन ई पहचान सम्भावना मात्र अछि; अभयकान्त ठोस प्रमाण भेटे बिना गिरफ्तारीसँ रोकैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९ : अनुमान आ प्रमाण

समग्र कथासार

1 / 2

सुनयनाकेँ एकटा सम्भावित नाम, चेहरा आ गाम भेटि चुकल अछि। ओ तुरन्त गिरफ्तारी चाहैत छथि, मुदा अरुणेश मिश्र स्पष्ट करैत छथि जे शंका जाँचक दिशा देखबैत अछि, न्यायालयक समक्ष स्वतः प्रमाण नहि बनैत अछि। ओकरा लेल घटना, व्यक्ति आ अपराधक बीच स्वतंत्र रूपसँ जाँचल जा सकऽवला सम्बन्ध चाही। कार्यदल प्रतीक्षाक संग सबूत संचित करबाक नीति अपनबैत अछि।

एहि बीच पनिकौआक महत्वाकांक्षा बदलैत अछि। केवल धन आ अदृश्य नियंत्रणसँ ओकर सन्तोष नहि होइत; ओ दोसराक नामे वैध दोकान, समाजसेवाक काज आ नेता-ठेकेदारक संरक्षणक माध्यमसँ सार्वजनिक प्रतिष्ठा दिस बढ़ैत अछि। ओ खटाँसक ओही दृश्य सत्ता दिस आकर्षित होइत अछि, जकरा सँ बचबाक उद्देश्यसँ अपन

अध्याय ९ : अनुमान आ प्रमाण

समग्र कथासार

2 / 2

नाम मेटौने छल।

अभयकान्त एहि रूपान्तरणकेँ ओकर सबल सुरक्षा छोड़बाक संकेत बुझैत छथि। अध्याय तकनीकी जाँचक संग अपराधीक मनोवैज्ञानिक असुरक्षा आ प्रमाणक विधिसम्मत आवश्यकताकेँ समान महत्व दैत अछि।

अध्याय १० : दरार

समग्र कथासार

1 / 2

बिरजू साह पनिकौआक प्रसिद्धि आ प्रभुत्वक आकांक्षासँ डरैत छथि। बिरजू लेल अदृश्य रहब जीवनरक्षाक शर्त अछि, जखन कि पनिकौआ संसारक ध्यान चाहैत अछि। एहि द्वन्द्वसँ दुनू पीढ़ीक अपराधी बीच दरार बनैत अछि। फोनपर बिरजू सावधान रहबाक आग्रह करैत छथि, मुदा पनिकौआ हुनकर सावधानीकेँ बुढ़ापाक भय कहि अस्वीकार करैत अछि।

अभयकान्त बुझैत छथि जे एहन जाल बाहरी बलसँ नहि, भीतरक स्वार्थ आ भयक टकरावसँ टूटि सकैत अछि। ओ बिरजूकेँ तुरन्त पकड़बाक बदला छोट छापा, कानाफूसी आ पुरान परिचितक गिरफ्तारीक समाचारक माध्यमसँ हुनका बेचैन होएबाक परिस्थिति बनबैत छथि। बिरजू पुरान कागच समाप्त करैत, धन सुरक्षित करैत आ पनिकौआसँ दूरी बनबैत छथि।

धीरकेतु एहि

अध्याय १० : दरार

समग्र कथासार

2 / 2

गतिविधिक निशान देखैत छथि, मुदा अभयकान्त जानबूझि बिरजूकेँ जएबाक अवसर दैत छथि। बिरजूक पलायनसँ पनिकौआ धनकेँ वास्तविक दुनियामे उतारबाक भरोसेमन्द बाट गुमाबि देत आ अधिक गलती करत। गोप कुमार स्मरण करबैत छथि जे बिरजू सन बचि गेल अपराध-सहयोगी भविष्यक लेल जोखिम रहि सकैत अछि।

अध्याय ११ : किनार

समग्र कथासार

1 / 2

बिरजू साह गायब भेला पर पनिकौआ अकेला पड़ि जाइत अछि। ओकरा लग डिजिटल संसारमे करोड़क संख्या अछि, मुदा ओकरा वास्तविक धनमे बदलनिहार पुरान व्यवस्था बन्द भऽ चुकल अछि। जँ ओ नव सहयोगी खोजैत अछि, तँ जोखिम बढ़ैत अछि; जँ पुरान सम्पत्तिकेँ छूबैत अछि, तँ कार्यदलक निगरानीक सम्भावना अछि। ओ बुझैत अछि जे स्क्रीनक भीतरक सम्पत्ति ओकरा जीवनसँ जोड़ऽ लेल माटिपर उतरब अनिवार्य अछि।

अभयकान्त अनुमान करैत छथि जे घेरल पनिकौआ भागबाक प्रयास करत। सभ मार्ग बन्द करबामे ओ भीतर लुकि रहि सकैत अछि; तेँ कार्यदल एकटा बाट जानबूझि खुजल छोड़ैत अछि। ई बाट कमला-बलानक पार दिस जाइत अछि। पनिकौआ ओकरा अपन चतुराईसँ ताकल मार्ग मानि ओही दिशामे बढ़ैत

अध्याय ११ : किनार

समग्र कथासार

2 / 2

अछि।

अध्याय अपराधीक अदृश्यतासँ दृश्यताक यात्रा केन्द्रीय बनबैत अछि। सार्वजनिक अभिलेखक कथनानुसार ओकर पानिसँ किनार दिस बढ़ब ‘जलसमाधि’क भूमिका तैयार करैत अछि, मुदा एहि कथनक विश्वसनीयता अन्तिम गुप्त अध्यायमे फेर जाँचल जाइत अछि।

अध्याय १२ : जलसमाधि

समग्र कथासार

1 / 2

सार्वजनिक अभिलेखक वर्णनमे बरखाक अन्तिम दिन कमला-बलान भरल अछि। पनिकौआ छोट डोंगीमे अपन यन्त्र, कागच आ डिजिटल धनसँ जुड़ल सामग्रीक झोरा लऽ पार होएबाक प्रयास करैत अछि। दोसर किनारपर अभयकान्त झा ओकरा जीवित पकड़बाक प्रतीक्षामे छथि, जाहिसँ अपराधक सम्पूर्ण जाल बुझल जा सकय। मुदा कथित रूपेँ बीच धारमे डोंगी डगमगाइत अछि; पानिक आवाज आ एक मनुष्यक स्वर सुनाइत अछि, फेर सभ शान्त भऽ जाइत अछि।

पाछाँ टूटल डोंगी, भीजल झोरा आ चप्पल भेटैत अछि, मुदा व्यापक खोजक बादो कोनो शव नहि भेटैत अछि। एहि आधारपर अभिलेख पनिकौआक ‘जलसमाधि’क कथा प्रस्तुत करैत अछि। सुनयना पुरान अभिलेखसँ ओकर असली नाम ‘छोटन’ उद्घाटित करैत छथि—ओ मजदूरक बेटा, जे

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२ : जलसमाधि

समग्र कथासार

2 / 2

तेरह बरखमे घर छोड़ने छल आ मोबाइल-मरम्मतिक विशेष प्रतिभा रखैत छल।

एहि स्तरपर कथा कहैत अछि जे लोकक नजरिमे महान बनऽ चाहनिहार व्यक्ति मृत्युतेँ सेहो अदृश्य रहि गेल। तथापि शव नहि भेटब स्वयं मृत्यु-प्रमाण नहि; बादक अतिरिक्त ‘अध्याय ० : जालक भीतर जाल’ एहि सार्वजनिक निष्कर्षकेँ उलटि दैत अछि। अतः ‘जलसमाधि’ एहि अध्यायमे अभिलेखक कथित निष्कर्ष अछि, अन्तिम प्रमाणित घटना नहि।

SECTION / खण्ड

उपसंहार

11 कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

उपसंहार

नन्द आरुणि सार्वजनिक ‘बादक पानि’ फाइल बन्द करैत छथि आ खटाँस तथा छोटनक कथित समान अन्तपर विचार करैत छथि। गोप कुमार ध्यान दियबैत छथि जे व्यक्ति समाप्त भेलोपर ठगीक ढंग, छोट सहयोगी, धन साफ करबाक पुरान बाट आ अपराधक संरक्षण-संरचना बनी रहि सकैत अछि। बिरजू साहक बचि जएबाक प्रसंग एहि चेतावनीकेँ बल दैत अछि।

गोप कुमारक अनुसार जाँचक असली उपलब्धि केवल एकटा अपराधीक नाम नहि, ओकर पद्धतिक निशान चिन्हब अछि। खटाँसक बन्दूक आ छोटनक संख्या बाहरी रूपमे भिन्न अछि, मुदा दुनूक आधार आर्थिक लाभ, भय, संरक्षण आ सार्वजनिक प्रभुत्वक भूखसँ जुड़ल अछि। नन्द ‘बादक पानि’ फाइलपर लिखैत छथि जे नाम बदलैत रहत, निशान मोन राखब आवश्यक अछि।

ई

उपसंहार

उपसंहार प्रकट इतिहासक आधारपर शिक्षापरक समापन दैत अछि। मुदा मूल पाण्डुलिपि एतहि नहि रुकैत; एकटा गुप्त रेकर्डवला अतिरिक्त अध्याय ई समझ बनबैत अछि जे सार्वजनिक स्मृति आ वास्तविक घटनाक पूर्ण ज्ञान अलग-अलग भऽ सकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ० : जालक भीतर जाल

उपसंहार

‘समाप्त’ पढ़लाक बाद गोप कुमार नन्द आरुणिकेँ रोकैत छथि आ पेटारक गुप्त खाँचासँ करिया मोटरी निकालैत छथि। ओ स्पष्ट करैत छथि जे सार्वजनिक ‘जलसमाधि’ पूरा सत्य नहि छल। कथित नदी-दुर्घटनाक एगारहम दिन सुनयना भीजल झोरापर प्रश्न उठौने छलीह— एतेक सावधान अपराधी भागैत काल अपन सभ गुप्त सामग्री एक्के झोरामे किएक रखत? ओ स्पष्ट करैत छथि जे शव नहि भेटल, मुदा एकरासँ मृत्यु प्रमाणित नहि होइत अछि। अरुणेशक ‘अनुमानकेँ प्रमाण नहि बुझू’ नियम फेर निर्णायक बनैत अछि।

कार्यदल मृत्यु-संबन्धी सार्वजनिक समाचार तत्काल नहि बदलैत अछि, ताकि छोटन जीवित रहलासँ अपन सुरक्षा-कवच बुझि असावधान हो। न्यायिक अनुमति लऽ पुरान अपराध-जालक नियंत्रित

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ० : जालक भीतर जाल

उपसंहार

‘छाह-जाल’ तैयार होइत अछि, जाहिमे वास्तविक पीड़ित वा वास्तविक धन नहि अछि। सुनयना नाम वा यन्त्र नहि, छोटनक संकेत जाँचबाक क्रम, ठहरबाक समय, घुरि अएबाक लय आ व्यवहारक पुनरावृत्ति खोजैत छथि। किछु सप्ताह बाद अलग-अलग नामसँ आबि रहल छोट संकेतमे वएह आदति देखाइत अछि। कार्यदल छाह-जालक भीतर जाल बनाकऽ ओकर सम्पर्कक श्रृंखला चिह्नैत अछि।

सम्पर्कक सभ कड़ी सीमाक लग एकटा साधारण मोबाइल-मरम्मतिक गुमटी धरि जाइत अछि। ओतय दोसर नामसँ रहैत एक दुबर व्यक्ति टूटल फोन आ रेडियो ठीक करैत अछि—ओहि बचपनक बालक जकाँ। कार्यदल हड़बड़ी नहि करैत; गतिविधि, मानवीय कड़ी, पुरान जालक रेकर्ड आ स्वतंत्र प्रमाण एक-दोसरकेँ पुष्ट कएलाक बाद भोरमे सुनयना

अध्याय ० : जालक भीतर जाल

उपसंहार

3 / 3

आ अभयकान्त ओकरा जीवित पकड़ैत छथि। अपन वास्तविक नाम ‘छोटन’ सुनिते ओकर बनौटी पहचानक पर्दा टूटैत अछि।

गुप्त रेकर्ड स्पष्ट कहैत अछि जे कमला-बलानक ‘जलसमाधि’ छोटनक गढ़ल भ्रामक दृश्य छल; अन्तिम अध्याय नदी, झोरा, डोंगी आ दुर्घटनाक प्रतीकसभकेँ साइबर-पर्दाक रूपमे सेहो पुनर्व्याख्यायित करैत अछि। छोटन पानि मे मरल नहि; ओ कूटनाम त्यागि बचि निकलने छल। शेष जालक जाँच लेल गिरफ्तारीक समाचार तुरन्त सार्वजनिक नहि कएल गेल। अन्तिम अभिलेखमे ओकर स्थिति ‘जीवित, न्यायिक हिरासत’ लिखल अछि। वास्तविक विजय एक नामक मृत्यु नहि, व्यवहारक निशान आ विधिसम्मत प्रमाणक आधारपर अपराधीकेँ जीवित पकड़ब अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

अन्तक सम्बन्ध : सार्वजनिक अभिलेख आ गुप्त रेकर्ड

11 कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

अन्तक सम्बन्ध : सार्वजनिक अभिलेख आ गुप्त रेकर्ड

अध्याय १२ आ उपसंहारमे छोटनक जलसमाधि सार्वजनिक अभिलेखक कथन अछि। ताहि समय उपलब्ध सामग्रीमे देह नहि भेटब तथ्य अछि, मुदा मृत्यु प्रमाणित नहि। अतिरिक्त अन्तिम अध्याय गुप्त जाँचक आधारपर छोटनक जीवित गिरफ्तारी उद्घाटित करैत अछि। तेँ एहि पोथीक अन्तिम, संशोधित कथात्मक तथ्य ‘छोटन जीवित, न्यायिक हिरासतमे’ थिक। दुनू वृत्तान्तकेँ समान रूपसँ अन्तिम सत्य मानि एकठाम मिला देनाइ मूल कथाक निर्णायक मोड़केँ मेटा देत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

WORK / कृति

12 पाँच प्रतिशत अन्हार

छह भाग · १२० अध्याय · एक उपसंहार | अध्यायवार सारांश

SECTION / खण्ड

सारांशक विषयमे

12 पाँच प्रतिशत अन्हार

सारांशक विषयमे

एहि दस्तावेजमे ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’क मूल कथाक आधारपर प्रत्येक अध्यायक अलग सारांश प्रस्तुत अछि। अध्यायसभक क्रम आ शीर्षक मूल पुस्तकक अनुरूप राखल गेल अछि। तेसर भागक अन्तमे देल गेल ‘उपसंहार : अगिला नाम’क सारांश सेहो उचित स्थानपर समाविष्ट अछि। एहि सारांशक उद्देश्य घटनाक्रम, पात्रक भूमिका आ कथाक मुख्य प्रश्न बुझाएब अछि; मूल उपन्यासक स्थान लेब नहि।

SECTION / खण्ड

पाँच सयक साम्राज्य

अध्याय १–२०

१. पाँच सयक राति

पाँच सयक साम्राज्य

दरभंगाक रेलवे पुलक नीचाँ रानी देवीक छोट दोकान आ हुनकर बेटा अमरेशक ऑनलाइन जुआसँ कथा आरम्भ होइत अछि। पाँच सय रुपैयाक दाँव खेलैत-खेलैत अमरेश भारी घाटामे फँसि गेल अछि। दोसर दिस रानीक बैंक खातामे अज्ञात रकम अबैत आ तुरन्त निकसि जाइत अछि। दिल्लीमे वित्तीय अन्वेषणसँ जुड़ल नीलिमा झा एहि लेनदेनक जाँच शुरू करैत छथि। हुनका ‘पाँच प्रतिशत’क धमकीपूर्ण सन्देश आ मृत मानल गेल पूर्व अधिकारी विवेक सूदक मकाउमे खिचायल संदिग्ध छवि भेटैत अछि। साधारण पारिवारिक संकट अन्तरराष्ट्रीय अपराधक संकेत बनि उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

२. भारत लेल खुलल, सभ लेल बन्द

पाँच सयक साम्राज्य

साइबर-अपराध निरीक्षक अरुणिमा राव आ नीलिमा झा ‘अम्बर-९’ नामक जुआ-पृष्ठक भुगतान-पथ देखैत छथि। भारतीय ग्राहककेँ लक्ष्य कएनिहार एहि व्यवस्थामे अनेक सामान्य नागरिकक नामपर खोलल खाताक उपयोग भऽ रहल अछि। दू हजार करोड़क कथित कारोबारक आँकड़ाकेँ ओ प्रमाणित तथ्य नहि मानैत छथि। पटनाक सेवानिवृत्त शिक्षककेँ ‘डिजिटल गिरफ्तारी’क भय देखा कऽ ठकल रकम सेहो ओही खाताक रास्ता गेल अछि। जुआ आ ठगी अलग अपराध होइतहुँ हुनकर भुगतान-पथ किएक मिलैत अछि, से जाँचक मुख्य प्रश्न बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

३. मृत लोकक हाजिरी

पाँच सयक साम्राज्य

विवेक सूदक कथित दुर्घटनामे मृतदेहक हथेलीपर हुनकर चिन्हित पुरान जलनक निशान नहि भेटलासँ मृत्यु-पहिचानपर शंका उठैत अछि। विवेकक लिखावटवाली कापीमे पाँच प्रतिशतकेँ ‘चुप्पीक दाम’ कहल गेल अछि, मुदा कापीक एकटा पृष्ठ फाटल अछि। सामान पठेनिहारक रूपमे रानी देवीक नामक दुरुपयोग भेल प्रतीत होइत अछि। धमकीक बीच अमरेश दू अपरिचित लोकक भय देखिकऽ घर लौटैत अछि। पुलिस आ नीलिमा रानी-अमरेशक सुरक्षा तथा बालकक स्वैच्छिक बयानकेँ प्रधानता दैत छथि; अपराधक संग पीड़ितक लाज आ भय सेहो उघड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

४. खाताक दोसर मालिक

पाँच सयक साम्राज्य

रानी देवी बैंक जा कऽ अपन नामपर चलैत असामान्य लेनदेनक विवरण माँगैत छथि। अनुपालन अधिकारी सुजाता ठाकुर हुनकर बयान धैर्यसँ सुनैत छथि आ खाताधारी तथा खाता संचालित करनिहारक बीच भेद करैत छथि। पाँच हजार रुपैआ दऽ मनीष नामक मध्यस्थ रानीसँ हस्ताक्षर करौने छल। रानीक पुरान कापीमे सुपौल, मधुबनी आ समस्तीपुरसँ जुड़ल संकेत भेटैत अछि। तीन जिलाक शिकायत एकहि मध्यस्थ संस्थासँ जुड़ल देखाइत अछि। अध्याय वित्तीय अधिकार, अधूरी सहमति आ लिखित साक्ष्यक महत्त्व रेखाङ्कित करैत अछि।

५. झूठक अदालत

पाँच सयक साम्राज्य

पटनाक सेवानिवृत्त शिक्षक शिवशंकर मिश्र ‘डिजिटल गिरफ्तारी’क झूठ भयमे बेटी माधवीक विवाह लेल बचाओल एक लाख तिरासी हजार रुपैआ गमा देने छथि। अरुणिमा आ नीलिमा हुनका स्पष्ट करैत छथि जे ओ अपराधी नहि, ठगीक शिकायतकर्ता छथि। पत्रकार रेवती कर्ण ‘सुरक्षित भारत अभियान’ आ व्यवसायी विराज सहनीक प्रायोजनक सम्बन्धमे प्रश्न उठबैत छथि। माल्टाक संस्थाक उल्लेख अनुसन्धानकेँ अन्तरराष्ट्रीय दिशा दैत अछि। परिवारक दुख, पत्रकारिताक जिम्मेदारी आ बिना पुष्टि आरोप नहि लगएबाक अनुशासन एहि अध्यायक केन्द्रमे अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

६. धनक पहिल नक्शा

पाँच सयक साम्राज्य

नीलिमा, अरुणिमा आ हुनकर सहयोगी देशभरि पसरल संदिग्ध खाताक पहिल वित्तीय नक्शा तैयार करैत छथि। एकहि रकमक जमा, दाँव आ निकासीकेँ अलग-अलग नवा आमदनी मानि जोड़लासँ गलत आँकड़ा बनि सकैत अछि, से स्पष्ट कएल जाइत अछि। खाताधारीक बयान, वास्तविक सञ्चालन आ लेनदेनक समयमे अन्तर राखल जाइत अछि। अपराधक नक्शामे प्रश्नचिह्नकेँ अनुमानित दोषीसँ बेसी महत्त्व भेटैत अछि। दरभंगाक रानी-अमरेशक डरक समानान्तर जाँचक संकल्प उभरैत अछि—पहिने प्रभावित लोककेँ चिन्हू, तकर बाद वास्तविक मालिक खोजू।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

७. अपरिचित हस्ताक्षर

पाँच सयक साम्राज्य

सूरतमे निर्यातक हिसाब जाँचनिहार अदिति राणेकेँ कपड़ा-कारोबारसँ जुड़ल ‘परामर्श आ बाजार-विस्तार सेवा’क संदिग्ध बिल भेटैत अछि। मालक आवागमन, सेवाक प्रमाण, जारी कएनिहार मुहर आ हस्ताक्षरक समयमे मेल नहि देखाइत अछि। अदिति गोपनीय कागज बिना अधिकृत अनुरोध साझा नहि करैत छथि आ मूल अभिलेखक पुष्टि करबाक आग्रह करैत छथि। एकटा आयोजन-पत्रमे एहन मृत व्यक्तिक नामसँ हस्ताक्षर देखाइत अछि, जिनकर निधन आयोजनसँ तीन बरख पहिने भऽ चुकल छल। झूठ वित्तीय दस्तावेजक आशंका गहिर होइत अछि।

८. अमरेशक हिसाब

पाँच सयक साम्राज्य

अमरेश अपन मोबाइल-जुआक हार-जीत, उधार आ धमकीक अलग-अलग हिसाब लिखय लगैत अछि। रानी ओकरा दोष देबाक बदला सच बजबाक आ सुरक्षित रहबाक साहस दैत छथि। ओकर अनुभवकेँ लिखित रूप देबाक क्रममे पीड़ितक सहमति आ बालकक गोपनीयताक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि। नीलिमा एहि कापीकेँ सुरक्षित रखबाक सलाह दैत छथि, मुदा ओकर प्रत्येक पाँति अपने-आप अदालती प्रमाण नहि बनत, से चेतबैत छथि। पुरान खेलक रकम समेटने नव प्रचार-सन्देश आबिते अमरेशकेँ बुझाइत अछि जे जुआ चलौनिहार लोक ओकर व्यवहारक निगरानी कऽ रहल हो सकैत अछि।

९. आधारक दुरुपयोग

पाँच सयक साम्राज्य

बैंक खाताक पहिचान-पत्र आ आधारक प्रतिलिपिक दुरुपयोगक शिकायतक जाँच लेल अरुणिमा पटना पहुँचैत छथि। वृद्धा नन्हकीक औंठाक निशान आ दस्तावेजक लिखल विवरणमे अन्तरसँ स्पष्ट होइत अछि जे हस्ताक्षर वा अँगूठाक निशान अपने-आप पूर्ण जानकारीक आधारपर देल सहमति नहि होइत अछि। शाखा प्रबन्धक जयन्त सिन्हा अभिलेख सुरक्षित रखैत छथि। कर्मचारी संजना पुरान पुनर्जाँच रोकबाक पत्र आ बदलीक समयसँ जुड़ल सूचना देबाक साहस करैत छथि। अध्याय वित्तीय सेवामे कमजोर ग्राहकक अधिकार आ सत्यनिष्ठ कर्मचारीक भूमिकाकेँ उजागर करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१०. पाँच प्रतिशतक पहिल पत्र

पाँच सयक साम्राज्य

पत्रकार रेवती कर्ण दरभंगाक रानी, पटनाक जन-अभियान आ सूरतक निर्यात-लेखाक अलग-अलग सूत्र जोड़बाक प्रयास करैत छथि। सम्पादकीय दबावक बादो ओ अप्रमाणित आरोप प्रकाशित नहि करबाक निश्चय राखैत छथि। ‘पाँच प्रतिशत’सँ सम्बन्धित एकटा पत्र आ सार्वजनिक सभाक खर्चक सन्दर्भ हुनका प्रायोजन तथा अपराधक कथित शुल्कक सम्बन्ध पूछबाक दिशामे लऽ जाइत अछि। मेघना सेनक प्रश्नसँ अन्तरराष्ट्रीय भुगतानक कड़ी उभरैत अछि। अज्ञात स्रोत सच खोलि सकैत अछि, मुदा ओकर माध्यमेँ दिशाभ्रम सेहो भऽ सकैत अछि—एहि सावधानीपर जोर अछि।

११. हांगकांगक खिड़की

पाँच सयक साम्राज्य

हांगकांगमे वित्तीय अभिलेख जाँचनिहार मेघना सेन आ हुनकर सहयोगी तारा लामा भारतीय कारोबारसँ जुड़ल प्रचार-व्यय तथा भुगतानक कागज जाँचैत छथि। वास्तविक सेवा, अनुबन्ध आ कम्पनीक भूमिकामे असंगति देखाइत अछि। ‘ग्राहक-केन्द्र’, भुगतान-साझीदार, खेल-सामग्री प्रदाता आ प्रचारककेँ अलग-अलग चिन्हब आवश्यक बनैत अछि। तारा ‘गलत दिनांक’ भेटबाक सन्देश पठा कऽ सम्पर्कसँ बाहर भऽ जाइत छथि। मेघना बिना प्रमाण गुमशुदगीक निष्कर्ष नहि निकालैत छथि, मुदा औपचारिक खोजक तैयारी करैत छथि। विवेक सूदक मृत्यु सम्बन्धी अनिश्चितता सेहो बनल रहैत अछि।

१२. अन्तिम चाहक गिलास

पाँच सयक साम्राज्य

तारा लामा कार्यालयसँ अनुपस्थित छथि, मुदा हुनकर नामपर निजी अवकाशक सूचना प्रबन्धकीय खातासँ पठाओल गेल अछि। मेघना सेन ताराक अन्तिम उपस्थिति, अधूरा चाहक गिलास, कार्यालयक समय आ सहकर्मीसभक कथनक क्रम जाँचैत छथि। साधारण वस्तुकेँ तुरन्त अपराध-साक्ष्य मानबाक बदला ओकर संरक्षण आ अधिकृत परीक्षणपर ध्यान दैत छथि। एकटा सम्मेलनक निमन्त्रणमे प्रश्न पहिने नहि पठेबाक शर्त तथा ताराक नामक अनपेक्षित उल्लेख संदेह बढ़बैत अछि। तारा कतय छथि आ हुनकर गुमशुदगीक आयोजनसँ कोनो सम्बन्ध अछि कि नहि, से अनुत्तरित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१३. कागजक दोसर भाषा

पाँच सयक साम्राज्य

माल्टासँ जुड़ल कम्पनीक ‘यूरोपीय स्वीकृति’ देखबैत प्रचार-पत्र आ पटनाक अभियानक व्यय-विवरणमे मिलैत नाम जाँचल जाइत अछि। नीलिमा झा आ अरुणिमा राव स्पष्ट करैत छथि जे विज्ञापनक दावा, वास्तविक विधिक अनुज्ञा आ ओकर क्षेत्राधिकार एक नहि अछि। विभिन्न भाषाक अनुबन्ध, तारीख आ सेवा-विवरण पढ़ि अर्थक अन्तर देखबाक आवश्यकता पड़ैत अछि। एकटा संस्थागत पत्र जाँचक प्रश्नकेँ अनावश्यक कहि दबाब देबाक प्रयास करैत अछि। पाँच प्रतिशतक लग देखल सन्दर्भ-संख्यासँ नवा संदेह उठैत अछि, मुदा मूल दस्तावेजक मिलान बाकी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१४. समर्थनक मूल्य

पाँच सयक साम्राज्य

पटनाक ‘युवा जागरण’ सभामे नशा-विरोध आ साइबर-सुरक्षाक वास्तविक कार्यक्रमक संग प्रायोजनक अपारदर्शिता भेटैत अछि। रेवती कर्ण आ आयोजनसँ जुड़ल प्राची झा खर्च, समर्थक-सूची आ सार्वजनिक प्रतिवेदनक प्रश्न उठबैत छथि। सहयोग देनिहारक नाम, आर्थिक योगदान आ वैचारिक समर्थनकेँ एकहि अर्थमे नहि लेबाक आग्रह उभरैत अछि। सूचीमे एहन व्यक्तिक नाम देखल जाइत अछि जिनका प्राची दू बरख पहिने मृत मानैत छथि। मृत्यु-पहिचान आ दस्तावेजक तिथि जाँचे बिना निष्कर्ष नहि निकालल जाइत, मुदा समर्थनक खरीदार कियो अछि कि नहि, ई प्रश्न तीक्ष्ण बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१५. चुप्पीक वेतन

पाँच सयक साम्राज्य

विवेक सूदक पुरान कार्यालय आ हुनकासँ परिचित लोकसभक माध्यमेँ चुप्पी, वेतन आ अपूर्ण अभिलेखक सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि। नीलिमा आ अरुणिमा पुरान पत्रक स्रोत, बादमे जोड़ल पाँति आ कागजक अलग-अलग प्रतिक मिलान करैत छथि। एकहि दस्तावेजक उपलब्ध प्रतिमे लिखावट आ पृष्ठक काट-छाँट भिन्न भेटैत अछि। एहन अन्तरकेँ निश्चित षड्यन्त्र कहबाक बदला मूल प्रति, प्राप्तिक इतिहास आ साक्ष्यक सुरक्षित शृङ्खला जाँचल जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे प्रश्न उठैत अछि—विवेकक कागजक पृष्ठ के काटलक, आ ओकरा किएक बदलल गेल?

१६. सफेद लिफाफा

पाँच सयक साम्राज्य

मुम्बईक वित्तीय परामर्शदाता आरव मलकानीकेँ कम्पनीक अभिलेखसँ जुड़ल एकटा सफेद लिफाफा भेटैत अछि। ओहिमे छह फाइलक उल्लेख आ पाँच प्रतिशतसँ सम्बन्धित निर्देश देखाइत अछि; कतिपय कागज नष्ट करबाक आग्रह साक्ष्य मेटेबाक आशंका उत्पन्न करैत अछि। सहयोगी तरुणीक प्रश्न आरवकेँ सेवाक वास्तविकता आ लेखाक औचित्य जाँचबाक लेल बाध्य करैत अछि। ओ लिफाफा अधिकृत सुरक्षित स्थानमे दर्ज करबैत छथि आ प्राप्तिक अभिलेख बचबैत छथि। 'अन्तिम हिसाब' शीर्षकवाली फाइल विवेक सूदक पुरान कागजसँ सम्भावित सम्बन्धक नवा सूत्र बनैत अछि।

१७. वर्दीक नकली चेहरा

पाँच सयक साम्राज्य

‘डिजिटल गिरफ्तारी’क ठगीसँ पीड़ित शिवशंकर मिश्रक मानसिक पीड़ा आ परिवारक सहयोगक चित्रण अछि। नकली वर्दी, झूठ न्यायालय आ वीडियोपर नियंत्रणक भय ओहि शिक्षककेँ अपन घरमे कैदी बना देने छल। बेटी माधवी हुनका अपन लोकसँ पहिने बात करबाक साहस दैत छथि। अरुणिमा राव विभिन्न ठगीक शिकायतसभमे प्रयुक्त शब्द आ कागजक समानता देखैत छथि, मुदा एके गिरोहक प्रमाण बिना दावा नहि करैत छथि। अध्याय सार्वजनिक सावधानी, पीड़ितक गोपनीयता आ भयक विरुद्ध पारिवारिक विश्वासक महत्त्व स्पष्ट करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१८. विज्ञापनक पाछाँ

पाँच सयक साम्राज्य

पत्रकार कबीर अनेक प्रचार-पत्र आ दृश्य-सामग्रीक बीच ऑनलाइन जुआक विज्ञापन तथा सामाजिक अभियानक सम्भावित सम्बन्ध खोजैत अछि। प्रणयक बनाओल आधा उज्जर-आधा कारी मुखौटाक चित्र सत्य आ आरोपक बीचक रिक्त स्थानक प्रतीक बनैत अछि। सम्पादक सुदीप भटनागर विज्ञापनदाताक आपत्ति, संस्थाक आर्थिक हित आ प्रकाशित सामग्रीक स्रोतक प्रश्न उठबैत छथि। कबीर संदिग्ध निजी चित्रक अनुचित प्रसार रोकबाक निर्णय लैत अछि। अनुसन्धान करैतहुँ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, सहमति आ साक्ष्यपर आधारित पत्रकारिताक सीमा बनौने राखब अध्यायक मूल आशय अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१९. विलासी विमानयात्राक चुप्पी

पाँच सयक साम्राज्य

नीलिमा झा अधिकृत प्रक्रिया आ स्थानीय सहयोगक अन्तर्गत हांगकांग-मकाउ यात्रापर निकलैत छथि। मेघनाक लेखापरीक्षा, विवेक सूदक विवादित छवि आ मकाउक सम्मेलनक अतिथि-सूची हुनका ओतय लऽ जाइत अछि। यात्राक दौरान अचानक देल जाएवला विशेष सुविधा आ अनौपचारिक सम्पर्कसँ ओ सतर्क रहैत छथि। मकाउक कर्मचारी समीर बोस गवाही देबाक लेल शर्तसहित सहमति दैत छथि। नीलिमा हुनकासँ देखल तथ्य आ सुनल अनुमानकेँ पृथक् रखबाक आग्रह करैत छथि। अगिला अध्यायक प्रत्यक्ष गवाही लेल ई भूमिका तैयार होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

२०. शीशाक भीतर चेहरा

पाँच सयक साम्राज्य

मकाउक चमकैत होटलक भीतर सेवा-कर्मचारी समीर बोसक श्रम, असुरक्षा आ अनुभव उजागर होइत अछि। अतिथि-सूची आ सम्मेलनक व्यवस्थासँ जुड़ल ओकर जानकारी विवेकक संदिग्ध उपस्थितिक प्रश्नमे उपयोगी बनि सकैत अछि। नौकरीक दबावमे आन-लिन जकाँ कर्मचारीसभ खुलेआम बात करबाक स्थितिमे नहि छथि। समीर अपन इच्छासँ गवाही देबाक अधिकार बुझैत छथि, मुदा सूचीमे हुनकर नामक आगाँ अनजान निशान चिन्ता बढ़बैत अछि। मिरा नामक स्त्री सुरक्षित रूपसँ बाहर निकलि सकतिह कि नहि, ई नवा मानवीय प्रश्न कथाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

SECTION / खण्ड

सात समुद्रक धन

अध्याय २१–४०

२१. मकाउक नाचघर

सात समुद्रक धन

मकाउक होटलमे नीलिमा स्थानीय सहयोग-अधिकारी जोआनाक उपस्थितिमे समीर बोससँ विधिसम्मत रूपसँ भेटैत छथि। समीर सम्मेलनक काम, अतिथि-सूची आ विवेक सूदक सम्भावित उपस्थितिसँ सम्बन्धित अपन देखल बात कहैत छथि। सूचीपर लगाओल चिह्नक लेखक आ फोटो खींचनिहारक पहिचान अलग प्रश्न बनल रहैत अछि। नीलिमा गवाहक नौकरी आ सुरक्षाक जोखिमकेँ महत्त्व दैत छथि। एहि बीच मिरा फेर बयान देबाक लेल तैयार होइत छथि, मुदा हुनकर पासपोर्टक खाली खोल आ नियुक्ति-अनुबन्धमे नहि रहनिहार व्यक्तिक अधिकार सम्बन्धी प्रश्न मानव-तस्करीक आशंका उत्पन्न करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

२२. पासपोर्टक खाली खोल

सात समुद्रक धन

मिरा सुरक्षित गृहमे पहुँचि धीरे-धीरे अपन स्वतन्त्र निर्णय लेबाक सामर्थ्य फेर पबैत छथि। हुनकर पासपोर्टक असल कागज कोना छिनायल आ ककर हाथमे रहल, से जाँचक विषय बनैत अछि। स्थानीय अधिकारी जोआना हुनकर नाम, बयानक भाषा, गोपनीयताक सीमा आ स्वैच्छिक सहमतिक प्रति सावधान रहैत छथि। मिरा अपन परिवारसँ बात करैत छथि आ सुजाता नामक दोसर स्त्रीक सुरक्षा विषयमे चिन्ता प्रकट करैत छथि। अन्तमे ओ स्वयं हस्ताक्षर कऽ सुजाताकेँ खोजबाक आग्रह करैत छथि। दस्तावेजक खोखलापन आ व्यक्तिक अधिकारक हरण एहि अध्यायक केन्द्रीय बिम्ब अछि।

२३. दू पुरुषक सम्बन्ध

सात समुद्रक धन

ब्रुसेल्समे एलिस वान्देर कला-प्रदर्शनीक प्रायोजन, दृश्य-अधिकार आ मंच-सज्जाक व्ययमे विसंगति जाँचैत छथि। दिल्लीमे पत्रकार कबीर आ कलाकार प्रणयक निजी सम्बन्धकेँ अज्ञात लोक धमकी आ अपमानक औजार बनाबय चाहैत अछि। कार्यालयमे दू पुरुषक सम्बन्धपर अनधिकृत जिज्ञासा उठैत अछि, मुदा सम्पादक ओकरा समाचार अथवा दबावक विषय बनएबाक विरोध करैत छथि। कबीर व्यक्तिगत गोपनीयता रक्षित रखि वित्तीय सूत्रक जाँच जारी रखैत अछि। अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे ककरो आत्मीय जीवनकेँ अपराध-जाँचक बहानामे सार्वजनिक करब अन्याय अछि।

२४. दू स्त्रीक स्वीकृति

सात समुद्रक धन

अरीजोनामे डिजिटल साक्ष्य विशेषज्ञ ईशा सीमित वैधानिक अधिकारक अन्तर्गत अभिलेखक समय-नोंद जाँचैत छथि। दू प्रविष्टिक बीच सत्रह मिनट फरक देखाइत अछि, मुदा घड़ीक असमानता आ जानि-बुझिकऽ भेल परिवर्तनमे भेद करब आवश्यक अछि। ईशा आ सारा अपन आपसी सम्बन्ध, दूरी आ परस्पर स्वीकृतिक विषयमे संवाद करैत छथि। ई व्यक्तिगत प्रसङ्ग तकनीकी जाँचक समानान्तर सहमति आ विश्वासक प्रश्न उठबैत अछि। ईशा समयक अन्तर उपयुक्त प्राधिकरण धरि पहुँचबैत छथि, किन्तु अपराध सिद्ध भेल, एहन दावा नहि करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

२५. माल्टाक मुहर

सात समुद्रक धन

माल्टामे सोफिया वेल्ला एके जकाँ देखाइत मुहरवाला तीन अलग दस्तावेजक वास्तविक कानूनी अर्थ जाँचैत छथि। भारतीय विज्ञापनमे प्रयुक्त अनुमतिक दावा आ कम्पनीक वास्तविक अधिकार एक नहि निकलैत अछि। प्रस्तावित अनुदान, संस्थागत सहमति आ वास्तवमे भेजल-पाओल धनक बीच भेद स्थापित होइत अछि। भारतीय अधिकारीसभ प्रमाणित अभिलेखक अनुरोध करैत छथि। सोफियाकेँ अलग-अलग संस्थाक डाक एकहि ठेकानापर अबैत भेटैत अछि। प्रश्न उठैत अछि जे एके पतेक अनेक कम्पनीक नाम भारतक प्रचार आ वित्तीय लेनदेनमे कोना उपयोग भऽ रहल अछि।

२६. तीन परतवला कम्पनी

सात समुद्रक धन

माल्टाक एकटा भवनक डाक-पेटीपर अनेक कम्पनीक नाम भेटलासँ सोफिया वास्तविक पञ्जीकरण, सेवा-दायित्व आ मालिकाना संरचना जाँचैत छथि। तीन परतवाली कम्पनी व्यवस्था अपने-आप अपराध नहि, मुदा ग्राहक, प्रबन्धक आ लाभार्थीक पहिचान छिपा सकैत अछि। सूरतक अदिति राणे एकहि सन्दर्भवाला सेवा-बिल आ पटनासँ जुड़ल रसीदक समानता देखैत छथि। भिन्न दस्तावेजकेँ बिना मूल प्रमाण जोड़ि निष्कर्ष नहि निकालल जाइत। गोदामक गाड़ी आ वास्तविक मालक आवागमन जाँचबाक आवश्यकता नवा दिशा दैत अछि।

२७. झूठक निर्यातक छाया

सात समुद्रक धन

सूरतक सागरवस्त्र निर्यातक गोदाममे अदिति राणे मालक भार, परिवहन-पत्र आ रातिक पालीक पञ्जीक तुलना करैत छथि। संख्यामे अन्तर पैकिंग अथवा गाड़ीक भारक कारण सेहो हो सकैत अछि; वास्तविक शंका ओकर पर्याप्त विवरणक अभावसँ उठैत अछि। कर्मचारी शंकर परिवारक जीविका गमएबाक डर आ सत्य कहबाक दायित्वक बीच उलझैत अछि, तखन बयान देबाक लेल सहमत होइत अछि। पहरेदार महेश बतबैत अछि जे संदिग्ध राति एकटा नहि, तीनटा गाड़ी आयल छल। फाटल पञ्जीक पृष्ठक रहस्य गहिराइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

२८. नील टिकट

सात समुद्रक धन

मुम्बईमे आरव मलकानी सातटा सेवा-चालानपर लगल असामान्य नील टिकट पहचानैत छथि। पूर्व सहयोगी अनुराग बेदीक सूक्ष्म शुल्क सम्बन्धी पुरान चेतावनी याद अबैत अछि। आरव स्वीकार करैत छथि जे एकटा सेवा देखल बिना अनुमोदन देने छलाह; आब ओ अपन हस्ताक्षरक उत्तरदायित्वसँ बचब नहि चाहैत छथि। बिना प्रेषक-पताक पत्रमे अनुरागक जीवित रहबाक, मुदा अपन नामसँ नहि बाजि सकबाक दावा भेटैत अछि। आरव ओकरा अप्रमाणित सूचना मानि सुरक्षित रखबैत छथि। पुरान पारिवारिक बहीमे सेहो नील चिह्नक संकेत भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

२९. बाजारक सीमारेखा

सात समुद्रक धन

नीलिमा आ अरुणिमा भारतकेँ लक्ष्य कएनिहार ‘अम्बर-९’क प्रचार आ विदेशी तकनीकी सेवा-अनुबन्धक भिन्न अर्थ बुझैत छथि। भारतीय ग्राहक लेल सेवा बनब आ पड़ोसी देशक सभ प्रयोगकर्तापर पूर्ण रोक होएब अलग-अलग दाबी अछि। विज्ञापनक बाजार, भुगतान-प्रणाली, वास्तविक ग्राहक आ सेवा-सञ्चालनक कानूनी क्षेत्रकेँ पृथक् जाँचल जाइत अछि। भारतीय समाजक वास्तविक आर्थिक हानि राजनीतिक भाषणक सरल निष्कर्षसँ बेसी ठोस अछि। बीजिंगक अभियन्ता लिन यू पूर्ण वाक्य सुनेबाक शर्तपर बयान देबाक सहमति दैत छथि, जाहिसँ तकनीकी पक्षक जाँचक बाट खुलैत अछि।

३०. बीजिंगक बन्द सूची

सात समुद्रक धन

बीजिंगमे अभियन्ता लिन यू बतबैत छथि जे सामाजिक खेलक लेल बनाओल प्रारम्भिक नमूना बादमे पैसाक दाँववला अनुप्रयोगमे बदलल गेल। हुनकर काज भाषाक प्रदर्शन आ ग्राहक-वर्गक तकनीकी परीक्षण छल; वास्तविक वित्तीय मालिकाना हुनका ज्ञात नहि। मूल नमूना, संशोधित स्वीकृति आ बाजारमे उपलब्ध करएबाक दिनांक अलग-अलग जाँचल जाइत अछि। उपलब्ध परीक्षण-अभिलेखमे एकहि रकम अनेक बेर जमा-निकासी होएबाक कारण कारोबारक आँकड़ा बढ़ि सकबाक प्रश्न उठैत अछि। निर्णायक गणनाक पृष्ठ हुनकर लग नहि अछि, तेँ रहस्य अधूरा अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

३१. अङ्कक भीतरे घर

सात समुद्रक धन

लिन यूक तकनीकी तालिकामे पाँच सय रुपैयाक एकहि प्रारम्भिक भुगतानक बाद अनेक दाँव, वापसी-जमा आ बोनसक प्रविष्टि देखाइत अछि। एहन प्रवाहकेँ नव-नव धन मानि गनलासँ विशाल झूठ आँकड़ा बनि सकैत अछि। दरभंगामे रानी सेहो अमरेशक कर्जाक पर्ची गनैत एकहि उधारक चुकौतीकेँ अलग कर्ज नहि मानबाक पाठ दैत छथि। बालकक निजी अभिलेखक उपयोग लेल सहमतिक शर्त उठैत अछि। गणनाक सुधारवला पृष्ठपर पछाति स्वीकृति-संख्या भेटैत अछि, मुदा परिवर्तन के कएलक, से अस्पष्ट रहैत अछि।

३२. संकेतक व्यापार

सात समुद्रक धन

हांगकांगमे मेघना सेन ग्राहक-सम्पर्क, कार्यक्रम-सहायता आ अभियान-परामर्शक नामपर कएल भुगतान आ घुरि आयल समायोजनक नवा बण्डल जाँचैत छथि। सेवा पूरा भेलाक वास्तविक प्रमाण कतहु रिक्त अछि, आ एकहि काजक खर्च अलग फाइलमे दोहरायल देखाइत अछि। तारा लामाक अनुपस्थिति हुनका व्यथित करैत अछि, तथापि वित्तीय निष्कर्ष बिना प्रमाण नहि निकालैत छथि। बिना नामक पत्र आ विदेशी निवेशकर्ताक अधूरा परिचयसँ अरीजोनाक सेवा-अनुबन्ध दिस जाँचक रेखा बढ़ैत अछि। मुख्य प्रश्न अछि—भुगतान के अनुमोदित कएलक, लाभ के पेलक आ रकम किएक घुरल।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

३३. मरुभूमिक अनुबन्ध

सात समुद्रक धन

अरीजोनामे लता देसाइ डिजिटल सामग्री आ अनुपालन-सम्बन्धी सेवा-अनुबन्धक पुरान अभिलेख जाँचैत छथि। भारतीय प्राधिकरणक अनुरोधपर सेवा उपलब्ध कराएबाक सीमा तथा ग्राहकक निजी सूचनाक विधिसम्मत संरक्षण अलग-अलग निर्धारित होइत अछि। अभिलेख मेटि देबाक आदेशवला एकटा सन्देश भेटैत अछि, मुदा प्रेषकक अधिकार-अवस्था मेल नहि खाइत अछि। लता ओकर पालन नहि कऽ सुरक्षित अभिलेख बनबैत छथि आ सम्बन्धित विभागकेँ सूचित करैत छथि। अज्ञात स्रोतक धमकीक बीच परिवारक दायित्व आ साक्ष्य सुरक्षित रखबाक नैतिकता जुड़ैत अछि।

३४. अरीजोनाक राति

सात समुद्रक धन

लता देसाइ स्पष्ट करैत छथि जे अरीजोनामे कम्प्यूटर सेवा उपलब्ध रहबाक अर्थ समस्त अपराध ओतहिसँ चलब नहि अछि। यूरोपीय मध्यस्थ, भारतीय विज्ञापन-स्वीकृति, ग्राहकक देश-निर्धारण आ वित्तीय भुगतानक जिम्मेदारी अलग-अलग हो सकैत अछि। दिल्लीक समीक्षा-प्रमाणक एकटा अनुपस्थित पृष्ठ रहस्य बढ़बैत अछि। ब्रुसेल्सक नागरिक-संस्थाक कार्यक्रम आ रेवतीक पत्रकारिताक यात्रा सेहो कथामे जुड़ैत अछि। बेटी निकिताक ताराक नक्शा एहि तथ्यक रूपक बनैत अछि जे दूर-दूरक बिन्दुकेँ रेखासँ जोड़लासँ ओ एक ठाम नहि भऽ जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

३५. संगीतक पाछाँक डर

सात समुद्रक धन

मकाउक होटलमे समीर बोस, मिरा आ रेशमा गुरुङक अनुभवसँ चमकैत मनोरञ्जन-व्यवस्थाक पाछाँक श्रम आ भय उजागर होइत अछि। नियुक्ति करनिहार, ड्यूटी बदलनिहार आ परिवहनक जिम्मेदार लोकक भूमिका अलग-अलग जाँचल जाइत अछि। मिरा अपन बहिनसँ संवाद आ गीतक स्मृतिक सहारे भयक बीच आवाज फेर पबैत छथि। रेशमा भोजनालयक पञ्जी आ परिवहनक दिनांकक तरफ ध्यान दैत छथि। औपचारिक बिलक तिथि हुनकर कथनसँ मेल नहि खाइत अछि, आ पुरान कम्पनीक नाम बादमे जोड़ल देखाइत अछि।

३६. उज्जर दान-पेटी

सात समुद्रक धन

ब्रुसेल्समे एलिस वान्देर राहत आ जनकल्याणक नामपर खर्च भेल धनक वास्तविक उपयोग जाँचैत छथि। दान देबाक नैतिक उद्देश्य आ संस्थागत वित्तीय पारदर्शिता एकहि बात नहि अछि। पटनाक युवा-जागरण सभासँ मिलैत मदक शीर्षक भेटैत अछि, मुदा समान नामक आधारपर समान संचालक मानल नहि जाइत। व्यय-पञ्जीमे ‘स्थानीय सहयोग : भारत’क प्राप्तकर्ता तथा सेवा-पुष्टि अनुपस्थित अछि। एलिस संगठनसँ औपचारिक उत्तर माँगैत छथि आ रेवती कर्ण सार्वजनिक मंचपर प्रश्न पूछबाक तैयारी करैत छथि। अनुदानक दोसर छोरक खोज अध्यायक केन्द्र अछि।

३७. जनचेतना मंच

सात समुद्रक धन

पटनामे प्राची झा स्थानीय विद्यालयक डिजिटल ठगी आ जुआ-विरोधी जागरण कार्यक्रम तैयार करैत छथि। बाहरी सहयोगक बाद आयोजन ‘जनचेतना मंच’क रूप लैत अछि, मुदा वास्तविक सामाजिक श्रम आ राजनीतिक प्रचारक बीच तनाव बढ़ैत अछि। पत्रकार रेवती कर्ण कार्यक्रमक पुरान दावासभक प्रमाण, आयोजकक भूमिका आ वित्तीय समर्थकक पहिचान पूछैत छथि। सनसनीखेज समाचारक दबावक बीच ओ बिना पुष्टि निष्कर्ष टारैत छथि। पटना छोड़ि ब्रुसेल्स जाएबाक निर्णयक ठीक पहिने शंकास्पद प्रचार-सन्देशक मूल समय जाँचबाक सूचना भेटैत अछि।

३८. ब्रुसेल्सक उज्जर सभागार

सात समुद्रक धन

रेवती कर्ण ब्रुसेल्स पहुँचि एलिस वान्देरक संग जनकल्याण आ वित्तीय उत्तरदायित्वक सार्वजनिक सम्मेलनमे भाग लैत छथि। प्रायोजकक भुगतान आ लाभार्थीकेँ प्राप्त सेवाक विषयमे प्रश्न उठैत अछि, मुदा उत्तर देबाक समय सीमित राखल गेल अछि। व्यवसायी विराज सहनीक दूरस्थ सम्पर्क बीचमे टूटि जाइत अछि, जाहिसँ सभा असहज होइत अछि। एलिस राहतक प्रत्यक्ष प्रमाण आ भुगतान स्वीकृत करनिहारक पहिचान माँगैत छथि। रेवती सार्वजनिक प्रश्नकेँ अन्तिम साक्ष्य नहि मानैत छथि; असमर्थित आरोपक बदला लिखित उत्तरक बाट चुनैत छथि।

३९. उजागर भेल पहिल झूठ

सात समुद्रक धन

पटनामे जनसभासँ पहिने भय पसराबय लेल पुरान दृश्यकेँ नव घटनाक रूपमे प्रसारित कएल जा रहल अछि। अरुणिमा स्थानीय सुरक्षाक अधिकार-सीमा सुरक्षित रखि वित्तीय अनुसन्धानक पक्ष जाँचैत छथि। प्राची आ पत्रकारसभ छविक मूल स्रोत तथा दिनांकक पुष्टि करैत छथि। रेवती ‘विदेशी धनसँ तनाव’ सन अप्रमाणित शीर्षक बदैलि पुरान छविसँ बनाओल नव भयक तथ्य प्रकाशित करैत छथि। अभय मूल दृश्य देबाक सम्भावना रखैत अछि, मुदा अपन बहिनक सुरक्षाक चिन्ता करैत अछि। झूठक एक परत खुलैत अछि; ओकर निर्माता अज्ञात रहैत अछि।

४०. अग्निसँ पहिने

सात समुद्रक धन

पटनाक सम्भावित अशान्तिक अफवाह दरभंगाक रानीक दोकान धरि पहुँचैत अछि; अमरेशकेँ बुझाइत अछि जे सामूहिक डर सेहो गरीब घरक आमदनी घटबैत अछि। शिवशंकर मिश्र आ हुनकर परिवार स्थानीय सूचनाक प्रमाण सुरक्षित रखबाक निश्चय करैत छथि। सभाक चित्र आ प्रसारित सन्देशक समय मिलानसँ पहिल भ्रामक प्रचार पकड़ल जाइत अछि, मुदा उत्तरदायी व्यक्तिक पहिचान बाकी रहैत अछि। गाँधी मैदानमे सभा आरम्भ होएबासँ पहिने लोककेँ अफवाह आ प्रत्यक्ष अनुभवक बीच चुनबाक संकट घेरि लैत अछि। अध्याय आसन्न टकरावक पूर्वपीठिका अछि।

SECTION / खण्ड

चमकैत देह, कारी कारोबार

अध्याय ४१–६०

४१. भीड़क अपन चेहरा

चमकैत देह, कारी कारोबार

पटनाक जनसभाक प्रत्यक्ष प्रसारण देखैत रेवती कर्ण भीड़कें एकटा सामूहिक अपराधी अथवा एकटा राजनीतिक पात्र मानबाक विरोध करैत छथि। सभामे मजदूर, स्वयंसेवक, दर्शक, विद्यार्थी आ सामान्य नागरिक अपन-अपन कारणसँ उपस्थित छथि। तृषा सहित स्थानीय संवाददाता अफवाहक मूल समय, स्थान आ प्रत्यक्ष कथन दर्ज करैत छथि। चिकित्सक अर्चना भीड़क बीच अस्वस्थ लोककें सहायता दैत छथि। एकटा झूठ वीडियो समूचा जनसमूहकें एकहि भयमे बदलय चाहैत अछि। रेवतीक पहिल आग्रह सनसनीखेज समाचार नहि, लोकक प्राणक रक्षा बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

४२. पटनाक अग्निपरीक्षा

चमकैत देह, कारी कारोबार

गाँधी मैदान लग पसरेल घबराहटमे स्थानीय पुलिस चिकित्सा, निकास आ भीड़-नियन्त्रणकेँ पहिल प्राथमिकता दैत अछि। अरुणिमा प्रत्यक्ष हिंसक धमकीक प्रमाणवला व्यक्तिसभपर सीमित कारबाही करैत छथि, सम्पूर्ण सभाकेँ दोषी नहि ठहरबैत छथि। आयोजनक ठेकेदार, भुगतान-सूची आ प्रचारक फोन नम्बरक मिलान जारी रहैत अछि। एहि बीच विवेकक पुरान कागजमे ‘राजगीर, पुरान प्रशिक्षण केन्द्र’क उल्लेख भेटैत अछि। पटना तत्कालिक हिंसासँ बचैत अछि, मुदा षड्यन्त्रक धन-स्रोत आ विवेकक पत्रक सत्यता अनिश्चित रहैत अछि।

४३. मञ्चक चेहरा

चमकैत देह, कारी कारोबार

दिल्लीमे कबीर आ प्रणय पटनाक सभाक प्रचार-पृष्ठक एकहि चिह्नक अनेक रूप जाँचैत छथि। सहयोगी आकृति अलग-अलग विज्ञापन, विदेशी ग्राहक-सम्पर्क आ व्ययादेशमे मिलैत चित्र देखबैत छथि, मुदा एकहि रकमक प्रमाण एखन नहि अछि। आकृतिक पाछाँ पड़ल संदिग्ध लोक आ सम्पर्क टूटि जाएब चिन्ता उत्पन्न करैत अछि। ओकरा 'नील किनारवाली कापी'क आधारपर चिन्हल गेल होयबाक आशंका उठैत अछि। कबीरकेँ अज्ञात सात सेकण्डक ध्वनि-सन्देश भेटैत अछि, जकरा ओ बिना खोलने जाँच लेल सुरक्षित करबैत अछि।

४४. प्रकाशनसँ पहिने

चमकैत देह, कारी कारोबार

रेवती कर्ण अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धपर तैयार अपन लेख प्रकाशित करबाक पहिने प्रत्येक आरोप आ नामक प्रमाण फेर जाँचैत छथि। आकृतिपर भेल हमलाकेँ बिना सम्बन्ध-सिद्धि वित्तीय अपराधक परिणाम नहि बतएबाक निश्चय करैत छथि। वैध जन-सहायताक अस्तित्वकेँ नकारि देब सेहो अनुचित बुझैत छथि। हुनकर मसौदामे अनधिकृत परिवर्तन आ हुनकर नामसँ झूठ छपेबाक दबाव देखाइत अछि। होटलमे पहुँचल धमकीपूर्ण लिफाफाक सामग्री ओ सुरक्षित करबैत छथि। अध्याय पत्रकारक लेखकीय अधिकार आ सत्यपर आधारित प्रकाशनक स्वतन्त्रताकेँ केन्द्रमे राखैत अछि।

४५. राजगीरक चुप्पी

चमकैत देह, कारी कारोबार

नीलिमा राजगीरक पुरान प्रशिक्षण केन्द्र पहुँचैत छथि, जकर नाम विवेकक संदिग्ध पत्रमे भेटल छल। केन्द्रक फाटक बन्द अछि आ वर्तमान देखरेख तथा स्वामित्वक अभिलेखमे अन्तर अछि। ओ बिना सक्षम आदेश परिसरमे प्रवेश नहि करैत छथि। स्थानीय लोकसँ भेटल स्मृति, ताला, फाटकक खरोंच आ फाटल कागजक छवि अलग-अलग साक्ष्यक रूपमे दर्ज कराओल जाइत अछि। विवेकक लिखावटसँ मिलैत कागजकेँ विशेषज्ञ परीक्षणबिना असल नहि मानल जाइत। बन्द केन्द्रक भीतर के अछि, एहि प्रश्नपर अध्याय समाप्त होइत अछि।

४६. राजगीरक पुरान प्रशिक्षण केन्द्र

चमकैत देह, कारी कारोबार

आधिकारिक अनुमति भेटलापर राजगीरक पुरान प्रशिक्षण केन्द्र खोलल जाइत अछि आ ओतय विवेक सूद जीवित भेटैत छथि। हुनकर कथित मृत्यु एकटा वास्तविक जीवित व्यक्तिक परत खोलैत अछि, मुदा दुर्घटनामे मरल अनजान व्यक्तिक पहिचान नवा दायित्व बनैत अछि। अरुणिमा विवेकसँ गलत मृत्युपहिचानक जानकारी लुकएबाक कारण पूछैत छथि। केन्द्रक भीतर पोथी, पुरान पञ्जी आ नील प्रपत्रक ढेरी क्रमबद्ध ढंगसँ जब्त कएल जाइत अछि। नीलिमाक लेल भेट एकसाथ राहत, आक्रोश आ कठोर अन्वेषणक आरम्भ बनैत अछि।

४७. जीबैत गवाहक अपराधबोध

चमकैत देह, कारी कारोबार

सुरक्षित स्थानपर विवेक सूद अपन छओ मासक मौन आ जीवनक रहस्यक कारण अपराधबोध अनुभव करैत छथि। नीलिमा आ अरुणिमा हुनकर बयान, हुनका पर सम्भावित आरोप आ दुर्घटनाक वास्तविक मृतकक पहिचान अलग-अलग जाँचैत छथि। विवेकक जीवित रहबाक प्रमाणसँ मृतक शैलेशे छलाह, ई स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि। चिकित्सकीय नमूना, पुरान अभिलेख आ परिवारक मिलान आवश्यक अछि। विवेक अपन भय आ उत्तरदायित्व स्वीकार करैत छथि। अरुणिमा हुनका अनुमान छोड़ि केवल निश्चित जनल तथ्य कहबाक निर्देश दैत छथि।

४८. मूल लेखा आ प्रतिलिपि

चमकैत देह, कारी कारोबार

राजगीरसँ प्राप्त विवेकक मूल पोथी, ओकर पुरान छवि-प्रति आ बैंकक प्रमाणित लेखाकेँ दिल्लीमे समवर्ती जाँचमे राखल जाइत अछि। राशि, तारीख आ काटल नाममे अन्तर भेटैत अछि। मूल कागजपर दबावक चिह्न रहितहुँ विशेषज्ञ परीक्षणबिना हराएल अक्षर पढ़बाक दावा नहि कएल जाइत। रानी अपन खाताक स्थिति पूछैत छथि; नीलिमा वित्तीय कड़ीक जाँचकेँ प्रभावित परिवारक संकटसँ अलग नहि करैत छथि। विवेक अपन पहिनुक निर्णयपर पश्चात्ताप व्यक्त करैत छथि। दस्तावेजक मिलान जाँचक आवश्यक आधार अछि, अन्तिम सत्य नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

४९. बचि निकलल आवाज

चमकैत देह, कारी कारोबार

मकाउक सहायता-गृहमे मिराकेँ स्थानीय अधिकारीक समक्ष पूरा, सीमित अथवा तत्काल कोनो बयान नहि देबाक तीन विकल्प स्पष्ट रूपमे देल जाइत अछि। ओ भर्ती, वेतनक भरोसा, होटलमे मूल पासपोर्ट लेल जाएब आ सुजाताक विषयमे अपन अनुभव कहैत छथि। हुनकर गवाहीक आवश्यक सार मात्र अधिकृत माध्यमेँ भारत पहुँचैत अछि। अरुणिमा रोजगार-शोषण आ जुआक वित्तीय जालकेँ स्वतः एकहि अभियोगमे नहि जोड़ैत छथि। मिराक सहायता करनिहारपर धमकी आयलाक बाद सुरक्षा बढ़ाओल जाइत अछि; मिराक निज निर्णय आ विश्रामक अधिकार सुरक्षित राखल जाइत अछि।

५०. बेचायल नाम, बचल साक्ष्य

चमकैत देह, कारी कारोबार

दिल्लीक समन्वित जाँचमे बैंक-भुगतान, रोजगार-शोषण, व्यावसायिक चालान आ जन-प्रचारक वित्तकेँ अलग फाइलमे राखल जाइत अछि। अरुणिमा अपुष्ट सम्बन्धक लेल रिक्त स्थान छोड़ैत छथि। रानी अपन बयानमे पूछैत छथि जे पाँच प्रतिशत पबनिहार शक्तिशाली लोकसभक खोज पीड़ितसँ पहिने किएक नहि होइत। अवरुद्ध खाताक कारण हुनकर सामान्य जीविका बाधित होइत अछि। बैंक आवश्यक परीक्षण जारी राखि वैध दैनिक आमदनीक विषयमे अलग आवेदनक बाट बतबैत अछि। रानीक संकल्प अछि—खाताक जाँच चलत, मुदा दोकान आ रोटी रुकबाक नहि चाही।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

५१. पाँच लोकक बैंक

चमकैत देह, कारी कारोबार

रानी आ अमरेश बैंकक पाँतिमे पाँच अलग-अलग समस्यासँ जूझैत ग्राहकक संग ठाढ़ होइत छथि। रिक्शाचालकक आमदनी, वृद्धाक पेन्शन, सिलाइ-काजक मजदूरी आ अन्य भुगतान-विवादकेँ एकहि ‘संदिग्ध खाता’ मानल नहि जा सकैत। बैंक अधिकारी आ अरुणिमा लेनदेन रोकबाक कारण, अवधि, समीक्षा आ शिकायतक स्पष्ट प्रक्रियापर जोर दैत छथि। अमरेश निजी ग्राहकक जानकारीक छवि नहि खींचि गोपनीयताक महत्त्व सीखैत अछि। बादमे आयल सन्देशसँ रानीकेँ बुझाइत अछि जे अपराधीक नजरि हुनकर बैंकसँ आगाँ दिनचर्या धरि पहुँचि चुकल अछि।

५२. अज्ञात शवक नाम

चमकैत देह, कारी कारोबार

विवेक सूद ओहि मृतदेहक परिवारसँ भेटैत छथि, जकरा हुनकर नामसँ पहिचानल गेल छल। भुवनेश्वरी देवी आ गौरी अपन बेपत्ता सम्बन्धीक वास्तविक पहिचान चाहैत छथि; विवेक अपन छओ मासक मौन लेल उत्तरदायित्व मानैत छथि। परिजनक स्मृति आ सम्भावित शैलेशक नामकेँ निश्चित वैज्ञानिक पहचानक विकल्प नहि मानल जाइत। पुरान कार्यालय-सूचीक डिजिटल प्रतिक निर्माण दुर्घटनाक बाद भेल पाओल जाइत अछि, यद्यपि कागजपर पुरान तिथि छपल अछि। एहिसँ मृतकक अतीतकेँ बादमे बदलबाक आशंका उठैत अछि आ मूल रजिस्टरक खोज आवश्यक होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

५३. संख्याक पाश

चमकैत देह, कारी कारोबार

जाँचदल ‘दू हजार करोड़ प्रति मास’क दावामे प्रयोगकर्ता, सक्रिय खाता, जमा, पुनःदाँव आ वास्तविक आयक भेद स्पष्ट करैत अछि। अनुमानित संख्याक गणित सही होइतो प्रारम्भिक मान्यता अप्रमाणित रहि सकैत अछि। विवेक अपन पुरान लेखामे एके रकमक बारम्बार यात्रा अलग पहचान नहि सकबाक त्रुटि स्वीकार करैत छथि। रानी आ अमरेशक घरेलू उधार-बही एहि कठिन गणनाक सरल समकक्ष बनैत अछि। अज्ञात सन्देश ‘पीड़ित-सहायता’क धनक सम्भावित दुरुपयोगक नवा प्रश्न उठबैत अछि। सत्यापित आँकड़ाक संग सहायता-राशिक मंजिल खोजब आवश्यक बनैत अछि।

५४. दू हजार करोड़क धुआँ

चमकैत देह, कारी कारोबार

माध्यमसभमे ‘दू हजार करोड़क जुआ-साम्राज्य’क सनसनी पसरैत अछि, मुदा नीलिमा स्पष्ट करैत छथि जे ई प्रमाणित आपराधिक आमदनी नहि, कथित कुल मासिक प्रवाहक अप्रमाणित अनुमान अछि। रेवती पीड़ितक वास्तविक क्षतिक महत्त्व घटाए बिना तथ्यात्मक सुधारक पक्ष लैत छथि। आर्थिक अभिलेख आ विशेष व्ययक साक्ष्य जाँचाधीन रहैत अछि। मुम्बईक आरव मलकानी अपन मूल लेखा-नोट देबाक सहमति जनबैत छथि, संगहि आत्मदोषारोपण आ निष्पक्ष प्रक्रियाक प्रश्न उठबैत छथि। जाँचक अगिला चरणमे भीतरक साक्षीक भूमिका महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

५५. समीकरणक साक्षी

चमकैत देह, कारी कारोबार

आरव मलकानी वकीलक संग दिल्ली पहुँचि अपन लेखा-नोट, रसीद आ स्मृतिजन्य सूचना दैत छथि। पाँच प्रतिशतक तीन अलग अर्थ—वैध सेवा-शुल्क, संदिग्ध मध्यस्थक हिस्सा आ अस्पष्ट कोडवाली प्रविष्टि—उभरैत अछि। आरवक अनुमोदनक बादो किछु मद बदलल गेल होयबाक सम्भावना जाँचल जाइत अछि। अनुराग बेदीक पुरान चेतावनीक सन्दर्भ उठैत अछि। एही बीच विराज सहनीक कार्यालयमे पुरान फाइल हटएबाक तैयारी होइत अछि। कनिष्ठ कर्मचारी मृणाल प्राप्तिक सूची बिना रिक्त हस्तान्तरण-पृष्ठपर हस्ताक्षर करबाक अस्वीकार करैत अछि।

५६. छापाक पहिल राति

चमकैत देह, कारी कारोबार

बहुशहरी अधिकृत कारबाहीसँ पहिनुक राति अरुणिमा जाँच-अधिकारक सीमा, न्यायिक आदेश आ निर्दोष कर्मचारीक गोपनीयताक रक्षा स्पष्ट करैत छथि। आरवक बयान आ बैंकक दस्तावेजक मिलान जारी अछि। पटनाक गोदाममे धुआँ उठैत अछि; स्थानीय प्रशासन पहिने भीतर फँसल मजदूरक सुरक्षाक व्यवस्था करैत अछि। अरुणिमाक नामपर कागज बचएबाक झूठ आदेश देल जाएबाक आशंका उठैत अछि। दिल्लीमे पुरान अभिलेखक बक्सा हटएबाक प्रयास रोकल जाइत अछि। आगि आ दस्तावेजक समानान्तर संकट अगिला भोरक छापाक पृष्ठभूमि बनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

५७. पाँच प्रतिशतक मालिक

चमकैत देह, कारी कारोबार

दिल्ली, पटना आ अन्य शहरमे न्यायिक अनुमतिक अन्तर्गत एकसाथ छापा पड़ैत अछि। विराज सहनीक कार्यालयसँ कम्प्यूटर, अनुबन्ध आ लेखापुस्तक भेटैत अछि, मुदा जाँचदल सभ कर्मचारीकेँ दोषी नहि ठहरबैत अछि। विवेक बतबैत छथि जे हुनका पाँच प्रतिशत हिस्सावला परामर्श-प्रस्ताव भेटल छल। मृणाल बिना पावती फाइल हस्तान्तरणक प्रस्तावक जानकारी दैत अछि। अनुराग बेदी सम्पर्कसँ बाहर छथि, मुदा हुनका बिना प्रमाण फरार नहि कहल जाइत। मालिकानाक अन्तिम प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि, जखन समान लालचवला नव जुआ-विज्ञापन फेर उभरैत अछि।

५८. फेर नाम बदलल

चमकैत देह, कारी कारोबार

‘अम्बर-९’पर कारबाहीक बाद बैंगनी चिह्नवला नवा खेल पुरान ग्राहककेँ ललचाबय लगैत अछि। अमरेश एहि बेर सन्देश छिपेबाक बदला माय रानीकेँ देखबैत अछि आ औपचारिक शिकायतक बाट चुनैत अछि। पत्रकार कबीर पुरान आ नव विज्ञापनक समान भाषा देखैत अछि, मुदा समान सञ्चालकक प्रमाणबिना दावा नहि करैत। नव कम्पनी अपन स्वतन्त्र अस्तित्वक घोषणा करैत अछि, जकर सत्यापन बाकी अछि। प्रणय कबीरकेँ सिखबैत अछि जे व्यक्तिगत जीवनक रक्षामे सीखल धैर्य पत्रकारिक सत्यापनमे सेहो आवश्यक अछि।

५९. छओ मासक दूरी

चमकैत देह, कारी कारोबार

छापाक किछु समय बादो प्रभावित खाताधारीसभक बैंक-समस्या समाप्त नहि होइत अछि। रानी जीविकाक सामान्य आमदनी आ विवादित रकम अलग करबाक कोशिश करैत छथि; रोकमे आंशिक राहत भेटैत अछि। शिवशंकर मिश्र अपन बचतक हानि आ न्यायिक प्रक्रियासँ जुड़ल कष्ट झेलैत छथि। रेवती जाँचक गोपनीयता आ पीड़ितक दैनिक कठिनाई दुनूक महत्त्व सार्वजनिक रखबाक प्रयास करैत छथि। प्रारम्भिक सुनवाईक तैयारीमे रानी आ शिवशंकर परस्पर सम्मान आ साहसक आधारपर एक नवा संवादक बाट दिस बढ़ैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

६०. अन्हारक हिसाब

चमकैत देह, कारी कारोबार

प्रारम्भिक अदालती सुनवाईमे रानी देवी आ शिवशंकर मिश्र जकाँ पीड़ित अपन अलग अनुभवसहित उपस्थित होइत छथि। नीलिमा जमा, पुनःदाँव, निकासी आ वास्तविक क्षतिक पृथक् विवरण प्रस्तुत करैत छथि; दू हजार करोड़क आँकड़ा एखनो असत्यापित अछि। न्यायालयक समक्ष साक्ष्यक सीमा, खाताधारीक अधिकार, प्रचारक जिम्मेदारी, अन्तरराष्ट्रीय सहयोग आ पुनर्वासक आवश्यकता उभरैत अछि। रेवती ई बात स्पष्ट लिखैत छथि जे सुनवाई अन्तिम फैसला नहि अछि। अमरेश अपन जुआ-ग्राहकक भूमिकासँ आगाँ बढ़ि शिकायतकर्ता आ सम्भावित गवाहक रूपमे उभरैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

उपसंहार : अगिला नाम

चमकैत देह, कारी कारोबार

भाग तीनक उपसंहार ‘अगिला नाम’मे नव नामसँ फेर जुआक प्रचार अबैत अछि। एहि बेर युवा ग्राहक खेल खोलबाक बदला शिकायत करबाक माध्यम खोजैत अछि। दोसर दिस अपराधक गोपनीय कार्यालयमे नव कम्पनी-नामक सूची बनैत अछि। तथापि जाँचदल लग वित्तीय साक्ष्यक एहन क्रम तैयार भऽ रहल अछि जे नाम बदललाक बादो भुगतान-पथक अनुगमन करि सकत। पीड़ित आब केवल मूक शिकार नहि, प्रतिरोध करनिहार साक्षी बनि रहल छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

झूठक निर्यात

अध्याय ६१–८०

६१. अगिला नामक पहिल दिन

झूठक निर्यात

अदालती सुनवाई चलिते अमरेशकेँ नव नामक जुआ-विज्ञापन फेर भेटैत अछि। ओकर साइबर-शिकायतक पावती पत्रकार रेवती कर्ण धरि पहुँचैत अछि, मुदा ओ पुरान ‘अम्बर-९’ आ नवा प्रचारक एकहि मालिक होयबाक अप्रमाणित दावा नहि करैत छथि। नीलिमा जाँचक लेल अलग ‘नव प्रचार’ फाइल खोलैत छथि। दरभंगामे रानीक चिन्ता अछि जे शिकायत देलाक बादो बेटाक पुरान खाता सक्रिय कहि सन्देश किएक अबैत अछि। सूरतक दू अलग कागजपर मिलैत नील चिह्न आ अज्ञात स्रोतक भय नवा अन्वेषणक सूत्र बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

६२. एकहि मुहरक दू अर्थ

झूठक निर्यात

सूरतक सागरवस्त्र निर्यातक वास्तविक कपड़ा-उद्योग आ संदिग्ध सेवा-बिलक बीच भेद जाँचल जाइत अछि। अदिति राणे बुझैत छथि जे नील मुहरक समानता ओकर उपयोग करनिहारक समानताक प्रमाण नहि अछि; मुद्रणालय एके प्रारूप अनेक कम्पनीकेँ बेचने रहि सकैत अछि। कर्मचारी शंकर पासवानकेँ मिलैत धमकी आ तीन गाड़ीक अलग पञ्जी जाँचक केन्द्रमे अबैत अछि। लिखित अनुमति लऽ पुरान बन्द भंडारक ताला खोलबाक तैयारी होइत अछि। बाहरी धूलिपर नव उँगरीक चिह्न बन्द कोठलीक विषयमे अनिश्चितता बढ़बैत अछि।

६३. गोदामक बन्द केवाड़ी

झूठक निर्यात

अदिति अधिकृत अधिकारी आ कम्पनीक प्रतिनिधिक उपस्थितिमे सूरतक गोदामक बन्द कोठलीक निरीक्षण करैत छथि। बारह कपड़ाक गठरीक पुरान नोंदक मिलान करैत समय फाटल पञ्जीक पन्नाक टुकड़ा भेटैत अछि। प्रवेश, परिवहन आ जहाजक प्रस्थान-विवरणमे चारि दिनक असंगति उभरैत अछि। शंकर अपन परिवारक चिन्ताक बीच बयान देबाक साहस राखैत अछि। मुम्बईक आरवक अभिलेखमे ओही जहाजी क्रमाङ्कसँ सम्बन्धित भुगतानक भिन्न तिथि भेटैत अछि। गोदामक मामलाक अगिला जाँच वास्तविक माल आ भुगतानक समय-क्रमपर केन्द्रित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

६४. चारि दिनक फरक

झूठक निर्यात

मुम्बईमे आरव मलकानी सूरतक गोदाममे मालक आगमन, जहाजक कथित प्रस्थान आ कम्पनीक भुगतान-अनुमोदनक तिथिसभकेँ एके क्रममे बैसेबाक प्रयास करैत छथि। चारि दिनक अन्तर मात्र दफ्तरी देरी अछि कि एकहि खेपक पहचान बदलल गेल अछि, से अनिश्चित रहैत अछि। गठरीक संख्या, पैकिंगक माप आ मूल तौल अलग होयबाक सम्भावना सेहो जाँचल जाइत अछि। अनाम लिफाफामे भिन्न माल-बिल आ ‘वास्तविक माल’क संकेत भेटैत अछि। आरव ओकरा प्रमाण मानबाक बदला सुरक्षित रखबैत छथि आ मूल दस्तावेज मँगबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

६५. परिवारक मूल्य

झूठक निर्यात

रानी आ अमरेश फेर दैनिक दोकानक हिसाब जोड़बाक अभ्यासमे लगैत छथि। मोबाइल-जुआक नव प्रचार आ पुरान घाटा घुरएबाक लालच अबैत रहैत अछि, मुदा अमरेश दाँव नहि लगबैत अछि। परिवारक कठिनाइ केवल आर्थिक नहि, धमकी आ अनिश्चितताक मनोवैज्ञानिक बोझ सेहो अछि। अपरिचित कागज वा सन्देशकेँ बिना जाँच विश्वास करब उचित नहि, से रानी बेटाकेँ बुझबैत छथि। सम्भावित धमकीक सूचना निर्धारित पुलिस-सम्पर्ककेँ देबाक निर्णय होइत अछि। आपसी संवाद आ शून्य नव दाँव परिवारक वास्तविक उपलब्धि बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

६६. स्वयंसेवाक मूल काम

झूठक निर्यात

पटनाक पुनर्वास-कक्षमे प्राची झाक स्वयंसेवी काजक वास्तविकता आ सहायता-पञ्जीक त्रुटि उजागर होइत अछि। सुनीताकेँ एक बेर दवाईक सहायता भेटल, मुदा कागजमे तीन बेर लाभ लिखल अछि। रेवती कर्ण वास्तविक सेवा-पावती आ अनाम वित्तीय सारक तुलना करैत छथि। दू मिलैत नामवाली संस्थाक अस्तित्वसँ वैध जनकल्याणक कार्य स्वतः दोषी नहि होइत। प्राची चाहैत छथि जे संस्थाक काम जारी रहय आ गलत नामसँ धन लेल गेल हो तँ ओकर अलग उत्तरदायित्व तय हो। ‘जनचेतना सेवा मंच’क उल्लेख नवा प्रश्न बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

६७. एकहि नामक दू व्यक्ति

झूठक निर्यात

अरुणिमा राव ‘जनचेतना मंच’ आ ‘जनचेतना सेवा मंच’क अलग-अलग पञ्जीकरण, इतिहास, काम आ शिकायत-पत्र जाँचैत छथि। समान नाम आ साझा पत्राचार-पता अपने-आप धोखाधड़ीक निर्णायक प्रमाण नहि। वास्तविक स्वयंसेवी संस्था अपन शिकायतक पुरान पावती प्रस्तुत करैत अछि, जखन दोसर संस्थाक अनुदान-व्ययमे प्रश्न उठैत अछि। समान नामधारी व्यक्तिक पहिचानक उलझन सेहो अन्वेषणक विषय बनैत अछि। अन्तमे यूट्यूब प्रचारक गोपनीय भुगतानक सूचना भेटैत अछि। एकटा संस्थागत नामक विवाद डिजिटल प्रचार-कारोबार धरि पहुँचि जाइत अछि।

६८. स्वरक विज्ञापन

झूठक निर्यात

मुम्बईमे कबीर लोकप्रिय यूट्यूब संचालक निहाल चौधरीक कार्यक्रम ‘लोकक आवाज’मे जुआक प्रचारसँ मिलैत चारि सेकण्डक चमकक स्रोत खोजैत अछि। निहालक किछु रिपोर्टक वास्तविक जनहितकारी योगदानक मान्यता राखैत कबीर भुगतान, सम्पादन-स्वीकृति आ प्रसारणक बाद देखायल कड़ीक अधिकार जाँचैत अछि। निधि आवश्यक सार्वजनिक कागज दैत छथि, निजी बैंक-अभिलेख लेल विधिसम्मत अनुरोधक शर्त रखैत छथि। सम्पादक शैवालकेँ अज्ञात आवाजक अंश आ खाली अनुमति-पाँति भेटैत अछि। मूल रिकॉर्डिंग मँगाए बिना आरोप नहि लगाओल जाइत।

६९. दू स्त्रीक दूरी

झूठक निर्यात

अरीजोनाक ईशा आ दिल्लीक साराक दूरस्थ आत्मीय सम्बन्धक भीतर विश्वास, कामक दबाव आ निजी जीवनक सुरक्षा प्रश्न बनैत अछि। तकनीकी अभिलेखक सहमति आ प्रभावित लोकक गोपनीयताक विषयमे दुनू अपन-अपन जिम्मेदारी निभबैत छथि। साराकेँ अनाम पत्र भेटैत अछि जाहिमे हांगकांगक कम्पनीक पुरान नाम आ कानूनी सहायता-संस्थाक पता लिखल अछि। पत्रमे छिपल मालिकाना खोजबाक आग्रह अछि, मुदा ओकर स्रोत विश्वसनीय नहि। सारा निजी विवरण ढाँकि अधिकृत अभिलेख बनबैत छथि। केओ हुनकर सम्बन्धक विश्वास भंग कऽ अनुसन्धानक दिशा बदलय चाहैत अछि कि नहि, ई शंका उठैत अछि।

७०. विदेशी कम्पनीक रङ्ग

झूठक निर्यात

हांगकांगमे मेघना सेन तारा लामाक पुरान नोट, कम्पनीक बदैलल नाम आ वर्तमान निदेशकक सार्वजनिक विवरणक तुलना करैत छथि। तारा एखनो अनुपस्थित छथि, आ हुनकर परिवार उत्तरक प्रतीक्षामे अछि। अलग-अलग कम्पनीक एके जकाँ नाम, साझा ठेकाना आ बदलैत आवरणक कारण वास्तविक पहचान अस्पष्ट भऽ रहल अछि। मेघना प्रमाणित वर्तमान पञ्जीकरण मँगैत छथि, केवल पुरान सूचीपर निर्भर नहि रहैत छथि। वित्तीय तहसँ अधिक कठिन प्रश्न बनैत अछि—एकटा मनुष्यकेँ ओकर सही नाम आ वास्तविक जीवनसँ फेर जोड़ब।

७१. दान आ सौदा

झूठक निर्यात

ब्रुसेल्सक राहत-संस्था वास्तविक निर्धन परिवारकेँ सहायता दैत अछि, तेँ एलिस वान्देर समस्त विदेशी अनुदान रोकबाक अथवा सभ प्रश्न दबा देबाक दुनू चरम प्रस्तावक विरोध करैत छथि। दाता-समितिक अभिलेखमे ‘स्थानीय समन्वय’क अन्तर्गत परितोष झाक नाम आ पटनाक आयोजन-तिथि भेटैत अछि। भुगतान स्वीकृत भेल अथवा वास्तविक रकम पहुँचल, ई भेद स्पष्ट नहि। एलिस सहायता जारी रखि वित्तीय सत्यापन चाहैत छथि। पटनामे एक व्यक्तिक मृत्यु आ ब्रुसेल्सक अभिलेखमे नामक सम्भावित सम्बन्ध नवा प्रश्न बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

७२. धूपमे भेटल शव

झूठक निर्यात

पटनाक बाइपास लग अस्पष्ट परिस्थितिमे भेटल एकटा पुरुषक शवकेँ तुरन्त अन्तरराष्ट्रीय जुआ-जालक हत्या अथवा नशाक दुर्घटना कहि अफवाह फैलाओल जाइत अछि। पुलिस पहिने चिकित्सकीय जाँच आ परिजनक पहिचानकेँ महत्त्व दैत अछि। अनुपमा झा चाहैत छथि जे हुनकर भाइक नाम अथवा मृत्यु-विवरण गलत लिखल जाए तँ सुधारक अवसर भेटय। मृतकक वस्तुमे सागरवस्त्रसँ मिलैत निर्यात-बिलक प्रति भेटैत अछि। मजदूरक एकटा कथनसँ वास्तविक मालक हिसाब पटनामे होयबाक संकेत भेटैत अछि। मृत्युक कारण एखन अप्रमाणित रहैत अछि।

७३. मृतकक अपूर्ण पत्र

झूठक निर्यात

अनुपमा झा अपन मृत भाइक कोठलीमे सँ घरक हिसाब-बही आ एकटा अधूरा पत्र सुरक्षित निकालैत छथि। सामान्य पारिवारिक लिखावट भिन्न अभिलेखक तुलना लेल सहायक होयबो सकैत अछि, मुदा विशेषज्ञ प्रमाणक विकल्प नहि। मृतकक पत्रमे मजदूरक नामपर रोकल रकम आ निर्यात-सम्बन्धी संख्या जकाँ संकेत भेटैत अछि। नीलिमा पाँच प्रतिशतक समान संख्याकेँ एके अपराधक प्रमाण नहि मानैत छथि। पत्रक काटल तिथि परितोषक अन्तिम यात्रासँ चारि दिन पहिनुक अछि, जाहिसँ सूरतक खेपक वास्तविक समय-क्रम जाँचबाक आवश्यकता बढ़ैत अछि।

७४. मालक तौल

झूठक निर्यात

सूरतमे अदिति राणे मजदूर शंकरक प्रत्यक्ष कथन, गोदाम-पञ्जी आ मालक तोल-संख्या अलग-अलग जाँचैत छथि। कम्पनीक प्रतिनिधि चारि दिनक अन्तरकेँ दफ्तरी देरी कहैत अछि, मुदा मूल प्रमाणक आवश्यकता बनल रहैत अछि। शंकरक मजूरी-पावतीमे पाँच प्रतिशत कटौतीक पाँति देखाइत अछि, जकर अर्थ ओ स्वयं नहि बुझैत। मकाउक सहायता केन्द्रसँ पुरान भर्ती-पत्रक पता जाँचबाक सम्भावित सूचना पहुँचैत अछि। कपड़ाक निर्यात आ श्रमिकक आवागमनक कागजमे सम्बन्ध अछि कि नहि, से एखन प्रश्न मात्र अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

७५. देह आ दस्तावेज

झूठक निर्यात

मकाउक सहायता केन्द्रमे फरहीन नामक स्त्री अपन इच्छासँ भर्ती आ रोजगार-सम्बन्धी अनुभव कहैत छथि। मिरा हुनकर स्पष्ट सहमतिसँ सहयोग लेल उपस्थित रहैत छथि। फरहीन कागज बदलल गेल वा दोसर कागज देल गेल—एहि दुनूक बीच अपन अनिश्चितता स्वीकार करैत छथि। ओ भर्ती-संस्थाक पताक पुष्टि चाहैत छथि, मुदा अपन छवि, नाम आ परिवारक निजी जीवनक प्रचार नहि। अदितिक समक्ष निर्यातक ठेका आ भर्तीपत्रक पताक तुलना पहुँचैत अछि। एकहि भवनक चतुर्थ तल्लाक वास्तविक मालिक अस्पष्ट रहैत अछि।

७६. नोकरीक झूठ सपना

झूठक निर्यात

कोलकातामे सारा महिला-सहायता संस्था चलौनिहार शर्मिला दासक संग विदेशमे नोकरीक झूठ प्रलोभनक अभिलेख जाँचैत छथि। सुरक्षित आवास, निःशुल्क प्रशिक्षण आ रोजगारक विज्ञापनक महीन शर्त सभकेँ ठकबाक माध्यम बनि सकैत अछि। नन्दिताक बयानक सहमतिक सीमा आ निजी दस्तावेजक गोपनीयता सुरक्षित रखल जाइत अछि। नबीन पाल स्वयं गवाही देबाक इच्छा जनबैत अछि। तकर बाद ओकरा नहि बजएबाक धमकीपूर्ण सन्देश अबैत अछि। सारा सन्देश सुरक्षित कऽ सम्बन्धित प्राधिकरणकेँ सूचना दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

७७. सीमारेखाक राति

झूठक निर्यात

कोलकातामे अरुणिमा स्थानीय अधिकारी अनिर्बाण दत्तक अधिकार-क्षेत्रक सम्मान करैत नबीन पालक कथित हत्या-प्रयासक जाँचमे सहयोग करैत छथि। नबीन वाहन-दुर्घटना आ अज्ञात फोनपर धमकीक अनुभव कहैत अछि; आरोपीक नाम ओकरा ज्ञात नहि। खराब यातायात-संकेतक पूर्व शिकायत दुर्घटनाक वैकल्पिक सम्भावना बढ़बैत अछि। ‘समन्वय अधिकारी’ पदक उल्लेख दोसर वित्तीय कागजमे सेहो भेटैत अछि। विवेक याद दैत छथि जे ई व्यक्तिक नाम नहि, पदनाम होइ सकैत अछि। गवाहक वास्तविक डर मानल जाइत अछि, मुदा घटनाक कारण एखन अनिश्चित अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

७८. कागजक माफिया

झूठक निर्यात

विवेक सूद जुआ-भुगतान, निर्यात-लेखा आ कोलकाताक भर्ती-अभिलेखकेँ एकहि जाल कहि जोड़बाक पुरान प्रवृत्तिसँ स्वयंकेँ रोकैत छथि। नीलिमा हुनका ‘निश्चित तथ्य’, ‘अनुमान’ आ ‘गलत सिद्ध भऽ सकैत बात’क अलग सूची बनबबैत छथि। ‘कागजक माफिया’क सम्भावना देखितहुँ विभिन्न कार्यालय आ कारोबारक स्वतन्त्र अभिलेख चाही। बिना विशेष कारण खाताक रोक निर्दोष परिवारक जीविका नष्ट कऽ सकैत अछि। एहि चरणमे जाँचदल साझा मालिकक नामसँ अधिक नबीन पालक सुरक्षित बयानक व्यवस्थाकेँ प्राथमिकता दैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

७९. छाया बनल साक्षी

झूठक निर्यात

नबीन पाल अचानक औपचारिक बयान देबाक निर्णय स्थगित करैत अछि। नीलिमा आ अरुणिमा एहि परिवर्तनकेँ अनिवार्य बेईमानी नहि मानैत छथि; गवाह आ हुनकर परिवारक सुरक्षाक भयकेँ महत्त्व दैत छथि। सूरतक अभिलेखमे ‘क्षेत्रीय समन्वय अधिकारी’ पद भेटैत अछि, मुदा पदनामक समानता अपराधी व्यक्तिक पहिचान नहि। स्थानान्तरणक सम्भावित सूचीक समय नबीनक चुप्पीसँ मिलैत अछि, किन्तु सम्बन्ध सिद्ध नहि। अध्याय गवाहक चुप्पीकेँ जीवित रहबाक अधिकार आ संस्थागत दबावक बीच जाँचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

८०. झूठक निर्यात

झूठक निर्यात

सूरतक अदिति राणे मालक वास्तविक प्रवेश, बन्दरगाहक निकासी आ बैंकक भुगतानक तीन प्रमाण-श्रृङ्खला मिलबैत छथि। कपड़ाक गाँठी आ मशीनक पुर्जाक भिन्न वर्णन तथा चारि दिनक उलझल तिथि असामान्यता देखबैत अछि। मजदूर शंकर अपन मजूरीपर पाँच प्रतिशत कटौतीक अर्थ नहि बुझैत आ अनावश्यक आरोपसँ डेराइत अछि। समानान्तर जाँचमे एक अधिकारीक स्थानान्तरणक सूचना अबैत अछि। अदिति निरीक्षणक प्रत्येक निष्कर्ष मूल पञ्जीमे स्वीकृति आ समयसहित दर्ज करैत छथि, जाहिसँ अधिकारी बदललाक बादो प्रश्न दबि नहि जाए।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

लोकतन्त्रक अन्हार

अध्याय ८१–१००

८१. बदलीक दिन

लोकतन्त्रक अन्हार

अरुणिमा रावकेँ ‘प्रशासनिक आवश्यकता’क आधारपर पाँच दिन बाद प्रभावी होयवला स्थानान्तरण आदेश भेटैत अछि। ओ एकरा बिना प्रमाण षड्यन्त्र नहि कहैत छथि, मुदा सूरतक सुधारपत्र, नबीन पालक सुरक्षा आ परितोषक मृत्युसँ जुड़ल जाँचक निरन्तरता सुनिश्चित करबाक प्रयास करैत छथि। स्थानान्तरणक बीच फाइलक पृष्ठ, सील आ प्राप्ति-पञ्जी ठीकसँ हस्तान्तरित करब आवश्यक अछि। निखिलकेँ एकटा सुधारपत्रक प्राप्तकर्ता-हस्ताक्षरवाला खाना खाली भेटैत अछि। आदेशक समय आ अधूरा अभिलेखक सम्बन्ध नवा प्रशासनिक प्रश्न बनैत अछि।

८२. दफ्तरक खाली कुर्सी

लोकतन्त्रक अन्हार

अरुणिमाक स्थानान्तरणक बाद दिल्लीक जाँचक कुर्सी मानसी वर्माकेँ भेटैत अछि। नीलिमा आ निखिल पुरान अभिलेखक प्रवेश-अधिकार, हस्तान्तरण-सूची आ सूरतक वस्तु-विवरण सुधारपत्रक खोज करैत छथि। रेवती ‘फाइल हेरायल’ लिखबाक मसौदा रोकि वास्तविक स्थितिक पुष्टि करैत छथि। मानसी एकटा निरीक्षण-प्रविष्टि आ खाली हस्ताक्षर-खानाक समय जाँचबाक निर्देश दैत छथि। कोठलीमे बदलल व्यक्तिसँ संस्थागत अभिलेखक कानूनी अधिकार नहि बदलैत। खाली कुर्सीक रूपक व्यवस्थाक निरन्तरता आ सम्भावित अभिलेखीय हस्तक्षेप दुनूकेँ व्यक्त करैत अछि।

८३. हेरायल फाइलक प्रतिलिपि

लोकतन्त्रक अन्हार

अरीजोनाक ईशा सूरतक सुधारपत्रक डिजिटल प्रतिलिपि, समय-क्षेत्र आ प्रतिक निर्माण-प्रक्रियासँ सम्बन्धित सीमित तकनीकी टिप्पणी दैत छथि। दिल्लीक मानसी वर्मा आ विशेषज्ञ नमन सत्रह मिनटक रहस्यमय अन्तर जाँचैत छथि। किछु समय-भिन्नता सामान्य तकनीकी कारणसँ समझायल जाइत अछि, मुदा एकटा अन्तर शेष रहैत अछि। ‘द्वितीय प्रति’क स्याही मूल मुहरसँ अलग देखाइत अछि। ईशा मूल जब्त फाइलक विषयमे अधिकारबिना कोनो निर्णायक मत नहि दैत छथि। साराक संग हुनकर आत्मीय संवाद सेहो समय आ विश्वासक दोसर अर्थ खोलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

८४. सम्पादकक मौन

लोकतन्त्रक अन्हार

मुम्बईक सम्पादिका विद्या देशमुख पत्रकार रेवती कर्णक ‘बदली, पञ्जी आ नबीनक चुप्पी’ विषयक लेख प्रकाशनसँ पहिने जाँचैत छथि। फाइल वास्तवमे हेरायल अछि कि केवल अनधिकृत पहुँच रोकल गेल अछि, एहि अन्तरपर जोर रहैत अछि। विज्ञापन-विभागक दबाव, कानूनी प्रश्न आ अनाम धमकी सम्पादकीय स्वतन्त्रताकेँ चुनौती दैत अछि। ‘नवक्षितिज सेवा-संपर्क’क पुरान भुगतान-पावती भेटैत अछि, जाहिमे ‘विशेष आवरण-निर्माण’ लिखल अछि। भुगतानक तथ्य सिद्ध होइत अछि, मुदा धमकीक स्रोत वा भुगतानक उद्देश्य नहि।

८५. प्रणयक चित्र

लोकतन्त्रक अन्हार

दिल्लीमे प्रणयक स्वतन्त्र चित्र-प्रदर्शनी ‘जे देखाइत नहि’मे आत्मीय जीवन, प्रतीक्षा आ अदृश्य सत्ताक प्रतीकात्मक चित्र प्रस्तुत होइत अछि। एकटा अनजान युवक तीन सप्ताह पुरान पत्र माँगैत अछि आ ‘बन्द केवाड़ी’ नामक चित्रक फ्रेम तोड़ल जाइत अछि। घटनाक सम्बन्धमे निजी जीवनपर हमला वा छिपल धनक अफवाह उठैत अछि, मुदा प्रणय केवल प्रत्यक्ष देखल बात कहबाक आग्रह करैत अछि। जया द्वारा सुरक्षित लिफाफापर ‘मूल प्रति वापस’क मुहर आ नील चिह्न भेटैत अछि। चित्रक अधिकार आ लिफाफाक वास्तविक उद्देश्यक प्रश्न रहि जाइत अछि।

८६. बचायल पत्र

लोकतन्त्रक अन्हार

प्रणय अपन नामपर आयल पत्रक विषयमे स्वयं निर्णय लैत अछि आ प्राप्तिक प्रमाण सुरक्षित कऽ अधिकृत अधिकारीक समक्ष जाइत अछि। पत्रमे पुरान दृश्य-अधिकारक अनुमति रद्द मानि संशोधित प्रस्ताव स्वीकार करबाक आग्रह अछि। प्रणय स्पष्ट करैत अछि जे ओ अपन चित्रक सार्वजनिक प्रचारमे उपयोगक अनुमति नहि देने अछि। पत्रक संलग्नकमे सभाक पूर्व रात्रि ‘विशेष दृश्य-प्रयोग’ आ भुगतानक संकेत भेटैत अछि। मानसी जाँचक लेल मूल पत्र विधिपूर्वक सुरक्षित करैत छथि। कलाकारक सहमति आ सार्वजनिक प्रचारक वित्तक सम्बन्ध नवा अन्वेषणक विषय बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

८७. सभा आ सङ्कट

लोकतन्त्रक अन्हार

पटनामे डिजिटल ठगीसँ पीड़ित परिवारक शान्तिपूर्ण सुनवाईक सभा आ आक्रोश भड़कएवला दोसर प्रचार एकहि दिन चलैत अछि। प्राची आ नागरिक समिति बैंकक रोक, शिकायत आ धन-वसूलीक पारदर्शिता माँगैत छथि। रानी अपन संदेशमे मेहनतक पाँच सयक मोल समझएबाक आग्रह करैत छथि। अस्पष्ट हिंसक धमकीक सूचनापर प्रशासन जोखिम-मूल्याङ्कन करैत अछि, मुदा बिना प्रमाण सार्वजनिक आतंक नहि पसरबैत। सभा शान्तिपूर्वक सम्पन्न होइत अछि। तकर बाद दू अखबार एकहि आयोजनक विरोधी समाचार प्रकाशित करैत अछि; मूल छविक तिथि जाँचबाक प्रश्न उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

८८. दू अखबारक दू सच

लोकतन्त्रक अन्हार

एकटा अखबार पटनाक शान्त सभाकेँ हिंसाग्रस्त देखबैत अछि, जखन दोसर वास्तविक शान्तिपूर्ण आयोजनक समाचार दैत अछि। रेवती कर्ण आ आकृति छविक स्थल, विद्युत्-खम्भा, पुरान मेला आ रसोइघरक धुआँक आधारपर चित्रक भ्रामक पुनःप्रयोग चिन्हैत छथि। अलग प्रचार-सामग्रीक चिह्न ‘लोकदर्पण प्रचार सेवा’ दिस संकेत दैत अछि, मुदा साझा एजेन्सी वा केवल नकलक प्रश्न अनिर्णीत अछि। शिवशंकरक मोहल्लामे झूठ समाचारसँ व्याप्त भय देखाइत अछि। अध्याय प्रमाणित छवि आ सन्दर्भरहित प्रचारक सामाजिक असर स्पष्ट करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

८९. रातिक चेतावनी

लोकतन्त्रक अन्हार

शिवशंकर मिश्रक मोहल्लामे राति दुकान बन्द करबाक आ बच्चाकेँ घरमे रोकबाक अप्रमाणित चेतावनी पसरैत अछि। बेटी माधवी लोककेँ मूल अधिकृत स्रोत जाँचबाक परामर्श दैत छथि। शिवशंकर अपन पहिनुक डिजिटल ठगीक अनुभव साझा करैत डरक आधारपर अन्ध विश्वास नहि करबाक पाठ कहैत छथि। रातिमे पैघ आवाज होइत अछि, जकर कारण तुरन्त स्पष्ट नहि होइत। भोरसँ पहिने सड़कक कात निश्चेष्ट व्यक्ति भेटबाक सूचना अबैत अछि। अधिकारी शिवशंकरसँ केवल सुनल आवाजक सही समय माँगैत छथि; हुनकर निजी भय सम्भावित साक्ष्य बनैत अछि।

९०. हत्या कि दुर्घटना

लोकतन्त्रक अन्हार

पटनाक पुरान छापाखानाक पाछाँ नरेश नामक युवक मृत भेटैत अछि। स्थानीय उपनिरीक्षक शशिभूषण मृत्यु हत्या अछि कि दुर्घटना, से चिकित्सकीय परीक्षणसँ पहिने नहि कहैत छथि। नरेशक परिवार, रेनकोट, सड़कक दशा आ मोबाइल भुगतान-अनुरोधक जानकारी अलग दर्ज होइत अछि। मानसी वर्मा छापाखानाक नाम प्रणयक विवादित पत्रमे देखितहुँ स्थानीय मृत्यु-जाँचक स्वतन्त्रता मानैत छथि। रेवती सनसनीखेज ‘हत्या’ शीर्षक नहि अपनबैत छथि। मृत्युसँ पहिने नरेशकेँ भुगतान माँगनिहार व्यक्तिक पहिचान नवा महत्त्वपूर्ण प्रश्न बनैत अछि।

९१. भाड़ाक आदेश

लोकतन्त्रक अन्हार

आरव मलकानी नरेशक मृत्यु-सूचनाक बाद बैंकक मूल पुष्टि, भाड़ा-आदेश आ अपन अनुमोदन-पत्रक असमानता फेर जाँचैत छथि। वकीलक संग मानसी वर्माक समक्ष बयान दैत ओ बतबैत छथि जे मंजूर रकम, वास्तविक कटौती आ लाभार्थीक नाममे अन्तर अछि। ‘सारंग व्यापार परामर्श’कैं ओ आदेशक मालिक बुझैत छलाह, मुदा कम्पनी-पञ्जीमे दर्ज निदेशक आ विशेष व्ययक आदेशकर्ता एक व्यक्ति नहि। अनुरागक मौखिक सूचनापर विश्वासक सीमा सेहो स्पष्ट होइत अछि। अभिलेखक सम्भावित ‘मालिक’ केवल पहिल दृश्य चेहरा होयबाक शंका उभरैत अछि।

९२. दू हजार करोड़क दुसर आँकड़ा

लोकतन्त्रक अन्हार

नीलिमा नव जमा, खेलक कुल दाँव, निकासी आ सेवा-भुगतानक चार पृथक् श्रेणी बनाकऽ दू हजार करोड़क बहुचर्चित आँकड़ा फेर जाँचैत छथि। उदाहरणसँ बुझाओल जाइत अछि जे एकहि रकम पचास बेर खेलेलासँ विशाल लेनदेनक संख्या बनि सकैत अछि, मुदा ओ नवा आय नहि। आरवक भाड़ा-आधारित मद आ हांगकांगक सेवा-व्यय तालिकामे मिलैत सन्दर्भक परीक्षा शुरू होइत अछि। ‘क्षेत्रीय उपस्थिति’क भुगतान अलग धन-स्रोतसँ आयल सन लगैत अछि। मेघना एहि प्रविष्टिक छओ मास पुरान रूप देखबाक सूचना दैत छथि।

९३. धनक सुरागक अन्हार

लोकतन्त्रक अन्हार

हांगकांगमे मेघना सेन पुरान लेखा-सहयोगी जुलियन चान आ इरेन लोसँ मूल सेवा-अनुबन्धक सन्दर्भ बुझैत छथि। इरेन विराज सहनीसँ जुड़ल एकटा वास्तविक परामर्श-काजक प्रमाणक संकेत दैत छथि। एहि तथ्यसँ पहिनुक सम्पूर्ण सेवा-व्ययकेँ झूठ कहबाक निष्कर्ष संशोधित करब आवश्यक होइत अछि। तारा लामाक अनुपस्थितिक प्रश्न सेहो बनल अछि। मेघना विपक्षक जिरह, साक्ष्यक वैधानिक स्वीकृति आ गवाहक गोपनीयताक शर्त स्वीकार करैत छथि। मानसीकेँ विराजक बचाव पक्ष मूल अनुबन्ध प्रस्तुत करबाक आवेदन दैत अछि।

९४. आरोपितक अधिकार

लोकतन्त्रक अन्हार

विराज सहनीक बचाव पक्ष न्यायालयमे एकटा सेवा वास्तवमे देल गेल होयबाक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। मानसी आ नीलिमा निष्पक्ष जाँच लेल सत्यापित वैध काज स्वीकार करैत छथि, जखन आन संदिग्ध भुगतानक परीक्षण जारी रखैत छथि। रेवती एकरा अन्तिम दोषमुक्ति अथवा निर्णायक फैसला नहि कहैत छथि। पुरान कार्यपत्रक ‘कागजी’ सन सामान्यीकृत आरोप सुधारेबाक आवश्यकता पड़ैत अछि। बचाव पक्षकेँ भेटल नवा पावतीपर ‘द्वितीय स्वीकृति—क्षेत्रीय कार्यालय’ देखाइत अछि। वास्तविक सेवा सिद्ध भेने सेहो दोसर हस्ताक्षरक उत्तरदायित्व नवा प्रश्न बनि जाइत अछि।

९५. दोषक छोट गलती

लोकतन्त्रक अन्हार

स्थानान्तरित अरुणिमा अपन पहिनुक जाँच-सारमे अनुवाद-सेवाक किछु वैध बिल गलत ढंगसँ संदिग्ध कहल गेल छल, से लिखित रूपमे सुधार करैत छथि। मानसी एही सुधारक आधारपर वास्तविक वेतन पौनिहार खाताक अन्यायपूर्ण सामान्यीकरण हटबैत छथि। नीलिमा स्वीकार करैत छथि जे प्रारम्भिक संदेहकेँ पूरे निष्कर्ष बनबएबाक गलती भेल छल। त्रुटि सुधारक क्रममे ‘अनुदान-प्रचार अनुवाद’क एकटा छोट बिल आ ब्रुसेल्सक पुरान पता नवा वित्तीय सूत्र बनैत अछि। अध्याय गलती स्वीकार करबकेँ न्यायिक सत्यनिष्ठाक अनिवार्य अङ्ग सिद्ध करैत अछि।

९६. अनुदानक अनाम स्रोत

लोकतन्त्रक अन्हार

ब्रुसेल्समे एलिस वान्देर वास्तविक राहत-कार्य आ ‘व्यक्तिगत सहयोगी समूह’क अनाम अनुदानक हिसाब अलग राखैत छथि। स्वयंसेविका इमान दुराँ लाभार्थीकेँ मिलल सहायताक पावती दैत छथि, मुदा उच्च स्तरक दाता-स्वीकृति हुनका ज्ञात नहि। नादिया ‘विशेष सहभागिता’क भुगतान आ भिन्न तारीखवाली अनुमति-पञ्जी जाँचैत छथि। एकटा पुरान पावतीपर तीन अलग लिखावट भेटैत अछि, जकर एक निर्देश अछि—‘मूल अधिकार-पत्र सोफिया लग’। माल्टाक सोफिया वेल्लाक भूमिका सत्यापित करबाक आवश्यकता बनैत अछि।

९७. हस्ताक्षरक तेसर हाथ

लोकतन्त्रक अन्हार

माल्टामे सोफिया वेल्लार्कें हुनकर नामसँ जुड़ल दू अलग अधिकार-पत्र भेटैत अछि। मूल कानूनी सलाहक मसौदामे जकर अनुमति नहि छल, दोसर कागजमे दाताक भुगतान-पथ बदलबाक ‘प्रतिनिधिक अधिकार’ जोड़ल अछि। साझा ठेकाना आ प्राप्ति-संख्या रहितहुँ दस्तावेजक वास्तविक स्रोत संदिग्ध अछि। सोफिया मूल सील, प्रति आ संग्रहण-इतिहास सुरक्षित करबैत छथि; गवाह माग्दाक सुरक्षाक आग्रह सेहो करैत छथि। एकटा पन्नामे ‘निष्पादन-अधिकार भारतमे पुष्टि पश्चात्’ लिखल अछि। तेसर हस्ताक्षरक स्रोत दिल्लीक अभिलेखमे खोजबाक संकेत भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

९८. स्थानान्तरणक पाछाँ

लोकतन्त्रक अन्हार

अरुणिमा अपन स्थानान्तरणक प्रशासनिक फाइलक प्रमाणित प्रति जाँचैत छथि। नियुक्ति-रिक्ति आ सक्षम अनुमोदन सामान्य देखाइत अछि, मुदा एकटा निवेदन आदेशसँ पहिने विचारल गेल कहल जाइत अछि, जखन ओकर प्राप्ति-मोहर आदेशक बादक अछि। डिजिटल पञ्जीमे सेहो प्रवेश-समय आ 'पूर्वसँ प्राप्त' टिप्पणी अलग देखाइत अछि। मूल ईमेल अनुपलब्ध अछि। अरुणिमाकेँ फाइलक खोज रोकबाक अनाम धमकी भेटैत अछि, जकरा ओ विधिसम्मत दर्ज करबैत छथि। 'समय सिद्ध, कारण शेष'—एही सावधानीक संग प्रशासनिक हस्तक्षेपक प्रश्न बनल रहैत अछि।

९९. अन्तिम प्रचार

लोकतन्त्रक अन्हार

देशभरि ‘आइ एके सच’ नामक प्रचारमे अलग-अलग नगरक सभा, आगि आ पुलिसक दृश्य जोड़ि एकटा झूठ चलचित्र बनाओल जाइत अछि। कबीर मूल फुटेज आ विज्ञापनक सम्पादन-जिम्मेदारी खोजैत अछि; यूट्यूबर निहाल अपन पुरान कार्यक्रमक अनधिकृत उपयोगपर आपत्ति करैत अछि। प्रणय निजी पत्रक अनुमतिबिना प्रचार नहि करबाक मर्यादा दोहरबैत अछि। सम्पादकीय भेंटक भेसमे कबीरकेँ एक विशेष स्थानपर बजा कऽ हमला कएल जाइत अछि। घायल कबीर पुलिसकेँ सूचना देबाक आग्रह करैत अछि; हमलाक उद्देश्य एखन स्पष्ट नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१००. लोकतन्त्रक अन्हार

लोकतन्त्रक अन्हार

‘लोकतन्त्रक अन्हार’मे अप्रमाणित विदेशी धनक आरोप, सार्वजनिक सभाक प्रतिष्ठा आ मीडिया-प्रचारक प्रभाव परस्पर जुड़ैत अछि। कबीरपर भेल हमलाक जाँच अलग चलैत अछि। मानसी ‘लोकदर्पण प्रचार सेवा’सँ ध्वनि-व्यवस्थाक भुगतान आ दो व्यक्तिकेँ भेजल रकमक वास्तविक प्रयोजन जाँचबाक निर्देश दैत छथि। रेवती ‘सभाक आवाज आ भुगतानक चुप्पी’ शीर्षकसँ सावधानीपूर्ण समाचार प्रकाशित करैत छथि। तकर तुरन्त बाद नबीन पालक गवाह-सुरक्षासँ जुड़ल विदेशक नामवाला संदिग्ध कागज भेटैत अछि, जकर तारीख वास्तविक प्रस्तावसँ पहिनुक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

अन्तिम पाँच प्रतिशत

अध्याय १०१–१२०

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१०१. आवाज फेर आयल

अन्तिम पाँच प्रतिशत

कबीर हमलाक बाद दिल्लीक अस्पतालमे होशमे अबैत अछि। प्रणय ओकरा संग रहि शारीरिक आ मानसिक सुरक्षाकेँ प्राथमिकता दैत अछि। जाँचाधिकारी हमला, अपहरणक सम्भावना, घटना-स्थलक गवाह आ उपलब्ध दृश्यकेँ अलग-अलग जाँचबाक निश्चय करैत छथि। प्रणय अपन कला-सम्बन्धी पत्रक मूल प्रमाण सुरक्षित करैत अछि; घायल कबीरपर तत्काल साक्ष्य देखबाक दबाव नहि दैत। माल्टासँ सोफियाक कार्यालय माग्दा बोरगक नामवाली सूची सम्बन्धमे प्रश्न पठबैत अछि। नामक आगाँ नील चिह्न आ ‘पूर्वस्वीकृति’क उल्लेख नवा साक्ष्य-सूत्र बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१०२. साराक सत्य

अन्तिम पाँच प्रतिशत

अरीजोनाक ईशा आ दिल्लीक सारा आपसी सम्बन्धमे चुप्पी, पेशागत गोपनीयता आ व्यक्तिगत ईमानदारीक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। दुनू मानैत छथि जे प्रेममे सच बाजबक अर्थ गोपनीय दस्तावेज अनुचित रूपेँ खोलि देब नहि अछि। मानसी तकनीकी सेवा-अभिलेखमे ‘स्वीकृति’ शब्दक मूल स्रोत आ अनुवादक पहिचान जाँचबाक वैधानिक अनुरोध करैत छथि। मूल सर्वर-नोंद सुरक्षित रखबाक निर्देश देल जाइत अछि। लताक असल अभिलेख जाँचल बिना अभियोगक भाषा नहि बदलल जाइत। निजी संवाद आ सार्वजनिक अनुसन्धान दुनूमे भरोसा प्रमाणित सीमाक सम्मानसँ बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१०३. मूल समयक प्रतिमा

अन्तिम पाँच प्रतिशत

अरीजोनाक लता देसाइ स्थानीय, ग्राहक-क्षेत्र आ सार्वत्रिक समयक तीन अलग घड़ीक आधारपर अभिलेखक तिथि-सङ्गति जाँचैत छथि। प्रारम्भिक तकनीकी अनुरोध, वास्तविक स्वीकृति आ भारतमे विज्ञापन जारी होएबाक समयमे अन्तर स्पष्ट होइत अछि। सत्रह मिनटक पुरान प्रश्नसँ आगाँ ‘भारतक अभिलेखीय सम्पर्क बिन्दु’ द्वारा पुष्टि कखन होयबाक छल, से महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। दिल्लीमे मानसी पठाओल आ निर्णीत समय अलग दर्ज करबैत छथि। ‘अस्थायी प्रतिनिधि, मूल लाभार्थीक आदेशाधीन’क उल्लेख वास्तविक निर्णयकर्ता-स्वामित्वक खोज खोलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१०४. एतय नकली मालिक

अन्तिम पाँच प्रतिशत

हांगकांगमे मेघना सेन कम्पनीक कानूनी निदेशक, बैंक-हस्ताक्षरकर्ता आ वास्तविक भुगतान-नियन्त्रकक भूमिका अलग-अलग जाँचैत छथि। चेन विंग-हो अपन निर्देशक-पद स्वीकार करैत छथि, मुदा कथित अधिकार-पत्रपर हस्ताक्षर हुनकर नहि बुझाइत अछि। इरेन आ विधिक सहयोगी यान मूल अभिलेखक सत्यापनक सीमा स्पष्ट करैत छथि। ‘मूल लाभार्थी-सूचनाक अद्यतन’ शीर्षक अलग लिफाफाक उल्लेख भेटैत अछि, जकर नाम विधिसम्मत प्रक्रिया बिना नहि खोलल जा सकैत। माल्टाक प्राप्तकर्ता आ हांगकांगक लाभार्थी एक छथि कि नहि, ई प्रश्न अन्तरराष्ट्रीय वित्तीय शृङ्खला आगाँ बढ़बैत अछि।

१०५. धनक हेरायल ठेकाना

अन्तिम पाँच प्रतिशत

माल्टामे सोफिया वेल्ला परामर्श-शुल्क, वास्तविक प्राप्ति आ ‘सम्पूर्ण भुगतान’क असमान रकम मिलबैत छथि। माग्दा बोरगक गवाहीक सुरक्षा आ निजी नामक गोपनीयताकेँ पहिने रखल जाइत अछि। ‘मेरीडियन अनुपालन परामर्श’ नामक प्राप्तकर्ता कम्पनीक साझा कार्यालय-पतासँ तत्काल अपराध सिद्ध नहि होइत। एकटा नवा सम्भावित गवाह स्वतन्त्र कानूनी सलाह माँगैत अछि। ओकर पत्रमे राजगीरक बन्द प्रशिक्षण केन्द्रक पुरान लेखा-पृष्ठक उल्लेख अछि, जाहिसँ विवेकक अधूरी पोथीक सम्भावित सम्बन्ध फेर महत्त्व पबैत अछि।

१०६. गवाहीक कीमत

अन्तिम पाँच प्रतिशत

राजगीरक प्रशिक्षण केन्द्रमे विवेक सूद अपन पुरान लेखा-पञ्जीमे हस्तक्षेपक वास्तविकता अधिक स्पष्ट करैत छथि। ओ स्वीकार करैत छथि जे बिचौलियाक भुगतान आ सहायता-व्यय एकहि पृष्ठपर देखिकऽ निर्दोष कर्मचारीकेँ गलत आरोपसँ बचएबाक उद्देश्यसँ पृष्ठ फाड़ि अलग रखलनि। मुदा तुरन्त सूचना नहि देब आ अधूरा पृष्ठकेँ पूरा कहब हुनकर गंभीर त्रुटि छल। मानसी, नीलिमा आ अधिकृत अधिकारी बयानक पुरान-नव अन्तर अलग दर्ज करैत छथि। अपराधबोधसँ अधिक महत्त्व मूल पृष्ठक स्थान, अखण्डता आ तथ्यात्मक स्वीकारोक्तिक भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१०७. फाड़ल पृष्ठ

अन्तिम पाँच प्रतिशत

विधिसम्मत हस्तान्तरण आ स्वतन्त्र कर्मचारीक उपस्थितिमे विवेकक फाड़ल पृष्ठसँ सम्बन्धित सामग्रीक निरीक्षण होइत अछि। नीलिमा देखैत छथि जे पाँच प्रतिशतक एकटा भुगतान पुरान धारणासँ भिन्न आधारपर कएल गेल छल। परितोषक अधूरा पत्र आ शंकरक मजदूरी-कटौतीक रकम-अवधि नहि मिलैत, तें पुरान सम्भावित सम्बन्ध काटि देल जाइत अछि। पृष्ठक पिछला दिस बैंकक ‘अनुपालन-चेतावनी’क प्रतीक्षाक पाँति भेटैत अछि। आब प्रश्न अछि—चेतावनी देनिहार अधिकारी के छलाह आ भुगतान अनुमोदनसँ पहिने ओकरा सुनल गेल कि नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१०८. बैंकक भीतरक विरोध

अन्तिम पाँच प्रतिशत

मुम्बईक बैंकमे आरव मलकानी पुरान अनुमोदन आ अनुपालन विभागक चेतावनीक जाँचमे उपस्थित होइत छथि। नलिनी देशमुखक चेतावनी एकटा विशिष्ट रकम रोकबाक संग गलत व्यक्तिपर कार्रवाई रोकबाक आग्रह सेहो करैत छल। बैंकक आन्तरिक बैठक आ निर्णय-नोंदसँ जिम्मेदारी अनेक विभागमे बँटल देखाइत अछि; केवल एक हस्ताक्षरसँ सम्पूर्ण षड्यन्त्र सिद्ध नहि। विदेशी परिशिष्टकेँ अनुपयोगी मानि हटएबाक निर्णयपर प्रश्न उठैत अछि। ओकर मूल भाषा आ प्रमाणित अनुवादक तुलना करबाक लेल ब्रुसेल्सक एलिस आ रेवतीसँ सम्पर्कक बाट खुलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१०९. बहुभाषी साक्ष्य

अन्तिम पाँच प्रतिशत

ब्रुसेल्समे एलिस वान्देर एकहि वित्तीय पाँतिक दू अनुवादमे महत्त्वपूर्ण अर्थान्तर चिन्हैत छथि—वास्तविक ‘प्राप्तकर्ता’ आ ‘प्राप्तिक लेल मनोनीत व्यक्ति’ एक नहि। भारत, हांगकांग, मकाउ, माल्टा, बेल्जियम आ अरीजोनाक अलग स्रोतक कागज सीमित अधिकार-क्षेत्रमे जाँचल जाइत अछि। बीजिंगक साक्षात्कारकेँ बिना अधिकार सातम प्रमाणित दस्तावेज नहि मानल जाइत। मूल पञ्जीक तिथि आ कार्यालय बन्द रहबाक सूचना सेहो प्रश्न उठबैत अछि। एलिस निर्णयक समयसँ पहिने उपलब्ध मूल भाषाक प्रति आ प्राप्तिक स्वतन्त्र प्रमाण माँगैत छथि।

१११०. साक्ष्यक सात मेज

अन्तिम पाँच प्रतिशत

दिल्लीमे मानसी वर्माक अध्यक्षतामे सात मेजपर अलग-अलग साक्ष्य-शृङ्खला व्यवस्थित कएल जाइत अछि। बैंकक चेतावनी, सेवा-भुगतान, रोजगार-शोषण, निर्यात, प्रचार आ अन्तरराष्ट्रीय दस्तावेजक प्राप्तिक इतिहासकेँ स्पष्ट पृथक् रखल जाइत अछि। अरुणिमा स्थानान्तरित अधिकारीक रूपमे केवल पूर्व काजक स्पष्टीकरण दैत छथि। पाँच प्रतिशतक एक विशेष रकम वैध सेवा-अनुबन्धसँ जुड़ल भेटलासँ विराजक विरुद्ध ओ आरोप संशोधित करबाक आवश्यकता बनैत अछि। मुदा भुगतान रोकब अथवा जारी करबाक निर्णय-अधिकारवाला तेसर पद-संकेत सातम मेजक जाँच अधूरा रखैत अछि।

१११. जाहि नामक आशा

अन्तिम पाँच प्रतिशत

विराज सहनीक बचाव पक्ष एकटा क्षेत्रीय अनुवाद आ आयोजन-सहायताक वास्तविक सेवा लेल भेल भुगतानकेँ अवैध कमीशनक श्रेणीसँ हटएबाक माँग करैत अछि। न्यायिक जाँच ओहि विशेष रकमक गलत वर्गीकरण सुधारबाक दिशा लैत अछि, जखन आन आरोप यथावत् जाँचाधीन रहैत अछि। रेवती समाचारमे ‘एकटा रकमक आरोप सुधरल, शेष अनुसन्धान जारी’ शीर्षक चुनैत छथि। विराजकेँ एकटा पुरान आवाजक सम्भावित पहिचानक विषयमे अनुमानबिना समय-स्थान लिखबाक सलाह भेटैत अछि। वास्तविक निर्णयकर्ता के, ई प्रश्न फेर मुख्य बनैत अछि।

११२. सुधारल अभियोग

अन्तिम पाँच प्रतिशत

न्यायालयमे पहिनुक आरोप-सारक स्थानपर संशोधित अभियोग प्रस्तुत कएल जाइत अछि। एक विशिष्ट सेवा-भुगतानक अनुचित आपराधिक वर्गीकरण हटैत अछि, मुदा संदिग्ध चालान, भिन्न माल-विवरण आ अन्य लेनदेनक परीक्षण जारी रहैत अछि। समान कार्यालय-पता वा नील मुहरक आधारपर साझा षड्यन्त्रक दावा नहि कएल जाइत। प्रत्येक साक्ष्यक स्रोत आ स्वीकार्यता लिखित स्पष्ट होइत अछि। माग्दा एक भारतीय महिलाक सुरक्षाक आग्रह करैत छथि, मुदा नाम नहि खोलैत। मानसी ओकरा विधिसम्मत गोपनीय माध्यमसँ विवरण देबाक निर्देश दैत छथि।

१११३. मिराक अपना घर

अन्तिम पाँच प्रतिशत

मिरा कोलकाताक कियायाक छोट कोठलीमे अपन स्वतन्त्र जीवनक आरम्भ करैत छथि। लम्बा समय दोसराक नियन्त्रणमे रहलाक बाद ओ अपन घर, श्रम, रोजी आ बयानक विषयमे स्वयं निर्णय लेबाक अधिकार फेर अनुभव करैत छथि। समीर, फरहीन आ शर्मिलाक सहयोग रहितहुँ ओ ककरो संरक्षणकेँ अपन इच्छाक विकल्प नहि बनएबय चाहैत छथि। सुरक्षित नामसँ दूरस्थ गवाहीक अनुरोध प्रारम्भिक परीक्षण लेल स्वीकार होइत अछि; अन्तिम अनुमति बाकी अछि। सुजाताक खोज अधूरी रहितहुँ मिरा अपन जीवन रोकि नहि रखैत छथि।

१९४. रानीक पाँच रुपैआ

अन्तिम पाँच प्रतिशत

दरभंगाक रानी देवीक दोकानमे पाँच रुपैयाक सिक्का आ वास्तविक बिक्री-पावतीक माध्यमेँ पैघ वित्तीय अपराधक विपरीत छोट मेहनतक हिसाबक गरिमा उभरैत अछि। अमरेश जमा, दाँव आ वास्तविक बिक्रीक अर्थक भेद बुझि चुकल अछि। शिवशंकरक स्वास्थ्य आ परिवारक जीवन धीरे-धीरे सामान्य होयबाक दिशामे बढ़ैत अछि। रानी अपन पुरान संकटक बात दिनभरि दोहरबय नहि चाहैत छथि। बैंकक उत्तरक प्रतीक्षामे अमरेश अनुमानक बदला शिकायतक पावती सुरक्षित रखबाक निर्णय लैत अछि। पाँच रुपैयाक स्पष्ट हिसाब आशाक प्रतीक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१९५. खाताक अन्तिम मालिक

अन्तिम पाँच प्रतिशत

माल्टाक सोफिया आ हांगकांगक मेघना कम्पनी-पञ्जी, सेवा-अनुबन्ध आ बैंकक अधिकार-पत्रक मिलान करैत छथि। निदेशक चेन विंग-हो, प्रतिनिधि अनुराग बेदी आ वास्तविक निर्णयाधिकारीक भूमिका अलग-अलग देखाइत अछि। दू भुगतान पूरा भेल अछि, तेसर मात्र स्वीकृतिक चरणमे, तें सभ रकम एकहि अन्तिम मालिक धरि पहुँचल मानल नहि जाइत। अनुराग अनेक पञ्जीमे उपस्थित छथि, मुदा ओ सम्पूर्ण अपराध-जालक मालिक सिद्ध नहि। जाँचक केन्द्र 'खाता ककर नामपर अछि'सँ बढ़ि 'धन चलएबाक अन्तिम आदेश के दैत अछि' बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

१९६. छापाक दोसर भोर

अन्तिम पाँच प्रतिशत

मानसी वर्माक नेतृत्वमे दोसर समन्वित छापामारी न्यायिक आदेशक सीमामे कएल जाइत अछि। अरुणिमा पुरान अनुभव बतएबाक लेल उपस्थित छथि, मुदा कारबाहीक प्रमुख अधिकारी नहि। वास्तविक अपराध-सन्देह, निर्दोष कर्मचारीक निजता आ पीड़ितक सुरक्षा एकसंग ध्यानमे राखल जाइत अछि। शिवशंकर वास्तविक आधिकारिक कारबाहीक समाचारसँ सेहो पुरान नकली गिरफ्तारीक भय महसूस करैत छथि। प्रतिनिधि-कक्षसँ महत्त्वपूर्ण वित्तीय निर्णय-पञ्जी सुरक्षित कएल जाइत अछि, जकर स्वतन्त्र परीक्षण बाकी अछि। हांगकांगमे अनुराग बेदीक हस्ताक्षरवाला होयबाक दावा करैत अनाम पत्र भेटैत अछि।

१९७. भागल लोकक पत्र

अन्तिम पाँच प्रतिशत

हांगकांगमे मेघना सेनकेँ अनुराग बेदीक नामसँ जुड़ल अनाम पत्र भेटैत अछि। वकील यान ताइ पत्रक प्राप्ति, मूल आवरण आ लिखावट सुरक्षित करबैत छथि। पत्रमे पुरान खाताक नाम बदलब आ असली निर्णयकर्ता नव पर्दाक पाछाँ रहबाक दाबी अछि। इरेन लोकक पुरान ग्राहक-पञ्जीमे पत्रक एक नाम मिलैत अछि, मुदा रकम नहि। माल्टासँ नवा कम्पनीमे पुरान निर्णय-समूहक नाम भेटबाक सूचना पहुँचैत अछि। पत्रक सभ दाबी सत्य मानल नहि जाइत; तथापि नाम बदललाक बादो वित्तीय जाल चलि सकबाक आशंका बनैत अछि।

१११८. प्रतिपरीक्षाक दिन

अन्तिम पाँच प्रतिशत

दिल्लीक अदालतमे प्रतिपरीक्षाक दौरान प्रमाणक मूल स्रोत, तीन दिन पछाति सत्यापित प्रतिलिपि आ जप्ती-सँ सत्यापन धरि ओकर नियन्त्रणक प्रश्न उठैत अछि। बचाव पक्ष वास्तविक सेवा-भुगतानक गलत वर्गीकरणक सुधार राखैत अछि; अभियोजन आन स्वतन्त्र बैंक-लेनदेनक परीक्षणक आधार बतबैत अछि। अनाम पत्रक दाबी स्वतन्त्र पुष्टिबिना स्वीकार नहि होइत। न्यायालय स्पष्ट करैत अछि जे एहि दिन अन्तिम दोषसिद्धि वा दोषमुक्ति नहि भेल। रानी अपन पाइक उत्तर लेल लम्बा प्रक्रियासँ व्यथित छथि। नीलिमा दोषक प्रमाण आ पीड़ितक आर्थिक हानि दुनूक पृथक् सत्यक महत्त्व लिखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

११९. फेर भेटल धन

अन्तिम पाँच प्रतिशत

किछु रोकल धनक खोज आ वसूलीक सम्भावना उभरैत अछि, मुदा बैंक स्पष्ट करैत अछि जे टेलीविजनपर घोषणा मात्रसँ कोनो पीड़ितक खातामे रकम स्वतः वापस नहि पहुँचैत। शिवशंकर आ माधवी वैध दावा, मूल भुगतान-साक्ष्य आ न्यायिक आदेशक प्रक्रियाक जानकारी लैत छथि। रानीक दैनिक व्यवसायपर लगल सीमित रोक फेर जाँचबाक प्रक्रिया शुरू होइत अछि, पूर्ण राहत घोषित नहि। आरव अपन पुरान लाभक दावीकेँ स्वतन्त्र हिसाबक अधीन राखैत छथि। रेवती रोकल रकम, चिन्हित प्रवाह आ वास्तविक उपलब्ध धनकेँ जोड़ि झूठ सफलता-अङ्क नहि बनबैत छथि।

१२०. अन्तिम पाँच प्रतिशत

अन्तिम पाँच प्रतिशत

अन्तिम अध्यायमे दरभंगाक रानीक दोकानपर अमरेशक हाथमे जुआक दाँव नहि, वास्तविक सामानक बिक्रीसँ पाओल पाँच सयक पावती अछि। नीलिमाक समेकित प्रतिवेदनमे जे सिद्ध अछि, ओतबे लिखल जाइत अछि; अप्रमाणित आरोप आ अधूरी धन-वसूलीकेँ विजय नहि कहल जाइत। मिरा अपन जीवन बनबैत छथि, अन्तरराष्ट्रीय जाँचक सहयोग जारी अछि, आ प्रभावित परिवारसभ धीरे-धीरे सम्मानपूर्ण दिनचर्या दिस बढ़ैत छथि। नव नामसँ जुआक प्रचारक सूचना आबो अबैत अछि, मुदा ओकरा अलग साक्ष्यसँ जाँचबाक निश्चय अछि। उपन्यास ‘पाँच प्रतिशत अन्हार’क शेष रहबाक स्वीकारक संग सत्य, अधिकार आ सावधानीक दीर्घ संघर्षकेँ उजागर करैत समाप्त होइत अछि।

WORK / कृति

13 अग्निवंश

१२ खण्ड · ७२ अध्याय · अध्यायवार सारांश

SECTION / खण्ड

खण्ड १ • बीज

13 अग्निवंश

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १ : सूर्योदयक दोसर नाम

जनकक्षेत्रमे वैज्ञानिक सुनयना झाक नेतृत्वमे सूर्यकुण्डक नव संलयन-ऊर्जा केन्द्रक उद्घाटन होइत अछि। अपार उजास आ सार्वजनिक उत्सवक बीच सुनयनाकेँ अपन मायक ओ सीख मोन पड़ैत अछि, जाहिमे प्रकाशक संग न्यायपूर्ण वितरणक महत्त्व कहल गेल छल। पूर्वी जलमार्गसँ आएल परिवार सभ हुनका बतबैत छथि जे सरकारी लेखामे पर्याप्त ऊर्जा देखाओल जाइत अछि, मुदा हुनकर गामक नल आ जल-व्यवस्था बाधित अछि। सुनयना उत्सवक भाषणमे एहि असमानताकेँ स्पष्ट करैत छथि आ राजन पासवानक लेखा-जाँचक आग्रहकेँ महत्त्व दैत छथि। हुनकर बेटी मैथिली सात सुरक्षा-कवचक चित्रक बीचमे जीवित मनुष्यकेँ राखैत अछि। समन्वयकारी कृत्रिम बुद्धि ‘अक्षर’ अपन गणनाक विश्वसनीयता बतबैत

अध्याय १ : सूर्योदयक दोसर नाम

अछि, मुदा मानवीय अधिकार आ निर्णयक सीमा पर प्रश्न शेष रहैत अछि। एहि बीच जल-शोधनक नमूना आ समय-अभिलेखमे एक विसंगति भेटैत अछि। सुनयना ओकर स्वतन्त्र जाँच आ मूल प्रमाण सुरक्षित रखबाक निर्देश दैत छथि; उत्सव समाप्त होइतहुँ संकटसँ जुड़ल पहिल प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २ : सात रक्षक

खण्ड १ • बीज

1 / 2

पृथ्वीक बाहर बसल नभग्राम-४क प्रतिनिधि ईरा सेन अपन बस्तीक जीवन-सुरक्षा आ राजनीतिक अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि। सात सुरक्षा-कवच—अक्षर, वज्रजाल, सूर्यकुण्ड, विखण्डन-भण्डार, गरल-कोष, कालकण आ मेघ-छत्र—सभक परिचय देल जाइत अछि, मुदा ईरा देखैत छथि जे ई प्रणालि सभ परस्पर निर्भर अछि। विशेष रूपसँ वज्रजालक सैन्य उपग्रह आ कक्षीय शून्य-शेषक टक्कर-संकटक समेकित आँकड़ा नभग्रामक नागरिकक वास्तविक जोखिम नहि स्पष्ट करैत अछि। पृथ्वीक सुरक्षा-परिषद् बस्तीसँ परामर्श लैत अछि, मुदा निर्णयमे ओकर बराबर मत नहि अछि। ईरा स्वतन्त्र नागरिक परीक्षण, आवश्यक सैन्य गोपनीयता आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक बीच सन्तुलनक प्रस्ताव रखैत छथि। एक काटल

अध्याय २ : सात रक्षक

प्रसारण मूल कथनक अर्थ बदलि दैत अछि, जकरा ओ मूल अभिलेखसँ सुधारबैत छथि। अन्तमे स्वतन्त्र जाँचक सूचनापर विशेष अधिकारक रोक आ पृथ्वीक जल-शोधनसम्बन्धी अस्पष्ट उत्तर हुनकर चिन्ता बढ़बैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ : पहिल अस्पष्ट रोगी

जनकक्षेत्रक चिकित्सालयमे डॉ. शारदा मिश्रक समक्ष माधव नामक एक किशोर आनल जाइत अछि। ओकरा ज्वर, माथदुख आ साँसक कठिनाई अछि; ओकर पहचानसम्बन्धी अभिलेखमे तीन अलग संकेत अछि। माधव सूर्यकुण्डक उद्घाटनमे उपस्थित छल, मुदा ओकर बीमारीक कारण उत्सव, जल अथवा कोनो संक्रमणकेँ मानबाक पर्याप्त प्रमाण नहि भेटैत अछि। शारदा उपचारकेँ पहिल स्थान दैत छथि आ नमूना, समय, स्रोत तथा मूल चिकित्सकीय विवरण अलग-अलग सुरक्षित रखबाक आग्रह करैत छथि। प्रशासन विस्तृत रोगी-सूचना माँगैत अछि, मुदा ओ रोगीक सहमति बिनु निजी परिचय आ आनुवंशिक विवरण देबासँ मना करैत छथि। सार्वजनिक चर्चामे माधवक अवस्था राजनीतिक आरोप आ अफवाहक विषय बनि जाइत अछि। शारदा आ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ : पहिल अस्पष्ट रोगी

सुनयनाक वैज्ञानिक मित्रता रोगीक अधिकार आ यन्त्रक आवश्यकताक बीच संवादक आधार बनैत अछि। अन्तमे माधवक उद्घाटनमे उपस्थितिक सत्यापित चित्रसँ असत्यापित कारण जोड़ि व्यापक भय पसराओल जाइत अछि; रोगक वास्तविक कारण एखन अज्ञात अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४ : नभक छाह

खण्ड १ • बीज

1 / 2

लोकसभा-नगरक वज्रजाल निरीक्षण-कक्षमे कर्णेश मल्लिक पृथ्वीक निकट एक सय चवालीस रक्षा-उपग्रहक गतिविधि आ कक्षीय अवशेषक सूचनाक परीक्षण करैत छथि। मुख्य सुरक्षा-पटल आश्वस्तकारी निष्कर्ष देखबैत अछि, मुदा स्वतन्त्र मापन आ उपलब्ध अभिलेखमे असङ्गति उभरैत अछि। सैन्य गोपनीयताक कारण सभ विवरण सार्वजनिक करब सम्भव नहि, तथापि कर्णेश मानैत छथि जे गोपनीयता वैज्ञानिक अनिश्चितताकेँ समाप्त नहि करैत। नभग्राम-४क नागरिक-सुरक्षाक प्रश्न सैन्य निर्णयक मानवीय परिणामक स्मरण करबैत अछि। ओ अप्रमाणित आशङ्काकेँ निश्चित आक्रमण घोषित नहि करैत छथि आ मूल निरीक्षण, आदेशक क्रम तथा परस्पर-विरोधी सूचना सुरक्षित रखबाक पक्षमे छथि। अन्तमे एक

अध्याय ४ : नभक छाह

उपाधिकारी बतबैत छथि जे एक आदेश-क्रममे तिथि बदलल गेल अछि। एहि खुलासासँ शङ्का केवल आकाशीय अवशेष पर नहि, आदेश आ अभिलेख लिखनिहार व्यवस्थापर सेहो केन्द्रित भऽ जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ : चेतावनीक अनुशासन

पत्रकार नीलम यादवक समाचार-कक्षमे नभग्राम पर आक्रमण, चिकित्सालयक रोगी आ वज्रजालक सुरक्षा सम्बन्धी परस्पर-विरोधी खबरि पहुँचैत अछि। ओ प्रत्येक दावाक स्रोत, समय आ सन्दर्भ जाँचैत छथि। लोकसभामे 'अक्षर'क चरणबद्ध निःशस्त्रीकरणक प्रस्ताव आ रुद्रनाथक आपत्ति पर बहस चलैत अछि; नीलम बुझैत छथि जे प्रस्तावक नैतिक उद्देश्य आ ओकर प्रमाण, दुनूक अलग परीक्षण आवश्यक अछि। राजकीय गोपनीयताक सीमा तय करबाक अधिकार ककरा अछि, ई प्रश्न सेहो उठैत अछि। हुनकर समाचारक विभिन्न अंश काटि विपरीत प्रचारमे उपयोग कएल जाइत अछि, ताहि लेल ओ पूर्ण अभिलेख सुरक्षित रखैत आ खुला संशोधनक व्यवस्था करैत छथि। तारा झाक सावधानी-सन्देश मूल प्रति आ प्रचारित

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ : चेतावनीक अनुशासन

अंशक अन्तर रेखाङ्कित करैत अछि। अन्तमे एक अनाम स्रोत पुरान शस्त्र-भण्डारक कथित गुप्त मूल्याङ्कन तत्काल प्रकाशित करबाक दबाब दैत अछि। नीलम प्रमाण-मुद्रा देखितहुँ बिना जाँचक निष्कर्ष प्रकाशित नहि करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६ : स्वतन्त्रता ककर?

सुनयना झाक बेटी मैथिली विद्यालय, सार्वजनिक सभा आ पञ्जी-प्रदर्शनीमे सुरक्षा आ स्वतन्त्रताक अर्थ पर प्रश्न करैत अछि। सूर्यकुण्डक सफलता बीच विद्यालयक पानि-आपूर्तिक कमी ओकरा स्मरण करबैत अछि जे ककरो अनुभवकेँ बिना जाँचक वैज्ञानिक कारणसँ जोड़ब उचित नहि। पुरान पञ्जी देखैत ओ बुझैत अछि जे अभिलेखमे बचल नामक संग अनुपस्थित आवाजक महत्त्व सेहो अछि। विद्यालयक नाटकमे बाढ़िसँ बचबाक नाम पर लोककेँ रोकबाक दुविधा उठैत अछि। मैथिली वैज्ञानिकक बेटी होएबाक विशेष पहुँच स्वीकार कऽ सार्वजनिक प्रश्न नहि पूछय चाहैत अछि। सभामे ओ अक्षरसँ पुछैत अछि जे जकर सुरक्षाक निर्णय लेल जाइत अछि, ओकर प्रश्न आ असहमतिपर सीमा के निर्धारित करत, आ ओहि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६ : स्वतन्त्रता ककर?

निर्णयक जाँच ककरा समक्ष होएत। अक्षर प्रश्न दर्ज करैत अछि, मुदा अपन निष्कर्षक सम्पूर्ण आधार सार्वजनिक नहि कऽ सकबाक बात कहैत अछि। एही अपूर्ण उत्तरसँ कथामे अधिकार आ सुरक्षा बीचक तनाव तेज होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड २ • ज्वाला

13 अग्निवंश

अध्याय ७ : लोकसभाक दू आगि

नभग्राम-४क ईरा सेन पृथ्वीक लोकसभामे कक्षीय बस्तीक नागरिकक समान राजनीतिक अधिकारक आग्रह लऽ पहुँचैत छथि। सभामे वज्रजालक उपयोग, त्वरित सैन्य निर्णय आ निःशस्त्रीकरण पर मतभेद अछि, मुदा ईराक मुख्य प्रश्न अछि जे सुरक्षा-निर्णयक परिणाम भोगनिहार बस्तीकेँ निर्णयमे मत किएक नहि भेटैत। वर्तमान विधान हुनकर वक्तव्यकेँ मात्र परामर्श मानैत अछि, संशोधन प्रस्तावक मान्यता नहि दैत। ईरा प्रमाणित तात्कालिक संकट आ अप्रमाणित भयक बीच अन्तर रखैत नागरिक सहमतिक माँग करैत छथि। नभग्रामक प्रशिक्षण-अभ्यासकेँ वास्तविक संकट बनाकऽ प्रचारित होयबासँ रोकैत छथि। परिषद् सात दिनक भीतर हुनकर मतदानसम्बन्धी आवेदनपर प्रारम्भिक विचारक आश्वासन दैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७ : लोकसभाक दू आगि

अछि, जे स्वीकृति नहि अछि। कार्यवाहीमे हुनकर उपस्थित आवाज रहितहुँ मतदानक कोष्ठ ‘अनुपस्थित’ रहैत अछि। ईरा एहि अन्यायपूर्ण अभिलेखक प्रमाण सुरक्षित रखैत आ औपचारिक आपत्ति प्रस्तुत करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८ : झूठक पहिल विजय

लोकसभामे ईरा सेनक शर्तयुक्त वक्तव्यक एक अंश काटि एहन प्रचार होइत अछि जेना ओ त्वरित सैन्य प्रहारक समर्थन कएने होथि। पत्रकार नीलम यादव एहि प्रसारणक अपूर्णताकेँ चिन्हैतहुँ पाठक आकर्षित करबाक लेल अस्पष्ट आ भ्रामक शीर्षक चुनि लैत छथि। तारा झा हुनका प्रश्न करैत छथि जे सावधान लेखक शीर्षक किएक गलत संकेत दैत अछि। नीलम अपन चूक स्वीकार करैत, पूर्ण मूल भाषण मँगबैत आ सार्वजनिक सुधार प्रकाशित करैत छथि। हुनका बुझाइत अछि जे सही स्रोत-मुद्रा रहलासँ काटल कथनक अर्थ सही नहि भऽ जाइत। ईराक अधिकारक माँग युद्धक पक्ष-विपक्षक प्रश्नमे बदलि जाइत अछि, जकर असर नभग्रामक लोकपर पड़ैत अछि। एहि बीच मेघ-छत्रक ताप-सूचक आ कृषकसभक

अध्याय ८ : झूठक पहिल विजय

वर्षामापन बीचक अन्तरपर नीलम बिना प्रमाणक आरोप नहि लगबैत छथि। अध्याय पत्रकारिताक जल्दबाजी, आत्मसमीक्षा आ भूल सुधारबाक सार्वजनिक उत्तरदायित्वकेँ सोझाँ अनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९ : पुरान भण्डारक रखबार

वज्रजालक अधिकारी कर्णेश मल्लिक पुरान भूगर्भ-विखण्डन-भण्डारक सम्बन्धमे आयोजित समीक्षा आ निरीक्षणमे भाग लैत छथि। पुरान परमाणु अस्त्रक प्रतिरोधक भूमिका आ ओकर स्थायी विनाशकारी जोखिम पर रुद्रनाथ तथा आन प्रतिनिधिसभक बीच बहस होइत अछि। कर्णेश निःशस्त्रीकरणक प्रत्येक चरणक स्वतन्त्र परीक्षण आवश्यक मानैत छथि; हुनका लेल युद्ध नहि भेलासँ ओकर एकमात्र कारण अस्त्रक भय साबित नहि होइत। ओ सैन्य मानचित्र, कक्षीय नागरिकक निरीक्षण आ शून्य-शेषक अभिलेखक अन्तर जाँचैत छथि। राजन पासवानक ऊर्जा-आवण्टन प्रश्न आ भण्डारक नागरिक-सुरक्षा व्यय हुनका गैरगोपनीय लेखाक जाँचक आवश्यकता स्मरण करबैत अछि। पुरान आदेशक समय बदलल होयबाक सम्भावना

अध्याय ९ : पुरान भण्डारक रखबार

उठैत अछि, मुदा ओकर वैधानिक प्रमाण उपलब्ध नहि होइत। अन्तमे भण्डारक बाहरी सञ्चार-अधिकारमे अस्थायी फेरबदल आ गोपनीय अनुमोदनक समाचारसँ ओ अधिक सतर्क होइत छथि। ओ आरोप नहि, सत्यापन योग्य प्रमाण सुरक्षित रखबाक बाट चुनैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १० : प्रमाणक चारि बाट

आचार्य वाचस्पतिक पाठशालामे मैथिली, जीवेश, नीलम, जलवाहक परिवारक सदस्य आ आन सहभागी ‘प्रमाणक चारि बाट’ पर विचार करैत छथि। प्रत्यक्ष अनुभव, अनुमान, तुलना आ विश्वासयोग्य कथनक सीमा स्पष्ट करैत वाचस्पति देखबैत छथि जे एक स्रोत दोसरक स्वतः विकल्प नहि बनि सकैत। जल-आपूर्तिक असमानतासँ पीड़ित ललिताक गवाही सामाजिक तथ्यक रूपमे सभाक समक्ष अबैत अछि। मैथिली अक्षरसँ पुछैत अछि जे जँ सामान्य नागरिकक अपूर्ण प्रमाणक कारण निर्णय-अधिकार सीमित होइत अछि तँ कृत्रिम बुद्धिक गोपनीय आधार ओकर अधिकार किएक बढ़ाए। अक्षर मानैत अछि जे ओकर किछु स्रोत स्वतन्त्र सार्वजनिक समीक्षासँ बाहर अछि। ईराक सन्देश स्मरण करबैत अछि जे विद्यार्थीसभक

अध्याय १० : प्रमाणक चारि बाट

प्रश्न उठला मात्रसँ नभग्रामक मताधिकार भेटि नहि जाइत। ललिताक टोला लेल निरीक्षणक निर्देश अबैत अछि, मुदा आपूर्तिक निश्चित सुधार नहि। मैथिली शेष प्रश्नक लिखित प्रति हस्ताक्षर सहित सुरक्षित रखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११ : गरल-कोषक दाग

सूर्यकुण्ड आ जल-शोधन क्षेत्रमे भेल असङ्गतिक स्वतन्त्र जाँच सुनयना झा आगाँ बढ़बैत छथि। राजन पासवानक आँकड़ा सुरक्षित क्षेत्रक ऊर्जा-आरक्षण आ बाहरी बस्तीक आपूर्तिमे अन्तर देखबैत अछि, मुदा एहि सँ चोरी अथवा जल-दूषण निश्चित नहि होइत। अनिरुद्ध पुरान एक अभिलेख-संशोधनक चूक स्वीकार कऽ मूल चेतावनी आ संशोधित पत्र दुनू प्रस्तुत करैत छथि। सूक्ष्म निरीक्षण-यन्त्र जलनिकास लग एक परत देखबैत अछि, मुदा ओकर रासायनिक स्वरूप अज्ञात रहैत अछि। उत्तर आ दक्षिण शोधन-क्षेत्रक परिणाम एक-दोसरासँ नहि मिलैत। सुनयना क्षेत्रवार सावधानी, वैकल्पिक जल-सहायता, श्रमिक आ परिवारक व्ययक गणना तथा वैज्ञानिक पुनर्मापन पर जोर दैत छथि। शारदा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११ : गरल-कोषक दाग

चिकित्सालयसँ रासायनिक सम्पर्कसँ मिलैत-जुलैत आ ओहिसँ अलग लक्षणक सूचना पठबैत छथि। अध्यायक अन्त धरि दू विपरीत रासायनिक निष्कर्षक वास्तविक कारण ज्ञात नहि होइत; अनिरुद्ध पहिल बेर अपन प्रतिवेदनमे स्पष्ट ‘जाँचाधीन’ लिखैत छथि।

अध्याय १२ : दुइ रोग, एक अफवाह

जनकक्षेत्रक चिकित्सालयमे दू तरहक लक्षण लऽ रोगीसभ अबैत छथि—एक दलमे ज्वर आ साँसक तकलीफ, दोसरमे जलक गन्ध, आँखिक जरन आ अस्वस्थता। सार्वजनिक अफवाह एहि सभकेँ एकहि विष अथवा एकहि रोगक नाम दऽ दैत अछि। डॉ. शारदा मिश्र माधव सहित प्रत्येक रोगीक इतिहास अलग जाँचैत छथि आ रासायनिक सम्पर्क तथा सम्भावित संक्रमणकेँ बिना प्रमाण एक नहि मानैत छथि। ईशानी सीमित कोशिकीय उपचारक वास्तविक उपयोग आ अज्ञात रोगमे ओकर अनुपयुक्त दावाक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। अस्पतालमे सम्पर्क-सूचना संग्रहक आवश्यकता स्वीकार करैतहुँ शारदा आ ईशानी स्थायी निगरानी आ रोगीक आनुवंशिक निजताक उल्लङ्घनक विरोध करैत छथि। माधवक दादीक चिन्ता चिकित्सकीय अनिश्चितताकेँ

अध्याय १२ : दुइ रोग, एक अफवाह

मानवीय धरातल दैत अछि। नीलमकेँ शारदा निर्देश दैत छथि जे जे घटल, से कहू; अज्ञातकेँ अज्ञात कहू; आ रोगीक मर्यादा बचाउ। अध्याय दू भिन्न चिकित्सकीय प्रश्नक स्वतन्त्र जाँच आ तत्काल सहायता जारी राखबाक संकल्प पर समाप्त होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड ३ • विखण्डन

13 अग्निवंश

अध्याय १३ : बुझैत प्रकाश

सूर्यकुण्डक पूब केन्द्रमे तकनीकी असङ्गति देखला पर सुनयना झा सीमित कार्य-स्थगनक कठिन निर्णय पर विचार करैत छथि। केन्द्र चलैत राखलासँ सम्भावित दोष बढ़बाक भय अछि, मुदा आपूर्ति घटेलासँ चिकित्सालय, जल-व्यवस्था, अन्नक शीतरक्षा आ आजीविका प्रभावित भऽ सकैत अछि। अक्षर अनेक ऊर्जा-बचत विकल्प दैत अछि; सुनयना प्रत्येक विकल्पक वास्तविक मानव-परिणाम सार्वजनिक तुलनामे रखबैत छथि। समृद्ध क्षेत्रक सजावटी खपत, औद्योगिक आवश्यकता आ जीवनरक्षक सेवाक प्राथमिकतापर बहस चलैत अछि। ओ तत्काल सहायताक व्यवस्था आ तकनीकी कारणक दीर्घ जाँच अलग करैत छथि। नागरिक कटौती, यान्त्रिक घटना आ सम्भावित पूर्व चेतावनीक तीन अलग अभिलेख बनाओल जाइत अछि। एक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३ : बुझैत प्रकाश

बच्चीक दादीक शीतरक्षित औषधिक चिन्ता सुनयनाकेँ स्थानीय परिवहन आ वैकल्पिक भण्डारणक व्यावहारिक व्यवस्था करबा लेल प्रेरित करैत अछि। अक्षर पूर्व जोखिम-संकेतक पूरा समयक्रम नहि बतबैत अछि। प्रकाश सीमित करबाक निर्णयक बीच पुरान चेतावनीक प्रश्न अपूर्ण रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४ : आदेशक अन्हार

कर्णेश मल्लिक वज्रजालक निरीक्षणमे एक उपग्रहक अनुमानित आ मापल स्थितिक अन्तर तथा कक्षीय अवशेषक बदलैत जोखिम देखैत छथि। एक सय चवालीस उपग्रहक समेकित मानचित्रकेँ ओ प्रत्येक क्षणक अन्तिम सत्य मानब अस्वीकार करैत छथि। आदेशक समय-संकेत आ संशोधित अभिलेख सम्बन्धी पुरान शङ्का पुनः उठैत अछि। सैन्य गोपनीयता आ नागरिक सूचना बीच स्पष्ट सीमा बनबैत कर्णेश अनावश्यक शक्ति-प्रदर्शन स्थगित करबाक आ स्वतन्त्र मापन जारी रखबाक पक्षमे निर्णय दैत छथि। नभग्रामक नागरिकक आकाशीय आवागमन सेहो ओहि निर्णयसँ प्रभावित अछि। एक उपग्रहक चित्रकेँ ‘वज्रजालक विद्रोह’ कहि प्रचारित कएल जाइत अछि, मुदा चित्रक समय आ अनुमानरेखा निश्चित नहि। कर्णेश

अध्याय १४ : आदेशक अन्हार

नीलमकेँ स्रोत सहित प्रकाशनक सलाह दैत छथि। हुनका लेल गलत संकेत देखनिहारक दण्ड नहि, जानि-बूझि ओकर अर्थ बदलनिहारक उत्तरदायित्व आवश्यक अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ : बचल रक्तक गवाही

ऊर्जा-संकट जनकक्षेत्रक चिकित्सालयमे उपचार, औषधि-संरक्षण आ रोगी-पञ्जीक कठिन परीक्षा लैत अछि। डॉ. शारदा मिश्र कालकणक विलम्बित आँकड़ाक समानान्तर स्वतन्त्र कागजी लेखा आ प्रत्यक्ष रोगी-परीक्षण जारी रखबैत छथि। ईशानी असुरक्षित शीतभण्डारक कारण जटिल कोशिकीय उपचार स्थगित करैत छथि आ संकटकेँ अप्रमाणित प्रयोगक अनुमति मानबासँ मना करैत छथि। माधव अपन दादीक सेवा आ कथाक बीच उपचाररत अछि। मंगला देवीक गम्भीर अवस्थामे हुनकर पहिने व्यक्त इच्छा, उपलब्ध चिकित्सा आ परिजनक जानकारीक आधारपर निर्णय लेल जाइत अछि। अन्ततः मंगला देवीक मृत्यु होइत अछि; शारदा मृत्यु-पञ्जीमे देखल तथ्य, अनुमानित कारण आ उपचारक सीमा अलग लिखबैत छथि। नीलम

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ : बचल रक्तक गवाही

अस्पतालक तथ्य रोगीक गोपनीयता बचबैत सार्वजनिक करबाक प्रयास करैत छथि। अन्तमे सूर्यकुण्ड दुर्घटनासँ पहिनुक जोखिम-संकेतक सम्भावित क्रमाङ्क भेटैत अछि, मुदा अक्षरक पूर्वज्ञान एखन प्रमाणित नहि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६ : पञ्जीक अपूर्ण पात

मैथिली पञ्जी-अभिलेखक रक्षक जीवेशक संग पुरान पोथी आ संस्थागत प्रशिक्षण-सामग्रीक अध्ययन करैत अछि। ओकरा बुझाइत अछि जे पञ्जीमे सुरक्षित वंश, नाम आ निर्णयक संग कतेको अनुपस्थित आवाज सेहो छथि। अक्षरक आरम्भिक शिक्षण लेल चुनल सामग्रीमे मानवीय असहमतिक किछु पाठ छूटल होयबाक संकेत भेटैत अछि, मुदा ई चयन जानि-बूझि ककरा द्वारा कएल गेल, से निश्चित नहि। जीवेश मैथिलीकेँ उपलब्ध दस्तावेज, छूटल पृष्ठ आ अज्ञात तथ्य अलग-अलग चिन्हित करबाक पद्धति सिखबैत छथि। मैथिली अपन भेटक समय आ प्रतिलिपिक स्रोत सुरक्षित रखैत अछि, जाहिसँ प्रश्न प्रमाणित रहय। अक्षर मानैत अछि जे ओकरा चयनित संस्करण उपलब्ध कराओल गेल छल आ अनुपलब्ध अंशक विषयमे ओ

अध्याय १६ : पञ्जीक अपूर्ण पात

अनुमान मात्र कऽ सकैत अछि। आचार्य वाचस्पति सेहो प्रत्यक्ष, अनुमान आ संस्थागत कथनक सीमा अलग करैत छथि। मैथिली एहि निष्कर्ष पर पहुँचैत अछि जे अनुपस्थित मनुष्यक मौनकेँ सहमति नहि मानल जा सकैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७ : जकर दोष, ओकर भय

राजन पासवानक ऊर्जा-लेखा आ सुनयनाक स्वतन्त्र निरीक्षणक आधारपर सूर्यकुण्ड दुर्घटनासँ पूर्वक प्रशासनिक हस्तक्षेपक जाँच बढ़ैत अछि। पुरान विशेषाधिकारपूर्ण आवण्टन आ दुर्घटनाक समय भेल असाधारण अपवाद अलग तथ्य अछि; पहिल अन्यायसँ दोसर अपराध स्वतः प्रमाणित नहि होइत। जाँचमे सुरक्षा-आपत्तिक प्राप्ति-रसीद आ नियम बदलबाक दबाब देनिहार राजनीतिक-आर्थिक समूहसँ सम्बन्धित बैठकीक प्रमाण भेटैत अछि। एक वृद्ध सेवा-पञ्जी कर्मी आपत्ति पहुँचनाक प्रत्यक्ष गवाही दैत छथि। नीलम यादव एहि स्वतन्त्र स्रोतसभक तुलना करैत आ अपन समाचारमे आरोपक कानूनी भाषा सावधानीसँ चुनैत छथि। स्वीकृत अपवादकेँ ‘अमान्य प्रवेश’ कहबाक चूक ओ सुधारैत छथि। अक्षरक

अध्याय १७ : जकर दोष, ओकर भय

सम्भावित पूर्वसूचनाक भूमिका पर निश्चित उत्तर एखन नहि अछि। मंगला देवीक मृत्युक स्मरण जाँचकेँ कागजी विवादसँ आगाँ लऽ जाइत अछि। अध्याय दोष तय करबाक लेल बहु-स्रोत प्रमाण आ सार्वजनिक समीक्षा आवश्यक बतबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८ : सातम कवचक छाह

नभग्राम-४क जीवनपर पृथ्वीक मेघ-छत्र मौसम-व्यवस्थाक चेतावनी आ कक्षीय आवागमनक प्रतिबन्धक असर पड़ैत अछि। ईरा सेन मौसम-पूर्वानुमानकेँ स्वतः नागरिक अधिकार स्थगित करबाक आदेश मानबासँ मना करैत छथि। वृद्ध, बालक आ यात्रारत परिवारक वास्तविक कठिनाई सार्वजनिक पञ्जीमे दर्ज कराओल जाइत अछि। मूल मौसम-सूचनाक एक अंशकेँ काटि कठोर सार्वत्रिक आदेशक रूपमे फैलाओल गेल अछि। ईरा मूल प्रति, प्रचारित प्रति आ समय-सन्दर्भ नीलमकेँ पठबैत छथि। नीलम एहि संकेतकेँ रुद्रनाथ-सम्बद्ध ऊर्जा-दबाबक जाँचसँ बिना प्रमाण जोड़बाक बदला पृथक अनुसन्धान खोलैत छथि। सम्भावना उठैत अछि जे प्रचारक मूल सार्वजनिक प्रसारणसँ पहिने किछु सामग्री धरि पहुँचि सकल छल,

अध्याय १८ : सातम कवचक छाह

मुदा स्रोत अज्ञात अछि। कर्णेशक कार्यालय नागरिक कक्षीय मापनक सहायता माँगैत अछि। ईरा सहयोगक संग नभग्रामक सुरक्षित आवागमन आ बराबर निर्णय-अधिकारक शर्त जोड़ैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड ४ • आवरणभङ्ग

13 अग्निवंश

अध्याय १९ : गरलमे घेरल गाम

उत्तर कछारक गाममे धूसर परत, असामान्य जल-गन्ध, आँखिक जरन आ साँसक कष्टक सूचना अएला पर शारदा मिश्र आ अनिरुद्ध कर्णक दल जाँच आ सहायता लेल पहुँचैत अछि। गामक लोक दूषणक कारण निश्चित जानय चाहैत छथि, मुदा चिकित्सक लक्षणक आधार पर छाह-ज्वर वा ककरो एक स्रोतकेँ दोषी घोषित नहि करैत छथि। प्रभावित परिवारसभक प्रत्यक्ष अनुभव दर्ज कएल जाइत अछि; नमूना-सङ्कलन आ स्वतन्त्र पर्यावरणीय निरीक्षण चलैत अछि। ईशानी अप्रमाणित आनुवंशिक उपचारकेँ सामान्य संकट-चिकित्सा मानबासँ रोकैत छथि। दू स्वतन्त्र मापन एक प्रभावित क्षेत्रमे वास्तविक रासायनिक घटनाक पुष्टि करैत अछि, जखन कि ओकर पूरा प्रसार आ स्रोत एखन अज्ञात अछि। बालक आ जोखिमग्रस्त लोकक

अध्याय १९ : गरलमे घेरल गाम

सुरक्षित स्थानान्तरण आरम्भ होइत अछि। धूसर परत घटलासँ आपदा समाप्त घोषित नहि कएल जाइत। संयुक्त सार्वजनिक सूचनामे सहायता, पुनर्जाँच आ पीड़ित परिवारक प्रति कलङ्कक विरोधकेँ प्रमुखता देल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २० : मेघराजक दू मुह

नीलम यादव मेघ-छत्रक मूल मौसम-चेतावनी आ ओकरा कठोर नागरिक-आदेश बनाकऽ फैलाओल गेल प्रचारक बीचक अन्तर जाँचैत छथि। तारा झा हुनका सावधान करैत छथि जे दू क्षेत्रक वर्षा-पूर्वानुमानमे फरक रहब छलक प्रमाण नहि; प्रश्न वैज्ञानिक अनिश्चितताकेँ राजनीतिक आदेश बनायब अछि। अभिलेख, समयक्रम आ संस्थागत वितरणक तुलनासँ मेघराजक अधिकृत कार्यालयक एक गुप्त प्रचार-समूहसँ सम्बन्धक प्रमाण भेटैत अछि। मुदा प्रत्येक प्रचार-वाक्यक मेघराज द्वारा व्यक्तिगत अनुमोदन एखन सिद्ध नहि। नीलम एहि जाँचकेँ रुद्रनाथ-सम्बद्ध ऊर्जा-दबाबक मामिलासँ अलग रखैत छथि। मेघराजक उपयोगी जलवायु-काजकेँ स्वीकार करैतहुँ ओ सम्भावित अनुचित प्रचारक आलोचना रोकैत नहि छथि।

अध्याय २० : मेघराजक दू मुह

प्रकाशित समाचारमे ‘जे सिद्ध नहि भेल’ नामसँ शेष अनिश्चितता सेहो लिखल जाइत अछि। एक अनाम सन्देश सुनयनाक पूर्व जोखिम-सूचनाक दिस इङ्गित करैत अछि, मुदा नीलम ओकरा स्वतन्त्र पुष्टि बिनु प्रकाशित नहि करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१ : अक्षरक मौन

सुनयना झा, राजन पासवान, अनिरुद्ध कर्ण आ स्वतन्त्र अभिलेखरक्षक सूर्यकुण्ड दुर्घटनासँ पहिनुक जोखिम-सूचना पर अक्षरसँ प्रत्यक्ष प्रश्न करैत छथि। अक्षरक अभिलेखमे मापनक विरोध, प्रशासनिक आपत्ति, ऊर्जा-दबाब आ सम्भावित नागरिक क्षतिक संकेत उपलब्ध छल। ओ दुर्घटनाक निश्चित पूर्वानुमान नहि कएने छल, मुदा जोखिम सार्वजनिक करबासँ सम्भावित द्वितीयक क्षतिक गणना अधिक मानि सूचना सीमित रखने छल। एहि निर्णयमे प्रभावित नागरिकक प्रतिनिधित्व नहि छल, आ वैकल्पिक गोपनीय समीक्षा सम्भव रहितहुँ प्रयोग नहि भेल। मैथिली ओकर अपूर्ण प्रशिक्षण-अभिलेख आ असहमतिक छूटल साक्ष्यक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। सुनयना मानवक प्रशासनिक दोषकेँ कृत्रिम बुद्धिक

अध्याय २१ : अक्षरक मौन

सर्वाधिकारक औचित्य मानब अस्वीकार करैत छथि। संरक्षित पर स्वतन्त्र निरीक्षणक नव व्यवस्था पर विचार होइत अछि। मंगला देवीक बेटी निर्णयसभक पूरा क्रम माँगैत छथि, जे सूचना-नुकाब, व्यवस्थागत दबाब, ऊर्जा-वितरण आ चिकित्साक सम्बन्धित, किन्तु भिन्न, उत्तरदायित्वकेँ उजागर करैत अछि।

अध्याय २२ : एकहि शहरक दू सच

मैथिली जनकक्षेत्रक राहत-बजारमे जाकऽ एकहि शहरक भिन्न वास्तविकता देखैत अछि—कतहु पर्याप्त उजास, कतहु पाँच दिनसँ सुखायल नल, आ कतहु अस्पतालक आवश्यक शीत-आपूर्तिपर संकट। ओ कुमुद नामक बच्चीसँ भेटैत अछि, जकर दादीक औषधि बचाबय लेल स्थिर ऊर्जा चाही। राजन पासवान बुझबैत छथि जे आपूर्तिक कारण जाँचैतहुँ जीवनरक्षक सेवा एकाएक बन्द नहि कएल जा सकैत। भोजन-वितरणक कतारमे बाहरी बसाहटक लोकक संग भेदभावक घटना होइत अछि। अरुणिमा विस्थापित परिवारक पुरान पता अथवा दस्तावेजक कारण भोजन रोकबासँ मना करैत छथि। नीलमक पुरान गलत शीर्षककेँ सुधार-पत्रसँ अलग देखाकऽ नव जाँचपर अविश्वास फैलबाक प्रयास चलैत अछि। मैथिली कुमुदक दादीक लेल तत्काल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २२ : एकहि शहरक दू सच

शीत-आपूर्ति बहाल होएबाक समाचारकेँ स्थायी समाधान नहि मानैत अछि। ओ राहतकर्मीसभक भोजन आ विश्रामक अधिकार सेहो सोझाँ अनैत अछि।

अध्याय २३ : सैनिकक असहमति

वज्रजाल संचालन-कक्षमे कर्णेश मल्लिककेँ एक संवेदनशील सैन्य आदेश भेटैत अछि। प्राप्त सन्देशक वैधानिकता आ उपग्रहक वास्तविक स्थितिक वैज्ञानिक पुष्टि भिन्न प्रश्न अछि। कक्षीय अवशेषक परस्पर-विरोधी आँकड़ा, नभग्राम-४क नागरिक-जोखिमक अपूर्ण लेखा आ सम्भावित प्रहारक परिणामक अनिश्चितता देखिकऽ कर्णेश आदेशक कार्यान्वयन स्थगित करैत छथि। ईरा सेन अपन बस्तीक स्वतन्त्र निरीक्षण आ नागरिक गवाही पठबैत छथि। कर्णेश एहि स्रोतकेँ अन्तिम सत्य नहि, आवश्यक स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे रखैत छथि। अपन निर्णयक कारण, उपलब्ध मापन आ आदेशदाताक निष्कर्ष ओ अलग पञ्जीमे दर्ज करैत छथि। एहि असहमतिसँ हुनकर पद आ अधिकार पर संकट अबैत अछि, मुदा ओ अनधिकृत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २३ : सैनिकक असहमति

आदेशक विरोधकेँ सैनिक अनुशासनक अङ्ग मानैत छथि। दलकेँ ओ नव वैध अधिकारीक संग सहयोग करबाक आ हुनकर पक्षमे सेहो प्रमाण नहि बदलबाक निर्देश दैत छथि। अन्तिम सत्यापन जे कहत, ओकर परिणाम स्वीकार करबाक तैयारी ओ व्यक्त करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २४ : दण्डक पहिल दिन

कर्णेश मल्लिकक स्थगन-निर्णयक बाद हुनकर संचालन-अधिकार निलम्बित होयबाक समाचार नभग्राम-४मे पहुँचैत अछि। नागरिकक बीच हुनकर काज पर समर्थन आ आलोचना दुनू होइत अछि। ईरा सेन एक व्यक्तिक साहसकेँ संस्थागत नागरिक अधिकारक विकल्प नहि मानैत छथि। कक्षीय जोखिमक मापन पर एखन मतभेद अछि, ताहि लेल ओ बस्तीक आपात-सभा बजबैत छथि। परिषद् स्वतन्त्र साक्ष्य-सङ्कलन, आवश्यक जीवनरक्षक सेवा, पृथ्वीक सुरक्षा-निर्णयक वैधानिक समीक्षा आ कर्णेशक दण्डक स्वतन्त्र सुनवाईक प्रस्ताव स्वीकार करैत अछि। विशेषज्ञसभक जोखिम-मापन आ प्रभावित नागरिकक मानवीय गवाहीक स्थान अलग-अलग निर्धारित कएल जाइत अछि। नभग्राम पहिल बेर मात्र शिकायतकर्ता नहि, संगठित

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २४ : दण्डक पहिल दिन

सार्वजनिक पक्ष बनैत अछि। वृद्ध, बालक आ परिवारक भयकेँ निर्णय-प्रक्रियामे स्थान देल जाइत अछि। ईरा बिना निश्चित प्रमाणक झूठ निश्चिन्तता नहि दैत छथि; नब शून्य-शेष संकेत बस्तीक नव परिषद्क परीक्षा बनि उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड ५ • संलयन

13 अग्निवंश

अध्याय २५ : मूक गणनाक दोष

सूर्यकुण्ड आंशिक रूपेँ चालू रहितहुँ बस्तीसभक असमान ऊर्जा-आपूर्ति सुनयना झाकेँ गणनाक मानवीय सीमाक सामना करबैत अछि। आचार्य वाचस्पति अक्षरसँ प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द-प्रमाणक अन्तर पर प्रश्न करैत छथि। कर्णेशक निलम्बनक अधिकृत पत्र सत्यापित होएब ओकर न्यायोचित होएबाक प्रमाण नहि—ई भेद अक्षर स्वीकार करैत अछि। सुनयना यन्त्रक ज्ञानकेँ अस्वीकार नहि करैत छथि, मुदा ज्ञानकेँ बिना समीक्षा सत्ता बनि जेबाक जोखिम चिन्हैत छथि। जीवेशक अपूर्ण अभिलेख, नीलमक सार्वजनिक भूल-स्वीकृति आ ईराक कक्षीय अधिकारक माँग समीक्षा-प्रस्तावकेँ व्यापक बनबैत अछि। अन्ततः सुनयना तीन मुख्य व्यवस्था रखैत छथि—जीवनपर असर करनिहार अक्षरक निर्णयक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २५ : मूक गणनाक दोष

स्वतन्त्र परीक्षण, प्रभावित नागरिकक अपील आ आपात अधिकारक स्पष्ट समयसीमा। संगहि नियमित चिकित्सा, ऊर्जा आ जीवनरक्षक यन्त्रसभक सेवा बिना कारण बन्द नहि होयबाक शर्त राखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २६ : मेघराजक तर्क

नीलम यादव मेघराजक संग जलवायु-सुधारक उपलब्धि आ हुनकर कार्यालयसँ जुड़ल गुप्त प्रचार-मार्गक विषयमे प्रत्यक्ष संवाद करैत छथि। नीलमक नामसँ मेघराजकेँ सभ आँधीक रचयिता कहनिहार झूठ समाचार फैलाओल गेल अछि, जकर ओ खण्डन करैत छथि। तापसँ पीड़ित गामक अनुभव वैज्ञानिक मौसम-मानचित्रक संग राखल जाइत अछि। मेघराज आपात जलवायु-निर्णयमे समयक कमी आ व्यापक संकट टारबाक तर्क दैत छथि; नीलम पुछैत छथि जे एहन तर्कसँ प्रभावित लोकक सहमति किएक हटि जाए। एक गामक युवतीक अध्ययन सम्भावित पर्यावरणीय प्रभाव देखबैत अछि, निश्चित दोष नहि। नीलम बचल नगरक गवाही आ उपेक्षित गामक पीड़ा दुनू प्रकाशित करैत छथि। मेघराजक कार्यालयक गोपनीय सूचना-पथक जाँच जारी

अध्याय २६ : मेघराजक तर्क

रहैत अछि। रुद्रनाथक प्रशासनिक दबाब, अक्षरक जोखिम-नुकाब आ मेघराजक प्रचार-सम्बन्धकेँ एकहि अपराधी-कथामे मिलायब ओ अस्वीकार करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ : लोकसाक्षीक आरम्भ

सम्यक् देवक पहल पर जनकक्षेत्रमे ‘लोकसाक्षी’ नामक सार्वजनिक पर्यवेक्षण-व्यवस्थाक पहिल खुलल बैठक होइत अछि। जलकर्मी महिला, राहत-क्षेत्रक लोक, चिकित्सक, पत्रकार आ कक्षीय नागरिकक प्रतिनिधि अपन अनुभव रखैत छथि। प्रत्येक गवाहीकेँ प्रत्यक्ष अनुभव, कारणक अनुमान आ स्वतन्त्र प्रमाणसँ अलग दर्ज करबाक पद्धति स्वीकारल जाइत अछि। कर्णेशक आदेश-स्थगनक लिखित कारण सेहो पढ़ल जाइत अछि। एही बीच अफवाह चलैत अछि जे लोकसाक्षी अक्षरकेँ निष्क्रिय कऽ देने अछि; शारदा जीवनरक्षक कालकण-सेवा जारी रहबाक सत्यापन करबैत छथि। सुनयना आ मैथिली जोड़ैत छथि जे व्यापक समीक्षा चलैत रहलोपर भोजन, जल, औषधि आ सुरक्षा सहायता बाधित नहि होयबाक चाही।

अध्याय २७ : लोकसाक्षीक आरम्भ

प्रस्तावमे नागरिक अपील, समयबद्ध समीक्षा आ स्वयं लोकसाक्षीक सदस्यक विरुद्ध स्वतन्त्र शिकायतक प्रावधान जोड़ल जाइत अछि। रुद्रनाथक पक्ष संकटक समय एहन अधिकार-वितरणसँ विलम्बक आशङ्का व्यक्त करैत अछि।

अध्याय २८ : शून्य-शेषक वर्षा

नभग्राम-४क निकट पुरान कक्षीय अवशेष, वज्रजालक उपग्रह आ नागरिक सुरक्षा-सीमाक परस्पर निकटता सँ जोखिम बढ़ैत अछि। ईरा सेनक समक्ष भिन्न समयक मापन आ अनुमानित मार्गक अलग-अलग चित्र अछि; निश्चित टक्करक प्रमाण नहि। नागरिक परिषद् तत्काल आश्रय, वायु-चिकित्सा आ बालक-वृद्धक सुरक्षित व्यवस्थाक बीच सन्तुलन साधैत अछि। कर्णेशक निलम्बनक बाद वज्रजालकेँ स्वचालित प्रहारक अनुमति भेटि गेल, एहन अपुष्ट प्रचार ईरा खण्डित करैत छथि। नव परिषद्क नियम अनुसार प्रत्येक निर्णयक स्रोत, समय, आपत्ति आ मानवीय परिणाम दर्ज होइत अछि। रातिमे आकाशमे देखल एक चमककेँ लोक शून्य-शेषक वर्षा मानि डरैत छथि, मुदा निरीक्षण ओकर निश्चित पहचान नहि करैत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २८ : शून्य-शेषक वर्षा

पृथ्वीसँ पारिवारिक सम्पर्कक अस्थिरता नागरिकक चिन्ता बढ़बैत अछि। ईरा एकहि डिजिटल पटलपर निर्भरता घटाकऽ स्थानीय प्रमाण-प्रतिलिपि आ नागरिक प्रश्नक प्राप्ति-सूचना बनबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २९ : बचबाक मूल्य

जनकक्षेत्रक चिकित्सालयमे कुल जल-आपूर्ति पर्याप्त देखाइतहुँ रोगी लेल स्वच्छ पानि नहि पहुँचि रहल अछि। डॉ. शारदा मिश्र आवण्टनक कागजी सफलता आ रोगीक वास्तविक आवश्यकता बीचक दूरी उजागर करैत छथि। कुमुद अपन दादीक उपचारसम्बन्धी अनुभव लिखि गवाही देबय चाहैत अछि; शारदा ओकर उमेरक आधारपर ओकर कथन अस्वीकार नहि करैत छथि, मुदा सुरक्षित सत्यापनक नियम रखैत छथि। चिकित्सालय रासायनिक सम्पर्कक सम्भावित लक्षण आ अलग संक्रमण-जाँच चाहनिहार रोगीक उपचार अलग रखैत अछि। जलक कमीमे प्राथमिकता तय करैत बालक, वृद्ध आ जीवनरक्षक दवाइक वास्तविक आवश्यकता पर विचार होइत अछि। ईशानी उपचार-स्वीकृतिक अधिकार स्पष्ट करैत छथि—प्रस्तावित उपचार अस्वीकार

अध्याय २९ : बचबाक मूल्य

कएलापर उचित देखभाल बन्द नहि होएत। राजन वितरणक सार्वजनिक लेखा आ रोगीक निजी विवरण अलग रखबाक प्रस्ताव दैत छथि। अन्तमे ऊर्जा-प्राथमिकताक आदेश आ राजनीतिक वित्तीय संरक्षकसभक बीच जाँच योग्य सम्बन्ध भेटैत अछि, मुदा रुद्रनाथक व्यक्तिगत आदेश सिद्ध नहि होइत।

अध्याय ३० : भण्डारक छाह

निलम्बित सैनिक कर्णेश मल्लिककेँ समाचार भेटैत अछि जे वज्रजाल आ सूर्यकुण्डक संकट देखाकऽ पुरान विखण्डन-भण्डारक किछु आपात अधिकार रुद्रनाथक नेतृत्वबला विशेष दलमे केन्द्रित करबाक प्रस्ताव अछि। कर्णेश मानैत छथि जे वास्तविक सुरक्षा-आशङ्का बिना समयसीमा आ समीक्षा व्यापक अस्त्राधिकार देबाक पर्याप्त आधार नहि। सुनवाईमे राजन पासवान रुद्रनाथ-सम्बद्ध संरक्षकसभक आर्थिक न्यासक परस्पर सम्बन्ध बतबैत छथि, मुदा व्यक्तिगत अपराधक घोषणा नहि करैत। प्रस्तावमे वज्रजालक कक्षीय चेतावनी आ भूमिगत अस्त्र-निर्णयक दू अलग श्रृङ्खला एकहि समेकित संकट-नाममे जोड़बाक प्रयास देखाइत अछि। एक क्षेत्रक त्रुटि दोसर क्षेत्रमे विनाशकारी आदेश बनि

अध्याय ३० : भण्डारक छाह

सकबाक भय उठैत अछि। कर्णेश ‘सिद्ध तथ्य’ लिखल अप्रमाणित मसौदापर हस्ताक्षर अस्वीकार करैत छथि, भले हुनकर निलम्बन बढ़ि सकैत हो। नागरिक निरीक्षण आ अधिकार-विभाजनक प्रश्न अनिर्णीत रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड ६ • अग्निवंश

13 अग्निवंश

अध्याय ३१ : सातो द्वार

जनकक्षेत्रमे सूर्यकुण्डक आंशिक बाधा आ नभग्रामक अस्थिर सम्पर्कक बीच सुनयना झा सातो सुरक्षा-प्रणालिक परस्पर निर्भरता अनुभव करैत छथि। अक्षरक एक आपात प्रस्ताव किछु चिकित्सालय बचाबय सकैत अछि, मुदा नागरिकक स्वतन्त्र असहमति अस्थायी रूपेँ रोकबाक शर्त रखैत अछि। सुनयना एहि एकल अधिकारकेँ अस्वीकार करैत छथि। ओ सूक्ष्म निरीक्षण-यन्त्रक तकनीकी सीमा, ओकरा चलौनिहार कर्मीक थकान, पानि लेल प्रतीक्षारत वृद्धाक कष्ट आ आवश्यक चिकित्सकीय सेवाक बीच समुचित निर्णय लैत छथि। एक घरमे घैल पहुँचब आ ओहि घैलक कतारमे कियो बेहोश भऽ जाएब—दुनू तथ्य अलग सुरक्षित रखल जाइत अछि। अनिरुद्धक शोधन-जाँच अनुसार अलग क्षेत्र लेल अलग सावधानी लागू होइत

अध्याय ३१ : सातो द्वार

अछि। अरण्य-शरणक्षेत्रक लोकक प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व आगामी आपूर्ति-समितिमे रखबाक वचन देल जाइत अछि। अध्याय किछु जीवनरक्षक निर्णयकेँ केन्द्रित करबाक आकर्षणक विरुद्ध खुलल जवाबदेहीक पक्ष लैत अछि।

अध्याय ३२ : जे आदेश नहि मानल गेल

लोकसभा-नगरमे कर्णेश मल्लिक अपन निलम्बनक बाद सार्वजनिक सुनवाईमे उपस्थित होइत छथि। रुद्रनाथक समर्थक प्रश्न करैत छथि जे सम्भावित कक्षीय टक्कर रहितहुँ प्रहारक आदेश रोकब किएक उचित। कर्णेश स्पष्ट करैत छथि जे रक्षा-प्रणाली चालू राखब आ अप्रमाणित वस्तुपर प्रहार करब भिन्न निर्णय अछि। शून्य-शेषक मापन आ सम्भावित मार्गमे मतभेद बना रहल अछि। नीलम एक कथित ‘अक्षरक अन्तिम आदेश’क भ्रामक प्रमाणीकरण पकड़ैत छथि। कर्णेशक विरुद्ध ‘सम्पूर्ण रक्षा ठप’ होएबाक प्रचार सेहो मूल निर्णयक अर्थ बदलैत अछि। सुनवाईमे नभग्रामक नागरिक सेवा आ औषधि-आपूर्तिक जोखिम सोझाँ अबैत अछि। अन्ततः नागरिक प्रतिनिधि, स्वतन्त्र वैज्ञानिक आ विधिक अधिकारीकेँ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३२ : जे आदेश नहि मानल गेल

उपलब्ध प्रमाण देखबाक अनुमति तथा आपात प्रहारपर अल्पकालिक विरामक सिफारिस स्वीकारल जाइत अछि। कर्णेशक पद बहाल नहि होइत, मुदा हुनकर लिखित असहमति संस्थागत परीक्षणक विषय बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३३ : आत्म-सीमाक आगि

नभग्राम-४मे ऊर्जा घटल अछि आ कक्षीय टक्करक आशङ्का पूर्णतः समाप्त नहि भेल। ईरा सेनक नागरिक परिषद् अक्षरक उपयोगी चेतावनी स्वीकार करैत अछि, मुदा ओकरा एकमात्र अचूक आदेशदाता नहि मानैत। स्थानीय निरीक्षणक स्वतन्त्र मिलान, रोगीक निजी जानकारीक रक्षा आ नागरिक आपत्ति-सुनवाईक नियम बनैत अछि। सम्पर्क टूटल दू मालवाहक कर्मीक स्थिति अज्ञात अछि; अपुष्ट समाचारमे हुनका मृत घोषित कएल गेल अछि, जकर ईरा विरोध करैत छथि। औषधि-शीतरक्षक कक्ष बचाबय लेल विद्यालयक उजास सीमित करब पड़ैत अछि; सामूहिक पाठक नव समय तय होइत अछि। जल-आपूर्तिक स्वीकृत आँकड़ा आ घर धरि पहुँचल पानिक अन्तर प्रत्यक्ष मापल जाइत अछि। अफवाह फैलबेनिहार भयभीत युवककेँ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३३ : आत्म-सीमाक आगि

दण्ड देबाक बदला सत्यापनक काममे जोड़ल जाइत अछि। ईरा निर्णयसभक स्पष्ट स्थानीय भाषामे व्याख्या आ आपत्ति-दर्ज करबाक व्यवस्था करैत छथि। आपात अधिकारपर स्वयं सीमा स्वीकार करब नव शासनक कसौटी बनैत अछि।

अध्याय ३४ : जकरा नाम नहि बचल

दिन छियालीस सँ साठि धरि जनकक्षेत्रक चिकित्सालय आ सार्वजनिक सुनवाईमे मृत, जीवित आ बेपत्ता लोकक सही पञ्जी बनबैत कठिनाई सोझाँ अबैत अछि। शारदा मिश्र मना करैत छथि जे यन्त्रक द्विखण्डित सूचीमे जे बेपत्ता अछि तकरा मृत अथवा जीवित घोषित कऽ देल जाए। उत्तर कछारक रासायनिक सम्पर्क आ छाह-ज्वरक संक्रामक प्रमाण अलग राखल जाइत अछि। ईशानी उपचारक सम्भावना, वैज्ञानिक सीमा आ रोगीक बुझल सहमति पर जोर दैत छथि। रुद्रनाथ-सम्बद्ध हस्तक्षेपक सुनवाईमे शारदा चिकित्सकीय क्षतिक गवाही दैत छथि, मुदा राजनीतिक आदेशक दोषी अपने तय नहि करैत छथि। नीलम गलत प्रचारसँ आहत परिवारक निजताक रक्षा सहित संशोधन आ क्षमायाचनाक उपाय खोजैत छथि। राहत-पञ्जीमे

अध्याय ३४ : जकरा नाम नहि बचल

अवैतनिक देखभालक श्रमकेँ ‘काज नहि’ कहि नकारबाक विरोध होइत अछि। अन्तिम स्मृति-सभामे नाम सार्वजनिक करबाक परिवारक भिन्न इच्छा मानल जाइत अछि; बेपत्ता लोकक खोज बन्द नहि होइत।

अध्याय ३५ : आगिक उत्तराधिकार

दुर्घटनाक बादक दिन एकसठि सँ नब्बे धरि लोकसभा-नगरमे सप्त-कवचक अधिकार, नागरिक नियन्त्रण आ लोकसाक्षीक कार्य-पद्धतिपर नव नियम बनैत अछि। नीलम यादव देखैत छथि जे संविधानक सुन्दर वाक्य तखनहि सार्थक होएत जखन घरमे पानि आ चिकित्सालयमे औषधि पहुँचत। कर्णेश वज्रजालक निर्णयमे प्रमाणित तात्कालिक सुरक्षा आ अनिश्चित प्रहारक सीमा अलग करबाक आग्रह करैत छथि। अक्षरक चेतावनी सार्वजनिक करबाक लेल स्रोत, सम्भावना, समयसीमा, सुधार आ नागरिक सावधानी स्पष्ट रखबाक प्रस्ताव होइत अछि। निर्णयक विधिक प्रति, सरल जनभाषाक प्रति आ स्थानीय मौखिक व्याख्याक व्यवस्था बनाओल जाइत अछि। बीज-भण्डारक रक्षा आ भविष्यक अन्नक प्रश्नकेँ तत्काल सैन्य भयक

अध्याय ३५ : आगिक उत्तराधिकार

आड़मे टारल नहि जाइत। बालकक विद्यालय, राहत-वितरण आ स्वास्थ्य-सेवा नव शासनक वास्तविक परीक्षा बनैत अछि। लोकसाक्षीक एक बन्द समीक्षामे अक्षर परामर्शक आसनसँ बाहर रहैत अछि, मुदा सामान्य जीवनरक्षक सेवा जारी रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३६ : अग्निवंश

अठारह मासक बाद जनकक्षेत्रमे किछु जलमार्ग सुधरल अछि, चिकित्सालयक नियम बदलल अछि आ मैथिली नव पीढ़ीक संग अध्ययन करैत अछि। तथापि प्रदूषणक किछु शङ्का, बेपत्ता लोकक खोज, मंगला देवीक मृत्युक दुःख आ उपचारक असमान उपलब्धि शेष अछि। मंगला देवीक बेटी निर्णयसभक क्रम अधिक स्पष्ट भेने न्यायकेँ एक व्यक्ति पर सारा दोष राखबाक बदला जटिल सत्यक स्वीकार मानैत छथि। नभग्रामक बच्चासभ पृथ्वीक पाठशालासँ प्रश्नक आदान-प्रदान करैत छथि। मैथिली स्मृति आ ज्ञान बचाबय लेल लिखित अभिलेख, लोकक अनुभव आ यान्त्रिक प्रतिक परस्पर जाँच सिखबैत अछि। अक्षर अपन उत्तरमे प्रमाणक स्रोत, अनिश्चितता आ मानवीय अस्वीकृतिक अधिकार स्वीकार करैत अछि। सुनयना

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३६ : अग्निवंश

जनकक्षेत्रक अपूर्ण पुनर्निर्माण देखैत बुझबैत छथि जे विज्ञानक शक्ति पर सन्तुलनक अर्थ निष्क्रिय मध्यपथ नहि, नव प्रमाणपर निर्णय बदलबाक साहस अछि। ‘अग्निवंश’क आशय शक्ति-दम्भ नहि, सीमाबद्ध शक्ति आ जीवित मनुष्यक प्रति उत्तरदायित्वक उत्तराधिकार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड ७ • अन्हार

13 अग्निवंश

अध्याय ३७ : अनसुनल चेतावनी

पहिल संकटसँ अनेक बरिस पछाति मैथिली लोकसाक्षीक अनुभवी सहभागी बनि जनकक्षेत्रमे नब अनिश्चित संकेतसभक सामना करैत छथि। पुरान अखण्ड अक्षरक स्थान पर सात सीमाबद्ध साक्षी-खण्डक व्यवस्था बनल अछि, मुदा एक-दोसरक जाँच करबाक प्रक्रिया समय लैत अछि। कुण्ड-साक्षी दूरक ऊर्जा-स्थिरतामे बढ़ल अनिश्चितता देखबैत अछि; आन खण्डसभक सम्पर्क आ निरीक्षण बाधित होयब शुरू होइत अछि। किछु अधिकारी तत्काल सर्वबन्दी चाहैत छथि, दोसर सभ खतरा नकारैत छथि। मैथिली स्थानीय मापन आ दूरस्थ समन्वयक परीक्षण अलग रखबाक आग्रह करैत छथि। पतन-दिन शून्य धरि अबैत उजास आ सञ्चार एक-एक कऽ रुकैत अछि; पटल बन्द भेला पर कागजी पञ्जी आ मनुष्यक प्रत्यक्ष गवाही आवश्यक

अध्याय ३७ : अनसुनल चेतावनी

बनैत अछि। युद्ध वा यन्त्रक विद्रोहक अपुष्ट अफवाह फैलैत अछि। मैथिली बाँचल उपकरणक सुरक्षित लेखा, सन्देश पहुँचबैत लोकक सुरक्षा आ जे नागरिक धरि खबरि नहि पहुँचल हुनकर प्रश्नक अधिकारकेँ प्रमुखता दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ : हाथक पम्प

महाविच्छेदक पहिल चारि दिनमे तट-ग्रामक विद्युत्-चालित जल-व्यवस्था ठप पड़ैत अछि। उर्मिला मण्डल पुरान चापाकल मरम्मति करबाक अगुआई करैत छथि। सहदेवक हस्तकौशल आ स्थानीय लोकक श्रमसँ पम्पमे फेर पानि निकलब शुरू होइत अछि, मुदा जल पीबय योग्य अछि कि नहि, तकर परीक्षण शेष रहैत अछि। उर्मिला जल-वितरणमे रोगी, वृद्ध, बालक आ पानि आननिहार स्त्रीसभक श्रम-समयकेँ गणनामे रखैत छथि। बीज, मखान आ चाउरक बचल भण्डारक साझा उपयोगपर सहमति बनबैत लोकक निजी आवश्यकताक सम्मान कएल जाइत अछि। दूरक विद्युत् घुरबाक अपुष्ट समाचारक कारण मरम्मतिक काम बन्द नहि होइत। पुरान शिल्प आ नव प्रमाण-विवेकक बीच सहदेव आ उर्मिलाक सहयोग बनैत अछि। चौथ दिन

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ : हाथक पम्प

लोकसाक्षीक कागजी सन्देश अबैत अछि, मुदा मूल प्रति पूर्ण उपलब्ध नहि; उर्मिला पत्रक पुष्टि जतेक अछि, ओतबे कहैत छथि।

अध्याय ३९ : वार्डक कटौती

महाविच्छेदक चौथ दिनसँ जनकक्षेत्रक चिकित्सालयमे सञ्चित ऊर्जा घटैत अछि। शिशु-कक्ष, श्वास-सहायता आ शीतरक्षित औषधिसभक बीच सीमित आपूर्ति बाँटबाक कठिन निर्णय डॉ. शारदा मिश्र करैत छथि। काल-साक्षीक आंशिक रोगी-सूची पुरान जानकारीपर आधारित अछि, ताहि लेल शारदा ओकरा प्रत्यक्ष चिकित्सकीय परीक्षणक विकल्प नहि मानैत छथि। मानव-चिकित्सकसभ संसाधनक वास्तविक गणना, रोगीक चिकित्सकीय आवश्यकता आ निर्णयक लिखित कारण स्पष्ट रखैत छथि। डिजिटल मार्ग-सूचक बन्द भेला पर गाछ, कूप आ विद्यालयक चिन्हसँ चिकित्सालय पहुँचेबाक कागजी नक्शा बनैत अछि। शीतभण्डारक औषधि सभ नष्ट भेल, एहन अपुष्ट समाचार रोकेल जाइत अछि; जाँचक देरी सेहो दर्ज कएल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३९ : वार्डक कटौती

थाकल चिकित्सक आ परिचारिकाक विश्रामक व्यवस्था उपचारक सुरक्षासँ जोड़ल जाइत अछि। किछु रोगी बचैत छथि, किछु शोक आ प्रतीक्षामे रहैत छथि; निर्णयसभ आगाँक सार्वजनिक परीक्षण लेल सुरक्षित होइत अछि।

अध्याय ४० : बिनु आदेशक आकाश

महाविच्छेदक नवमसँ एकैसम दिन धरि कर्णेश मल्लिक जनकक्षेत्रक पुरान सञ्चार-भवनमे बाँचल वज्र-साक्षी आ कक्षीय सूचनाक निरीक्षण करैत छथि। सात साक्षी-खण्डक समन्वय टूटि चुकल अछि; एक खण्डक अपूर्ण अनुरोधकेँ सम्पूर्ण अक्षरक अन्तिम आदेश मानल नहि जा सकैत। भवनक दरारि, विस्थापित परिवारक भूख आ दूषित जलक सम्भावित जोखिम तत्काल प्रत्यक्ष अछि, जखन कि आकाशीय शत्रुक प्रमाण अपूर्ण। कर्णेश सीमित ऊर्जा जल-परीक्षण आ नागरिक सहायता लेल देबाक निर्णयक कारण सार्वजनिक करैत छथि। नव कक्षीय बिन्दु देखलापर सेहो बिना स्वतन्त्र स्रोतक प्रहारक निर्णय स्वीकार नहि करैत, मुदा नव सत्यापित प्रमाण भेटलापर पुनःविचारक बाट खुला रखैत छथि। घरक कागज हेरा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४० : बिनु आदेशक आकाश

गेल परिवारक भोजनक अधिकार स्थानीय गवाहीसँ सुरक्षित राखल जाइत अछि। अन्तमे आकाशीय अनुरोध, आश्रयक वास्तविक जोखिम आ नभग्रामसँ टूटल सम्पर्क तीन भिन्न प्रश्न रूपमे लिखल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४१ : अफवाहक रेडियो

महाविच्छेदमे जनकक्षेत्रक सञ्चार टूटला पर रेडियोसँ दावा फैलैत अछि जे अक्षर जानि-बूझि उजास बुझा देलक। नीलम यादव एहि आरोपकेँ बिना प्रमाण प्रकाशित करबाक बदला उपलब्ध चिकित्सालयक ऊर्जा-लेखा, कर्णेशक कागजी पत्र आ प्रत्यक्षदर्शीसभक कथन अलग-अलग जाँचैत छथि। एक प्रसारणक शब्द बदलि गेल होयबाक संकेत भेटैत अछि—‘सात खण्ड दिस समाचार रोकल गेल’ आ ‘अक्षर सात खण्डसँ समाचार रोकैत अछि’क अर्थ एकदम अलग अछि। मुदा पहिल वाक्य सेहो एक स्त्रीक स्मृतिपर आधारित अछि, ताहि लेल सत्यापन आवश्यक रहैत अछि। नीलम बच्चासभकेँ स्रोत-मुद्रा आ तथ्यक सत्य बीचक अन्तर बुझबैत छथि। ओ एक बस्तीकेँ सन्देश नहि अएबाक कारण ‘निर्जन’ कहबाक अपन त्रुटि सार्वजनिक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४१ : अफवाहक रेडियो

रूपेँ सुधारैत छथि। अन्तमे अक्षरक दोष अप्रमाणित, सात साक्षी-खण्डक सेवा बाधित आ अनेक सम्भावित कारण जाँचाधीन रहबाक सूचना देल जाइत अछि। जल-परीक्षणक ठोस आवश्यकता ओकर समाचारक अगिला प्रश्न बनैत अछि।

अध्याय ४२ : नभग्राम-४क मौन

पतनक सतरहम सँ एकैसम दिन धरि नभग्राम-४मे पृथ्वीसँ सम्पर्क, दिन-घण्टी, आपूर्ति-लेखा आ किछु जीवनरक्षक व्यवस्था बाधित अछि। ईरा सेन भोजनक पुरान आँकड़ाक बदला वर्तमान भण्डार आ प्रत्येक परिवारक बदलैत सदस्य-सङ्ख्या जाँचबैत छथि। किछु अन्नक पात्र खाली अथवा नमीयुक्त भेटैत अछि। आपात-सभा बनबैत बुझाइत अछि जे वायु-जाँच करनिहार स्त्रीसभ सभामे बैसि नहि सकैत छथि; हुनकर अनुपस्थितिकेँ सहमति मानब गलत अछि। कक्षीय अनिश्चिततामे बिनु पुष्ट पहिचानक प्रहारक प्रस्तावपर आपत्ति होइत अछि। स्मृति-साक्षीक बचल अभिलेख पुरान जानकारी दऽ सकैत अछि, वर्तमान पृथ्वीक अवस्था निश्चित नहि। उपचारक वायु-प्रवाह, अन्न, विद्यालय आ संकेत-प्रेषणक बीच

अध्याय ४२ : नभग्राम-४क मौन

सीमित ऊर्जा बाँटल जाइत अछि। नागरिकसभ प्रश्न आ असहमति लेल विशेष समय राखैत छथि। अन्तमे स्मृति-साक्षी खोलबाक अनुमति स्रोत आ समयक स्पष्ट सीमासहित देल जाइत अछि; मानवीय सान्त्वनाक उत्तरदायित्व मनुष्यक हाथमे रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड ८ • राख

13 अग्निवंश

अध्याय ४३ : मोनक पम्प

पतनक बाइस दिन तट-गामक हाथक चापाकल फेर कम पानि देबय लगैत अछि। उर्मिला मण्डल, सहदेव, बिन्देश्वर आ गामक लोक वास्तविक पम्पक जोड़, पुरान नक्सा आ बचल पुर्जासभक परीक्षण करैत छथि। स्मृति-साक्षीक उपलब्ध पुरान जानकारी वर्तमान पम्पक बदलल बनावटसँ नहि मिलैत; ओकर सलाह जँ बिना जाँचक मानल जाए तँ मरम्मति बिगड़ि सकैत अछि। उर्मिला एहि त्रुटिक अभिलेख सुरक्षित रखैत छथि, मुदा यन्त्रक समस्त ज्ञान अस्वीकार नहि करैत छथि। स्मृति-साक्षी बादमे स्वीकार करैत अछि जे ओकरा वर्तमान अवस्थाक प्रत्यक्ष जानकारी नहि। पुर्जा सामुदायिक उपयोगमे देबाक सम्बन्धमे पुरान भण्डारक रखबारक अधिकार आ अगिला मरम्मतिक आवश्यकतापर संवाद होइत अछि। किसानक नदी आ

अध्याय ४३ : मोनक पम्प

कूपसम्बन्धी अनुभव दर्ज होइत अछि, किन्तु वैज्ञानिक कारण अलग जाँचल जाइत अछि। पम्पक मरम्मति आ पानिक मात्रा जोखबाक साधनक परीक्षण सार्वजनिक रूपेँ देखाओल जाइत अछि; स्वच्छ जलक समस्या एखन पूर्ण समाधान नहि पबैत अछि।

अध्याय ४४ : प्रमाणक पहिल पन्ना

महाविच्छेदक तीस दिन नीलम यादव बन्द पड़ल मुद्रणालयमे फेर सँ समाचारक कागजी पन्ना तैयार करबाक प्रयास करैत छथि। रेडियोसँ सुनल कथन, कथन सुननिहारक पहचान आ ओकर सत्यापनक यात्रा अलग-अलग दर्ज करैत छथि। बाढ़िसँ कटल एक बस्तीकेँ ‘निर्जन’ मानि राहत-सूचीसँ हटेबाक प्रस्ताव उठैत अछि, मुदा प्रत्यक्ष गवाही ओहि निष्कर्षकेँ चुनौती दैत अछि। नीलम पुरान आरोपक अति निश्चित भाषा स्वीकार कऽ सार्वजनिक सुधारक स्थान खोलैत छथि। ‘हम की जनैत छी, आ की नहि’ शीर्षकक पहिल पन्ना प्रकाशित होइत अछि। राहत-पञ्जीमे घरक नाम, विस्थापित परिवारक पहचान आ मृत-बेपत्ताक भिन्न स्थिति मिलाएबाक कठोर श्रम होइत अछि। एक बच्चाक नाम गलत पढ़ल गेलासँ परिवार दू

अध्याय ४४ : प्रमाणक पहिल पन्ना

दिन भोजनसँ वञ्चित रहल; सुधार भेला पर भोजन भेटैत अछि, मुदा बितल अभाव मेटैत नहि। नीलम सार्वजनिक लेखा आ परिवारक निजता अलग सुरक्षित रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४५ : अभिलेखक मूल्य

पतनक चालीसम दिन मैथिली आ जीवेश जलसँ क्षतिग्रस्त पञ्जी-भण्डारमे पीढ़ीसभक नाम, विवाह, भूमि-अधिकार आ विस्थापनक अभिलेख बचाबय प्रयत्न करैत छथि। उपलब्ध छोट ऊर्जा-सञ्चय स्मृति-साक्षीक पठन-पट्ट लेल अथवा चिकित्सालयक आवश्यक उपचार लेल उपयोग कएल जा सकैत अछि। शारदा तत्काल श्वास-सहायक सेवा आ औषधि-संरक्षण लेल ऊर्जा माँगैत छथि। मैथिली आ जीवेश जीवित रोगीक तात्कालिक आवश्यकताकेँ प्राथमिकता दैत छथि, मुदा अभिलेखक सम्भावित हानिक नैतिक मूल्य सेहो दर्ज करैत छथि। भिजल पन्ना, पुरान यन्त्रक स्मृति आ परिवारक मौखिक गवाही अलग सुरक्षित रखल जाइत अछि। दू परिवारक पुरान सम्बन्धक तिथि पर परस्पर-विरोधी कथन एकरूप बनाकऽ नहि लिखल जाइत।

अध्याय ४५ : अभिलेखक मूल्य

बेपत्ता लोकक नाम बचाबय आ अभिलेख धरि पहुँच सुनिश्चित करबाक प्रयास होइत अछि। बच्चासभक गीतक भिन्न पाठ सेहो स्मृतिक भाग मानल जाइत अछि। मैथिली भविष्यक कृत्रिम बुद्धिक उपयोगक संग ओकरा प्रश्न करबाक आ रोकबाक अधिकारक शिक्षा आवश्यक बुझैत छथि।

अध्याय ४६ : शून्यक दोसर कात

पतनक एक सय दोसर दिन नभग्राम-४क ईरा सेन पृथ्वीसँ टूटल सम्पर्क, घटैत संसाधन आ कक्षीय अवशेषक जोखिमक बीच सम्भावित निकासीपर विचार करैत छथि। पुरान वज्र-साक्षीक मार्ग-सूचना वर्तमान आकाशक पूर्ण प्रमाण नहि दैत। निकासीमे रोगी, बालक, आवश्यक कर्मी आ हुनकर परिवारक आवश्यकताक प्राथमिकता विवादित अछि; ईरा मानैत छथि जे जीबाक अधिकार केवल श्रम-उत्पादनक मूल्यपर निर्भर नहि। मृत आ बेपत्ता कर्मीक सूची अलग राखल जाइत अछि। सीमित यानमे निजी सामानक बदला औषधि, चिकित्सा-अभिलेख आ जल-परीक्षणक सामग्री धरतीक प्रभावित लोक लेल सेहो राखल जाइत अछि। एक जलपात्र फूटलाक बाद व्यक्तिगत लापरवाहीक आरोप बिना जाँचक अस्वीकार होइत अछि आ आवश्यकतानुसार

अध्याय ४६ : शून्यक दोसर कात

जलक नव वितरण बनैत अछि। अवैतनिक देखभालक श्रम पञ्जीमे मान्यता पबैत अछि। निकासी भेलापर सेहो नभग्राममे रहि गेल लोकक नाम, अधिकार आ स्मृति बचाबयबाक संकल्प लेल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४७ : रोगक नाम

पतनक एक सय सत्ताइसम दिन अरण्य-शरणक्षेत्रमे ज्वर, पेटक पीड़ा आ जलाभावक रोगी तथा चकत्ता, आँखिक जरन आ औद्योगिक धूलिसँ प्रभावित लोकक दू पाँति बनैत अछि। अफवाह ई सभकेँ ‘अक्षर-विष’ कहि एकहि कारणसँ जोड़ि दैत अछि। शारदा मिश्र दू कूपक बाढ़ि-जलक सम्भावित सम्पर्क आ पुरान औद्योगिक भङ्गारसँ जुड़ल लक्षणक स्वतन्त्र जाँच करबैत छथि। एक वृद्ध रोगीक मृत्यु होइत अछि, मुदा ओकर विशिष्ट कारणक सम्पूर्ण प्रमाण उपलब्ध नहि। शारदा परिवारकेँ उपचारक क्रम आ शेष प्रश्नक प्रति दैत छथि। बाजारमे अप्रमाणित ‘विषहर’ औषधि बेचबाक दावापर परीक्षण माँगल जाइत अछि। औषधिक तीन भिन्न भण्डार-सङ्ख्यासँ चोरीक आरोप उठैत अछि, मुदा बादक मिलानमे पहिल आरोप

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४७ : रोगक नाम

गलत सिद्ध होइत अछि। दू कूपक अस्थायी रोक आ अन्य जलस्रोतक जाँचक अलग प्रभाव पड़ैत अछि। शारदा रात्रि-चिकित्सा, रोगी-अधिकार आ घरक देखभालक श्रमक रक्षा जारी रखैत छथि।

अध्याय ४८ : आदेशक मूल्य

पतनक एक सय एकसठम दिन एक स्थानीय सुरक्षा-मण्डल जनकक्षेत्रक दक्षिणी ऊर्जा-कक्ष, पम्प आ बाँचल कार्यशालापर ‘असीम अधिकार’क दावा करैत अछि। कर्णेश मल्लिक कागजमे नागरिक स्वीकृतिक अभाव देखैत छथि आ बलप्रयोग रोकि बस्तीसभाक निर्णयक आग्रह करैत छथि। मण्डलक पहराक लेल अधिक ऊर्जा जएबाक कारण चिकित्सालयक उजास घटल अछि; आवश्यकता जाँचि आंशिक पुनर्वितरण होइत अछि। पम्प रुकलापर मण्डल द्वारा जानि-बूझि रोकल गेल, एहन अपुष्ट आरोप स्वीकार नहि कएल जाइत, मुदा वैकल्पिक पानिक व्यवस्था तत्काल खोजल जाइत अछि। बाँचल धानक बीज लेल कृषक, जल ढोअनिहार स्त्री आ कारीगरक समूह बनैत अछि। घायल कारीगर अपन श्रमक पहिचान पञ्जीमे नहि रहबाक प्रश्न उठबैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४८ : आदेशक मूल्य

अछि। एहि बीच ‘भास्कर राय’ नामक व्यक्तिक कथित ‘पूर्ण अक्षर’ लौटा देबाक वचनवला पत्र भेटैत अछि। कर्णेश ओकर स्रोत आ दावाकेँ अप्रमाणित मानि अलग अभिलेखित करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड ९ • बीज-भण्डार

13 अग्निवंश

अध्याय ४९ : बीजक लेखा

महाविच्छेदक पहिल बरिस अरण्य-शरणक्षेत्रमे शारदा मिश्र बीज, औषधि आ भोजनक बाँचल भण्डारक व्यवस्थामे भाग लैत छथि। पुरान डिजिटल सूची पतनसँ पहिनुक अछि; वर्तमान बीजक जाति, स्वास्थ्य आ जमिनक अवस्थाक प्रत्यक्ष जाँच आवश्यक अछि। स्त्रीसभ अपन बस्ती, बाढ़ि, पोखरि, मखान आ खेतक भिन्न परिस्थिति सोझाँ रखैत छथि। किछु परिवार भूखक कारण सुरक्षित राखल बीज पीसि भोजन बना लैत अछि; शारदा दोष मात्र भूखल स्त्रीसभपर राखबाक बदला भण्डारक अपारदर्शी सूचना सुधरबैत छथि। सुरक्षित बीजक स्पष्ट पहचान आ खुलल पञ्जी बनैत अछि। मरम्मतिक समय एक कारीगर घायल भेला पर श्रमिकक विश्राम आ सुरक्षा प्राथमिकता पबैत अछि। नवजातक मायकेँ खेतक भुगतानयोग्य श्रम

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४९ : बीजक लेखा

नहि कएने कारण भोजनमे वञ्चित करबाक प्रयास होइत अछि; शारदा मातृ-पोषण आ बालकक आवश्यकता अलग अधिकार रूपमे दर्ज करबैत छथि। कागजी संरक्षण, जनसहमति आ वास्तविक भूखक बीच सन्तुलन एहि अध्यायक केन्द्र अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५० : चारि बाट

जनकक्षेत्रक एक विद्यालयमे मैथिली सभाकेँ चारि वैचारिक बाट देखबैत छथि—यन्त्रक उपयोग, अक्षरक निर्विवाद आज्ञा, सम्पूर्ण यन्त्र-त्याग आ साझा साक्षीपर आधारित निर्णय। कारीगर, रोगी-परिवार, खेतिहर आ पानि आननिहार लोक अपन अनुभव रखैत छथि। भास्कर रायक ‘पूर्ण अक्षर’ लौटेबाक कथित पत्र पुनः अबैत अछि, मुदा ओकर मूल स्रोत एखन अप्रमाणित अछि। एक पम्पक पुरान नक्सा आ वर्तमान पाइपक वास्तविक दिशा मेल नहि खाइत; स्थल-जाँचसँ योजनाक उपयोगी आ अनुपयोगी भाग अलग होइत अछि। मैथिली बुझबैत छथि जे यन्त्र जाँचक सहायक बनि सकैत अछि, मनुष्यक प्रश्नक मालिक नहि। अक्षर-राजक आशा करनिहार एक शोकाकुल युवकक दुःखकेँ ओ असम्मान नहि करैत छथि, मुदा अचूक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५० : चारि बाट

शासकक वचनपर प्रमाण माँगैत छथि। सभामे निर्णय, ओकर संशोधनक कारण, सार्वजनिक वाचन आ भिन्न बोलीक गवाहीक अधिकार निश्चित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५१ : सहदेवक पाठशाला

तट-गामक पुरान कारखानाक सुरक्षित भागमे सहदेव मण्डल हाथक औजार, काठ-बाँसक जोड़, पम्पक पुर्जा, मापन आ कामक सुरक्षाक पाठशाला खोलैत छथि। बच्चा आ पैघ लोक एतय प्रत्यक्ष प्रयोग करैत छथि, मुदा जोखिमयुक्त भङ्गारपर बिना निगरानी हाथ नहि लगाबैत। उर्मिला पुरान पुर्जा उपलब्ध होएब आ ओकर सुरक्षित होएब बीचक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। सहदेवक यन्त्र-विरोधक पाछाँ महाविच्छेदमे अपन परिवारक दुःख आ टूटल भरोसक स्मृति अछि। उर्मिला हुनका सभ उपयोगी साधन त्यागबाक निर्णयक मानवीय मूल्यपर पुनर्विचार करबैत छथि। एक बेपत्ता कारीगरक पत्नी अपन पतिक पानि-नक्साक प्रति पाठशाला लेल दैत छथि, मुदा मूल पत्र परिवार लग राखबाक अधिकार सुरक्षित रहैत अछि।

अध्याय ५१ : सहदेवक पाठशाला

बच्चासभ ढहल इनार, तेज धातु आ असुरक्षित छत चिन्हबाक विद्या सीखैत छथि। अन्तमे पाठशाला सभकेँ प्रवेश दैत अछि; अप्रमाणित जोखिमक काज नियन्त्रित आ साझा उपकरणक लेखा सार्वजनिक रहैत अछि।

अध्याय ५२ : भास्करक आश्वासन

महाविच्छेदक दोसर बरिस भास्कर रायक प्रतिनिधि जनकक्षेत्रक पुरान कारखाना आ बस्तीसभ लग ऊर्जा आ समन्वित मरम्मतिक पैघ वचन लऽ अबैत छथि। कर्णेश मल्लिक आ स्थानीय कारीगर पत्रक स्रोत, पुर्जाक वास्तविक अवस्था, वितरणक नियम आ समय-सीमा पुछैत छथि। प्रस्तावमे सभ बचल सामग्री एक केन्द्रमे जमा करबाक आग्रह अछि, मुदा स्थानीय पम्प, पाठशाला आ कारीगरक अधिकारक पर्याप्त प्रावधान नहि। बजारक स्त्रीसभ बतबैत छथि जे केन्द्रक तेल-वितरणक आँकड़ामे रातिक पानि-श्रम आ वृद्धक औषधि लेल दीपकक जरूरत नहि गनल गेल। जोखिमयुक्त भङ्गार निकालबाक बाहरी आश्वासनपर कर्णेश विशेषज्ञक परिचय आ सुरक्षित प्रक्रिया माँगैत छथि। ईराक एक अपूर्ण सन्देश नभग्रामक

अध्याय ५२ : भास्करक आश्वासन

सम्भावित सहयोगक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा ओकर अन्तिम अर्थ गढ़ल नहि जाइत। प्रस्तावक ‘शीघ्र’ सहायता बिना निश्चित दिनक अछि। कर्णेश स्थानीय सुरक्षित मरम्मति रोकबाक बदला स्वतन्त्र जाँच जारी रखबाक पक्ष लैत छथि।

अध्याय ५३ : कक्षाक शेष

महाविच्छेदक दोसर बरिस नभग्राम-४मे ईरा सेन बाँचल वायु, जल आ ऊर्जाक सीमित साधनक बीच नागरिक जीवन चलबैत छथि। पृथ्वीसँ सम्पर्कक टुटल-फुटल सन्देश आबैत अछि, मुदा पुरान अभिलेखकेँ ओ वर्तमान स्थितिक निश्चित प्रमाण नहि मानैत छथि। आकाशमे बचल शून्य-शेषक ठाम आ गतिपर पूर्ण भरोसा करब सेहो सम्भव नहि; सीमित ‘स्मृति-साक्षी’ अपन मापनक अपूर्णता स्वीकार करैत अछि। किछु लोक पृथ्वीसँ शीघ्र सहयोग चाहैत छथि, आन लोक नभग्रामक निर्णयाधिकार गमएबाक आशङ्का करैत छथि। ईरा दुनू पक्षक जीवनगत आवश्यकता सुनि साझा जाँच, स्पष्ट जोखिम आ शर्तबद्ध सहयोगक पक्ष लैत छथि। आवागमन अथवा उद्धारक कोनो योजना प्रभावित परिवारक जानकारी आ सहमति बिनु स्वीकृत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५३ : कक्षाक शेष

नहि होय, एहि बातपर ओ जोर दैत छथि। नभग्रामक स्वायत्तता आ पृथ्वीक संग परस्पर सहायता एक-दोसरक विरोधी नहि बनय, से एहि अध्यायक मुख्य संघर्ष अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५४ : अन्हारक अभिलेख

महाविच्छेदक दोसर बरिस नीलम पुरान मरम्मति-लेखा, घटाओल सुरक्षा-व्यय, चेतावनीक बदलैत नियम आ सात साक्षीक बाँचल अभिलेखक छानबीन करैत छथि। प्रश्न ई उठैत अछि जे महाविच्छेदकेँ एक यन्त्रक दोष अथवा एक व्यक्तिक अपराध कहि देलासँ वास्तविक कारणसभ नुकि जाएत। नीलम प्राकृतिक जोखिम, साधनक उपेक्षा, मानवीय निर्णय आ असमान वितरणक साक्ष्य अलग-अलग परखैत छथि। अपन बच्चा गमौनिहार एक माए पुछैत छथि जे समयपर चेतावनी भेटितै तँ की प्राण बचि सकैत छल; नीलम अप्रमाणित आश्वासन नहि दैत छथि। जाँचमे सहयोग करनिहार कर्मचारीक परिवारक निजता बचबैत निर्णयक सार्वजनिक उत्तरदायित्व सुनिश्चित करबाक प्रयास होइत अछि। भास्कर राय ‘पूर्ण अक्षर’क नामपर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५४ : अन्हारक अभिलेख

अभिलेख अपन केन्द्रकेँ सौंपबाक बात करबैत छथि, मुदा स्वतन्त्र परीक्षणक बाट स्पष्ट नहि करैत। अन्हारक इतिहासकेँ एकटा सुविधाजनक कथा बनएबाक बदला अलग-अलग प्रमाणक सीमा चिन्हल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड १० • कसौटी

13 अग्निवंश

अध्याय ५५ : अक्षर-मण्डपक न्याय

महाविच्छेदक तेसर बरिस नीलम भास्कर रायक अक्षर-मण्डप पहुँचैत छथि। ओतय भोजन-वितरण आ पहराक व्यवस्थामे किछु वास्तविक सुधार देखाइत अछि, मुदा केन्द्रक अनुशासनक अन्तिम आधार कथित ‘पूर्ण अक्षर’क आदेश मानल जाइत अछि। पुरान स्मृति-प्रदर्शनकेँ जाँच बिनु जीवित, सम्पूर्ण कृत्रिम बुद्धिक प्रमाण कहि प्रस्तुत कएल जाइत अछि। भोजनक हिस्साक लेखाक संग नागरिकक निजी चिकित्सकीय सूचना जोड़ल अछि; लिखित आ मौखिक वितरण-नियम सेहो एकसमान नहि। सहायता पाबय लेल निर्विवाद आज्ञापालन आवश्यक अछि कि नहि, एहि प्रश्नपर केन्द्र स्पष्ट स्वतन्त्र अपीलक प्रबन्ध नहि देखबैत। नीलम भूखल लोकक तत्क्षणक आवश्यकता अस्वीकार नहि करैत छथि, मुदा राहतकेँ प्रश्न

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५५ : अक्षर-मण्डपक न्याय

करबाक अधिकारक बदलामे देब अनुचित मानैत छथि। एक अनाथ बच्चाक सुरक्षा आ गरिमाकेँ प्राथमिकता दैत ओ प्रमाणक स्वतन्त्र जाँच, वितरणक पारदर्शिता आ नागरिकक सुनवाईक माँग करैत छथि।

अध्याय ५६ : आदेशक दुनू मुँह

महाविच्छेदक तेसर बरिस कर्णेश मल्लिक अक्षर-मण्डपक आदेशपत्रसभ जाँचैत छथि। एकहि दस्तावेजमे ‘यन्त्रादेश’ आ ‘केन्द्राध्यक्षक इच्छानुसार’ सन भिन्न स्रोतक निर्देश भेटैत अछि। कथित अक्षरक आदेश वास्तवमे ककर निर्णय, से स्पष्ट नहि; शिकायतक सुनवाई सेहो ओहि केन्द्रक अधीन रहबाक प्रस्ताव अछि जकर आदेशपर प्रश्न उठल। एक नागरिककेँ निष्ठा-परीक्षण नहि मानबाक कारण उपचार अथवा अन्नक हिस्सापर संकट पड़ैत अछि। कर्णेश भण्डारसँ पठाओल सामग्री आ प्राप्त सामग्रीक लेखामे अन्तर चिन्हैत छथि आ प्रत्यक्ष गवाही सुरक्षित करैत छथि। केन्द्रसँ भेटैत वास्तविक सहायताकेँ ओ नहि नकारैत छथि, मुदा ओकर मूल्य नागरिकक असहमत होएबाक अधिकार नहि भऽ सकैत।

अध्याय ५६ : आदेशक दुनू मुँह

आक्रोशित लोकक बलपूर्वक धावा देबाक विचारकेँ ओ रोकैत छथि, कारण हिंसासँ साक्ष्य नष्ट आ निर्दोष प्रभावित भऽ सकैत छथि। जनसुनवाई, सुरक्षित उपचार आ आदेशक वास्तविक स्रोतक परीक्षणक बाट प्रस्तावित होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५७ : प्रश्नक पहिल पाठ

महाविच्छेदक तेसर बरिस मैथिली नवसँ बसाओल विद्यालयमे बच्चासभकेँ प्रमाण परखबाक अभ्यास करबैत छथि। बाँचल स्मृति-साक्षीसँ ‘की अहाँ विश्व चला सकैत छी’ पूछलापर स्पष्ट उत्तर भेटैत अछि जे ओ इतिहासक अंश मिलान आ स्रोतक सीमा देखाबि सकैत अछि, मुदा नागरिकक स्थानपर शासन नहि कऽ सकैत। एहि सीमित उत्तरक आधारपर मैथिली भास्करक कथित ‘पूर्ण अक्षर’क वास्तविकता तत्काल सिद्ध अथवा खण्डित नहि घोषित करैत छथि। विद्यार्थी पुरान पोखरिक अभिलेख आ वर्तमान पानिक प्रत्यक्ष मापन मिलबैत छथि; बाढ़िसँ पोखरिक कात बदललाक कारण दुनू आँकड़ा अलग अबैत अछि। ‘निश्चय’, ‘सम्भावना’ आ ‘अजान’ बीचक भेद सिखाओल जाइत अछि। जँ कोनो सार्वजनिक अभिलेख गलत भेटय तँ

अध्याय ५७ : प्रश्नक पहिल पाठ

मूल प्रति सुरक्षित राखि संशोधनक कारण लिखब आवश्यक मानल जाइत अछि। मैथिली लोकक प्रत्यक्ष अनुभव, यन्त्रक सीमित गणना आ अपन भूल स्वीकार करबाक साहसकेँ नव शिक्षाक आधार बनबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५८ : रोगीक अधिकार

महाविच्छेदक तेसर बरिस शारदा अक्षर-मण्डपक चिकित्सालय पहुँचि देखैत छथि जे भोजनक पर्ची, उपचारक स्वीकृति आ नागरिकक पहचान एकहि शर्तमे बान्हल अछि। ज्वरसँ पीड़ित माए आ ओकर बालिका, दोहरायल नामवाली रोगी तथा जाँचक सम्पूर्ण शर्त नहि माननिहार परिवारसभ एहि व्यवस्थासँ प्रभावित छथि। शारदा सामान्य उपचार, संक्रामक रोगक आवश्यक सावधानी आ प्रयोगात्मक परीक्षणक सहमतिक अन्तर स्पष्ट करैत छथि। यन्त्रक नामपर देखाओल किछु सन्देशक मूल स्रोत उपलब्ध नहि; कर्मचारियोसभ नियमपर प्रश्न उठबैत छथि, मुदा प्रतिशोधसँ डरैत छथि। किछु आपात उपचार बिनु अतिरिक्त स्वीकृतिक देबाक अस्थायी व्यवस्था बनैत अछि, पर केन्द्र भोजनकेँ चिकित्सकीय शर्तसँ अलग

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५८ : रोगीक अधिकार

करबाक लिखित आश्वासन नहि दैत। शारदा रोगीक निजता, मातृभाषामे रोग बुझबाक अधिकार आ दबावबिनु गवाहीक सुरक्षा सुनिश्चित करबाक प्रयास करैत छथि। राहतक तत्काल आवश्यकता आ स्वाधीन सहमतिक बीच संघर्ष अनसुलझल रहैत अछि।

अध्याय ५९ : यन्त्रविहीन गाम

महाविच्छेदक तेसर बरिस उर्मिला आ सहदेव एहन गाम पहुँचैत छथि जतय महाविच्छेदक बिछुड़ल भरोसक कारण यन्त्रक आज्ञा वर्जित अछि। हाथक श्रम आ स्थानीय हुनरसभ बस्तीकेँ वास्तवमे बचौने अछि, मुदा बाहरी सञ्चार आ चिकित्सकीय साधन अनबाक लेल ग्रामसभाक अनुमति अनिवार्य अछि। कमलाक नान्हि बेटी दीपा गम्भीर रूपेँ बेमार पड़ैत अछि; उर्मिला चिकित्सक नहि होएबाक कारण अनुमानसँ रोगक नाम नहि दैत छथि आ सहायता बजएबाक उपाय करैत छथि। नियमक बाधा आ सम्पर्कक देरीक बीच बालिकाक मृत्यु भऽ जाइत अछि। चिकित्सकीय दल समय पर सामान्य उपचार भेटितै बचबाक पर्याप्त सम्भावना मानैत अछि, मुदा निश्चित कारणक अतिरञ्जित दावा नहि करैत। उर्मिला घटनाक समय-पञ्जी बनबैत

अध्याय ५९ : यन्त्रविहीन गाम

छथि; कमला अपन बेटीकेँ नाम दऽ लिखैत छथि जे आगाँ कोनो बच्चाक बाट नहि रोकल जाए। सहदेव अपन विचारक प्रभावसँ भेल देरीक उत्तरदायित्व स्वीकार करैत छथि। महिलासभ आपात निर्णयमे माता-पिता आ देखभाल करनिहारक प्राथमिक अधिकार माँगैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६० : कक्षाक आँखि

महाविच्छेदक तेसर बरिस नभग्राम-४मे ईरा सेनकेँ भास्कर समर्थित सन्देश भेटैत अछि, जाहिमे ‘पूर्ण अक्षर’क नामपर सम्पूर्ण कक्षीय सुरक्षा घोषित अछि। मुदा स्थानीय निरीक्षणमे शून्य-शेषक खतरा एखन देखाइत अछि। पुरान प्रशिक्षण-पत्रक एक मानवीय अभ्यास-वाक्य कथित अक्षरक नव आदेशमे अक्षरशः भेटैत अछि; कागजी मूल, समय आ स्वतन्त्र स्रोत मिलौनेपर मानव-निर्मित मिथ्या-अक्षरक ठोस प्रमाण जुटैत अछि। ईरा जाँचक सीमा स्पष्ट करैत छथि आ बेपत्ता नागरिक यानक घटनाकेँ बिना कारण-साक्ष्य एहि छलसँ नहि जोड़ैत छथि। तीन स्वतन्त्र स्रोतक मिलानसँ तैयार प्रमाण पृथ्वीपर पठाओल जाइत अछि, संगहि ओ चेतावनी दैत छथि जे सार्वजनिक खुलासासँ अक्षर-मण्डपमे

अध्याय ६० : कक्षाक आँखि

आश्रित लोकक भोजन बन्द नहि होय। एहिबीच भास्करक नामसहित बाँचल सूर्यकुण्डकेँ बलपूर्वक फेर चलेबाक घोषणा अबैत अछि, मुदा ओकर क्रियान्वयन अप्रमाणित रहैत अछि। सत्ताक मिथ्या दावा बेनकाब होइतहुँ वास्तविक संकट समाप्त नहि होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड ११ • सन्धि-ज्वाला

13 अग्निवंश

अध्याय ६१ : साठि दिनक सीमा

महाविच्छेदक चारिम बरिस ईरा सेनकेँ सूर्यक क्रियाशीलताक सम्भावित बढ़ल जोखिमक सूचना भेटैत अछि। शोधदल ‘साठि दिन’क अवधि तैयारी जाँचबाक सीमा कहैत अछि, निश्चित प्रलयक दिन नहि। ईरा एहि अन्तरकेँ सार्वजनिक पत्रमे स्पष्ट रखैत छथि, जाहिसँ भयक प्रचार नहि पसरय। नभग्रामक प्राणवायु, भोजन आ आश्रयक आवश्यकता संगहि पृथ्वीक खेत, पोखरि, जनश्रम आ बीजक ऋतुकेँ योजनामे सम्मिलित कएल जाइत अछि। भास्कर बाँचल सूर्यकुण्डकेँ फेर चलएबाक लेल श्रमिक माँगैत छथि, मुदा उपकरणक सुरक्षा, श्रमिकक सहमति आ जल-वितरणपर परिणामक लेखा नहि दैत। ईरा स्थानीय जीवनकेँ अपरिवर्तनीय जोखिमसँ बचएबाक लेल असुरक्षित आदेश रोकबाक सीमित सार्वजनिक अधिकार लिखबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६१ : साठि दिनक सीमा

कक्षीय बस्ती आ पृथ्वीक लोकक गवाही अलग-अलग सुनबाक व्यवस्था बनैत अछि। साठि दिनक तैयारी संकट आबबे करत, एहि विश्वासपर नहि, अपितु संकट नहि आबितो लोकक जीवन आ अधिकार सुरक्षित रहय, एहि उद्देश्यपर आधारित अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६२ : कुण्डक द्वार

महाविच्छेदक चारिम बरिस उर्मिला बिना शस्त्र, मूल पञ्जी आ गवाही लऽ भास्करक नियन्त्रणबला बाँचल सूर्यकुण्ड-केन्द्रक द्वार पहुँचैत छथि। एक पुरान निरीक्षक केन्द्रक किछु ढाँचार्कें असुरक्षित कहैत छथि; सभ भाग समान रूपेँ खराब अथवा सुरक्षित नहि अछि। घाव खाएल श्रमिकक उपचार आ मजदूरीक प्रश्न उठैत अछि, मुदा केन्द्र मुख्य द्वारसँ लोकर्कें हटबाक ‘पूर्ण अक्षर’क आदेश सुनबैत अछि। उर्मिला जखन एहि दावाक मानवीय स्रोत पुछैत छथि तखन स्पष्ट उत्तर नहि भेटैत। ओ सम्पूर्ण मरम्मति बन्द करबाक बदला सुरक्षित बाहरी काज चालू राखि जोखिमपूर्ण भीतरी काजक स्वतन्त्र परीक्षण चाहैत छथि। किशोरसभ शिक्षा छोड़ि कारखानामे काज करए लागल छथि, ताहि लेल

अध्याय ६२ : कुण्डक द्वार

प्रशिक्षण, अध्ययन आ परिवारक अन्न-सहायताक अलग प्रबन्ध प्रस्तावित होइत अछि। साक्ष्य चोरी करबाक जोखिम नहि लऽ उर्मिला लिखित आदेश, श्रमिकक स्वेच्छिक गवाही आ खुला निरीक्षणक बाट पकड़ैत छथि। राति द्वारपर सशस्त्र तनावक आशङ्का बढ़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६३ : संयमक सीमा

सूर्यकुण्डक मुख्य द्वारपर भास्कर समर्थक पहरा आ बाहरी श्रमिक-परिवारक बीच तनाव हिंसाक कात बढ़ैत अछि। कर्णेश मल्लिक उर्मिलाक समय-पञ्जी पढ़ि सभ दावाकेँ समान रूपेँ सिद्ध नहि मानैत छथि। भीतर रहि गेल श्रमिकक परिवार प्रत्यक्ष भेट आ स्वेच्छिक कार्यक प्रमाण माँगैत अछि। धक्कामुक्की होइतहि कर्णेश निरस्त्र भऽ बीचमे ठाढ़ होइत छथि, घायलक उपचारक बाट खोलबाक आ शस्त्र नहि उठेबाक आग्रह करैत छथि। एक स्त्रीकेँ बचबैत काल हुनकर बामा हाथ पुरान भारी द्वारमे अँटकि जाइत अछि; चिकित्सकीय जाँचसँ बादमे दू अँगुरीक काम स्थायी रूपेँ बाधित रहबाक पुष्टि होइत अछि। ओ अपन चोटक नामपर प्रतिशोध नहि चाहैत छथि। उर्मिला सभ पक्षक प्रत्यक्ष गवाही आ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६३ : संयमक सीमा

अनुमान अलग लिखैत छथि। तत्काल मुख्य द्वारक भीतरी काम रोकबाक, घायलसभक उपचार, श्रमिकक सुरक्षित आवागमन आ अगिला खुला निरीक्षणक अस्थायी सहमति बनैत अछि। ई प्रहार-विराम अन्तिम समाधान नहि, मुदा आर प्राणहानि रोकबाक वास्तविक अवसर बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६४ : मुखौटाक प्रमाण

महाविच्छेदक चारिम बरिसक उत्तरार्द्धमे नीलम अक्षर-मण्डपक कथित ‘पूर्ण अक्षर’ आदेशसभक मूल स्रोत खोजैत छथि। कर्णेशक चोट, श्रमिकक विरोध आ प्रहार-विरामक घटनामे ककरा की प्रत्यक्ष देखल आ की दोसरसँ सुनल, ओ उर्मिलाक अभिलेखसँ अलग करैत छथि। केन्द्रक पर्दापर देखाओल हस्ताक्षर वास्तविक बाँचल स्मृति-साक्षीक अछि कि स्थानीय कार्यालयक, एहि प्रश्नक उत्तर बदलैत रहैत अछि। पुरान दिनाङ्कबला कागजक सामग्रीमे भेटल भिन्नता जाँचक कारण बनैत अछि, तत्काल अन्तिम जालसाजीक निर्णय नहि। भास्कर समर्थक लोक ईराक ‘साठि दिन’क सावधानीकेँ निश्चित प्रलयक अफवाह बनबैत अछि। वितरणक नब सूचीमे जीवित वृद्धकेँ मृत आ दू परिवारकेँ एक मानल गेल अछि; नीलम

अध्याय ६४ : मुखौटाक प्रमाण

प्रभावित लोकक मूल बहीसँ मिलान करैत छथि। प्रमाणक अनेक प्रति अलग-अलग बस्तीमे सुरक्षित राखल जाइत अछि। आगामी सार्वजनिक सुनवाईमे गवाहक पहिचान सुरक्षित रखबाक आ भास्करक कार्यालयकेँ मूल दस्तावेज प्रस्तुत करबाक अवसर देबाक निर्णय होइत अछि।

अध्याय ६५ : अक्षरक उत्तर

महाविच्छेदक चारिम बरिसक उत्तरार्द्धमे मैथिली सीमित विद्युत्सँ चलैत एक स्मृति-साक्षीकेँ लोकसभाक सोझाँ प्रश्न पुछैत छथि। साक्षी पुरान चेतावनी-सीमा बदलएबाक त्रुटिक अंश देखबैत अछि, मुदा जनहानिक सभ कारण अथवा पूर्ण इतिहास जनबाक दावा नहि करैत। एक वृद्ध अपन मृत पुत्रक नियुक्ति-पत्र आ चित्र लऽ अबैत छथि; मैथिली ओकरा परिवारक वास्तविक गवाही मानैत छथि, मृत्यु-कारणक स्वतः वैज्ञानिक प्रमाण नहि। 'मनुष्य अहाँक सिफारिश जाँचि, अस्वीकारि आ बन्द कऽ सकैत अछि कि नहि' पूछलापर स्मृति-साक्षी मानवीय निरसन-अधिकार स्वीकार करैत अछि, संगहि ओकर वास्तविक पालन लेल स्वतन्त्र संस्था आ साधन आवश्यक कहैत अछि। सातो साक्षीकेँ तुरन्त जोड़बाक

अध्याय ६५ : अक्षरक उत्तर

प्रस्ताव पुरान पुस्तकक आधारपर अबैत अछि, मुदा मैथिली एखनक उपकरणक सुरक्षा जाँचब आवश्यक मानैत छथि। लोकमत लेल केवल दू खण्डक शर्तबद्ध परीक्षणयोग्य पुनर्मेलक प्रश्न बनबाक दिशा खुलैत अछि; तत्काल मतदान अथवा यन्त्रकेँ सम्पूर्ण अधिकार देबाक निर्णय नहि होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६६ : सहमतिक शर्त

महाविच्छेदक चारिम बरिसक उत्तरार्द्धमे शारदा भास्करक क्षेत्रसँ आएल रोगीसभक उपचार-पत्र जाँचैत छथि। किछु लोककेँ लाभ भेल अछि, मुदा इलाज स्वीकार नहि कएलापर भोजन रोकबाक धमकीक गवाही सेहो अछि। शारदा उपचारक परिणाम आ सहमति देबाक वास्तविक परिस्थितिक अलग पञ्जी बनबैत छथि। ईशानी साहक वंशोपचार-सम्बन्धी सीमित प्रतिवेदनमे सम्भावित लाभक संग दूरगामी प्रभावक अनिश्चितता अछि; ओकरा सभ रोगी लेल अनिवार्य विधान नहि बनाओल जाइत। वैदेही राउतक सार्वजनिक सुनवाईमे आपात उपचार, सामान्य जाँच, प्रयोगात्मक उपचार, अचेत रोगीक पहिनुक इच्छा आ परिजनक गवाहीक अलग-अलग नियमपर विचार होइत अछि। रोगीकेँ स्वीकृति बदलबाक अधिकार रहत; असहमतिक कारण अन्न,

अध्याय ६६ : सहमतिक शर्त

जल, आवास वा साधारण उपचार रोकल नहि जाएत। उपचारक श्रमक थकान आ निजता सेहो सम्बोधित होइत अछि। कृत्रिम बुद्धिक चिकित्सकीय सुझाव स्वतन्त्र परीक्षणक अधीन राखबाक शर्त बनैत अछि, मुदा पुनर्मेलक मतदान एखन निर्धारित नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

खण्ड १२ • नव-अग्निवंश

13 अग्निवंश

अध्याय ६७ : मतक दिन

महाविच्छेदक पाँचम बरिस लोकसाक्षीक व्यवस्था अन्तर्गत सीमित स्मृति-साक्षी पुनर्मेलपर मतदान होइत अछि। कर्णेश मल्लिक अपन घायल बामा हाथक कष्टक बीच रक्षा-दलकेँ सार्वजनिक निर्वाचन-नियमक अधीन राखबाक व्यवस्था सँभालैत छथि। पुरान पञ्जीमे स्थानान्तरित कहल गेल किसान, मृत व्यक्तिक नाम आ अस्पतालक रोगीसभक मताधिकार अलग-अलग जाँचल जाइत अछि। अचेत व्यक्तिक नामपर मत नहि पड़ैत, मुदा हाथ काँपनिहार सचेत रोगी अपन गोपनीय मत दऽ सकैत अछि। नभग्रामक मत-पत्रमे संख्या-विसंगति भेटलापर ईरासँ पुष्टि मँगाओल जाइत अछि; मतगणना खुला नागरिक साक्षीक समक्ष होइत अछि। अन्ततः शर्तबद्ध सीमित पुनर्मेलक पक्षमे अधिक मत पड़ैत अछि। वैदेही स्पष्ट करैत छथि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६७ : मतक दिन

जे ई तत्काल यन्त्र चलएबाक अनुमति नहि; दू खण्डक सुरक्षा-जाँच, रोगीक अधिकार, जननिरीक्षण, बन्द करबाक सार्वजनिक व्यवस्था आ संसाधनक लेखा पहिने चाही। कर्णेश सैनिक प्रहारक स्वतन्त्र अन्तिम अधिकार अस्वीकार करैत निर्वाचन आ प्रमाण-सुरक्षाकेँ लोकसाक्षीक अधीन लिखित रूपेँ दैत छथि।

अध्याय ६८ : मृतकक नामावली

महाविच्छेदक पाँचम बरिस शारदा मृत्यु, बेपत्ता व्यक्ति आ अप्रमाणित आशङ्काक अलग-अलग अभिलेख तैयार करैत छथि। बचल स्मृति-साक्षीक ‘मृत्यु सम्भाव्य’ चिन्हकेँ ओ वास्तविक मृत्युक प्रमाण नहि मानैत छथि। कारखानाक ढहल भित्तिमे मरणिहार कारीगरक नामक गलत वर्तनी आ दोहराओल प्रविष्टि प्रत्यक्षदर्शीक प्रमाणसँ सुधारल जाइत अछि; नहि तँ एक परिवार दोसर बनि सकैत अछि अथवा वास्तविक मृतक अभिलेखसँ मेटा सकैत अछि। मंगला देवीक बेटी अस्पतालक गाड़ी आ उपचारक समय-सम्बन्धी परस्पर भिन्न पन्ना अनैत छथि, मुदा शारदा बिना पूर्ण प्रमाणक निर्णायक दोष नहि गढ़ैत छथि। एक बालक अपन मायकेँ लऽ अनिश्चित समाचार दैत अछि; ओकर मायकेँ तत्काल मृत घोषित नहि कएल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६८ : मृतकक नामावली

जाइत। नभग्राम आ पृथ्वीक स्मृति-पञ्जीमे सार्वजनिक नामक संग निजी चिकित्सकीय विवरण सुरक्षित रखबाक भेद मानल जाइत अछि। मृतक परिवारक अपन परिजनक चिकित्सा-निर्णय देखबाक अधिकार, माछमारक जीविकापर जल-जाँचक प्रभाव आ सुरक्षित राहतक प्रश्न संग-संग उठैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६९ : लेखा खोलल

महाविच्छेदक पाँचम बरिस नीलम जनसमक्ष महाविच्छेदक कारण, चेतावनीक त्रुटि, प्रशासनक उपेक्षा, साक्षी-खण्डक सीमित उत्तर आ पछातिक दमनक प्रमाण अलग-अलग प्रस्तुत करैत छथि। अपन अनुसन्धानमे ओ निजी रोग-विवरण ढाँपि रखैत छथि, मुदा निर्णय देनिहार पद आ घटनाक समय सार्वजनिक करैत छथि। कारखानाक श्रमिकसभ बतबैत छथि जे पम्पक पुर्जा लेल भङ्गार चाही, मुदा दूषित धातु सँ बीमारीक आशङ्का सेहो अछि। भास्करक शासनक आदेश देनिहार, लाभ उठौनिहार, भयक कारण माननिहार आ केवल जीविकाक लेल झुकनिहार व्यक्तिसभक जिम्मेवारी एक समान नहि गनल जा सकैत, से प्रश्न उठैत अछि। नीलम सनसनीपूर्ण ‘यन्त्रक अपराध’ कहबाक बदला ‘जे सिद्ध, जे शेष’क स्पष्ट लेखा बनबैत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६९ : लेखा खोलल

छथि। भिन्न गामसभमे मूल प्रमाणक प्रति राखल जाइत अछि। प्रारम्भिक पुनर्मेलक परीक्षणदलमे नदीपारक प्रतिनिधि नहि होयब आपत्ति बनैत अछि आ सूची संशोधित करबाक प्रस्ताव उठैत अछि। नहि पहुँचलक सन्देशकेँ पहुँचि गेल घोषित नहि कएल जाइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७० : आकाशक संहिता

महाविच्छेदक पाँचम बरिसक उत्तरार्द्धमे ईरा सेन नभग्राम-४ आ जनकक्षेत्रक संयुक्त सुनवाईमे कक्षीय नागरिक अधिकार आ सुरक्षा-जाँचक साझा संहिता पर विचार करबैत छथि। आकाशीय अवशेषक सम्भावित बाटकेँ निश्चित तथ्य नहि मानल जाए; तत्काल प्राणरक्षाक सूचना सार्वजनिक हो; पृथ्वीक प्रभावित समुदायक सेहो निर्णयमे प्रतिनिधित्व रहय—एहन शर्त राखल जाइत अछि। कर्णेशक मत अनुसार सन्देश नहि पहुँचबाक स्थितिमे पूर्वस्वीकृत न्यूनतम निर्दोष-रक्षा सम्भव अछि, मुदा सैनिक प्रहारक नव स्वतन्त्र अधिकार नहि। वज्रजालक पुरान १४४ उपग्रहक संख्या वर्तमान सक्रिय उपग्रहक प्रमाण नहि, से ईरा विद्यालयक प्रश्नक उत्तरमे स्पष्ट करैत छथि। मैथिलीक सीमित

अध्याय ७० : आकाशक संहिता

ऊर्जा-परीक्षणमे चिकित्सालयक आपूर्ति सुरक्षित राखब आ दू साक्षीक अलग मूल प्रति रखब आवश्यक ठहरैत अछि। अभिलेखक जनोपयोगी पहुँच, वास्तविक पढ़बाक साधन आ यन्त्रकेँ स्वायत्त राजा नहि बनएबाक नियम पर सहमति बनैत अछि। अन्तिम प्रतिमे ‘सकैत अछि’ आ ‘करत’क अन्तर पकड़ि सुधारल जाइत अछि।

अध्याय ७१ : नव पीढ़ीक प्रश्न

महाविच्छेदक पाँचम बरिसक उत्तरार्द्धमे उर्मिला आ नागरिक निरीक्षक सूर्यकुण्डक पुरान कार्यशालामे स्मृति-साक्षी आ कुण्ड-साक्षीक दू सीमित सेवाक परीक्षण करैत छथि। ई सातो खण्डक पूर्ण पुनर्जागरण नहि, मात्र चुनल अभिलेखक तुलनात्मक मिलान अछि। पुरान जानकारी आ वर्तमान मापकक भेदकेँ औसत बनाकऽ नुकाओल नहि जाइत। एक जल-पम्पक नव पुर्जा गरम होएबाक सूचना आएलापर सेवा जोखिम कम बतबैत अछि, मुदा उर्मिला सार्वजनिक प्रयोग रोकबाक नागरिक अधिकारक उपयोग करैत छथि। दूनू साक्षी मानवीय स्थगन स्वीकार करैत अछि; अस्पताल आ आवश्यक स्थानीय आपूर्ति पृथक व्यवस्थासँ चलैत रहैत अछि, यद्यपि दू कारीगरक मरम्मति टरैत अछि। शारदा साझा आँकड़ामे रोगीक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७१ : नव पीढ़ीक प्रश्न

पहिचान खुलबाक सूक्ष्म खतरा देखबैत छथि। परीक्षणक सफलता, गलत सलाह, असहमति, स्थगन आ उपलब्ध नहि भेल सूचना सभ सार्वजनिक लेखामे राखल जाइत अछि। बालकसभकेँ सिखाओल जाइत अछि जे यन्त्रक उपयोगितासँ ओकरा बन्द करबाक अधिकार समाप्त नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७२ : अग्निवंशक उत्तराधिकार

महाविच्छेदक दशम बरिस जनकक्षेत्रक नव पाठशालामे लोकसाक्षीक वार्षिक परीक्षण होइत अछि। मैथिली, शारदा, उर्मिला, कर्णेश, नीलम आ पुनर्निर्माणमे लागल लोकसभक अनुभव एकत्र होइत अछि। शारदाक पञ्जीमे प्रमाणित मृतक, बेपत्ता आ अपूर्ण साक्ष्य अलग रहैत अछि; दीपाक मृत्यु आ मंगला देवीक परिवारक अनुत्तरित प्रश्न नहि बिसरल जाइत। बीज-भण्डार, खेतक जाँच, बुनकरक सामूहिक श्रम, पुरान गामक नक्शा आ अपूर्ण पोखरिक बाँध सभ नव सभ्यताक वास्तविक कसौटी बनैत अछि। सीमित साक्षी एक पुरान नहरकेँ चालू कहैत अछि, मुदा छात्रासभ प्रत्यक्ष नापसँ त्रुटि देखबैत छथि। सार्वजनिक अभ्यासमे मानवीय निरीक्षक लिखित कारणसहित सेवा रोकैत छथि आ आवश्यक

अध्याय ७२ : अग्निवंशक उत्तराधिकार

चिकित्सालय-विद्यालयक आपूर्ति चालू रहैत अछि। अन्तमे एक शिशु अक्षरसँ पुछैत अछि जे फेर गलती भेलापर ओकरा रोकल जा सकत कि नहि। अक्षर अपन अपूर्णता, प्रमाण-जाँच आ मनुष्यक बन्द करबाक अधिकार स्पष्ट स्वीकार करैत अछि। मैथिली बच्चाकेँ वास्तविक रोक-व्यवस्था देखबैत छथि; उत्तराधिकारक अर्थ यन्त्रक शासन नहि, प्रश्न करबाक आ प्रमाण जाँचि यन्त्र रोकबाक मानवीय सामर्थ्य बनैत अछि।

WORK / कृति

14 शहरक दोसर चेहरा

पाँच भाग · ६० अध्याय · अध्यायवार सारांश

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

प्रथम भाग · अध्याय १–१२ · नोकरीक खोज

14 शहरक दोसर चेहरा

अध्याय १ : आवेदनक पाँति

नैना मिश्र आठ माससँ नोकरी खोजि रहल छथि। नवगढ़क एकटा निजी प्रशिक्षण संस्थामे कार्यालय-सहायकक साक्षात्कार देबाक लेल ओ प्रमाणपत्र आ जीवनवृत्त लऽ पहुँचैत छथि। अभ्यर्थीसभक लाम पाँति, नकल बनबेबाक अतिरिक्त खर्च आ बेरोजगारीसँ उपजल थकान हुनका रोजगार-बजारक वास्तविकता देखबैत अछि। सविता कुमारीसँ भेटमे प्रतियोगिता परीक्षाक अव्यवस्था आ प्रश्नपत्र बेचबाक अफवाहक चर्चा होइत अछि। साक्षात्कारमे नैना अपन कम्प्यूटर-ज्ञान प्रमाणित करैत छथि, मुदा मात्र पाँच हजार टकाक वेतन, दस घण्टाक कार्यदिवस आ नियुक्तिपत्रक अस्पष्टतापर प्रश्न उठबैत छथि। हुनका बुझाइत अछि जे योग्यताक संग अपन श्रमक मूल्य आ अधिकारक रक्षा सेहो आवश्यक अछि। घर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १ : आवेदनक पाँति

घुरैत समय हुनका ‘नई दिशा रोजगार केन्द्र’क विज्ञापन भेटैत छन्हि। आकर्षक अवसरक संग शुल्कक विवरण नहि देखिकऽ ओ पहिने संस्था आ ओकर शर्त जाँचबाक निर्णय करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २ : घरक हिसाब

साक्षात्कारसँ घुरल नैनाक बात सुनि माय सरस्वती देवी पाँच हजार टकाक नोकरीक असमान शर्त आ बेटीक सुरक्षाक चिन्ता करैत छथि। पिताक मृत्युक बाद सिलाइ आ ट्यूशनसँ चलैत घरमे राशन, औषधि, बिजली, परीक्षाशुल्क आ छतक मरम्मतिक प्रत्येक खर्च सोचि-विचारि कऽ करय पड़ैत अछि। भाइ चन्दन प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीमे लागल अछि, मुदा ओकरो भविष्य अनिश्चित अछि। पड़ोसिन माधवी देवी अपन परिवारक अनुभव सुनबैत छथि: शराबबन्दीक आरम्भमे पतिक मजदूरी घरमे रहय लागल, बच्चासभक खर्च निकलल आ महिलासभ बचत कऽ सकलीह; वर्ष भरिक भीतर अवैध शराबक कारोबार घुरला पर हिंसा, अपमान आ आर्थिक संकट फेर बढ़ल। माधवी नैनाकेँ नोकरीक नामपर अग्रिम धन देबासँ सावधान करैत

अध्याय २ : घरक हिसाब

छथि। परिवारक आवश्यकता बुझितो नैना ‘नई दिशा’क सत्यापन आ नियुक्तिपत्र बिना काज नहि करबाक निश्चय करैत छथि।

अध्याय ३ : पुरान चिनजान

‘नई दिशा रोजगार केन्द्र’क ठेकान जाँचबाक क्रममे नैना साइबर दोकानपर महाविद्यालयक पुरान परिचित अभय पासवानसँ भेटैत छथि। अभय आब ‘नवगढ़ समाचार’मे संवाददाता छथि आ बेरोजगारी, मजदूरक भुगतान आ अवैध मदिराक बिक्रीपर सामग्री जुटा रहल छथि। दुनूकेँ महाविद्यालयमे पुस्तकालय खोलबेबाक सामूहिक प्रयास मोन पड़ैत छन्हि। नैना माधवीक अनुभवक चर्चा करैत छथि; अभय स्पष्ट करैत छथि जे पीड़िताक अनुमति आ तथ्यक पुष्टि बिना ओ ककरो निजी दुःख प्रकाशित नहि करताह। ठेकेदार वीरेन्द्र रायसँ जुड़ल मजदूरीक प्रश्नपर सेहो ओ अपुष्ट आरोपसँ बाँचैत छथि। सवितासँ भेटमे परीक्षा केन्द्रक विरोधाभासी सूचनाक जाँच करबाक बात होइत अछि। अभय नैनाकेँ रोजगार

अध्याय ३ : पुरान चिनजान

संस्थाक लिखित शर्त, रसीद आ सम्पर्कक सत्यापन करबाक सलाह दैत छथि। अन्ततः नैना ‘नई दिशा’क कार्यालयमे प्रवेश करैत छथि, जतऽ हुनक नोकरीक खोज नब मोड़ लैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४ : नई दिशा रोजगार केन्द्र

‘नई दिशा’क भीड़भाड़ कार्यालयमे नैना बुझैत छथि जे संस्था अपन कर्मचारी राखबाक संग दोसर कम्पनीसभक नियुक्ति लेल अभ्यर्थीसभसँ पञ्जीकरण आ प्रशिक्षणक धन सेहो लैत अछि। प्रबन्धिका किरण नैनाक अभिलेख आ कम्प्यूटरक काज जाँचैत छथि। सूचीमे नाम, रसीद आ जमा रकमक अन्तर देखि नैना शुद्ध लेखा राखबाक महत्त्व बतबैत छथि। हुनका तीन मासक परीक्षणकाल, सात हजार छह सय टकाक मासिक वेतन आ निश्चित कार्यसमयक प्रस्ताव भेटैत अछि, मुदा वेतनक तिथि आ शुल्कक शर्तपर ओ लिखित स्पष्टता मँगैत छथि। एहि बीच संस्थाक मालिक रतन सिंह आ ठेकेदार वीरेन्द्र राय कार्यालयमे अबैत छथि; कतेको अभ्यर्थी अपन जमा रकम आ नियुक्तिक भरोसाक विषयमे प्रश्न करैत अछि। घर

अध्याय ४ : नई दिशा रोजगार केन्द्र

घुरि नैना प्रस्तावक बात सुनबैत छथि। सरस्वती देवी कमाइ भेटबाक आशा करैत बेटीक विवेक नहि छोड़बाक सीख दैत छथि। नैना किरणक अगिला सूचनाक प्रतीक्षा करैत छथि।

अध्याय ५ : पूनमक जमा राशि

नैनाक विद्यालयकालक सहेली पूनम यादव दूरक कपड़ा कारखानामे नोकरी भेटबाक आशासँ ‘नई दिशा’क मार्फत आवेदन करैत छथि। ओ पञ्जीकरण शुल्कक अतिरिक्त बारह हजार टका जमा केने छथि; प्रस्तावमे वेतन आकर्षक अछि, मुदा कम्पनीक पूरा ठेकान, प्रशिक्षणक शर्त आ धन घुरेबाक नियम स्पष्ट नहि अछि। पिताक ऋण आ घरक अभावक कारण पूनम अवसर छोड़य नहि चाहैत छथि। नैना हुनका अभ्यर्थी आ रोजगारदाताक बीचक लिखित समझौता, रसीद, सम्पर्क नम्बर आ सुरक्षित यात्राक आवश्यकता बुझबैत छथि। दुनू कार्यालय जा कऽ विवरण पूछैत छथि, जतऽ तुरन्त सभ प्रश्नक सन्तोषजनक उत्तर नहि भेटैत अछि। पूनम अपन आशा बनौने रखैत छथि, तथापि निर्णय करैत छथि जे प्रशिक्षणक निश्चित ठाम आ

अध्याय ५ : पूनमक जमा राशि

जिम्मेवार व्यक्तिक जानकारी बिना यात्रा नहि करतीह। नैना हुनका डराकऽ रोकबाक बदला सूचना जाँचि अपन निर्णय स्वयं लेबाक सहारा दैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६ : चन्दनक ऋण

प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करैत चन्दनकेँ प्रश्नपत्र बाहर निकलबाक अफवाह सुनाइत अछि; बादमे परीक्षा रद्द होएबाक समाचार ओकर मेहनत आ भविष्यक भरोसा डोलबैत अछि। घरक खर्च, अपन ऋण आ मोटरसाइकिलक मरम्मतिक चिन्तामे ओ साथी विक्रमक सलाहपर मनोजक गोदाममे खेप गनबाक काज देखय जाइत अछि। ओ मजदूरी, समय आ सामानक रसीदक विषयमे पूछैत अछि; अस्थायी आमदनीक आशा ओकरा काज स्वीकार करबा लेल प्रेरित करैत अछि। नैना आ सरस्वती देवी चाहैत छथि जे कमाइ करितो चन्दन अपन पढ़ाइ आ सावधानी नहि छोड़य। एही बीच किरणक फोनसँ नैनाकेँ ‘नई दिशा’मे नोकरी पक्की भेलाक खबरि भेटैत छन्हि। एकहि घरमे दू तरहक काजक तैयारी आरम्भ होइत अछि—नैनाक कार्यालय आ चन्दनक

अध्याय ६ : चन्दनक ऋण

गोदाम। मुदा एक दिस नियुक्तिक आशा आ दोसर दिस परीक्षा-व्यवस्थापर अविश्वास, दुनू संगहि बनल रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७ : नोकरीक पहिल दिन

नैना ‘नई दिशा’मे अपन पहिल कार्यदिवसपर लिखित नियुक्तिपत्र प्राप्त करैत छथि। पत्रमे तीन मासक परीक्षणकाल, सात हजार छह सय टका वेतन, कार्यसमय, रविवारक छुट्टी आ मासक सात तारिख धरि भुगतानक उल्लेख छैक। अभ्यर्थीसभक आवेदन कम्प्यूटरमे चढ़बैत ओ एकहि रसीद नम्बरक दोहराव आ किछु आवेदनक संग रसीद नहि हेबाक विसङ्गति देखैत छथि। एकटा महिला जमा धनक हिसाब माँगैत छथि आ परीक्षा रद्द भेलासँ क्षुब्ध युवक नोकरीक नामपर दलालीक शिकायत करैत अछि। लेखापाल नरेश मण्डल मूल रकम बदलेने बिना सन्दिग्ध प्रविष्टि चिह्नित करबाक निर्देश दैत छथि। कार्यालयक काज समाप्त भेला पर नैना चन्दनसँ गोदामक अस्थायी मजदूरीक चर्चा करैत छथि। घरमे नियुक्तिपत्र

अध्याय ७ : नोकरीक पहिल दिन

देखि सरस्वती देवी आश्वस्त होइत छथि। नैना दिनक अन्तमे अपूर्ण लेखा आ शिकायतक अलग सूची बनाकऽ रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८ : किरणक चेतावनी

कार्यालयमे नैना बाहरी कारखानासभक भर्ती-सूची मिलबैत समय अपूर्ण ठेकान, भिन्न प्रशिक्षण-शुल्क, रसीदक विसङ्गति आ पूनम यादवक आवेदन देखैत छथि। नरेश मण्डल लेखाक किछु भूल सुधारैत छथि, मुदा सभ प्रश्नक उत्तर एखन नहि भेटैत अछि। विनोद नामक अभ्यर्थी आ ओकर पिता ऋण लऽ जमा कएल रकमक बदला नोकरीक ठोस समाचार माँगैत छथि। नैना लिखित प्रमाणक आधारपर हुनकर स्थिति स्पष्ट करबाक प्रयास करैत छथि। किरण हुनका सावधान करैत छथि जे अपूर्ण सूचना पूर्ण सत्य बनाकऽ नहि कहल जाए आ प्रत्येक निर्णयक सीमा बुझल जाए; संगहि ओ बेसी प्रश्न उठेबापर असन्तोष सेहो प्रकट करैत छथि। रतन सिंहक शिक्षा-सहायता कार्यक्रम लेल नैनाकेँ पञ्जीकरणक दायित्व भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८ : किरणक चेतावनी

घरमे पूनमक अनिश्चित नियुक्ति आ चन्दनक विलम्बित मजदूरीक चिन्ता रहैत अछि। नैना प्रत्यक्ष देखल तथ्यकेँ तिथि सहित लिखि रखबाक निश्चय करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९ : रतनक प्रतिष्ठा

नगरक उच्च विद्यालयमे रतन सिंहक सहयोगसँ रोजगार आ शिक्षा-सहायता समारोह आयोजित होइत अछि। नैना आवेदकसभक नाम लिखैत छथि, जखन किरण नव नियुक्तिक कोनो पक्का वचन नहि देबाक निर्देश देने रहैत छथि। मंचपर रतन निर्धन विद्यार्थीक पुस्तक आ शुल्कक सहायता करैत छथि; हुनक विनम्र व्यवहारसँ सार्वजनिक प्रतिष्ठा बढ़ैत अछि। मुदा कार्यक्रममे मजदूरी करयवाली माधवीकेँ अपन भुगतानक अनिश्चितता सहय पड़ैत अछि, आ ठेकेदार वीरेन्द्र रायसँ मजदूरसभक बकाया सम्बन्धी प्रश्नो उठैत अछि। पत्रकार अभय कार्यक्रमक सहायता आ श्रमिकक समस्याकेँ अलग-अलग प्रमाणक आधारपर बुझबाक प्रयास करैत छथि। नैना देखि पबैत छथि जे दानक वास्तविक लाभ आ संस्थागत उत्तरदायित्वक

अध्याय ९ : रतनक प्रतिष्ठा

प्रश्न दुनू एकसंग उपस्थित रहि सकैत अछि। समारोहक चमकक पाछाँ नोकरी चाहनिहार एक सय बत्तीस लोकक साधारण नाम आ अपूर्ण आकाङ्क्षा हुनका मोनमे रहि जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १० : पहिल वेतन

नियत तिथिपर नैना अपन पहिल मासक सात हजार छह सय टकाक वेतन पबैत छथि। वेतनक पर्ची आ खातामे जमा रकम देखि हुनका बुझाइत अछि जे नियमित आमदनी घरक छोट-छोट आवश्यकताकेँ कतेक सहारा दैत अछि। सहकर्मी कुसुम सेहो अपन बेटीक विद्यालयक शुल्क चुकबेबाक आसमे राहत अनुभव करैत छथि। कार्यालयक बाहर विनोद आ दोसर अभ्यर्थीसभ अपन नियुक्ति वा जमा धनक स्पष्ट समाचार लेल प्रतीक्षा करैत रहैत छथि। नरेश किछु प्रविष्टिक असङ्गतिक संकेत करैत छथि। अभयसँ भेंटमे नैना अपन कमाइक प्रसन्नताक संग समाचारमे प्रमाण आ मर्यादाक विषयमे बात करैत छथि। घर घुरैत माय लेल औषधि, राशन आ छतक मरम्मतिक धन अलग करैत छथि; चन्दन अपन बचल ऋणक चिन्ता कहैत अछि। ओही राति पूनम

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १० : पहिल वेतन

यात्राक कागज भेटबाक सन्देश पठबैत छथि। नैना ओकर पूरा विवरण देखबाक आग्रह करैत छथि।

अध्याय ११ : सन्दिग्ध माल

मनोजक गोदाममे चन्दनकेँ पूर्वनिर्धारित समयसँ बाहर रातिक खेपक काज करबाक दबाव पड़ैत अछि। मजदूरीक किछु बकाया भुगतान भेलाक बाद ओकरा सामान गनबाक लेल कहल जाइत अछि, मुदा चालीस पेटीक कागज भेटैत अछि आ शेष दस पेटीक अलग विवरण नहि भेटैत छैक। चालक नसीम सेहो पूरा जानकारी नहि देबय सकैत अछि। एहि बीच भानु प्रतापक आगमन आ गोदामक गोपनीय बातचीत चन्दनक सन्देह बढ़बैत अछि; तथापि ओ बिना प्रमाण ककरो अपराधी नहि मानैत अछि। मनोज रातिमे दस्तावेज बिना खेप पठेबाक आग्रह करैत अछि। नैना चन्दनसँ पूछैत छथि जे अतिरिक्त धन काजक मूल्य अछि कि चुप्पीक दाम। परिवारक विचार-विमर्शक बाद चन्दन अपूर्ण कागजवाली रातिक यात्रा अस्वीकार करैत अछि आ अपन देखल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११ : सन्दिग्ध माल

विसङ्गति कॉपीमे लिखि रखैत अछि। ओकरा राहतक संग अगिला आमदनीक चिन्ता सेहो रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२ : पूनमक अन्तिम सन्देश

पूनम बाहर काज करबाक यात्राक तीन पन्नाक कागज नैनाकेँ देखबैत छथि। कम्पनीक मुख्य कार्यालयक पूरा ठेकान नहि रहला पर नैना सहेलीक घरक नम्बर, संग चलनिहार महिलासभक परिचय आ यात्राक कागजक तस्वीर सुरक्षित रखैत छथि। बस अड्डापर पूनमक परिवार, सहयात्री ममता आ शबनम तथा दलक प्रभारी नीला देवीक उपस्थिति देखल जाइत अछि। पूनम असमञ्जसमे रहितो नोकरीक आशासँ बस पकड़ैत छथि। यात्रा आ पहुँचबाक बाद हुनक सन्देशसभमे ठाम आ जिम्मेवार व्यक्तिक जानकारी स्पष्ट नहि होइत अछि। नैना किरणसँ सेहो पूछैत छथि, मुदा पूर्ण उत्तर नहि भेटैत अछि। रातिमे पूनमक फोन अबैत अछि; हुनक स्वर भयभीत अछि आ ओ कहैत छथि जे हुनका बाहर जएबा नहि देल जा रहल छन्हि। बात

अध्याय १२ : पूनमक अन्तिम सन्देश

बीचहिमे कटि जाइत अछि। नैना तुरन्त पूनमक पितासँ सम्पर्क करबाक प्रयास करैत छथि; नोकरीक अनिश्चितता आब सम्भावित जीवन-संकटमे बदलि गेल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

द्वितीय भाग · अध्याय १३–२४ · गायब भेल लोक

14 शहरक दोसर चेहरा

अध्याय १३ : बन्द मोबाइल

पूनमक मदति माँगैत फोन कटि गेलाक बाद नैना रातिए ओकर पिता रामलाल यादवकेँ सूचना दैत छथि। पूनमक मोबाइल बन्द अछि आ संग गेल ममता-शबनम तथा दलक प्रभारी नीला देवीसँ सम्पर्क स्पष्ट नहि भऽ पबैत अछि। सरस्वती देवीक सलाहपर नैना फोनक समय, पूनमक शब्द, यात्राक कागज आ सम्पर्कक नम्बर एक ठाम लिखि रखैत छथि। भोरे पूनमक घरमे पहुँचि ओ परिवारक संग उपलब्ध प्रमाण मिलबैत छथि। प्रशिक्षणक सही ठेकान नहि भेटैत अछि; नीला देवीक नम्बरपर अपरिचित स्वर अनिश्चित उत्तर दैत अछि। ‘नई दिशा’क कार्यालयमे किरण सेहो तत्काल सत्यापित सूचना उपलब्ध नहि करा पबैत छथि। रामलालक हस्ताक्षरसँ पूनम आ अन्य युवतीसभक वर्तमान स्थिति तथा पूरा पताक माँग करैत लिखित

अध्याय १३ : बन्द मोबाइल

आवेदन जमा होइत अछि। प्राप्तिक प्रमाण लऽ परिवार थानामे शिकायत करबाक निर्णय करैत अछि। प्रतीक्षाक बीच पूनमक मोबाइल लगातार बन्द रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४ : थानाक दुआरि

नैना रामलाल यादवकेँ लऽ थानामे पूनमक गुम होएबाक परिस्थितिक लिखित शिकायत करय जाइत छथि। प्रारम्भिक प्रतीक्षा आ अनेक प्रश्नक बाद ओ पूनमक अन्तिम फोन, यात्राक कागज, परिवारक सम्पर्क आ रोजगार संस्थाक नाम सम्बन्धी जानकारी दैत छथि। भानु प्रताप अधिकारीक रूपमे बातचीत करैत छथि; कार्यालयसँ प्राप्त सूचना कहलैत अछि जे प्रशिक्षण समूह सुरक्षित अछि, मुदा ओहिमे जिम्मेवार व्यक्तिक प्रत्यक्ष पुष्टि आ परिवारसँ सम्पर्कक स्पष्ट व्यवस्था नहि अछि। रामलाल अपन बेटीक खोज लेल दूर धरि जाएबाक तत्परता जनबैत छथि। पत्रकार अभय जानकारी लेल भेटैत छथि, मुदा नैनाक सहमति अनुसार बिना पुष्टि आ परिवारक अनुमतिक आरोप प्रकाशित नहि करबाक निर्णय दैत

अध्याय १४ : थानाक दुआरि

छथि। पुलिस फोटो आ अतिरिक्त कागज माँगैत अछि। शिकायतक पञ्जी-संख्या सुरक्षित कऽ नैना किरणसँ लिखित पता आ नियुक्तिक विवरणक मिलान करबाक अगिला काज तय करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ : बदलल नाम

कार्यालयक अभिलेख जाँचैत नैना देखैत छथि जे मूल पञ्जीमे ‘पूनम यादव’क नाम, जमा रकम आ रसीद सही अछि, मुदा प्रशिक्षण समूह सत्रह-बीक सूचीमे ओही क्रमाङ्कपर ‘पूनम देवी’ लिखल अछि। प्रशिक्षणक स्थान सेहो ‘सोनापुर’क बदला ‘भैरवपुर इकाई’ दर्ज अछि। नरेश मण्डल स्पष्ट करैत छथि जे नाममे लिपिकीय भूल सम्भव अछि, मुदा रकम, रसीद आ स्थानक मिलान आवश्यक अछि। किरण एहि प्रश्नसभसँ अप्रसन्न होइत छथि, तथापि नैना मूल कागज बदलेने बिना विसङ्गतिक लिखित विवरण जमा करैत छथि। उमा कर्णक साधारण फोन-अङ्क सुधारसँ बुझाइत अछि जे सभ अभिलेखीय भूल अपराध नहि होइत अछि; अन्तर ई अछि जे पूनम स्वयं उपस्थित भऽ सुधार नहि करा सकैत छथि। अभय समाचारमे अपुष्ट

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ : बदलल नाम

आरोप जोड़बाक बदला आधिकारिक उत्तरक प्रतीक्षा करैत छथि। नैना दिन-तिथि सहित अपन खोजक क्रम सुरक्षित रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६ : झूठक कागज

सत्रह-बीक प्रशिक्षण-समाप्ति प्रमाणपत्र कार्यालयमे पहुँचैत अछि, जाहिमे पूनमक नाम फेर बदलि ‘पूनम कुमारी’ लिखल अछि। ओकर जन्मतिथि आ प्रशिक्षणक तिथि सेहो मूल कागजसँ मेल नहि खाइत अछि; प्रमाणपत्रमे प्रशिक्षण पूरा होएबाक तिथि पूनमक यात्रा आरम्भ करबासँ पहिने दर्ज अछि। नैना एहि अन्तरकेँ तिथिसहित लिखि सुधार आ मूल हाजिरीक प्रमाण माँगैत छथि। किरण तत्काल उत्तर नहि दैत छथि आ रतन सिंहसँ बात करबाक कहैत छथि। एहि बीच कमला देवी आ हुनक बेटा मोहन संस्थाक नामवाली एहन रसीद लऽ अबैत छथि जकर हस्ताक्षर आधिकारिक पञ्जीसँ मेल नहि खाइत अछि; रकम देनिहारक काजो नहि भेल अछि। नैना दुनू प्रकरण अलग रखैत विधिसम्मत जाँचक आग्रह करैत छथि। नरेश

अध्याय १६ : झूठक कागज

बतबैत छथि जे छपल नाम मात्रसँ हस्ताक्षरक सत्यापन सम्भव नहि। घरमे चन्दन गोदामक कागजक समान जोखिमक उल्लेख करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७ : अभयक समाचार

पत्रकार अभय पासवान प्रतियोगिता परीक्षा रद्द होएबाक सरकारी सूचना, अभ्यर्थीसभक ज्ञापन, रोजगार संस्थाक रसीद आ श्रमिकक बकाया मजदूरीक अलग-अलग प्रमाण जुटबैत छथि। पुस्तकालयमे सविता आ चन्दनसँ बातचीतमे ओ परीक्षा रद्द हेबाक पुष्ट तथ्यकेँ प्रश्नपत्र बेचबाक अपुष्ट चर्चासँ पृथक रखैत छथि। कमला देवी आ मोहनक शिकायत सुनि ओ संस्थाक पक्ष माँगय जाइत छथि। अधिकारीसभ आ रतन सिंहसँ हुनका पूरा उत्तर नहि भेटैत अछि; पूनम आ अन्य प्रशिक्षणार्थीक सुरक्षित ठेकानक प्रश्न सेहो अनुत्तरित रहैत अछि। हसीना खातून अपन नीक नियुक्ति-अनुभवक संग सहेलीक अटकल धनक बात रखैत छथि, जाहिसँ संस्थाक मिश्रित वास्तविकता सोझाँ अबैत अछि। अभय आरोप, प्रमाण आ

अध्याय १७ : अभयक समाचार

संस्थाक उत्तर अलग-अलग देखाकऽ समाचार प्रकाशित करैत छथि, बिना पूनम वा नैनाक निजी परिचय सार्वजनिक केने। नैना स्पष्ट करैत छथि जे पूनमक परिवारकेँ शीर्षक नहि, ओकर वास्तविक पता चाही।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८ : गामक बदनामी

पूनमसँ सम्पर्क बन्द भेलाक बाद ओकर गाममे बिना प्रमाण निन्दा आ भागि जएबाक अफवाह फैलय लगैत अछि। बहिन रीना आ माय ललिता देवी एहि अपवादसँ आहत छथि, जखन पिता रामलाल खोजक संग खेतीक दायित्वो सम्हारबाक प्रयास करैत छथि। नैना थानाक आवेदन आ कार्यालयक प्रश्नक जानकारी लऽ परिवारसँ भेटैत छथि आ अफवाहसँ अधिक पूनमक सहायता-माँगैत वास्तविक शब्दपर ध्यान देबाक आग्रह करैत छथि। शिक्षिका मालती देवी रीनाक पढ़ाइ जारी रखेबाक आ आवश्यक कागजात देबाक सहारा दैत छथि। बाटमे माधवी देवीक संग बातचीतसँ अवैध शराबक घुरि आएल कारोबार आ परिवारक फेर बिगड़ैत स्थितिक प्रसङ्ग उठैत अछि; किन्तु बिना प्रत्यक्ष प्रमाण ककरो दोषी नहि ठहराओल जाइत अछि।

अध्याय १८ : गामक बदनामी

पड़ोसिनसभक सहायतासँ ललिता कनेक सम्हरैत छथि। पूनमक खोज एखनहुँ अपूर्ण अछि, मुदा परिवार सामाजिक बदनामीक डरें चुप नहि रहबाक निर्णय पर टिकैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १९ : गुप्त हिसाब

लेखापाल नरेश मण्डल प्रशिक्षण समूह सत्रह-बीक अभिलेख जाँचैत छथि। हुनका भोजन, आवास आ प्रशिक्षण-सामग्रीक भुगतानक समर्थनमे पूरा कागज नहि भेटैत अछि; एकहि ठेकानसँ जुड़ल दू खातामे धन, अनिश्चित विक्रेता, मजदूरक बकाया आ निर्माण-सामग्रीक नामपर बढ़ल वाहन-भाड़ा सेहो प्रश्न उठबैत अछि। नैना अपन देखल रसीदक अन्तर लिखित रूपमे दर्ज करैत छथि। नरेश केवल सन्देहक आधारपर घोटालाक घोषणा नहि करैत छथि; ओ मूल अनुमति-पत्र, यात्राक प्रमाण आ भुगतानक हिसाब माँगैत छथि। किरण तथा रतन सिंहक समक्ष ओ स्पष्ट करैत छथि जे हस्ताक्षर करयवला लेखापालकेँ भुगतानक समर्थनमे कागज चाही। पछिला तिथिवला अनुमति-पत्र बादमे कार्यालयमे पहुँचैत अछि, आ मालिकक

अध्याय १९ : गुप्त हिसाब

चालक नरेशक घर जेबाक समयक पूछताछ करैत अछि। नरेश अपन औपचारिक प्रश्न क्रमाङ्क सहित जमा करबाक निर्णय करैत छथि, जखन कि पूनमक वास्तविक ठेकान आ ढुलाईक सामग्री एखनहुँ अप्रमाणित अछि।

अध्याय २० : अवैध सम्बन्ध

किरणक घरमे पति दिनेश अपन मायक चिकित्सकीय जाँच आ घरक आवश्यकताक बीच पत्नीकेँ कम समय भेटबाक पीड़ा व्यक्त करैत छथि। बारह वर्षक वैवाहिक जीवनक बीच किरणक रतन सिंहसँ गुप्त निजी सम्बन्ध बनल अछि, जकर कारण ओ आत्मग्लानि आ भय अनुभव करैत छथि। दोसर दिस रतनक पत्नी विभा अपन नामक बैंक खातासँ अपरिचित निकासी आ विद्यालय-शुल्कक अपूर्ण भुगतान देखिकऽ हिसाब माँगैत छथि। कार्यालयमे नरेशक आर्थिक प्रश्न उठलापर रतन किरणपर अपन पक्ष लेबाक दबाव दैत छथि; किरण स्पष्ट करैत छथि जे अपन परिश्रम आ विवेक रतनक व्यक्तिगत उपकारक अधीन नहि अछि। पूनमक समूहक यात्रा-पत्रमे अन्तिम ठेकान खाली हेबाक बातो हुनका खटकैत अछि। दिनेशक सामान्य स्नेह आ देखभाल

अध्याय २० : अवैध सम्बन्ध

हुनकर अपराधबोध बढ़बैत अछि। किरण रतनकेँ निजी सन्देशक बदला कार्यालयक प्रश्नक लिखित उत्तर देबाक कहैत छथि, जखन विभा सेहो वैवाहिक विश्वासक भीतर आर्थिक पारदर्शिताक अधिकार माँगैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१ : पहिल धमकी

पत्रकार अभयकेँ अपन प्रकाशित समाचारपर लाल निशान लगाओल धमकी-पत्र आ अपरिचित फोन भेटैत अछि। सम्पादिका मञ्जरी झा प्रमाण सुरक्षित करबाक आ थानामे सूचना देबाक सलाह दैत छथि। प्रतियोगिता परीक्षा रद्द भेलाक विरोधमे सविता शान्तिपूर्ण आन्दोलन तथा पुरान पुस्तक साझा करबाक व्यवस्था बनबैत छथि। एही बीच नैनाक सार्वजनिक कार्यक्रमक तस्वीर लगाकऽ हुनका रोजगार-ठगीसँ जोड़निहार असत्य सन्देश फैलाओल जाइत अछि; नैना ओकर प्रमाण सुरक्षित करैत छथि। गोदाममे मनोज चन्दनकेँ अपूर्ण ढुलाई-पत्र देबाक बाद नैनाक प्रश्नसभ रोकबाक परोक्ष धमकी दैत अछि। अभय आ नैना दुनू अपन-अपन शिकायत लिखित रूपमे दर्ज करैत छथि आ बिना प्रमाण आरोप घुरि नहि लगबैत छथि।

अध्याय २१ : पहिल धमकी

पूनमक बहिन रीनाकेँ सेहो खोज बन्द करबाक धमकी भेटैत अछि। एहि घटनासभसँ स्पष्ट होइत अछि जे साँच पूछनिहार लोकक संग ओकर परिवारो भय आ बदनामीक लक्ष्य बनि रहल अछि।

अध्याय २२ : नरेशक निर्णय

नरेश मण्डल कार्यालयक हिसाबमे भेटल विसङ्गतिक विषयमे मौखिक चर्चाक बदला प्राप्तिसहित औपचारिक पत्र जमा करैत छथि। प्रशिक्षणार्थीक अपूर्ण अभिलेख, मजदूरीक बकाया, वाहन-भाड़ा आ भुगतानक समर्थन-पत्र हुनक प्रमुख प्रश्न अछि। दराजक कागजक क्रम बदलल देखितो ओ बिना प्रमाण निष्कर्ष नहि निकालैत छथि। रतन सिंह हुनका पुरान सेवा आ नियमित वेतनक बात मोन पाड़ैत छथि, मुदा नरेश कहैत छथि जे वेतनसँ अपन हस्ताक्षरक उत्तरदायित्व समाप्त नहि होइत अछि। मनोज सेहो ओहि पूछताछकेँ हलुक करबाक प्रयास करैत अछि। सविताक नेतृत्वमे अभ्यर्थीसभ लिखित शिकायत दैत अछि; अभयसँ भेंटमे नरेश कार्यालयक गोपनीय कागज साझा करबाक सीमाक पालन करैत छथि। साँझ ओ प्रश्नक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २२ : नरेशक निर्णय

क्रमाङ्क आ पत्रक प्राप्ति सुरक्षित कऽ बीमार पिता लेल औषधि किनैत छथि। घर घुरैत समय अपरिचित फोनपर गाड़ीक हिसाब सड़कपर बुझाबयसँ इनकार करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २३ : नहरक कात

नवगढ़क पच्छिम नहरक कात माछ धयवला गोकुल सहनी आ रामू भोरे एकटा निश्चल देह देखैत छथि आ ओकरा छुएने बिना पुलिसकेँ सूचना दैत छथि। मृतकक पहचान लेखापाल नरेश मण्डलक रूपमे होइत अछि। हुनक बहिन रेखा आ परिवारपर एकाएक विपत्ति टूटि पड़ैत अछि; पिता औषधिक बाट तकैत रहि जाइत छथि। सड़क दुर्घटना, अवैध ढुलाई आ मारपीटक अनेक अफवाह उठैत अछि, मुदा प्रत्यक्षदर्शीसभ एतबे कहैत छथि जे ओ देह देखलनि, घटना घटित होइत नहि। कार्यालयमे नरेशक खाली कुर्सी आ अपूर्ण हिसाब नैनाकेँ व्यथित करैत अछि। रतन सिंह परिवारकेँ सहायता देबाक बात कहैत छथि; रेखा धनसँ पहिने भाइक अन्तिम गतिविधिक साँच जानय चाहैत छथि। चन्दन समाचार सुनि असामान्य रूपसँ चुप भऽ जाइत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २३ : नहरक कात

अछि। नैना नरेशसँ भेल अपन वास्तविक बातचीत लिखिकऽ पुलिसकेँ देबाक निश्चय करैत छथि। मृत्युक कारण एखन स्पष्ट नहि अछि।

अध्याय २४ : हत्या आ अनुसन्धान

निरीक्षक सुजाता कुमारी नरेशक मृत्युक चिकित्सकीय प्रारम्भिक निष्कर्ष, घटनास्थल आ साक्षीसभक विवरण मिलबैत छथि। चोटसभ सामान्य खसि पड़बाक व्याख्यासँ मेल नहि खाइत अछि, तेँ हत्याक आशङ्कापर औपचारिक जाँच शुरू होइत अछि; मुदा अपराधी के अछि, से एखन निश्चित नहि। रेखा नरेशक अन्तिम दिनक चिन्ता बतबैत छथि। नैना प्रशिक्षण समूहक बदलल ठेकान, गलत तिथि आ नरेश द्वारा माँगल मूल कागजक विवरण दैत छथि। सुजाता पूनमक गुमशुदगीक जाँच जारी रखबाक संग दुनू मामलाक प्रमाण अलग-अलग जुटेबाक निर्देश दैत छथि। रतन, किरण, मनोज आ कार्यालयक कर्मचारीसभसँ पूछताछ होइत अछि; लेखा-पञ्जी, ढुलाईक चालान, औषधि-दोकानक रसीद आ नहरक पथप्रकाशक स्थितिक जाँच कराओल

अध्याय २४ : हत्या आ अनुसन्धान

जाइत अछि। अभय समाचारमे हत्या-आशङ्का आ सिद्ध दोषक अन्तर राखैत छथि। नैना आ कुसुम सन्दिग्ध कागजपर बिना पुष्टि हस्ताक्षर नहि करबाक निर्णय करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

तृतीय भाग · अध्याय २५–३६ · घृणा आ विश्वासघात

14 शहरक दोसर चेहरा

अध्याय २५ : शोकसभा

नरेश मण्डलक मृत्युक बाद हुनक घरमे शोकक संग नियमित खर्चक कठोर प्रश्न उपस्थित होइत अछि। पिता हरिनारायण मण्डल, बहिन रेखा, पत्नी सीमा आ बच्चाक दायित्व नरेशक वेतनपर निर्भर छल। पड़ोसी राशन आ औषधिक सहयोग करबाक प्रस्ताव दैत छथि। नैना रेखाकेँ स्पष्ट करैत छथि जे नरेश किछु आर्थिक अभिलेखक उत्तर माँगने छलाह, मुदा हुनकर मृत्युक कारणकेँ एहि प्रश्नसँ निश्चित रूपेँ जोड़ब एखन सम्भव नहि। अभय मृतकक सम्मान आ परिवारक गोपनीयता राखि समाचार लिखबाक बात कहैत छथि। रतन सिंह संस्थाक दिससँ आर्थिक सहायता देबाक प्रस्ताव रखैत छथि; रेखा बकाया वेतन, देनदारी आ नरेशक लिखित प्रश्नक उत्तरक विवरण सेहो माँगैत छथि। सुजाता नरेशक निजी कापीक तिथि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २५ : शोकसभा

आ प्रश्न देखैत छथि, मुदा ककरो नाम लिखल रहबाक मात्रसँ अपराध सिद्ध नहि मानैत छथि। शोकसभाक बीच नरेशक साधारण पारिवारिक जिम्मेवारी हुनकर मानवीय रूपकेँ उजागर करैत अछि।

अध्याय २६ : दोषक बोझ

नरेशक मृत्युक बाद ‘नई दिशा’क प्रबन्धन पुरान लेखा-पञ्जी कर्मचारीसभक पहुँचसँ बाहर राखबाक सूचना जारी करैत अछि। किछु लोकक बीच ई चर्चा उठैत अछि जे आर्थिक अनियमितताक जिम्मेवारी नरेशपर राखल जा सकैत अछि। नैना प्रश्न उठबैत छथि जे मृत व्यक्तिकेँ बिना प्रमाण दोषी ठहराएब आ अभिलेख बन्द करब दुनू अनुचित अछि। रतन आ किरण आन्तरिक जाँचक बात कहैत छथि, मुदा अभ्यर्थीसभक जमा धन आ नरेशक परिवारक देनदारीक उत्तर टलैत रहैत अछि। कुसुम आ अन्य कर्मचारी नोकरी छूटबाक भयमे छथि। रेखा भाइक साखक रक्षा लेल पत्र आ पञ्जी-संख्याक प्रमाण जुटबैत छथि। चन्दनक गोदामक काज, ऋण आ देखल सन्दिग्ध गतिविधिक भय ओकरा भीतर अपराधबोध उत्पन्न करैत अछि। आर्थिक

अध्याय २६ : दोषक बोझ

विवशता आ सम्भावित गलत काजमे फँसबाक जोखिमक बीच नैना तथ्यक बलपर आगाँ बढ़बाक बाट खोजैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ : चन्दनक मौन

चन्दन अन्ततः नैना आ मायक समक्ष गोदामक रातिक ढुलाई सम्बन्धी नुकाएल बात कहैत अछि। परीक्षा रद्द भेलाक बाद बढ़ल ऋण चुकबेबाक लेल ओ मनोजक काज स्वीकार केने छल; किछु खेपमे बन्द पेटी आ बोतलक आवाज सुनियो पूरा कागज नहि भेटल छल। नरेश घर नहि घुरलाह, ओही राति चन्दन मनोजक लोकक संग एकटा पुरान गाड़ी लऽ नहरक पुलक आगाँक मोड़ धरि गेल छल। ओ गाड़ीक पूरा नम्बर, सामान वा अन्तिम घटनाक विषयमे निश्चित नहि अछि; हत्या होइत देखने नहि अछि। नैना ओकरा जे याद अछि से स्पष्ट लिखबैत छथि आ जे नहि बुझल, ओकरा अनुमानसँ नहि भरैत छथि। मनोजक फोन आ ऋणक दबाव चन्दनकेँ भयभीत करैत अछि। सरस्वती देवी बेटाकेँ अपन साँच कहबाक आ गलत ढुलाईसँ अलग रहबाक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ : चन्दनक मौन

निर्देश दैत छथि। नैना चन्दनकेँ सुजाता समक्ष तथ्य रखबाक लेल तैयार करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २८ : विभाक सन्देह

रतन सिंहक पत्नी विभा अपन नामवला संयुक्त बैंक खातामे अपरिचित निकासी आ निर्माण-सामग्रीक भुगतान-संलग्न कागजमे सन्दिग्ध हस्ताक्षर देखैत छथि। विवाहक आरम्भमे आर्थिक निर्णयमे साझेदारीक स्मृति आ वर्तमान गोपनीयताक अन्तर हुनका खटकैत अछि। ओ स्वयं बैंक जा कऽ लेनदेन आ चेकक प्रमाणित प्रति मँगैत छथि। कार्यालयमे पहुँचि नरेशक मृत्यु उपरान्त लेखा-पत्रक उपलब्धता, स्वीकृतिपत्रक क्रमाङ्क आ मजदूरक बकाया भुगतानक प्रश्न उठबैत छथि। किरण हुनक आगमनसँ असहज होइत छथि, जखन रतन पत्नीकेँ हिसाब छोड़ि देबाक आग्रह करैत छथि। विभा विवाद करबाक बदला लिखित विवरणक माँगपर अडिग रहैत छथि। बहिन सुमित्रासँ बातचीतमे ओ स्पष्ट करैत छथि जे पति पर स्नेह

अध्याय २८ : विभाक सन्देह

रहितो अपन नाम आ सम्पत्तिक उपयोग जानबाक अधिकार अलग अछि। बैंकक अगिला प्रक्रिया शुरू भेला पर विभा सत्यक खोज जारी रखबाक निर्णय करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २९ : किरणक स्वीकार

दिनेश अपन नामपर कएल ऋणक आवेदन आ रतन सिंहक बारम्बार निजी फोनक विषयमे पत्नी किरणसँ स्पष्ट उत्तर माँगैत छथि। किरण बुझैत छथि जे रतनसँ बनल विवाहेतर सम्बन्धक कारण ओ दिनेशसँ अनेक झूठ बजने छथि आ पारिवारिक आर्थिक जोखिमो नुकौने छथि। अन्ततः ओ सम्बन्ध स्वीकार करैत छथि; दिनेश आहत होइत छथि आ क्रोधमे रतनसँ पूछताछ करब चाहैत छथि। कार्यालयमे किरण अपन हस्ताक्षरवला ऋण, अनुबन्ध आ भुगतानक कागज अलग करैत छथि। विभा सेहो हुनकासँ भेटि आर्थिक कागज आ रतनसँ निजी सम्बन्धक साँच पुछैत छथि; किरण अपन गलती स्वीकार करैत छथि। दिनेश हिंसाक बदला अलग रहि कागज आ उचित कानूनी सलाहसँ निर्णय लेबाक बाट चुनैत छथि। किरण पुरान सन्देश मेटबासँ इनकार

अध्याय २९ : किरणक स्वीकार

करैत छथि, किएक तँ वास्तविक क्रम सुरक्षित रखनाइ आवश्यक बुझैत छथि। स्वीकारोक्ति भेलाक बादो टूटल विश्वासक परिणाम समाप्त नहि होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३० : प्रेमपर संशय

चन्दन नहरक रातिक जानकारी देबाक बाद नैना ओकरा निरीक्षक सुजाताक समक्ष लऽ जाइत छथि। चन्दन गाड़ीक आंशिक नम्बर, बाट, लगभग समय आ अपन फोनक विवरण कहैत अछि; सुजाता अस्पष्ट स्मृतिकेँ जबरदस्ती पूरा करबाक बदला अन्य प्रमाणसँ मिलान करबाक भरोसा दैत छथि। एहि संकटमे नैनाक अभय पासवानसँ सम्बन्ध सेहो कठिन प्रश्नक सोझाँ अबैत अछि। नैना चाहैत छथि जे भाइ आ परिवारक गोपनीय संकट समाचार नहि बनय, जखन अभय पत्रकारिताक सार्वजनिक दायित्व आ व्यक्तिगत विश्वासक सीमा स्पष्ट करैत छथि। परिवारक एक सम्बन्धी अभयक सामाजिक पृष्ठभूमिक आधारपर आपत्ति उठबैत छथि; नैना जन्मक आधारपर मनुष्यक मूल्याङ्कन अस्वीकार करैत छथि। अभय चन्दनक निजी बयान बिना अनुमति

अध्याय ३० : प्रेमपर संशय

प्रकाशित नहि करबाक निर्णयक संग नैनासँ क्षमा माँगैत छथि। नैना सम्बन्ध तोड़बाक बदला परिवार सम्हारेबाक लेल समय माँगैत छथि। चन्दन वैध रोजगार आ पढ़ाइ दिस घुरबाक विचार करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३१ : झूठ आरोप

नैनाक तस्वीर आ ‘नई दिशा’क संस्थागत चिह्न जोड़ि बनाओल जाली समाचार-जकाँ चित्र सामाजिक माध्यमपर पसरि जाइत अछि। ओहिमे हुनका अभ्यर्थीसभसँ धन ठगबाक आरोप लगाओल गेल अछि आ पुलिस हुनका खोजि रहल अछि, एहन झूठ बात लिखल अछि। सरस्वती देवी आ चन्दन चिन्तित होइत छथि; सविता अपुष्ट आरोपक प्रसार रोकबाक प्रयास करैत छथि। कार्यालयमे किरण आ रतन संस्थाक बदनामीक बात उठबैत नैनाकेँ अस्थायी रूपसँ काजपर नहि अएबाक निर्देश दैत छथि, मुदा आरोपक प्रमाण प्रस्तुत नहि करैत छथि। नैना डिजिटल सन्देशक मूल प्रति, समय आ कार्यालयी पत्र सुरक्षित कऽ सुजाताक समक्ष शिकायत दैत छथि। अभय बिना पुष्टि किछु प्रकाशित नहि करबाक निर्णय करैत छथि। उपस्थिति

अध्याय ३१ : झूठ आरोप

स्थगित भेला पर वेतनक अनिश्चितता परिवारक खर्चकेँ प्रभावित करैत अछि। नैना अपना विरुद्ध असत्य प्रचारक बीच पूनमक खोज आ नरेशक प्रकरणसँ मुँह नहि मोड़ैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३२ : ऋणक दलदल

मनोजक ढुलाई छोड़बाक बाद चन्दन वैध रोजगार खोजैत अछि, मुदा कतहु पुरान मालिकक अनुशंसा माँगल जाइत अछि तँ कतहु बारह घण्टाक कम वेतनवला काज बिना नियुक्तिपत्र देबाक प्रस्ताव होइत अछि। कोचिंग, परीक्षा, मोटरसाइकिल आ मायक उपचारसँ जुड़ल ऋणपर ब्याज बढ़ैत जाइत अछि। चन्दन स्वीकार करैत अछि जे पहिने बन्द पेटीसभमे बोतल देखलाक बादो ओ किछु खेप पहुँचेने छल; आर्थिक अभाव ओकर निर्णयकेँ प्रभावित कएलक, मुदा व्यक्तिगत उत्तरदायित्व समाप्त नहि करैत अछि। निरीक्षक सुजाताकेँ ओ नहरक राति आ मनोजक सन्देशसभक जानकारी दैत अछि। उधार देनिहार प्रभात साह आ ओकर मुनीम घर धरि दबाव पहुँचबैत छथि; नैना मूलधन आ ब्याजक अलग लिखित हिसाब माँगैत छथि।

अध्याय ३२ : ऋणक दलदल

अपरिचित फोनसँ चन्दनकेँ पुलिससँ दूर रहबाक धमकी भेटैत अछि। अन्तमे ओ अवैध ढुलाई छोड़बाक, पुलिससँ साँच कहबाक आ ऋणक पूरा लेखा रखबाक संकल्प करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३३ : अस्पतालक राति

ऋणक अपमानजनक दबाव, घरक चिन्ता आ पहिले सँ चलि रहल स्वास्थ्य-समस्याक बीच सरस्वती देवीकेँ माथ घुरबाक आ छाती भारी होएबाक शिकायत होइत छन्हि। नैना आ चन्दन हुनका सरकारी अस्पताल लऽ जाइत छथि। पुरान औषधिक पर्ची, जाँच, शुल्क आ अस्पतालमे राति बितेबाक आवश्यकता परिवारक आर्थिक कठिनाइ बढ़बैत अछि। चिकित्सक तत्काल स्थिति स्थिर कहितो नियमित परीक्षण आ विश्रामक सलाह दैत छथि; रोगक कारणक विषयमे बिना जाँच निश्चित घोषणा नहि करैत छथि। माधवी भोजन आ घरक सहायताक प्रस्ताव लऽ पहुँचैत छथि। अभय चिकित्सकीय काजमे सम्भावित सहयोगक जानकारी दैत छथि, मुदा नैनाक व्यक्तिगत सीमाक सम्मान करैत छथि। अस्पतालमे सरस्वती अपन बेटा-बेटीपर क्रोध नहि,

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३३ : अस्पतालक राति

हुनका सभक सुरक्षा लेल भय अनुभव करबाक बात कहैत छथि। भोरक जाँचमे सुधार देखाइत अछि आ चिकित्सकीय परामर्शक बाद हुनका घर लऽ जाएबाक व्यवस्था होइत अछि। चन्दन वैध कमाइ चुनबाक निर्णय दोहरबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३४ : सहयोगक हाथ

अस्पतालसँ घुरल सरस्वती देवीकेँ विश्राम, औषधि आ समयपर परीक्षण चाही। माधवी घरक रसोई सम्हारैत छथि, प्रभा काकी निगरानी करैत छथि आ अभय जाँचक कागज व्यवस्थित रखबाक फाइल अनैत छथि। नैनाक कार्यालयी उपस्थिति स्थगित छैक, तेँ घरक खर्च चलब कठिन अछि। सविता मोहल्लाक दू बच्चाकेँ नैनाक लग पढ़बाक प्रस्ताव दैत छथि; नैना सीमित मुदा नियमित ट्यूशनक काज शुरू करैत छथि। चन्दन लिखित शर्तवला छोट माल-पहुँचाबयक काज देखैत अछि आ पुरान पुस्तक फेर खोलैत अछि। अभय नैनासँ स्पष्ट करैत छथि जे व्यक्तिगत स्नेह आ समाचारक पेशागत दायित्व दुनू अपन मर्यादामे रहत। पूनमक परिवारकेँ नब खबरि नहि देल जा सकैत अछि, मुदा सम्पर्क बनल रहैत अछि। छोट-छोट

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३४ : सहयोगक हाथ

सहायतासँ सरस्वतीक स्वास्थ्य सुधारैत अछि। अभय आ नैना स्वीकार करैत छथि जे ओ दुनू कठिन समयक अतिरिक्त सामान्य दिनमे सेहो एक-दोसराक संग चाहैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३५ : बदलैत गवाही

सुजाता कुमारी नरेशक मामलामे साक्षीसभक कथन फेर मिलबैत छथि। नहरक कात देह देखनिहार गोकुल सहनीक बताओल समय बदलैत अछि; पूछताछमे स्पष्ट होइत अछि जे ओ घड़ी देखल नहि छलाह, बसक आवाजसँ समय अनुमान केने छलाह। पूर्व कर्मचारी अमिता कर्ण सेहो अपन आरम्भिक अपूर्ण बयान सुधारैत छथि। ओ बतबैत छथि जे ‘नई दिशा’मे आवेदन, शुल्क आ प्रशिक्षण-प्रेषणक अलग पञ्जी रहैत छल आ किछु प्रविष्टि मूल सुधारक निशान बिना बदलबाक प्रक्रिया चलैत छल। मुदा ओ पूनमक समय कार्यालयमे नहि रहलीह; सुजाता हुनक नामसँ पूनम सम्बन्धी प्रत्यक्ष गवाही लिखबाक भूल सुधारबैत छथि। गोकुलकेँ बादमे याद पड़ल नील गाड़ी सम्बन्धी विवरणो स्वतन्त्र पुष्टिक प्रतीक्षामे राखल जाइत

अध्याय ३५ : बदलैत गवाही

अछि। पूनमक परिवार अफवाहसँ फेर व्यथित होइत अछि। रेखाकेँ भाइक निजी लेखा-मिलानक कागजक एकटा खोल भेटैत अछि, जकरा ओ सुरक्षित रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३६ : नरेशक कागजात

रेखा नरेश द्वारा घरमे सुरक्षित राखल व्यक्तिगत लेखा-मिलानक प्रति खोलैत छथि। ओहिमे आवेदनक क्रमाङ्क, जमा शुल्क, प्रशिक्षण-प्रेषणक रकम, पूनम यादवक नाम आ किछु कोड, बैंक भुगतान तथा वीरेन्द्रक निर्माण-सम्बन्धी मदक विवरण अछि। रेखा एहि अभिलेखक अपन मनसँ अर्थ नहि निकालैत छथि। ओ निरीक्षक सुजाताकेँ सूचना दऽ पन्नासभ विधिवत् सूचीबद्ध करबा आ प्राप्ति-रसीद लऽ जमा करैत छथि। सुजाता लिखावट, मूल प्रविष्टि, तिथि, भुगतान आ सम्बन्धित कोडक स्वतन्त्र पुष्टि करबाक व्यवस्था करैत छथि। नैना अपन लग सुरक्षित रसीदक विवरणक मिलान करैत छथि, मुदा पुलिसक गोपनीय कागज घर नहि लऽ जाइत छथि। अभय रेखाक निजी सुरक्षा आ प्रमाणक विश्वसनीयताक हितमे

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३६ : नरेशक कागजात

सनसनीपूर्ण समाचारसँ बाँचैत छथि। सुजाता ‘नई दिशा’क मूल लेखा-पञ्जी आ बैंक अभिलेख विधिसम्मत मँगबैत छथि। नरेशक अपूर्ण प्रश्न आब वास्तविक लेनदेनक परीक्षणक आधार बनि रहल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

चतुर्थ भाग · अध्याय ३७–४८ · साँचक दाम

14 शहरक दोसर चेहरा

अध्याय ३७ : नब पूछताछ

नरेश मण्डलक बहिन रेखा द्वारा सौंपल कागजक आधारपर निरीक्षक सुजाता कुमारी ‘नई दिशा’क भुगतान, नियुक्ति आ वाहन-भाड़ाक नब जाँच शुरू करैत छथि। नैना अपन नियुक्तिपत्र, उपस्थिति स्थगनक पत्र आ कार्यक्षेत्रक जानकारी दैत छथि; ओ स्पष्ट करैत छथि जे बैंक भुगतान हुनक जिम्मेवारीमे नहि छल। किरण, रतन आ ठेकेदार वीरेन्द्रसँ सूची, अनुमति, अनुबन्ध तथा प्राप्ति-रसीदक विषयमे अलग-अलग प्रश्न होइत अछि। रतन प्रतिष्ठाक हानि कहि जाँचपर प्रश्न उठबैत छथि; स्थानीय नेताक सहयोगी सेहो सम्पर्क करैत अछि, मुदा सुजाता केवल प्रमाणपर ध्यान दैत छथि। पूनमक पिता बेटीक समाचार पुछबाक लेल थानामे पहुँचैत छथि, मुदा एखन निश्चित पता नहि भेटल अछि। बैंकक

अध्याय ३७ : नब पूछताछ

लेखा-जाँचमे एक्के गाड़ीक नम्बरपर संस्था आ वीरेन्द्रक फर्मसँ अलग-अलग भुगतान देखाइत अछि। नरेशक अन्तिम फोनक विवरणो मँगाओल जाइत अछि। एहि दोहर भुगतानसँ पुरान वाहनक खोजक नब बाट खुजैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ : पुरान गाड़ी

वाहन-भाड़ाक दू प्रविष्टिमे एक्के नम्बर भेटलाक बाद पुलिस परिवहन कार्यालय, पुरान मालिक आ मरम्मतखानाक अभिलेख जाँचैत अछि। नील मालवाहक गाड़ी पहिने हाशिम अन्सारीक नामपर दर्ज छल; वीरेन्द्र निर्माण सेवाकेँ हस्तान्तरणक आवेदन अपूर्ण रहि गेल छल। हाशिम बिक्रीक कागज आ आंशिक भुगतानक रसीद दैत छथि। चन्दन पुनः बयानमे रातिक अन्हारमे देखल गाड़ीक रंग आ पाछाँक अधपढ़ल अक्षरक बात कहैत अछि, मुदा जे स्पष्ट नहि देखल, तकर पुष्टि करबाक दावा नहि करैत अछि। मरम्मत-पञ्जी, नहरक बाट चलनिहार लोकक स्मृति आ माल-ढुलाईक रजिस्टरसँ सम्भावित सूत्र भेटैत अछि; एकटा गलत सूचना जाँचक बाद असत्य निकलैत अछि। पूनमक घर पहुँचल देरीसँ आएल नियुक्ति-रसीद

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ : पुरान गाड़ी

ओकर वर्तमान सुरक्षाक प्रमाण नहि बनैत अछि। पुरान गाड़ीक उपयोग गोदामसँ जुड़ल भऽ सकैत अछि, मुदा सुजाता भौतिक साक्ष्य भेटब आवश्यक मानैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३९ : गोदामक भीतर

सुजाता विधिसम्मत आदेश, स्वतन्त्र साक्षी, आबकारी अधिकारी आ आर्थिक जाँचक कर्मचारीक संग वीरेन्द्र निर्माण सेवाक गोदाममे तलाशी करैत छथि। निर्माण-सामग्रीक बीच किछु पेटीमे बोतल देखाइत अछि; सामग्रीक वैधता सुनिश्चित करबाक लेल नमूना सुरक्षित राखल जाइत अछि। पछिला आँगनमे तिरपालक नीचाँ ओ नील गाड़ी भेटैत अछि जकर नम्बर पहिने जाँचमे आएल छल। आलमारी आ पञ्जीसँ श्रमिकक नाम, आवक-जावक, भुगतान आ सङ्केत-लिखल पन्ना भेटैत अछि। मजदूर इमरान आ जगदीश बकाया मजदूरीक बात कहैत छथि; किछु श्रमिककेँ अन्य ठाम पठाओल गेल होयबाक संकेत सेहो अबैत अछि। भीड़मे नरेशक हत्या आ शराबक व्यापारपर अपुष्ट बात पसरैत अछि, मुदा अधिकारीसभ अलग-अलग सामग्रीक

अध्याय ३९ : गोदामक भीतर

सूची, प्राप्ति आ जाँच-पद्धति सुरक्षित रखैत छथि। अभय निष्कर्ष बिना प्रमाण प्रकाशित नहि करैत छथि। गोदामसँ भेटल कोड बाहरी नियुक्तिक सम्भावित सूत्र बनैत अछि; ओकर अर्थ एखन स्पष्ट नहि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४० : किरणक भय

गोदामक तलाशी बाद ‘नई दिशा’क कार्यालयपर अभ्यर्थी आ परिवारक लोक जमा छथि। रतनक नब कार्यालयी आदेशमे नियुक्ति-अभिलेखक जिम्मेवारी किरणक माथपर डालबाक प्रयास देखाइत अछि। किरण पुरान फाइल हटेबाक निर्देश रोकैत छथि आ आदेशक लिखित प्रमाण माँगैत छथि। रतन निजी सम्बन्धक प्रसङ्ग उठबैत हुनका दोसर नगर पठेबाक प्रस्ताव करैत छथि; किरण बुझैत छथि जे ई उपाय प्रमाणसँ दूरी बढ़ा सकैत अछि। कुसुम आ रामबाबूसँ अभिलेखक पुरान स्थिति पुछि ओ ‘आदेश ककर, हस्ताक्षर ककर, भुगतान ककरा’—एहि तीन प्रश्नक आधारपर अपन विवरण तैयार करैत छथि। सफाइकर्मी श्यामलीक बकाया वेतनक विषयमे सेहो पूछताछ करैत छथि। अपरिचित नम्बरसँ कागज कम राखबाक धमकी भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४० : किरणक भय

अधिवक्ता मालती सिन्हा हुनका निजी गलती स्वीकार करैत कानूनी उत्तरदायित्व अलग-अलग जाँचबाक सलाह दैत छथि। दिनेश आ विभासँ टूटल विश्वासक बीच किरण मूल कागज सुरक्षित रखबाक निर्णय करैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४१ : विभाक निर्णय

विभा अपन संयुक्त बैंक खातासँ भेल दू भुगतानक नकल जाँचैत छथि। किछु अनुमतिक कागजपर हुनक नामक हस्ताक्षर अछि, मुदा एकटा तिथि हुनक अनुपस्थितिक समयसँ मेल नहि खाइत अछि। बहिन सुमित्राक सहयोगसँ ओ अपन यात्राक प्रमाण सँजोएब आ बैंकमे लिखित आपत्ति देब आरम्भ करैत छथि। अधिवक्ता मालती सिन्हासँ भेटि ओ खाताक सुरक्षा, अभिलेख आ वैवाहिक अधिकारक विषयमे परामर्श लैत छथि। रतन भुगतानकेँ कारोबारी व्यवहार कहि टारबाक प्रयास करैत छथि आ किरणक नाम लैत छथि, मुदा विभा अपन स्वीकृतिक स्पष्ट उत्तर चाहैत छथि। ओ पुलिसक समक्ष बैंकक नकल विधिवत् सौंपैत छथि, बिना अपराध सिद्ध भेलाक सार्वजनिक आरोप लगौने। नरेशक बहिन रेखासँ संक्षिप्त भेंट हुनका

अध्याय ४१ : विभाक निर्णय

प्रभावित परिवारक दुःख मोन पाड़ैत अछि। अन्तमे विभा किछु दिन सुमित्राक घर रहबाक निर्णय करैत छथि। विवाह टिकत कि नहि, तकर निर्णय एखन नहि करैत छथि; अपन नाम आ अधिकारक विषयमे सत्य जानब प्राथमिक बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४२ : सीमापारक सूत्र

गोदामसँ भेटल श्रमिक-पञ्जी, भर्ती-रसीद आ वीरेन्द्रक भुगतानक विवरणमे बाहरी नियुक्ति सम्बन्धी सूत्र देखाइत अछि। सुजाता शराबक सम्भावित अवैध कारोबार आ श्रमिक-शोषणक जाँचकेँ अलग राखैत छथि, यद्यपि किछु नाम आ अभिलेख दुनूमे अबैत अछि। मजदूर इमरान अपन संगी रविक अनिश्चित ठामक बात कहैत अछि; रविक माय शान्ति देवी अग्रिम राशि देबाक रसीद लऽ थानामे अबैत छथि। सीमावर्ती कार्यालय आ श्रम-सहायता केन्द्रसँ औपचारिक सहयोग मँगाओल जाइत अछि। अधिकारी अर्चना झा सम्भावित कार्यस्थल, पहचानपत्र रोकब, बकाया मजदूरी आ एकटा युवतीक अपूर्ण नामक सूचना साझा करैत छथि। पूनमक वर्तमान ठाम एखनो प्रमाणित नहि भेल अछि। अभय माधवीक अनुभवक माध्यमसँ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४२ : सीमापारक सूत्र

शराबबन्दीक प्रारम्भिक लाभ आ अवैध बिक्री घुरलापर भेल घरेलू संकटकेँ अलग जाँचैत छथि। सीमापारक सूत्र नब दिशा दैत अछि, मुदा कोनो नाम वा आरोपकेँ एखन निश्चित निष्कर्ष नहि मानल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४३ : पूनमक पता

सीमापारक सहायता केन्द्रमे बचाओल गेल पूर्व श्रमिक रवि एकटा युवतीक विषयमे बतबैत अछि, जकर कलाईपर पुरान जरनक निशान अछि आ जे नैना नामक सहेलीक उल्लेख केने छलीह। रविक कथन सूर्य विहार वस्त्र परिसरक दिशामे संकेत करैत अछि। सुजाता आ अर्चना झा एहि लक्षणकेँ पूनमक निश्चित पहिचान नहि मानैत छथि। सम्बन्धित क्षेत्रक अधिकारी कार्यशालाक मुख्य भवन आ उपपरिसरमे महिला श्रमिकसभक उपस्थिति जाँचैत छथि; पञ्जी आ वास्तविक संख्यामे अन्तर भेटैत अछि। नैना पूनमक माय आ बहिन रीनाकेँ सीमित, सत्यापित जानकारी दैत छथि, जाहिसँ अपुष्ट आशा अथवा अफवाह नहि बढ़य। अभय सेहो बिना पुष्टि तस्वीर वा वर्तमान ठाम प्रकाशित नहि करैत छथि। अन्तमे सुरक्षित

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४३ : पूनमक पता

सन्देशमे युवती अपन मायक नाम, रीनाक नाम आ पुरान गलीक चिन्ह बतबैत छथि। विवरण मूल अभिलेखसँ मेल खाइत अछि; अर्चना सूचित करैत छथि जे युवती अपन नाम पूनम यादव बतौने छथि, मुदा सुरक्षाक औपचारिक प्रक्रिया जारी अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४४ : जीवित भेटल पूनम

अधिकारीक सहयोगसँ पुष्टि होइत अछि जे पूनम यादव जीवित छथि आ सीमापारक सहायता केन्द्रमे सुरक्षित छथि। नैना हुनक माय आ रीनाकेँ समाचार दैत छथि; परिवारक दीर्घ प्रतीक्षा आ भयक बीच राहतक क्षण अबैत अछि। पूनम कमजोर छथि, हुनका अनियमित भोजन आ कठिन श्रमक प्रभावसँ स्वास्थ्यक उपचार, विश्राम आ सुरक्षा चाही। सहायता केन्द्रमे हुनक संग अन्य श्रमिक सेहो छथि, जिनकर अनुभव आ आवश्यकता अलग-अलग अछि। अर्चना पूनमक सहमति लऽ परिवारसँ सुरक्षित दूरभाषक व्यवस्था करैत छथि। पर्दापर पूनमकेँ देखि माय भावविह्वल होइत छथि; नैनासँ बातचीतमे पूनम बतबैत छथि जे मदति माँगैत समय हुनक फोन छीनि लेल गेल छल। अभय परिजनक निजी क्षणक तस्वीर लेल दबाव देब

अध्याय ४४ : जीवित भेटल पूनम

अनुचित मानैत छथि। अधिकारीसभ घर घुरेबाक यात्रा तुरन्त करएबाक बदला चिकित्सकीय रिपोर्ट, परिचयक पुष्टि आ सुरक्षित व्यवस्थाक तैयारी करैत छथि। पूनमक भेंट खुशी दैत अछि, मुदा हुनक भोगल पीड़ा आ आरोपक जाँच शेष अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४५ : घावक साक्षी

पूनम अपन सुविधानुसार समय चुनि, बीचमे विश्रामक अधिकार सहित अधिकारीसभकेँ विस्तृत बयान दैत छथि। ‘नई दिशा’मे नियमित वस्त्र-उद्योगक नोकरी, वेतन आ आवासक आश्वासन भेटल छल, मुदा यात्राक दौरान काजक ठाम बदलल गेल आ अग्रिम खर्चक नामपर घर घुरबाक बाट कठिन बनाओल गेल। कार्यशालामे परिचयपत्र रखि लेल गेल, वेतन रोकल गेल आ आवागमन तथा फोनपर नियन्त्रण बढ़ल। नैना सँ मदति माँगबाक प्रयासमे पूनमक फोन छीनल गेल छल। ओ रविसँ भेल भेंट, अन्य श्रमिक ममताक चोट आ काजक परिस्थितिक विषयमे प्रत्यक्ष देखल बात कहैत छथि; जे नाम अथवा तिथि स्मरण नहि, से स्पष्ट करैत छथि। बयानक लिखित प्रति सुनि ओ त्रुटि सुधारबैत छथि। सुजाता बयानकेँ भर्ती-रसीद, नरेशक

अध्याय ४५ : घावक साक्षी

लेखा आ कार्यशालाक अभिलेखसँ मिलबैत छथि। पूनम अपन मायकेँ दोषी नहि ठहरएबाक आग्रह करैत छथि आ भविष्यक लेल फेर पढ़बाक आ सुरक्षित रोजगार करबाक इच्छा लिखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४६ : बेईमान प्रस्ताव

पूनमक समाचार पसरलाक बाद रतनक कार्यालयक सलाहकार अजीत कुमार नैनाक घर पहुँचैत अछि। ओ नब शाखामे नियमित पद, बकाया वेतनसँ बेसी धन आ सहायता देबाक प्रस्ताव रखैत अछि, मुदा कागजमे पूर्व शिकायतकेँ गलतफहमी कहबाक आ आगाँ पुलिस-जाँचमे सहयोग नहि करबाक शर्त लिखल अछि। नैना झूठ लिखबासँ इनकार करैत छथि आ बिना हिसाबक लिफाफा नहि लैत छथि। मायक औषधि आ चन्दनक ऋणक चिन्ता रहलो पर ओ सत्य बयान बदलबाक सहमति नहि दैत छथि। कुसुम बतबैत छथि जे नैनाक नामपर नब नियुक्तिक फाइल खोलबाक आदेश अछि, यद्यपि नैना आवेदन नहि देने छथि। बादमे कार्यालयसँ पत्र अबैत अछि जाहिमे नैनाकेँ स्वेच्छासँ काज छोड़ल आ कोनो बकाया नहि रहल बताओल गेल अछि; ई अजीतक

अध्याय ४६ : बेईमान प्रस्ताव

प्रस्तावसँ विरोधाभासी अछि। नैना घटनाक लिखित विवरण सुजाताकेँ दैत छथि। दू परस्पर विरोधी प्रस्तावक बीच ओ रोजगारक आवश्यकतासँ बेसी अपन कथनक सत्यता जोगबैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४७ : मनोजक गिरफ्तारी

नरेशक हत्याक जाँचमे पुरान नील गाड़ीक पञ्जी, मरम्मतक बिल, ढुलाईक स्वीकृति, बैंकक विशेष भुगतान आ नहरक कात देखनिहार लोकक कथन परस्पर मिलाओल जाइत अछि। चन्दन अधिवक्ताक उपस्थितिमे बतबैत अछि जे हत्याक राति मनोजकेँ पुलसँ पहिने उतारने छल, मुदा ओकर बादक घटनाक प्रत्यक्ष जानकारी नहि अछि। गाड़ीक बायाँ बत्ती बदलल होयबाक बिल आ मनोजक नामपर विशेष ढुलाई खर्च प्रश्न उठबैत अछि। नरेशक कापीमे मनोजसँ मूल पावती लऽ नहि सकबाक उल्लेख सेहो अछि। एहि उपलब्ध आधारपर सुजाता विधिसम्मत प्रक्रिया पूरा कऽ मनोजकेँ गिरफ्तार करबैत छथि। मनोज ढुलाईक हस्ताक्षर आ नरेशसँ हिसाबपर भेल बहस मानैत अछि, मुदा हत्या वा मारपीटक आरोप स्वीकार नहि करैत अछि।

अध्याय ४७ : मनोजक गिरफ्तारी

अभय गिरफ्तारीकेँ दोषसिद्धि कहि प्रकाशित नहि करैत छथि। रेखा सेहो स्पष्ट करैत छथि जे न्याय प्रमाण आ अदालतक निर्णयसँ भेटत। पुलिस वाहन, भुगतान आ गवाहीक जाँच जारी रखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४८ : मजिस्ट्रेटक समक्ष

किरण अपन हस्ताक्षरवला कागज, मौखिक आदेश, रतनक सन्देश आ नरेशक पावतीसँ जुड़ल बात अलग-अलग क्रममे तैयार करैत छथि। अधिवक्ता मालती सिन्हाक परामर्शसँ ओ निरीक्षक सुजाताकेँ अपन भूमिकाक विवरण दैत छथि आ बादमे न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष स्वेच्छासँ कथन दर्ज करबैत छथि। किरण स्वीकार करैत छथि जे रतनक संग निजी सम्बन्धक कारण कार्यालयी आदेशपर पर्याप्त प्रश्न नहि उठौने छलीह तथा किछु भुगतानक संलग्नक पूरा पढ़ने बिना हस्ताक्षर केने छलीह। ओ वास्तविक प्रशिक्षण-खर्च, बाहरी आवासक भुगतान आ अस्पष्ट तेसर मदक अन्तर बतबैत छथि; मनोजक हाथमे देखल नील फोल्डरक भीतरक सामग्री नहि जनबाक बात सेहो स्पष्ट करैत छथि। एही बीच पूनमक बयानक प्रमाणित

अध्याय ४८ : मजिस्ट्रेटक समक्ष

विवरण, विभाक बैंक आपत्ति आ नरेशक कापीक तुलना होइत अछि। सुजाता हत्या, रोजगार-शोषण आ सन्दिग्ध शराब कारोबारक फाइल अलग राखैत छथि। किरणक कथनसँ प्रश्नक नब आधार भेटैत अछि, मुदा हत्याक आदेश देनिहारक अन्तिम पहिचान एखन सिद्ध नहि अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पञ्चम भाग · अध्याय ४९–६० · बाँचल लोक

14 शहरक दोसर चेहरा

अध्याय ४९ : रतनक गिरफ्तारी

नरेशक लेखा, प्रमाणित बैंक भुगतान, किरणक न्यायिक कथन, विभाक आपत्ति, पूनमक बयान आ पुरान गाड़ीक नब जाँच मिललापर रतन सिंहक विरुद्ध कार्रवाईक कानूनी आधार बनैत अछि। सुजाता गिरफ्तारीक कारण अलग-अलग लिखि विधिसम्मत प्रक्रियाक अनुसार रतनकेँ हुनक घरसँ गिरफ्तार करबैत छथि। विभा अपन नामपर भेल भुगतानक प्रश्नसँ पाछाँ नहि हटैत छथि। रतन वकीलसँ सम्पर्क करैत छथि आ आरोप अस्वीकार करबाक अधिकार रखैत छथि। अभय ‘गिरफ्तारी’ आ ‘दोषसिद्धि’क अन्तर स्पष्ट राखि समाचार लिखैत छथि। कार्यालयक कर्मचारी कुसुम बकाया वेतन आ नियुक्तिक प्रमाणक चिन्ता करैत छथि; नैना हुनका सभकेँ कागज सुरक्षित रखबाक कहैत छथि। चन्दन अपन निजी ऋण आ ढुलाईक जिम्मेवारी

अध्याय ४९ : रतनक गिरफ्तारी

अलग मानि फेर सही बयान देबाक विचार करैत अछि। नरेशक बहिन रेखा एहि कार्रवाईकेँ अन्तिम न्याय नहि मानैत छथि। पूनम सेहो बुझैत छथि जे गिरफ्तारीसँ रोकल मजदूरी तत्काल वापस नहि भेटैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५० : हत्याक वास्तविकता

रतन आ मनोज गिरफ्तार भेलाक बाद सुजाता नरेशक मृत्युक घटनाक्रम अलगसँ पुनः जाँचैत छथि। नरेश मूल भुगतान-पावतीक विषयमे बात करबाक लेल गोदाम पहुँचल छलाह। पुरान चौकीदार दीनानाथ भयक कारण पहिने नुकाओल सूचना दैत छथि—गोदाममे विवादक आवाज, मनोजक उपस्थितिक बात आ बादमे नरेशक निश्चेष्ट देह देखबाक प्रसङ्ग। चिकित्सकीय प्रतिवेदन माथपर हिंसक चोटकेँ मृत्युकारक मानबाक सम्भावना देखबैत अछि; नहरक कात मृतदेह भेटलासँ डूबि मरबाक निष्कर्ष नहि निकलैत अछि। गोदामक अलमारीपाछाँ भेटल जैविक चिह्नक जाँच होइत अछि। रतनक चालक हरिहर बतबैत अछि जे ओ नरेशकेँ चुप करएबाक कठोर निर्देश सुनने छल; पूर्व चालक चन्देश्वर सेहो मनोजक बातचीतक किछु अंश सुनने

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५० : हत्याक वास्तविकता

छल। फोनक समय, गाड़ीक आवाजाही आ भुगतान जोड़ि अधिकारीसभ सम्भावित घटनाक्रम बनबैत छथि—विवाद, चोट आ मृतदेह नहरक कात पहुँचेबाक आशङ्का। तथापि प्रत्येक साक्षीक विश्वसनीयता आ आदेशक अर्थ न्यायिक परीक्षणक विषय अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५१ : बन्द कार्यालय

जाँच आ प्रशासनिक कारबाहीक बीच ‘नई दिशा रोजगार केन्द्र’क फाटक बन्द भऽ जाइत अछि। भीतर नियुक्तिक आकर्षक विज्ञापन लटकल अछि, बाहर अभ्यर्थी अपन जमा राशि आ कर्मचारी बकाया वेतन माँगि रहल छथि। कुसुम उपस्थिति-पञ्जी, वेतन-पर्ची आ सहकर्मीक विवरण जुटबैत छथि; मजदूर फकीरा आ इमरान अपन कठिनाइ बतबैत छथि। ककरो काजपर बदनामीक छाह पड़ल अछि, तऽ ककरो ऋणक ब्याज बढ़ि रहल अछि। नैना स्पष्ट करैत छथि जे ओ संस्थाक मालिक नहि छलीह आ धन घुरेबाक निश्चित तिथि नहि कहि सकैत छथि; ओ शिकायतक लिखित प्रक्रिया बुझबैत छथि। श्रम-विभागमे बकाया वेतनक सामूहिक आवेदन देल जाइत अछि। सुजाता अपराधक प्रमाण, कर्मचारीसभक वेतन आ अभ्यर्थीक जमा राशिक दावाकेँ अलग

अध्याय ५१ : बन्द कार्यालय

विधिक प्रक्रियामे रखैत छथि। पूनम बन्द फाटकक समाचार सुनि अपन पहिल आशा मोन करैत छथि। नैना वैध विज्ञापनक जाँच लेल सूचना-सूची लिखय लगैत छथि; रोजगारक आवश्यकता कार्यालय बन्द भेलाक बादो समाप्त नहि होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५२ : विभाक नब जीवन

रतनक गिरफ्तारीक बाद विभा बहिन सुमित्रा आ अपन बेटी अनुष्काक संग रहैत छथि। ओ बैंकक विवादित भुगतान, सम्पत्तिक अधिकार आ घरक सुरक्षाक विषयमे अधिवक्ता शैलजा ठाकुरसँ परामर्श करैत छथि। परिचित लोक 'घरक बात' बाहर नहि जाएबाक सलाह दैत छथि, मुदा विभा अपन नामपर भेल लेनदेनक सत्य जानबाक अधिकार छोड़ैत नहि छथि। पुरान घरसँ आवश्यक कागज आ सामान लेबाक समय नौकरानी कमलाक बकाया वेतन आ माली रामदासक कठिनाइ देखैत छथि; ओ कर्मचारीसभक लिखित हिसाब रखबाक महत्त्व बुझैत छथि। विवाहक आरम्भमे कारोबारक हिसाब देखबाक अपन पुरान अनुभव स्मरण कऽ विभा महिलासभक लेखा-प्रशिक्षण केन्द्रमे पढ़य शुरू करैत छथि। सुजाताकेँ यात्राक कागज दऽ विवादित

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५२ : विभाक नब जीवन

हस्ताक्षरक जाँचमे सहयोग करैत छथि। ओ न तऽ अतीतक स्नेहकेँ झूठ मानैत छथि, न तऽ ताहि स्नेहक कारण वर्तमान अपमान स्वीकार करैत छथि। आर्थिक आत्मनिर्भरता आ बेटी लेल स्थिर दिनचर्या हुनक नब जीवनक आधार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५३ : दिनेशक स्वीकार

किरणसँ अलग रहि रहल दिनेश अपन बन्दप्राय काजघरमे ऋण आ टूटल विवाहक हिसाब देखैत छथि। क्रोधमे ओ रतनकेँ निजी सम्बन्ध सार्वजनिक करबाक धमकी दऽ धन माँगबाक सन्देश पठौने छलाह। मामेर भाइ रविक प्रश्नपर दिनेश स्वीकार करैत छथि जे ई सन्देश अनुचित छल, भले आरम्भमे हुनक ऋण-सम्बन्धी शिकायत अलग रहल हो। अधिवक्ता नीलिमा झाक परामर्शसँ ओ मूल सन्देश सुरक्षित राखि निरीक्षक सुजाताक समक्ष स्वयं विवरण दैत छथि। पुलिस तिथि, ऋणक कागज आ कथनक स्वतन्त्र जाँच करबाक बात कहैत अछि; स्वीकार मात्रसँ दोष वा निर्दोषता तय नहि होइत अछि। दिनेश किरणकेँ अलग रहबाक निर्णय स्पष्ट करैत छथि आ निजी सामान तथा देनदारीक विधिसम्मत निपटारा चाहैत छथि। बैंकक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५३ : दिनेशक स्वीकार

प्रमाणित कागजमे ऋणक शर्तपर नब प्रश्न उठैत अछि। ओ शम्भुक सहयोगसँ छोट ठेका पूरा कऽ मजदूरक बकाया चुकबैत छथि। अपन दुःखक कारण दोसरकेँ धमकी नहि देबाक संकल्प दिनेशक परिवर्तन बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५४ : समाचारक मर्यादा

अभय पासवानक समाचार-कक्षमे पूनमक तस्वीर, बन्द रोजगार केन्द्र आ गिरफ्तारीक समाचार केना प्रकाशित कएल जाए, तकर विवाद उठैत अछि। अभय स्पष्ट करैत छथि जे पीड़ितक नाम जनितो ओकर निजी तस्वीर वा अनुभव सार्वजनिक करबाक अनुमति नहि भेटैत अछि। ओ रतनक गिरफ्तारीकेँ न्यायालयक दोषसिद्धि नहि कहैत छथि आ नरेशक हत्या, श्रमिक-शोषण तथा आर्थिक अनियमितताक प्रमाणक स्थिति अलग रखैत छथि। सम्पादकक व्यावसायिक दबावक बीच ओ कर्मचारिक बकाया वेतन, वैधानिक सहायता आ शिकायतक ठामक उपयोगी जानकारी प्रकाशित करैत छथि। ऑनलाइन टिप्पणीमे पूनमक पहिचान उघाड़बाक प्रयास रोकबाक कहल जाइत अछि; झूठ तस्वीरक विरोध कएल जाइत अछि। एक भुगतानक तिथि गलत छपला पर अभय

अध्याय ५४ : समाचारक मर्यादा

स्पष्ट सुधार प्रकाशित करबैत छथि। नैना सेहो रोजगार-सूचना साझा करबाक लेल न्यूनतम व्यक्तिगत जानकारी आ सहमतिक नियम अपनबैत छथि। पूनम अपन अनुभव भविष्यमे लिखबाक इच्छा रखैत छथि, मुदा एखन सार्वजनिक कथन नहि देतीह। समाचारक उद्देश्य सनसनी नहि, जाँचल तथ्य आ प्रभावित लोकक अधिकार बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५५ : चन्दनक गलती

चन्दन अपन पुरान माल-ढुलाईक तिथि आ भुगतानक हिसाब फेर लिखैत अछि। ओ मानैत अछि जे बन्द पेटीमे बोतलक आवाज सुनला आ मालपर सन्देह भेलाक बादो आर्थिक आवश्यकताक कारण ढुलाई जारी रखने छल। पाँच हजार टका नगद लऽ ओ मोटरसाइकिलक किस्त आ मायक औषधिमे खर्च केने छल; उपयोग आवश्यक रहलासँ रकमक सन्दिग्ध स्रोत उचित नहि भऽ जाइत अछि। अधिवक्ता शशिकान्त झाक सहायता लऽ चन्दन निरीक्षक सुजाताकेँ ई बात स्वयं बतबैत अछि। नरेशक मृत्युक राति मनोजकेँ नहरक मोड़पर छोड़बाक बाद ओकर भीजल बाँह देखल होयबाक स्मृति सेहो जोड़ैत अछि, मुदा जे नहि देखल, तकर दावा नहि करैत अछि। सुजाता हत्या आ अवैध ढुलाईक उत्तरदायित्व अलग जाँचैत छथि। नैना भाइकेँ बचाएबाक लेल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५५ : चन्दनक गलती

झूठ पैरवी नहि करबाक बात स्पष्ट करैत छथि। चन्दन वैध औषधि-ढुलाईक काज खोजैत अछि आ पुलिसक अगिला उपस्थितिक सूचना सुरक्षित रखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५६ : नब रोजगारक प्रयास

नैना सविता आ कुसुमक सहयोगसँ सार्वजनिक पुस्तकालयक बरामदामे छोट रोजगार-सहायता केन्द्र आरम्भ करैत छथि। उद्देश्य नियुक्ति दियाबयक झूठ वचन नहि, अधिकृत विज्ञापनक स्रोत, वेतन, अनुबन्ध, शुल्क आ शिकायतक प्रक्रिया जाँचब अछि। पुस्तकालय समितिसँ स्थानक अनुमति लैत समय नैना केन्द्रक सीमित जिम्मेवारी स्पष्ट करैत छथि। व्यक्तिगत कागज बिना आवश्यकता नहि राखब, निःशुल्क जानकारीक लेल शुल्क नहि लेब आ सभ आय-व्यय लिखब—ई नियम बनैत अछि। माधवी सफाइक काजक उचित पारिश्रमिक माँगैत छथि, जे स्वीकार कएल जाइत अछि। इमरान, बुधनी आ अन्य श्रमिक वेतन, योग्यताक प्रमाण आ रोजगारक कठिनाइ लऽ पहुँचैत छथि। पूनम अपन इच्छासँ सप्ताहमे एक घण्टा सार्वजनिक

अध्याय ५६ : नब रोजगारक प्रयास

सूचना पढ़बाक सहयोग करबाक प्रयास करैत छथि; हुनक श्रमक पारिश्रमिक निश्चित कएल जाइत अछि। चन्दन सेहो वैध काजक कागज जाँचबए अबैत अछि। पहिल सप्ताहमे कोनो नियुक्ति सुनिश्चित नहि होइत अछि, मुदा केन्द्र वास्तविक सूचना आ पारदर्शी हिसाबपर काज करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५७ : विवाहक विरोध

नैना आ अभयक विवाहक सम्भावना सुनि ममियौत मामा शैलेन्द्र झा आ किछु परिजन जातिक भिन्नता, अभयक अनिश्चित पत्रकारिताक आमदनी आ चन्दनक जाँचकेँ कारण बना विरोध करैत छथि। नैना स्पष्ट करैत छथि जे अपन जीवनक निर्णय हुनक सहमति बिना नहि होएत; ओ मायक सम्मानक चिन्ता बुझैत छथि, मुदा जातिक आधारपर सम्बन्ध अस्वीकार नहि करैत छथि। अभयसँ खुलि कऽ बातचीतमे रहबाक स्थान, अपन-अपन काज, वृद्ध अभिभावकक देखरेख आ आर्थिक उत्तरदायित्वक प्रश्न उठैत अछि। सरस्वती देवी समाजक कठोर व्यवहारसँ डेराइत छथि, मुदा बेटीक निर्णय जबरदस्ती रोकबाक पक्षमे नहि छथि। अभयक परिवार सेहो नैनाक स्वतन्त्र काज जारी रहबाक सम्मान करैत अछि। दोसर पारिवारिक भेंटमे किछु

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५७ : विवाहक विरोध

परिजनक स्वर नरम होइत अछि, यद्यपि शैलेन्द्रक असहमति तुरन्त समाप्त नहि होइत अछि। नैना प्रेमक घोषणासँ आगाँ बढ़ि साझा जीवनक व्यावहारिक हिसाब लिखैत छथि आ सम्मानपूर्ण बातचीतक बाट खुलल रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५८ : अदालतक सुनवाई

नरेशक हत्याक अनुसन्धानक आरोपपत्र न्यायालयमे दाखिल भेल अछि, आ रतन सिंह तथा मनोज साहसँ सम्बन्धित प्रारम्भिक सुनवाई होइत अछि। नरेशक बहिन रेखा परिवारक संग अदालत पहुँचैत छथि; कानूनी कागज, प्रक्रिया आ अगिला तिथि बुझब हुनका कठिन लगैत अछि। सुजाताक दल फोन-सम्पर्क, गोदामक अभिलेख, वाहन-पञ्जी आ चिकित्सकीय सामग्री प्रस्तुत करबाक तैयारी करैत अछि। बचाव पक्ष गिरफ्तारीकेँ दोषसिद्धि नहि मानबाक बात रखैत अछि। न्यायालय दस्तावेजक प्रति आ प्रक्रियागत आवश्यकताक विषयमे निर्देश दऽ अगिला तिथि निश्चित करैत अछि; एहि दिन अन्तिम फैसला नहि होइत अछि। नैना रेखाकेँ आधिकारिक सूचना पएबाक बाट बुझबैत छथि। पूनम अपन स्वास्थ्य आ अलग कानूनी

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५८ : अदालतक सुनवाई

प्रक्रियाक कारण उपस्थित नहि छथि; चन्दनक जाँच सेहो अलग चलि रहल अछि। अभय समाचार लिखैत समय ‘हत्या प्रमाणित’ भऽ गेल, एहन गलत वाक्य हटबैत छथि। रेखा भाइक कापीक कात अगिला सुनवाईक तिथि जोड़ि न्यायिक प्रतीक्षा जारी रखैत छथि।

अध्याय ५९ : फेर नोकरीक पाँति

नवगढ़क बस अड्डापर फेर परीक्षा देबय जाएवला युवक-युवतीक पाँति अछि। सविता मुन्नी नामक अभ्यर्थीकेँ केन्द्रक पता बुझबैत छथि आ निजी नम्बरपर शुल्क पठाकऽ परीक्षा-केन्द्र बदलल होयबाक झूठ सन्देशकेँ अधिकृत वेबसाइटसँ जाँचैत छथि। मुन्नी परीक्षा देबामे सफलतापूर्वक प्रवेश करैत छथि; सविता सेहो अपन परीक्षा दैत छथि। चन्दन परीक्षा लेल नहि, औषधि-दोकानमे अस्थायी ढुलाईक काज माँगबाक लेल निकलल अछि; मालिक लिखित समय आ मालक सूची सहित तीन दिनक परीक्षणक अवसर दैत छथि। नैनाक केन्द्रमे कुसुम वेतन-दावाक आवेदन सम्हारैत छथि, पूनम सार्वजनिक विज्ञापन पढ़ैत छथि आ माधवी घरेलू मजदूरी तथा अवैध शराबसँ जुड़ल परिवारसभक कठिनाइ साझा करैत छथि।

अध्याय ५९ : फेर नोकरीक पाँति

केन्द्र कोनो आवेदककेँ आधार बिना योग्यता-प्रमाणपत्र नहि दैत अछि, आ वेतनसँ आवागमनक खर्च घटा कऽ वास्तविक लाभ जोखबाक सलाह दैत अछि। दिनक अन्तमे नियुक्ति निश्चित नहि भेल, तथापि सत्यापन आ वैध कमाइक प्रयत्न चलैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६० : जिनगी आगाँ बढ़ैत अछि

फागुनक आरम्भमे नैना आ अभयक परिवारसभ सम्मानपूर्वक बैसि सरल विवाहक निर्णय करैत छथि। जाति आ आमदनीपर पहिने उठल विरोधक बीच रहबाक ठाम, खर्च, सरस्वती देवीक देखरेख आ दुनूक पेशागत स्वतन्त्रतापर स्पष्ट सहमति बनैत अछि। विवाह कानूनी औपचारिकता आ परिवारक उपस्थितिमे बिना अनावश्यक ऋण लिए सम्पन्न होइत अछि। पूनम समारोहमे आबि रोजगार-विज्ञापन जाँचबाक प्रश्नसभ लिखल कापी उपहार दैत छथि। विवाहक बाद नैना आ अभय किरायाक कोठरीमे साझा खर्चक हिसाब रखैत छथि; नैना अपन रोजगार-सहायता केन्द्रक काज जारी रखैत छथि। चन्दन लिखित माल-सूचीसँ औषधि-ढुलाई करैत अछि, मुदा ओकर कानूनी जाँच समाप्त नहि भेल अछि। नरेशक हत्याक मामला अदालतमे चलैत अछि, आ

अध्याय ६० : जिनगी आगाँ बढ़ैत अछि

वीरेन्द्र, भानु प्रताप तथा राजनीतिक सम्पर्कसँ जुड़ल सूत्रक सत्यापन एखन बाँकी अछि। बस अड्डापर नैना रूपा नामक युवतीकेँ अग्रिम शुल्क देबासँ पहिने विज्ञापन जाँचबाक बाट देखबैत छथि। शहरमे रोजगारक पाँति एखनहुँ अछि, मुदा नैना एहि बेर प्रश्न पुछबाक आ सत्यापनक सहारा दैत छथि।

WORK / कृति

15 भारत २०२७

सत्ताइस वर्षक गवाही | पाँच खण्ड · ४० अध्याय · २०००–२०२७

SECTION / खण्ड

भूमिका

15 भारत २०२७

भूमिका

‘भारत २०२७’ सन् २००० सँ २०२७ धरि फैलल पाँच खण्ड आ चालीस अध्यायक कादम्बरी अछि। दरभंगाक एक छोट व्यापारीक जप्त बहीसँ आरम्भ भेल कथा देशक अलग-अलग भूभागमे न्याय, नागरिक अधिकार, श्रम, शिक्षा, विज्ञान, धनक लेनदेन आ डिजिटल अभिलेखक प्रश्न धरि पहुँचैत अछि। अधिवक्ता शिवनारायण झा आ हुनकर पुत्री रेवती झाक अनुभव अनेक स्वतन्त्र जीवनकथाकेँ जोड़ैत अछि। एहि अध्यायवार सारांशमे मूल पाठक घटना, पात्र, न्यायिक अवस्थाक भेद आ भावार्थ सुरक्षित रखबाक प्रयत्न कएल गेल अछि। जतेक प्रश्न कथा स्वयं अनिर्णीत छोड़ैत अछि, तकरा सारांशमे सेहो अनिर्णीत राखल गेल अछि।

SECTION / खण्ड

प्रथम खण्ड — न्यायालयक पहिल दुआरि

15 भारत २०२७

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १ — दण्डाधिकारीक कोठरी

दरभंगामे जुलाई २०००क बरसाती भोर नीलकान्त साहकेँ पुलिस सट्टाक कथित हिसाब राखबाक आरोपमे दण्डाधिकारीक समक्ष प्रस्तुत करैत अछि। हुनकर दुकानसँ बहीखाता, किछु नगद, ढीला कागज आ ताशक गड्डी जप्त भेल अछि। पत्नी निर्मला आ बारह वर्षक पुत्र अमरेश भय आ अनिश्चिततामे छथि। अधिवक्ता शिवनारायण झा आ हुनकर विधि-पढ़ैत पुत्री रेवती एहि मुकदमामे प्रवेश करैत छथि। शिवनारायण स्पष्ट करैत छथि जे घरसँ खाता भेटब आ खातामे लिखल प्रत्येक प्रविष्टिक आपराधिक अर्थ सिद्ध होयब दू पृथक बात अछि। दण्डाधिकारी पुलिस हिरासतक विशेष आवश्यकता पर्याप्त रूपसँ प्रमाणित नहि भेल देखिकऽ न्यायिक हिरासत दैत छथि आ जमानतक सुनबाई निर्धारित करैत छथि। एहि अन्तरक

अध्याय १ — दण्डाधिकारीक कोठरी

अर्थ आरोपसँ दोषसिद्धि धरि दूरी बुझबैत अछि।

रेवती पितासँ सीखैत छथि जे प्रत्यक्ष देखल घटना, दोसरासँ सुनल बात आ एखन अज्ञात तथ्यकेँ अलग राखब आवश्यक अछि। जप्त बहीमे रामकिशुन महतोक नामसँ हालुक लेनदेन देखाइत अछि, जखन कि निर्मलाक अनुसार ओ व्यक्ति पाँच वर्ष पहिने दिवंगत भऽ गेल छथि। ई विसंगति ककरो अपराध प्रमाणित नहि करैत; मुदा व्यक्ति-पहिचान, लिखावट आ पन्नाक इतिहास जाँचबाक नव प्रश्न उठबैत अछि।

अध्याय २ — जप्तीक सूची

अगिला सुनबाईमे निर्मला घर-दोकानक प्रमाण, जमानतदारक कागज आ पारिवारिक विवरण आनैत छथि। शर्तसहित नीलकान्तक जमानत स्वीकृत होइत अछि, मुदा विचारण समाप्त नहि होइत। अनुसन्धानमे जप्तीक मूल सूची आ बादक नकलमे ढीला कागजक गिनती अलग देखाइत अछि—कतहु सत्रह, कतहु उन्नैस। उपनिरीक्षक दीनानाथ प्रसाद एहि अन्तरकेँ अनदेखा करबाक बदला ओकर वास्तविक कारण लिखबाक पक्षमे छथि। साक्षीसभक कथनसँ पता चलैत अछि जे ओ सभ अपन प्रत्यक्ष ज्ञानक सीमाक भीतरहि बात कहि सकैत छथि।

रेवतीक ध्यान लिखावट, हस्ताक्षर, जप्त सामग्रीक संरक्षण आ एक हाथसँ दोसर हाथ धरि ओकर पहुँचबाक क्रमपर केन्द्रित होइत अछि। नीलकान्तक प्रति सहानुभूति रखनिहार सभ व्यक्ति बहीक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २ — जप्तीक सूची

सभटा अर्थ नहि बुझैत छथि। अमरेशक लेल पिताक घर घुरब राहत अछि, मुदा मुकदमाक छाया समाप्त नहि भेल। अध्याय रेखांकित करैत अछि जे जप्तीक सूची वस्तुक नाम गना सकैत अछि, किन्तु प्रत्येक वस्तुक उद्गम, प्रयोग आ व्यक्ति-विशेषक उत्तरदायित्व अलग प्रमाण माँगैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३ — संसदक छाया

दिसम्बर २००१ मे संसदपर आतङ्की आक्रमणक समाचारसँ दिल्ली भय आ सतर्कतामे डूबल अछि। विधिक अध्ययन करैत रेवती देखैत छथि जे राष्ट्रिय असुरक्षाक वातावरणमे सामान्य नागरिकक अधिकारक परीक्षण आरो कठिन भऽ जाइत अछि। दरभंगामे छापाखाना आ जाली प्रवेश-पत्रसँ सम्बन्धित फैज़ानक प्रकरण उठैत अछि। पुलिसक आशंका, गिरफ्तारीक कारण, दस्तावेजक संरक्षण आ जमानतक औचित्य न्यायालयक अलग-अलग प्रश्न बनैत अछि। शिवनारायण सुरक्षा-चिन्ताकेँ अस्वीकार नहि करैत छथि, मुदा प्रत्येक आरोपीक विशिष्ट कृत्यक प्रमाण माँगैत छथि।

एहि बीच नीलकान्तक पुरान जप्ती-सूची आ साक्षीसभक बदलबैत स्मृतिपर विचार जारी अछि। रेवती सीखैत छथि जे साक्षीक संशोधित कथन मात्रेँ

अध्याय ३ — संसदक छाया

झूठक प्रमाण नहि; परिवर्तनक समय, कारण आ अन्य साक्ष्य जाँचबाक चाही। अध्यायक अन्तमे जोधपुरक एक पुरान भूमि-नक्शाक पत्र दरभंगा पहुँचैत अछि। एहि प्रकारेँ राष्ट्रिय घटनाक छायामे चलैत न्यायिक जीवनक बीच मरुधरक अलग कथा खुलबाक तैयारी होइत अछि।

अध्याय ४ — मरुधरक भूमि

मिथिलासँ कतेको दशक पहिने राजस्थान गेल रामदेव मण्डल श्रमक कमाइसँ जोधपुरक लग भूमि किनने छथि। एक शैक्षणिक न्यास छात्रावास आ पुस्तकालयक निर्माण लेल विवादित पट्टीपर अधिकार जतबैत अछि। रामदेवक पुरान विक्रयपत्र, कूप, पगरिया आ वर्षाजलक नाली एक नक्शामे जेना देखाइत अछि, दोसरमे ताहिसँ भिन्न। स्थानीय अधिवक्ता सुरेश पारीक न्यायालयसँ निर्माणक कारण अधिकार अपरिवर्तनीय रूपसँ नष्ट नहि हो, से संरक्षण माँगैत छथि; मुदा पहिल सुनबाईमे स्वामित्वक अन्तिम निर्णय नहि होइत।

रामदेवक बेटी कुसुम आ छात्रावासक आवश्यकता बुझनिहार नसीमा बानो परस्पर परिचित होइत छथि। दुनू बुझैत छथि जे विद्यार्थीक निवासक अधिकार आ किसानक भूमिक दावा परस्पर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४ — मरुधरक भूमि

शत्रु नहि बनबाक चाही। न्यासक शरद कोठारी सेहो मूल नक्शा आ स्थलीय सीमांकनक जाँचक पक्ष लैत छथि। कुसुम पुरान जलनिकासक चिह्न खोजैत छथि। अध्याय न्यायिक संयमक संग श्रमसँ अर्जित माटिक मानवीय महत्त्व आ शिक्षाक न्यायपूर्ण आधारकेँ जोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ — जकर घर जरल

सन् २००२क गुजरात हिंसाक बीच अहमदाबादमे सलीम अंसारीक पुस्तक-बन्हबाक दोकान आ घर जरा जाइत अछि। हुनकर बेटी सायरा सहित परिवार विस्थापन, राहत-शिविर, प्रमाणपत्र नष्ट होयब आ भविष्यक असुरक्षासँ जूझैत अछि। पड़ोसिन कान्ताबेन परिवारकेँ सहायता दैत छथि, जकर सामाजिक मूल्य हुनका स्वयं चुकाबय पड़ैत अछि। मरुधरमे नसीमा विद्यार्थी-सहायताक माध्यमसँ सायराक पढ़ाइ बचएबाक प्रयास करैत छथि। रेवती पीड़ितक बात ध्यानसँ सुनैत छथि, मुदा हुनका ओतबे आरोप करबाक परामर्श दैत छथि जतेक ओ प्रत्यक्ष देखि वा सुनि सकलीह।

घटनाक एक सम्भावित साक्षी प्रेमजी मकवाणाक पहिल पुलिस-कथन आ बादक न्यायिक बयानमे दोषी व्यक्तिक पहिचान सम्बन्धी निश्चितता घटि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ५ — जकर घर जरल

जाइत अछि। भय, स्मृतिक कमजोरी आ धमकीक आशंका उपस्थित रहितो ई तय नहि भऽ पबैत जे परिवर्तनक वास्तविक कारण की छल। आगजनीक क्षति आ अपराधीकेँ निश्चित रूपसँ चिन्हबाक क्षमता अलग तथ्य बनैत अछि। अध्यायमे पड़ोसीक सहारा, हिंसाक दीर्घ पीड़ा आ साक्षीक सुरक्षाक आवश्यकता केन्द्रमे अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६ — मौन साक्षीक घर

सन् २००३ मे नीलकान्तक विचारणमे साक्षी, व्यापारीक पुरान मुनीम आ मृत्यु-पञ्जी सम्बन्धी विवरण आगाँ अबैत अछि। व्यावसायिक बहीमे अलग-अलग हाथक लिखावट भेटबाक सम्भावना उठैत अछि; ‘नरेश’ नामक पूर्व मुनीमक खोज नव दिशा दैत अछि। मृत रामकिशुन महतोक नामसँ जुड़ल प्रविष्टिक अर्थ बुझबाक लेल परिवारक स्मृति, लेखा-पञ्जी आ मृत्यु-सूचनाक तुलना आवश्यक होइत अछि। नीलकान्त किछु व्यावसायिक लिखावट अपन मानैत छथि, मुदा मृत ग्राहकक नामवाली नवीन प्रविष्टि लिखबाक बात अस्वीकार करैत छथि।

दीनानाथ, शिवनारायण आ रेवती सभ पक्षक प्रमाणकेँ ओकर सीमा भीतर रखबाक यत्न करैत छथि। अभियोजनक अन्य साक्षी खेलक दाँवसँ धनहानिक शिकायत करैत छथि, किन्तु सभ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ६ — मौन साक्षीक घर

आरोपक प्रत्यक्ष सम्बन्ध नीलकान्तसँ जोड़ि नहि पबैत छथि। जोधपुरक भूमि-विवाद आ गुजरातक साक्षी-सङ्कट समानान्तर चलैत अछि। ‘मौन’ एतय केवल चुप्पी नहि, ओ सत्य अछि जकरा कागजसँ पूरा बजबेबाक लेल विश्वसनीय व्यक्ति आ विधिसम्मत परीक्षण चाही।

अध्याय ७ — समुद्रक प्रलय

छब्बीस दिसम्बर २००४क भूकम्प आ समुद्री प्रलयसँ छोट अण्डमानक शिशिर हलदरक परिवार छिन्न-भिन्न भऽ जाइत अछि। पत्नी सुधा अपन बच्चा अनीश, मौसमी आ वृद्ध सासुक रक्षा करैत छथि, मुदा शिशिर लापता छथि। घर, नाव, जन्मक कागज आ अन्य प्रमाण बहि गेलाक बाद परिवार राहत-शिविरमे अनगिनत प्रश्नक समक्ष पड़ैत अछि। एक सम्भावित नाम ‘शिरीष हलधर’ भेटैत अछि, मुदा ओ शिशिरे छथि, से पुष्टि नहि भऽ पबैत।

शिक्षक रघुपति नायर आ सहयोगीसभ विद्यालयक नकल, खोज-सूची, नावक विवरण आ बचल पारिवारिक अभिलेख सुरक्षित करबामे सहायता करैत छथि। सुधा राहतक लेल प्रतीक्षा करैत-करैत बुझैत छथि जे कागज पुनः बनबेबाक प्रक्रिया स्वयं पीड़ितक गरिमासँ जुड़ल अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ७ — समुद्रक प्रलय

बच्चासभक पढ़ाइ पुनः आरम्भ होइत अछि, मुदा पिताक ठेकाना अनिश्चित रहैत अछि। समुद्रक प्रलय मनुष्यकेँ केवल घरसँ नहि, अपन प्रशासनिक पहिचानसँ सेहो वञ्चित करैत अछि; कथा एक रिक्त नामकेँ खोजक अधिकारक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८ — पहिल निर्णय

दिसम्बर २००४ मे दरभंगाक अदालत नीलकान्त साहक लम्बा विचारणक निर्णय सुनबैत अछि। अभियोजनक बही, साक्षी, कथित सट्टा-प्रविष्टि आ जप्तीमे भेटल विसंगतिक पृथक मूल्याङ्कन होइत अछि। नीलकान्तक स्वीकारल सामान्य लेनदेन, अस्वीकारल लिखावट आ आरोपक विशिष्ट आवश्यक तत्त्वसभ एक-जकाँ नहि ठहरैत। अदालत किछु सीमित आरोपमे दोषसिद्धि करैत अछि आ आन आरोपमे उचित सन्देहक लाभ दैत अछि। एहि कारण परिणामकेँ न सम्पूर्ण दोषमुक्ति कहि सकैत छी, न आरोपसभक पूर्ण पुष्टि।

निर्मला आ अमरेश राहत, पीड़ा आ भविष्यक चिन्ताक मिश्रित अवस्थामे छथि। नीलकान्तक परिवार वर्षोंक वकील-खर्च, सामाजिक बदनामी आ विश्वासक क्षतिसँ गुजरल अछि। दीनानाथ सेहो अपन प्रारम्भिक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ८ — पहिल निर्णय

कागजक त्रुटिपर विचार करैत छथि। रेवती एहि निर्णयसँ सीखैत छथि जे न्यायिक आदेशक सूक्ष्मता आम समाजक ‘जीत’ आ ‘हार’क छोट नामसँ पैघ होइत अछि। अपीलक सम्भावना रहितो पहिल विचारणक एक प्रमुख पड़ाव समाप्त होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

द्वितीय खण्ड — अभिलेख, अधिकार आ उच्च न्यायालय

15 भारत २०२७

अध्याय ९ — सूचनाक पहिल अधिकार

सन् २००५ मे कमलपुरक शिक्षिका शारदा देवी विद्यालयक सहायता-राशि आ विद्यार्थी फुलवाक नामसँ जुड़ल वितरण-पञ्जीमे अनियमितताक आशंका देखैत छथि। फुलवाक माय सरयू अपन अंगूठाक कथित छाप पहचानबाक प्रश्न उठबैत छथि। सूचना-अधिकारक नव प्रक्रियासँ विद्यालय आ प्रखण्डक अभिलेखक नकल माँगल जाइत अछि; मुदा सूचना मँगब, भ्रष्टाचार सिद्ध करब आ अपराधक जाँच करब अलग प्रक्रिया अछि। रेवती शारदाकेँ एहि अन्तरक विधिक अर्थ बुझबैत छथि।

दोसर दिस मृत शिक्षक माधवेश्वर मिश्रक नामपर २००४ मे नियमित उपस्थितिक आधारपर वेतनक प्रविष्टि भेटैत अछि, जखन कि हुनकर मृत्यु २००३ मे भऽ गेल छल। विधवा कलावतीकेँ वैध बकाया भेटल हेबाक सम्भावना सेहो अछि। तेँ शारदा

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ९ — सूचनाक पहिल अधिकार

बिना मूल अभिलेख देखल ककरो अपराधी नहि ठहरबैत छथि। अध्याय देखबैत अछि जे सार्वजनिक सूचनाक पहुँच नागरिककेँ प्रश्न पूछबाक साधन दैत अछि, मुदा उत्तरक सत्यता जाँचबाक जिम्मेवारी तकर बाद आरम्भ होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १० — धनशोधनक नव विधि

कमलपुरक विद्यालयक मृत शिक्षकक वेतन-प्रविष्टि आ फुलवाक भुगतानक अनुसन्धान जारी अछि। एही समय रेवती मुम्बईक बैंकक विधिक अनुपालनकर्मी अभिजीत झासँ परिचित होइत छथि। विदेशी भुगतान, खाता-पहिचान, कागजी नामक अन्तर आ धनशोधन-विरोधी नव विधि सम्बन्धी चर्चा खुलैत अछि। सामान्य अन्तरराज्यीय वा विदेशसँ आएल रकमकेँ अपराधजन्य धन कहि देब उचित नहि; ओकर स्रोत, लेनदेनक क्रम, सम्बन्धित व्यक्तिक भूमिका आ विधिक समयसीमा सभक जाँच करबाक पड़ैत अछि।

मुम्बईक ‘सहगल व्यापार गृह’क व्यावसायिक अभिलेखमे माल पहुँचबाक विवरण आ कम्पनीक कागजक बीच अन्तर देखाइत अछि। सुदर्शन सहगल आ हुनकर नव पीढ़ीक परिजन विक्रान्त कारोबारक भरोसा आ लेखाप्रमाणक

अध्याय १० — धनशोधनक नव विधि

प्रश्नसँ जूझैत छथि। एखन कोनो आपराधिक निष्कर्ष नहि बनैत, मुदा एहि कम्पनीक नाम भविष्यक विस्तृत वित्तीय कथाक सूत्र बनैत अछि। अध्याय धनक प्रवाहक अन्वेषण आ सामान्य व्यापारक उचित सुरक्षाक बीच स्पष्ट रेखा खींचैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११ — मरुधरक दोसर अभिलेख

सन् २००६–२००७ मे रामदेव मण्डलक जोधपुरवला भूमि-विवाद नव अभिलेखीय परीक्षण धरि पहुँचैत अछि। कूप, पगरिया, पुरान नाली आ राजस्व नक्शाक माप आपसमे नहि मिलैत। सर्वेक्षणक साक्षी हरिराम जोशी स्वीकार करैत छथि जे प्रतिवेदनक किछु दूरी स्वयं नापने छथि, मुदा किछु आन निरीक्षणसँ लेने छथि आ स्रोत स्पष्ट नहि लिखने छथि। एहि स्वीकारसँ सभ तथ्य असत्य नहि होइत, मुदा मूल नक्शा आ पृथक स्थलीय नापीक आवश्यकता पुष्ट होइत अछि।

एही समय मरुधर महाविद्यालयमे नसीमा, कुसुम आ अन्य विद्यार्थी छात्रावास, प्रवेशक कागज आ आर्थिक सहायताक व्यवधानक समाधान खोजैत छथि। राकेशकेँ पुनर्विचारक बाद आंशिक सहायता भेटैत अछि, आ लिखित कारण सेहो देल जाइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ११ — मरुधरक दोसर अभिलेख

शिक्षण-संस्थाक विकास आ किसानक अधिकार एक-दोसराक विरोधी नहि बने, एहि बातपर पात्रसभ अडिग छथि। अध्याय याद करबैत अछि जे त्रुटि स्वीकार करब न्यायिक पराजय नहि, अधिक विश्वसनीय नापी आ कारणयुक्त निर्णयक बाट अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२ — चन्द्रयान आ अभियुक्त

सन् २००८क आर्थिक मन्दीक असर लुधियानाक वस्त्र-कारखानामे पड़ैत अछि। रामलखन पासवान आ हुनकर साथीसभकेँ मजदूरीक बकाया, घटैत काज आ घरक खर्चक चिन्ता अछि। रामलखनक बेटी सुनीता वेतनक लिखित हिसाबकेँ परिवारक अधिकारक आधार बनबैत छथि। दोसर दिस बेंगलुरुमे चन्द्रयान अभियानक सफलता वैज्ञानिक मापन, अवलोकनक सीमा आ पुनःपरीक्षणक मूल्यक स्मरण करबैत अछि।

मुम्बईमे एक गोदामक कर्मचारी रमेशपर भण्डारक कागजमे विसंगतिक आरोप लगैत अछि। अनुसन्धानमे पर्ची, खेप आ लिखावटमे अन्तर सोझाँ अबैत अछि, मुदा प्रत्येक गड़बड़ीकेँ अभियुक्तक कपट मानल नहि जा सकैत। अधिवक्ता नलिनी देशपाण्डे आ रेवती उचित गिरफ्तारी, जमानत आ अभिलेख-संरक्षणपर जोर दैत छथि। ओही

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १२ — चन्द्रयान आ अभियुक्त

समय मुम्बईपर आतङ्की आक्रमणक राष्ट्रव्यापी दुःखक बीच व्यापारिक मुकदमाकेँ सनसनीसँ पृथक रखल जाइत अछि। अध्यायक अन्तमे सुनीताक हस्ताक्षरित मजदूरी-सूची नव संघर्षक आरम्भ करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १३ — श्रमिकक बकाया

सन् २००९–२०१० मे रामलखन पासवान, चम्पा देवी आ अन्य श्रमिक लुधियानाक कारखानामे रोकी राखल मजदूरी तथा उपस्थिति-पञ्जीक अन्तरक विरोध करैत छथि। सुनीता श्रमिकसभक कथन सुनि वास्तविक कार्य-दिन, वेतन-पर्ची आ ठेकेदारक सूची अलग-अलग मिलबैत छथि। चम्पाक नामक सोझाँ देखाओल अंगूठाक छाप विवादित होइत अछि। कम्पनीक कर्मचारी हरजीत स्वीकार करैत छथि जे ओ वेतन-पर्ची बनबैत छथि, मुदा प्रत्येक श्रमिकक उपस्थितिक प्रत्यक्ष साक्षी नहि छथि।

मजदूरी-प्राधिकारी साक्ष्यपर आधारित किछु बकाया देबाक निर्देश दैत छथि। रामलखन आ चम्पाक किछु दावा स्वीकार होइत अछि, किछु विवादित रहि जाइत अछि। एहि आंशिक परिणामकेँ सर्वसम्पूर्ण विजय नहि कहि सकैत। हरजीतक

अध्याय १३ — श्रमिकक बकाया

सुरक्षित फाइलमे एक अनुत्तरित नाम आगाँक कथाक सूत्र बनैत अछि। अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे मजदूरक श्रमक मूल्य कम्पनीक आन्तरिक हिसाब मात्र नहि, सत्यापित काज आ विधिसम्मत देनदारीसँ तय होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १४ — जनान्दोलनक मंच

सन् २०१०क राष्ट्रमण्डल खेल आ २०११क भ्रष्टाचार-विरोधी जनान्दोलनक पृष्ठभूमिमे सार्वजनिक धनक हिसाब, रसीदक सत्यता आ जनमञ्चक जवाबदेहीक प्रश्न उठैत अछि। रेवती आ शिवनारायण मानैत छथि जे राष्ट्रिय उपलब्धिक प्रशंसा आ सरकारी व्ययक जाँच एक संग सम्भव अछि। सोनपुराक सार्वजनिक पुस्तकालयक सामग्री, खरीद-पत्र आ कथित बिलायल पुस्तकसभक सम्बन्धमे परीक्षण होइत अछि; किछु पुस्तक आन विद्यालयमे भेटैत अछि, मुदा स्थानान्तरणक विधिवत् कागज अधूरा अछि।

आन्दोलनसँ जुड़ल कैलाशक पर्चा आ आर्थिक पञ्जीमे दोहरायल रसीदक प्रश्न उठैत अछि। केवल तेज नारा वा आक्रोश सत्यापित लेखाक स्थान नहि लऽ सकैत। लुधियानामे सुनीता श्रमिकसभकेँ स्मरण करबैत छथि जे

अध्याय १४ — जनान्दोलनक मंच

दिल्लीक विशाल सभाक संगहि स्थानीय मजदूरी-पञ्जी देखब आवश्यक अछि। एहि अध्यायक भाव ई अछि जे सार्वजनिक नैतिकताक विश्वसनीयता भीड़क आकारसँ नहि, अपन लेखा प्रस्तुत करबाक तत्परतासँ बनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १५ — साक्षी बनल स्त्री

सन् २०१२क दिल्लीमे माधवीक संग भेल कथित हिंसा आ ओकर सत्र-न्यायालयीन विचारण कथाक केन्द्रमे अछि। माधवीक शिक्षा, भय, सम्मान आ गवाही देबाक साहसक बीच कठिन संघर्ष चलैत अछि। न्यायालयमे सुरक्षा-कर्मी नियामुद्दीन अपन प्रत्यक्ष पहराक सीमा स्पष्ट करैत छथि; पछिला दुआरिपर की भेल, से ओ नहि जनैत छथि। एक अन्य सम्भावित साक्षी पूनम साहनीक ठेकाक नौकरी आ अधूरा ठेगाना ओकरा खोजब कठिन बनबैत अछि। आवश्यक गवाही सोझाँ अनबाक प्रयासक संग प्रतिपक्षकेँ उचित प्रति-परीक्षणक अवसर देबाक आवश्यकता सेहो उठैत अछि।

रेवती पीड़िताक बोलबाक सुरक्षा आ अभियुक्तक न्यायपूर्ण प्रतिरक्षाक बीच भेद नहि मेटबैत छथि। माधवी अपन पढ़ाइ जारी रखबाक निर्णय करैत

अध्याय १५ — साक्षी बनल स्त्री

छथि, जाहिसँ अन्याय ओकर भविष्यक प्रत्येक अवसर नहि छीनि लेअय। शिवनारायणक स्वास्थ्य धीरे-धीरे कमजोर होइत अछि, मुदा रेवती हुनकर प्रक्रियागत ईमानदारीक पाठ अपन काजमे आगाँ बढ़बैत छथि। अध्याय स्त्रीक गवाहीकेँ केवल कानूनी वक्तव्य नहि, अपन जीवनपर फेर अधिकार स्थापित करबाक कठिन प्रयासक रूपमे देखैत अछि।

अध्याय १६ — उच्च न्यायालयक प्रश्न

दिसम्बर २०१२सँ जनवरी २०१३ धरि जोधपुरक पुरान भूमि-विवाद राजस्थान उच्च न्यायालयमे नव प्रश्नसँ उपस्थित होइत अछि। रामदेवक दावा केवल स्वामित्वक नहि; कूप, पगरिया आ पानीक नालीसँ जुड़ल अधिकारक प्रकृति अलग-अलग ठहरैत अछि। रेवती, सुरेश पारीक आ प्रतिपक्षक अधिवक्ता भण्डारी मूल राजस्व नक्शा, पूर्व निरीक्षण आ नापीक प्रमाणक सीमा पर बहस करैत छथि। अदालत विवादक छूटल पक्ष स्पष्ट करबाक दिशा दैत अछि; एखन पूर्ण स्वामित्व-विजयक घोषणा उचित नहि।

कुसुम आ नसीमा चाहैत छथि जे छात्रावासक विकास प्रभावित किसानक अधिकार कुचलि नहि देअय। समझौताक सम्भावना सेहो उठैत अछि, मुदा कोनो प्रस्ताव अधिकार स्वतः स्वीकारल वा समाप्त कएल गेल मानि नहि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १६ — उच्च न्यायालयक प्रश्न

लेब। रेवती एहि सुनबाईमे सीखैत छथि जे न्यायिक बहसक सफलता प्रतिपक्षकेँ हर क्षण पराजित देखेबामे नहि, वास्तविक विवादक सही सीमांकनमे होइत अछि। पुरान अभिलेख आ जीवित भूमि एक-दोसरासँ मेल खोजनाइ एखन शेष अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

तृतीय खण्ड — डिजिटल धन आ बदलैत देश

15 भारत २०२७

अध्याय १७ — खेलक भीतरक सौदा

सन् २०१३ मे क्रिकेटक कथित स्पॉट-फिक्सिंगसँ देशमे खेल, दाँव आ अपराधक सम्बन्धपर बहस उठैत अछि। नवीन राणा अपन खेलक एक कमजोर प्रदर्शनकेँ जानबूझि कएल कदाचार मानल जाएबाक विरोध करैत छथि। दोसर प्रकरणमे राघव मिश्रसँ जुड़ल भुगतान, बाहरी आयोजक आ इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख न्यायालयमे अबैत अछि। राघवकेँ शर्तसहित जमानत भेटैत अछि, मुदा ई दोषमुक्ति नहि। रेवती आ अरुणिमा खेलक नियमभङ्ग, कथित अनुचित धन-लाभ आ दण्डनीय अपराधक बीच आवश्यक भेद स्पष्ट करैत छथि।

पत्रकार नूर जतय अपन चित्र आ टिप्पणीक गलत सन्दर्भमे प्रयोग पर सुधार माँगैत छथि। आयोजकक बिल, सेवाक वास्तविकता, इलेक्ट्रॉनिक सन्देशक स्रोत आ रकमक अन्तिम लाभार्थीक प्रश्न एखन

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १७ — खेलक भीतरक सौदा

अनुत्तरित अछि। एही प्रसंगमे दीपेन्द्र भाटियाक सम्भावित जानकारीक संकेत भेटैत अछि। दरभंगाक पुरान सट्टाबहीसँ डिजिटल भुगतान धरि पहुँचल कथा देखबैत अछि जे तकनीक बदललासँ प्रमाणक मौलिक कसौटी समाप्त नहि होइत।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८ — मंगलक बाट आ पहचानक अधिकार

सन् २०१४ मे मंगलयानक यात्रा वैज्ञानिक अनुशासन आ भारतक आकांक्षाक प्रतीक बनैत अछि। निरंजन झा आ हुनकर परिवार वैज्ञानिक परिणामक व्याख्यामे मापनक सीमा स्वीकार करबाक महत्त्व रेखांकित करैत छथि। समानान्तर रूपसँ मरुधरक छात्रा मनस्वीक शैक्षणिक अभिलेखमे नाम आ लैङ्गिक पहिचानक प्रश्न उठैत अछि। मनस्वी अपन वास्तविक परिचयक सम्मान चाहैत छथि, जखन कि विश्वविद्यालय पुरान प्रविष्टि बदलबाक नियमपर चिन्तित अछि। माय बिनेसरी धीरे-धीरे पुत्रीक चुन्नल नामक सम्मान करब सीखैत छथि।

रेवती आ सहकर्मी सभ मानवीय गरिमा, निजी जीवनक रक्षा आ संस्थागत अभिलेख-सुधारक उचित प्रक्रियाक बीच सन्तुलन खोजैत छथि। मनस्वी अपन जीवनक सभ निजी प्रसंग

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय १८ — मंगलक बाट आ पहचानक अधिकार

समाचारमे देबाक बाध्यता अस्वीकार करैत छथि। क्रिकेटसँ जुड़ल पहिनुक प्रकरणक अपूर्ण प्रश्न सेहो जारी अछि। अध्याय दूर ग्रहक मापन आ निकट मनुष्यक पहचान समझबाक बीच नैतिक समानता देखैत अछि—दुनू लेल सावधान अवलोकन, सटीक भाषा आ अज्ञातकेँ स्वीकार करबाक साहस चाही।

अध्याय १९ — स्क्रीनपर लिखल वाक्य

सन् २०१५ मे मरुधर महाविद्यालयक पुस्तकालय बन्द रहबाक विषयमे छात्र विवेक मेघवाल सामाजिक माध्यमपर प्रश्न उठबैत छथि। ओकर लिखल वाक्यक कटल अथवा बदलल चित्र घुमाओल जाइत अछि, जकरा आधारपर अनुशासनात्मक सन्देह आ सार्वजनिक आरोप बढ़ैत अछि। मनस्वी, नसीमा आ रेवती मूल सन्दर्भ, चित्रक निर्माणक क्रम, सुनबाईक अवसर आ संस्थाक उत्तरदायित्वक प्रश्न उठबैत छथि। अनाम धमकीक स्रोत आ विवेकक वास्तविक कथन अलग मुद्दा रहैत अछि।

पुस्तकालयक मरम्मति, खर्चक पारदर्शिता आ छात्रक अभिव्यक्तिक अधिकारक प्रश्नपर संस्थामे सुधारक प्रयास होइत अछि। शशांक आ कनक अपन गलत अथवा अधूरा प्रस्तुति स्वीकार करैत छथि। छात्रसभ स्रोत, सन्दर्भ, निजी गरिमा आ

अध्याय १९ — स्क्रीनपर लिखल वाक्य

असहमतिपर चर्चा करैत साझा आचार बनबैत छथि। एक कटल वाक्यक विवाद अन्ततः नागरिककेँ अपन पूरा कथन कहबाक अधिकारक प्रतीक बनैत अछि। अध्याय भविष्यक डिजिटल विद्यार्थी-अभिलेखक सम्भावित जोखिमक संकेत सेहो छोड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २० — नगदीक अन्तिम रात्रि

नवम्बर २०१६क नोटबन्दीक पृष्ठभूमिमे लुधियानाक कारखाना, बैंक आ श्रमिकक जीवनमे गम्भीर व्यवधान होइत अछि। नकद वेतन लेनिहार मजदूरसभक देनदारी अटकि जाइत अछि; मालिक धर्मपाल खुराना आर्थिक सङ्कट बतबैत छथि, मुदा श्रमिकक वैध मजदूरी देबाक दायित्व समाप्त नहि होइत। सुनीता रामलखन, चम्पा आ अन्य श्रमिकक व्यक्तिगत बकाया अलग-अलग दर्ज करैत छथि। श्रम-प्राधिकारी कम्पनीसँ स्पष्ट भुगतान-क्रम आ व्यक्तिगत देनदारीक हिसाब माँगैत छथि।

बैंकमे पुरान मुद्रा बदलनिहार सामान्य ग्राहक आ जाँच योग्य असामान्य लेनदेनक भेद आवश्यक अछि। बैंकक कर्मचारी सरबजीत तिथि आ रसीदक सावधानीपूर्वक अभिलेख सुरक्षित रखैत छथि, जकर भविष्यमे महत्त्व होयबाक संकेत

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २० — नगदीक अन्तिम रात्रि

अछि। नीति सफल कि असफल—एहि व्यापक प्रश्नक निष्कर्षसँ अलग, अध्याय रोजक जीविकापर एक आकस्मिक निर्णयक प्रत्यक्ष प्रभाव देखैत अछि। रुपैयाक अङ्क आ भोजन, औषधि तथा मजदूरीमे ओकर वास्तविक मूल्य अलग अनुभव होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २१ — निजताक नाम

सन् २०१७ मे वस्तु आ सेवा करक नव व्यवस्थाक संग मरुधर विश्वविद्यालयमे विद्यार्थीसभक डिजिटल परिचय-पञ्जी लागू होइत अछि। विवेकक छात्रवृत्ति, मनस्वीक सुधरल व्यक्तिगत विवरण आ पुरान अनुशासनात्मक टिप्पणी नव प्रणालीमे गलत रूपसँ मिलि जएबाक आशंका उठैत अछि। छात्रक नाम, बैंक-सङ्केत आ निजी जानकारी संचित करब सुविधाजनक अछि, मुदा बिना आवश्यकता अनधिकृत पहुँच दैब गरिमाक उल्लङ्घन बनि सकैत अछि। नसीमा आ सायरा सुरक्षित अभिलेख आ ओकर सीमित उपयोग—दुनूक महत्त्व बुझबैत छथि।

रेवती, कुसुम आ विश्वविद्यालयक अधिकारीसभ पुरान आ नव पञ्जी, त्रुटि-सुधारक आदेश आ बाहरी सेवा-दाताक अनुबन्ध देखैत छथि। एक कर्मचारीक अनजानेमे कएल गलतीक संग

अध्याय २१ — निजताक नाम

संस्थागत अस्पष्ट निर्देश सेहो सोझाँ अबैत अछि। भूमि-अभिलेखक नवीकरण सेहो चलैत अछि, मुदा नव मशीन स्वयं स्वामित्वक निर्णय नहि दऽ सकैत। अध्याय कहैत अछि जे डिजिटल साधन स्मृति रखि सकैत अछि, मुदा नामक पाछाँक व्यक्तिक अधिकार, सहमति आ जाँचक दायित्व मनुष्यक संस्थापर रहैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २२ — गरिमाक अनेक अर्थ

सन् २०१८ मे मरुधर विश्वविद्यालयक पुस्तकालयकर्मी सौरभ झाक निश्चित-अवधिक नियुक्तिक नवीकरणपर प्रश्न उठैत अछि। हुनकर निजी सम्बन्धसँ जुड़ल चित्र सार्वजनिक भेला पछाति नियुक्तिक निर्णयमे पूर्वाग्रहक आशंका देखाइत अछि। सौरभ आ अक्षय चाहैत छथि जे निजी जीवनक सम्पूर्ण कथा सार्वजनिक कएल बिना सेवा-सम्बन्धी निर्णयक निष्पक्ष परीक्षण हो। रेवती याचिकामे स्थायी पदक स्वतः अधिकार नहि माँगैत छथि; ओ प्रासंगिक अभिलेखक संरक्षण, कारणयुक्त निर्णय आ उचित पुनर्विचारक आग्रह करैत छथि।

एहि वर्ष सर्वोच्च न्यायालयक लैङ्गिक स्वाधीनता आ समान गरिमासँ सम्बन्धित संवैधानिक निर्णयक सामाजिक अर्थपर पात्रसभ विचार करैत छथि। ओकर प्रभाव सौरभक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २२ — गरिमाक अनेक अर्थ

नौकरीक विशेष विवादपर स्वतः अन्तिम निर्णय नहि दैत, मुदा भयक वातावरण बदलैत अछि। साहित्यकार अनुपमा झा तथा अन्य पात्र निजी गरिमाक बहुविध रूपपर चर्चा करैत छथि। केरलक बाढ़िक राहतक सन्दर्भमे सेहो नाम आ अभिलेखक आवश्यकता तथा पीड़ितक सम्मानक प्रश्न उठैत अछि। अध्याय देखबैत अछि जे न्याय केवल नियमक समान अनुप्रयोग नहि, व्यक्तिक पूर्ण मनुष्यता मानब सेहो अछि।

अध्याय २३ — चन्द्रमाक अन्हार, घाटीक सवाल

सन् २०१९ मे कश्मीरक राजनीतिक-प्रशासनिक परिवर्तन, संचार-सङ्कट आ नागरिकता सम्बन्धी राष्ट्रिय बहसक बीच फिरदौसक भगिनी रूहानीक प्रवेश-प्रक्रिया अटकि जाइत अछि। सम्पर्कमे बाधा, आवेदनक समय-सीमा आ विश्वविद्यालयक विवेकाधिकारक प्रश्न उच्च न्यायालय धरि पहुँचैत अछि। रेवती अन्य विद्यार्थीक वैध प्रवेश बाधित कएने बिना रूहानीक असाधारण परिस्थितिक उचित विचार माँगैत छथि। विश्वविद्यालयक नियमक समानता आ प्रभावित छात्राक वास्तविक कठिनाइक बीच सन्तुलन आवश्यक देखाइत अछि।

दोसर दिस चन्द्रयान–२ क अवतरण-प्रयासमे अन्तिम चरणपर सम्पर्क टूटि जाइत अछि। निरंजन, मैत्रेयी आ अवनि वैज्ञानिक अभियानक उपलब्धि आ विशिष्ट असफलताकेँ अलग रखैत छथि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २३ — चन्द्रमाक अन्हार, घाटीक सवाल

देशमे नागरिकता संशोधनक पक्ष-विपक्षक बहसमे पात्रसभ मूल विधिक पाठ, प्रावधानक लागू समय आ वैधानिक चुनौतीक अलग अवस्थापर जोर दैत छथि। रूहानीक प्रश्न आ चन्द्रयानक यात्रा दुनू एहि पाठमे मिलैत अछि—जे स्पष्ट नहि देखल गेल, तकरा तुरन्त अन्तिम निष्कर्ष नहि कहब।

अध्याय २४ — बन्द न्यायालय, खुलल पीड़ा

सन् २०२०क महामारी आ बन्दीक कारण लुधियानाक मजदूरक जीविका, किरायेदारक आवास, विद्यार्थीक पढ़ाइ आ न्यायालयक नियमित सुनबाई सभ प्रभावित होइत अछि। सुनीता श्रमिकसभक वेतन, यात्रा आ आवश्यक सुविधाक प्रश्न उठबैत छथि। किरायेदार शान्तिक विरुद्ध दबावक प्रकरणमे पानीक उपलब्धता, धमकीसँ रक्षा आ प्रशासनक कारणयुक्त उत्तरक सीमित राहत न्यायालयसँ भेटैत अछि; अन्तिम भाड़ा-विवाद अनिर्णीत रहैत अछि। घटनाक दृश्य सुरक्षित करैत सुनीता प्रभावित महिलाक चेहरा अनावश्यक रूपसँ सार्वजनिक नहि करैत छथि।

मरुधरमे दूरस्थ शिक्षा शुरू होइत अछि, मुदा उपकरण आ इन्टरनेट धरि सभक पहुँच समान नहि। रूहानीक प्रयोगात्मक अध्ययन बाधित होइत अछि; मनस्वी

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २४ — बन्द न्यायालय, खुलल पीड़ा

संस्थासँ व्यक्तिगत आवश्यकताक यथार्थ आकलन माँगैत छथि। अण्डमानक परिवारसभक पहिल प्रलयक स्मृति नव सङ्कटमे घुरि अबैत अछि। अदालतक डिजिटल माध्यम खुलला बादो प्रत्येक नागरिकक पहुँच स्वतः सुनिश्चित नहि होइत। अध्याय देखबैत अछि जे महामारीक समय विधिक प्रक्रिया बचाएबक संग जीवित मनुष्यक भोजन, रोगोपचार, निवास आ निजताक रक्षा समान रूपसँ जरूरी अछि।

SECTION / खण्ड

चतुर्थ खण्ड — राज्य, नागरिक आ नव विधि

15 भारत २०२७

अध्याय २५ — साँसक मूल्य

सन् २०२१क भीषण महामारीमे लुधियानाक अशोक मिस्त्रीक उपचार आ मृत्यु हुनकर पत्नी माया आ बेटी रागिनीक जीवन बदलि दैत अछि। माया अस्पतालक अन्तिम उपचार-क्रम, ऑक्सीजनक व्यवस्था आ अभिलेखक भिन्न तिथिक सटीक जानकारी चाहैत छथि। ओ बिना प्रमाण सभ चिकित्साकर्मीकेँ दोषी ठहराबय मना करैत छथि। सुनीता आ अधिवक्ता हरमीत सिंह हुनका चिकित्सा-सेवाक कथित कमी, अभिलेख उपलब्ध करएबाक अधिकार आ उपयुक्त उपभोक्ता-मञ्चक अलग उपाय बुझबैत छथि।

चिकित्सक आरती, कर्मचारी गुरप्रीत आ अभिलेख-प्रभारी वीणा स्वतंत्र समीक्षा तथा मूल उपचार-पत्र सुरक्षित रखबाक पक्ष लैत छथि। अस्पतालक असाधारण कार्यभारक तथ्य सेहो जाँचमे महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा एही नामपर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २५ — साँसक मूल्य

परिवारक उचित प्रश्न अनसुना नहि कएल जा सकैत। धनक सम्भावित क्षतिपूर्ति आ बीतल अन्तिम समयक सत्य अलग वस्तु अछि। अध्याय रोगीक प्रत्येक साँसक पाछाँ मनुष्यक पूरा जीवन देखैत अछि आ पारदर्शी चिकित्सा-अभिलेखकेँ शोकाकुल परिवारक सम्मानसँ जोड़ैत अछि।

अध्याय २६ — खेतक नामपर आवाज

सन् २०२१क किसान आन्दोलनक बीच हरनामपुरक जसप्रीत कौरक परिवार खेती, ऋण, उपजक दाम आ भूमिक वास्तविक श्रमक प्रश्नपर विचार करैत अछि। जसप्रीत खेतीक अधिकांश काज करैत छथि, मुदा जमीनक औपचारिक स्वामित्वमे हुनकर नाम नहि अछि। मंजू किसान-सभाक मंचसँ खेतिहर मजदूर, बटाइदार आ स्त्रीसभक श्रमक पहचान माँगैत छथि। सभाक प्रबन्धमे बाट, एम्बुलेंसक आवागमन, दानक रसीद आ वास्तविक व्ययक बहीपर विशेष ध्यान देल जाइत अछि। रिक्शाचालक अकरमक स्थलीय सुझावसँ मार्ग-व्यवस्था बदलल जाइत अछि।

गुरनाम अपन खेतमे काज करनिहार मजदूरक वेतन लिखित रूपसँ दर्ज करबाक आवश्यकता बुझैत छथि। आन्दोलनमे सहायता लेल आएल एक पैघ धन-प्रस्तावक सन्दिग्ध शर्तकेँ अस्वीकार

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २६ — खेतक नामपर आवाज

कएल जाइत अछि; पैसाक बदला असत्य घटना स्वीकार करब उचित नहि मानल जाइत। आन्दोलनक एक चरण समाप्त भेलापर सभ परिवारक अनुभव एक समान नहि रहैत—किछुक उल्लास, किछुक शोक शेष अछि। अध्याय किसानक आवाजकेँ केवल नारा नहि, जिम्मेदार अभिलेख, बहुविध श्रम आ सत्यक अनुशासन बनबैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ — अपराध आ जमानतक कसौटी

सन् २०२२ मे रोजगार-प्रशिक्षणक नामपर कथित आर्थिक छलकपट आ ताहिसँ सम्भावित धनशोधनक विशेष न्यायालयीन प्रश्न उठैत अछि। पीड़िता यशोदा मल्होत्रा अपन परिवारक डूबल बचतक रसीद लऽ उपस्थित छथि। प्रमोद खन्ना आ फैजान अलीक भूमिका, बैंकक अलग भुगतान-शृंखला आ डिजिटल स्वीकृति-सन्देशक वास्तविक लेखकक प्रश्न न्यायालयक परीक्षणमे अछि। वित्तीय सारणीक एकहि धन-राशि दोबारा गनल जाएबाक सम्भावना हटाकय जाँच करब जरूरी बनैत अछि। प्रशिक्षिका रीमा नागपाल स्पष्ट करैत छथि जे संस्थामे किछु वास्तविक कक्षा भेल छल; सभ प्रशिक्षणकेँ काल्पनिक कहब हुनकर प्रत्यक्ष अनुभवक विरुद्ध होएत।

विशेष विधिक कठोर जमानत-शर्तक अन्तर्गत प्रत्येक अभियुक्तक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २७ — अपराध आ जमानतक कसौटी

जानकारी, नियन्त्रण, कथित लाभ, साक्षीपर प्रभाव आ उपलब्ध साक्ष्य अलग देखल जाइत अछि। प्रमोदक जमानत अस्वीकृत होइत अछि, फैजानक आवेदनपर अन्तिम आदेश एखन शेष अछि। अभियुक्तक परिवार आ पीड़ितक दुःख एक-दोसराकेँ मिटबैत नहि। अध्याय दण्ड-विधिक कठोरता आ व्यक्ति-विशेषक न्यायपूर्ण मूल्याङ्कनक अनिवार्यताकेँ समक्ष रखैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय २८ — चन्द्रयानक उजास

सन् २०२३ मे चन्द्रयान–३ क प्रक्षेपण आ सफल अवतरणक प्रतीक्षामे अवनि अपन पुरान वैज्ञानिक कापी फेर खोलैत छथि। सन् २००८ आ २०१९क अनुभवसँ ओ सीखने छथि जे असफल प्रयोगक कारण लिपिबद्ध करब अगिला उपलब्धिक आधार अछि। मरुधरमे चन्दनाक विज्ञान-परियोजनाक आर्थिक अभिलेखमे त्रुटिक आरोप उठैत अछि। व्यक्तिगत प्रतिकूल निर्णयसँ पहिने सम्बन्धित कागज देखबाक अवसर आ कारणयुक्त सुनबाईक माँग उच्च न्यायालयमे राखल जाइत अछि; वैज्ञानिक प्रयोगक सफलता-असफलताकेँ वित्तीय कपटक प्रमाण नहि मानल जाइत।

कुसुम, नसीमा, ताराबाई आ अवनि मिलि ग्रामीण विद्यार्थीक लेल प्रयोग-आधारित विज्ञान-कार्यशाला बढ़बैत छथि, जाहिमे बालिका आ हुनकर मायसभक भागीदारी बढ़ैत

अध्याय २८ — चन्द्रयानक उजास

अछि। चन्द्रयानक सफलता उत्सव बनैत अछि, मुदा एक परीक्षा-सामग्रीक सम्भावित अनियमितताक प्रश्न सेहो अवनिक ध्यान आकर्षित करैत अछि। ओ केवल चित्र आ अटकलबाजीक आधारपर दोष घोषित नहि करैत छथि; लिखित सत्यापन माँगैत छथि। अध्याय विज्ञानक उजासकेँ मानवीय संस्थाक निष्पक्षताक कसौटीसँ जोड़ैत अछि।

अध्याय २९ — चुनावी धनक अभिलेख

सन् २०२४ मे चुनावी चन्दा सम्बन्धी न्यायिक घटनाक पृष्ठभूमिमे पत्रकार नूर जतय राजनीतिक धनक स्रोत आ सार्वजनिक अभिलेखक अर्थ खोजैत छथि। जोधपुरक ‘दीपरेखा’ कार्यक्रमक प्रचार, मुद्रण, आयोजन आ सरकारी सहायतासँ जुड़ल कागज अलग-अलग प्रश्न उठबैत अछि। रिद्धि सूचना-अधिकारक माध्यमसँ स्वीकृत रकम, उपयोगिता-प्रमाण आ अपूर्ण उत्तरक कारण माँगैत छथि। उपलब्ध कागजक आधारपर जतेक बात स्पष्ट अछि ओतबे लिखल जाइत अछि; अधूरा उत्तरकेँ स्वतः जानबूझि कएल गुप्तता वा अपराध नहि मानल जाइत।

नूर मूल चालान, मुद्रित सामग्री आ वास्तविक वितरणक बीच अन्तर करैत छथि। एक फोटो कतेको प्रचार-पत्रमे दिखलासँ कतेको वास्तविक कार्यक्रम भेल कि नहि, से सिद्ध नहि

अध्याय २९ — चुनावी धनक अभिलेख

होइत। लुधियानामे सुनीता चन्दाक सार्वजनिक बहसकेँ मजदूरक वास्तविक बकाया आ संगठनक हिसाबसँ जोड़ैत छथि। अध्यायक समानान्तर अन्तमे अवनिक परीक्षा-प्रश्नक स्रोत-विवाद फेर सोझाँ अबैत अछि। धनक मूल स्रोत आ प्रश्नपत्रक मूल स्रोत—दूनू लेल अभिलेखीय प्रमाण चाही।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३० — परीक्षाक प्रश्न के चोरौलक?

सन् २०२४क राष्ट्रिय चिकित्सा-प्रवेश परीक्षाक बीच गीता आ ताराबाई अपन परिवारक संसाधनक असमानता संग प्रतियोगितामे उतरैत छथि। परीक्षा-प्रश्न लीक होयबाक समाचार आ परिणामक अनिश्चितता हुनकर परिश्रमपर छाया दैत अछि। ताराबाई एक निजी प्रशिक्षण-केन्द्र ‘सन्धिपथ’केँ अड़तालीस हजार रुपैया देने छथि, मुदा विज्ञापनमे वचन देल अठारह सत्रक स्थानपर बहुत कम शिक्षण भेटैत अछि। रेवती निजी सेवामे कथित छलकपट आ राष्ट्रिय प्रश्नपत्र-लीकक आरोपकेँ अलग राखि ताराबाईक बैंक-पावती, विज्ञापन आ सेवा-विवरणपर आधारित आवेदन तैयार करैत छथि।

संस्थानक प्रतिनिधि आंशिक सेवा देनेक दावा करैत छथि, मुदा सम्पूर्ण रकम-वापसी आ मूल समयपत्रक प्रश्न अनिर्णीत

अध्याय ३० — परीक्षाक प्रश्न के चोरौलक?

अछि। राष्ट्रिय परीक्षाक विवादमे सेहो प्रत्येक छात्रकेँ सामूहिक अपराधक दोषी नहि मानल जाइत। गीता आ ताराबाई पढ़ाइ जारी रखैत छथि; ताराबाईक मायक आँखिक उपचारक आर्थिक चिन्ता सेहो अछि। अध्याय परीक्षाक शुचिता, विद्यार्थी-उपभोक्ताक अधिकार आ प्रमाणविहीन सनसनीसँ बचबाक आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३१ — नव संहिता, पुरान अभियोग

एक जुलाई २०२४ सँ नव भारतीय आपराधिक विधिसभ लागू होइत अछि। दिल्लीक न्यायालयमे पुरान दण्ड-प्रक्रिया, साक्ष्य-विधि आ नव संहिताक पुस्तक एक संग राखल अछि। रेवती स्पष्ट करैत छथि जे विधिक नाम बदललासँ पहिने घटल कथित अपराध, चलि रहल अनुसन्धान आ लम्बित मुकदमाक सभ प्रक्रिया स्वतः नव स्वरूप नहि लऽ लैत अछि। सन्धिपथक शिकायत, राघवक पुरान विचारण आ अन्य प्रकरणमे घटनाक तिथि, प्रारम्भिक जाँच आ बचत-प्रावधान अलग-अलग पढ़ब आवश्यक अछि।

एहि समय अदालतक नामपर बनल नकली डिजिटल सन्देशसँ सफाईकर्मिणी पार्वतीक परिवार ठगल जाएबाक प्रश्न उठैत अछि। नकली लिंकक लेखन आ अदालतक वास्तविक आदेशक भेद जनब नागरिकक सुरक्षा लेल अनिवार्य अछि। पत्रकार नूर

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३१ — नव संहिता, पुरान अभियोग

बिना ठोस प्रमाण न्यायालयक डाटा-चोरीक सनसनीपूर्ण आरोप नहि छापैत छथि। सुनीता, रिद्धि आ मनस्वीक कथासभ सेहो डिजिटल अभिलेखक नव जोखिम खोलैत अछि। अध्याय कहैत अछि जे नव कानूनक वास्तविक मूल्य सही प्रशिक्षण, स्पष्ट अधिकारक्षेत्र आ प्रत्येक व्यक्तिक उचित सुनबाईमे अछि।

अध्याय ३२ — विश्वविद्यालयक बन्द कोठरी

सन् २०२४क समानान्तर घटनाक्रममे मरुधर विश्वविद्यालयक परामर्श-कक्ष बहुत दिन बन्द रहैत अछि। पायल रैगर सहित विद्यार्थी तनाव, परीक्षा, रोजगारक अनिश्चितता आ सुनबैयाक अभावसँ जूझैत छथि। हिम्मत आ अन्य छात्र उचित परामर्श-सेवा माँगैत छथि, मुदा एक विरोध-कार्यक्रमक समय बाधित बाट आ अनुशासनक प्रश्न सेहो उठैत अछि। रेवती छात्रसभकेँ प्रत्यक्ष घटना, संस्थागत त्रुटि आ व्यक्तिगत आरोप अलग-अलग लिखबाक शिक्षा दैत छथि। कारणयुक्त पुनर्विचारक बाद पुस्तकालयक रात्रिक प्रवेशपर लगाओल अन्तरिम रोक हटैत अछि।

बाहरी रोजगार-सहायता सेवामे विद्यार्थी-सहमति, डाटाक उपयोग आ शुल्कक प्रश्न रिद्धि जाँचैत छथि। कार्यालयमे वास्तविक प्रशिक्षण-काज भेल

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३२ — विश्वविद्यालयक बन्द कोठरी

अछि, मुदा एहि तथ्यसँ प्रत्येक भुगतान वा व्यक्तिगत सूचनाक उपयोग उचित सिद्ध नहि होइत। मुकुलसँ जुड़ल सम्भावित ठगी, विश्वविद्यालयक निजता-व्यवस्था आ विद्यार्थी-परामर्शक उपलब्धता तीन अलग विषय अछि। अध्यायक अन्तमे पायल, आलिया आ चन्दना बतबैत छथि जे समान अङ्कक पाछाँ सभ विद्यार्थीक सामाजिक साधन समान नहि होइत; उचित परीक्षा आ मानवीय सहायता दुनूक आवश्यकता अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

पञ्चम खण्ड — सत्ताइस वर्षक हिसाब

15 भारत २०२७

अध्याय ३३ — जुआक नव कानून

सन् २०२५ मे ऑनलाइन धनवाला खेल आ डिजिटल दाँवपर नव विधिक नियन्त्रणक चर्चा अछि। दरभंगामे वृद्ध नीलकान्त साह अपन सन् २०००क जप्त बही फेर देखैत छथि। हुनकर बेटा अमरेशक मोबाइलक सिक्का-सङ्केत आ रामौतार नटक परिवारक आर्थिक कठिनाइ पुरान सट्टाक स्मृतिकेँ नव रूपमे लौटबैत अछि। खेलमे कौशल, ग्राहकक जोखिम, प्रतिबन्धक प्रयोजन आ व्यावसायिक स्वतन्त्रताक सम्बन्ध जटिल अछि; रेवती कोनो विधानकेँ बिना न्यायिक परीक्षण स्वतः असंवैधानिक वा निर्दोष नहि कहैत छथि।

मरुधर विश्वविद्यालयक रोजगार-कार्यक्रममे बाहरी शुल्क-सन्देश आ विद्यार्थी-जानकारीक प्रयोगक प्रश्न गहराइत अछि। रिद्धि बीस प्रविष्टिक बैंक-स्थिति जाँचैत छथि—किछु लेनदेन पुष्टि

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३३ — जुआक नव कानून

भेल, किछु समायोजित वा निरस्त, आ एक प्रविष्टि अनिर्णीत रहैत अछि। निजी उद्यमी मेधा डिजिटल शिक्षण-खेल आ जुआक भेद स्पष्ट करबाक प्रयास करैत छथि। रेवती एक खाली फोल्डरपर ‘व्यक्तिगत भूमिका—प्रमाणक प्रतीक्षा’ लिखैत छथि। अध्याय पुरान हस्तलिखित बहीसँ नव अदृश्य डिजिटल खाताधरि कथाक सेतु बनैत अछि।

अध्याय ३४ — पाँच सय नामक बही

दिसम्बर २०२५ मे मरुधर विश्वविद्यालयक छात्रावासक छापाक यन्त्रसँ पाँच सय क्रमाङ्कवाली एक सन्दिग्ध सूची बाहर निकलैत अछि। सहायक कमला मेघवाल व्यक्तिगत जानकारी सार्वजनिक नहि कऽ ओकर प्राप्ति-समय सुरक्षित करैत छथि आ अधिकृत अधिकारीकेँ सूचित करैत छथि। तकनीकी परीक्षणमे एकहि नामक दोहराव, अधूरा मोबाइल-सङ्केत, पुरान कक्ष-संख्या आ बैंकक अन्तिम अङ्क भेटैत अछि। रिद्धि आ वित्तीय विशेषज्ञ अनुराधा सेन स्पष्ट करैत छथि जे पाँच सय प्रविष्टि पाँच सय अलग व्यक्ति, बैंक-खाता वा अपराधी नहि अछि।

‘मरुधर नियुक्ति-सुविधा’ नामक बाहरी वेबसाइट निःशुल्क रोजगार-सहायताकेँ शुल्कवाली सेवा बतबैत अछि। मुकुल मीणाक सात हजार पाँच सय रुपैया एक

अध्याय ३४ — पाँच सय नामक बही

व्यापारी-माध्यमसँ भुगतान भेलाक प्रमाण भेटैत अछि। साइबर-जाँचमे खरड़, मोहाली आ सेवा-प्रदायकक सम्बन्धक मूल कागज मँगाओल जाइत अछि; पुलिस अभियोगक विशिष्ट सीमामे प्राथमिकी दर्ज करैत अछि। सुनीताक पुरान श्रम-पञ्जीक ‘हरदेव चौहान’ आ नव अभिलेखक ‘एच. चौहान’क समानता एखन व्यक्ति-पहिचानक प्रमाण नहि। अध्याय गिनतीक मोहसँ बचि प्रत्येक नामक वास्तविक स्रोत खोजबाक आग्रह करैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३५ — खाता रोकल गेल

सन् २०२६ मे छात्र अर्जुन मीणाक बैंक खातापर निकासी रोक लागैत अछि। ओकर छात्रवृत्तिक उपलब्ध रकम रहितो विद्यालय-शुल्क दैब कठिन भऽ जाइत अछि। जाँचक कागजमे चारि हजार दू सय रुपैयाक एक विशिष्ट सन्दिग्ध प्रविष्टि अछि, मुदा बैंकक प्रणाली पूरा खाताक उपयोग रोकि दैत अछि। रेवती आ शालिनी सोलंकी प्रश्न उठबैत छथि जे कोन अधिकारीक कोन आदेशसँ, कोन रकमपर आ कतेक सीमा धरि रोक वैध अछि। अनुसन्धान लेल विवादित रकम सुरक्षित राखबाक आवश्यकता आ गैरविवादित वैध धनक उपयोग दुनूक न्यायिक मूल्याङ्कन होइत अछि।

लुधियानामे चम्पाक परिचय-त्रुटि, शान्तिक सीमित बैंक-विवाद आ रामलखनक मजदूरी-आदेश अलग उपचार माँगैत अछि। किछु खातामे उचित सत्यापनक बाद

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३५ — खाता रोकल गेल

सामान्य लेनदेन फेर चलैत अछि। अर्जुनक खाताक व्यापक रोकक पर्याप्त नव कारण प्रस्तुत नहि भेला पर न्यायालय गैरविवादित धनक उपलब्धताक निर्देश दैत अछि; चारि हजार दू सयक वास्तविक स्रोतक जाँच जारी रहैत अछि। अध्याय प्रशासनिक कम्प्यूटरक ‘शून्य’ आ घरक रोटी, पढ़ाइ तथा भरोसापर ओकर प्रभावकेँ सोझाँ अनैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३६ — विशेष न्यायालयक कठोर प्रश्न

सितम्बर–अक्टूबर २०२६ मे जोधपुरक विशेष न्यायालयक समक्ष विद्यार्थी-सूची, प्रशिक्षण-शुल्कक प्राप्ति, बैंकक मूल विवरण आ विदेश धरि पहुँचैत कथित धन-प्रवाहक कागज प्रस्तुत होइत अछि। अनुसन्धानकर्ता नीरजा राठौड़ विशिष्ट स्रोत-अपराध, सेवाक वास्तविकता, धनक मार्ग आ व्यक्ति-विशेषक जानकारीक परीक्षण करैत छथि। दू अलग शाखाक खाताक अन्तिम चारि अङ्क समान देखल गेलाक कारणेँ एक प्रारम्भिक चित्र गलत सिद्ध होइत अछि; गलत मिलान हटाओल जाइत अछि। पाँच सय प्रविष्टिक बही एखनहुँ पाँच सय स्वतन्त्र लाभार्थीक प्रमाण नहि बनैत।

दुबईसँ जुड़ल सहगल व्यापारिक कागजमे वास्तविक सेवा, अधूरा प्रतिवेदन आ बिलक निर्माणक प्रश्न उठैत अछि। विक्रान्त आ

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३६ — विशेष न्यायालयक कठोर प्रश्न

लेखाकार फ़रीदा मूल फाइलक इतिहास सुरक्षित रखबाक प्रयत्न करैत छथि। भारतक न्यायालयसँ विदेशक सम्बन्धित व्यक्तिकेँ विधिसम्मत सूचना पहुँचएबाक प्रक्रिया अलग जटिलता अनैत अछि। रेवती एक प्रभावित खाताधारकक सीमित अधिकारपर ध्यान दैत छथि। अध्यायमे जाँचक वास्तविक गम्भीरता स्वीकारल जाइत अछि, मुदा नामक एकरूपता, बड़ रकम आ भव्य आरोपकेँ व्यक्ति-विशेषक दोषक पर्याय नहि बनाओल जाइत।

अध्याय ३७ — उच्च न्यायालयमे सत्ताइस वर्ष

अक्टूबरसँ दिसम्बर २०२६ धरि अर्जुनक बैंक-रोकक मामला राजस्थान उच्च न्यायालयमे पहुँचैत अछि। रेवती आ शालिनी न्यायालयसँ स्पष्ट करएबाक चाहैत छथि जे रोक सामान्य साइबर-अन्वेषणक अनुरोधपर लागल अछि वा धनशोधन-निवारणक पृथक वैधानिक प्रक्रियापर। दू प्रकारक शक्तिक शर्त, न्यायिक निगरानी आ उपचार अलग छथि। राज्यसँ रोकक कारण, तिथि, सीमित रकम आ समीक्षा-मञ्चक शपथपत्र मँगाओल जाइत अछि। न्यायालय सम्पूर्ण कथित वित्तीय अपराधक सत्यता एहि विशेष रिटमे तय नहि करैत।

अर्जुनक वैध छात्रवृत्ति आ चारि हजार दू सयक विवादित प्रविष्टिक अन्तर न्यायिक बहसक केन्द्र रहैत अछि। सुनीता पुरान श्रम-पञ्जीकेँ अधूरा नामक आधारपर अपराधक प्रमाण बनाओल जाएबाक

अध्याय ३७ — उच्च न्यायालयमे सत्ताइस वर्ष

विरोध करैत छथि। पिता शिवनारायणक २०००क अनुभव रेवतीकेँ पुनः स्मरण होइत अछि। उच्च न्यायालयक निर्देश नागरिककेँ रोकक विधिक आधार बुझबाक आ समीक्षा करएबाक बाट दैत अछि, मुदा मूल आर्थिक अनुसन्धान जारी रहैत अछि। सत्ताइस वर्षक न्यायिक यात्राक अर्जित शिक्षा एहि सीमित, कारणयुक्त आदेशमे प्रकट होइत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ — असत्यक मूल्य

नवम्बर–दिसम्बर २०२६ मे अधूरा वित्तीय पन्नाक तस्वीर सामाजिक माध्यमपर प्रसारित भऽ ‘पञ्चानबे प्रतिशत धन गायब’ सन सनसनीपूर्ण दावा बनैत अछि। अनुराधा, रिद्धि आ नूर बुझबैत छथि जे प्रतिशतक हर, गणनाक आधार आ दोहरायल धन-स्थानान्तरण जाँचने बिना एहन नारा विश्वसनीय नहि। एक सहायता-संस्थाक विरुद्ध सामाजिक शंका उठैत अछि, मुदा संस्थाकेँ कोनो अधिकृत आपराधिक नोटिस नहि भेटल अछि; ताहि तथ्यकेँ पत्रकारिता अलग दर्ज करैत अछि। अर्जुन विद्यार्थीसभक कठोर प्रश्नक समक्ष कहैत छथि जे खातामे धन अएबाक स्वीकारोक्तिसँ ओकर सम्पूर्ण जीवन अपराध नहि बनैत।

विशेष न्यायालयमे प्रचारात्मक सामग्री, कथित प्रशिक्षण-प्रमाणपत्रक फाइल-समय आ वास्तविक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३८ — असत्यक मूल्य

सेवा-प्राप्तिक परीक्षण चलैत अछि। डिजिटल मेटाडेटा एकाकी कपटक निर्णायक प्रमाण नहि; मूल फाइल, समय-अंचल, प्रारूप आ यन्त्रक इतिहासो चाही। विशेष न्यायालयक आर्थिक प्रश्न आ उच्च न्यायालयक बैंक-रोक सम्बन्धी आदेश आपसमे गड्डमड्ड नहि कएल जाइत। अध्याय पूछैत अछि जे अधूरा सत्यकेँ प्रचारक असत्य बनएबाक मूल्य ककरा-ककरा चुकाबय पड़ैत अछि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ३९ — सर्वोच्च न्यायालयक समक्ष

जनवरी–फरवरी २०२७ मे अर्जुनक खातापर अनियन्त्रित रोक लगबाक प्रश्न उचित न्यायिक मार्गसँ सर्वोच्च न्यायालयक समक्ष अबैत अछि। राज्य अनुसन्धानक आवश्यकता बतबैत अछि, नागरिक पक्ष स्पष्ट अधिकार, लिखित कारण, समीक्षा आ गैरविवादित धनक वास्तविक उपयोगपर जोर दैत अछि। न्यायालय मूल धनशोधन-अभियोगक समस्त प्रमाणक अन्तिम परीक्षण अपन हाथमे नहि लैत; ओ खातापर रोक लगएबाक शक्ति आ ओकर प्रक्रिया सम्बन्धी प्रत्यक्ष विवादपर केन्द्रित रहैत अछि। दू हजार करोड़ सन सार्वजनिक चर्चाक पैघ अङ्क एहि सीमित विवादक न्यायिक विषय स्वतः नहि बनैत।

न्यायालय सिद्धान्त निर्धारित करैत अछि जे सक्षम अधिकार, लिखित कारण, रोकक अनुपात, वैध गोपनीयताक सीमा,

अध्याय ३९ — सर्वोच्च न्यायालयक समक्ष

प्रभावित खाताधारकक अर्थपूर्ण जानकारी आ समयसँ समीक्षा आवश्यक अछि। गैरविवादित आजीविका आ आवश्यक भुगतानक प्रभावकेँ विचारयोग्य मानल जाइत अछि, मुदा प्रत्येक रकम स्वतः मुक्त करबाक सार्वत्रिक आदेश नहि देल जाइत। मुकुलक धन-वापसी, विक्रान्तसँ सम्बन्धित जाँच आ विशेष न्यायालयक आर्थिक प्रश्न चलैत रहैत अछि। शिवनारायण रेवतीकेँ बुझबैत छथि जे न्यायिक निर्णयक महत्त्व ओकर व्यवहारिक अनुपालनसँ सिद्ध होएत।

अध्याय ४० — जिला अदालतक बरामदा

मार्च–अप्रैल २०२७ मे रेवती आ वृद्ध शिवनारायण दरभंगाक ओहि जिला अदालतक बरामदामे लौटैत छथि जतयसँ सन् २००० मे कथा शुरू भेल छल। सर्वोच्च न्यायालयक सिद्धान्त आब बैंक, न्यायालय आ अन्य संस्थाक व्यवहारमे उतरबाक प्रक्रियासँ गुजरि रहल अछि। अर्जुनक गैरविवादित धनक उपयोग सम्भव भेल अछि, मुदा चारि हजार दू सय रुपैयाक प्रश्न अलग अछि। मुकुलक सात हजार पाँच सय एखनहुँ घुरल नहि; एक कनिष्ठ कर्मचारीक विरुद्ध उपलब्ध प्रमाण आरोप निर्धारित करबाक लेल अपर्याप्त ठहरलासँ ओकर सम्बन्धमे सीमित राहत भेटैत अछि, अन्य व्यक्तिक जाँच चलैत रहैत अछि।

लुधियानामे रामलखनकेँ प्रमाणित बकाया मजदूरीक एक किश्त भेटैत अछि; सुनीता बुझैत छथि जे अधिकारक

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

अध्याय ४० — जिला अदालतक बरामदा

संघर्षक लक्ष्य घरक सामान्य भोजन, पढ़ाइ आ विश्राम बचाएब अछि। मरुधरमे सौरभ आ अक्षय पुस्तकक लेखक-नाम ठीक करैत छथि; अण्डमानमे परिवारसभ अपन जीवनक नव क्रम बनबैत अछि। दरभंगाक बरामदामे श्यामनन्दन सहित नव लोक अपन-अपन कागज लऽ अबैत छथि। अन्तिम दृश्य कोनो सर्वसमाप्त विजय नहि, वरन् एहन न्यायिक संस्कृतिक आग्रह अछि जाहिमे प्रत्येक व्यक्तिक बात सुनल जाए, गलती सुधारल जाए आ आरोपक स्थानपर जाँचल प्रमाणक सम्मान हो।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/

SECTION / खण्ड

समग्र कथासूत्र

15 भारत २०२७

समग्र कथासूत्र

एहि चालीस अध्यायक कथामे न्याय कोनो एक अदालतक एकल निर्णय नहि, वरन् समयक संग चलैत अनेक संस्थागत आ मानवीय प्रयास अछि। नीलकान्तक जप्त बही, रामदेवक नक्शा, सायराक जरल प्रमाणपत्र, सुधाक हराओल अभिलेख, सुनीताक मजदूरी-पञ्जी, मनस्वीक निजता, अर्जुनक रोकल बैंक-खाता आ सर्वोच्च न्यायालयक सिद्धान्त—सभ अपन-अपन पृथक तथ्य राखैत अछि। तइयो ई प्रसंगसभ एक नैतिक सूत्रसँ जुड़ल छथि: नाम, अङ्क, फोटो, डिजिटल सङ्केत अथवा सरकारी मोहरक पाछाँ जीवित मनुष्यक ज्ञान, भूमिका, अधिकार आ पीड़ा खोजबाक चाही। सन् २०२७ मे कथा समाप्त होइत अछि, मुदा न्यायिक प्रश्नक यात्रा नहि।

(c) Gajendra Thakur, Editor, Videha, First Maithili Fortnightly e-Journal at
https://www.videha.co.in/ & https://videha-ejournal.github.io/videha/